92

खुतबात का

हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान

रज़वी किताब घर

92

खुतबात का
हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान

तालीफ़

अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती
अनवार अहमद क़ादरी साहब क़िब्ला

रज़वी किताब घर
423, मटिया महल जामा मस्जिद देहली-6
Ph.: 011-23264524

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اُدۡعُ اِلٰی سَبِيۡلِ رَبِّكَ بِالۡحِكۡمَةِ وَالۡمَوۡعِظَةِ الۡحَسَنَةِ

92

खुतबात का हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान

जिल्द दोम (2)

तालीफ़

नमूनए अस्लाफ़, अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना

मुफ़्ती अनवार अहमद क़ादरी

साहब क़िब्ला दामत बरकातुहुमुल कुदसिया

बानी व सरबराहे आला : अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़

खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

नाशिर

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-6 फोन : 011-23264524

सिलसिला –ए– इशाअत

किताब : अनवारुल बयान (जिल्द 2)

तालीफ़ : अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना
मुफ़्ती अनवार अहमद क़ादरी साहब क़िब्ला
दामत बरकातुहुमुल कुदसिया
बानी व सरबराहे आला अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़,
खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

प्रुफ़ रीडिंग : हाफ़िज़ शौकत हुसैन क़ादरी बरकाती
(एडीटर– माहनामा पैग़ामे रसूल, इन्दौर)

ऑप्रेटर : नज़ाफ़त हुसैन रज़वी (सोहेल)

कम्पोजिंग : रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर (म.प्र.) (मोबा : 9827014799)

सने इशाअत (हिन्दी)– 1437 हिजरी मुताबिक़ 2016 ईसवी (बारे अव्वल)

तादाद : (1100) ग्यारह सौ

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

इन्तिसाब

महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ)
और
आपके चारों ख़ुलफ़ाए राशेदीन
और
आपकी ज़ौजा सय्यद ख़दीजा और सय्यदा आएशा
और
आपकी प्यारी बेटी सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़ेहरा
और
आपके नूरे ऐन इमाम हसन और इमाम हुसैन
और
आपकी आल मेरे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म व
हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
और
आपके आशिक आला हजरत इमाम अहमद रज़ा
व मुर्शिदे आज़म मुस्तफ़ा रज़ा
और
आपकी उम्मत के वली मेरे पीरो मुर्शिद मौलाना शाह
मुफ़्ती बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी
व
मेरे करीम, मजज़ूब बुज़ुर्ग हुज़ूर दरिया शाह बाबा
(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन)
के नाम
जिनकी दुआओं का अबरे करम मुझ पर बरस रहा है।
और
क़ियामत तक बरसता रहेगा.........इंशाअल्लाहु तआला

गदाए ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी

कलिमाते दुआ...

शहजादए आला हजरत, पेशवाए अहले सुन्नत, वारिसे उलूमे मुजद्दिदे आजम, जानशीने हुज़ूर मुफ्तिये आज़मे हिन्द, शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, काजियुल कुज्ज़ात, ताजुश्शरीआ, हजरत अल्लामा मौलाना मुफ्ती, मुहद्दिस, फकीह, अल्हाज अश्शाह मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी दामत बरकातुहुमुल कुदसिया, बरैली शरीफ़ (यू.पी.)

۷۸۶
۹۲

میں نے عزیز القدر مولانا انوار احمد قادری الرضوی سلمہ کی تالیف کردہ کتاب مسمی بہ

« انوار البیان »

کے کچھ ابواب پڑھوا کر سنے خوب سے خوب تر پائے مولیٰ تعالیٰ ان کی یہ کوشش اپنی بارگاہ میں مقبول فرما کر مفید انام فرمائے آمین بجاہ النبی الامین علیہ وعلی آلہ وصحبہ افضل الصلاۃ واکمل التسلیم

فقیر محمد اختر رضا ۲۶ محرم ۱۴۳۴ھ
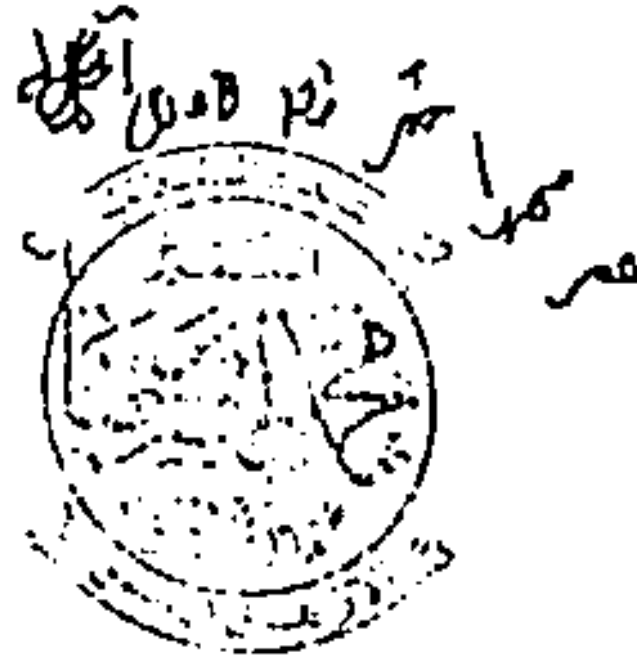
मैंने अज़ीज़ुल क़द्र मौलाना अनवार अहमद क़ादरी रज़वी सल्लम्हु की तालीफ़ कर्दा किताब मुसम्मा बह "अनवारुल बयान" के कुछ अबवाब पढ़वाकर सुने, ख़ूब से ख़ूब तर पाए। मौला तआला इनकी यह कोशिश अपनी बारगाह में कुबूल फ़रमाकर मुफ़ीदे अनाम फ़रमाए । आमीन । बिजाहिन्नबिय्यिल अमीन अलैहि व अला आलिही व सहबिही अफ़ज़लुस्सलातु व अकमलुत्तसलीम 0

फ़क़ीर मुहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी ग़ुफ़िरा लहू
26 मुहर्रमुल हराम 1434 हि. मुताबिक़
11 दिसम्बर 2012 ई. बरोज़ शंबा

अर्ज़े हाल

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ اما بعد!

एक मुद्दत दराज से मेरी ख्वाहिश थी और अहबाब का भी तकाज़ा था कि वअज़ व नसीहत और तक़रीर व खिताबत के लिये एक ऐसी किताब तरतीब दूँ जो आयाते करीमा और अहादीसे तैय्यिबा और मुस्तनद रिवायात व वाक़िआत पर मुश्तमिल हो और दीनी मालूमात का बेश बहा खजाना भी हो और जबान व बयान के लिहाज से आम फ़हम और आसान हो, ताकि उलमा व तलबा व अवाम और खासकर अइम्मए मसाजिद सभी उससे मुस्तफ़ीद हो सकें। लेकिन यह काम आसान न था मगर अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम और मेरे बुज़ुर्गों की इनायतों व ग़ौसो ख्वाजा व रज़ा और मुर्शिद रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की दुआओं ने आसान कर दिया कि साल के 48 जुमों के लिये 92 तकरीरों का हसीनो जमील मजमुआ तरतीब पाया जिसके लिये वक़्त तकरीबन पाँच साल लगा और इस तरतीब का नाम हुज़ूर बहरुल उलूम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अश्शाह अब्दुल मन्नान साहेब क़िब्ला साबिक़ शैखुल हदीस जामिआ अशरफ़िया, मुबारकपूर रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अनवारुल बयान मुन्तखब फ़रमाया।

हुज़ूर बहरुल उलूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस सफ़र में हमारे खास रहनुमा और मुशीर थे। सब कुछ करके, किताब की इशाअत से क़ब्ल 14 मुहर्रम शरीफ़ सन् 1434 हि. मुताबिक़ 29 नवम्बर जुमा मुबारका की शब में 9 बजकर 20 मिनट पर दागे मुफ़ारिक़त देकर विसाल फ़रमा गए।

मुद्दत के बाद होते हैं पैदा कहीं वह लोग
मिटते नहीं हैं दहर से जिनके निशां कभी

ख़ुदा रहमत कुनद.......ई पाक तीनत रा। आमीन।

(1) इस किताब की ख़ुसूसियत यह है कि मैंने फ़ज़ाइले हज के बयान की कुछ हदीसें कअबए मुअज़्ज़मा के सामने मस्जिदे हराम में मक़ामे उम्मे हानी (मेअराज शरीफ़ की जगह) पर लिखा। फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। और फ़ज़ाइले मदीना तैय्यिबा की कुछ हदीसें मस्जिदे नबवी शरीफ़ में असहाबे सुफ़्फ़ा के चबूतरे पर लिखा।

फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन और इस किताब यानी अनवारुल बयान के कुछ हिस्से अजमेर शरीफ़ में हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में जन्नती दरवाज़ा के अन्दुरुनी हिस्से में बैठकर लिखा। फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। इन मुबारक निस्बतों के फ़ैज़ान पर मुकम्मल यक़ीन है कि किताब मक़बूले ख़ुदा और मक़बूले अनाम होगी।

(2) मुहक़्क़िके मसाइले जदीदा, फ़क़ीहुल अस्र, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहेब किब्ला रज़वी मिस्बाही दामा ज़िल्लुहुल आली, सदर शोअ़बए इफ़्ता जामिआ अशरफ़िया मुबारकपूर का ममनून हूँ जिन्होंने चार दिन का अपना क़ीमती वक़्त सर्फ़ फ़रमाया और इन्दौर तशरीफ़ लाए और उलमाए जामिआ के साथ हर महीने के हिसाब से उनवान मुन्तख़ब फरमाए। और उन तमाम हज़रात का शुक्रिया जिन्होंने हमारे साथ मोहब्बत की और थोड़ा भी साथ दिया है जैसे फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद अफ़ज़ाल अहमद साहेब किब्ला रज़वी दाम ज़िल्लुहुल आली (मुफ़्ती मरकज़ी दारुल इफ़्ता बरैली शरीफ़) ख़ास कर हज़रत मौलाना रज़ियुद्दीन साहेब कादरी बरकाती जिन्होंने किताब की तस्हीह करने में न रात देखी न दिन, शुरू से आख़िर तक जिद्दो जहद करते रहे। अल्लाह तआला मौलाना रज़ियुद्दीन साहेब को दोनों जहांन में ख़ुश रखे और ख़ैरे कसीर अता करे और अज़ीज़ी हज़रत मौलाना मोहम्मद आरिफ़ साहेब बरकाती सदरुल मुदर्रेसीन जामिआ और अज़ीज़म हज़रत मौलाना अमीन अहमद क़ादरी और हज़रत मौलाना मुफ़्ती रफ़ीकुल इस्लाम साहेब और जामिआ के जुमला वह उलमाए किराम और हुफ़्फ़ाज़े इज़ाम जिनकी ख़िदमत व मोहब्बत हमारे साथ रही और मोहतरम हाजी मोहम्मद सिद्दीक़ बिन मोहम्मद जमील साहेब ठेकेदार और मेरे भाई मोहतरम हाजी मोहम्मद मक़सूद साहब ग़ोरी रज़वी और मोहतरम हाजी मोहम्मद इक़बाल साहब ग़ोरी रज़वी जिनकी मोहब्बत हमेशा हमारे साथ रही।

दुआ है कि अल्लाह तआला रहमानो रहीम मौला हमको, हमारे मां बाप को, हमारे बच्चों को, हमारे साथियों और तमाम क़ादरी, चिश्ती, बरकाती, रज़वी, सुन्नी भाइयों को ईमान पर ख़ातिमा अता फ़रमाए और इस किताब अनवारुल बयान को हम सबके लिये निजात व बख़्शिश का ज़रीआ बनाए। आमीन। सुम्मा आमीन। बिजाहि सय्येदुल मुरसलीन अलैहि व आलिही व अस्हाबिही अजमईन। फ़क़त

गदाए ग़ोसो ख़्वाजा व रज़ा

अनवार अहमद क़ादरी

21 मुहर्रमुल हराम 1434 हि.

6 दिसम्बर 2012 ई.

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द अव्वल (1)

(1) मुहर्रमुल हराम

(2) सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

(3) रबीउल अव्वल शरीफ़

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द अव्वल (1)

(4) रबीउल आख़िर शरीफ़

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (2)

(5) जुमादल ऊला

(6) जुमादल उख़रा

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (2)

(7) रजब शरीफ़

(8) शाबानुल मुअज़्ज़म

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (3)

(9) रमज़ानुल मुबारक

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (3)

(10) शव्वालुल मुकर्रम

(11) ज़िल क़अ्दह

(12) ज़िल हिज्जह

फ़हरिस्ते मज़ामीन ज़िल्द दोम (2)

जुमादल ऊला

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

चौथा जुमा .... पहला बयान

जुमादल उख़रा

रजबुल मुरज्जब

तीसरा जुमा .... पहला बयान

चौथा जुमा .... पहला बयान

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

शअबानुल मुअज़्ज़म

पहला जुमा .... पहला बयान

(5)

जुमादल ऊला

पहला जुमा .... पहला बयान

दुरूद व सलाम के फ़ज़ाइलो बरकात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَیْرِ خَلْقِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ
وَاَزْوَاجِهٖ وَعِتْرَتِهٖ وَاَوْلِیَاءِ اُمَّتِهٖ وَعُلَمَاءِ مِلَّتِهٖ وَشُهَدَاءِ مَحَبَّتِهٖ اَجْمَعِیْنَ لَاسِیَّمَا عَلٰی اِبْنِهِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِیْلَانِیْ
وَاٰبِیْهِ الْخَوَاجَهِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِیْرِیْ وَشَهِیْدِ مَحَبَّتِهِ الْاِمَامِ اَحْمَدَ رَضَا الْبَرَیْلَوِیْ رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ۝ اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ۝

तर्जमा : बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और खूब सलाम भेजो। (कंज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

बेशक रहमत वाले प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम भेजने के बे शुमार फ़ज़ाइल व बरकात हैं जिनको मुकम्मल बयान करना ना मुमकिन है

दुरुदो सलाम के फ़ज़ाइल व महामिद पर बहुत सी कितावें लिखी जा चुकी हैं और उलमाए किराम अकसर बयान करते हैं और इंशाअल्लाहु तआला क़ियामत तक यह मुबारक सिलसिला जारी व सारी रहेगा। अल्लाह तआला का वे हिसाब एहसान व करम है कि उसने महज़ अपने फ़ज़्ले ख़ास से मुझ जैसे नाकारा वे इल्म को अपने महबूबे मुअज़्ज़म, हबीबे मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे महबूबियत में दुरूदो सलाम के मुक़द्दस उनवान पर चन्द औराक़ लिखने की सआदत नसीब फ़रमाई।

ई सआदत बज़ोर बाज़ू नीस्त
ता नह बुख़शद ख़ुदाए बख़्शिन्दह

दुरूदो सलाम की फ़ज़ीलत व अज़मत का अन्दाजह इस बात से लगाया जा सकता है कि जितनी इबादतें और ज़िक्र व अज़कार हैं वह सब के सब सरकारे मदीना नबिये पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत हैं और दुरूद शरीफ़ रब तआला की सुन्नत है।

ऐ ईमान वालो ! हमेशा हमेशा अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करते रहना चाहिये, इस में कोताही हरगिज़ नहीं करना चाहिये, यूँ भी सरकारे आलम, ग़मख़्वारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हम पर बेशक बे शुमार एहसानात हैं । शिकमे वालिदा सैयदा आमना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से दुनिया में जलवाबार होते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सज्दा फ़रमाया और होंटों पर यह दुआ जारी थी।

रब्बि हब्ली उम्मती – ऐ रब ! मेरी उम्मत मेरे हवाले फ़रमा

रब्बे हब्ली उम्मती कहते हुए पैदा हुए
हक़ ने फ़रमाया कि बख़्शा अस्सलातो वस्सलाम

पहले सज्दे पे रोज़े अज़्ल से दुरूद
यादगारीए उम्मत पे लाखों सलाम

शबे मेअराज सफ़र पर रवांगी के वक़्त इमामुल अंबिया रहमते आसियाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी आसी, सियाकार गुनाहगार उम्मत को याद फ़रमा कर ग़मगीन हुए, आबदीदा हुए चश्माने करम से आँसू झलकने लगे । इमामे इश्क़ो महब्बत, सरकारे आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं –

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं ।

और दीदारे ज़ाते बारी तआला के वक़्त और ख़ुसूसी इनआम व इकराम की सआदत में भी गुनाहगार सियाकार उम्मत को याद फ़रमाया, उम्र भर ख़ताकार, गुनाहगार, सियाकार उम्मत के लिये ग़मगीन रहे। लिहाज़ा महब्बत व अक़ीदत का यही तक़ाज़ा है कि हम ईमान वालों को जाने ईमान सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की याद और दुरूद सलाम से कभी ग़फ़लत नहीं करना चाहिये, इमामे अहले सुन्नत, सरापा इश्क़े रिसालत अलैहिस्सलातो वसस्लाम तमाम ईमान वालों से महब्बत भरा पैग़ाम देते हुए अर्ज़ करते हैं –

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उसकी अपनी आदत कीजिये

बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

ऐ ईमान वालो ! हम ग़ौर करें कि प्यारे, प्यारे रहमत वाले आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हम पर कितने एहसानात हैं मगर यह कब मुमकिन है कि हम गुलाम इतने गुलाम उनका शुक्रिया अदा कर सकें, बस इतना ही किया करें कि उनका ज़िक्र करें , उनकी याद मनाएँ और उन पर दुरूदो सलाम के तोहफ़े भेजा करें।

शुक्र एक करम का भी अदा नहीं हो सकता
दिल तुम पे फ़िदा, जाने हसन तुम पे फ़िदा हो

और अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में काफ़ी अहकाम सादिर फ़रमाए। मसलन नमाज़, रोज़ा, हज वग़ैरह मगर किसी में यह इरशाद नहीं फ़रमाया कि यह काम हम भी करते हैं, हमारे फ़रिश्ते भी करते हैं और ईमान वालो ! तुम भी किया करो। सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ के लिये ही ऐसा फ़रमाया गया, इसकी वजह साफ़ ज़ाहिर है क्यूँकि कोई काम भी ऐसा नहीं जो ख़ुदा का भी हो और बन्दे का भी, यक़ीनन हम अल्लाह तआला के काम नहीं कर सकते और अल्लाह तआला हमारे कामों से बे नियाज़ है।

मगर कोई काम ऐसा है जो अल्लाह तआला का भी हो। मलाइका भी करते हों, और ईमान वालों को भी उसके करने का हुक्म दिया गया हो, वह सिर्फ़ और सिर्फ़ प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद भेजना है। यह शानो शौकत, अज़मत व बुज़ुर्गी है सुल्ताने मदीना, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की, कि खुद ख़ुदाए तआला, ख़ल्लाक़े दो आलम, अपने हबीब, मुख़्तारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व सल्लम पर दुरूद भेजता है और ईमान वालों को भी दुरूद का हुक्म देता है।

ऐ ईमान वालो ! आप हज़रात को मालूम होगा कि मिस्र में जमाले यूसुफ़, हुस्ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की शोहरत का यह आलम था कि जब मिस्र की औरतों ने हुस्ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो देखती रह गईं और महवियते दीदार के कैफ़ व सुरूर में उनकी उंगलियाँ कब कट गईं, ख़बर न हुई, यह था हुस्ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का जलवा।

मगर जब अरब के मर्दों ने हुस्ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जलवों का नज़ारा किया तो —

مَنْ رَآنِیْ فَقَدْ رَأَی الْحَقَّ

मुज़्दए जाँ फ़िज़ा के जलवों से सरशार हो कर पुकार उठे, यानी जिस ने मुस्तफ़ा को देखा उसने ख़ुदा को देखा।

और उनकी ज़बानों पर यह तराना था —

اَلنَّظَرُ اِلٰی وَجْہِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और ऐसे आशिक़ व दीवाने हुए कि सिर्फ़ देखते ही देखते न रह गए बल्कि दावते महब्बत पर अपने अहलो अयाल और वतने अज़ीज़ को कुरबान कर दिया और फिर भी महब्बत आवाज़ देती रही तो आशिक़ की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए महबूब की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये सर को भी कटा डाला जिसके शाहिद आज भी बद्रो उहुद और करबला के मैदान हैं।

यह है जमाले मुस्तफ़ा और हुस्ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जलवा।

हज़रात ! वहाँ मिस्र की औरतें थीं, यहाँ अरब के मर्द हैं, वहाँ औरतों की उंगलियाँ इज़तिरारन, वे ख़ुदी में कटीं और यहाँ इख़्तियारन जान बूझ कर सर कटाए जा रहे हैं,

आशिक़े रसूल, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

हुसने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नाँ
सर कटाते हैं तेरे नाम पर मर्दाने अरब

हज़रात ! हुस्ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर मख़लूक़ फ़रेफ़्ता और शैदा थी, लैकिन हुस्ने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की चमक दमक और जलवा अफ़शानी का यह आलम है कि ख़ूद ख़ालिक़ो मालिक तालिबे दीदार है।

ऐसा तुझे ख़ालिक़ ने तरहदार बनाया
यूसुफ़ को तेरा तालिबे दीदार बनाया

अल्लाह भी तालिब है तेरा जिन्न व बशर भी
है अर्श तेरा ख़ुल्द भी अल्लाह का घर भी

चहरा है तेरा आईना हुसने इलाही
देखे तेरा जलवा तड़प जाए नज़र भी

और अगर कोई सवाली किसी के दरवाज़े पर मांगने जाता है तो घर वालों के लिये माल व औलाद के हक़ में दुआएँ मांगता हुआ जाता है। सख़ी के बच्चे ज़िन्दा रहें, माल व दौलत सलामत रहे, घर आबाद रहे वग़ैरह वग़ैरह। जब यह दुआएँ मालिक मकान सुनता है तो समझ जाता है कि यह बड़ा बा अदब व मुहज़्ज़ब सवाली है। भीक माँगना चाहता है मगर हमारे बच्चों की ख़ैर माँग रहा है। ख़ुश होकर झोली में कुछ न कुछ डाल देता है मगर यहाँ अल्लाह तआला हुक्म दे रहा है। ऐ ईमान वालो ! जब तुम हमारे यहाँ कुछ माँगने आओ तो हम तो औलाद से पाक हैं, मगर हमारा एक प्यारा महबूब है, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम लेते हुए, उसके अहले बैत और उसके सहाबा की भलाई माँगते हुए उनको दुआएँ देते हुए आओ तो जिन रहमतों, बरकतों की उन पर बारिश हो रही है उनका तुम पर भी छींटा डाल दिया जाएगा। दुरूद शरीफ़ पढ़ना दर अस्ल अपने ख़ालिक़ व मालिक की बारगाह से माँगने की एक आला तरकीब है।

वही रब है जिसने तुझको हमातन करम बनाया
हमें भीक माँगने को तेरा आस्ताँ बताया
तुझे हम्द है ख़ुदाया, तुझे हम्द है ख़ुदाया

ऐ रहमानो रहीम मेरे बन्दा नवाज़, परवर दिगार मौला, हम सरापा जुर्म व ख़ता इंसानों की गुनाह आलूद ज़बान इस लायक़ कहाँ, जो तेरे प्यारे हबीब व महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की शान के लायक़ दुरूदो सलाम पैश कर सकें। लिहाज़ा तो महज़ अपने लुत्फ़े अमीम से इस गुनहगार फ़क़ीर क़ादरी और सारे ईमान वालों की जानिब से बेशुमार दुरूद और ला महदूद सलाम नाज़िल फरमा। उस सुल्ताने आलम, मुख़्तारे दो

आलम, शाहे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जिसके दस्ते पाक में तमाम ख़ज़ानों की चाबियाँ हैं।

उस हबीबे मुअज़्ज़म, महबूबे मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जिस पर ख़ुद ख़ुदा और फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं। उस सुल्ताने मदीना पर आसमानों में जिसका नाम अहमद और ज़मीन पर मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है।

ऐ मेरे अल्लाह तआला ! ख़ताकारों, मुजरिमों पर फ़ज़्लो करम की बारिश बरसाने वाले रहमान व रहीम, सत्तार व ग़फ़्फ़ार मौला उस शहंशाहे दो आलम का सदक़ा जिसकी सलामी के लिये सुब्हो शाम लाखों फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं।

उस जामेअ व कामिल नबिये रहमत का सदक़ा जिसें सिफ़वते आदम, इस्तिक़ामते नूह, ख़ुल्लते इब्राहीम, इबरते उज़ैर, लताफ़ते हूद, हुस्ने यूसुफ़, सब्रे अय्यूब, हिक्मते दाऊद, सुतवते सुलैमान, इमामते हारून, दमे ईसा, यदे बैज़ा वग़ैरह तमाम औसाफ़े मौजूद अलैहिमुस्सलातो वसल्लाम।

ख़ुदा ने एक मुहम्मद में दे दिया सब कुछ
करीम का करमे बे हिसाब क्या कहना

उस रसूले मुअज़्ज़म, हबीबे मुकर्रम का सदक़ा जिनके तवस्सुल से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़ुबूल हुई।

उस नबी मोहतशम का सदक़ा जिनके तुफ़ैल ही हर तौबा, तमाम दुआएँ, इबादतें, रियाज़तें, मुजाहिदात क़ुबूल हुए, होते हैं और होते रहेंगे।

ऐ ईमान वालो ! महफ़िले मीलाद शरीफ़ में ज़िक्रे विलादत के वक्त या किसी भी वक़्त खड़े होकर या बैठकर या सोने की हालत में या चलने की हालत में हुज़ूर पुरनूर, सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह बेकस पनाह में सलातो सलाम पैश करना बाइसे रहमत व बरकत है, मगर खड़े होकर पढ़ने में ज़्यादा अदब है और इस मुक़द्दस फ़ेअल को शिर्क व बिदअत कहना खुली गुमराही और जहालत है।

सलातो सलाम का सुबूत कुरआने मजीद से

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

बेशक उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो। (कंज़ुल ईमान)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने ईमान वालों को दो काम करने का हुक्म दिया है। एक प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद भेजना दूसरे सलाम भेजना अल्लाह तआला के इस हुक्म को सुनकर क़ल्बे मोमिन में ख़ुशी पैदा होती है।

और ईमान की रोशनी से जिनके दिल मुनव्वर व मुजल्ला हैं उन्होंने अपने आक़ा व मौला, सुल्ताने मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में दुरूदो सलाम का तोहफ़ा कल भी पेश किया और आज भी पेश करते हैं और यह मुबारक तरीक़ा क़ियामत तक बल्कि क़ब्र व महशर में भी जारी रहेगा।

मैं वह सुन्नी हूँ जमीले क़ादरी मरने के बाद
मेरा लाशा भी कहेगा अस्सलातु वस्सलाम

और जिन के कुलूब ईमान की रौशनी से ख़ाली हैं और जिनके दिलों में महब्बते शाहे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का चिराग़ बुझा हुआ है। वही लोग सलातो सलाम को बिदअत कहते हैं और सलातो सलाम की मज्लिस से भागते हैं और पढ़ने वालों की मुख़ालफ़त भी करते हैं और कमाल तो यह है कि अल्लाह तआला ने दुरूदे पाक भेजने में ताकीद नहीं फ़रमाई और सलाम के भेजने पर ताकीद फ़रमा दी कि सलाम ज़रूर पढ़ना।

ऐ ईमान वालो ! ग़ौर फ़रमाएँ अल्लाह तआला ने सलाम भेजने पर ताकीद क्यूँ फ़रमाई ? कि सलाम ज़रूर पढ़ना ख़ूब, ख़ूब पढ़ना। दर अस्ल बात यह है कि ख़ुदाए तआला हर चीज़ का जानने वाला यह भी जानता है कि सलाम के मुन्किर और सलाम पढ़ने वालों को इस मुक़द्दस फ़ेअ़ल से रोकने वाले होंगे इसलिये अल्लाह तआला ने ईमान वालों को सलाम का हुक्म भी दिया और ताकीद भी फ़रमा दी कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करने वालो ! इंकार करने वाले सलाम से इंकार करके नाफ़रमान हो जाएंगे और फिर उनका हश्र भी सबसे बड़े नाफ़रमान शैतान के साथ होगा। लेकिन तुम ईमान वालो ! सलाम ज़रूर पढ़ना, बार बार पढ़ना और फ़रमाँ बरदार, वफ़ादार होने का सुबूत देना इसलिये कि जो फ़रमाँ बरदार होगा प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह का तो ऐसे ख़ुश नसीब का हश्र भी फ़रमाँ बरदारों, वफ़ादारों के इमाम व पैशवा सिद्दीक़ व उमर, उस्मान व हैदर, हसन व हुसैन, ग़ौस व ख़्वाजा, रज़ा व मुस्तफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के साथ होगा।

जिनके दुश्मन पे लानत है अल्लाह की
उन सब अहले महब्बत पे लाखों सलाम

वे अज़ाब व एताब व हिसाब व किताब
ता अबद अहले सुन्नत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! बरकत व रहमत और हुज़ूर ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ुरबत के हुसूल के लिये दुरूदो सलाम से बहतर कोई अमल ही नहीं है।

दुरूदो सलाम की रहमतें

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلٰوةً وَّاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا

(1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

(मुस्लिम शरीफ़, अबू दाऊद, ज. 1, स. 214, दार्मी जि. 2, स. 408)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً وَّاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ

وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيْئَاتٍ وَرُفِعَتْ لَهٗ عَشْرُ دَرَجَاتٍ ○

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस मरतबा रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और उसके दस गुनाह मुआफ़ किये जाते हैं और उस के दस दरजे बलन्द होते हैं।

(नसाई शरीफ़, जि. 1, स. 145)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ مِنْ اُمَّتِيْ صَلَاةً مُّخْلِصًا مِّنْ قَلْبِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ بِهَا

عَشْرَ صَلَوَاتٍ وَّرَفَعَهٗ بِهَا عَشْرَ دَرَجَاتٍ وَّ كَتَبَ لَهٗ بِهَا عَشْرَ حَسَنَاتٍ وَّ مَحٰى عَنْهُ عَشْرَ سَيِّئَاتٍ ○

(3) यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो मेरा उम्मती मुझ पर एक मरतबा ख़ुलूसे दिल से दुरूद भेजे अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और दुरूद शरीफ़ की बरकत से दस दरजे बलन्द फ़रमाता है और उस के नामए आमाल में दस नेकियाँ लिखता है और उस के दस गुनाह मिटाता है।

(नसाई शरीफ़, जि. 1, स. 145, कन्जुल उम्माल, जि. 1, स. 248)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ صَلٰوةً ○

(4) यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया क़ियामत के दिन लोगों में मुझ से ज़्यादा क़रीब वह होगा जो मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ेगा।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 1, स. 110, मिश्कात शरीफ़, स. 86)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात ! मज़कूरा अहादीसे करीमा से आप को अन्दाज़ा हो गया होगा कि दुरूद शरीफ़ का पढ़ना अल्लाह तआला बारगाहे करम में कितना मक़बूल अमल है अल्लाह तआला दुरूद पढ़ने वालों को कितनी नेकियाँ अता फ़रमाता है और कितने दरजे बलन्द फ़रमाता है और सब से खुशी की बात तो यह है कि क़ियामत के दिन वही लोग अल्लाह तआला की रहमत के साए में होंगे जो अल्लाह तआला के प्यारे महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़रीब होंगे और बज़्मे मेहशर के दूल्हा आमना के लअल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने क़रीब होने का नुस्खा भी बता दिया कि जो मेरा गुलाम जितना ज़्यादा दुरूद पढ़ेगा उतना ही ज़्यादा मुझ से क़रीब होगा लिहाज़ा ईमान वालो! खुशी मनाओ और अपनी क़िस्मत पर नाज़ करो कि जिन प्यारे रसूल, महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर खुद अल्लाह तआला दुरूद भेजे उसी प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर हम सियाकारों गुनाहगारों को भी दुरूदो सलाम भेजने की सआदत अता फ़रमाता है। अब वही शख़्स दुरूद भेजेगा जिसे क़ियामत के रोज़ रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ुरबत दरकार हो।

ऐ शहंशाहे मदीना अस्सातो वस्सलाम
ज़ीनते अर्श मुअल्ला अस्सलातो वस्सलाम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْبَخِيْلُ الَّذِيْ مَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهٗ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ ○

(5) यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बड़ा बख़ील वह शख़्स है जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए तो वह मुझ पर दुरूद न भेजे।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 87)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ में हमारे सरकार रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस शख़्स को बख़ील व कन्जूस फ़रमाया है जो सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्रे पाक सुने और दुरूद शरीफ़ का नज़राना पेश न करे और महब्बत का भी यही तक़ाज़ा है कि जब ज़िक्रे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुने या नामे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुने तो बख़ीली का मुज़ाहिरा न करे बल्कि फ़र्ते महब्बत से इश्क़ व उल्फ़त के अन्दाज़ में ख़ूब ख़ूब दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करे। सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सख़ी गुलाम होने का सुबूत दे।

मोमिनो ! पढ़ते रहो तुम अपने आक़ा पर दुरूद
है फ़रिश्तों का वज़ीफ़ा अस्सलातो वस्सलाम

हदीस : اَلسَّخِيُّ حَبِيْبُ اللّٰهِ وَلَوْ كَانَ فَاسِقًا اَلْبَخِيْلُ عَدُوُّ اللّٰهِ وَلَوْ كَانَ زَاهِدًا ○

यानी सख़ी अल्लाह तआला का दोस्त है अगरचेह गुनाहगार हो बख़ील अल्लाह तआला

का दुश्मन है अगरचेह इबादत गुज़ार हो।

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

قَالَ قُلْتُ يَارَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنِّىْ اُكْثِرُ الصَّلٰوةَ عَلَيْكَ فَكَمْ اَجْعَلُ لَكَ مِنْ صَلٰوتِىْ فَقَالَ مَاشِئْتَ فَاِنْ زِدْتَّ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكَ قُلْتُ اَلنِّصْفَ قَالَ مَا شِئْتَ فَاِنْ زِدْتَّ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكَ قُلْتُ فَالثُّلُثَيْنِ قَالَ مَاشِئْتَ فَاِنْ زِدْتَّ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكَ قُلْتُ اَجْعَلُ لَكَ صَلٰوتِىْ كُلَّهَا قَالَ اِذًا يُكْفٰى هَمُّكَ وَيُكَفَّرُ لَكَ ذَنْبُكَ ○

(6) यानी हज़रत अबी इब्ने कअ़ब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप पर मैं बहुत दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूँ तो कितना दुरूद शरीफ़ पढना मुक़र्रर कर लूँ तो सरकारे मदीना ने फ़रमाया जितना चाहो अगर बढ़ा दो तुम्हारे लिये अच्छा है मैंने कहा आधा फ़रमाया जितना चाहो अगर पढ़ा दो तो तुम्हारे लिये अच्छा है, मैं ने कहा दो तिहाई फ़रमाया जितना चाहो, अगर बढ़ा दो तो तुम्हारे लिये अच्छा है। मैं ने कहा कि हर वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ूँगा फ़रमाया कि तब तो तुम्हारे ग़मों को किफ़ायत करेगा और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 86)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! हज़रत अबी इब्ने कब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर रहमते आलम के वह सहाबी हैं जो सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक, रात भर, दिन भर, ग़रज़ यह कि हर वक़्त औरादो वज़ाइफ़ और दुआओं में मशग़ूल रहा करते थे एक दिन रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे करम में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हर वक़्त औरादो वज़ाइफ़ और दुआओं में मसरूफ़ रहना यह मेरी ज़िन्दगी का मामूल है। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे लिये वक़्त मुक़र्रर फ़रमा दें कि कितने वक़्त औरादो वज़ाइफ़ में मशग़ूल रहूँ और कितने वक़्त दुआएं मांगू और कितने वक़्त आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ूँ ? अगर आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इजाज़त दें तो तीन हिस्सा वक़्त में औरादो वज़ाइफ़ पढ़ा करूँ और एक हिस्सा वक़्त में आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ का तोहफ़ा पेश किया करूँ। तो सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारी मर्ज़ी, अगर ज़्यादा दुरूद पढ़ोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर होगा। तो सहाबी ने अर्ज़ किया कि आधा वक़्त दुरूद शरीफ़ के लिये मुतअय्यन कर लूँ, तो हुज़ूर, सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारे लिये इख़्तियार है अगर ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ोगे तो और बेहतर होगा। सहाबी ने अर्ज़ किया कि तमाम वक़्त का तीन हिस्सा दुरूद शरीफ के लिये मुक़र्रर कर लूँ तो हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हें इख़्तियार है अगर ज़्यादा पढ़ोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर फिर तो सहाबिये रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हें इख़्तियार है और ज़्यादा पढ़ोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर फिर तो सहाबिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम सुबह से दद तक, रात हो या दिन, फ़राइज़ो वाजिबात के बाद हर वक़्त आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करना मैं अपनी आदत बना लूँगा। सहाबी के इस अन्दाज़े ग़ुलामी पर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दरयाए रहमत जोश में आई इरशाद फ़रमाया अगर तुम हर वक़्त अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ोगे तो तमाम ग़मों से अमन व सुकून मिलेगा राहत व आफ़ियत मिलेगी और दुरूद शरीफ़ का यह मुक़द्दस अमल तमाम गुनाहों को मिटाने के लिये काफ़ी होगा।

क्यूँ कहूँ बेकस हूँ मैं क्यूँ कहूँ बे बस हूँ मैं
तुम हो और मैं तुम पर फ़िदा तुम पे करोरों दुरूद

اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَآءَ ذَاتَ يَوْمٍ وَّالْبِشْرُ فِيْ وَجْهِهٖ فَقَالَ اِنَّهٗ جَآئَنِيْ جِبْرَئِيْلُ
فَقَالَ اِنَّ رَبَّكَ يَقُوْلُ اَمَا يُرْضِيْكَ يَا مُحَمَّدُ اَنْ لَّا يُصَلِّيَ عَلَيْكَ اَحَدٌ مِّنْ اُمَّتِكَ اِلَّا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا ٥

(7) बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक दिन तशरीफ़ लाए और आप के चेहरए अनवर पर ख़ुशी थी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बे शक मेरे पास जिब्रईल आए अर्ज़ किया बे शक आप का रब फ़रमाता है ऐ महबूब (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्म) क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं हैं कि आप का उम्मती आप पर एक मरतबा दुरूद भेजे मैं उस पर दस रहमतें नाज़िल करूँ और आप का उम्मती आप पर एक मरतबा सलाम भेजे मगर मैं उस पर दस सलाम भेजूँ। (सुननुद्दारमी, जि. 2, स. 408, सुनन नसाई, जि. 1, स. 145)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात! इस हदीस शरीफ़ को बार बार पढ़िये और अपने मुक़द्दर पर नाज़ कीजिये कि जो ग़ुलाम अपने प्यारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर एक मरतबा दुरूद पढ़े तो अल्लाह तआला उस ख़ुश नसीब पर रहमत की बारिश बरसाए और जो सईद उम्मती अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर एक मरतबा सलाम भेजे तो अल्लाह तआला उस सआदत मन्द ग़ुलाम पर दस बार सलाम भेजता है। कितने ख़ुश नसीब और बलन्द क़िस्मत हैं वह लोग जो नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम भेज कर रहमतो

सलामती से अपने दामन को भर रहे हैं।

सरकार आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से दूसरी बात यह मालूम हुई कि अल्लाह तआला अपने प्यारे हबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मर्ज़ी व ख़ुशी चाहता है उन बद अक़ीदा वहाबियों, देवबन्दियों, तब्लीग़ियों के लिये इबरत व नसीहत का मक़ाम है जो दामने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को छोड़ कर ख़ुदाए तआला को ख़ुश व राज़ी करना चाहते हैं अल्लाह तआला ऐसे बुरे अक़ीदे वालों को तौबह की तौफ़ीक़ अता फ़रमा कर दौलते ईमान से मालामाल फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन

मिट गए मिटते हैं मिट जाएँगे दुश्मन तेरे
न मिटा है न मिटेगा कभी चर्चा तेरा

ऐ ईमान वालो ! अपनी क़िस्मत पर नाज़ करो कि अल्लाह तआला ने हम सियह कारों, गुनाहगारों को अपना शान वाला, प्यारा महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अता फ़रमाया हदीसे क़ुदसी है अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि तमाम मख़लूक़, नबी हों या उम्मती, रसूल हों या उन के फ़रमां बरदार सब के सब मेरी रज़ा तलाश करते हैं और ऐ प्यारे महबूब ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं तुम्हारी रज़ा चाहता हूँ, इमामे अहले सुन्नत, सरापा इश्क़ो महब्बत, सरकार आला हज़रत, अज़ीमुल बरकत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद
(सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम)

قَالَ رَسُوْلُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اُحْضُرُوا الْمِنْبَرَ فَحَضَرْنَا فَلَمَّا ارْتَقَی الدَّرَجَۃَ قَالَ اٰمِیْن ثُمَّ ارْتَقَی الدَّرَجَۃَ الثَّانِیَۃَ فَقَالَ اٰمِیْن ثُمَّ ارْتَقَی الدَّرَجَۃَ الثَّالِثَۃَ فَقَالَ اٰمِیْن فَلَمَّا فَرَغَ نَزَلَ عَنِ الْمِنْبَرِ فَقُلْنَا یَارَسُوْلَ اللہِ سَمِعْنَا مِنْکَ الْیَوْمَ شَیْئًا مَا کُنَّا نَسْمَعُہٗ فَقَالَ اِنَّ جِبْرِیْلَ عَرَضَ لِیْ فَقَالَ بَعُدَ مَنْ اَدْرَکَ رَمَضَانَ فَلَمْ یُغْفَرْ لَہٗ فَقُلْتُ اٰمِیْن فَلَمَّا رَقِیْتُ الثَّانِیَۃَ قَالَ بَعُدَ مَنْ ذُکِرْتَ عِنْدَہٗ فَلَمْ یُصَلِّ عَلَیْکَ فَقُلْتُ اٰمِیْن فَلَمَّا رَقِیْتُ الثَّالِثَۃَ قَالَ بَعُدَ مَنْ اَدْرَکَ اَبَوَیْہِ الْکِبَرَ اَوْ اَحَدَھُمَا فَلَمْ یُدْخِلَاہُ الْجَنَّۃَ فَقُلْتُ اٰمِیْن ٥

(8) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास

हाज़िर हो जाओ तो हम हाज़िर हो गए। तो आप मिम्बरे मुबारक की पहली सीढ़ी पर चढ़े और आमीन फ़रमाया फिर दूसरी सीढ़ी पर चढ़े तो आमीन कहा फिर तीसरी सीढ़ी पर चढ़े तो आमीन कहा, पस जब आप (ख़ुतबा से) फ़ारिग़ हो कर मिम्बर से उतरे तो हम ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आज हम ने आप से वह बात सुनी जो पहले हम न सुनते थे तो आप ने फ़रमाया कि जिब्रईल आ गए मेरे मिम्बर पर चढ़ने के वक़्त तो उन्हों ने कहा जो शख़्स रमज़ान का महीना पाए और बख़्शा न जाए तो वह शख़्स अल्लाह तआला की रहमत से दूर हो, तो मैं ने आमीन कहा। फिर जब मैं दूसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्रईल ने कहा जिस के सामने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) का ज़िक्र किया जाए तो वह आप (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े वह भी अल्लाह तअला की रहमत से दूर हो। तो मैं ने कहा आमीन, फिर जब मैं तीसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्रईल ने कहा जो शख़्स वालिदैन या दोनों में से किसी एक का बुढ़ापा पाया और जन्नत का मुस्तहिक़ न हो सका वह अल्लाह तआला की रहमत से दूर हो। तो मैं ने कहा, आमीन। (अल मुस्तदरिक अलस्सहीहैन, जि. 4, स. 170)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात! इस हदीस शरीफ़ में ऐसे तीन अफ़राद का ज़िक्र किया गया है जिन को अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से रहमत व बरकत वाली साअतें मरहमत फ़रमाई ताकि उन के ज़रीए वह जन्नत के मुस्तहिक़ बन जाएं। मगर ऐसे बरकत व रहमत वाले औक़ात को ग़फ़लत में गुज़ार कर जन्नत से दूर और दोज़ख़ से क़रीब हो गए और वह तीन क़िस्म के महरूम लोग वह हैं (1) जो रमज़ान शरीफ़ का महीना पाया और उस का एहतिराम न किया और जन्नत का हक़दार न बन सका। (2) जिस ने मां बाप की ज़ईफ़ी का ज़माना पाया और उन की ख़िदमत व फ़रमांबरदारी करके उन्हें राज़ी व ख़ुश करके जन्नत का मुस्तहिक़ न हो सका और (3) जिस ने सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्रे पाक सुना और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा, उन तीन क़िस्म के लोगों के लिये हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करते हैं कि या अल्लाह! यह तीनों क़िस्म के लोग तेरी रहमत से दूर हो जाएं तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आमीन फ़रमा कर कुबूलियत की सनद अता फ़रमा दी और हक़ीक़त भी यही है कि दुआ करने वाले फ़रिश्तो के सरदार और आमीन कहने वाले नबियों, रसूलों बल्कि कुल कायनात के सरदार (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) अब दुआ के रद और ना मक़बूल होने का सवाल ही क्या है। इस लिये तमाम ईमान वाले अगर यह चाहते हैं कि अल्लाह तआला की रहमत उन से दूर न हो और हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम की दुआ उन पर सादिक़ न हो तो रमज़ानुल मुबारक का पूरा पूरा एहतिराम करें और मां बाप की ख़ूब ख़िदमत व इताअत करें

और जब भी सरकारे मदीना, रहमते वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्रे पाक सुनें। तो अक़ीदत व महब्बत से बारगाहे महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में दुरूदो सलाम का तोहफ़ा पेश करें।

ऐ शहंशाहे मदीना अस्सलातो वस्सलाम
ज़ीनते अर्शे मुअल्ला अस्सलातो वस्सलाम
मोमिनों पढ़ते रहो तुम अपने आक़ा पर दुरूद
है फ़रिश्तों का वज़ीफ़ा अस्सलातो वस्सलाम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِلّٰهِ مَلٰئِكَةً سَيَّاحِيْنَ فِى الْاَرْضِ يُبَلِّغُوْنِىْ مِنْ اُمَّتِىَ السَّلَامَ ○

(9) यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बे शक अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ज़मीन पर गश्त करते हैं ज़ो मेरीं उम्मत का सलाम मुझ तक पहुँचाते हैं। (दारमी शरीफ़, जि. 2, स. 409, मिश्कात, स. 86)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात ! इन फ़रिश्तों की यही ज़िम्मेदारी है कि वह उम्मती का दुरूदो सलाम सरकारे मदीना मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरागाहे रहमत तक पहुँचाएं कोई बद अक़ीदा वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी यह न समझ ले कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन फ़रिश्तों के मोहताज हैं, फ़रिश्ते पहुँचाएंगे तब हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मालूम होगा वर्ना नहीं। बात दर हक़ीक़त यह है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुदाए तआला की अता कर्दा ताक़त से बनफ़्से नफ़ीस उम्मत का दुरूद सुनते भी हैं और दुरूद पढ़ने वाले उस उम्मती को देखते और पहचानते भी हैं, चाहे उम्मती क़रीब हो कि बईद हों और एक मक़सद यह भी है कि फ़रिश्ता कहता है या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम फ़लां के बेटे फ़लां ने इतनी बार आप की ख़िदमते अक़दस में दुरूद पेश किया है। सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह, उस दरबारे आली में और हम फ़क़ीरों गुनाहगारों का नाम वह भी फ़रिश्तों की ज़बान से। वह लोग कितने ख़ुश नसीब हैं जिन का नाम दुरूद शरीफ़ पढ़ने की वजह से सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में पेश होता है। सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुश होते हैं और अपने उस गुलाम के लिये दुआ भी करते हैं।

भर के झोली मेरी मेरे सरकार ने
मुस्कुरा कर कहा और क्या चाहिये
आता है फ़क़ीरों पे उन्हें प्यार कुछ ऐसा
ख़ुद भीक दें और ख़ुद कहें मंगता का भला हो

हज़रात! अल्लाह तआला हमारे आमाल व अफ़आल देखता है, हमारे अक़वाल सुनता है फिर भी फ़रिश्ते हमारे आमाल व अफ़आल और अच्छे बुरे अक़वाल सब अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करते हैं। इस से यह मतलब हरगिज़ नहीं कि अल्लाह तआला को इल्म नहीं, फ़रिश्तों के बताने से अल्लाह तआला को मालूम होता है नहीं बल्कि अल्लाह तआला को सब कुछ ख़बर है, मगर यह फ़रिश्तों की ज़िम्मेदारी है कि बारगाहे ख़ालिक़ व मालिक में बन्दों के आमाल पेश करें। बस इसी तरह फ़रिश्तों की ज़िम्मेदारी है कि बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में उम्मती का दुरूदो सलाम पहुँचाएं। इस का यह मतलब नहीं कि जब तक फ़रिश्ते न पहुँचाएंगे तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़बर न होगी जिस तरह अल्लाह तआला कायनात की हर चीज़ से बा ख़बर है, इसी तरह हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी ख़ुदा की देन व अता से सारे आलम को देख रहे हैं और सारी चीज़ों से बा ख़बर हैं।

इमामे अहले सुनन्नत सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअले करामत पे लाखों सलाम

قِيْلَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَرَاَيْتَ صَلٰوةَ الْمُصَلِّيْنَ عَلَيْكَ مِمَّنْ غَابَ عَنْكَ وَمَنْ يَّاْتِيْ بَعْدَكَ مَا حَالُهُمَا عِنْدَكَ فَقَالَ اَسْمَعُ صَلٰوةَ اَهْلِ مَحَبَّتِيْ وَاَعْرِفُهُمْ وَتُعْرَضُ عَلَيَّ صَلٰوةُ غَيْرِهِمْ عَرْضًا ○

(10) यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पूछा गया कि आप के नज़दीक आप से दूर रहने वालों और आप के बाद में आने वाले दुरूदों का क्या हाल है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि महब्बत वालों के दुरूद मैं ख़ुद सुनता हूँ और उन को पहचानता हूँ और उन के अलावा का दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

لَيْسَ مِنْ عَبْدٍ يُّصَلِّيْ عَلَيَّ اِلَّا بَلَغَنِيْ صَوْتُهٗ حَيْثُ كَانَ قُلْنَا وَبَعْدَ وَفَاتِكَ قَالَ وَبَعْدَ وَفَاتِيْ اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ ○

(11) कोई बन्दा ऐसा नहीं जो मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़े मगर उस की आवाज़ मुझे पहुँचती है, वह दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला कहीं हो सहाबए किराम ने अर्ज़ किया, आप के विसाल फ़रमाने के बाद भी? फ़रमाया हाँ मेरे विसाल के बाद भी? फ़रमाया हाँ मेरे विसाल के बाद भी क्यों कि अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अंम्बियाए किराम के जिस्मों को खाना हराम फ़रमा दिया है। (तबरानी, जिलाउल इफ़हाम)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ के बाद अब किसी क़िस्म का शुबा तक बाक़ी नहीं रहता कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारा दुरूदो सलाम नहीं सुन सकते बल्कि अपने हर गुलाम के दुरूदो सलाम को खुद समाअत फ़रमाते हैं, चाहे उन का गुलाम दुनिया के किसी भी ख़ित्ते में हो। और दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ की हदीस में तो यह फ़रमाया कि मैं अपने उस गुलाम को पहचानता भी हूँ। बहर हाल यह बात रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिर व बाहिर हो गई कि हमारे सरकार रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर उम्मती का दुरूदो सलाम खुद समाअत फ़रमाते हैं चाहे दुरूद पढ़ने वाला क़रीब से पढ़ रहा हो या दूर से।

इमामे अहले सुन्नत सरापा इश्क़ो महब्बत, सरकार आला हज़रत, अज़ीमुल बरकत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़रियाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअ़ले करामत पे लाखों सलाम

अम्बियाए किराम ज़िन्दा हैं

عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ
عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ ؀

(1) हज़रत अबी दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के जिस्मों को खाना हराम फ़रमा दिया है। लिहाज़ा अल्लाह तआला के नबी ज़िन्दा हैं, रिज़्क़ दिये जाते हैं। (इब्ने माजह, स. 118, मिश्कात शरीफ़)

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के नबी दुनियवी ज़िन्दगी की हक़ीक़त के साथ ज़िन्दा हैं (अशिअ़तुल लमआत, स. 576)

और हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की दुनियवी ज़िन्दगी और विसाल के बाद की ज़िन्दगी में कोई फ़र्क़ नहीं। इसी लिये कहा जाता है कि अम्बियाए किराम मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर में मुन्तक़िल हो जाते हैं। (मिरक़ात, जि. दोम, स. 212)

عَنْ اَوْسِ بْنِ اَوْسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ ؀

(2) हज़रत औस बिन औस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के जिस्मों को ज़मीन पर खाना हराम फ़रमाया।
(अबू दाऊद, नसाई, जि. 1, स. 155, इब्ने माजह, स. 118, दार्मी बैहक़ी, मिश्कात)

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह उस हदीस के तहत फ़रमाते हैं कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं। (मिरक़ात, जि. दौम, स. 209)

और हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इसी हदीस की शरह में फ़रमाते हैं कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ज़िन्दा हैं और उन की ज़िन्दगी सब मानते हैं (मगर मुनाफ़िक़ नहीं मानता) किसी को उस में इख़्तिलाफ़ नहीं है, उन की ज़िन्दगी जिस्मानी, हक़ीक़ी, दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ़ मअनवी और रूहानी नहीं है
(अशिअतुल लमआत, स. 576)

साहिबे नसीमुर्रियाज़ फ़रमाते हैं कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम हक़ीक़ी ज़िन्दगी के साथ अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं।

ऐ ईमान वालो! मज़कूरा अहादीसे करीमा और मशहूर मअरूफ़ बुज़ुर्ग हज़रत मुल्ला अली क़ारी और मअरूफ़ व मक़बूOल मुहद्दिस हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा वग़ैरहुम के अक़वाल की रौशनी में यह बात पायए सुबूत को पहुँच कर ज़ाहिर व बाहिर हो जाती है कि अल्लाह तआला के तमाम नबी अलैहिमुस्सलाम जिस्मानी, हक़ीक़ी यहाँ तक कि दुनियवी ज़िन्दगी के साथ दिज़न्दा हैं,. यही ईमान व अक़ीदा तमाम सहाबए किराम, ताबेईने किराम, तबअ ताबेईने किराम और अइम्मए मुजतहेदीन हत्ता कि तमाम मुसलमानों का था और आज भी अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से अहले सुन्नत व जमाअत यानी ईमान वालों का यही ईमान व अक़ीदा है और जब तक चाँद की चाँदनी, सूरज की रौशनी, सितारों क़ी जगमगाहट, दिन का उजाला, रात की स्याही बाक़ी रहेगी ईमान वालों का यही अक़ीदा रहेगा कि हमारे नबी सरकारे मदीना, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त से कल भी ज़िन्दा थे, आज भी ज़िन्दा हैं और हमेशा के लिये ज़िन्दा हैं।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

तू ज़िन्दा है वल्लाह, तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

दुरूदे पाक की मजलिस

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे मदीना मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजलिसों को ज़ीनत दो, बेशक मुझ पर दुरूद पढ़ना क़ियामत के

दिन तुम्हारे लिये नूर होगा। बाज़ सहाबए किराम से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जिस मजलिस में सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद पढ़ा जाता है, उस मजलिस से एक ऐसी पाकीज़ा ख़ुश्बू फूटती है जो आसमान तक पहुँच जाती है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि यह वह मजलिस है जिस में महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद पढ़ा गया है। (दलाइलुल ख़ैरात)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूदो सलाम के आदाब

सरकारे मदीना मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम भेजने के वक़्त अदब व एहतिराम को मलहूज़ रखना फ़र्ज़ है, पाक जगह पर बैठकर, खड़े होकर चलते फिरते, वुज़ू हो तो अफ़ज़ल है और बग़ैर वुज़ू भी पढ़ सकते हैं। हो सके तो ख़ुश्बू भी लगाए और मदीना शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करके अदब से बैठे और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत कर चुका हो तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सूरते मुबारका को तसव्वुर में लाए इस तरह कि गोया आप सामने जलवा अफ़रोज़ हैं और मैं आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में दुरूदो सलाम का तोहफ़ा पेश कर रहा हूँ, और इन्तिहाई अदब व ताज़ीम और अज़मते सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पेशे नज़र शर्मो हया से आँखें नीची रखे और यक़ीने कामिल रहे कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु ताला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझ गुनाहगार को देख रहे हैं और दुरूदो सलाम का नज़राना क़ुबूल फ़रमा रहे हैं और अगर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए पाक की ज़ियारत से बारियाब हो चुका हो तो दुरूद शरीफ़ पढ़ते वक़्त ख़याल करे कि अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए पाक पर हाज़िर हूँ और उस मुक़द्दस बारगाह की शान व अज़मत का कया पूछना कि जिस को ख़ुदाए तआला अपनी बारगाह फ़रमाता है, यह रोज़ए शरीफ़ जिस की ज़ियारत से हम मुशर्रफ़ हुए हैं यह तो कअ़बे का भी कअ़बा है।

आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हाजियो आओ शहंशाह का रोज़ा देखो
कअ़बा तो देख चुके कअ़बे का कअ़बा देखो

और फ़र्ते अदब से हदयए दुरूदो सलाम पेश कररहा हूँ, उस अदब व एहतिराम से अगर तू दुरूद शरीफ़ पढ़ना अपनी आदत बना लेगा तो ज़रूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम तेरी बात सुनेंगे और तुझ से कलाम फ़रमाऐंगे। (रूहुल बयान, जि. 7, स. 233)

दुरूदो सलाम के औक़ात व मक़ामात

बुज़ुर्गाने दीन उलमाए किराम ने ख़ुसूसियत के साथ हस्बे ज़ेल मवाक़ेअ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तजाब फ़रमाया है।

जो शय तेरी निगाह से गुज़रे दुरूद पढ़
हर जुज़ व कुल है मज़हरे अनवारे मुस्तफ़ा

(1) जुमा के दिन (2) जुमा की रात में (3) दो शम्बा के दिन (4) दो शम्बा की रात में (5) मस्जिद में जाते और मस्जिद से निकलते वक़्त (6) सुबहो शाम (7) रोज़ए अक़्दस की ज़ियारत के वक़्त (8) सफ़ा और मरवह पर (9) ख़ुतबा में इमाम के लिये (10) अज़ान के जवाब के बाद (11) वुज़ू करते वक़्त (12) जब कोई चीज़ भूल जाए उस वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़े भूली हुई चीज़ याद आ जाएगी। (13) वअ़ज़ कहने और तालीम लेने और तालीम देने के वक़्त (14) लिखने के वक़्त (15) निकाह और मंगनी के वक़्त (16) हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़िक्र के वक़्त और अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक सुने तो अंगूठा चूम कर आँखों से लगाए और फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। मुलख़्ख़सन (जज़्बुल क़ुलूब, स. 275)

दुरूद शरीफ़ लिखना वाजिब है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक लिखे तो दुरूद शरीफ़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम या इस तरह का कोई भी दुरूद शरीफ़ ज़रूर लिखे कि बाज़ उलमा के नज़दीक जब सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे मुबारक लिखे तो दुरूद शरीफ़ लिखना वाजिब है। (बहारे शरीअत)

दुरूद शरीफ़ की जगह सलअम और अलैहिस्सलाम की जगह अम लिखना नाजाइज़ और हराम है। यूँ ही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जगह रज़ि. रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की जगह रह. लिखते हैं यह भी नहीं चाहिये और अल्लाह तआला के मुबारक नाम के साथ जल्ला जला लुहू पूरा लिखें, आधे जीम पर इक्तिफ़ा न करें। यह बला अवाम तो अवाम चौदहवीं सदी के बड़े बड़े पढ़े लिखे लोगों में भी फेली हुई है, निहायत अफ़सोस की बात है कि एक ज़र्रा सियाही या एक उंगल काग़ज़ या एक सेकन्ड वक़्त बचाने के लिये कैसी कैसी अज़ीम बरकतों से और कितनी बड़ी बड़ी सआदतों से महरूम हो जाते हैं।

हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि पहला वह शख़्स जिस ने ऐसा कि, उस का हाथ काटा गया। (फ़तावा अफ़रीक़ा)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(5)

जुमादल ऊला

पहला जुमा .... दूसरा बयान

बरकाते सलातो सलाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

तर्जमा : बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और खूब सलाम भेजो। (पारा 22, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत सय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि हमारे सरकार, जाने रहमत, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद भेजना गुनाहों के मिटाने में, आग को बुझाने वाले ठन्डे पानी से ज़्यादा मुअस्सर है और आप की बारगाहे अक़्दस में सलाम का नज़राना पेश करना गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा अफ़ज़ल है और आप की महब्बत जान से ज़्यादा अफ़ज़ल व आला है। (नसीमुर्रियाज, जि. 3, स. 499)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

सहबाए किराम व अहले बैते इज़ाम का दुरूदो सलाम

सहाबए किराम व अहले बैते इज़ाम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को सरकार नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से किस क़दर महब्बत थी कि उन को सफ़र करना होता तो जाने से पहले और आने के बाद रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए पाक पर हाज़िर हो कर सलातो सलाम अर्ज़ करते उस के बाद ही कोई दूसरा काम करते थे यहाँ तक कि कोई उन में से जब अपने किसी दोस्त या अज़ीज़ को मदीना शरीफ़ आने की दावत देता तो इस तरह कहता। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में सलातो सलाम अर्ज़ करने के लिये कब आ रहे हो ?

हज़रत कअ़ब अहबार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैतुल मुक़द्दस की सुलह के मौक़े पर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए आप को हज़रत कअ़ब के ईमान लाने से बेहद ख़ुशी हुई कि मदीना तैय्यिबा में सुकूनत इख़्तियार करें। हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया कअ़ब हमारे हमराह चलकर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत कर लो। हज़रत कअ़ब ने ख़ुश हो कर कहा बहुत ख़ूब ज़रूर चलुंगा और मदीना मुनव्वरा जाकर सब से पहला काम जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा वह यही था कि उन्होंने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए अनवर पर हाज़िर हो कर सलातो सलाम पढ़ा। हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रहमतुल्लाहि अलैह ने सही सनदों के साथ रिवायत की है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जब सफ़र से वापस आते थे तो सब से पहले सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए मुबारका पर हाज़िर हो कर अर्ज़ करते:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَااَبَابَكْرٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَااَبَتَاهُ

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَاٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ وَسَلَّمْ

(जज़्बुल क़ुलूब, स. 252)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद और आमाले ख़ैर

अल्लामा सख़ावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने दुरूदो सलाम के पढ़ने पर, अज़ीम फ़वाइद व समरात के मिलने पर बहुत सी रिवायतों को नक़्ल फ़रमाया है जिन में से एक तवील हदीस यह है फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समोरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि गुज़श्ता रात मैंने अपने एक उम्मती को देखा उस के पास मलकुल मौत रूह क़ब्ज़ करने के लिये आए तो वालिदैन के साथ हुसने सुलूक आया और मलकुल मौत को लौटा दिया। एक उम्मती को देखा उस पर अज़ाबे क़ब्र मुसल्लत हुआ तो उस का वुज़ू आया और उस को अज़ाबे क़ब्र से छुटकारा दिला दिया। एक उम्मती को देखा उस को शयातीन ने घेर लिया। पस उस का ज़िक्रे इलाही आया और ज़ाकिर को शयातीन के नर्ग़ा से निकाल लिया, एक उम्मती को देखा प्यास की शिद्दत से उस की ज़बान बाहर निकली हुई है और वह जब हौज़ के क़रीब जाता है तो उसे पानी पीने से रोक दिया जाता है पस उस का रोज़ा आया और उस को पानी से सैराब कर दिया, एक उम्मती को देखा अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम हलक़ा वार तशरीफ़ फ़रमा हैं। और जब यह उन के क़रीब जाता है तो धुतकार दिया जाता है, पस उस का ग़ुस्ले जनाबत आया और उस को मेरे पहलू में बिठा दिया

एक उम्मती को देखा उस के आगे पीछे, दाएं बाएं ऊपर नीचे हर तरफ़ अन्धेरा ही अन्धेरा है पस उस का हज व उमरह आया और उस को रौशनी में पहुँचा दिया, एक उम्मती को देखा वह मोमिनीन से कलाम करना चाहता है लेकिन ईमान वाले उस से कलाम नहीं करते, पस उस का सिला रहमी (रिश्तेदारों से बहतर सुलूक) का अमल आया और कहा ऐ ईमान वालो! उस से कलाम करो यह अपने अज़ीज़ व अक़ारिब के साथ सिला रहमी करता था, पस मोमिनीन ने उस से सलाम व मुसाफ़हा किया, एक उम्मती को देखा जो नारे जहन्नम की तपिश और उस के शरारों से अपने आप को बचाना चाहता है पस उस का सदक़ा आया और उस के चेहरे और नारे जहन्नम के दरमियान पर्दा बन कर हाइल हो गया और उसके सर पर साया फ़गन हो गया, एक उम्मती को देखा उस को दोज़ख़ के सिपाही घेरे हुए हैं पस उस के काम अम्र बिल मअ़रूफ़ (भलाई का हुक्म देना) और नही अनिल मुनकर (बुराई से रोकना) आया और उस को अज़ाब के फ़रिश्तों से छुटकारा दिला कर रहमत के फ़रिश्तों के हवाले कर दिया एक उम्मती को देखा उस का नामए आमाल बाएं जानिब रखा गया पस उस के पास उस का ख़ौफ़े इलाही आया और उस का नामए आमाल दाएं तरफ़ कर दिया, एक उम्मती को देखा उस को जहन्नम में ड़ाल दिया गया पस उस का ख़ौफ़े इलाही में निकला हुआ आंसू आया और उस को जहन्नम से निकाल लिया एक उम्मती को देखा वह दो ज़ानू बैठा है उस के और अल्लाह तआला के दरमियान हिजाब (पर्दा) है, पस मेरी महब्बत आई और उस का हाथ पकड़ कर बरगाहे ख़ुदावन्दी में दाख़िल कर दिया, एक उम्मती को देखा वह पुल सिरात पर बीमार ऊंट की तरह कांपता है, पस मुझ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर भेजा हुआ दुरूद आया और उस की कपकपी को दूर कर दिया। (अल क़ौलुल बदीअ, स. 126)

आशिक़े रसूल, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

एक दुरूद शरीफ़ की बरकत से जन्नत का परवाना मिला

हज़रत अल्लामा सख़ावी रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की एक रिवायत की है कि क़ियामत के दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अर्श के साए में जलवा अफ़रोज़ होंगे और यह मुलाहज़ा फ़रमाएंगे कि उन की औलाद में से किन लोगों को फ़रिश्ते दोज़ख़ की तरफ़ ले जा रहे हैं और किन लोगों को जन्नत की तरफ़ ले जा रहे हैं। अचानक वह मुलाहज़ा फ़रमाऐंगे कि फ़रिश्ते हुज़ूर शाफ़ए मेहशर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के एक उम्मती को दोज़ख़ की तरफ़ ले जा रहे हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हुज़ूर सरापा नूर, रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को इस बात की इत्तिला फ़रमाऐंगे तो हमारे सरकार, ग़मख़्वार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इत्तिला पाते ही बे क़रार व बे चैन हो कर उस उम्मती के

पास तशरीफ़ ले जाएंगे और फरिश्तों से इरशाद फ़रमाएंगे कि इस मेरे उम्मती के नामए आमाल को फिर से वज़न करो, फरिश्ते अर्ज करेंगे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिका वसल्लम हम अल्लाह तआला की इताअत करते हैं इसके नामए आमाल में नेकियाँ बहुत कम हैं फ़रिश्तों की इस बात को सुन कर हमारे नबी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बारगाहे किब्रिया में इल्तिजा फ़रमाएँगे।

يَارَبِّ اَلَيْسَ قَدْ وَعَدْتَنِيْ اَنْ لَّا تُخْزِيَنِيْ فِيْ اُمَّتِيْ ۝

ऐ मेरे रब ! क्या तू ने मुझ से यह वादा नहीं फ़रमाया कि मुझे मेरी उम्मत के बारे में रुसवा न फ़रमाएगा।

तो अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएगा ऐ फ़रिश्तो ! मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म की इताअत करो। चुनाँचे उस गुनाहगार उम्मती के नामए आमाल को दुबारह वज़न किया जाएगा और हमारे रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कागज़ का एक छोटा सा पुरज़ा उस की नेकियों के पलड़े में रख देंगे जिस से नेकियों का पलड़ा भारी हो जाएगा और वह शख़्स जन्नत का हक़दार हो जाएगा, वह गुनाहगार उम्मती अर्ज़ करेगा।

قَدْ مَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ فِي الَّذِيْ يُؤْجِرُكَ

आप की सूरत व सीरत कैसी प्यारी है मुझ गुनाहगार पर लुत्फ़ो करम की बारिश फ़रमाने वाले आक़ा आप कौन हैं और यह काग़ज़ का पुरज़ा कैसा था ? सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाएँगे तुम्हारा नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हूँ और यह काग़ज़ का पुरज़ा तुम्हारा दुरूद है जो तुम ने मुझ पर भेजा था। (अल क़ौलुल बदीअ, स. 123)

सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

दुरूद की बरकत से मालदार हो गया

तोहफ़तुल अख़यार के मुसन्निफ़ ने यह हदीस नक़्ल की है कि सरवरे आलम, मुख़्तारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो मुझ पर रोज़ाना पाँच सो मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े वह कभी मोहताज न होगा। फिर यह हदीस नक़्ल करने के बाद एक वाक़िआ बयान फ़रमाया।

एक नेक आदमी था उस ने यह हदीस शरीफ़ सुनी तो ग़लबए शौक़ के साथ पाँच सो बार दुरूद शरीफ़ का विर्द रोज़ाना शुरू कर दिया उस की बरकत से अल्लाह तआला ने उस को ग़नी (मालदार) कर दिया और ऐसी जगह से उसे रिज़्क़ अता फ़रमाया कि उसे पता भी न चल सका हालांकि उस से पहले वह मुफ़लिस और हाजत मन्द था। (तोहफ़तुल अख़यार)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दौलत जो चाहो दोनों जहाँ की
कर लो वज़ीफ़ा नामे मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

दुरूद पढ़ने वाला अर्श के साए में होगा

सरकारे मदीना, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के अर्श के सिवा कोई साया न होगा। तीन शख़्स अल्लाह तआला के अर्श के साए में होंगे, अर्ज़ किया गया। या रसूलल्लाह अलैकस्सलातो वस्सलाम वह कौन लोग होंगे ? सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

(1) वह शख़्स जो मेरे किसी उम्मती की परेशानी दूर कर दे।
(2) वह शख़्स जो मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करे। और
(3) वह शख़्स जो मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़े।

(अल क़ौलुल बदीअ़, स. 123, अफ़ज़लुस्सलात अला सय्यिदुस्सादात)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि : जब अल्लाह तआला के नेक बन्दे आपस में मुलाक़ात कर के बाहम मुसाफ़हा करते और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं तो उन दोनों के अलेहदा होने से पहले अल्लाह तआला उन के तमाम अगले पिछले गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है। (शरह हिस्ने हसीन, जज़्बुल क़ुलूब, स. 267)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

शहद में मिठास की वजह

हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि एक बार आमना के लाल हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने शहद की मक्खी से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तू शहद कैसे बनाती है ? शहद की मक्खी ने अर्ज़ किया या हबीबल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हम चमन में जाकर हर क़िस्म के फूलों का रस चूस कर अपने मुंह में लिये हुए आते हैं और छत्ते में

उगल देते हैं वही रस शहद बन जाता है। सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि फूलों के रस तो फीके और कड़वे भी होते हैं और तुम्हारा शहद कभी फीका और कड़वा नहीं होता है यह तो बताओ कि शहद में मिठास कहाँ से आती है ? शहद की मक्खी ने अर्ज़ किया :

फ़ारसी....................

यानी कड़वे और फीके रस को छत्ते में डालने से पहले ऐ प्यारे आक़ा ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हम आप पर दुरूद का तोहफ़ा पेश करते हैं फिर रस को छत्ते में डालते हैं तो सारे फीके और कड़वे सब के सब मीठे हो जाते हैं और शहद की यह लज़्ज़त और मिठास दुरूदे पाक ही की बरकत से है। (मसनवी शरीफ़)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात ! जिस तरह दुरूद शरीफ़ की बरकत से फीका रस, कड़वा रस, मीठा हो गया, इसी तरह अगर हम दुरूद शरीफ़ का नज़राना सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में पेश करते रहेंगे तो हमारी फीकी इबादतों में भी दुरूदे पाक की बरकत से क़ुबूलियत की मिटास पैदा हो जाएगी जिस तरह दुरूद शरीफ़ की बरकत से शहद शिफ़ा बिन गया इसी तरह हमारी हर दुआ दुरूद शरीफ़ की बरकत से अल्लाह तआला की बारगाहे करीमी में मक़बूल व मन्ज़ूर बन जाएगी।

दौलत जो चाहो दोनों जहाँ की
कर लो वज़ीफ़ा नामे मुहम्मद
(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

दुरूद और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

अल्लमा सख़ावी रहमतुल्लाहि अलैह नक़्ल फ़रमाते हैं कि कअ़बुल अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर वही भेजी :

ऐ मूसा ! अगर मेरी इबादत करने वाला कोई न होता तो मैं गुनाहगारों को पलक झपकने की भी मोहलत न देता और ऐ मूसा ! अगर ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने वाला कोई न होता तो जहन्नम को दुनिया पर बहा देता। ऐ मूसा ! क्या तू पसन्द करता है कि क़ियामत के रोज़ तू प्यासा न हो ? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ क्या इलाही हाँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया तो फिर मेरे प्यारे महबूब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कसरत से दुरूद पढ़ा करो। (अल क़ौलुल बदीअ, स. 123)

दुरूद शरीफ़ :

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ की बरकत से बख़्श दिया गया

बनी इस्राईल में एक गुनाहगार आदमी था जब वह मर गया तो लोगों ने न उस का जनाज़ा उठाया और न गुस्ल दिया, अल्लाह तआला की तरफ़ से मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया गया कि ऐ मूसा ! उसे गुस्ल दे कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ो ! इस लिये कि हम ने उस को बख़्श दिया है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हैरान हो कर उस की वजह मालूम की। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जवाब मिला कि उस ने एक रोज़ तोरेत खोली और उस में हमारे प्यारे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम लिखा देख कर महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद पढ़ा, बस दुरूद शरीफ़ की बरकत से हम ने उस के गुनाहों को बख़्श दिया। (सुरूरुल क़ुलूब)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

शफ़ाअत का सवाली

हज़रत इब्राहीम अली बिन अतिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं ने ख़्वाब में सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत की तो बारगाहे करम में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं आप की शफ़ाअत का तालिब हूँ तो सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा करो। (सआदतुद्दारैन)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का दुरूदो सलाम

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुल्के शाम से मदीना मुनव्वरा क़ासिद भेजा करते थे। जो हुज़ूर पुर नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए अतहर पर हाज़िर हो कर अमीरुल मोमिनीन की तरफ़ से दुरूदो सलाम पेश किया करता था। (जज़बुल क़ुलूब, स. 232)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

शैख़ कबीर सय्यद अहमद रिफ़ाई का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

हज़रत इमाम सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तहरीर फ़रमाया है कि शैख़ कबीर सय्यद अहमद रिफ़ाई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुए और दरबारे रिसालत में

सलातो सलाम के बाद अर्ज़ किया :

فِيْ حَالَةِ الْبُعْدِ رُوْحِيْ كُنْتُ اُرْسِلُهَا تُقَبِّلُ الْاَرْضَ عَنِّيْ وَهِيَ نَائِبَتِيْ وَهٰذِهٖ
نَوْبَةُ الْاَشْبَاحِ قَدْ حَضَرَتْ فَامْدُدْ يَمِيْنَكَ كَيْ تَحْظٰى بِهَا شَفَتِيْ۝

दूरी की हालत में अपनी रूह को भेजा करता था वह मेरी क़ाइम मक़ाम बन कर ज़मीं बोसी कर लेती थी और उस वक़्त जिस्मानी हाज़िरी के साथ दरबार में हाज़िर हूँ दस्ते करीम बाहर निकालिये ताकि मेरे लब दस्ते पाक को बोसा दे कर महज़ूज़ व मसरूर हों।

चुनाँचे हज़रत शैख़ कबीर सय्यद अहमद रिफ़ाई रज़ियल्लाहु अन्हु की अर्ज़ व दरख़्वास्त पर रहमत बे कसां, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दस्ते करम रोज़ए शरीफ़ से बाहर निकला और हज़रत इमाम रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने दस्ते करम को बोसा दिया। बहुत से औलियाए किराम उस वक़्त हाज़िरे बारगाह थे और यह ईमान अफ़रोज़, नूरानी मन्ज़र को अपने सर की आँखों से मुलाहज़ा किया। (ख़साइसे कुबरा)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत इमाम ग़ज़ाली और सलाम

وَاحْضِرْ فِيْ قَلْبِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَشَخْصَهُ الْكَرِيْمَ
وَقُلْ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۝

और अपने दिल में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और उन की बुज़ुर्ग शख़्सियत का तसव्वुर कर और कह اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ और यक़ीन रख कि सलाम पहुँच गया और सलाम का जवाब अफ़ज़ल आएगा। (अहयाउल उलूम)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ की बदौलत मरने के बाद इनआम

हज़रत शैख़ अहमद बिन मन्सूर अलैहिर्रहमा का जब इन्तिक़ाल हुआ तो अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वह शीराज़ की जामेअ मस्जिद के महराब में ख़ड़े हैं और वह बेहतरीन जन्नती लिबास पहने हुए हैं और सर पर मोतियों वाला ताज सजा हुआ है ख़्वाब देखने वाले ने अर्ज़ किया, हज़रत क्या हाल है ? तो उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे बख़्श दिया और मुझ पर करम फ़रमाया और मुझे ताज पहना कर जन्नत में दाख़िल किया पूछा किस सबब से आप को यह अज़ीम रुतबा मिला ? तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करता था और यही मुबारक अमल काम आ गया। (अलक़ौलुल बदीअ)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

ज़ालिम बादशाह से पनाह मिली

एक शख्स एक ज़ालिम बादशाह के ज़ुल्म व सितम से तंग आकर भागा और जंगल में बैठ कर हुज़ूर पुर नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढा और उस के बाद अर्ज़ किया कि इलाही ! मैं तेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तवस्सुल से इस ज़ालिम बादशाह से पनाह मांगता हूँ, अभी वह दुआ से फ़ारिग़ भी न हो सका था कि ग़ैब से आवाज़ आई कि मेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का वसीला तमाम वसीलों से बेहतर है। हम ने तेरी दुआ कुबूल की और तेरे दुश्मन को हलाक कर दिया जब वह जंगल से वापस शहर में आया तो इस बात की तस्दीक़ हो गई कि ज़ालिम बादशाह मर गया।

(नुज़हतुल मजालिस, स. 2)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों' की सरवत पे लाखों सलाम

एक लड़की और दुरूद शरीफ़

साहिबे दलाइलुल ख़ैरात हज़रत मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ोली रहमतुल्लाहि तआला अलैह सफ़र के दरमियान फ़ारस के एक गांव में गए ज़ोहर की नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो रहा था वुज़ू के लिये पानी की हाजत थी हर तरफ़ तलाश किया मगर पानी कहीं दस्तियाब न हुआ एक कुंवा नज़र भी आया मगर डोल और रस्सी का पता न था। बड़ी मुश्किल पेश आ गई थी इतने में सामने से एक लड़की आती हुई नज़र आई जिस की उम्र नो बरस की थी उस लड़की ने आप को परेशान व मुतफ़क्किर देख कर पूछा, शैख़ क्या बात है ? आप परेशान क्यों हैं ? आप ने फ़रमाया ज़ोहर का वक़्त तंग हो रहा है, कुंए पर रस्सी और डोल नहीं है जिस से वुज़ू के लिये पानी निकाल सकूँ, मेरी परेशानी का यही सबब है, तुम इस सिलसिले में कुछ मदद कर सकती हो तो करो मैं मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ोली हूँ, और इत्तिफ़ाक़ है कि इस तरफ़ आ गया हूँ। लड़की ने कहा कि हैरत है कि आप एक मशहूर व मअ़रूफ़ बुज़ुर्ग हो कर भी एक मामूली सा काम अन्जाम देने से क़ासिर हैं!

इतना कह कर लड़की ने कुंए में थूक दिया लड़की केथूकते ही कुंएं के पानी में जोश आ गया पानी उबलने लगा। लहरें मारता हुआ पानी ऊपर तक आ गया और कुंएं से बाहर बहने लगा। हज़रत शैख़ और उन के साथियों ने वुज़ू करके नमाज़े ज़ोहर अदा की शैख़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर उस लड़की के मकान पर तशरीफ़ ले गए, दरवाज़ा पर दस्तक दी, लड़की बाहर आई और उस ने शैख़ को सलाम किया और तशरीफ़ लाने का सबब दरयाफ़्त किया, हज़रत शैख़ ने फ़रमाया कि तुम्हें उस ख़ुदाए पाक की क़सम जिस ने पैदा किया और सिराते

मुस्तक़ीम दिखाया मैं तुम्हें अल्लाह तआला और उस के तमाम रसूलों और हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी, जिन की शफ़ाअत की तमाम उम्मीद वार हो, उन का वास्ता दे कर कहता हूँ कि यह बताओ कि तुम को यह मरतबा और दर्जा कैसे नसीब हुआ। लड़की ने जवाब दिया कि अगर आप ने इतना बड़ा वास्ता न दिया होता तो मैं हरगिज न बताती। हक़ीक़त यह है कि मुझे यह रुतबा फ़लां दुरूद शरीफ़ पढ़ने से मिला है जो मेरे वज़ीफ़ा में है। हज़रत शैख़ ने लड़की से वह दरुद शरीफ़ सीख कर उस की इजाज़त हासिल कर ली। इस के बाद हज़रत शैख़ के दिल में यह शौक़ पैदा हुआ कि एक ऐसी किताब लिखी जाए जिस में तमाम मुन्तख़ब और बेहतरीन दुरूदे पाक एक जगह जमा हो जाएं जिस में उस लड़की का बताया हुआ वह अफ़ज़ल व आला दुरूदे पाक भी शामिल हो चुनाँचे शैख़ ने दलाइलुल ख़ैरात के नाम से किताब तहरीर की उस में लड़की की वह दुरूद शरीफ़ भी दर्ज है। (दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मदद

हज़रत सुफ़ियान सोरी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने हज के मौक़े पर एक सालेह जवान को देखा कि वह जब भी क़दम उठाता या रखता है तो यह दुरूदे पाक पढ़ता है

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

मैंने उस सालेह नौजवान से पूछा कि यह बात जान बूझ कर करते हो ? उस ने जवाब दिया हाँ फिर मुझ से पूछा कि तुम कौन हो ? मैं ने जवाब दिया कि मैं सुफ़ियान सोरी हूँ। उसने कहा इराक़ी ? मैं ने कहा हाँ उस ने सवाल किया कि तुम ने ख़ुदा को कैसे पहचाना ? मैं ने जवाब दिया इस सबब से कि वह रात को दिन और दिन को रात में दाख़िल करता है। और बच्चे को शिकमे मादर में सूरत वाला बनाता है। उस ने फिर कहा कि ऐ सुफ़ियान ! तुम ने ख़ुदा को जैसा पहचानने का हक़ है नहीं पहचाना। मैं ने दरयाफ़्त किया कि तुम ने ख़ुदा को कैसे पहचाना, जवाब दिया कि अज़्म व इरादा कब टूट जाने से कि जब मैं ने किसी काम का इरादा किया और उस के ख़िलाफ़ हुआ तो मैं ने यक़ीन कर लिया कि मेरा कोई ख़ुदा है जो काम की तदबीर करता है। फिर मैं ने पूछा कि इस क़दर दुरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ने की क्या वजह है ? उस ने एक वाक़िआ बयान करते हुए कहा कि हज के सफ़र में मेरी वालिदा मोहतरमा हमराह थीं, उन्होंने मुझ से कहा कि मुझे ख़ानए कअ़बा के अन्दर पहुँचा दो। यक बयक उन का पेट फूल गया और मुंह स्याह हो गया। मैं उन का यह हाल देख कर बहुत ही रन्जीदा और फ़िक्र मन्द हुआ। दोनों हाथ उठा कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ की कि ऐ परवरदिगारे आलम जल्ला जला लुहू तू उसे ऐसी मुसीबत में डालता है जो तेरे घर की ज़ियारत के लिये आया है। यह दुआ करते ही एक बादल आसमान से उठा और एक सफ़ेद पोश मर्द ने आकर अपना हाथ मेरी मां के मुंह और पेट पर मला, उसी वक़्त वह बला दूर हो गई। जब उन्हों ने वापसी का

इरादा किया तो मैं ने उन का दामन पकड़ कर अर्ज़ किया कि आप कौन हैं ? और मुझे कुछ वसियत फ़रमाइये तो उन्होंने इरशाद फ़रमाया कि : मैं तुम्हारा नबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हूँ और हर क़दम उठाते और रखते वक़्त मुझ पर दुरूद शरीफ़ भेजा करो। (मुआरिजुन्नुबुव्वत, स. 328)

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तुम हो हफ़ीज़ो मुग़ीस, क्या है वह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद

शाफ़ी व नाफ़ी हो तुम, काफ़ी व वाफ़ी हो तुम
दर्द को कर दो दवा तुम पे करोरों दुरूद

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

सारा घर ख़ुश्बू से भर गया

शैख़ इब्ने हजर मक्की ने तहरीर फ़रमाया है कि एक मर्द सालेह हर शब सोते वक़्त एक मुक़र्ररा तादाद में दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता था एक रात उस ने ख़्वाब में देखा कि नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तशरीफ़ आवरी हुई और सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे मुबारक की बरकत से सारा घर रौशन हो गया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़रीब आओ ! वह मुंह जो दुरूद बहुत पढ़ता है उसको मैं बोसा दूँ। उस शख़्स को शर्मो हया दामन गीर हुई उस ने अपना रुख़सार सामने किया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस को बोसा दिया उस के बाद वह बेदार हो गया तो सारे घर में मुश्क की ख़ुश्बू भरी हुई थी और एक हफ़्ता तक रुख़सार से मुश्क की ख़ुश्बू आती रही।

(नुज़हतुल मजालिस, जि. 2, जज़बुल क़ुलूब, स. 265)

उन की महक ने दिल के गुन्चे खिला दिये हैं
जिस राह चल गए हैं कूचे बसा दिये हैं

हज़रात ! दुरूदे पाक के फ़ैज़ान का आलम आप ने मुलाहज़ा किया सरकारे दो आलम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई और करम बालाए करम कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले के मुंह को चूम लिया। यह है मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत।

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रत बख़्तियार काकी का तोहफ़ए दुरूद

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी अलैहिर्रहमा बयान फ़रमाते हैं हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर रात को तीन हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे जब उन का निकाह हुआ तो तीन रातों में हस्बे मामूल मुक़र्ररा दुरूद शरीफ़ न पढ़ सके। किसी से हुज़ूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़्वाब में फ़रमाया, बख़्तियार काकी को मेरा सलाम पहुँचा दो और उन से कह दो कि तुम हर रात जो तोहफ़ा मेरे पास भेजा करते थे, वह तीन रात से नहीं पहुँचा।

(अख़बारुल अख़यार, स. 325)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

गुनाहगार की बख़्शिश

रोज़तुल फ़ाइक़ के मुसन्निफ़ एक बुज़ुर्ग का वाक़िआ नक़्ल करते हैं कि उन के पड़ोस में एक गुनाहगार व बद अमल शख़्स रहता था। उस की मौत के बाद उस को जन्नत के बाग़ों में देखा कि वह घोड़े पर सवार जा रहा है। यह मन्ज़र देख कर उन को हैरत हुई, उस से दरयाफ़्त किया कि यह मरतबा तुझ को किस सबब से हासिल हुआ, उस ने जवाब दिया कि एक रोज़ मैं महफ़िले वअ्ज़ से गुज़रा, एक बुज़ुर्ग मीलाद शरीफ़ पढ़ रहे थे वअ्ज़ के दौरान उन्हों ने दुरूद शरीफ़ के कुछ फ़ज़ाइल बयान करते हुए हाज़िरीन से ब आवाज़ बलन्द फ़रमाया कि, पढ़ो आशिक़ो दुरूद पढ़ो, और ख़ुद भी निहायत ज़ौक़ व शौक़ के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने लगे मैं भी वहाँ हाज़िर था इस लिये मैं भी उन बुज़ुर्ग के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने लगा, बस दुरूदे पाक की बरकत से अल्लाह तआला ने मुझ गुनाहगार व बदकार को बख़्श दिया। (रौज़तुल फ़ाइक़)

गरचेह हैं बे हद कुसूर तुम अफ़ुवो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़ता तुम पे करोरों दुरूद

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

नेकियों, इबादतों और दुआओं की क़ुबूलियत का दारोमदार

एक बुज़ुर्ग नमाज़ पढ़ते हुए जब तशह्हुद में बैठते तो नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना भूल गए। रात जब आँख लगी तो ख़्वाब में ज़ियारते सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सरफ़राज़ हुए।

मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मेरे उम्मती ! तूने मुझ पर दुरूद शरीफ़ क्यों नहीं पढ़ा ? अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह !

सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम में अल्लाह तआला की हम्दो सना में ऐसा गुम हुआ कि दुरूद शरीफ़ पढ़ना याद नहीं रहा। यह सुन कर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तूने मेरी यह हदीस नहीं सुनी कि सारी नेकियाँ और सब इबादतें रोक दी जाती हैं जब तक मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा जाए सुन ले अगर कोई बन्दा क़ियामत के दिन दरबारे इलाही में सारे जहाँ वालों की नेकियाँ ले कर हाज़िर हो जाए और उन नेकियों में दुरूद शरीफ़ न हुआ तो सारी की सारी नेकियाँ उसके मुंह पर मार दी जाएगी। उन में से एक भी नेकी क़ुबूल न होगी। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 17)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

नेअ़मतों की बारिश

अब्दुल्लाह बिन हकम फ़रमाते हैं :

मैं ने ख़्वाब में हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा और पूछा अल्लाह तआला ने आप के साथ क्या मुआमला किया ?

फ़रमाया मुझ पर रहम फ़रमाया और बख़्श दिया और मेरे लिये जन्नत यूँ सजाई गई जैसे दुल्हन को सजाया जाता है और मुझ पर नेअ़मतें यूँ निछावर की गईं जैसे कि दुल्हन पर निछावर करते हैं। मैंने पूछा किस अमल के सबब ? फ़रमाया : दुरूद शरीफ़ की बरकत से

(सआदतुद्दारैन, स. 118)

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह क्या शान है दुरूदे पाक की कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला जन्नत में दूल्हा बनाया जाता है।

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

जन्नत का हक़दार

एक मर्द सालेह फ़रमाते हैं मैं मौसमे बहार में बाहर निकला और यूँ कहने लगा या अल्लाह ! दुरूद भेज अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दरख़्तों के पत्तों के बराबर, या अल्लाह ! दुरूद भेज अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर फूलों और फूलों की तादाद के बराबर, या अल्लाह ! दुरूद भेज अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर समन्दरों के क़तरों के बराबर, या अल्लाह ! दुरूद भेज रेगिस्तान की रेत के ज़र्रों के बराबर। या अल्लाह दुरूद भेज अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर उन चीज़ों की गिनती के बराबर जो समन्दरों और ख़ुश्की में हैं।

तो हातिफ़ से आवाज़ आई ए बन्दे ! तूने नेकियाँ लिखने वाले फ़रिश्तों को क़ियामत तक

थका दिया है और तू रब्बे करीम की बारगाह से जन्नत का हक़दार हुआ।

(नुज़हतुल मजालिस, जि. 2, स. 107)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुशी

एक शख़्स नेक और परहेज़गार था, नमाज़ रोज़ा का बहुत पाबन्द था मगर दुरूद शरीफ़ पढ़ने में सुस्ती और कोताही किया करता था। एक रात ख़्वाब में सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत की सआदत से सरफ़राज़ हुआ मगर हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं फ़रमाई, वह बार बार कोशिश करता शाहे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने आता मगर हर बार सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस से एराज़ फ़रमाते (मुंह फेरते) रहे। आख़िर उस ने घबरा कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या आप मुझ से नाराज़ हैं ? फ़रमाया नहीं अर्ज़ किया अगर नहीं तो हुज़ूर मुझ पर नज़रे इनायत क्यों नहीं फ़रमा रहे हैं। फ़रमाया मैं तुझे पहचानता ही नहीं, अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत का एक फ़र्द हूँ और मैं ने उलमाए किराम से सुना है कि हुज़ूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी उम्मत को बेटों से भी ज़्यादा अज़ीज़ रखते हैं। फ़रमाया ऐसा ही है, मगर तुम मुझे दुरूद शरीफ़ का तोहफ़ा नहीं भेजते, मेरी नज़रे इनायत और शफ़क़त उस उम्मती पर होती है जो मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है।

वह शख़्स बेदार हुआ और उस रोज़ से हर दिन बड़े शौक़ व महब्बत से दुरूदे पाक पढ़ता रहा एक दिन वह फिर ख़्वाब में मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत की नेअ़मत से मुशर्रफ़ हुआ और देखा कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बहुत ख़ुश हैं और फ़रमाते हैं अब मैं तुम्हें ख़ूब पहचानता हूँ और क़ियामत के दिन मैं तुम्हारी शफ़ाअत का ज़ामिन हूँ, लेकिन दुरूद शरीफ़ पढ़ना न छोड़ना। (मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 328/1)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद न पढ़ने पर सज़ा

एक शख़्स जब कभी रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्रे पाक सुनता तो वह दुरूद शरीफ़ पढ़ने से बुख़्ल करता, तो उस की ज़बान गूंगी हो गई

और आँखों से अन्धा हो गया, फिर वह गुस्ल ख़ाना की नाली में गिर गया और प्यासा मर गया इस लिये दुरूद शरीफ़ पढ़ने में बख़ीली से काम नहीं लेना चाहिये बल्कि जब भी अपने आ:क़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र हो या नामे मुबारक लिया जाए या दुरूद शरीफ़ पढ़ने के लिये कहा जाए तो झूम झूम कर दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। (सआदतुद्दारैन, स. 144)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

अज़मते मूए मुबारक और दुरूद शरीफ़

शहर बल्ख़ में एक सोदागर रहता था उस के दो बेटे थे, सोदागर का इन्तिक़ाल हो गया। उस ने तर्का में माल व ज़र के अलावा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तीन बाल शरीफ़ भी छोड़े। दोनों बेटों में तर्का तक़सीम हुआ। दुनियवी माल आधा आधा बांट लिया मगर बाल शरीफ़ की तक़सीम में यह मस्अला खड़ा हो गया कि उन को कैसे तक़सीम करें ? चुनाँचे बड़े लड़के ने यह तजवीज़ पेश की कि दोनों एक एक बाल शरीफ़ रख लें और एक बाल शरीफ़ को टुकड़े कर के आधा आधा बांट लें, छोटा लड़का जो कि निहायत आशिक़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम था यह तजवीज सुन कर कांप गया और उसने कहा, मैं हर गिज़ ऐसी बे अदबी की जुरअत नहीं कर सकता। मेरा दिल सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाल शरीफ़ के दो हिस्से करने की इजाज़त नहीं देता। यह सुन कर बड़े भाई ने बिगड़ कर कहा अगर तुझे बालों की अज़मत का इतना ही पास है तो यूँ कर कि तीनों बाल शरीफ़ तू रख ले और सारा सामान व दौलत मुझे दे दे। छोटे भाई ने उस फ़ैसले को क़ुबूल कर लिया और तीनों बाल शरीफ़ ले कर सारा माल ब ख़ुशी बड़े भाई के हवाले कर दिया। अब छोटे भाई ने अपना यह मामूल बना लिया कि तीनों मुक़द्दस बालों को सामने रख कर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे अज़मत में दुरूद शरीफ़ का नज़राना पेश किया करता। उस की बरकत से अल्लाह तआला ने उस के मुख़्तसर से कारोबार में उसे तरक़्क़ी अता फ़रमाई और वह मालदार हो गया। दूसरी तरफ़ बड़े भाई को दुनियवी माल में ख़सारे पर ख़सारा आने लगा। हत्ता कि वह मुफ़लिस व कंगाल हो गया। दरीं असना छोटे भाई का इन्तिक़ाल हो गया। किसी अल्लाह वाले ने उस छोटे भाई को ख़्वाब में उस हाल में देखा कि सरकारे मदीना सुरूरे क़ल्बो सीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसे पहलू में बिठा रखा है और सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमा रहे हैं :

जाओ ! लोगों से कह दो कि अगर उन्हें कोई हाजत हो तो मेरे उस आशिक़ की क़ब्र की ज़ियारत करें अल्लाह तआला उन की ज़रूरतें पूरी कर देगा।

उस अल्लाह वाले ने अपना ख़्वाब लोगों पर ज़ाहिर किया और सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पैग़ाम लोगों को सुनाया फिर क्या था,

लोग बड़े अदब व एहतिराम के साथ जोक़ दर जोक़ उस आशिक़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे पुर अनवर की ज़ियारत के लिये आने लगे। साहिबे मज़ार की बरकतों से लोगों की ज़रूरतें पूरी होने लगीं लोग उस मज़ार का बहुत अदब करते थे यहाँ तक कि अगर कोई सवार मज़ार के पास से गुज़रता तो अदब से सवारी के नीचे उतर आता। (अल क़ौलुल बदीअ)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो! बाल शरीफ़ की अज़मतों को आपने मुलाहज़ा फ़रमाया कि क्या शान है हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाल शरीफ़ की, वह मर्दे मोमिन सुन्नी मुसलमान कितना खुश नसीब है जिस को अल्लाह तआला अपने प्यारे नबी, महबूबे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाल शरीफ़ के सामने दुरूद शरीफ़ की डाली पेश करने की सआदत अदा फ़रमाता है और मालदार ग़नी बनने का एक नुस्ख़ा भी मिला कि जो शख़्स मूए मुबारक के सामने दुरूदो सलाम पेश करता है वह कितना मुफ़लिस क्यों न हो ताज़ीमे बाल शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ की बरकत से अल्लाह तआला उस की मोहताजी दूर फ़रमा कर ग़नी व मालदार बना देता है यह है फ़ैज़ाने बाल शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ः

सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए
छाए रहमत की घटा बन के तुम्हारे गेसू
हम सिया कारों पे या रब तपिशे मेहशर में
साया अफ़गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गेसू

फ़ज़ाइल दुरूदे तुनज्जीना

इस दुरूदे पाक को हर मुहिम और मुसीबत के वक़्त एक हज़ार मरतबा पढ़ना चाहिये। मुश्किल आसान होगी और मक़सद पूरा होगा। हुज़ूर, राहते बेकसां, सरवरे अंबिया मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इस दुरूद शरीफ़ की तालीम हज़रत शैख़ सालेह मूसा ज़रीर अलैहिर्रहमा को उस वक़्त फ़रमाई जब वह बहरी जहाज़ में सफ़र कर रहे थे जहाज़ ग़र्क़ होने लगा तमाम लोग शोर मचाने लगे, शैख़ सालेह पर नीन्द का ग़लबा हुआ, हुज़ूर नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत से सर फ़राज़ हुए, हुज़ूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जहाज़ वालों से कह दो कि यह दुरूद शरीफ़ हज़ार बार पढ़ें, वह बयां करते हैं कि मेरी आँख खुली और मैं ने जहाज़ वालों से अपना ख़्वाब बताया और हम लोगों ने पढ़ना शुरू किया जब तीन सो मरतबा यह दुरूद शरीफ़ पढ़ा तो जहाज़ चलने लगा और जो शख़्स इस दुरूद शरीफ़ को पाँच सो बार पढ़े उस को हर क़िस्म का फ़ायदा और ग़िना हासिल हो।

हजरत शैख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि यह दुरूदे पाक अर्श के खज़ानों में से एक ख़ज़ाना है निस्फ़ शब में जो शख्स किसी दुनियवी या उख़रवी हाजत के वास्ते पढ़े अल्लाह तआला इस दुरूदे तुन्नजीना की बरकत से पूरी फ़रमा देगा। दर हक़ीक़त यह दुरूद शरीफ़ क़ुबूलियते दुआ के लिये बहुत तिरयाक़ है।

दुरूदे तुनज्जीना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِيْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيٰوةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

ऐ अल्लाह तआला हमारे सरदार, मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा, ऐसी रहमत कि उसके वसीला से हमें ख़तरों और आफ़तों से बचा और उसके वसीला से हमारी तमाम हाजतें पूरी कर दे और इसके तवस्सुत से तू हमें तमाम गुनाहों से पाक फ़रमा दे और इसके ज़रीए से अपनी बारगाह में बलन्द दरजात से सरफ़राज़ फ़रमा और इसके सबब से हमारी इन्तिहाई ख्वाहिशात ज़िन्दगी और मौत के बाद की हर क़िस्म की भलाइयों तक पहुँचा दे, ऐ रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले।

फ़ज़ाइले दुरूदे ग़ौसिया

सरकार आला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, सरापा इश्क़ो महब्बत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सिलसिलए आलिया क़ादरिया बरकातिया रज़विया के शजरह में इस दुरूद शरीफ़ को दर्ज फ़रमाया है। इस दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बहुत हैं। चन्द मुलाहज़ा हों।

जो शख़्स हर दिन ग्यारह मरतबा पढ़े उस के तमाम गुनाह बख़्शे जाएँ। और वह हमेशा ख़ुश रहे उस की दुआएं क़ुबूल हों और उस की उम्मदें पूरी हों, दुश्मन पर फ़तह पाए अच्छे कामों की तौफ़ीक़ नसीब हो। ख्वाब में ख़ुद सरकारे मदीना, सुरूरे सीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाएं, ज़ियारत की सआदत मयस्सर हो, जन्नत में हुज़ूर पुर नूर, रहमते आलम, सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ुर्ब व ख़िदमत में रहना नसीब हो।

और इस की एक ख़ास बरकत सय्यदी, सनदी, यादगारे सलफ़, हुज्जतुल ख़लफ़, रहबरे अतक़िया, उस्ताज़ुल फ़ुक़हा हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती शैख़ बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु अन्हु, सर परस्ते आला मदरसा ग़ौसिया फ़ैज़ुल उलूम बढ़िया शरीफ़ बस्ती ने बयान फ़रमाया कि दुरूदे ग़ौसिया के पढ़ने वाले को अल्लाह तआला ग़ैब से

रोज़ी देता है। इस दुरूद का पढ़ने वाला कभी मोहताज व मुफ़लिस व कंगाल न होगा, और अगर पहले मुफ़लिस था तो इस दुरूद की बरकत से ग़नी व मालदार हो जाएगा और सरकारे आज़म, नबिये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतशम, सरापा करम ही करम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व अक़ीदत बढ़ाने और मज़बूत करने में इकसीर है। दुरूदे ग़ौसिया के क़ारेईन का कहना है कि हम को अल्लाह तआला दुरूदे ग़ौसिया की बरकत व रहमत से हर मक़ाम व हर मैदान पें कामयाब व कामरान फ़रमाता है।

दुरूदे ग़ौसिया

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدَنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ○

या अल्लाह तआला ! दुरूद भेज हमारे सरदार और हमारे आक़ा, सख़ावत की कान, मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और उन की आल पर बरकत व रहमत व सलामती नाज़िल फ़रमा।

इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मामूलात में से है।

फ़ज़ाइले दुरूद फ़ैज़

यह दुरूद शरीफ़ इमामे अहले सुन्नत, सरापा इश्क़ो महब्बत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हज़रत आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मामूलात में से है हुज़ूर पुर नूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से फ़ैज़ व बरकत हासिल करने में मददगार है। मक़सद में जल5दी कामयाबी मिलती है।

दुरूदे फ़ैज़

اَللّٰهُ رَبُّ مُحَمَّدٍ صَلّٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَا. نَحْنُ عِبَادُ مُحَمَّدٍ صَلّٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَا.
وَعَلٰى ذَوِيْهِ وَصَحْبِهٖ اَبَدَ الدُّهُوْرِ وَ كَرَّمَا ○

अल्लाह तआला मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का रब है ऐ अल्लाह तआला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हम सब मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अदना गुलाम हैं ऐ अल्लाह तआला ! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा।

फ़ज़ाइले दुरूदे शिफ़ा

इस दुरूद शरीफ़ की बरकत से जिस्मानी व रूहानी बीमारियों से शिफ़ा हासिल होती है। बारहा का आज़मूदा है।

दुरूदे शिफ़ा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوْبِ وَدَوَائِهَا وَعَافِيَةِ الْاَبْدَانِ وَشِفَائِهَا وَنُوْرِ الْاَبْصَارِ وَضِيَائِهَا وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ دَائِمًا اَبَدًا ۝

ऐ अल्लाह तआला दुरूदो सलाम और बरकतें नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार और हमारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जो दिलों क़े तैय्यिब और उनकी दवा हैं और जिस्म की आफ़ियत और उन की शिफ़ा हैं और आँखों की रोशनी और उन की चमक हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आल और अस्हाब पर हमेशा हमेश।

फ़ज़ाइले दुरूद नूर

इस दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइलो ख़वास बहुत हैं, उन में से बाज़ यह हैं, जो शख़्स किसी भी जाइज़ मक़सद के लिये इस दुरूद शरीफ़ को पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह तआला वह पूरा होगा। जो हर नमाज़ के बाद एक मरतबा पढ़े उस के मुश्किल काम आसान होंगे और दुश्मनों पर कामयाबी होगी। अगर क़ैद ख़ाना में होगा अल्लाह तआला क़ैद से रिहाई अता फ़रमाएगा। और रिज़्क़ में कुशादगी होगी। मोहताजी व मुफ़्लिसी से बचेगा।

दुरूदे नूर पढ़ने का वक़्त

इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़े नफ़्ल पढ़े दोनों रकअतों में सूरह फ़ातिहा के बाद कुल हुवल्लाहु अहद तीन बार पढ़े। और नमाज़ पूरी करने के बाद जिस जगह पर सोना हो उसी जगह पर क़िब्ला रू, मुअद्दब बैठ कर यह ख़याल करे कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हैं और मैं आसी, ख़ता कार, रहमत आसियां, सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे शफ़ाअत व रहमत में दीदार की तमन्ना लिये हुए हाज़िर हूँ और दुरूद शरीफ़ का तोहफ़ा पेश कर रहा हूँ और फिर मुसलसल दुरूदे नूर का विर्द करता रहे यहाँ तक कि मुक़र्ररा तादाद पूरी हो जाए फिर उसी जगह दाएं करवट पर क़िब्ला रू हो कर सो जाए। पाँच दिन, सात दिन, ग्यारह दिन, इक्कीस दिन, ज़्यादा से ज़्यादा चालीस रोज़ तक दुरूदे नूर का अमल जारी रखे और क़ल्ब में जितनी पाकी व सफ़ाई होगी उतनी ही जल्दी कामयाबी मिलेगी और हक़ीक़त यह है कि ख़ादिम व ग़ुलाम का नज़रानए दुरूद जितनी ही ज़्यादा महब्बत व अक़ीदत से पेश होगा उतनी ही जल्दी करम नवाज़ी बन्दा नवाज़ी फ़रमा कर आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़ियारत की नेअ़मत व दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाएंगे।

दुरूदे नूर

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی نُوْرِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَنْوَارِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی رُوْحِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَرْوَاحِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی جَسَدِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَجْسَادِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی رَاْسِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الرُّؤُسِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی وَجْهِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْوُجُوْهِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی جَبِیْنِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَجْبُنِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی جَبْهَةِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْجِبَاهِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی عَیْنِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْعُیُوْنِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی حَاجِبِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْحَوَاجِبِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی جَفْنِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَجْفَانِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی اَنْفِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاُنُوْفِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی خَدِّ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْخُدُوْدِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی صُدْغِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَصْدَاغِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی اُذُنِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاٰذَانِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی فَمِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَفْوَاهِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی شَفَةِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الشِّفَاهِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سِنِّ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَسْنَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى لِسَانِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَلْسِنَةِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى ذَقَنِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَذْقَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عُنُقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَعْنَاقِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى صَدْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الصُّدُوْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى قَلْبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُلُوْبِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى يَدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَيْدِىْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى كَفِّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَكُفِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى اِصْبَعِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَصَابِعِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى زَنْدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَزْنَادِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى ذِرَاعِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَذْرُعِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى مِرْفَقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْمَرَافِقِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَضُدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَعْضَادِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى اِبْطِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاٰبَاطِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى مَنْكِبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْمَنَاكِبِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى كَتِفِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَكْتَافِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى تَرْقُوَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى التَّرَاقِىْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى كَتَدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَكْتَادِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى ظَهْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الظُّهُوْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى فَخِذِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْاَفْخَاذِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى رُكْبَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الرُّكَبِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَاقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي السُّوْقِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى كَعْبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْاَكْعُبِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَقِبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْاِعْقَابِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى قَدَمِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْاَقْدَامِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى شَعْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الشُّعُوْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى لَحْمِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي اللُّحُوْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عِرْقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْعُرُوْقِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى دَمِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الدِّمَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَظْمِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْعِظَامِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى جِلْدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْجُلُوْدِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى لَوْنِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْاَلْوَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى قَامَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْقَامَاتِ ۝

وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّاتِهٖ اَفْضَلَ صَلٰوةٍ وَاَكْمَلَ بَرَكَةٍ وَاَزْكٰى سَلَامٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ كُلَّمَا ذَكَرَكَ وَذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ وَذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ ۝

फ़ज़ाइले दुरूदे जुमा

बाद नमाज़े जुमा मजमे के साथ मदीना तैय्यिबा की तरफ़ मुंह कर के दस्त बस्ता खड़े होकर सो बार पढ़ें, जहाँ जुमा न होता हो, जुमा के दिन नमाज़े सुबह ख्वाह ज़ोहर या अस्र के बाद पढ़ें, जो कहीं अकेला हो तन्हा पढ़े, यूंही औरतें अपने अपने घरों में पढ़ें, इस के चालीस फ़ायदे हैं। जो सही और मोअतबर हदीसों से साबित हैं। यहाँ सिर्फ़ चन्द ज़िक्र किये जाते हैं।

जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत रखेगा। उन की अज़मत तमाम लोगों से ज़्यादा दिल में रखेगा। जो उन की शान घटाने वालों से उन के ज़िक्रे पाक मिटाने वालों से दूर रहेगा, दिल से बेज़ार होगा, ऐसा जो कोई मुसलमान उसे पढ़ेगा उस के लिये बे शुमार फ़ायदे हैं, जिन में से बाज़ दर्ज किये जाते हैं :

1) उस के पढ़ने वाले पर अल्लाह तआला तीन हज़ार रहमतें उतारेगा।
2) उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजेगा।
3) पाँच हज़ार नेकियाँ उस के नामए आमाल में लिखेगा।
4) उस के पाँच हज़ार गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा।
5) उस के पाँच हज़ार दरजे बलन्द करेगा।
6) उस के माथे पर लिख देगा कि यह मुनाफ़िक़ नहीं
7) उस के माथे पर तहरीर फ़रमाएगा कि यह दोज़ख से आज़ाद है।
8) अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।
9) उस के माल में तरक़्क़ी देगा।
10) उस की औलाद और औलाद की औलाद में बरकत देगा।
11) दुश्मनों पर ग़लबा देगा।
12) दिलों में उस की महब्बत रखेगा।
13) किसी दिन ख्वाब में बरकते ज़ियारते अक़्दस से मुशर्रफ़ होगा।
14) ईमान पर ख़ातिमा होगा।
15) क़्यामत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से मुसाफ़हा करेगा।
16) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत उस के लिये वाजिब होगी।
17) अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला उस से ऐसा राज़ी होगा कि कभी नाराज़ न होगा और बड़ी खूबी की बात यह है कि सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस दुरूद की तमाम सुन्नियों के लिये इजाज़त अता फ़रमाई है बशर्ते यह कि बद मज़हबों से बचें फ़क़त और उस दुरूद को दुरूदे रज़विया भी कहा जाता है।

दुरूदे जुमा

सुन्नी मुसलमानों के दीन व दुनिया का भला, ला ज़वाल दौलत और बहुत आसान

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَآلِهٖ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ۝

फ़ज़ाइले दुरूदे खिज़रिया

आलिमे बा अमल हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शाह बदरुद्दीन अहमद कादरी, बरकाती, रज़वी गोरखपूरी अलैहिर्रहमा ने इस फकीर कादरी की बयाज़े खास में अपने दस्ते करम से तहरीर फ़रमाया जो आज भी मौजूद है कि जो शख्स परेशानियों और मुसीबतों में घिरा हो और हाजतें पूरी न हो रही हो उस को चाहिये कि दुरूदे खिज़रिया हर दिन एक सो मरतबा पढ लिया करे, हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम करम फरमा कर तशरीफ लाएंगे, मुसाफहा करेंगे, मकासिद में कामयाबी और हाजतें पूरी होनेकी तदबीरें बताएंगे। इस तरह हजरत खिजर अलैहिस्सलाम से मुलाकात भी हो जाएगी और मुश्किलें आसान और हाजतें भी पूरी हो जाएंगी।

दुरूदे खिज़रिया

صَلَّى اللهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ۝

हर नमाज़ के बाद का दुरूदो सलाम

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ۝
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ ۝
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ ۝
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا شَفِيْعَنَا يَوْمَ الْجَزَاءِ
يَا رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمْ ۝

बरसे करम की भरन फूलें नअ़म के चमन
ऐसी चला दो हवा तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो जवादो करीम तुम हो रऊफ़ व रहीम
भीक हो दाता अता तुम पे करोरों दुरूद
गरचेह हैं बेहद कुसूर तुम हो अफ़ू व ग़फ़ूर
बख्श दो जुर्मो खता तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो हफ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वह दुश्मन खबीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ क्या तुम पे करोरों दुरूद

ऐ ईमान वालो ! ऊपर लिखा हुआ दुरूदो सलाम और सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मक़बूल करोरों दुरूद हर नमाज़ के बाद मदीना शरीफ़ की तरफ़ मुंह कर के बा अदब खड़े हो कर पेश करना दोनों जहाँ की नेअमतों से अपने दामन को भरना है और हर मक़सद की कामयाबी के लिये मुफ़ीदो कारगर है।

اَللّٰہُ رَبُّ مُحَمَّدٍ صَلّٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ نَحْنُ عِبَادُ مُحَمَّدٍ صَلّٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَا
وَعَلٰی ذَوِیْہِ وَصَحْبِہٖ اَبَدًا اللّٰہُ غَفُوْرٌ وَّ کَرَّمَا ○

फ़ज़ाइले दुरूदे ताज

खवास इस दुरूद शरीफ़ के बे शुमार हैं जिन का इहाता मुख़्तसर में दुश्वार है। मगर चन्द यह हैं कि इन दुरूद का पढ़ने वाला सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होगा और कुशादगिये रिज़्क़ के लिये तिरयाक़ है। दफ़ए सहर, आसेब, जिन्न और शयातीन वबा के लिये कार गर है और बुज़ुर्गों ने इस दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत में बयान किया है कि जिस मक़सद के लिये पढ़ा जाए इन्शाअल्लाहो तआला उस में कामयाबी नसीब होगी।

दुरूदे ताज

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ التَّاجِ وَالْمِعْرَاجِ وَالْبُرَاقِ وَالْعَلَمِ ○ دَافِعِ الْبَلَاءِ وَالْوَبَاءِ وَالْقَحْطِ وَالْمَرَضِ وَالْاَلَمِ ○ اِسْمُہٗ مَکْتُوْبٌ مَّرْفُوْعٌ مَّشْفُوْعٌ مَّنْقُوْشٌ فِی اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ ○ سَیِّدِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ ○ جِسْمُہٗ مُقَدَّسٌ مُعَطَّرٌ مُطَھَّرٌ مُنَوَّرٌ فِی الْبَیْتِ وَالْحَرَمِ ○ شَمْسِ الضُّحٰی بَدْرِ الدُّجٰی صَدْرِ الْعُلٰی نُوْرِ الْھُدٰی کَھْفِ الْوَرٰی مِصْبَاحِ الظُّلَمِ جَمِیْلِ الشِّیَمِ شَفِیْعِ الْاُمَمِ صَاحِبِ الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ وَاللّٰہُ عَاصِمُہٗ ○ وَجِبْرِیْلُ خَادِمُہٗ ○ وَالْبُرَاقُ مَرْکَبُہٗ ○ وَالْمِعْرَاجُ سَفَرُہٗ ○ وَسِدْرَۃُ الْمُنْتَھٰی مَقَامُہٗ ○ وَقَابَ قَوْسَیْنِ مَطْلُوْبُہٗ ○ وَالْمَطْلُوْبُ مَقْصُوْدُہٗ ○ وَالْمَقْصُوْدُ مَوْجُوْدُہٗ ○ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ○ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ ○ شَفِیْعِ الْمُذْنِبِیْنَ ○ اَنِیْسِ الْغَرِیْبِیْنَ رَحْمَۃٍ لِّلْعٰلَمِیْنَ رَاحَۃِ الْعَاشِقِیْنَ مُرَادِ الْمُشْتَاقِیْنَ ○ شَمْسِ الْعَارِفِیْنَ ○ سِرَاجِ السَّالِکِیْنَ ○ مِصْبَاحِ الْمُقَرَّبِیْنَ ○ مُحِبِّ الْفُقَرَاءِ وَالْغُرَبَاءِ وَالْمَسَاکِیْنِ سَیِّدِ الثَّقَلَیْنِ ○ نَبِیِّ الْحَرَمَیْنِ ○ اِمَامِ الْقِبْلَتَیْنِ ○ وَسِیْلَتِنَا فِی الدَّارَیْنِ ○ صَاحِبِ قَابَ قَوْسَیْنِ ○ مَحْبُوْبِ رَبِّ الْمَشْرِقَیْنِ وَالْمَغْرِبَیْنِ جَدِّ الْحَسَنِ وَالْحُسَیْنِ مَوْلَانَا وَمَوْلَی الثَّقَلَیْنِ اَبِی الْقَاسِمِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰہِ نُوْرٍ مِّنْ نُّوْرِ اللّٰہِ یٰۤاَیُّھَا الْمُشْتَاقُوْنَ بِنُوْرِ جَمَالِہٖ صَلُّوْا عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ○

लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअ़ले करामत पे लाखों सलाम
जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़े
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम
हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौजे बहरे समाहत पे लाखों सलाम

जिस को बारे दो आलम की परवाह नहीं
ऐसे बाज़ू की क़ुव्वत पे लाखों सलाम
उन के मौला की उन पर करोरों दुरूद
उन के अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

सय्यदा ज़ाहिरा तैय्यिबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम
हसने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया
राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम

उस शहीदे बला शाहे गुलगूं क़बा
बे कसे दश्ते गुरबत पे लाखों सलाम
सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

वह उमर जिस के अअ़दा पे शेदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम
यानी उस्मान साहिबे क़मीसे हुदा
हुल्ला पोश शाहदत पे लाखों सलाम

मुरतज़ा शेरे हक़ अशजउल अशजई
साक़िए शीरो शरबत पे लाखों सलाम
शाफ़इ मालिक अहमद इमामे हनीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम

ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलवए शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम

ख़्वाजए ख़्वाजगां शाहे हिन्दूस्तां
मेरे ख़्वाजा की तुरबत पे लाखों सलाम

डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफ़ा
सय्यदी आला हज़रत पे लाखों सलाम

काश मेहशर में जब उन की आमद हो और
भेजें सब उन की शौकत पे लाखों सलाम

मुझ से ख़िदमत के क़ुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

करोरों दुरूद

कअ़बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद
तैबा के शमसुद्दुहा तुम पे करोरों दुरूद

क्यूँ कहूं बेकस हूँ मैं, क्यूं कहूं बेबस हूँ मैं
तुम हो मैं तुम पे फ़िदा तुम पे करोरों दुरूद

गरचेह हैं बे हद क़ुसूर, तुम हो अफ़ुवो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़ता तुम पे करोरों दुरूद

बे हुनर व बे तमीज़ किस को हुए हैं अज़ीज़
एक तुम्हारे सिवा तुम पे करोरों दुरूद

करके तुम्हारे गुनाह. मांगें तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ, तुम पे करोरों दुरूद

ख़ल्क़ के हाकिम हो तुम, रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद

बर से करम की भरन, फूलें नअ़म के चमन
ऐसी चला दो हवा तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो हफ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद

शाफ़ी व नाफ़ी हो तुम, काफ़ी व वाफ़ी हो तुम
दर्द को कर दो दवा, तुम पे करोरों दुरूद

अपने ख़ताकारों को अपने ही दामन में लो
कौन करे यह भला तुम पे करोरों दुरूद

काम वह ले लीजिये तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

(5)

जुमादल ऊला

दूसरा जुमा .... पहला बयान

माँ, बाप का मक़ाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝
وَقَضٰی رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ط

तर्जमा : और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो (पारा, 15, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला की बे शुमार और बे हिसाब हम्दो सना और शुक्र व एहसान है कि उस ने अपना महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अता फ़रमाया।

आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वही रब है जिस ने तुझ को हमह तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया
तुझे हम्द है ख़ुदाया तुझे हम्द है ख़ुदाया

तमहीद : करोड़ों करोड़ दुरूदो सलाम हों उस महबूबे आज़म पर जो ख़ालिक़ का महबूब है और मख़लूक़ का भी।

जिस ज़ाते गिरामी ने हमें हिदायत की राह पर चलना सिखाया और ख़ालिक़ व मख़लूक़ के हुक़ूक़ से आशना किया और उन राहों पर चलने से मना फ़रमाया जिस से हमारा रब तआला नाराज़ होता है उन्हीं बुरी राहों और गुनाहों में एक अज़ीम गुनाह और बुराई मां बपाक के साथ बद सुलूकी और उन की ना फ़रमानी भी है। कुरआने हकीम ने तक़रीबन पन्द्रह मक़ामात पर अल्लाह तआला के हुक़ूक़ के साथ मां बाप के हुक़ूक़ का ज़िक्र फ़रमाया और उन के साथ नेकी, सिला रहमी, हुस्ने सुलूक और अछे बरताओ करने का हुक्म सादिर किया।

मुलाहज़ा फ़रमाइये : सूरह बनी इस्राईल में फ़रमाया :

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ط

तर्जमा : और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। (पारा 15, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और सूरह बक़रह में फ़रमाया :

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ قف وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ط

तर्जमा : और (उस वक़्त को याद करो) जब हम ने बनी इस्राईल से अहद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो। (पारा 1, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और सूरह निसा में फ़रमाया : وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا

तर्जमा : और अल्लाह की बन्दगी करो और उसका शरीक किसी को न ठहराओ, मां बाप से भलाई करो। (पारा 5, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और सूरह अनआम में फ़रमाया :

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ج

तर्जमा : तुम फ़रमाओ ! मैं तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ जो तुम पर तुम्हारे रब ने हराम किया यह कि उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई करो।

(पारा 8, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

अल्लाहु अकबर ! अल्लाहु अकबर !! ऐ ईमान वालो ! इन आयात में किस क़दर एहतिमाम के साथ मां बाप के मक़ाम और मरतबे को बयान किया गया है। अल्लाह तआला हमें अपने मां बाप के मक़ाम व मरतबा को पहचानने और उन की क़दर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! जिस तरह अल्लाह तआला ने मां बाप के साथ नेकी और भलाई करना हम पर फ़र्ज़ क़रार दिया है उसी तरह मां, बाप के लिये कोई ना मुनासिब और सख़्त बात कहने से भी मना फ़रमाया है और उन की ना फ़रमानी और बे अदबी को हराम ठहराया है।

तफ़सीर खज़ाइनुल इरफ़ान में है मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(1) मां, बाप को उन का नाम लेकर न पुकारे यह ख़िलाफ़े अदब है और वह सामने न हों तो नाम ले कर उन का ज़िक्र जाइज़ है।

(2) मां, बाप से इस तरह कलाम करे जैसे गुलाम व ख़ादिम अपने आक़ा से बात करते हैं।

(3) आयते (رَبِّ ارْحَمْهُمَا) से साबित हुआ कि मुसलमान के लिये रहमत व मग़फ़िरत की दुआ जाइज़ और उसे फ़ायदा पहुँचाने वाली है।

मुर्दों के ईसाले सवाब में भी उन के लिये दुआए रहमत होती है लिहाज़ा उस के लिये (यानी ईसाले सवाब के लिये) यह आयत अस्ल है। (तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

मेरे अज़ीज़ ! कुरआने करीम में जो बार बार और फिर ताकीद के साथ मां, बाप के साथ नेकी, भलाई और हुस्ने सुलूक और अच्छा बरताओ करने का हुक्म दिया गया है, उस के

मअ़ना यह है कि ऐसी कोई बात न कहे और न ही ऐसा कोई काम करे जिस से उन्हें ईज़ा हो और अपने जिस्म व जान और माल से उन की ख़िदमत में दरेग़ न करे, जब उन्हें ज़रूरत हो उन के पास हाज़िर रहे।

मसाइल :

1) अगर मां बाप अपनी ख़िदमत के लिये नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो उन की ख़िदमत नफ़्ल से मुक़द्दम (बेहतर) है।

2) वाजिबात, वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते।

हज़रात ! अहादीसे करीमा से साबित है।

1) तहेदिल से मां बाप के साथ महब्बत रखे।

2) रफ़्तारो गुफ़्तार में , नशिस्त व बरवास्त में अदब लाज़िम जानें।

3) उन की शान में ताज़ीम के अलफ़ाज़ कहे।

4) उन को राज़ी करने की सई करता रहे।

5) अपने नफ़ीस माल को उन से न बचाए।

6) उन के मरने के बाद उन की वसियतें जारी करे।

7) उन के लिये फ़ातिहा, सदक़ा, तिलावते क़ुरआन से ईसाले सवाब करे।

8) अल्लाह तआला से उन की मग़फ़िरत की दुआ करे।

9) हफ़्ता वार उन की क़ब्र की ज़ियारत करे। (तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हज़रात ! मां, बाप के साथ नेकी और भलाई का मुआमला सिर्फ़ जाइज़ कामों में होना चाहिये, ऐसा नहीं कि वालिदैन की दिल जोई की ख़ातिर ग़लत और ग़ैर शरई उमूर (कामों) को भी दुरुस्त ठहरा लिया जाए। अल्लाह तआला का इरशादे पाक मुलाहज़ा फ़रमाइये।

आयते करीमा :

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ط وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا

तर्जमा : और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की, और अगर वह तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहा न मान

(पारा 20, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! इस आयते करीमा का शाने नुज़ूल यह है कि हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अशरए मुबश्शिरह में थे और अपनी वालिदा के साथ अच्छा सुलूक करते थे जब इस्लाम लाए तो आप की वालिदा हमना बिन्ते अबू सुफ़ियान ने कहा : तूने यह क्या नया काम किया। ख़ुदा की क़सम अगर तू उन से बाज़ न आया तो न मैं खाऊँ, न पियूं यहाँ तक कि मर जाऊँ और तेरी हमेशा के लिये बद नामी हो और तुझे मां का क़ातिल कहा जाए। फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया और एक शबाना रोज़ न खाया, न पिया, न साए में बेठी। इस से ज़ईफ़ (यानी कमज़ोर) हो गई फिर एक दिन, रात और इसी तरह रही। तब हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस के पास आए और फ़रमाया ऐ मां ! अगर तेरी सो

जानें हों और एक एक करके सब ही निकल जाएं तो भी मैं अपना दीन (इस्लाम) छोड़ने वाला नहीं, तू चाहे खा, चाहे मत खा। जब वह हज़रत सअद की तरफ़ से मायूस हो गई तो खाने पीने लगी। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयते पाक नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक किया जाए। लेकिन अगर वह कुफ्रो शिर्क का हुक्म दें तो न माना जाए क्योंकि ऐसी इताअत किसी मख़्लूक़ की जाइज़ नहीं जिस में ख़ुदा की ना फ़रमानी हो। (तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हज़रात ! अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को राज़ी करने के बाद सब से आसान नाराज़ मां, बाप को मनाना है। मां, बाप कितने ही नाराज़ क्यों न हों अगर बेटा उन के सामने नदामत से झुक जाए और उन के हाथों को बोसा लेकर उन की गोद में अपने सर को रख दे तो मां, बाप कितने ही ज़्यादा नाराज़ क्यों न हों, उन का दिल नर्म पड़ जाएगा और वह अपने बेटे को मुआफ़ भी कर देंगे।

और हदीसशरीफ़ में आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यूं बयान फ़रमाया।

إِنَّ الْعَبْدَ يَمُوْتُ وَالِدَيْهِ أَوْ أَحَدُهُمَا وَإِنَّهُ لَهُمَا لَعَاقٌّ فَلَا يَزَالُ يَدْعُوْ لَهُمَا وَيَسْتَغْفِرُ لَهُمَا حَتّٰى يَكْتُبَهُ اللّٰهُ بَارًّا

यानी बन्दे के दोनों मां, बाप या उन में से एक फ़ौत हो चुका हो और वह उन का ना फ़रमान हो। (यानी बेटा) उन के लिये दुआ करे और उन के हक़ में इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह तआला उस को फ़रमांबरदार लिख देगा। (मिश्कात शरीफ़, स. 431)

हज़रात ! हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी, रहीमो करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हम गुनाहगारों की बख़्शिश व नजात के लिये कितना आसान तरीक़ा पैदा कर दिया है कि हर शख़्स अपने नाराज़ मां, बाप को राज़ी कर के जन्नत का हक़दरा बन सकता है। वर्ना मां, बाप के ना फ़रमान का दोज़ख़ की आग से बचना ग़ैर मुमकिन और जन्नत में दाख़ला भी नहीं हो सकता।

हज़रात ! अल्लाह तआला का फ़रमाने ज़ी शान बहुत ही ग़ौर से सुनिये और अगर सीने में दिल है तो उस को मां, बाप की अज़मत व महब्बत का कअबा बना लीजिये और अगर सीने में दिल की बजाए कोई पत्थर है तो अल्लाह से दुआ कीजिये कि उस को मोम बना दे। आमीन सुम्मा आमीन।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :'

إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَا أُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

तर्जमा : अगर तेरे सामने उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन से हूँ न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ताज़ीम की बात कहना और उन के लिये आजिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अर्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू उन दोनों पर रहम कर जैसा कि उन दोनों ने मुझे बचपन में पाला। (पारा 15, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हजरात ! अल्लाह तआला ने कितने प्यारे अन्दाज में मां, बाप के साथ हुस्ने सुलूक करने का हुक्म दिया है। अब महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुक्म शरीफ मुलाहज़ा फ़रमाइये।

सब से ज़्यादा महब्बत की मुस्तहिक़ मां फिर बाप

हदीस शरीफ : हजरत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में एक शख्स ने अर्ज की, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरी महब्बत और खिदमत का सब से ज्यादा कौन मुस्तहिक है ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया उम्मुका तेरी मां, अर्जकिया फिर कौन ? तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अबूका तेरा बाप।
(बुखारी, मुस्लिम शरीफ, जि., स. 312 व हवाला हुकूके वालिदैन, इमाम अहमद रज़ा, स. 21)

हदीस शरीफ : उम्मुल मोमिनीन हजरत आएशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि मैं ने आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में अर्ज किया कि औरत पर सब से बड़ा हक किस का है ? फ़रमाया शोहर का। मैं ने अर्ज किया कि मर्द पर सब से बड़ा हक़ किस का है ? क़ाला उम्मुहू तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उस की मां का।
(बज्ज़ार, हाकिम व हवाला हुकूके वालिदैन, इमाम अहमद रज़ा, स. 20)

मां के क़दम के नीचे जन्नत है

एक शख्स आका करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज किया कि मैं ने जंग में शरीक होने का इरादा किया है और आप से मशवरे के लिये हाज़िर हुआ हूं तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, क्या तेरी मां ज़िन्दा है ? तो उस शख्स ने अर्ज किया हां !

قَالَ فَالْزِمْهَا فَإِنَّ الْجَنَّةَ عِنْدَ رِجْلِهَا

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मां की ख़िदमत में रहो इस लिये कि जन्नत मां के क़दम के नीचे है। (मिश्कात शरीफ, स. 241)

हज़रात ! आप से गुज़ारिश है कि आप खूब गौर करें और सोचें कि हम कहाँ, कहाँ मारे मारे फिरते हैं और न जाने कौन कौन से दरवाजे पर ठोकर खाते फिरते हैं। जब कि जन्नत मां के कदम के नीचे है।

मां, बाप औलाद के लिये जन्नत भी हैं और दोज़ख़ भी

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में एक शख्स ने पूछा कि बेटे पर मां, बाप का क्या हक है ?

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने जवाब में इरशाद फ़रमाया : هُمَا جَنَّتُكَ وَنَارُكَ यानी यह दोनों तेरी जन्नत भी हैं और दोज़ख़ भी। (मिश्कात शरीफ, स. 421)

अल्लाहु अकबर ! अल्लाहु अकबर !! हज़रात ! आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने किस क़दर प्यारा और जामेअ़ जवाब अता फ़रमाया कि आगाह फ़रमा दिया कि मां, बाप की ख़िदमत से ज़न्नत है और उन की नाराज़गी से दोज़ख़।

जन्नत भी तेरी है यहीं
दोज़ख़ भी यहीं है

मां बाप की ख़िदमत न करने वाले से नबी की नाराज़गी

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَلْعُوْنٌ مَّنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ مَلْعُوْنٌ مَّنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ مَلْعُوْنٌ مَّنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ ط

मलऊन है जो अपने मां बाप को सताए मलऊन है जो अपने मां बाप को सताए। ख़ुदा की रहमत से दूर है जो उन की ना फ़रमानी करे। (फ़तावा रज़विया, जि. 10, स. 394)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़तावा रज़विया शरीफ़ में हदीस शरीफ़ के हवाले से फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन ऐसे शख़्स हैं कि अल्लाह तआला उन के फ़र्ज़ व नफ़्ल और किसी अमल को क़ुबूल नहीं फ़रमाता। उन में सब से पहला वह शख़्स है जो मां, बाप को सताता और तकलीफ़ पहुँचाता है।

(फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि. 10, स. 58)

आक़ा करीम ने फ़रमाया मां, बाप का ना फ़रमान ज़लील व ख़्वार हो जाए

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिले (यानी वह शख़्स ज़लील व रुसवा और ख़्वार हो) इस तरह तीन बार फ़रमाया तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने पूछा ऐ आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! वह ज़लील शख़्स कौन है ? तो हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : यह वह शख़्स है जिस ने मां बाप दोनों या एक को बुढ़ापे की हालत में पाया। ثُمَّ لَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ ط और जन्नत में दाख़िल न हुआ। (सही मुस्लिम, जि. 2, स. 134, मिश्कात शरीफ़, स. 418)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ का मतलब साफ़ तौर ज़ाहिर व बाहिर है कि मां, बाप का ख़िदमत गार जन्नती होता है और मां, बाप की ख़िदमत से जान चुराने वाला और उन से दूर भागने वाला बड़ा ही बद नसीब और रहमत से दूर होता है।

वालिद की ना फ़रमानी अल्लाह तआला की ना फ़रमानी

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

طَاعَةُ اللّٰهِ طَاعَةُ الْوَالِدِ. مَعْصِيَةُ اللّٰهِ مَعْصِيَةُ الْوَالِدِ

यानी बाप की फ़रमांबरदारी अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी है और बाप की ना फ़रमानी अल्लाह तआला की ना फ़रमानी है। (तबरानी, फ़तावा रज़विया, जि. 10, स. 58)

हदीस शरीफ़ : महबूबे खुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : رِضَى الرَّبِّ فِيْ رِضَى الْوَالِدِ وَسَخَطُ الرَّبِّ فِيْ سَخَطِ الْوَالِدِ

यानी रब तआला की रज़ा बाप की रज़ा में है और अल्लाह तआला की नाराज़गी बाप की नाराज़गी में है। (बुखारी फिल अदबुल मुफ़रद, तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 419)

हज़रात ! बाप का मक़ाम किस क़दर बलन्द व बाला है कि अल्लाह तआला उस शख़्स से खुश होगा जिस से उस का बाप राज़ी है वर्ना अल्लाह तआला को राज़ी नहीं किया जा सकता है और वालिद से कहीं ज़्यादा बड़ा दरर्जा मां का है तो खुद फ़ैसला कर लीजिये कि मां की नारज़गी में अल्लाह तआला की किस क़दर नाराज़गी होती होगी।

अस्ल वाक़िआ यह है : आशिक़े रसूल हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शिकायत की कि मेरा बेटा बहुत ज़्यादा इबादत व रियाज़त में मशग़ूल रहता है, रात भर जाग कर इबादत करता है और दिन भर रोज़े रखता है (मतलब यह है कि इबादत व रियाज़त की वजह से मेरी ख़िदमत कम कर पाता है) तो उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह कलेमात इरशाद फ़रमाए यानी अल्लाह तआला की खुशी बाप की खुशी में है और रब तआला की नाराज़गी बाप की नाराज़गी में है। (अशिअतुल लमआत, जि. 4, स. 105)

वालिदैन की ख़िदमत से रोज़ी बढ़ जाती है

महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُّمَدَّ لَهٗ فِيْ عُمْرِهٖ وَيُزَادُ فِيْ رِزْقِهٖ فَلْيَبِرَّ وَالِدَيْهِ وَلْيَصِلْ رَحِمَهٗ

यानी जिसे पसन्द हो कि उस की उम्र बढ़ जाए और उस की रोज़ी में कुशादगी हो जाए तो उस को अपने मां, बाप के साथ भलाई और सिला रहमी करना चाहिये।

(कश्फ़ुल गम्मा, स. 26, मिश्कात शरीफ़, स. 221, हुक़ूक़े वालिदैन, आला हज़रत, स. 17)

तीन दुआएं कभी रद नहीं होतीं

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि महबूबे खुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तीन

दुआएं ऐसी हैं जिन के मक़बूल होने में क़ोई शक नहीं।

(1) मज़लूम की दुआ (2) मुसाफ़िर की दुआ

(3) وَدَعْوَةُ الْوَالِدِ عَلٰی وَلَدِهٖ और बाप की दुआ औलाद के लिये। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 13)

हज़रात ! यह तीन हज़रात हैं जिन की दुआ कभी रद नहीं होती बल्कि क़ुबूल ही होती है एक मज़लूम यानी सताया हुआ शख़्स दूसरा वह शख़्स जो सफ़र में हो और तीसरा बाप की दुआ औलाद के हक़ में।

अल्लाह तआला ! हमें तीनों की दुआ लेने की सआदत नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! मां, बाप की बद्दुआ से हर हाल में बचने की कोशिश करना चाहिये वर्ना उस का वबाल दुनिया और दीन दोनों में आ सकता है और मां, बाप को भी चाहिये कि अगर औलाद नालाइक़ है तो किसी तरह से उन पर गुस्सा उतार ले लेकिन उन के हक़ में बद्दुआ न करे वर्ना मां, बाप बाद में ख़ुद भी पछताऐंगे। (अल अमान वल हफ़ीज़)

मां, बाप को महब्बत से देखना मक़बूल हज का सवाब है

हदीस शरीफ़ : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो भी इताअत शिआर और ख़िदमत गुज़ार फ़रज़न्द अपने मां, बाप को रहमत व महब्बत की निगाह से देखता है तो अल्लाह तआला हर नज़र के बदले एक मक़बूल हज लिखता है।

सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया ! या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम وَاِنْ نَظَرَ كُلَّ يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ، قَالَ نَعَمْ. اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَطْيَبُ ط

ख़्वाह वह हर दिन सो बार देखे ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, हां ! ख़्वाह वह हर दिन सो बार देखे, अल्लाह तआला बहुत बड़ा और पाक है।

(बैहक़ी, शअ़बिल ईमान, मिश्कात शरीफ़, स. 421)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला की अता और बख़्शिश से हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मां, बाप के मक़ाम को इस क़दर बलन्द व बाला कर दिया है कि उन के क़दमों के नीचे जन्नत रख दिया और मां, बाप के चेहरे को महब्बत से देखना हज्जे मक़बूल बना दिया और ख़ुश नसीब फ़रज़न्द जितनी बार देखेगा उस को उतनी मरतबा हज्जे मक़बूल का सवाब मिलता रहेगा।

हज़रात ! अल्लाह तआला की अता और बख़्शिश से हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मां, बाप के मक़ाम को इस क़दर बलन्द व बाला कर दिया है कि उन के क़दमों के नीचे जन्नत रख दिया और मां, बाप के चेहरे को महब्बत से देखना हज्जे मक़बूल बना दिया और ख़ुश नसीब फ़रज़न्द जितनी बार देखेगा उस को उतने मरतबा हज्जे मक़बूल का सवाब मिलता रहेगा।

हज़रात ! जब मां, बाप के दीदार का यह आलम है तो महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदार का क्या आलम होगा।

जिस खुश नसीब ने मां, बाप को महब्बत से देखा तो मक़बूल हज वाला हो गया और जिस खुश नसीब मुसलमान ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सर की आँख से देखा तो मक़बूल सहाबी हो गए।

हज़रत मूसा भी मां की दुआ लेते हैं

हकीमुल उम्मत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ां नईमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि मुझ से मदीना तैय्यिबा में एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे तूर पर बे खटक हाज़री दिया करते थे। एक रोज़ तूर पहाड़ी पर पहुँचे और रब तआला से हम कलाम हुए तो इरशादे रब्बानी हुआ कि ऐ मूसा ! अब बहुत एहतियात के साथ यह रास्ता तय किया करो यानी तूर पहाड़ी पर अब एहतियात से आना। इस लिये कि अभी तक तुम्हारी वालिदा हयात थीं, तुम रात के अन्धेरे में ख़ारदार राहों से बे खटक चले आते थे इस लिये कि तुम्हारी मां की ज़ाहिरी दुआएं तुम्हारे शामिले हाल थीं अब तुम्हारी मां का विसाल हो चुका है। अब वह ज़ाहिरी दुआओं क़ा साया आप पर नहीं रहा, इस लिये ऐ मूसा! अलैहिस्सलाम एहतियात लाज़िम है। (मवाइज़े नईमिया, जि. 3, स. 442)

हज़रात ! इस नूरानी वाक़िआ से पता चला कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसे जलीलुल क़द्र नबी के साथ भी उन के मां की दुआ होती थी तो हम जैसे गुनाहगार मुसलमान के लिये तो मां की दुआ की बहुत ही ज़रूरत है। अल्लाह तआला मां की दुआओं के साए में रखे आमीन सुम्मा आमीन।

और मुफ़्ती साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान फ़रमाते हैं कि एक सहाबी बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मैं ने नज़र मानी थी कि अगर मेरा फ़लाँ काम हो गया तो मैं जन्नत के ऊपर और नीचे वाली दोनों चौखट चूमूंगा। अब रब तआला के फ़ज़्ल से मेरा काम हो गया है तो नज़र कैसे पूरी करूँ ? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तू अपनी मां के पांव और बाप की पेशानी चूम ले, मां का पैर जन्नत की निचली चौखट है और बाप की पेशानी जन्नत की ऊपर वाली चौखट है तो दूसरे सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस के मां, बाप वफ़ात पा गए होते तो यह शख़्स नज़र कैसे पूरी करता ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया फिर अपनी मां की क़ब्र की पाईंती और बाप की क़ब्र के सरहाने चूम लेता उस की नज़र पूरी हो जाती। (मवाइज़े नईमिया, जि. 3, स. 442)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर है कि खुद माहिये कुफ़्र व बिदअत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मां, बाप की क़ब्र को चूमने का इशारा दिया है। तो पता चला कि अगर क़ब्र को चूमना बिदअत व हराम होता तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हरगिज़ हरगिज़ किसी की क़ब्र को चूमने की इजाज़त न देते और हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा क़ब्र को हाथ लगाना और बोसा देना

अदब के खिलाफ समझते हैं और मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा हुजूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

संगे दरे जानां पर करता हूँ जबीं साई
सज्दा न समझ नज्दी सर देता हूँ नज़राना

दुरूद शरीफ़ :

मां, बाप का ना फ़रमान जन्नत की खुश्बू से महरूम रहेगा

महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मां, बाप की ना फ़रमानी से बचो, इस लिये कि जन्नत की खुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है। और मां, बाप का ना फ़रमान जन्नत की खुश्बू न सूंघ सकेगा और इसी तरह रिश्ता तोड़ने वाला, बूढ़ा ज़ानी, तकब्बुर से अपना इज़ार (तहबन्द) वग़ैरह टख्नों से नीचे लटकाने वाला भी जन्नत की खुश्बू न पाएगा। اِنَّ الْكِبْرِيَاءَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (तफ़सीरे मदारिक, जि. 2, स. 312)

मां, बाप का ना फ़रमान दुनिया ही में सज़ा पाकर रहता है

हदीस शरीफ़ : महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, तमाम गुनाहों में अल्लाह तआला जिसे चाहता है बख़्श देता है।

اِلَّا عُقُوْقَ الْوَالِدَيْنِ فَاِنَّهٗ يُعَجِّلُ لِصَاحِبِهٖ فِى الْحَيَاةِ قَبْلَ الْمَمَاتِ ط

(बैहक़ी, शअबिल ईमान, मिश्कात शरीफ़, स. 421)

लेकिन मां, बाप की ना फ़रमानी को नहीं बख़्शता। अल्लाह तआला उस ना फ़रमान को ज़िन्दगी में ही मौत से पहले उस की सज़ा देता है।

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ को बार बार पढ़िये और सुनिये कि मां, बाप का ना फ़रमान इस दुनिया ही में सज़ा पाकर रहता है और आख़िरत का अज़ाब बाक़ी है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

मां, बाप की ना फ़रमानी से ख़ातिमा ख़राब हो सकता है

हदीस शरीफ़ : एक नोजवान हालते नज़अ में था उस पर मौत की कैफ़ियत तारी थी। उसको कलमे की तलक़ीन की गई। लेकिन वह कलमा न पढ़ सका।

महबूबे खुदा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़बर हुई तो तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि पढ़ ला इलाहा तो नोजवान ने कहा कि मुझ से कलमा शरीफ़ नहीं पढ़ा जाता तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस की वजह दरयाफ़्त की कि यह नोजवान कलमा क्यों नहीं पढ़ रहा है ? तो बताया गया कि यह शख़्स अपनी मां को सताता था (जिस की वजह से मौत के वक़्त कलमा नहीं पढ़ पा रहा है) तो रहीमो करीम रसूल, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस नोजवान की मां को (जो नाराज़ थी) बुलाया और फ़रमाया यह तेरा बेटा है ? तो उस औरत ने कहा, हाँ ! तो आक़ा करीम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तू अपने बेटे को मुआफ़ कर दे तो उस औरत ने कहा कि हुज़ूर! अगर आप का हुक्म है तो मुआफ़ करती हूँ वर्ना उस ने मुझे बहुत सताया है और मेरी बातों पर अपनी बीवी की बात को तरजीह (अव्वलियत) देता है और उसी की बातों को मानता है तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (ऐ औरत) तू सुन ले अगर आग जलाई जाए और तेरे बेटे को उस भड़कती हुई आग में ड़ाला जाए और अगर कोई तुझ से कहे कि अपने बेटे को मुआफ़ कर दे वर्ना उस को उस आग में डाल दिया जाएगा ? क्या तू उस वक़्त मुआफ़ करेगी ? तो औरत ने अर्ज़ की। या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जब तो मैं अपने बेटे को मुआफ़ कर दूँगी। तो मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, तो अल्लाह तआला को और मुझे गवाह बना ले कि तूने अपने बेटे को मुआफ़ कर दिया और तू राज़ी हो गई। उस औरत ने अर्ज़ किया, या अल्लाह तआला मैं तुझे और तेरे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को गवाह बनाती हूँ कि मैं ने अपने बेटे को मुआफ़ कर दिया है और उस से राज़ी हो गई हूँ। अब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जवान से फ़रमाया, ऐ लड़के पढ़ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ जवान ने कलमा पढ़ा और इन्तिक़ाल कर गया

महबूबे खुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَنْقَذَنِىْ مِنَ النَّارِ ط शुक्र उस ख़ुदा का जिस ने मेरे वसीले से उस को दोज़ख़ से बचा लिया। (तबरानी, फ़तावा रज़विया, जि. 10, स. 58)

हज़रात ! मां की ना फ़रमानी की सज़ा किस क़दर सख़्त है कि मौत के वक़्त कलमा नसीब नहीं होता जब तक मां मुआफ़ न कर दे।

और इस हदीस शरीफ़ से एक मस्अला यह मालूम हुआ कि तौबह व इस्तिग़फ़ार में और अपनी दुआ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के व सीला से दुआ मांगना चाहिये जभी तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उस नौजवान को मेरे वसीले से दोज़ख़ से बचा लिया।

मां की रज़ा किस क़दर अहम है

हदीस शरीफ़ : सर चश्मए विलायत हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैं महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास बेठा हुआ था। एक शख़्स आया और बाद सलाम अर्ज़ किया।

या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम बिस्तरे मर्ग पर आख़री सांस ले रहे हैं और आप का आख़री दीदार करना चाहते हैं आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यह सुनते ही खड़े हो गए और फ़रमाया कि तुम लोग भी खड़े हो जाओ, और चलो अपने भाई अब्दुल्लाह बिन सलाम

की ज़ियारत कर लें (यह हज़रात) आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हमराह वहाँ तशरीफ़ ले गए और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के सरहाने जाकर फ़रमाया पढ़ो !
اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ उन के कान में आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने तीन बार यही कलमए शहादत पढ़ा मगर वह ख़ुद न पढ़ सके, तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया तुम उन की बीवी से जाकर पूछो कि दुनिया में उन के आमाल कैसे थे ? और उन का मशग़ला किया था ? हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन की अहिलिया के पास गए और उन के आमाल व अशग़ाल के बारे में मालूम किया तो उन की बीवी ने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हक़ की क़सम ! जब से उन्होंने मुझ से निकाह किया मैं नहीं जानती कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पीछे उन की कोई भी नमाज़ फ़ौत हुई हो और उन का कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रा जिस में उन्होंने सदक़ा व ख़ैरात न किया हो, हाँ (एक बात ज़रूर है कि) उन की मां उन से नाराज़ हैं,, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह ख़बर दी गई तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन की वालिदा को बुलाया, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआल अन्हु ने उन की वालिदा के पास जाकर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पैग़ाम दिया मगर वह न मानीं फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को भेजा। यह दोनों हज़रात उस ख़ातून को लेकर हाज़िर हुए तो उस ख़ातून ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम को देख कर कहा ऐ बेटे! मैं तुम को दुनिया व आख़िरत दोनों में कहीं भी मुआफ़ न करूँगी।

आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम नेफ़रमाया ऐ ज़ईफ़ा ! अल्लाह तआला से डरो, और बेटे को मुआफ़ करो, तो ज़ईफ़ा ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम मैं उसे कैसे मुआफ़ कर दूँ उस ने अपनी बीवी के लिये मुझे सताया। तकलीफ़ दी, मेरी ना फ़रमानी की, मुझे घर से अलैहदा किया है तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लमने फ़रमाया अगर तुम उसे मुआफ़ कर दो तो तेरा हक़ मेरे ज़िम्मे है (यह इन्तिहा दर्जे की महरबानी और इनायत है मां, बेटे दोनों के लिये)

तो फिर ज़ईफ़ा कहने लगी कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के अस्हाब (रज़ियल्लाहु अन्हुम) गवाह रहें कि मैं ने अपने बेटे को मुआफ़ कर दिया अब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम से फ़रमाया पढ़ो اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ

हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ब आवाज़े बलन्द कलमए शहादत पढ़ा और उन की रूह परवाज कर गई।

सय्यिदुल औलिया हजरत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हम लोग उन की नमाज और दफ्न से फ़ारिग़ हो गए तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमया :

يَامَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ اَلَامَنْ كَانَتْ لَهٗ وَالِدَةٌ لَمْ يَبَرَّهَا خَرَجَ مِنَ الدُّنْيَا عَلٰى غَيْرِ الشَّهَادَةِ

(दुर्रतुन्नासेहीन, स. 231)

ऐ मुसलमानो ! आगाह हो जाओ कि जो शख़्स अपनी मां के साथ अच्छा सुलूक न करे उसे दुनिया से जाने के वक़्त (यानी मौत के वक़्त) कलमए शहादत पढ़ना नसीब न होगा।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तो सहाबी हैं, उन का यह हाल है कि मौत का वक्त तारी है, नज़अ का आलम है और कलमा नहीं पढ़ पा रहे हैं, इस लिये कि उन की मां उन से नाराज़ है। अब हम ग़ौर करें कि अगर हमारी मां हम से नाराज़ है तो हमारा हश्र किया होगा। अल्लाह तआला अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे और हमें मां को राज़ी रखने की तौफ़ीक अता फ़रमाए। आमीन। सुम्मा आमीन।

दूसरे के मां, बाप को गाली देना अपने मां बाप को गाली देना है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुलल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि कबीरा गुनाहों में से यह भी है कि कोई शख़्स अपने मां, बाप को गाली दे। तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज किया। या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या कोई शख्स अपने मां, बाप को गाली देता है ?

قَالَ نَعَمْ يَسُبُّ اَبَا الرَّجُلِ فَيَسُبُّ اَبَاهُ وَيَشْتِمُ اُمَّهٗ فَيَشْتِمُ اُمَّهٗ

(बुखारी, जि. 2, स. 883, मुस्लिम, जि. 1, स. 64, तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 12, मिश्कात शरीफ, स. 419)

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : हां ! जब वह किसी के मां, बाप को गाली दे। वह जवाब में उस के मां, बाप को गाली दे तो गोया उस ने ख़ुद ही अपने मां, बाप को गाली दी।

हज़रात ! इस हदीसे पाक से हम को सबक़ हासिल करना चाहिये कि अगर हम किसी के मां, बाप को गाली देते हैं तो गोया अपने ही मां, बाप को गाली देते हैं और गाली गलोज यूँ भी नाजाइज़ व हराम काम है।

अगर मां, बाप ज़ुल्म करते हैं तो भी उन की इताअत लाज़िम है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने उस हाल में सुबह की कि वह मां, बाप का हक़ अदा करने में अल्लाह तआला का ना फ़रमान है तो उस के लिये सुबह में ही जहन्नम के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं अगर मां, बाप में से कोई एक ही ज़िन्दा हो तो जहन्नम का एक ही दरवाज़ा खुलता है। हाज़िरीन ने अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अगरचेह मां, बाप बेटे पर ज़ुल्म करते हों? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

وَاِنْ ظَلَمَاهُ وَاِنْ ظَلَمَاهُ وَاِنْ ظَلَمَاهُ

(मिश्कात शरीफ़, स. 421, ब हवाला बैहक़ी, शअबिल ईमान)

अगरचेह वह ज़ुल्म करते हों अगरचेह वह ज़ुल्म करते हों अगरचेह वह ज़ुल्म करते हों।

हज़रात ! मालिके जन्नत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने कितने वाज़ेह अलफ़ाज़ में फ़रमा दिया कि अगरचेह मां, बाप ज़ुल्म करते हैं फिर भी औलाद पर मां, बाप की इताअत व ख़िदमत लाज़िम है। इस लिये कि उन के अज़ीम एहसानात के मुक़ाबले में उन का ज़ुल्म कोई हैसियत नहीं रखता।

अल्लाह तआला का इरशाद है कि :

فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ (पारा 15, रुकू 3)

हज़रात ! ख़ालिक़ो मालिक रब तआला ने मां बाप को उफ़ कहने और झिड़कने से रोका है और फ़रमाया कि जब तुम अपने मां, बाप से बात चीत करो तो अदब व एहतिराम मलहूज़ रखो वर्ना मुजरिम क़रार दिये जाओगे और ठिकाना जहन्नम होगा।

बाज़ लोग ! अपनी बीवियों के चक्कर में मां बाप से गाली, गलोच तक करते हैं और उन को मारते पीटते हैं यहाँ तक कि उन को घर से भी निकाल देते हैं या उन को तन्हा छोड़ कर ख़ुद बीवी के साथ दूसरा घर बसा लेते हैं और मां, बाप बेचारे बुढ़ापे में उस औलाद को देखते रहते हैं जिस को बड़ी दुआ करके अल्लाह तआला से मांगा था। और जब वह पैदा हुआ तो ख़ुशियों का एहतिमाम किया था और उस को परवान चढ़ाने में उस की तालीम दिलाने में किस क़दर तकलीफ़ें उठाई थीं आज वही औलाद मां, बाप को एक आँख देखने के लिये भी तैय्यार नहीं। अल अमान वल हफ़ीज़।

मुलाहज़ा फ़रमाइये :

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ فَضَّلَ زَوْجَتَهٗ عَلٰى اُمِّهٖ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝

(ज़वाजिर, स. 58)

यानी जो शख़्स अपनी मां पर अपनी औरत को तरजीह देता है उस पर अल्लाह तआला और उस के फरिश्तों और सब इन्सानों की लअनत होती है।

हज़रात ! अल्लाह तआला हर गुनाह व ख़ता से महफ़ूज़ रखे ख़ास कर मां, बाप की नाफ़रमानी की बला व मुसीबत से बचाए। आमीन सुम्मा आमीन।

ग़रीब मां का दिल तोड़ा तो दर्दनाक अज़ाब मिला

मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अहदे अदालत में एक सोदागर था एक रोज उस की मां अपने ख़र्चा के लिये उस के पास कुछ मांगने आई तो उस की बीवी ने कहा कि आप की मां हम से हर रोज इसी तरह मांग मांग कर हम को मोहताज बना देना चाहतीहै। ग़रीब मां यह सुन कर रोते हुए चली गई और बेटे ने उसे कुछ न दिया।

हज़रात ! मां को हक़ीर समझने का दर्दनाक अज़ाब मिला मुलाहज़ा कीजिये।

एक दिन यह लड़का तिजारत का माल ले कर घर से निकला, रास्ते में डाकुओं ने उस का सारा माल व अस्बाब लूट लिया और उस का हाथ काट कर उस की गरदन में लटका दिया और उस नौजवान को रास्ते पर ख़ून में लत पत छोड़ कर चले गए, कुछ लोगों का वहाँ से गुज़र हुआ तो उस को उठा कर उस के घर पहुँचा दिया। जब उस के रिश्ते दार, दोस्त व अहबाब उस को देखने आए तो उस ने बरमला अपने जुर्म का एतिराफ़ कर लिया।

هٰذَا جَزَائِیْ فَلَوْ كُنْتُ اَعْطَيْتُ اُمِّیْ بِيَدِیْ دِرْهَمًا مَا قُطِعَتْ يَدِیْ وَسُلِبَ مَالِیْ ؕ

यह मुझे अपनी मां को तकलीफ़ देने की सज़ा मिली है अगर मैं ने अपने हाथ से माल को एक रुपया भी दे दिया होता तो मेरा हाथ न काटा जाता और न ही मेरा माल छीना जाता।

फिर सौदागर से मिलने उस की मां भी आई तो उस ने बड़े दर्द भरे अन्दाज़ में क़हा ऐ मेरे प्यारे बेटे ! तेरे साथ दुश्मनों ने यह किया क्या तो बेटे ने कहा कि अम्मी जान ! मेरे साथ यह सब कुछ आप को तकलीफ़ देने की वजह से हुआ है। आप मुझ से ख़ुश हो जाइये।

قَالَتْ يَا بُنَیَّ اِنِّیْ رَضِيْتُ عَنْكَ ؕ यानी मां ने कहा ऐ मेरे बेटे मैं तुझ से ख़ुश हूँ।

हज़रात ! जब रात हुई तो अल्लाह तआला की क़ुदरत से और मां की दुआओं की बरकत से उस नौ जवान के दोनों हाथ पहले की तरह सही, सालिम हो गए। (दुर्रतुन्नासिहीन, स. 230)

ए ईमान वालो ! इस वाक़िआ से हमें यह भी सबक़ मिलता है कि मां को नाराज़ करने का अज़ाब कितना दर्दनाक होता है और वह अज़ाब इस दुनिया ही में उठाना पड़ता है।

और ! यह भी दर्स मिला कि मां राज़ी हो जाए और ख़ुश रहे तो आई हुई बला और मुसीबत रात ख़त्म होने से पहले ही दूर हो जाती है।

मां, बाप का हक़ अदा करने वाले के लिये सुबह होते ही जन्नत का दरवाज़ा खुल जाता है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिस (ख़ुश नसीब) ने इस हाल में सुबह की कि वह मां, बाप का हक़ अदा करने में अल्लाह तआला का फ़रमांबरदार है तो उस के लिये सुबह होते ही जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं।

وَاِنْ كَانَ وَاحِدًا فَوَاحِدًا ط और अगर मां बाप में से कोई एक ही ज़िन्दा है तो जन्नत का एक दरवाज़ा खुलता है। (बैहक़ी, शअबिल ईमान, मिश्कात शरीफ़, स. 421)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर साबित हो गया कि माँ, बाप के वफ़ादार के लिये सुबह होते ही जन्नत का दरवाज़ा खुल जाता है और दुनिया ही में वफ़ादार औलाद देख लेती है कि मां, बाप की ख़िदमत व महब्बत की बरकत से रोज़ी का दरवाज़ा और तमाम रहमतों के दरवाज़े खोल दिये गए हैं और जन्नत की बहारों का लुत्फ़ मां, बाप की दुआ से अल्लाह करीम अता फ़रमाता है।

मां की दुआ से बेटा जन्नत में नबी का साथी

एक मरतबा हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दुआ की :

اِلٰهِىْ اَرِنِىْ جَلِيْسِىْ فِى الْجَنَّةِ ط ऐ अल्लाह तआला तू दुनिया ही में मेरे जन्नत के साथी को दिखा दे।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ! ऐ मूसा (अलैहिस्सलाम) तुम फ़लां शहर के फ़लां बाज़ार में चले जाओ। वहाँ एक गोश्त बेचने वाला क़स्साब है जिस की शक्ल व सूरत इस तरह है वही तेरा जन्नत का साथी है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस क़स्साब की दूकान में तशरीफ़ ले गए और वहीं शाम तक रहे, दिन डूबने के बाद क़स्साब गोश्त का एक टुकड़ा थेले में ले कर चला तो उस की दावत पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम भी उस क़स्साब के घर तशरीफ़ ले गए, उस शख़्स ने उम्दा क़िस्म का खाना पकाया और अपनी दुबली, पतली, बूढ़ी मां को खाना खिलाया। जब उस की बूढ़ी कमज़ोर मां शिकम सेर हो गई तो मां को अच्छे कपड़े पहनाए तो क़स्साब की बूढ़ी मां अपने होंट हिला रही थी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वह यह दुआ कर रही थी। اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اِبْنِىْ جَلِيْسَ مُوْسٰى فِى الْجَنَّةِ ط

ऐ अल्लाह तआला ! मेरे बेटे को जन्नत में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का साथी बना दे।

فَقَالَ مُوْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ لَكَ الْبَشَارَةُ اَنَا مُوْسٰى وَاَنْتَ جَلِيْسِىْ فِى الْجَنَّةِ

(दुर्रतुन्नासेहीन, स. 49, नुज़हतुल मजालिस, स. 168)

तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : तुझे बशारत हो कि मैं मूसा हूँ, और तू मेरा जन्नत का साथी है।

हज़रात ! मां की दुआओं में किस क़दर तासीर होती है और मां की ख़िदमत का सिला व बदला कितना अज़ीम होता है कि एक क़स्साब मां की ख़िदमत कर के और मां की दुआ लेकर जन्नत भी पाया और जन्नत में अल्लाह के नबी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का साथी भी बन गया।

या अल्लाह तआला हमें भी मां, बाप की ख़िदमत करके उन की दुआ लेने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा। आमीन सुम्मा आमीन।

मां, बाप की दुआ सफ़र में भी काम आती है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि पहले ज़माने की बात है कि तीन आदमी सफ़र कर रहे थे कि बारिश होने लगी। बारिश से पनाह लेने के लिये वह तीनों एक पहाड़ की ग़ार में दाख़िल हो गए। जब वह अन्दर दाख़िल हो गए तो एक चट्टान ऊपर से गिरी और ग़ार का मुंह बन्द हो गया। उन लोगों ने एक दूसरे से कहा हम सब अल्लाह तआला के लिये जो कुछ नेक काम किये हों उस के व सीले से अल्लाह तआला से दुआ करें। तो एक शख़्स ने इस तरह दुआ की या अल्लाह ! मेरे मां, बाप बूढ़े थे (बकरियों के दूध पर ही मेरा और मेरे बच्चों की ज़िन्दगी का गुज़ारा था) मैं जंगल से बकरियाँ चरा कर लाता, बकरियों से दूध निकाल कर सब से पहले अपने बूढ़े मां, बाप को पिलाता उन से पहले न ख़ुद पीता और न ही बच्चों को पिलाता। एक दिन मुझे घर आने में देर हो गई और रात में जानवरों को ले कर ऐसे वक़्त घर आया कि मेरे मां, बाप सो चुके थे मैं दूध ले कर उन की ख़िदमत में खड़ा रहा और वह सोते रहे और मेरे बच्चे भूक से रोते और चिल्लाते रहे और मुझे यह भी गवारा न हुआ कि उन्हें जगा कर उन के आराम में ख़लल डालूँ।

حَتّٰی بَرَقَ الْفَجْرُ فَاسْتَیْقَظَا فَشَرِبَا غَبُوْقَهُمَا ط

यहाँ तक कि फ़ज्र नमूदार हुई तो उन की आँख खुली और दूध पिया।

ऐ रब तआला ! तू अलीम व ख़बीर है कि अगर मैं ने यह काम तेरी रज़ा के लिये किया है तो उस चट्टान को कुछ हटा दे, यह दुआ करते ही चट्टान कुछ हट गई और थोड़ा रास्ता खुल गया दूसरे आदमी ने दुआ की कि या अल्लाह तआला ! मैं एक औरत से महब्बत करता था और जब उस औरत से एक मकान में तन्हाई का मौक़ा मिला तो मैं तुझ से डरा और बुराई का इरादा सिर्फ़ तेरी ख़ुशी के लिये तर्क कर दिया और गुनाह से महफ़ूज़ रहा। अगर मैं ने यह काम तेरी रज़ा के लिये किया है तो पत्थर हटा दे तो वह पत्थर कुछ हट गया। तीसरे आदमी ने दुआ की या अल्लाह तआला !मैं ने एक मज़दूरी के रुपये से तिजारत की और जब ख़ूब माल बढ़ गया और मज़दूर आया और उस ने अपना हक़ मांगा तो मैं ने सारा माल उस के हवाले कर दिया और अमानत की अमानतदारी की, अगर यह अमल तुझे पसन्द है तो पत्थर को हटा दे। तो पत्थर हट गया और ग़ार से निकलने का रास्ता बन गया। इस तरह वह तीनों आदमी हलाक व तबाह होने से महफ़ूज़ रहे। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 294, मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 294)

हज़रात ! मां बाप की दुआ में बड़ी ताक़त होती है जो अर्शे इलाही को हिला कर रख देती है और मां बाप की ख़िदमत करने वाला और उन की दुआ लेने वाला कितनी मुसीबत में क्यूँ न हो एक दिन उस की सारी मुसीबत दूर हो जाती है वह तो पत्थर था ग़र पहाड़ भी होता तो वह भी हट जाता। इस लिये कि मां, बाप की दुआ में बड़ी ताक़त और असर होती है।

तेरे मैकदे में कमी है क्या, जो कमी है ज़ौक़े तलब में है
जो हों पीने वाले तो आज भी, वही बादा है वही जाम है

आक़ा करीम ने हज़रत हलीमा सअ़दिया का अदब किया

मक्का शरीफ़ के पास जअ़राना नाम के मक़ाम पर जंगे हुनैन के मौक़े पर फ़तह होने के बाद आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सोलह रोज़ तक इसी मक़ाम पर ठहरे रहे और माले ग़नीमत तक़सीम फ़रमाते रहे। महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सहाबए किराम के दरमियान ऐसे जलवा गर हैं जैसे तारों के बीच में चौदहवीं रात का चाँद, गोया आज अर्श से फ़र्श पर क़ुदसी उतर आए हैं कि अचानक एक ख़ातून ! सर से पाओं तक चादर में मलबूस तशरीफ़ लाईं ख़ुद आक़ा करीम उन की ताज़ीम के लिये सरो क़द खड़े हो गए उन के लिये अपनी चादरे रहमत को बिछा दी। देखने वाले हैरान थे कि ख़ुदाया यह कौन ख़ुश नसीब ख़ातून हैं कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम बिला इजाज़त बारगाह में हाज़री की जुरअत नहीं फ़रमाते और इन को ऐसी बारयाबी हासिल है कि चादरे पाक उन के लिये बिछाई जाती है। जब तक वह तशरीफ़ फ़रमा रहे हैं। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तवज्जोह करम उन्हीं की तरफ़ रही, किसी जानिब इल्तिफ़ात न फ़रमाया जब वह चलीं गईं तो मालूम किया गया कि यह ख़ुश नसीब ख़ातून कौन थीं ?

فَقَالُوا اُمُّهُ الَّتِیْ اَرْضَعَتْهُ!

यह सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रज़ाई मां (हज़रत हलीमा सअ़दिया) हैं कि उन्होंने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दूध पिलाया है। (अशिअतुल लमआत. जि. 4, स. 108, मिश्कात शरीफ़, स. 420)

बड़ी तूने तौक़ीर पाई हलीमा
कि है तू उस आक़ा की दाई हलीमा

हज़रात ! जब आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रज़ाई मां, दूध पिलाने वाली मां का इस क़दर अदब व ताज़ीम फ़रमाया है तो अगर हक़ीक़ी मां हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा होतीं तो उन के साथ महब्बत का आलम क्या होता।

अब ! चलते चलते मां की बद्दुआ का भी असर देखते चलिये।

मां की नाराज़गी का असर

एक बुज़ुर्ग ने मक्का मुअज़्ज़मा जाने का इरादा किया, उन की मां उन के इस सफ़र पर खुश न थीं, यह बुज़ुर्ग मां की रज़ा के बग़ैर मक्का शरीफ़ के लिये रवाना हो गए। इधर उन की मां ने बारगाहे इलाही में गिरया व ज़ारी के साथ बद्दुआ की कि ऐ अल्लाह तआला ! मेरे बेटे ने मुझे जुदाई की आग में जलाया है तो, तू उस पर कोई अज़ाबे नाज़िल फ़रमा दे। यह बुज़ुर्ग मक्का शरीफ़ के सफ़र में थे कि रात के वक़्त एक शहर में पहुँचे तो इबादत के लिये एक मस्जिद में तशरीफ़ ले गए।

अजीब इत्तिफ़ाक़ ! इसी रात एक चोर किसी के घर में दाख़िल हुआ, घर वालों क़ो जब चोर के आने का इल्म हुआ तो चौर जलदी से मस्जिद की तरफ़ भागा, लोगों ने उस का पीछा किया वह चोर मस्जिद के पास आकर ग़ाइब हो गया लोग यह समझे कि चोर मस्जिद में घुस गया है तो लोग मस्जिद में दाख़िल हुए तो देखा कि यही बुज़ुर्ग नमाज़ पढ़ रहे हैं लोगों ने चोर समझ कर उन्हें ही पकड़ लिया और हाकिमे शहर के पास ले गए। हाकिम ने उन के हाथ, पेर काटने और उन की आँखों के निकालने का हुक्म दे दिया। लोगों ने उन के हाथ पेर काट दिये और उन की आँखें निकाल दीं और शहर भर में ऐलान कर दिया कि यह चोर की सज़ा है तो उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : لَا تَقُوْلُوْا ذَالِكَ بَلْ قُوْلُوْا هٰذَا جَزَاءُ مَنْ قَصَدَ طَوَافَ مَكَّةَ بِلَا اِذْنِ اُمِّهٖ ٥

यह मत कहो कि यह चोर की सज़ा है बल्कि यह कहो कि यह मां की इजाज़त के बग़ैर तवाफ़े मक्का का इरादा करने वाले की सज़ा है। जब लोगों क़ो मालूम हुआ कि यह तो एक बुज़ुर्ग हैं और उन के हाल से वाक़िफ़ हुए तो रोने लगे और उन बुज़ुर्ग को उन के इबादत ख़ाना के पास लाकर छोड़ गए और इधर उन की मां इसी इबादत ख़ाना के अन्दर यह दुआ कर रही थीं।

يَارَبِّ اِنِ ابْتَلَيْتَ اِبْنِيْ بِبَلَاءٍ اَعِدْهُ اِلَيَّ حَتّٰى اَرَاهُ ط

तर्जमा : ऐ रब तआला ! अगर तूने मेरे बेटे को किसी मुसीबत में मुब्तला कर दिया है तो उसे मेरे पास लौटा दे ताकि मैं उसे देख लूँ।

ऐ रब तआला ! मां अन्दर यह दुआ मांग रही है और बेटा दरवाज़े पर यह सदा लगा रहा है कि मैं एक भूका मुसाफ़िर हूँ मुझे खाना खिला दो।

हज़रात ! न बेटे को मालूम है कि अपने ही दरवाज़े पर सदा दे रहा है और न मां को मालूम कि यह भूका मुसाफ़िर मेरा ही बेटा है।

मां ने कहा दरवाज़े के पास आओ, मुसाफिर ने कहा मेरे पास पेर नहीं हैं मैं कैसे आऊँ, मां ने कहा हाथ बढ़ाओ, मुसाफ़िर ने कहा मेरे पास हाथ भी नहीं, मां अब तक उस मुसाफ़िर को पहचान न सकी थी उस ने कहा अगर सामने आकर मैं तुझे खाना खिलाऊँ तो मेरे और तेरे दरमियान हुरमत क़ाइम हो जाएगी तो मुसाफ़िर बोला कि आप फ़िक्र न करें मैं आँखों से भी महरूम हूँ तो मां एक रोटी और कूज़े में ठन्डा पानी ले कर आई और उसे खिलाया, पिलाया मगर पहचान न सकी। अलबत्ता वह मुसाफ़िर पहचान गया और उस ने अपना सर मां के क़दमों में रख कर अर्ज़ किया :

أُمَّ الْقَلْبِ الْأَسْوَدِ ऐ मां ! मैं तेरा ना फ़रमान बेटा हूँ।

अब मां भी पहचान गई और बेटे की हालते ज़ार देख कर सीने के अन्दर मां का दिल टुकड़े टुकड़े हो गया और वह बिलक उठी और फ़रियाद करने लगी। ऐ रब तआला ! जब हाल इतना बुरा हो गया है तो मेरी और मेरे बेटे की रूह को क़ब्ज़ कर ले ताकि लोगों के सामने शर्मिन्दा न हों अभी यह दुआ पूरी भी न हुई थी कि मां बेटे दोनों का इन्तिक़ाल हो गया। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 230)

हज़रात ! हम अल्लाह तआला की बारगाह में हज़ारों बार पनाह मांगते हैं कि अल्लाह तआला अपने अमान में रखे और मां बाप के दिल दुखाने और उन को नाराज़ करने की बला व मुसीबत से महफ़ूज़ रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

मां अगर काफ़िरा है तो भी हुस्ने सुलूक वाजिब है

हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूर पुर नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अहदे पाक में मेरी मुशरिका (काफ़िरा) मां मेरे पास आई तो मैं ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया कि मेरी बे दीन (काफ़िरा) मां आई हैं, मैं उन के साथ किया सुलूक करूँ ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा सुलूक करो। (सही बुख़ारी, जि. 2, स. 882, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 3, स. 221)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर पता चला कि मां, बाप अगरचेह काफ़िरो काफ़िरा, मुश्रिको मुश्रिका भी हों तो औलाद पर फिर भी उन की इताअत व ख़िदमत फ़र्ज़ है तो मोमिन व मोमिना बाप और मां का ख़याल रखना और उन की इताअत व खिदमत का हर तरह से ख़याल रखना हम पर किस क़दर लाज़िम व ज़रूरी होगा।

मां की दुआ से गुनाह मुआफ़ होते हैं

हदीस शरीफ़ : रिवायत है कि एक शख़्स ने आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में अर्ज़ किया कि मैं ने बहुत बड़ा गुनाह किया है (क्या) मेरे लिये तौबह है ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तेरी मां है ? (तो उस शख़्स ने) अर्ज़ की नहीं। फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तेरी ख़ाला है ? तो उस शख़्स ने अर्ज़ की हां ! फ़रमाया जाओ और ख़ाला के साथ हुस्ने सुलूक करो। (अल मुस्तदरिक, सहीहैन, जि. 4, स. 171, सही इब्ने हब्बान, जि. 1, स. 403, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 164)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ साफ़ ज़ाहिर है कि कितना बड़ा गुनाह क्यूँ न हो मां की दुआ से और मां नहीं है तो मां की बहन ख़ाला की दुआ से मुआफ़ हो जाता है। अल्लाह तआला हम को मां की दुआ के साथ ख़ाला की भी दुआ लेने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

मां बाप के दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक

हदीस शरीफ़ : एक अन्सारी सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में अर्ज़ किया कि मां, बाप के इन्तिक़ाल के बाद कोई तरीक़ा है कि उन के साथ नेकी और भलाई किया करूँ। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

نَعَمْ اَرْبَعٌ हां चार बातें हैं (1) उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना (2) और उन के लिये दुआए मग़फ़िरत करना (3) और उन की वसियत को पूरी करना (4) और उन के दोस्तों की इज़्ज़त करना और उन के साथ भलाई करना।

और फ़रमाया : اِنَّ اَبَرَّ الْبِرِّ बे शक सब से बड़ी नेकी और हुस्ने सुलूक बाप के साथ यह है कि बाप के न होने पर उस के दोस्तों के साथ भलाई करे और उन से रिश्ता जोड़े रखे। (बुख़ारी शरीफ, अबू दाऊद, ब हवाला आला हजरत, हुक़ूक़े वालिदैन, स. 25)

बाप के दोस्त की अहमियत

हदीस शरीफ़ : हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा, जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

तुम्हारे बाप ने जिस के साथ दोस्ती की तुम अपने बाप के उस दोस्ती की हिफ़ाज़त करो और उसे काट न दो कि अल्लाह तआला तेरा नूर बुझा देगा।

(बुख़ारी शरीफ, अदब, मुफ़रद, फ़तावा रज़विया, जि. 10, स. 194)

हज़रत अब्दुल्लाह का बाप के दोस्त के साथ हुस्ने सुलूक

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यसार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को मक्का मुअज़्ज़मा के रास्ते में (हज के मौक़े पर) एक देहाती आदमी मिला तो आप ने उस देहाती को पहचान लिया कि उस देहाती के बाप आप के वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दोस्त थे तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने उस देहाती को सलाम किया। अपनी सवारी के गधे पर उस शख़्स को सवार किया और सर से अमामा उतार कर उसे दे दिया। हज़रत इब्ने दीनार कहते हैं कि हम ने उन से कहा अल्लाह तआला आप को और नेक व सालेह बनाए। देहाती लोग तो थोड़े पर खुश हो जाते हैं तो उन्होंने फ़रमाया।

बे शक उन के बाप मेरे वालिद हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दोस्त थे और मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से यह फ़रमाते हुए सुना है कि सब से बड़ी नेकी और सब से अच्छा सुलूक यह है कि बेटा अपने बाप के दोस्तों के साथ नेकी और अच्छा बरताओ करे। उन से रिश्ता जोड़े रखे।

(मुस्लिम शरीफ, जि. 2, स. 314, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 164)

मां, बाप की क़ब्र पर हर जुमा को जाना चाहिये

आशिक़े रसूल, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि वालिदैन करीमैन के इन्तिक़ाल के बाद उन के हुक़ूक़ में से है।

1) औलाद को चाहिये कि हर जुमा को उन की क़ब्र की ज़ियारत के लिये जाए और वहाँ सूरए यासीन शरीफ़ ऐसी आवाज़ से पढ़ना चाहिये कि वह सुनें और उस का सवाब उन की रूह को पहुँचाए और राह में जब कभी उन की क़ब्र आए तो बे सलाम और बग़ैर फ़ातिहा पढ़े न गुज़रे
2) मां, बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़िन्दगी भर नेक सुलूक करता रहे।
3) मां बाप के दोस्तों से दोस्ती क़ाइम रखे और हमेशा उन का एज़ाज़ो इकराम करता रहे
4) कभी किसी के मां, बाप को बुरा न कहे ताकि उन के मां, बाप को कोई बुरा न कहे। (आला हज़रत, हुक़ूक़े वालिदैन, स. 24)

मां, बाप के लिये मग़फ़िरत की दुआ नेक सुलूक है

हदीस शरीफ़ (1) महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اِسْتِغْفَارُ الْوَلَدِ لِاَبِيْهِ بَعْدَ الْمَوْتِ مِنَ الْبِرِّ ط

यानी औलाद की मग़फ़िरत की दुआ मां, बाप के लिये इन्तिक़ाल के बाद नेक सुलूक है। (आला हज़रत, हुक़ूक़े वालिदैन, स. 25)

मां बाप के लिये दुआ न करना रोज़ी घटा देता है

हदीस शरीफ़ : अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِذَا تَرَكَ الْعَبْدُ الدُّعَاءَ لِلْوَالِدَيْنِ وَاِنَّهٗ يَنْقَطِعُ عَنْهُ الرِّزْقُ ط

यानी जब आदमी मां, बाप के लिये दुआ करना छोड़ देता है तो उस का रिज़्क़ मुन्क़तअ़ हो जाता है। (फ़तावा रज़विया, जि. 10, स. 193)

मां, बाप के विसाल के बाद उन के लिये नेकी की सूरत

हदीस शरीफ़ : एक सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम मैं अपने मां, बाप के साथ उन की ज़िन्दगी में नेकी करता था अब वह इन्तिक़ाल कर गए हैं तो उन के साथ नेक सुलूक किस तरह से किया करूँ?

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि उन के मरने के बाद उन के साथ नेक सुलूक यह है कि अपनी नमाज़ के साथ उन के लिये भी नमाज़ पढ़े और अपने रोज़ों के साथ उन के लिये भी रोज़े रखे। यानी जब अपने लिये नफ़्ल नमाज पढ़े या रोज़े रखो तो कुछ नफ़्ल नमाज़ उन की तरफ़ से पढ़े और उन्हें सवाब पहुँचाए। या नमाज, रोज़ा जो भी नेक अमल करे उस में उन के लिये भी सवाब पहुँचने की नियत कर ले कि उन्हें भी सवाब मिलेगा और तुम्हारे सवाब में कुछ भी कम न होगा। (मुहीत, रद्दुल मोहतार, आला हज़रत, हुक़ूक़े वालिदैन, स. 26)

और आला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि:

जो कुछ नफ़्ल सदक़ा करना चाहे तो उस के लिये अफ़ज़ल है कि तमाम मोमिनीन, मोमिनात की नियत कर ले कि उस का सवाब उन सब तक पहुँचेगा।

وَلَا يَنْقُصُ مِنْ اَجْرِهٖ شَيْئًا ط

और उस के सवाब में कुछ भी कमी न होगी। (आला हज़रत हुक़ूक़े वालिदैन, स. 27)

मां, बाप की जानिब से हज करने वाला नेकों के साथ उठेगा

हदीस शरीफ़ : हमारे हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स अपने मां, बाप की तरफ़ से हज करे या उन का क़र्ज़ अदा करे। بَعَثَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الْاَبْرَارِ ط तो अल्लाह तआला उस शख़्स को क़ियामत के दिन नेकों के साथ उठाएगा। (तबरानी औसत)

हदीस शरीफ़ 2 : आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जब आदमी अपने मां, बाप की जानिब से हज अदा करता है तो वह हज उस के और उन दोनों की तरफ़ से क़ुबूल किया जाता है और उन की रूहें आसमान में उस से ख़ुश होती हैं और यह शख़्स अल्लाह तआला के नज़दीक मां, बाप के साथ नेक सुलूक करने वाला लिखा जाता है।

मां बाप की तरफ़ से हज करने वाला दस हज का सवाब पाता है

हदीस शरीफ़ 3 : मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने मां, बाप की तरफ़ से हज करे तो उन की तरफ़ से हज अदा हो जाएगा।

وَكَانَ لَهٗ فَضْلُ عَشْرِ حِجَجٍ ط और उस शख़्स को दस हज का सवाब ज़्यादा मिलेगा।

(दार क़ुतनी, फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि. 10, स. 194)

मां, बाप की क़ब्र की ज़ियारत से गुनाह बख़्श दिये जाते हैं

हदीस शरीफ़ 4 : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने मां, बाप दोनों या एक की क़ब्र पर जुमा के दिन ज़ियारत के लिये जाए तो अल्लाह तआला उस के गुनाह बख़्श दे और वह शख़्स मां, बाप के साथ अच्छा सुलूक करने वाला लिखा जाए। (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 154 आला हज़रत, हुक़ूक़े वालिदैन, स. 30)

हदीस शरीफ़ 5 : हमारे आक़ा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स हर जुमा को अपने मां, बाप या उन में से एक की क़ब्र की ज़ियारत करे और वहां यासीन शरीफ़ पढ़े तो उस में जितने हुरूफ़ हैं उन सब की गिनती के बराबर अल्लाह तआला उस के गुनाह बख़्श देगा। (देलमी शरीफ़, फ़तावा रज़विया, जि. 10, स. 194)

हज़रात ! चलते चलते याद रखिये और मेरा बयान इख़्तिताम पज़ीर हो कि यह हदीस शरीफ़ भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये कि मां, बाप का मक़ाम व मरतबा इस क़दर बलन्द व बाला है कि औलाद ता उम्र उन की ख़िदमत करती रहे और सफ़र में अपनी पीठ पर बिठा कर उन को लाए और ले जाए और उन को हज कराए तो भी उन का हक़ अदा नहीं हो सकता।

मां की महब्बत का बदला कुछ भी नहीं हो सकता

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में एक सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! एक मरतबा राह में ऐसे गरम पत्थरों पर मैं चला हूँ कि अगर गोश्त उन पर डाला जाता तो कबाब हो जाता। मैं छः मील तक अपनी मां को अपनी गरदन पर सवार करके ले गया हूँ, क्या मैंने अपनी मां का हक़ अदा कर दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : لَعَلَّهُ أَنْ يَّكُوْنَ بِطَلْقَةٍ وَّاحِدَةٍ यानी तेरी पैदाइश के वक़्त जिस क़दर दर्द के झटके उस ने उठाए हैं शायद उन में से एक झटके का बदला हो सके। (तबरानी शरीफ़, आला हज़रत हुक़ूके वालिदैन, स. 33)

अल्लाहु अकबर ! ऐ ईमान वालो ! मां बाप का मक़ाम किस क़दर अरफ़अ व आला है कि कोई औलाद ज़िन्दगी भर उन की ख़िदमत में मश्ग़ूल रहे तो भी उन के हुक़ूक़ मुकम्मल अदा नहीं हो सकते। अल्लाह तआला मां, बाप का ख़िदमत गुज़ार और फ़रमांबरदार बनाए। आमीन सुम्मा आमीन।

औलाद के हुक़ूक़ मां बाप पर

हज़रात ! आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा, आला हज़रत, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लिखा है कि मां, बाप पर औलाद के हुक़ूक़ किया हैं उस में से कुछ यहाँ बयान किये जाते हैं :

अल्लाह तआला ने अगरचेह मां, बाप का हक़ औलाद पर बहुत ही बड़ा बनाया, यहाँ तक कि अपने हक़ के बराबर उस का ज़िक्र फ़रमाया, मगर औलाद का हक़ भी मां बाप पर अज़ीम रखा है।

1) सब से पहला हक़ वुजूदे औलाद से भी पहले यह है कि आदमी अपना निकाह किसी रज़ील क़ौम से न करे कि बुरी रग ज़रूर रंग लाती है।
2) दीनादर लोगों में शादी करे कि बच्चे पर नाना, मामूं की आदात व अफ़आल का भी असर पड़ता है।
3) जिमाअ की इब्तिदा बिस्मिल्लाह शरीफ़ से करे वर्ना बच्चे में शैतान शरीक हो जाता है।
4) जिमाअ के वक़्त औरत की शर्मगाह पर निगाह न करे कि बच्चे के अन्धे होने का अन्देशा है।
5) जिमाअ के वक़्त ज़्यादा बातें न करे कि बच्चा के गूंगे या तोतले होने का ख़तरा है।
6) बीवी और शोहर (दोनों) कपड़ा ओढ लें जानवरों की तरह बरहना न हों कि बच्चा के बे

हया होने का ख़तरा है।

7) जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन सीधे कान में अज़ान और बाएं कान में तकबीर कहे कि शैतान के ख़लल और उम्मस्सिबयान से बचे।

8) छूहारा वग़ैरह कोई मीठी चीज़ चबा कर उस के मुंह में डाले कि हलावते अख़्लाक़ की फ़ाल हसन हो।

9) अक़ीक़ा सातवें दिन और न हो सके तो चौदहवीं दिन, वर्ना इक्कीसवीं दिन करे। लड़की के लिये एक (बकरी) और लड़के के लिये दो (बकरा) कि उस में बच्चा को गोया रहन से छुड़ाना है।

10) सर के बाल उतरवाए।

11) बालों के बराबर चाँदी तोल कर ख़ैरात करे।

12) सर पर ज़अफ़रान लगाए।

13) नाम रखे, यहाँ तक कि कच्चे बच्चे का भी जो कम दिनों का गिर जाए वर्ना अल्लाह तआला के यहाँ शिकायत करेगा।

14) बुरा नाम न रखे कि फ़ाल बद है (यानी बुरे नाम का बुरा असर पड़ता है इस लिये बुरा नाम न रखे)

15) (अच्छा नाम रखे) अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहीम, अहमद, हामिद, वग़ैरहा इबादात व हम्द के या अम्बिया व औलिया अपने बुज़ुर्गों में जो नेक लोग गुज़रे हों उन के नाम पर नाम रखे कि मूजिब बरकत है। खुसूसन नामे पाक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कि इस मुबारक नाम की बे पायां बरकत, बच्चे की दुनिया व आख़िरत में काम आती है।

16) जब मुहम्मद नाम रखे तो उस की ताज़ीम व तकरीम करे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम)

17) मारने, बुरा कहने में एहतियात करे।

18) जो मांगे वर वजह मुनासिब दे।

19) ख़ुदा की उन नेअमतों के साथ लुत्फ़ का बरताओ रखे उन्हें मुहब्बत, प्यार करे, बदन से लिपटाए, कन्धे पर चढ़ाए उन के हंसने, खेलने, बहलने की बातें करे।

20) उन की दिलजोई, दिलदारी, रिआयत, मुहाफ़िज़त, हर वक़्त हत्ता कि नमाज़ व ख़ुतबा में भी मलहूज़ रखे।

21) सफ़र से आए तो उन के लिये कुछ न कुछ तोहफ़ा ज़रूर लाए।

22) ज़बान खुलते ही अल्लाह, अल्लाह, फिर ला इलाहा इल्लल्लाह फिर पूरा कलमए तैय्यिबा सिखाए।

23) क़ुरआन मजीद पढ़ाए।

24) मुशफ़िक़ नेक व सालेह उस्ताज़ सहीहुल अक़ीदा सने रसीदा (पक्की उम्र वालों) के

सुपुर्द करे और लड़की को नेक व पारसा औरत से पढ़वाए।

25) अक़ाइदे इस्लाम व सुन्नत सिखाए कि लौहे सादा फ़ितरत इस्लामी व क़ुबूल हक़ पर मख़लूक़ है। उस वक़्त का बताया पत्थर की लकीर होगा।

26) महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व ताज़ीम उन के दिल में डाले कि अस्ल ईमान व ऐने ईमान है।

27) आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आलो अस्हाब व औलिया व उलमा की महब्बत व अज़मत की तालीम दे कि अस्ल सुन्नत व ज़ेवरे ईमान बल्कि बाइसे बक़ाए ईमान है।

28) सात बरस की उम्र से नमाज़ की ज़बानी ताकीद शुरू कर दे।

29) इल्मे दीन, ख़ुसूसन वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ व रोज़ा वग़ैरह के मसाइल सिखाए।

30) पढ़ाने, सिखाने में रिफ़्क़ व नर्मी मलहूज़ रखे।

31) मौक़े पर चश्म नुमाई, तंबीह, तहदीद करे मगर कोसना न करे कि उस से इस्लाह की बजाए ज़्यादा फ़साद का अन्देशा है।

32) मारे तो मुंह पर न मारे।

33) जब दस बरस का हो तो नमाज़ मार मार कर पढ़ाए।

34) इस उम्र यानी दस बरस की उम्र से) अपने बल्कि किसी के साथ न सुलाए, जुदा बिस्तर, जुदा पलंग पर अपने पास रखे।

ख़ास लड़की के हुक़ूक़ :

35) उस के पैदा होने पर ना ख़ुशी (का इज़हार) न करे बल्कि नेअ़मते इलाहिया जाने।

36) सीना, पिरोना, कातना, खाना पकाना सिखाए।

37) सूरए नूर की तालीम दे।

38) लिखना हर गिज़ न सिखाए कि एहतिमाल फ़ितना है।

39) बेटों से ज़्यादा दिलजोई और ख़ातिर दारी रखे कि उन का दिल बहुत छोटा होता है।

40) जो चीज़ दे पहले बेटी को दे बाद में बेटों को दे।

41) नो बरस की उम्र से न अपने पास सुलाए न भाई वग़ैरह के पास सोने दे।

42) बाला ख़ाना (यानी छत) पर न रहने दे।

43) घर में लिबास व ज़ेवर से आरास्ता करे कि पयाम रग़बत के साथ आएं।

44) जब कफ़ू मले निकाह में देर न करे।

45) हत्तल इमकान बारह बरस की उम्र में बयाह दे।

46) हर गिज़ हर गिज़ फ़ासिक़, फ़ाजिर, ख़ास तौर से बद मज़हब के निकाह में न दे।
(मुलख़्ख़सन फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि. 10, स. 46)

लड़की की परवरिश पर जन्नत की बशारत

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस की परवरिश में दो लड़कियाँ बालिग़ होने तक रहें तो वह क़ियामत के दिन इस तरह आएगा। اَنَاوَهُوَ هٰكَذَا وَضَمَّ اَصَابِعَهٗ ○ कि मैं और वह बिल्कुल पास, पास होंगे यह कहते हुए हुज़ूर ने अपनी उंगलियाँ मिला कर फ़रमाया कि इस तरह (सही मुस्लिम)

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स तीन लड़कियाँ या तीन बहनों की परवरिश करे फिर उन को अदब सिखाए और उन के साथ महरबानी करे यहाँ तक कि ख़ुदाए तआला उन को मुस्तग़नी कर दे। (यानी वह बालिग़ हो जाएं और उन का निकाह हो जाए) तो परवरिश करने वाले पर अल्लाह तआला जन्नत को वाजिब कर देगा। एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! और दो बेटियों और दो बहनों की परवरिश पर क्या सवाब है ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया दो का सवाब भी यही है : حَتّٰى لَوْ قَالُوْا اَوْ وَاحِدَةً لَقَالَ وَاحِدَةً

यानी सहाबा अगर एक बेटी या एक बहन के बारे में दरयाफ़्त करते तो एक की निस्बत भी आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम यही फ़रमाते। (शरहुस्सुन्नह, मिश्कात)

हज़रात ! यह जो कुछ बयान हुआ उन में कुछ मुस्तहब्बात हैं कि उन के छोड़ने पर मुवाख़ज़ह न होगा लेकिन अज्रो सवाब और अच्छी औलाद की बरकत से महरूमी ज़रूर होगी और कुछ फ़र्ज़ (ज़रूरी अम्र) हैं जिन के तर्क पर यक़ीनन अल्लाह तआला बरोज़े क़ियामत गिरफ़्त ज़रूर फ़रमाएगा।

इस लिये हर मां, बाप पर ज़रूरी है कि औलाद के साथ इसी तरह सुलूक करें और उन के साथ पेश आएं जैसा कि ऊपर बयान हुआ। अल्लाह तआला हमें मां, बाप का ख़िदमत गुज़ार बनाए और हमें औलाद के हमराह इस्लामी तालीमात की रोशनी मे परवरिश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए वर्ना दोनों को अल्लाह तआला की बारगाह में अपने किये का हिसाब व किताब देना है।

अल्लाह तआला हमें औलाद होने की हैसियत से अपने मां, बाप की इज़्ज़त व तकरीम की तौफ़ीक़ दे और अगर हम मां, बाप हैं तो हम को अपने औलाद के हुक़ूक़ इस्लामी तालीमात के साथ अदा करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन। सुम्मा आमीन। बिजाहि हबीबिहिल करीम व आलिही व अस्हाबिही अजमईन।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(5)

जुमादल ऊला

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

उस्ताज़ और आलिम का मक़ाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ط

तर्जमा : अल्लाह से उस के बन्दों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

(पारा 22, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

तमहीद : اَلْعِلْمُ نُوْرٌ इल्म नूर है उजाला है अन्धेरे को दूर कर के रास्ता दिखाता है।

अल्लाह तआला का रास्ता : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का रास्ता, जन्नत का रास्ता। इल्म अल्लाह व रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूर है, कुरआन का नूर है, हदीस व सुन्नत का नूर है। इल्म ! हिदायत का नूर है, शरीअत व तरीक़त का नूर है।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता : قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान।

(पारा 23, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! कितने वाज़ेह अन्दाज़ में हमारा ख़ालिक़ व मालिक रब तआला इरशाद फ़रमाता है कि क्या आलिम और जाहिल दोनों बराबर हैं ? मतलब व मक़सद साफ़ अयां है कि आलिम नूर वाला है और जाहिल अन्धेरे में है और जिहालत मौत है और इल्म ज़िन्दगी है।

बाबे मदीनतुल इल्म : हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

اَلنَّاسُ مَوْتٰى وَاَهْلُ الْعِلْمِ اَحْيَاءٌ ط

यानी (बे इल्म) लोग मुर्दा हैं और इल्म वाले ज़िन्दा हैं। (दुर्रे मुख़्तार, स. 51)

और ! मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही का इरशादे पाक है :

رَضِيْنَا قِسْمَةَ الْجَبَّارِ فِيْنَا
لَنَا عِلْمٌ وَّلِلْجُهَّالِ مَال

यानी हम अल्लाह तआला की तक़सीम पर राज़ी हैं कि उस ने हमें इल्म दिया और जाहिलों को माल।

इल्मे दीन का सीखना फ़र्ज़ है : मदीनतुल इल्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ

यानी इल्मे दीन सीखना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है।

(इब्ने माजह, स. 20, मिश्कात शरीफ़, स. 34)

हज़रात ! अल्लाह तआला की किताब कुरआने मजीद में और हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिस इल्म की फ़ज़ीलत को बताया गया है और मौलल मुस्लेमीन हज़रत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जिस इल्म को ज़िन्दगी से ताबीर फ़रमाया है तो आख़िर हम मालूम करें कि वह इल्म कौन सा इल्म है ? क्या वह स्कूल और कालेज का इल्म है तो नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि वह इल्म कुरआन व हदीस का इल्म है, शरीअत व सुन्नत का इल्म है, वह इल्म है जिस को पढ़ कर हमारे मदरसों के बच्चे हाफ़िज़े कुरआन और आलिमे दीन बनते हैं।

जलीलुल क़द्र मुहद्दिस, हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि : اِنَّ هٰذَا الْعِلْمَ دِيْنٌ यानी बे शक यह इल्म (यानी कुरआन व हदीस का इल्म) दीन है। (मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 37, सुनने दारमी, स. 124)

हज़रात ! दुनियावी तालीम का हुसूल मना नहीं है इस शर्त के साथ कि दीन व ईमान सलामत रहे।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا

तर्जमा : अल्लाह से उस के बन्दों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

(पारा 22, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

उलमा अम्बिया के वारिस हैं

आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعُلَمَآءُ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَآءِ यानी अम्बियाए किराम के वारिस (नाइब) उलमा हैं। (इब्ने माजह, स. 20, इब्ने हब्बान, जि. 1, स. 166)

हज़रात ! कुरआन व हदीस में किस क़दर उलमा की इज़्ज़त व बुज़ुर्गी को बयान किया गया है।

कुरआने मजीद में फ़रमाया गया है कि अल्लाह तआला से सही मअ़नों में डरने वाले

अल्लाह तआला के बन्दों में उलमा हैं।

और हदीस शरीफ से साबित हुआ कि उलमाए किराम अम्बियाए किराम के वारिस हैं मगर आज कल कुछ लोग कहते नज़र आते हैं कि वह उलमा और थे और आज के उलमा और हैं।

तो ऐसे जाहिलों से मेरी गुज़ारिश है कि पहले अपने गिरेबानों में मुंह डाल कर देखो फिर उन को बुरा भला कहना, जिन के पीछे तुम नमाज़ें पढ़ते हो और दीनी मसाइल भी उन्हीं उलमा से सीखते हो।

अफ़सोस सद अफ़सोस ! चेहरे पर दाढ़ी नहीं, नमाज़ों की पाबन्दी नहीं, घर का माहौल ग़ैरों के रंग व ढंग में ग़र्क़। न बच्चे कुरआन पढ़ पाते हैं और न जनाब खुद। अब तुम ग़ौर करो कि बुरा कौन है ?

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهٗ यानी जिस शख़्स ने ख़ुद को पहचाना उस ने ख़ुदा को पहचाना।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا

तर्जमा : अपनी जानों और अपने घर वालों को आग से बचाओ।

(पारा 28, रुकू 19, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! ख़ूब ग़ौर से अल्लाह तआला का फ़रमान सुन लीजिये कि मौलाना साहब को देखना है। या इमाम साहब को या और किसी को, और अल्लाह तआला तो तुम्हें ख़ुद को और घर वालों को देखने और जहन्नम से बचने का हुक्म दे रहा है। अल्लाह तआला हम को शैतान के मक्र से बचाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मेरी उम्मत की हलाकत दो चीज़ों में है इल्म का छोड़ देना और माल का जमा करना। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 632)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ की रोशनी में आलिम की फ़ज़ीलत मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُّفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ وَاِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّاللّٰهُ يُعْطِيْ ط

यानी अल्लाह तआला जिस शख़्स से भलाई चाहता है तो उसे दीन की समझ देता है (यानी आलिमे दीन बना देता है) और अल्लाह तआला (मुझे) देता है और मैं (सब में) तक़सीम करता हूँ। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 16, मुस्लिम जि. 2, स. 144, मिश्कात शरीफ़, स.32)

आलिम की मौत आलम की मौत है

हदीस शरीफ़ : अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَوْتُ الْعَالِمِ مَوْتُ الْعَالَمِ

यानी एक आलिमे दीन की मौत एक आलम की मौत है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 632)

आबिद पर आलिम की फ़ज़ीलत

हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने दो आदमियों का ज़िक्र किया गया, एक उन में से आबिद था दूसरा आलिम। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि : فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِيْ عَلٰى اَدْنَاكُمْ ط यानी आबिद पर आलिम की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे कि मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना आदमी पर।

फिर फ़रमाया आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने कि लोगों को भलाई सिखाने वाले पर अल्लाह तआला रहमत नाज़िल फ़रमाता है और उस के लिये फ़रिश्ते नीज़ ज़मीन व आसमान वाले यहाँ तक कि च्यूटियाँ अपनी सूराखों में और मछलियाँ (पानी में) उस के लिये दुआए ख़ैर करती हैं। (तिर्मिज़ी, मिश्कात शरीफ़, स. 34)

उलमा के क़लम की स्याही की अज़मत

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि बरोज़े क़ियामत उलमा (के क़लम) की स्याही की दवातें शोहदा के ख़ून के बराबर तोली जाएंगी। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 10, स. 141, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 632)

तालिबे इल्म के लिये फ़रिश्ते पर बिछाते हैं

हज़रत कसीर बिन क़ैस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं हज़रत अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ दमिश्क़ की मस्जिद में बैठा था तो एक आदमी ने कहा कि ऐ अबुद्दरदा बे शक मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शहर मदीना तैय्यिबा से यह सुन कर आया हूँ कि आप के पास कोई हदीस है जिसे आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से रिवायत करते हैं और मैं किसी दूसरे काम के लिये नहीं आया हूँ, तो हज़रत अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स इल्म (दीन) हासिल करने के लिये सफ़र करता है तो अल्लाह तआला उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलाता है। وَاِنَّ الْمَلٰئِكَةَ لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا رِضًا لِّطَالِبِ الْعِلْمِ ط

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 4, स. 241, मिश्कात शरीफ़, स. 23)

यानी और तालिबे इल्म की रज़ा (ख़ुशी) हासिल करने के लिये फ़रिश्ते अपने परों को बिछा देते हैं।

मछलियाँ पानी में आलिम के लिये दुआ करती हैं

और आक़ा करीम, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया और हर वह चीज़ जो आसमान व ज़मीन में है यहाँ तक कि मछलियाँ पानी के अन्दर आलिम के लिये दुआए मग़फ़िरत करती हैं और आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसी

चौदहवीं रात के चाँद की सितारों पर है।

وَاِنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ और बे शक उलमा अम्बिया के वारिस (नाइब) हैं।

और फ़रमाया आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने :

وَاِنَّ الْاَنْبِيَاءَ لَمْ يُوَرِّثُوْا دِيْنَارًا وَّلَا دِرْهَمًا और अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का तर्का दीनार व दिरहम नहीं है बल्कि उन्होंने वरासत में सिर्फ़ इल्म छोड़ा है तो जिस ने उसे हासिल किया उसने पूरा हिस्सा पाया। (तिर्मिज़ी, स. 384, अबू दाऊद, मिश्कात, स. 34)

सब से बड़ा सख़ी इल्म सिखाने वाला है

जूदो करम वाले आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम को मालूम है कि सब से बड़ा सख़ी कौन है ? तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया : اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ

अल्लाह और उस का रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बहतर जानते हैं तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला बड़ा सख़ी है, फिर मैं तमाम औलादे आदम से ज़्यादा सख़ी हूँ और मेरे बाद वह शख़्स ज़्यादा सख़ी है।

عَلَّمَ عِلْمًا فَنَشَرَهٗ यानी जिस ने इल्म सीखा और फिर उसे फैलाया और उस शख़्स को क़ियामत के दिन एक अमीर की तरह (बा इज़्ज़त) लाया जाएगा। (मिश्कात शरीफ़, स. 27)

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ यानी तुम में सब से बहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखाए। (बुख़ारी, जि. 1, स. 752, इब्ने माजह, स. 19)

ऐ ईमान वालो ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का अक़ीदा बहुत ग़ौर से मुलाहज़ा कीजिये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि सब से बड़ा सख़ी कौन है ? तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का जवाब था कि :

اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ यानी अल्लाह और रसूलुल्लाह जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बहतर जानते हैं।

हज़रात ! गोया सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का ईमान व अक़ीदा था कि बे शक अल्लाह तआला हर चीज़ को जानता है और अल्लाह तआला के बताने से हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी हर चीज़ को जानते हैं और अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया।

हज़रात ! यह अच्छा ईमान और सच्चा अक़ीदा एक सहाबी का था और वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी का अक़ीदा यह है, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(1) वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी का अक़ीदा कि :

रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है और लिखते हैं कि शैतान और मलकुल मौत के इल्म से रसूलुल्लाह का इल्म कम है। और शैतान व मलकुल मौत का इल्म कुरआन से साबित है और रसूलुल्लाह का इल्म कुरआन से साबित नहीं और जो शख़्स रसूलुल्लाह का इल्म साबित करे वह मुशरिक है। (बराहीने क़ातिआ, स. 51, मतबुआ कानपूर)

हज़रात ! ख़ूब ग़ौर कर के फ़ैसला कीजिये कि जो शख़्स शैतान के इल्म को ज़्यादा और अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म को कम बताए और शैतान के इल्म को माने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म का इनकार करे बल्कि मानने वालों को काफ़िर व मुश्रिक कहे, क्या वह शख़्स मोमिन व मुसलमान हो सकता है ? हरगिज़ नहीं।

इस लिये ! हर मोमिन पर फ़र्ज़े ऐन है कि ऐसे बद अक़ीदों से दूर रहे और किसी क़िस्म का तअल्लुक़ उन से रवा न रखे।

हज़रात ! एक आलिमे दीन का बड़ा मक़ाम है। एक शख़्स जो ग़ैर आलिम है वह रात भर जाग कर नफ़्ल नमाज़ पढ़े और पूरी रात इबादत में मशग़ूल रहे तो वह सवाब हासिल नहीं कर सकता जो सवाब अल्लाह तआला आलिमे दीन को सिर्फ़ एक मस्अला बता देने या एक मस्अला सिखाने पर अता फ़रमाता है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : हमारे हुज़ूर, नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : تَدَارُسُ الْعِلْمِ سَاعَةً مِّنَ اللَّيْلِ خَيْرٌ مِّنْ اِحْيَائِهَا यानी एक साथ इल्मे दीन का पढ़ना, पढ़ाना रात भर की इबादत से बेहतर है। (दारमी, जि. 1, स. 157, मिश्कात शरीफ़, स. 36)

एक आलिम शैतान पर हज़ार आबिद से ज़्यादा भारी है

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : فَقِيْهٌ وَاحِدٌ اَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنْ اَلْفِ عَابِدٍ

एक फ़क़ीह यानी एक आलिमे दीन शैतान पर हज़ार आबिद से ज़्यादा भारी है।

(तिर्मिज़ी, स. मिश्कात, स. 34)

आलिम का दीदार नबी का दीदार है

हदीस शरीफ़ : हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ زَارَ عَالِمًا فَكَاَنَّمَا زَارَنِيْ وَمَنْ صَافَحَ عَالِمًا فَكَاَنَّمَا صَافَحَنِيْ وَمَنْ جَالَسَ عَالِمًا
فَكَاَنَّمَا جَالَسَنِيْ وَمَنْ جَالَسَنِيْ اَجْلَسَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِي الْجَنَّةِ.

यानी जिस शख़्स ने किसी आलिम की ज़ियारत की तो उस ने मेरी ज़ियारत की और जिस ने किसी आलिम से मुसाफ़हा किया तो गोया उस ने मुझ से मुसाफ़हा किया और जो शख़्स किसी आलिम की मजलिस में बेठा मेरी मजलिस में बेठा और जो (दुनिया में) मेरी मजलिस

में बैठेगा तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन (मेरे साथ) जन्नत में बिठाएगा।
(नुज़्हतुल मजालिस, जि. 2, स. 156)

हदीस शरीफ़ : हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मां बाप के चेहरे को देखना इबादत है कअ़बा शरीफ़ को देखना इबादत है, और आलिम के चेहरे को देखना तमाम इबादतों की अस्ल है।
(मिश्कात शरीफ़, स. 34, नुज़्हतुल मजालिस, जि. 2)

चालीस दिन के लिये अज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है

अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِذَا مَرَّ الْعَالِمُ اَوِ الْمُتَعَلِّمُ عَلٰى قَرْيَةٍ رَفَعَ اللّٰهُ الْعَذَابَ عَنْ مَقْبَرَتِهَا اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا ٥

यानी जब आलिमे दीन या तालिबे इल्म किसी बस्ती से गुज़रता है तो अल्लाह तआला उस बस्ती के क़ब्रिस्तान से चालीस दिन के लिये अज़ाब उठा देता है।
(मिश्कात शरीफ़, स. 35, नुज़्हतुल मजालिस, जि. 2, स. 156)

आलिम की ख़िदमत से सत्तर हज का सवाब

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया :

ऐ इब्ने मस्ऊद ! तुम्हारा घड़ी भर इल्मे दीन के हलक़ए दर्स (यानी दीन की महफ़िल) में बैठना उस हालत में कि न कोई क़लम हाथ में हो, और न कोई हर्फ़ लिखो तो तुम्हारे लिये हज़ार गुलाम आज़ाद करने से बेहतर है। इस वास्ते कि आलिम का मरतबा अल्लाह तआला के नज़दीक हज़ार शहीदों और हज़ार हाफ़िज़ों से बुज़ुर्गी में ज़्यादा है।

पस ! जो शख़्स किसी आलिमे दीन या तालिबे इल्म की मदद करेगा, चाहे वह मदद बहुत ही कम क्यों न हो जैसे एक लुक़्मा रोटी या एक प्याला पानी या एक टुकड़ा कपड़ा या कोई टूटा हुआ क़लम या काग़ज़ हो तो उस शख़्स ने गोया सत्तर मरतबा ख़ानए कअ़बा की तामीर की और अल्लाह तआला उस को इस क़दर सवाब अता फ़रमाएगा गोया उस ने उहद पहाड़ के बराबर सोना राहे ख़ुदा में ख़र्च किया। (तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 78)

आलिम की ख़िदमत करने वाला बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होगा

हदीस शरीफ़ : हमारे प्यारे आक़ा, नबिये रहमत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्ल ने फ़रमाया : जो शख़्स आलिम की ताज़ीम के लिये खड़ा न हुआ वह मेरी शफ़ाअत से महरूम रहेगा और जो शख़्स आलिम को एक दिरहम दे या पेट भर खाना खिलाए या पानी पिलाए तो अल्लाह तआला उस को नेक औलाद अता फ़रमाएगा और बरोज़े क़ियामत वह शख़्स बिला हिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल होगा। (तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 78)

नबी का दोस्त तालिबे इल्म है

हदीस शरीफ़ : आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स मेरी रज़ा, चाहता है उस के लिये लाज़िम है कि मेरे दोस्त की ताज़ीम करे। सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप का दोस्त कौन है ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मेरा दोस्त तालिबे इल्म है और मुझ को मलाइका से भी ज़्यादा पसन्द है।

पस ! जिस शख़्स ने तालिबे इल्म की ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ज़ियारत की और जिस ने उस से मुसाफ़हा किया गोया उस ने मुझ से मुसाफ़हा किया और जो उस के पास बैठा गोया मेरे पास बैठा और जिस ने उस की ताज़ीम की गोया मेरी ताज़ीम की और जिस ने मेरी ताज़ीम की गोया उस ने अल्लाह तआला की ताज़ीम की। इस लिये वह शख़्स बिला हिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल होगा और क़ियामत के दिन वह शख़्स मेरी उम्मत का शफ़ीअ होगा।

(तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 79)

आलिम से बुग़्ज़ रखने वाला अज़ाब में

हदीस शरीफ़ : मौलल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु ताला अन्हु फ़रमाते हैं किउलमा उम्मत के चिराग़ हैं दुनिया और आख़िरत दोनों में, वह लोग ख़ुश होंगे जो आलिम के मक़ाम व मरतबा को पहचानें।

और जिन लोगों ने उलमा से बुग़्ज़ रखा और उनसे गुस्ताख़ी और बे अदबी की ऐसे लोगों के लिये (दोनों आलम) में अज़ाब है। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 33)

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا (आयत) की तफ़सीर : नाइबे मुस्तफ़ा हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस आयते करीमा رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(पारा 2, रुकू 9)

तर्जमा : ऐ रब हमारे ! हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा। (कन्ज़ुल ईमान)

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : दुनिया में भलाई इल्म और इबादत है और आख़िरत में जन्नत है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि 1, स. 49)

अमीरुल उलमा, हुज्जतुल इस्लाम, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि किसी दाना का क़ौल है कि जब आलिम का इन्तिक़ाल होता है तो पानी में मछलियाँ और फ़िज़ा में परिन्दे रोते हैं अगरचेह उस का चेहरा सामने नहीं है लेकिन उसकी याद नहीं भूलती। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 1, स. 51)

रात भर की इबादत से बेहतर मस्अला सीखना

हज़रत अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे लिये एक मस्अला सीखना रात भर के क़याम (यानी रात भर खड़े हो कर इबादत करने) से बेहतर है।

और ! हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि इल्मे दीन का हासिल करना नमाज़े नफ़्ल से अफ़ज़ल है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 1, स. 54)

उलमा का हक़ मां बाप से ज़्यादा है

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत यहया बिन मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : उलमाए किराम, उम्मते मुहम्मदिया पर उन के मां बाप से भी ज़्यादा रहम करने वाले हैं पूछा गया, वह कैसे ? इस लिये कि मां बाप औलाद को दुनिया की आग से बचाते हैं और यह उलमाए किराम उन को आख़िरत की आग से महफ़ूज़ रखते हैं और बयान फ़रमाते हैं कि इल्म का पहला मरहला खामोशी है फिर ग़ौर से सुनना फिर याद रखना, उस के बाद अमल करना, उस के बाद उस इल्म को फैलाना। (अहयाउल उलूम शरीफ, जि. 1, स. 61)

हज़रात ! मज़कूरा बयान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि पहले इल्म के मुताबिक़ अमल किया जाए फिर दूसरों को वअ़ज़ व नसीहत की जाए और इल्म सिखाया जाए वर्ना इल्म बे असर हो कर रह जाएगा और किसी बात में भी कोई असर न रह जाएगा।

आलिम को अपना मक़ाम याद रखना चाहिये

हदीस शरीफ़ : आलिमे रब्बानी इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि :

सब लोगों से अफ़ज़ल वह मोमिन आलिम है कि जब उस की तरफ़ रुजूअ किया जाए तो वह नफ़अ़ दे और जब उस से बे नियाज़ी बर्ती जाए तो वह भी बे नियाज़ हो जाए।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 10, स. 174, मुकाशफ़तुल कुलूब, स. 631)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ में जिस आलिम की फ़ज़ीलत बताई गई है वह मोमिन आलिम की है। तो उसी आलिम की ताज़ीम व तौक़ीर की जाएगी जो सुन्नी सहीहुल अक़ीदा आलिम हो वर्ना वहाबियों, देवबन्दियों, राफ़ज़ियों, यहूदियों, नसरानियों में भी आलिम होते हैं और उन्हीं बद अक़ीदा गिरोह के आलिमों को उलमाए सू (यानी बुरे उलमा) कहा गया है।

हज़रात ! बहुत से गुमराह सुन्नी भी, सुन्नी आलिम को, आलिमे सू यानी बुरा आलिम कहने लगते हैं, वह लोग अपने अन्जाम की फ़िक्र करें अल्लाह तआला अपनी हिफ़ाज़त और पनाह में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! कुछ लोग जाहिल ही नहीं बल्कि अजहल हैं मगर उन लोगों ने अपनी शक्ल व सूरत और वज़अ क़तअ सब आलिम की बना रखी है, मदरसे में दाख़ला ज़रूर लिया है और मदरसा की रोटियाँ भी ख़ूब खाई हैं मगर कुछ पढ़ा लिखा नहीं एक सतर भी अरबी इबारत पढ़ने की कुव्वत व सलाहियत नहीं रखते। ऐसे मौलवी ही बदनामी का ज़रीआ बने हुए हैं और क़ौम का हाल तो इस क़दर ख़राब है कि अगर बिगड़े हुए मौलवियों के बारे में बताया जाए कि उन नक़ली मौलवियों से बचो ताकि नेक आलिम की ख़िदमत की बरकत तुम्हें नसीब हो। तो कुछ लोग ख़ास कर दौलत मन्द तबक़ा यह सोचता है कि मौलवी का मौलवी से आपस का झगड़ा है। (अल अयाज़ बिल्लाहि तआला) और हमें उस में नहीं पड़ना चाहिये। इस तरह यह कारोबारी मुसलमान बे चारा अच्छे और सच्चे आलिम की सोहबत और ख़िदमत से महरूम रह जाता है।

हदीस में अच्छा आलिम कौन है : मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मालूम किया कि अहले इल्म यानी आलिम कौन लोग हैं ? तो उन्होंने जवाब दिया कि जो अपने इल्म के मुवाफ़िक़ अमल करे।

फिर आप ने पूछा कि आलिमों के दिलों से कौन सी चीज़ इल्म (की बरकत) को निकाल देती है ? तो उन्होंने जवाब दिया कि लालच। (दारमी, मिश्कात, स. 37)

आलिम ही सब से बुरा है और आलिम ही सब से अच्छा है

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि आगाह हो जाओ कि बुरों में सब से बद तरीन उलमाए सू हैं और अच्छों में सब से अच्छे उलमाए हक़ (यानी सुन्नी उलमा हैं)

(दारमी, जि. 1, स. 116, मिश्कात शरीफ़, स. 37)

हर सदी में मजद्दिद होते हैं

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जो बातें मैं ने मालूम कीं उन में से एक यह है

إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَبْعَثُ لِهٰذِهِ الْأُمَّةِ عَلٰى رَأْسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ يُّجَدِّدُ لَهَا دِيْنَهَا ط

यानी बे शक अल्लाह तआला हर सदी के ख़ातिमा पर इस उम्मत के लिये एक ऐसे शख़्स को भेजेगा जो उस के लिये उस के दीन को निखारता रहेगा। (अबूदाऊद शरीफ़, स. मिश्कात, स. 36)

हज़रात ! चौदहवीं सदी के मुजद्दिद, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं :

और पन्द्रहवीं सदी के मुजद्दिद इब्ने आला हज़रत, मुत्तक़िये आज़म, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म, अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी, रज़वी नूरी बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं।

आलिम की महफ़िल, ज़िक्र व तस्बीह की महफ़िल से बेहतर है

आक़ा करीम, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिदे नबवी शरीफ़ में तशरीफ़ लाए तो दो मजलिसें लगी हुई थीं, तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : दोनों भलाई पर हैं मगर एक (मजलिस) दूसरी (मजलिस) से अफ़ज़ल है। एक (मजलिस) वाले ज़िक्र व तस्बीह और इबादत में मसरूफ़ हैं। अल्लाह तआला चाहे तो उन को अता फ़रमाए (यानी उन को क़ुबूल करे) और चाहे तो मना कर दे। (यानी उस मजलिस को क़ुबूल न करे) और दूसरे लोग फ़िक़्ह या इल्म सीखते हैं (यानी दीन की बातें सीखते हैं) और जाहिलों को सिखाते हैं। पस ! यह मजलिस (दीन सीखने और सिखाने वाली) अफ़ज़ल है। وَبُعِثْتُ مُعَلِّمًا ثُمَّ جَلَسَ فِيْهِمْ

(मिश्कात शरीफ़, स. 36)

फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उसी मजिलस में बैठ गए (यानी दीन सीखने और सिखाने वाली मजलिस में)

हज़रात ! मालूम हुआ कि जिस मजलिस में दीन सिखाया जाता है या सीखा जाता है वह मजलिस बड़ी मुबारक होती है उस में आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाते हैं।

इब्लीस आलिम से घबराता है : एक दिन आक़ा करीम, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिद के दरवाज़े के क़रीब शैतान को खड़े देखा। तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया।

ऐ इब्लीस ! इस जगह क्या करता है। तो इब्लीस ने कहा कि मेरा इरादा यह है कि मस्जिद में जाकर उस नमाज़ पढ़ने वाले को ग़ाफ़िल कर के उस की नमाज़ को खराब करूँ। लेकिन मुझे उस ख्वाबीदह शख़्स से खतरह है। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तू नमाज़ी से क्यूं नहीं डरता जब कि वह इबादत और दुआ में है और उस सोने वाले शख़्स से क्यूं डरता है ? वह तो सोया हुआ है और ग़फ़लत म है। तो इब्लीस ने कहा कि उस नमाज़ी की नमाज़ खराब करना बड़ा आसान, क्यों कि यह जाहिल है और सोने वाला आलिम है अगर मैं नमाज़ी को बहकाऊँ और उस की नमाज़ खराब करूँ तो डरता हूँ कि कहीं आलिम बेदार हो कर उस की इस्लाह न कर दे तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जाहिल की इबादत से आलिम का सोना बेहतर है। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 36)

हज़रात ! खूब ग़ौर कर लीजिये कि आलिमे दीन का मक़ाम व मरतबा किस क़दर ऊंचा है कि जाहिल रात भर जाग कर इबादत करता रहे और आलिमे दीन इशा की नमाज़ पढ़ कर सोता रहे तो भी जाहिल की इबादत से आलिम का सोना बेहतर है।

हदीस शरीफ़ : हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ज़माना ऐसा आएगा कि लोग उलमा फ़ुक़हा से भागेंगे तो अल्लाह तआला उन को तीन बलाओं में मुब्तला कर देगा।

(1) उन के कामों में बरकत न होगी (2) उन पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत हो जाएँगे। (3) ऐसे लोग दुनिया से बे ईमान हो जाएँगे। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 39)

उस्ताज़ का मक़ाम व मरतबा

हज़रात ! आशिक़े मुस्तफ़ा, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि आलिमे दीन हर मुसलमान के हक़ में उमूमन और इल्मे दीन का उस्ताज़ अपने शागिर्द के हक़ में ख़ुसूसन महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाइब है।

और फ़तावा आलमगीरी के हवाले से लिखते हैं कि इमाम ज़िन्द वेसी ने फ़रमाया कि आलिम का हक़ जाहिल पर और उस्ताज का हक़ शागिर्द पर बराबर है। और वह हक़ यह है कि (शागिर्द) उस्ताज से पहले बात न करे और उस्ताज के बैठने की जगह, उस्ताज के ग़ाइब और हाज़िर दोनों में न बैठे। उस्ताज़ की बात को रद न करे और चलने में उस्ताज़ से आगे न चले। (फ़तावा रज़विया, जि. 10)

एक आयत सिखाने वाला आक़ा है

हमारे प्यारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَنْ عَلَّمَ عَبْدًا اٰيَةً مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ تَعَالٰى فَهُوَ مَوْلَاهُ ط

(तबरानी शरीफ़, कुन्ज़ुल उम्माल, जि. 1, स. 267)

यानी जिस ने किसी बन्दे को किताबुल्लाह की कोई एक आयत सिखा दी तो वह उस का आक़ा हो गया।

मौलल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

مَنْ عَلَّمَنِيْ حَرْفًا فَقَدْ صَيَّرَنِيْ لَهٗ عَبْدًا اِنْ شَاءَ بَاعَ وَاِنْ شَاءَ اَعْتَقَ ط

यानी जिस ने मुझे एक हर्फ़ पढ़ा दिया तो उस ने मुझ को अपना ग़ुलाम बना लिया अगर चाहे बेचे या चाहे आज़ाद करे।

और इमाम शमसुद्दीन सख़ावी (मक़ासिदे हसना) में मुहद्दिस शअ़बा बिन हज्जाज रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया :

مَنْ كَتَبْتُ عَنْهُ اَرْبَعَةَ اَحَادِيْثَ اَوْ خَمْسَةً فَاَنَا عَبْدُهٗ حَتّٰى اَمُوْتَ ط

यानी जिस से मैं ने चार पाँच हदीसें लिख लीं तो मैं उस का बन्दा (ग़ुलाम) हो गया यहाँ तक कि मैं मरूँ।

और ब अलफ़ाज़ दीगर फ़रमाया : مَا كَتَبْتُ عَنْ اَحَدٍ حَدِيْثًا اِلَّا وَ كُنْتُ لَهٗ عَبْدًا مَا اَحْيٰى ط

यानी जिस किसी से एक हदीस भी मैं ने लिखी (यानी सीखी) तो मैं उस का बन्दा (यानी ग़ुलाम) हो गया आख़िर दम तक। (आला हज़रत हुक़ूक़े वालिदैन, स. 47)

हज़रात ! उस्ताज़ का मक़ाम व मरतबा बहुत ही बलन्द व बाला है, जिस ने क़दर की वह नवाज़ा

गया और जो बड़े होते हैं वही बड़ों की शान व इज़्ज़त को पहचानते हैं मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हिकायत : बादशाह हारून रशीद बुज़ुर्गों का ख़ैर ख़्वाह और उन की बारगाह का मुअद्दब था उस ने अपने बेटे को हज़रत असमई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दीन पढ़ने के लिये भेजा और हज़रत की बारगाह में अर्ज़ किया कि आप मेरे बेटे को इल्मे दीन सिखा दें। हज़रत अस्मई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बादशाह के लड़के को पढ़ाने लगे।

एक दिन की बात है कि बादशाह हज़रत अस्मई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो देखा कि आप वुज़ू फ़रमा रहे हैं और शहज़ादा पानी डाल रहा है तो बादशाह हारून रशीद ने अपने बेटे को एक कोड़ा मारा और कहा कि अल्लाह तआला ने दो हाथ दिये हैं एक से पानी डाल और दूसरे हाथ से उस्ताज़ का पेर धो। (गायतुल औतार, जि. 1, स. 15)

हज़रात ! इस नूरानी वाक़िआ से हर मोमिन को सबक़ हासिल करना चाहिये कि उस्ताज़ का क्या मक़ाम है कि बादशाहे वक़्त अपने वेटे से उस्ताज़ आलिम के पेर धोने और ख़िदमत करने का सबक़ सिखा रहा है। अल्लाह तआला हमें भी अपने उस्ताज़ों क़ा अदब और उन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन। सुम्मा आमीन।

मौला अली ने वअ़ज़ बन्द करा दिया

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने (अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में) क़िस्सा बयान करने वालों (यानी वअ़्ज़ों को) मना कर दिया सिर्फ़ हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को वअ़्ज़ कहने की इजाज़त दी और सब को मना फ़रमा दिया। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 1, स. 112)

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अनहु फ़रमाते हैं कि : अपनी इस्लाह से पहले दूसरों की इस्लाह करने से बचो। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 1, स. 122)

और फ़रमाया : बे अमल आलिम उस बत्ती की तरह है जो दूसरों क़ो रौशन करती है और ख़ुद जलती रहती है।

और फ़रमाया कि आलिम के फिसलने से एक आलम फिसलता है।

और मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया दो आदमियों ने मेरी कमर तोड़ दी। एक आलिम जिस ने अपनी इज़्ज़त खो दी और दूसरा जाहिल जो ज़ाहिद बन रहा है।

(अहयाउल उलूम, जि. 1, स. 158, 165)

अल्लाह तआला ! हमें इल्म के साथ अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और आलिम कहलवाने की बजाए आक़ा करीम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का वफ़ादार गुलाम और उम्मती होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(5)

जुमादल ऊला

तीसरा जुमा .... पहला बयान

कोई तुझ सा हुआ है, न होगा शहा !

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
وَالضُّحٰى ۝ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝

तर्जमा : चाश्त की क़सम, और रात की, जब पर्दा डाले।

(पारा 30, रुकू 18, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात : हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हर आदत व ख़सलत ला जवाब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने नुबुव्वत ला जवाब।

आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाहे नुबुव्वत ला जवाब।

आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की समाअत ला जवाब।

आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअ़ले करामत पे लाखों सलाम

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अंगुश्ते रहमत ला जवाब

आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

नूर के चश्मे लहराएं दरया बहें
उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दस्ते रहमत ला जवाब आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौजे बहरे सख़ावत पे लाखों सलाम

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़दमे रहमत ला जवाब। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

खाई क़ुरआं ने ख़ाके गुज़र की क़सम
उस कफ़े पा की हुरमत पे लाखों सलाम

हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हर ख़ू और ख़सलत ला जवाब, हर अदा और आदत ला जवाब।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुस्नो जमाल ला जवाब हज़रात ! हुस्ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का चर्चा ख़ूब हुआ कि हूसने यूसुफ़ को देखा तो मिस्र की औरतों की उंगलियाँ कट गईं। और जमाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा तो अरब के मर्दों ने अपने सरों को कटा डाला।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने :

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मरदाने अरब

हमारे आक़ा अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक दिन सिदरह के मकीं हज़रत जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिब्राईल अलैहिस्सलाम तुम ने तमाम अम्बिया और उन के दरबार को देखा, हर रसूल और उन की बारगाहों को देखा, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की इजाबत, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़ुल्लत, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का ईसार व महब्बत, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की सतवत, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का जमाल, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का जलाल, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रूहानियत, यानी ऐ जिब्राईल अलैहिस्सलाम तुम ने हर नबी और तमाम पैग़म्बर और उन की शान व शौकत और उन के हुस्नो जमाल को देखा है।

ऐ जिब्राईल अलैहिस्सलाम यह तो बताओ कि तमाम नबियों और रसूलों में किसी को मेरी तरह देखा ?

قَالَ جِبْرِيْلُ قَلَّبْتُ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا فَلَمْ اَرَ رَجُلاً اَفْضَلَ مِنْ مُّحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ○

(ज़ुरक़ानी, जि. 1, स. 68, अनवारे मुहम्मदिया, स. 16)

यानी हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं ने तमाम मशारिक़ व मग़ारिब में फिर कर (घूम कर) देखा तो मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अफ़ज़ल कोई शख़्स नज़र नहीं आया।

फ़ारसी.......................

इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं:

यही बोले सिदरह वाले चमने जहाँ के थाले
सभी मैं ने छान डाले तेरे पाए का न पाया
तुझे इक ने इक बनाया, तुझे हम्द है ख़ुदाया

हुज़ूर बे मिस्ल व बे मिसाल हैं

हज़रात ! हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बे मिस्ल और बे मिसाल हैं।

हदीस शरीफ़ : لَمْ اَرَ قَبْلَهٗ وَلَا بَعْدَهٗ مِثْلَهٗ

यानी महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मिस्ल न उन से पहले देखा गया न उन के बाद। (मिश्कात शरीफ़, स. 517)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

लम याति नज़ीरुका फ़ी न–ज़– रिन मिस्ल तो न शुद पैदा जाना
जग राज को ताज तो सर सू है तुझ को शहे दोसरा जाना

हदीस शरीफ़ : نَبِيُّنَا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُوْتِيَ مِنَ الْجَمَالِ مَالَمْ يُؤْتَهٗ اَحَدٌ وَلَمْ يُؤْتَ يُوْسُفُ اِلَّا شَطْرَ الْحُسْنِ وَاُوْتِيَ نَبِيُّنَا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَمِيْعَهٗ.

यानी हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जो हुस्नो जमाल अता हुआ वह किसी को अता नहीं हुआ और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हुस्नो जमाल का एक जुज़ मिला था और हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हुस्ने कुल दिया गया। (ख़साइसे कुबरा, जि. 2, स. 182)

हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

اَنَا اَمْلَحُ وَاَخِيْ يُوْسُفُ اَصْبَحُ○

यानी मेरा हुस्न मलीह है और मेरे भाई यूसुफ़ अलैहिस्सलाम गोरे थे। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 5)

इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

हुस्न खाता है जिस के नमक की क़सम
वह मलीहे दिल आरा हमारा नबी
सारे अच्छों में अच्छा समझिये जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी

हुज़ूर का चेहरए मुबारक दलीले नुबुव्वत था

सहाबिये रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हमारे बे मिस्ल नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी में मोअजिज़ात व कमालात और दीगर दलाइले नुबुव्वत का असर व ज़हूर न भी होता तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही का चेहरए मुबारक ही आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दलीले नुबुव्वत के लिये काफ़ी था।

(ज़ुरक़ानी अल मवाहिब, जि. 4, स. 72)

हज़रत जाबिर बिन समोरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने चाँदनी रात में नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने धारे दार जोड़ा ज़ेबे तन कर रखा था।

اَنْظُرُ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَاِلَی الْقَمَرِ فَاِذَا ھُوَ اَحْسَنُ عِنْدِیْ مِنَ الْقَمَرِ ط

यानी मैं कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तरफ़ देखता और कभी चाँद की जानिब नज़र करता तो मेरे नज़दीक महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम चाँद से ज़्यादा ख़ूबसूरत थे।

(तिर्मिज़ी, दारमी, मिश्कात, स. 157)

हज़रात ! मशहूर मुहद्दिस हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत जाबिर बिन समोरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह कहना कि महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे नज़दीक ज़्यादा ख़ूबसूरत थे। यह ग़ायत दरजा इश्क़ो महब्बत की बुनियाद पर फ़रमाया वर्ना हक़ीक़त यह है कि महबूबे ख़ुदा मुहममद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से ले कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक तमाम अम्बिया व मुरसलीन में और क़ियामत तक तमाम मख़लूक़ात में सब के नज़दीक चाँद किया सारे हसीनों में सब से ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं। (मुलख़्ख़सन) (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 7)

चेहरए पुर नूर : हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का चेहरए नूर, जमाले इलाही का आईना था, ख़ुद महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं : مَنْ رَاٰنِیْ فَقَدْ رَاَی الْحَقَّ.

यानी जिस ने मुझ को देखा, उस ने अल्लाह तआला क़ो देखा। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1,स. 5)

हुज़ूर का चेहरए पुर नूर सच्चे होने की गवाही देता था

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (जो यहूदियों के बहुत बड़े आलिम थे) फ़रमाते हैं कि जब महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना तैय्यिबा तशरीफ़ लाए तो लोग जोक़ दर जोक़ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखने के लिये आ रहे थे और मैं भी आया तो मैं ने जब आप का चेहरए अनवर देखा तो जान लिया।

اَنَّ وَجْهَهٗ لَیْسَ بِوَجْهِ الْکَذَّابِ.

यानी बे शक उन का चेहरा झूटे का चेहरा नहीं है। (ख़साइसे कुबरा, अल मुस्तदरिक, जि. 4, स. 160)

हुज़ूर सब मख़लूक़ से ज़्यादा ख़ूबसूरत थे

हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह और हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हदीस शरीफ़ बयान फ़रमाते हैं कि :

كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا وَّاَحْسَنَهُمْ خَلْقًا ٥

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सूरत व सीरत में तमाम लोगों से ज़्यादा हसीन व जमील थे। (बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 258)

हज़रात ! हमारे आक़ा महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब मसरूर व ख़ुश होते तो आप का चेहरए अनवर ऐसा चमकता।

كَاَنَّهٗ قِطْعَةُ قَمَرٍ ٥ गोया चेहरए अनवर चाँद का टुकड़ा मालूम होता। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रात ! हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए नूर में जो चमक और जमाल है वह चाँद को भी नसीब नहीं, हक़ और सच तो यह है कि चाँद में जो कुछ हुस्नो जमाल है सब हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरे नूर की ख़ैरात और भीक है।

किसी आशिक़ ने कहा है :

चाँद से तशबीह देना यह भी कोई इन्साफ़ है
चाँद में तो दाग़ है और हज़रत का चेहरा साफ़ है

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! हज़रत इमाम बूसेरी रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत बड़े बुज़ुर्ग और सच्चे आशिक़े रसूल गुज़रे हैं वह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ातेगिरामी मुस्तफ़ा है और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का हुस्नो जमाल हत्ता कि आप की हर हर अदा बे नज़ीर और बे मिसाल है जभी तो अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को अपना महबूब बना लिया। (ख़ुलासा क़सीदा बुर्दा शरीफ़)

और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

ज़ात हुई इन्तिख़ाब वस्फ़ हुए ला जवाब
नाम हुआ मुस्तफ़ा तुम पे करोरों दुरूद

ऐ ईमान वालो ! अगर हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का तमाम हुस्न हमारे सामने ज़ाहिर हो जाता तो हमारी आँखों में उन जलवों के देखने की ताब व क़ुव्वत नहीं थी।

لَمْ يَظْهَرْ لَنَا تَمَامُ حُسْنِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

यानी हमारे सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का तमाम हुस्न ज़ाहिर नहीं हुआ। (अनवारे मुहम्मदिया, स. 194, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 4, स. 17)

उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं :

एक झलक देखने की ताब नहीं आलम को
वह अगर जलवा करें कौन तमाशाई हो

हुज़ूर की ज़ाते नूर पर सत्तर हज़ार ग़ैरत के परदे

हज़रात ! हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बड़ी शान है अल्लाह तआला ने अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते नूर और बे मिस्ल हुस्न व जमाल पर सत्तर हज़ार ग़ैरत के परदे डाल रखा है ताकि मेरे महबूब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार हो सके वर्ना किस आँख में ताब व ताक़त थी जो महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत कर सकती।

(खुलासा मुआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 118)

सच फ़रमाया उस्ताज़े ज़मन ने :

एक झलक देखने की ताब नहीं आलम को
वह अगर जलवा करें कौन तमाशाई हो

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ज़्यादा ख़ूबसूरत किसी को नहीं देखा, मालूम होता कि : كَأَنَّ الشَّمْسَ تَجْرِيْ فِيْ وَجْهِهٖ

गोया सूरज आप के चेहरे में चल रहा है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात, स. 518)

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जिस्मे नूर लासानी था और चेहरए अनवर बे मिस्ल व बे नज़ीर था और जिस्मे नूर व रहमत से निकलने वाला पसीना भी ऐसा बे नज़ीर और ख़ुश्बू वाला था कि कोई भी ख़ुश्बू उस का मुक़ाबला नहीं करती थी।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

भीनी भीनी महक पर महकती दुरूद
प्यारी प्यारी नफ़ासत पे लाखों सलाम

मशहूर मुहद्दिस हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सरापा नूर थे और नूर का साया नहीं होता इस लिये आप के जिस्मे पाक का साया नहीं था।

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 26)

और आशिक़े रसूल, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तू है साया नूर का हर उज़्व टुकड़ा नूर का
साया का साया न होता है न साया नूर का

हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम इस क़दर पाक और पाकीज़ा थे कि जिस्मे नूर पर कभी मक्खी नहीं बेठती थी और न कभी आप के कपड़ों में जुएं पड़ीं थीं। (शिफ़ा शरीफ़, स. 234, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 114, अनवारे मुहम्मदिया, स. 311)

हज़रात ! अल्लाहु अकबर ! क्या शान है हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कि मक्खी और जुएं भी पहचानते हैं कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मक़ाम व मरतबा क्या है इसी लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे पाक और कपड़े शरीफ़ पर कभी नहीं बैठे।

मेरे आक़ाए नेअमत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मेरे आक़ा की है बस शाने अज़ीम
कि जानवर भी करें जिन की ताज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम
पेड़ सज्दे में गिरा करते हैं

हुज़ूर का पसीना मुश्क व अंबर से ज़्यादा ख़ुश्बूदार था

ऐ ईमान वालो ! हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम केजिस्मे नूर रो कस्तूरी और अंबर से बढ़ कर ख़ुश्बू आया करती थी।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

وَلَا شَمَمْتُ مِسْكًا وَلَا عَنْبَرَةً اَطْيَبُ مِنْ رَائِحَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ٥

(बुखारी शरीफ़, जि. 1, स. 264, मिश्कात ,स. 517)

और यानी मैंने मुश्क व अम्बर और किसी ख़ुश्बू को बुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ज़्यादा ख़ुश्बू दार न पाया।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान फ़रमाती हैं :

كَانَ عَرَقُهُ فِيْ وَجْهِهٖ مِثْلَ اللُّؤْلُؤِ اَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ ط (खसाइसे कुबरा, जि. 1,स. 67)

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पसीना आता तो पसीना के क़तरे चेहरए मुबारक से मोतियों की तरह टपकते जो कस्तूरी से ज़्यादा ख़ुश्बूदार होते।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कभी कभी दोपहर के वक़्त हमारे घर तशरीफ़ लाते और आराम फ़रमाते जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सो जाते तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे पाक से पसीना निकलता और मेरी वालिदा पसीना मुबारक की बून्दों को एक शीशी में भर लेती थीं, एक दिन मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ऐसा करते देखा तो फ़रमाया ऐ उम्मे सलीम यह क्या करती हो ?

قَالَتْ هٰذَا عَرَقُكَ نَجْعَلُهٗ فِيْ طِيْبِنَا وَهُوَ مِنْ اَطْيَبِ الطِّيْبِ ط (बुखारी व मुस्लिम, मिश्कात, स. 517)

यानी उन्होंने ने कहा कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पसीना है हम उसे इत्र में मिला लें गे और यह पसीना तो तमाम इत्रों से ज़्यादा खुश्बू दार है।

हज़रात! सहाबए किराम और सहाबियाते इज़ाम का ईमान व अक़ीदा हुज़ूर पुर नूर, रसूले ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ कितना अच्छा और प्यारा था कि महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो बे मिसाल व बे नज़ीर हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुस्नो जमाल और आप का पसीना मुबारक भी बेमिस्ल और ला जवाब है।

मगर वहाबियों, देवबन्दियों का अक़ीदा भी देखते और सुनते चलिये और फ़ैसला कीजिये कि उन लोगों का अक़ीदा व ईमान किस क़दर गन्दा और नापाक है।

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी और उम्मती सब बराबर हैं

हज़रात! मोमिन तड़प उठेगा मगर मुनाफ़िक़ पर कुछ असर न होगा मुलाहज़ा कीजिये।

अहले हदीस कहलाने वाले वहाबी देवबन्दी, तब्लीग़ी जमाअत के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं।

1) सब इन्सान (नबी हों या उम्ती) आपस में भाई हैं, जो बड़ा हो वह बड़ा भाई। औलिया अम्बिया, इमाम ज़ादा, पीर व शहीद सब इन्सान ही हैं और आजिज़ (मजबूर) बन्दे हैं और हमारे भाई हैं और उन की ताज़ीम इन्सानों की तरह करनी चाहिये।
(तक़्वीयतुल ईमान, स. 131)

2) नबी ऐसे हैं जैसे गांव का चौधरी। (तक़्वीयतुल ईमान, स. 64)

ऐ ईमान वालो! ख़ूब ग़ौर करो फिर फ़ैसला करो कि वहाबी, देवबन्दी, किस क़दर हमारे आक़ा नबिये रहमत, मालिके जन्नत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखते हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपना जैसा एक इन्सान वह भी मजबूर और अपना भाई और गांव का चौधरी कहा और लिखा। नऊज़ु बिल्लाहे तआला।

हज़रात! वहाबियों, देवबन्दियों, का चेहरा क्या चाँद व सूरज से ज़्यादा ख़ूबसूरत है? और वहाबियों, देवबन्दियों का पसीना क्या मुश्क व अंबर से ज़्यादा ख़ुश्बूदार है? तो आप का जवाब यही होगा कि नहीं और हरगिज़ नहीं।

बल्कि वहाबियों, देवबन्दियों के चेहरों पर लअ़नत बरसती है और उन का चेहरा किस क़दर मनहूस होता है जो ज़माने भर में ज़ाहिर और मशहूर है और वहाबियों, देवबन्दियों का पसीना कितना बद बूदार होता है। किसी वहाबी का पसीना सूंघ लीजिये ख़ुद पता चल जाएगा कि दुनिया में इतनी ख़राब बद बू किसी और चीज़ में नहीं है मगर फिर भी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने जैसा एक इन्सान और

अपना भाई और गांव का चौधरी जानते और समझते हैं।

लिहाज़ा ! उन बे ईमानों से अपने ईमान व इस्लाम को महफ़ूज़ रखने के लिये उन से दूर रहना बहुत ही ज़रूरी है।

आला हज़रत, मोहसिने अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! अपने प्यारे नबी की शान मुलाहज़ा कीजिये।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि :

إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَسْلُكْ طَرِيقًا فَيَتْبَعُهُ أَحَدٌ إِلَّا عَرَفَ
أَنَّهُ قَدْ سَلَكَهُ مِنْ طِيبِ عَرْقِهِ أَوْ قَالَ مِنْ رِيحِ عَرْقِهِ۔

(मिश्कात शरीफ़, स. 517)

यानी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिस रास्ते से गुज़रते तो वह रास्ता ख़ुश्बू से मुअत्तर हो जाता और तलाश करने वाला ख़ुश्बू से पहचान लेता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस रास्ते से तशरीफ़ ले गए हैं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब मदीना तैय्यिबा के किसी रास्ते से गुज़रते।

وَجَدُوا مِنْهُ رَائِحَةَ الطِّيبِ وَقَالُوا مَرَّ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ هٰذَا الطَّرِيقِ ۝

(दलाइलुन्नुबुव्वत, स. 280, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 67)

तो लोग उस रास्ते से ख़ुश्बू पाकर कहते कि इस रास्ते से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़र हुआ है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

उन की महक ने दिल के गुन्चे खिला दिये हैं
जिस राह चल दिये हैं कूचे बसा दिये हैं

और फ़रमाते हैं :

अंबर ज़मीं, उबीर हवा, मुश्क तर गुबार
अदना सी यह शनाख़्त तेरी रह गुज़र की है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हमारे हुज़ूर, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में

हाज़िर हुआ और कहने लगा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मुझे अपनी बेटी का निकाह करना है और मेरे पास ख़ुश्बू नहीं है, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कुछ ख़ुश्बू अता फ़रमा दें तो हुज़ूर ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कल एक शीशी ले आना। दूसरे रोज़ वह शख़्स शीशी ले आया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दोनों बाज़ुओं से उस में पसीना डालना शुरू किया यहाँ तक कि वह शीशी भर गई फिर फ़रमाया कि इसे ले जा और बेटी से कह देना कि इस में से लगा लिया करे। पस जब वह आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पसीनए मुबारक को लगाती तो तमाम मदीना वालों को ख़ुश्बू पहुँचती।

فَسُمُّوْا بَيْتَ الْمُطَيِّبِيْنَ۔

यानी (पूरे मदीने में) उन का घर बैतुत्तय्यिबीन ख़ुश्बू वालों का घर मशहूर हो गया।

(ज़ुरक़ानी, जि. 4, स. 224, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 67)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(5)

जुमादल ऊला

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

रहमते आलम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَمَآ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝

तर्जमा : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहां के लिये।

(पारा 17, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

जिधर जिधर भी गए वह करम ही करम करते गए
किसी ने मांगा न मांगा, वह झोली भरते ही गए

सलाम उस पर कि जिस ने दुश्मनों को क़ुबाएं दीं
सलाम उस पर कि जिस ने गालियाँ सुन कर दुआएं दीं

और आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मां जब इकलोते को छोड़े
आ, आ कह के बुलाते यह हैं

बाप जहाँ बेटे से भागे
लुत्फ़ वहाँ फ़रमाते यह हैं

मरक़द में बन्दों को थपक कर
मीठी नीन्द सुलाते यह हैं

लाखों बलाएं, करोड़ों दुश्मन
कौन बचाए, बचाते यह हैं

और फ़रमाते हैं :

तेरा क़दे मुबारक गुलबने रहमत की डाली है
उसे बोकर तेरे रब ने बिना रहमत की डाली है

और फ़रमाते हैं :

डर था कि इस्यां की सजा, अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रहमत ने सदा, यह भी नहीं वह भी नहीं

तमहीद : अल्लाह तआला रहमान व रहीम जल्ला शानुहु ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये दुनिया में कम व बेश एक लाख चौबीस हज़ार अम्बियाए किराम और रसूलाने इज़ाम को मबऊस फ़रमाया, भेजा। हर नबी को अल्लाह तआला ने कमालात व मोअजिज़ात दे कर भेजा। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम आए तो रहमत ले कर आए, हज़रत शीश अलैहिस्सलाम आए तो रहमत ले कर आए, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम आए तो रहमत ले कर आए, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आए तो रहमत ले कर आए, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम आए तो रहमत ले कर आए, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम आए तो रहमत ले कर आए, हज़रत ईसा रूहुल्लाह आए तो रहमत ले कर आए, अल ग़रज ! सारे नबी रहमत ले कर आए, सारे रसूल रहमत ले कर आए मगर ! हमारे नबी, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आए तो सरापा रहमत बन कर आए।

तेरा क़द मुबारक गुलबन रहमत की डाली है
उसे बे कर तेरे रब ने बिना रहमत की डाली है

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ○

तर्जमा : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहां के लिये।

(पारा 17, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने अपनी शान यूं बयान फ़रमाई है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

तर्जमा : सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का।

(पारा 1, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यानी अल्लाह तआला तमाम जहां का रब है और आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तमाम जहान के लिये रहमत हैं।

काफ़िरों पर रहमत

हज़रात ! हम मुसलमानों और मोमिनों ही पर आक़ा करीम, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रहमत महदूद नहीं है बल्कि आलम की हर शय पर और कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन पर भी रहमत है।

रहमत रसूले पाक की हर शय पर आम है
हर गुल में हर शजर में मुहम्मद का नाम है

हज़रात ! अगली उम्मतों पर उन की बद आमालियों की वजह से दुनिया ही में अज़ाब आ जाता था और वह बरबाद कर दिये जाते थे। क़ौमे आद को हवा उड़ा ले गई। क़ौमे समूद ज़लज़ला से बरबाद कर दी गई। क़ौमे लूत की बस्तियाँ उलट, पुलट कर दी गईं। क़ौमे नूह तूफ़ान में ग़र्क़ कर दी गई। नबी अलैहिस्सलाम के मजरेमीन ख़िन्ज़ीर व बन्दर बना कर हलाक कर दिये गए।

मगर ऐ ईमान वालो ! आओ और अपने आक़ा करीम, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रहमत का जलवा देखो कुफ़्फ़ारे मक्का ने कैसे, कैसे ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े, शिर्क व बुत परस्ती करते रहे, अल्लाह जल्ला शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर ग़लत और गन्दी तोहमतें लगाते रहे और ऐसे, ऐसे मज़ालिम, सरकशी का मुज़ाहिरा किया कि ज़मीन उन की बद आमालियों से भर गई और कांपने लगी मगर उन गुनाहों और जुर्मों के बावजूद न उन पर आसमान से पत्थर बरसाए गए न उन की बस्तियाँ उलट, पुलट की गईं, न उन की सूरतें मस्ख़ हुईं बल्कि हद तो यह हो गई थी कि कुफ़्फ़ारे मक्का दुआ मांगा करते थे। अबू जहल, अबू लहब वग़ैरह दुआ मांगा करते थे कि या अल्लाह ! अगर वाक़ई कुरआन और दीन हक़ है तो हम पर आसमान से अज़ाब नाज़िल कर दे, पत्थर बर सा दे तो अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया :

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ

तर्जमा : और अल्लाह का काम नहीं कि उन्हें अज़ाब करे जब तक ऐ महबूब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो। (पारा 9, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

नजदी उस ने मोहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर व मुरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की

काफ़िरों के लिये दुआए रहमत

मैदाने उहद में काफ़िरों ने हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पत्थर मारे, जिस से आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दन्दाने मुबारक शहीद हो गया और रूख़े अनवर ख़ून से रंगीन हो गया। सहाबए किराम बे चैन हो जाते हैं और अर्ज़ करते हैं : اُدْعُ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ

यानी हुज़ूर उन मुशरेकीन, दुश्मनों के लिये हलाकत व बरबादी की दुआ फ़रमाइये यह सुन कर रहमतुल लिल आलमीन ने मुस्कुरा कर फ़रमाया कि : मैं इस दहर में क़हर व ग़ज़ब बन कर नहीं आया।

उस मौक़े पर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था : اِنِّىْ لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا وَاِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً

यानी मैं लअनत वाला बनकर नहीं आया, मैं रहमत बन कर आया हूँ। (मिश्कात शरीफ़, स. 511)

रहमत रसूले पाक की हर शय पे आम है
हर गुल में, हर शजर में मुहम्मद का नाम है

अबू जहल को कुंए से निकाला

हज़रात ! अबू जहल वह बद बख़्त और संग दिल काफ़िर इन्सान है जिस ने इस्लाम को मिटाने के लिये तरह तरह के मन्सूबे तैय्यार किये मगर उस के सारे मन्सूबे धरे के धरे रह गए और इस्लाम रोज़ बरोज़ फूलता और फलता रहा।

इस्लाम की फ़ितरत में क़ुदरत ने लचक दी है
यह उतना ही उभरेगा, तुम जितना दबाओगे

अबू जहल लईन ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हलाक करने के लिये एक कुंवा खुदवाया, कुंवा जब तय्यार हो गया तो उस पर घास फूस डाल दी ताकि कुंएं का पता न चल सके। उस ज़ालिम ने अपने गुलामों को हुक्म दिया कि तुम कुंएं के आस पास कहीं छुप कर बैठना जब मुसलमानों के नबी का यहाँ से गुज़र होगा तो वह कुंएं में गर जाएँगे तो तुम जल्दी से कुंएं में पत्थर और मिट्टी डाल देना मगर

फ़ानूस बन के जिस की हिफ़ाज़त, हवा करे
वह शमअ कब बुझे जिसे रौशन खुदा करे

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्दा ज़न
फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा

चुनाँचे जब आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़र होने वाला था तो आप के रब तआला ने आप को बता दिया कि महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप इस रास्ते से न गुज़रना इसलिये कि इस रास्ते में अबू जहल मलऊन ने आप के लिये कुंवा खुदवा रखा है। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वापस हो गए, और एक रिवायत में यूँ है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब कुंएं के पास से गुज़रे तो कुंवा सिमट गया और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने क़दम शरीफ़ बढ़ाया और कुंवां पार करके गुज़र गए और अबू जहल मलऊन का मन्सूबा धरा का धरा रह गया। अबू जहल को जब मालूम हुआ कि हमारा मन्सूबा फ़ेल हो गया है तो अबू जहल बड़ा परेशान हुआ और जब कुंए के पास पहुँचा तो धोका खा गया और खुद कुंएं में गिर गया। अबू जहल चिल्लाया और उस के गुलामों को बुलाया उस के गुलाम अबू जहल को रस्सी बाँधकर निकालने लगे तो देखते हैं कि जितनी रस्सी को कुंएं में नीचा करते हैं उतना ही कुंवा नीचे होता जाता है और अबू जहल मलऊन के लिये बाहर निकलना दुश्वार हो गया।

فَنَادٰی اَبُوْ جَهْلٍ مِنَ الْبِئْرِ اَنْ مَضُوْا اِلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَتُوْا اِلَیَّ بِهٖ فَاِنَّهٗ لَا یُخَلِّصُنِیْ اَحَدٌ دُوْنَهٗ ۝

यानी अबू जहल ने कुंएं से आवाज़ दी कि तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) के पास जाओ और उन को ले कर आओ। बे शक उन के अलावा मुझे यहाँ से कोई नहीं निकाल सकता। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 197)

फिर अबू जहल के साथी आक़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते रहमत में हाज़िर हुए और कहा कि अबू जहल कुंएं में गिर गया है, हम ने उस को निकालने की बड़ी कोशिश की मगर नहीं निकाल सके, अब अबू जहल ने हमें आप के पास भेजा है और वह कहता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) के सिवा मुझे इस कुंएं से कोई नहीं निकाल सकता :

वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

नजदी उस ने मोहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर व मरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की

हज़रात ! वह कुंवा तो अबू जहल ने खुदवाया था कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस में गिर जाएंगे मगर अबू जहल ख़ुद उस में गिर गया और तअज्जुब की बात तो यह है कि निकालने के लिये आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बुला रहा है।

यानी अबू जहल जैसे काफ़िर को भी मालूम है कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बुरे से बुरे को भी मुआफ़ फ़रमा देते हैं और अपनी रहमत से नवाज़ते हैं।

और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इनकार नहीं फ़रमाया बल्कि उस कुंएं पर पहुँचे और अबू जहल से फ़रमाया :

اِنْ اَخْرَجْتُكَ مِنْ هٰذَا الْبِئْرِ اَتُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 197)

अबू जहल ने वादा किया कि मैं ईमान ले आऊँगा। तो आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना दस्ते रहमत आगे बढ़ाया और अबू जहल को निकाल दिया। अबू जहल जब कुंएं से बाहर निकल आया तो कलमा पढ़ कर मुसलमान होने की बजाए कहने लगा : आप बड़े जादूगर हैं। (मआज़ल्लाहि तआला) और ईमान से महरूम रहा। बहर हाल अबू जहल जैसा शैतान भी आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रहमत का सदक़ा पा कर रहा।

नजदी उस ने मोहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर व मुरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की

जिधर जिधर भी गए वह करम ही करम करते गए
किसी ने मांगा न मांगा वह झोली भरते गए

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रहमत अबू जहल मलऊन जैसे शैतान पर है तो हम गुलामों पर रहमत की क्या शान होगी।

डर था कि इसयां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रहमत ने सदा यह भी नहीं वह भी नहीं

रहमत ही रहमत : एक रोज़ आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक काफ़िरा औरत के मकान से टेक लगाए एक साहब से गुफ़्तुगू फ़रमा रहे थे, मकान वाली काफ़िरा औरत ने जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आवाज़ सुनी तो बुग़्ज़ व हसद की वजह से अपने मकान की खिड़कियाँ बन्द कर लीं ताकि उसे आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आवाज़ सुनाई न दे। उधर जिब्रईल अलैहिस्सलाम बारगाहे करम में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि आप जिस मकान की दीवार से टेक लगाए खड़े हैं यह एक काफ़िरा औरत का माकन है और उस मकान में रहने वाली काफ़िरा औरत ने बुग़्ज़ो हसद से अपने मकान की खिड़कियाँ बन्द कर दीं हैं ताकि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आवाज़ उस से सुनाई न दे। मगर अल्लाह तआला फ़रमाता है चूंकि आप का जिस्मे रहमत उस मकान की दीवार के साथ मस हो गया है इस लिये वह नहीं चाहता कि उस मकान में रहने वाले दोज़ख़ में जलें। ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस औरत ने अपने मकान की खिड़कियों को बन्द किया और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वजह से मैं ने उस के दिल की खिड़कियों को खोल दिया है। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम का यह कहना था कि वह औरत बे क़रार हो कर अपने घर से बाहर निकली और आकर आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमों पर गिर गई और सिद्क़ दिल से पढ़ा : اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

और मुसलमान हो गई। (नुज़हतुल मजालिस, जि.2, स.78)

जिधर, जिधर भी गए वह करम ही करम करते गए
किसी ने मांगा न मांगा, वह झोली भरते गए

मदीना तैय्यिबा की पाक बस्ती में चन्द काफ़िर मुसाफ़िर आए और उनहोंने कहा कि हम मुसाफ़िर हैं और रात बसर करना चाहते हैं, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सहाबा से फ़रमाया कि उन मुसाफ़िरों को तुम लोग आपस में बांट लो। इरशादे पाक सुन कर एक, एक मुसाफ़िर सहाबए किराम अपने, अपने घर ले गए, एक मेहमान बाक़ी था तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस से फ़रमाया तुम हमारे मेहमान हो। चुनाँचे उसे काशानए रहमत पर ले जाया गया। बड़ी इज़्ज़त से बिठाने के बाद एक बकरी का दूध उस को पीने के लिये दिया गया। जिसे वह पी गया फिर दूसरी बकरी का दूध उसे दिया गया वह भी पी गिया। हत्ता कि सात बकरियों का दूध उसे दिया

गया और वह सब पी गया। फिर उसे खाना दिया गया, तो उस ने इतनाखाना खाया कि सारे घर का खाना ख़त्म हो गया। खाने से फ़ारिग़ होने के बाद वह बिस्तर पर सो गया और हुजरे का दरवाज़ा बाहर से बन्द कर दिया गया।

उस मुसाफ़िर ने खाना ज़रूरत से ज़्यादा खा लिया था जिस की वजह से रात को उस के पेट में तकलीफ़ हो गई। और उस ने नीन्द की हालत में बिस्तर पर पाख़ाना कर दिया। जब उस की आँख खुली तो वह परेशान हुआ, इस लिये कि अब उस का लिबास भी नजासत आलूद था और बिस्तर की चादर भी ख़राब हो चुकी थी, दिल ही दिल में बड़ा शर्मिन्दा भी था और छुप कर भागने की फ़िक्र भी कर रहा था कि ग़ैब दां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुसाफ़िर की परेशानी से आगाह हो चुके थे, इस लिये आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़ुद आहिस्ता से दरवाज़ा खोला कि उस को मालूम न हो सके कि दरवाज़ा किस ने खोला है।

मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

फ़ारसी................

मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुबह तशरीफ़ लाए और दरवाज़ा खोला और उस गुमराह को आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने राह दिखलाई। दरवाज़ा खोल कर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वहाँ से पर्दा में चले गए ताकि वह शख़्स शर्मिन्दा न हो।

मुसाफ़िर ने इधर उधर देखा कि अब मुझे कोई नहीं देख रहा है तो वह जल्दी से हुजरे से बाहर निकला और भाग गया। हुजरे को देखा गया तो मुसाफ़िर मेहमान मौजूद नहीं था और ख़राब बिस्तर मौजूद था। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़राब चादर को लिया और ख़ुद धोने लगे।

इधर! मुसाफ़िर को रास्ता में चलते चलते ख़याल आया कि वह अपने गले की तावीज़ या अपनी क़ीमती तलवार हुजरे में भूल आया वह अपनी तावीज़ लेने वापस आया तो क्या देखता है कि हमारी ख़राब की हुई चादर को आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने हाथों से साफ़ कर रहे हैं और उस मुसाफ़िर काफ़िर को आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने देखा मगर किसी क़िस्म की नाराज़गी का इज़हार न फ़रमाया और उस मुसाफ़िर से बड़ी रहमत के साथ फ़रमाया कि यह तुम्हारा सामान है जो तुम हुजरे में भूल गए थे ले लो। उस करीमाना बरताओ पर उस की हालत ज़ेरो ज़बर हो गई और आँखों से आंसू जारी हो गए और रोते, रोते अर्ज़ करने लगा, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप ने बिस्तर क्या साफ़ किया है कि मेरा दिल साफ़ कर दिया है और उस ने कलमए तैय्यिबा पढ़ा और मुसलमान हो गया।

(मसनवी शरीफ़ मौलाना रूम)

हज़रात! अगर आज हम किसी के साथ महब्बत व महरबानी करते हैं तो मतलब के लिये

एक एहसान किया और दस मुतालबात करने लगते हैं। यही वजह है कि हमारे नेक काम भी बे असर हो कर रह जाते हैं। अल्लाह तआला रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व रहमत के कुछ छींटे हम को भी अता फ़रमा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

गुलामों पर रहमत

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलाम थे, बरसहा बरस से हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने घर वालों से बिछड़ गए थे, उन के वालिद उन की याद में रोते थे और तलाश करते फिरते थे, आख़िर मक्का मुकर्रमा में मुलाक़ात हुई, बाप बेटे एक दूसरे से बगल गीर हो कर खूब रोए, महरबान बाप ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते रहमत में अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे बेटे को मुझे इनायत फ़रमा दीजिये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जितनी क़ीमत चाहें मैं अदा करने के लिये तैय्यार हूँ। तो रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे क़ीमत की हाजत नहीं है, मैं ख़ुशी ख़ुशी ज़ैद को इख़्तियार देता हूँ कि अगर वह चाहे तो तुम उस को अपने साथ ले जा सकते हो।

मगर जब ज़ैद के वालिद ने अपने साथ ले जाना चाहा तो ज़ैद ने रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए पाक को एक नज़र देखा और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महरबानियों और इनायतों को याद किया तो ज़बाने हाल से अर्ज़ करने लगे :

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह किया देखें
कौन नज़रों में जचे देख के तलवा तेरा
तेरे टुकड़ों पे पलें ग़ैर की ठोकर पे न डाल
झिड़कियाँ खाएं कहाँ छोड़ के सदक़ा तेरा

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने बाप से साफ़ साफ़ कह दिया कि मैं अपने मुशफ़िक़ व महरबान आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी पर हज़ारों आज़ादियों को कुरबान करता हूँ और ऐ मेरे वालिदे गिरामी! मैं किसी हाल में भी अपने करीम व रहीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की चौखट को नहीं छोड़ सकता। हारिसा ख़ामोश हो गए और अपने वतन चले गए तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नेज़ैद को आज़ाद कर दिया और अपना मुंह बोला बेटा बना लिया और आख़री दम तकअपने उस रूहानी बेटे को ऐसा नवाज़ा कि उन के बेटे उसामा को जो गुलाम ज़ादे थे और अपने नवासे हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जो इमाम ज़ादे थे दोनों को अपने दोशे नुबुव्वत पर बिठा कर मजमए आम में तशरीफ़ लाते थे।

शफ़ीक़ जौनपूरी ने ख़ूब कहा है :

जिस जगह तज़किरए फ़ख्रे अनाम आता है
जली हर्फ़ों में उसामा का नाम आता है
एक कान्धे पे है लख़्ते जिगर शेरे ख़ुदा
दूसरे कान्धे पे फ़रज़न्दे गुलाम आता है

हज़रात ! यह है हमारे आक़ा , करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वल्लम की रहमत, कि एक बार जो क़दमों में चला गया वह फिर वापस आने का नाम नहीं लेता है।

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों में जचे देख के तलवा तेरा
तेरे टुकड़ों पे पलें ग़ैर की ठोकर पे न डाल
झिड़कियाँ खाएं कहाँ छोड़ के सदक़ा तेरा

हिरणी पर रहमत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं किहम आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ मदीना तैय्यिबा के एक रास्ते से गुज़रे तो एक आराबी को देखा कि उस ने अपने ख़ेमा के पास एक हिरणी को बाँध रखा है।

और क़रीब ही वह आराबी सो रहा है और हिरणी ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पुकारा : اُدْنُ مِنِّیْ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ٥

यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम मेरी मदद फ़रमाइये। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस हिरणी से फ़रमाया :

مَا حَاجَتُكِ ٥ तुम्हारी क्या हाजत है ? हिरणी ने अर्ज़ किया कि इस आराबी ने मुझे पकड़ कर बाँध दिया है और उस जंगल में मेरे दो छोटे छोटे बच्चे हैं। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझे आज़ाद फ़रमा दें ताकि मैं उन को दूध पिला के आ जाऊँ तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि वाक़ई तू वापस आ जाएगी ? उस हिरनी ने कहा अगर मैं वापस न आऊ तो अल्लाह तआला मुझे दर्दनाक अज़ाब दे। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसे छोड़ दिया। चुनाँचे वह गई और अपने बच्चों को दूध पिला कर जलदी से वापस आ गई। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इसी तरह उस को बाँध दिया। इतने में वह आराबी शिकारी जाग गया तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस से फ़रमाया कि उस हिरणी को तू छोड़ दे। उसने उसी वक़्त हिरणी को आज़ाद कर दिया।

فَخَرَجَتْ تَعْدُوْ فِی الصَّحْرَاءِ تَجْرِیْ جَرْیًا شَدِیْدًا فَرَحًا وَهِیَ تَضْرِبُ بِرِجْلَيْهَا الْاَرْضَ
وَتَقُوْلُ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ط

(ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 5, स. 150, दलाइलुन्नुबुव्वत, स. 220, हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन, स. 461)

यानी तो वह हिरणी आज़ाद होते ही ख़ुश हो कर बड़ी तेज़ी के साथ दौड़ती उछलती और कूदती हुई यह कहती थी : اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ۝

जिधर, जिधर भी गए वह करम ही करम करते गए
किसी ने मांगा, न मांगा, झोली भरते गए

और ऊंट पर रहमत : हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते रहमत में एक ऊंट ने फ़रियाद की हदीस शरीफ़ में है कि जब ऊंट ने रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा तो उस की आँखों से आंसू बहने लगे और वह रो रो कर फ़रियाद करने लगा। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ऊंट के मालिक को बुलाया और इरशाद फ़रमाया कि तू इस जानवर के बाबत नहीं डरता। فَاِنَّهٗ شَكَا اِلَیَّ اَنَّكَ تُجِیْعُهٗ ۝

(हुज्जतुल्लाहे अलल आलमीन, स. 458)

यानी उस ऊंट ने मुझ से शिकायत की है कि तुम उसे भूका रखते हो।

जिधर जिधर भी गए वह करम ही करम करते गए
किसी ने मांगा न मांगा, वह झोली भरते गए

चिड़िया पर रहमत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम एक सफ़र में आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ थे, कि हम एक दरख़्त के पास से गुज़रे तो उस दरख़्त पर एक चिड़िया के दो बच्चे थे हम ने उन बच्चों को पकड़ लिया उन बच्चों की मां चिड़िया ने देखा तो उड़ती हुई आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने आ गिरी और फरियाद करने लगी। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जाओ उन बच्चों को अपनी जगह पर रख आओ। (हुज्जतुल्लाहे अलल आलमीन, स. 466)

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम मुस्तफ़ाजाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे रहमत वह अज़ीमुश्शान बारगाह है कि ऐसी बारगाह न हुई है और न क़ियामत तक होगी।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बख़ुदा, ख़ुदा का यही है दर, नहीं और कोई मफ़र, मक़र
जो वहाँ से हो यहीं आ के हो, जो यहाँ नहीं तो वहाँ नहीं

और फ़रमाते हैं :

हाँ यहीं करती हैं चिड़िया फ़रियाद हाँ यहीं चाहती है हिरणी दाद
इसी दर पे शतरान नाशाद गिलए रन्जो इना करते हैं

हाँ ! यही वह बारगाहे रहमो करम है जहाँ हर किसी फ़रियादी की फ़रियाद सुनी जाती है ऊंट की फ़रियाद, हिरणी की फ़रियाद , चिड़ियों की फ़रियाद, हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुनते हैं और सब की मदद फ़रमाते हैं तो जब जानवरों पर इस क़दर मुशफ़िक़ व महरबान हैं और उन की फ़रियाद सुनते हैं तो हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अगर हर नमाज़ के बाद मदीना तैय्यिबा की जानिब चेहरा करके आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में अर्ज़ करें कि :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ وَاٰلِكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ وَاٰلِكَ یَانَبِیَّ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ وَاٰلِكَ یَاحَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ وَاٰلِكَ یَاقَاسِمَ رِزْقِ اللّٰہِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ وَاٰلِكَ یَادَافِعَ الْبَلَاءِ وَالْوَبَاءِ

بِاِذْنِ اللّٰہِ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَاشَفِیْعَنَا یَوْمَ الْجَزَاءِ

और ! फिर अर्ज़ करें या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम :

ख़ल्क़ के हाकिम हो तुम, रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो हफ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ किया तुम पे करोरों दुरूद

और अर्ज़ करें कि :

बरसता नहीं देखकर अबरे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले
चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

(आमीन सुम्मा आमीन)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(5)

जुमादल ऊला

चौथा जुमा .... पहला बयान

दुनिया व मज़म्मते दुनिया

Scanned with CamScanner

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝

तर्जमा : और दुनिया का जीना तो नहीं मगर धोके का माल।

(पारा 27, रुकू 19, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

दिन लहव में खोना तुझे शब सुबह तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा यह भी नहीं वह भी नहीं

शहद दिखाए ज़हर पिलाए क़ातिल डाइन शोहर कुश
उस मुरदार पे क्या ललचाया दुनिया देखी भाली है

दुनिया को तू क्या जाने ? बिस की गांठ है हर्राफ़ा
सूरत देखो ज़ालिम की तो कैसी भोली भाली है

ऐ ईमान वालो ! दुनिया एक मुसाफ़िर ख़ाना है और एक फ़ानी घर है और जो कुछ इस में है सब कुछ एक दिन फ़ना होने वाला है।

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

फ़ारसी.........................

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि एक नादान शख़्स ने एक दीवार पर सूरज की रौशनी देखी तो उस नादान आदमी ने समझा कि यह दीवार ही रौशन है और दीवार से दिल लगा लिया और उस का शैदा हो गया। नादान ने यह न समझा कि दीवार हर गिज़ ऐसी नहीं यह तो सूरज की रौशनी है मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

फ़ारसी........................

यानी फिर जब सूरज ढला तो रौशनी चली गई यानी धूप ख़त्म हो गई तो दीवार वेसी की वेसी रह गई। मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह का यह मक़सद है कि जिस तरह दीवार पर रोशनी देख कर नादान लोग यह जानते हैं कि दीवार में कुछ है लेकिन फिर थोड़ी देर के बाद सूरज ढलते ही दीवार की अस्ल हक़ीक़त का पता चल जाता है कि दीवार बे नूर है और हम धोके में थे।

हज़रात! इसी तरह आदमी आज दुनिया की चमक, दमक को देख करनीं दुनिया का इस क़दर गिरवीदा और आशिक़ हो गया है कि अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल और ज़िक्रे खुदा से दूर होता हुआ नज़र आता है लेकिन क़ियामत के दिन दुनिया की हक़ीक़त का राज़ खुल जाएगा तो इन्सान अपनी नादानी पर पछताएगा।

मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं:

फ़ारसी........................

हज़रात! मगर यही दुनिया जिस में रह कर हर सांस और हर लम्हा ज़िक्रे इलाही में गुज़ारा जाए और मुशफ़िक़ व महरबान नबी की इताअत और महब्बत में बसर किया जाए तो क़सम खुदा की दुनिया में आना और दुनिया में रहना खाना, पीना, सोना, जागना, सारे मुआमलात जन्नत के सामान बन जाएं और यही दुनिया हमारे लिये जन्नत की खेती साबित हो जाए।

मगर आज कल मुसलमानों का यह हाल है कि मस्जिद में भी दिल नहीं लगाते और दुनिया की दूसरी जगहों के मुआमलात तो किस क़दर ख़राब होंगे। (अल अमान वल हफ़ीज़)

हज़रात! दुनिया क्या है और दुनिया की हक़ीक़त व हैसियत क्या है और दुनिया को दिल देने वाले लोगों का अन्जाम किस क़दर ख़राब हुआ है। अपने करीम व रहीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने फ़ैज़े तर्जमान से मुलाहज़ा फ़रमाइये।

दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना है

अल्लाह के महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया

اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ ۝

यानी दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है।

(सही मुस्लिम, जि. 2, स. 406, इब्ने माजह, स. 303, मिश्कात, स. 493)

दुनिया की हक़ीक़त मुर्दा बकरी और मच्छर के पर के बराबर भी नहीं

हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एक मुर्दा बकरी के पास से गुज़र हुआ तो आप ने फ़रमाया: क्या यह बकरी अपने मालिक को पसन्द है? सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया

कि उस की बद बू ही की वजह से (उस के मालिक ने) तो यहाँ फेंक दिया है तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम ! दुनिया अल्लाह तआला की बारगाह में उस मुर्दा बकरी से भी ज़्यादा बे वक़ार है, अगर अल्लाह तआला के यहाँ दुनिया का मक़ाम मच्छर के पर के बराबर भी होता तो कोई काफ़िर इस दुनिया से एक घूंट भी पानी न पी सकता।

(इब्ने माजह, स. 302, अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 4, स. 306)

दुनिया की महब्बत से आख़िरत का नुक़सान

हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّ دُنْيَاهُ اَضَرَّ بِاٰخِرَتِهٖ وَمَنْ اَحَبَّ اٰخِرَتَهٗ اَضَرَّ بِدُنْيَاهُ فَاٰثِرُوْا مَا يَبْقٰى عَلٰى مَا يَفْنٰى ○

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 5, स. 565, मिश्कात शरीफ़, स. 441)

यानी जिस ने दुनिया से महब्बत की उस ने आख़िरत को नुक़सान पहुँचाया और जिस ने आख़िरत से महब्बत की उस ने दुनिया को नुक़सान पहुँचाया तुम फ़ानी दुनिया पर बाक़ी रहने वाली चीज़ों को तरजीह (अव्वलियत) दो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

حُبُّ الدُّنْيَا رَاْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ ط

यानी दुनिया की महब्बत हर बुराई की जड़ है।

(शअबिल ईमान, जि. 7, स. 328, अत्तरग़ीब वत्तरहीबी, जि. 3, स. 178, मिश्कात शरीफ़, स. 44)

हज़रत सिद्दीक़े अकबर का रोना

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास थे कि आप ने पानी मंगवाया और आप की ख़िदमत में पानी और शहद पेश किया गया और जब आप ने उसे मुंह के क़रीब किया तो आप रो पड़े हत्ता कि आप को देख कर बाक़ी सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम भी रोने लगे फिर बाक़ी लोग तो ख़ामोश हो गए लेकिन आप मुसलसल रोते रहे हत्ता कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने ख़याल किया कि हम आप से कुछ भी पूछ नहीं सकेंगे।

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ! (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) आप के रोने की वजह किया है ? तो ख़लीफ़ए रसूल अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : मैं महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हमराह था, मैं ने देखा कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम किसी चीज़ को अपने आप से दूर कर रहे हैं लेकिन मुझे आप के साथ कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही है। मैंने अर्ज़ यिा या रसूलल्लालह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप अपने आप से किस चीज़ को दूर कर रहे हैं, तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने परमय़ा यह दुनिया है जो मेरे पास आई

थी और मैं ने उस से कहा मुझ से दूर हो जा। वह फिर आई और कहने लगी अगरचेह आप मुझ से दूर हो जाएंगे लेकिन आप के बाद आने वाले मुझ से अलग नहीं हो सकेंगे।

(अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 4, स. 309, अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 455)

ऐ ईमान वालो ! यह दुनिया वह फ़रेब की चीज़ है जिस को हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने से दूर कर दिया और भगा दिया है मगर कितने अफ़सोस की बात है कि हम उस दुनिया को गले लगाते हैं और हम उस के पीछे भागते नज़र आते हैं।

हज़रात ! आओ समझें और मालूम करें कि आख़िर दुनिया किस चीज़ का नाम है कि नबिये पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस को भगा दिया और सहाबए किराम दुनिया से दूर रहते थे और मोमिन दुनिया से क्यों नफ़रत करता है ? और काफ़िर क्यों दुनिया से दिल लगाता है ?

तो अज़ीज़ ! दुनिया की हक़ीक़त यह है कि हर वह चीज़ जिस में लग कर बन्दा अपने ख़ालिक़ो मालिक को भूल जाए वह दुनिया है जैसे माल व दौलत, ज़न व ज़र और औलाद, खेल तमाशे फ़ख़्रो गुरूर जिस में लग कर और मशगूल हो कर बन्दा अपने ख़ालिक़ व मलिक को भुला देता है। अल्लाह तआला का इरशाद है :

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ط

तर्जमा : जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल, कूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़्यादती चाहना।

(पारा 27, रुकू 19, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

يَا عَجَبًا كُلَّ الْعَجَبِ لِلْمُصَدِّقِ بِدَارِ الْخُلُوْدِ وَهُوَ يَسْعٰى لِدَارِ الْغُرُوْرِ ط

यानी उस शख़्स पर बहुत तअज्जुब है जो आख़िरत के घर की तस्दीक़ करता है लेकिन धोके वाले घर (दुनिया) के लिये कोशिश करता है। (अद्दर्रुल मन्सूर, जि. 5, स. 146)

दुनिया की हक़ीक़त

एक मरतबा हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कूड़े करकट के एक ढेर पर खड़े हुए और फ़रमाया आओ दुनिया की तरफ़, फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस ढेर से कपड़े का एक गला, सड़ा टुकड़ा और एक गली, सड़ी, हड्डी उठाई और फ़रमाया यह दुनिया है। (शअबिल ईमान, ज 7, स. 327)

हज़रात ! हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि इस हदीस शरीफ़ से इस बात की तरफ़ इशारा है कि दुनिया की ज़ीनत अनक़रीब कपड़े के उस टुकड़े की तरह गल, सड़ जाएगी और जो जिस्म उस दुनिया में परवरिश पाते हैं अनक़रीब गली, सड़ी हड्डियाँ बन जाएंगे। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 456)

दुनिया को समझना चाहिये

हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु आला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: बे शक दुनिया मीठी, सर सब्ज़ है और बे शक अल्लाह तआला ने तुम्हें उस में बाक़ी रखा वह देखे कि तुम कैसे अमल करते हो, बे शक बनी इसराईल के लिये जब दुनिया फेलाई और तय्यार की गई तो वह ज़ेवरात, औरतों, ख़ुश्बू और कपड़ों में खो गए और भटक गए। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 22, तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 43, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 3, स. 210)

हर गुनाह की जड़ दुनिया की महब्बत है

नाइबे मुस्तफ़ा हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का फ़रमान है कि दुनिया को माबूद बना कर उस के बन्दे न बन जाओ। अपना ख़ज़ाना उस ज़ात के पास जमा करो जो किसी की कमाई को ज़ाए नहीं क़रता, दुनियावी ख़ज़ानों के लिये तो ख़ौफ़े हलाकत होता है मगर जिस के ख़ज़ाने ख़ुदाए तआला के यहाँ जमा हों वह कभी तबाह व बरबाद नहीं होंगे और आप ने फ़रमाया कि ऐ मेरे हवारियो! (ऐ साथियो!) मैं ने दुनिया को ओन्धे मुंह डाल दिया है, तुम मेरे बाद कहीं उसे गले न लगा लेना, दुनिया की सब से बड़ी बुराई यह है कि उस में आदमी अल्लाह का ना फ़रमान बन जाता है और दुनिया को छोड़े बग़ैर आख़िरत की भलाई ना मुमकिन है। दुनिया में दिल चस्पी न लो, उसे इबरत की निगाह से देखो और बा ख़बर (होशियार) रहो। दुनिया की महब्बत हर बुराई की जड़ है। एक लम्हा की ख़्वाहिशे नफ़सानी बड़ी परेशानी में मुब्तला कर देती है और फ़रमाया कि दुनिया तुम्हारे लिये सवारी बनाई गई है और तुम उस की पुश्त पर सवार हो गए तो अब बादशाह और औरतें तुम्हें उस से इतार न दें। (यानी तुम दुनिया पर सवार रहना, तुम पर दुनिया सवार न हो वर्ना हलाकत व बरबादी है। (अहयाउल उलूम शरीफ़ जि. 3, स. 456)

अल्लाह ने जब से दुनिया बनाई कभी उस को नहीं देखा

हज़रत मूसा बिन यसार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे सरकार, उम्मत के ग़म ख़्वार, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

إِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ لَمْ يَخْلُقْ خَلْقًا أَبْغَضَ إِلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا وَإِنَّهُ مُنْذُ خَلَقَهَا لَمْ يَنْظُرْ إِلَيْهَا.

(शअबिल ईमान, ज. 7, स. 338, कन्ज़ुल उम्माला, जि. 3, स. 190)

बे शक अल्लाह के नज़दीक दुनिया से बढ़ कर कोई मख़लूक़ क़ाबिले नफ़रत नहीं और उस ने जब से इस दुनिया को पैदा किया उस की तरफ़ नहीं देखा।

आलिमे रब्बानी हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम एक मरतबा अपने तख़्त पर कहीं जा रहे थे, परिन्दे आप पर साया कर रहे थे, इन्सान और जिन्नात आप के दाएं बाएं बैठे थे, बनी इसराईल के एक आबिद ने देख कर कहा : ऐ सुलैमान ! ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह तआला ने आप को मुल्के अज़ीम दिया है। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने यह सुनकर फ़रमाया कि बन्दए मोमिन के नामए

आमाल में दर्ज सिर्फ़ एक तस्बीह मेरी तमाम सलतनत से बेहतर है। क्यों कि यह सब ख़त्म हो जाएगा और तस्बीह बाक़ी रहेगी। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 207)

अल्लाहु अकबर ! अल्लाहु अकबर ! कितने प्यारे अन्दाज़ में अल्लाह के नबी हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने हम को दुनिया की हक़ीक़त और उस की क़ीमत को बताया और समझाया है और यादे इलाही, ज़िक्रे ख़ुदा की अहमियत और इफ़ादियत उजागर कर दिया है कि मोमिन की एक तस्बीह यानी सिर्फ़ एक बार सुब्हानल्लाह कहना सुलैमान अलैहिस्सलाम की सारी सलतनत व हुकूमत से बहतर है।

जो राहे ख़ुदा में दिया वही बाक़ी रहेगा

हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान है।

तुम्हें माल की कसरत ने मशग़ूल (बिज़ी) कर रखा है। इन्सान कहता है मेरा माल, मेरा माल मगर अपने माल में से जो तूने खाया वह ख़त्म हो गया और जो पहना वह पुराना हो गया और जो राहे ख़ुदा में खर्च किया वही बाक़ी रहेगा। (सही मुस्लिम, जि. 2, स.......मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 4, स. 24, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 207)

दुनिया उस का घर है, आख़िरत में जिस का घर नहीं

महबूबे ख़ुदा, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

दुनिया उस का घर है जिस का (आख़िरत) में घर नहीं और उस का माल है जिस के लिये कोई दूसरा माल नहीं। दुनिया के लिये वह आदमी जमा करता है जिस के पास अक़्ल नहीं उस पर वह दुश्मनी करता है जो जाहिल है। और उस के लिये वह हसद करता है जिस के पास समझ नहीं وَلَهَا يَسْعٰى مَنْ لَّا يَقِيْنَ لَهٗ और उस के लिये वही कोशिश करता है जिस के पास यक़ीन नहीं। (शअबिल ईमान, जि. 7, स. 375, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 3, स. 186, मिश्कात, जि. 2, स. 444, अहयाउल उलूम शरीफ, जि. 3, स. 457)

अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिस आदमी ने यूँ सुबह की कि उस का सब से बड़ा मक़सद हुसूले दुनिया हो उस का अल्लाह तआला के साथ कुछ तअल्लुक़ नहीं और अल्लाह तआला उस के दिल पर चार चीज़ों को मुसल्लत कर देता है।

(1) ऐसा ग़म जो कभी ख़त्म न होगा। (2) ऐसा मशग़ूल (बिजी) कर देगा जिस से कभी छुटकारा नहीं मिल सकता (3) ऐसी मोहताजी जो कभी ख़त्म न होगी। (4) وَاَمَلًا لَا يَبْلُغُ مُنْتَهَاهُ اَبَدًا (5) और ऐसी उम्मीद जो कभी पूरी न होगी। (अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 4, स. 317, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 3, स. 226, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 458)

हज़रात ! आज जब हम माहौल पर नज़र डालते हैं तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमाने ज़ीशान हर्फ़ ब हर्फ़ सादिक़ पाते हैं कि यक़ीनन दुनिया दार पर अल्लाह तआला इन पर चारों मुसीबतों को मुसल्लत कर देता है फिर आदमी

उसी में डूब कर रह जाता है और थोड़ी मोड़ी ज़कात फ़ितरा किसी को दे देता है और किसी ग़रीब की कभी सबी मदद कर देता है। तो समझता है कि हम ने हमारी ज़िन्दगी का मक़सद पूरा कर दिया। बहुत बड़ा धोका है, गुनाहों में ज़िन्दगी गुज़ारने वाला, सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक हर वक़्त फ़िक्रे दुनिया में मुब्तला रहने वाला इन्सान इसी तरह जीता है और फिर एक दिन सब कुछ छोड़ कर इस दुनिया से कूच कर जाता है और मरते वक़्त भी दुनिया उस का पेट नहीं भर पाती है और वह आदमी दुनिया के हिर्स में मुब्तला और दुनिया की भूक लिये हुए क़ब्र में चला जाता है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

दुनिया की हक़ीक़त अजीब है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है। मुझ से हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुझे दुनिया की हक़ीक़त दिखलाऊँ ? मैं ने अर्ज़ किया हाँ या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ? आप मेरा हाथ पकड़ कर मुझे मदीना तैय्यिबा की एक वादी में ले गए जहाँ कूड़ा पड़ा था और उस में गन्दगी चीथड़े और इन्सान के सर की बोसीदा हड्डियाँ थीं। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह ! यह सर भी तुम्हारे सरों की तरह हरीस (लालची) थे और उन में तुम्हारी तरह बहुत आरज़ुएं थीं मगर आज यह ख़ाली हड्डियाँ बन चुकी हैं। जिन पर खाल भी नहीं रही और अन क़रीब यह मिट्टी हो जाएंगे। यह गन्दगी उन खानों के रंग हैं , जिन्हें उन लोगों ने कमा कमा कर खाया, आज लोग उन से मुंह फेर कर गुज़रते हैं, यह पुराने चीथड़े जो कभी उन के (अच्छे अच्छे कपड़े) मलबूसात थे। आज हवा उन्हें उड़ाए फिरती है और यह उन की सवारियों की हड्डियाँ हैं जिन पर वह सवार हो कर शहरों, शहरों घुमा करते थे। जो दुनिया के अन्जाम पर रोना पसन्द करता हो उसे रोना चाहिये। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं फिर मैं और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बहुत रोए।

(मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 208)

हज़रात ! हक़ीक़त में यह दुनिया रोने की जगह है अगर यह दुनिया हंसने और मुस्कुराने की जगह होती तो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन रात, रात भर रोते नहीं।

एक रिवायत में है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा गया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया तबाही के लिये इमारतें बनाओ और मौत के लिये बच्चे पैदा करो।

(हुलयतुल औलिया, जि. 3, स. 327, मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 208)

दुनिया के दिल दादा जहन्नम में डाले जाएंगे

अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कि क़ियामत के दिन ऐसे लोग आएंगे जिन के आमाले हसना (नेक आमाल) तहामा के पहाड़ों के बराबर होंगे मगर उन्हें जहन्नम की तरफ़ ले जाया जाएगा। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा वह नमाज़, रोज़ा अदा करने वाले होंगे ? आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हाँ ! वह लोग रोज़ा दार और रात का एक हिस्सा इबादत में गुज़ारने वाले होंगे मगर वह दुनिया के दिल दादा होंगे (यानी दुनिया के ज़ेबो ज़ीनत और बनाओ सिंगार पर फ़िदा होने वाले लोग होंगे) (हुलयतुल औलिया, जि. 1, स. 233, मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 209)

आलिमे रब्बानी इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का फ़रमान है कि जिस तरह एक बरतन में आग और पानी जमा नहीं हो सकते इसी तरह एक दिल में दुनिया और आख़िरत की महब्बत जमा नहीं हो सकती।

और ! फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से पूछा कि आप ने तो बहुत लम्बी उमर पाई है, यह बताएं कि आप ने दुनिया को कैसा पाया ? तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया दुनिया एक सराए है जिस के दो दरवाज़े हैं, एक दरवाज़े से दाखिल हुआ और दूसरे दरवाज़े से निकल गया।

(अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 460, मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 210)

मोमिन की दुनिया और काफ़िर की दुनिया में बहुत ही फ़र्क़ है

हज़रात ! नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमाने ज़ीशान ज़हन में महफ़ूज़ रखियेगा।

اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ

यानी दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है।

(सही मुस्लिम, जि. 2, स. 406, इब्ने माजह, स. 303, मिश्कात शरीफ़, स. 493)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर साबित हुआ कि दुनिया की हक़ीक़त काफ़िर के लिये जन्नत है गोया यह दुनिया काफ़िर के लिये सब कुछ है और दुनिया ही में काफ़िर को उस की नेकियों का सिला और बदला मिल जाता है कुछ भी क़ियामत के लिये बाक़ी नहीं रहता और मोमिन को उस की नेकियों का बदला दुनिया में तो मिलता ही है मगर अस्ल बदला अल्लाह तआला बरोज़े क़ियामत जन्नत की शक्ल में मोमिन को अता फ़रमाएगा।

हज़रात ! दुनिया में काफ़िर इस लिये भी ज़्यादा आसूदा हाल और बज़ाहिर कामयाब रहता है कि उस को सब कुछ दुनिया ही में दे दिया जाता है।

मुलाहज़ा फ़रमाइये : हज़रत अबुल्लैस समर क़न्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि चोथे आसमान पर दो फ़रिश्तों की आपस में मुलाक़ात हुई, एक फ़रिश्ते ने दूसरे फ़रिश्ते से पूछा कि कहाँ जा रहे हो ? तो फ़रिश्ते ने कहा कि फ़लां शहर में एक यहूदी मरने वाला है और उस ने मछली खाने की आरज़ू की है लेकिन उस के इलाक़ा के दरया में मछलियाँ नहीं

हाँ मुझे हुक्म मिला है कि मछलियों को उस के दरया में ले जाऊँ त ाकि उस यहूदी के आदमी उन को पकड़ कर उस यहूदी की उम्मीद की तकमील कर सकें। क्यों कि उस की एक नेकी बाक़ी है जिस का बदला अल्लाह तआला उस की मौत से पहले दुनिया ही में देना चाहता है दूसरे फ़रिश्ते ने कहा कि मुझे भी एक हुक्म मिला है कि फ़लां शहर में एक नेक शख़्स है जिस की बुराई की सज़ा अल्लाह तआला ने उसे दुनिया में दे दी है अब उस की मौत का वक़्त क़रीब है और उस ने ज़ेतून की ख़्वाहिश की है लेकिन उस का एक गुनाह अभी बाक़ी है अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं ज़ेतून को बरतन से गिरा दूँ ताकि उस की ख़्वाहिश पूरी न हो सके जिस की वजह से उसे रन्जो तकलीफ़ होगी तो अल्लाह तआला उस रन्ज और तकलीफ़ के ऐवज़ उस का गुनाह बख़्श देगा और जब वह नेक बन्दा अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर हो तो उस के ज़िम्मे कोई गुनाह न हो। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 1, स. 205)

हज़रात ! इस नूरानी हिकायत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की जानिब से मोमिन बन्दा को कोई रन्जो ग़म पहुँचता है या तकलीफ़ होती है तो वह इस लिये कि उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाए।

और मोमिन तकलीफ़ के वक़्त यह दुआ पढ़ता है। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

(पारा 2, रुकू 3)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पूछा गया कि आप रहने के लिये घर क्यों नहीं बनाते, आप ने फ़रमाया हमें पहले के लोगों के बोसीदा और पुराने मकान ही काफ़ी हैं।

हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اِحْذَرُوا الدُّنْيَا فَإِنَّهَا أَسْحَرُ مِنْ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ

(शअबिल ईमान, ज. 7, स. 339, कुन्ज़ुल उम्माल, जि. 3, स. 183, मुकाशफ़तुल कुलूब, स. 210)

यानी दुनिया के (फ़ितनों) से बचो क्यों कि यह हारूत वमारूत से भी ज़्यादा जादूगर है।

हज़रात ! हदीस शरीफ़ में किस क़दर बार. बार दुनिया से बचने की तालीम दी गई है। कहीं दुनिया को फ़ितनों का अड्डा और कहीं हारूत व मारूत से ज़्यादा जादूगर दुनिया को कहा गया। वाक़ई में जब किसी मर्द ने दुनिया को पहचान लिया तो फिर दुनिया को एक आँख से भी देखना पसन्द नहीं किया।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम का नूरानी वाक़िआ

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने मसनवी शरीफ़ में तारिकुद्दुनिया हज़रत सुल्तान इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नूरानी वाक़िआ रक़म फ़रमाया है जिस का ख़ुलासा पेश है, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

एक मरतबा की बात है कि रात को बादशाह हज़रत इब्राहीम बिन अदहम अपने शाही महल में शाही मस्नद पर आराम फ़रमाते थे कि आप ने शाही महल की छत पर किसी के चलने की आवाज़ सुनी कि ख़ूब ज़ोर ज़ोर से छत पर चल फिर रहा है तो उन्होंने सोचा कि यह कौन हो सकता है ? और किस की हिम्मत है कि बादशाह के महल में शाही छत पर और फिर रात के

वक़्त इस तरह छत पर बे ख़ौफ़ फिर रहा है।

तो हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शाही महल की खिड़की में से आवाज़ दी कि कौन है ? यह आदमी है या जिन्न है ? तो कुछ लोगों को देखा कि शाही महल में कुछ तलाश कर रहे हैं हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया तुम लोग किया ढूँढ रहे हो ? तो वह बोले कि हम लोग ऊंट तलाश कर रहे हैं तो बादशाह ने कहा अरे तुम लोग ऊंट को बादशाह के महल में तख़्त पर ढूँढ रहे हो ? क्या ऊँट बादशाह के महल में मिल सकता है ? ऊंट तख़्त पर कैसे मिल सकता है ?

फ़ारसी.....................

यानी उन लोगों ने जवाब दिया कि शाही महल में ऊंट नहीं मिल सकता, तो शाही महल में तख़्त पर बैठ कर खुदा भी नहीं मिल सकता। बादशाह इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दिल पर उस बात का कुछ इस तरह असर हुआ कि आप ने बादशाही के तख़्त व ताज को छोड़ दिया और ज़िक्रे खुदा में मशगूल हो गए और तलाशे हक़ शुरू कर दी और फिर हज़रत बादशाह इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने मक़सद में उस हद तक कामयाब हुए कि पहले सरों के बादशाह थे। अब दिलों के बादशाह हो गए। पहले जिस्मानी हुकूमत के बादशाह थे। अब अल्लाह तआला ने रूहानियत के तख़्त का बादशाह बना दिया और हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ सुल्तानुल हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसे बुज़ुर्ग शख़्सियत आप के सिलसिले के मुरीदों में हैं और बहरो बर (दरया व ख़ुश्की) में आप की रूहानियत का सिक्का चलने लगा।

दरिया पर हुकूमत

चुनाँचे ! हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दिन दरिया के किनारे बैठे हुए थे और अपनी पुरानी फटी हुई गुदड़ी सिल रहे थे इत्तिफ़ाक़न उस तरफ़ से आप का वज़ीर (जो पहले रह चुका था) आ गया और आप को इस हालत में देख कर हैरान रह गया और कहने लगा कि आप ने सात मुल्कों की हुकूमत को ख़ैर बाद कह के और छोड़ के अब फ़क़ीरों की तरह गुदड़ी सिल रहे हैं।

मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

फ़ारसी............................

यानी हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वज़ीर से यह बात सुन कर अपनी सुई को दरया में फेंक दी और फिर आवाज़ दी कि मेरी सुई लाओ

वह वज़ीर यह बात देख कर दिल में कहने लगा कि लो यह नई बात और सुनो कि भला सुई दरया में गिरी हुई कभी वापस भी मिली है, लेकिन उस वज़ीर ने देखा, क्या, मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

फ़ारसी..............................

कि हज़ारों मछलियाँ आप की आवाज़ सुनते ही अपने अपने मुंह में सोने की सुइयाँ लेकर आई और बाहर गरदन निकाल कर कहा। हज़रत सूई लीजिये। वह वज़ीर यह अजीब नज़ारा देख कर हैरान रह गया फिर हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस वज़ीर को देख कर फ़रमाया अब बताओ! कि यह रूहानी व हक्क़ानी बादशाहत अच्छी है या वह फ़ानी बादशाहत ?

हज़रात! आप ने देख लिया कि दुनिया की सलतनत छोड़ देने और ज़िक्रे ख़ुदा में दिल लगाने से अल्लाह तआला रूहानियत की हुकूमत का बादशाह बना देता है। दुनियावी बादशाहत ख़त्म हो जाएगी मगर रूहानियत व विलायत की बादशाहत व हुकूमत हमेशा हमेश क़ाइम व दाइम रहेगी। अल्लाह तआला हमारे दिल व दिमाग़ को दुनिया से मोड़ कर दीन के ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूल फ़रमा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

दुनिया की क़ीमत एक ग्लास पानी से कम

हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि इब्ने सिमाक नाम के एक बुज़ुर्ग थे। ख़लीफ़ए बग़दाद हारून रशीद के पास तशरीफ़ ले गए। हारून रशीद ने प्यास को बुझाने के लिये पानी तलब किया, ख़ादिम ने पानी का ग्लास हारून रशीद की ख़िदमत में पेश किया, तो अल्लाह वाले बुज़ुर्ग हज़रत इब्ने सिमाक रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया : मोहतरम! ज़रा ठहर जाइये और मुझे बताइयेकि अगर शिद्दत की प्यास के वक़्त कहीं पानी न मिले और आप प्यास से बे क़रार हो जाएं तो यह एक ग्लास पानी आप कितनी क़ीमत दे कर ख़रीदेंगे ? बादशाह हारून रशीद ने जवाब दिया कि आधी सलतनत दे कर फिर उन बुज़ुर्ग ने पूछा कि अगर यह पानी आप के पेट में पहुँच जाए और आप का पेशाब बन्द हो जाए और यह पानी बदन से न निकले तो आप उस के लिये कितनी रक़म देंगे ? बादशाह हारून रशीद ने कहा कि पूरी हुकूमत। यह सुनकर वह बुज़ुर्ग हज़रत इब्ने सिमाक रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया ऐ बादशाह! वह हुकूमत जिस की क़ीमत सिर्फ़ एक ग्लास पानी और उस का पेशाब हो! भला कब इस क़ाबिल है कि उस से दिल लगाया जाए और उस पर इतराया जाए। हज़रत इब्ने सिमाक रहमतुल्लाहि तआला अलैह की नसीहत आमोज़ बातों को सुन कर बादशाह हारून रशीद रोने लगा और कुछ जवाब न बन सका। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

दुनिया की हक़ीक़त, इस्तिंजा के ढेले से भी कम

मनक़ूल है कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रहमतुल्लाहि तआला अलैह आलमे शबाब में चन्द दोस्तों के साथ एक कीमिया साज़ के पास गए थे। हज़रत महबूबे इलाही के साथी तो कीमिया साज़ के पास ठहर गए थे और सोना बनाने का हुनर सीखते रहे, मगर हज़रत महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत ख़्वाजा बाबा फ़रीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में पहुँच गए और आप की ख़िदमत में मशग़ूल रहे। इधर कीमियाई हुनर सीखने वाले तक़रीबन चालीस दिन के बाद एक एक सोने का नारियल बना कर बड़ी

कामियाबी के साथ अपने साथी हज़रत महबूबे इलाही के पास आए और सब कुछ बताया और सोने का नारियल भी दिखाया कि तुम रहते तो सोने का नारियल तुम भी बना लेते और सोना तुम को भी दस्तियाब हो जाता। अल्लाह के वली हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सब को मुलाहज़ा फ़रमा लिया। और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया कि मुझे इस्तिंजा की हाजत है। जाओ! मिट्टी का एक ढेला ले आओ। हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने साथियों के सामने आए और मिट्टी का ढेला लेने गए। जैसे ही मिट्टी के ढेरे को उठाया मिट्टी हाथ में आते ही सोना बन गई। खुद हैरान और जुमला साथी भी हैरत में,. कि क्या हुआ। इसी तरह जिस मिट्टी के ढेले को हाथ लगाते वह मिट्टी सोना बन जाती। हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, अल्लाह के वली हज़रत बाबा फ़रीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुए और बताया कि ऐ हज़रत! मैं जिस मिट्टी को हाथ लगाता हूँ वह मिट्टी का ढेला सोना बन जाता है।

तो अल्लाह के वली हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि साहबज़ादे कुछ समझे कि तुम्हारे साथियों ने इतने अर्से में मेहनत व मशक़्क़त करके कीमिया बनाया और फिर उस से एक सोने का नारियल और मेरी सोहबत ने तुम को सरापा कीमिया बना दिया है। जब भी तुम मिट्टी को सोना बनाना चाहो तो तुम्हारा हाथ लगेगा और वह मिट्टी सोना बन जाएगी।

और! दूसरी बात हज़रत बाबा फ़रीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह समझा दिया कि जिस मिट्टी को उठाते वह मिट्टी सोना बनजाती और सोने से इस्तिंजा नहीं हो सकता है। गोया यह सोना इस क़ाबिल नहीं है कि उस से इस्तिंजा किया जाए और उस से पाकी हासिल की जाए।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(5)

जुमादल ऊला

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

ग़ाफ़िल इंसान

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝

तर्जमा : सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है।

(पारा 13, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

न दौलत से न दुनिया से न घर आबाद करने से
सुकून मिलता है दिल को बस ख़ुदा को याद करने से

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी मक़बूल व मशहूर किताब मुकाशिफ़तुल क़ुलूब में ग़फ़लत की मज़म्मत व बुराई में बहुत कुछ तहरीर फ़रमाया है। जिस का ख़ुलासा यह है कि ग़फ़लत वह मोहलिक मरज़ है जो तन्दुरुस्त व कामयाब इन्सान को बीमार और नाकाम बना देती है। ग़फ़लत में मुब्तला शख़्स नेअ़मत व दौलत से महरूम रहता है।यही वजह है कि ग़ाफ़िल इन्सान नेअ़मत व दौलत वाले आदमी से हसद करने लगता है और दीन व दुनिया दोनों में ख़सारा और नुक़सान उठाता है।

ग़फ़लत सब से बड़ी हसरत है

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि एक नेक आदमी ने अपने उस्ताज़ को ख़्वाब में देखा और पूछा कि आप के नज़दीक सब से बड़ी हसरत कौन सी है ?

तो उस्ताज़ ने जवाब दिया कि ग़फ़ल से बड़ी हसरत है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 29)

और इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि किसी शख़्स ने हज़रत ज़ुन्नून मिसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़्वाब में देखा और दरयाफ़्त किया कि

अल्लाह तआला ने आप के साथ क्या सुलूक किया ? तो हज़रत ज़ुन्नून मिसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे अपनी बारगाह में खड़ा किया और फ़रमाया ऐ झूटे दावे दार ! तू ने मेरी महब्बत का दावा किया और फिर भी मुझ से ग़ाफ़िल रहा।

(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 29)

हज़रात ! जिन लोगों के मदारिज व मरातिब बलन्दो बाला हैं अल्लाह तआला की बारगाह में उन की आज़माइश बड़ी है।

मन्ज़िल इश्क़ में तस्लीम व रज़ा मुश्किल है
जिन के रुत्बे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

हज़रात ! हर चीज़ अल्लाह तआला का ज़िक्र करती है चाहे आसमानों में हो या ज़मीनों में और अगर वह चीज़ ग़ाफ़िल हुई तो ग़फ़लत के नतीजे में फिर वह चीज़ तबाह व बरबाद हो कर रह जाती है।

हर शय अल्लाह तआला का ज़िक्र करती है

एक बुज़ुर्ग ने जब यह आयत पढ़ी : يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ج
तर्जमा : अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है।

(पारा 28, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

तो उस बुज़ुर्ग के दिल में ख़याल आया कि अगर यही बात है तो फिर उन चीज़ों क़ी आवाज़ हमें सुनाई क्यों नहीं देती ? अभी ख़याल किया ही था कि पेशाब की हाजत हुई और वह बुज़ुर्ग पानी के बरतन को उठाते हैं तो उस बरतन से अल्लाह। अल्लाह की आवाज़ सुनाई दी, तो उन्होंने उस बरतन को रख दिया और सोचने लगे कि उस बरतन को पेशाब ख़ाना में किस तरह ले जाऊँ जो अल्लाह अल्लाह कर रहा है। फिर मिट्टी के ढेले को उठाया तो ढेले से अल्लाह, अल्लाह की आवाज़ आ रही थी, अब वह बुज़ुर्ग बड़े हैरान व परेशान हुए कि उन ढेलों को भी पेशाब के लिये इस्तिमाल नहीं कर सकते इस लिये कि वह अल्लाह, अल्लाह कर रहे हैं। अल ग़रज़ वह बुज़ुर्ग जिस तरफ़ बढ़ते हर चीज़ से अल्लाह, अल्लाह की सदा सुनते वह बुज़ुर्ग बहुत हैरान व परेशान हुए कि अब मैं क्या करूँ ? तो रहमते इलाही ने उन को पुकारा कि ऐ मेरे नेक बन्दे ! तूने कुछ समझा ? कि हम उन चीज़ों की आवाज़ तुम्हारे कानों को इस लिये नहीं सुनने देते ताकि तुम्हारे कारोबार न रुक जाएं, वह बुज़ुर्ग फ़ौरन सज्दे में गिर गए और अल्लाह तआला की बारगाह में मुआफ़ी के तलबगार हुए। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 1, स. 22)

हज़रात ! इस नूरानी वाक़िआ से पता चला कि हर चीज़ अल्लाह तआला की याद में मशग़ूल है। अगर अल्लाह तआला की याद से कोई ग़ाफ़िल है तो इन्सान है।

मेन्ढक का ज़िक्र

हज़रत अब्दुर्रहमान सफ़ूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक मरतबा एक मेन्ढक को देखा जो खुशूअ के साथ अपने अल्लाह को याद कर रहा था, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने इस मेन्ढक से पूछा तुम कब से इस आलम में हो ? तो वह बोला ऐ अल्लाह

के नदी में मुसलसल सत्तर साल से इसी आलम में इस तरह जिक्रे खुदा में मशगूल हूँ और इस अर्से में कभी उस की याद से गाफ़िल नहीं हुआ। (नुजहतुल मजालिस, जि 1, स 27)

ऐ ईमान वालो ! गाफ़िल इन्सान से वह मेन्ढक बहुत अच्छा है जो अपने खालिक व मालिक को सुबह व शाम याद करता है।

जिन्दगी आमद बराए बन्दगी
जिन्दगी बे बन्दगी शर्मिन्दगी

दुरूद शरीफ :

हजरात ! जो शय अल्लाह तआला की याद से गफ़लत करती है वह शय मिटा दी जाती है बुजुर्गों ने फरमाया है कि दरख्त उस वक्त काटे जाते हैं जब वह जिक्रे इलाही से गाफ़िल हो जाते है जानवर और परिन्दे उस वक्त सय्याद के हाथों शिकार होते हैं जब वह जिक्रे खुदा से गाफ़िल होते है। नसीहत आमेज हिकायत मुलाहजा कीजिये।

ग़ाफ़िल परिन्दा शिकार हो गया

हजरत अब्दुर्रहमान सफ़ूरी रजियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि सय्यिदुत्ताइफ़ा हजरत जुनैदे बगदादी रजियल्लाहु तआला अन्हु के पास एक शख्स ने एक परिन्दा तोहफ़े में भेजा, हजरत ने क़ुबूल फरमा कर उसे पिन्जरे में बन्द कर दिया कुछ अर्सा जब गुजरा तो उस परिन्दे ने बड़ी मिन्नत व समाजत के साथ अल्लाह के वली हजरत जुनैद बग़दादी रजियल्लाहु तआला अन्हु से कहने लगा : ऐ जुनैद ! तुम तो अपने दोस्तों से बड़ी आजादी से मिलते हो और उन से मुलाकात का लुत्फ उठाते हो और मुझे मेरे दोस्तों की मुलाकात से महरूम कर रखा है और मुझे पिन्जरे में बन्द कर रखा है अल्लाह के वली हज़रत जुनैदे बगदादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मुझे उस परिन्दा पर रहम आ गया और उस को छोड़ दिया। उडते वक्त वह परिन्दा कहने लगा। ऐ जुनैद ! परिन्दा, जानवर जब तक जिक्रे इलाही में मशगूल रहता है आज़ाद रहता है और जब उस पर ग़फ़लत तारी हो जाती है तो वह परिन्दा जानवर शिकार हो जाता है, कैद कर लिया जाता है। ऐ हज़रत जुनैद बग़दादी ! मैं एक ही दिन जिक्रे खुदा से गाफिल हुआ था जिस की सज़ा में मुझे शिकार किया गया और पिन्जरे की कैद व बन्द की सऊबतों से दो चार होना पड़ा। फिर परिन्दा जानवर ने कहा : हाए अफसोस ! उन लोगों का क्या हाल होगा ? जो शबो रोज़ जिक्रे खुदा से ग़ाफ़िल रहते हैं। ऐ हजरत जुनैद ! मैं आप के सामने वादा करता हूँ कि आइन्दा कभी यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल न रहूँगा, यह कहा और उड़ गया। (नुजहतुल मजालिस, जि 1, स 23)

हज़रात ! आज का मुसलमान तो इस कदर जिक्रे खुदा से ग़ाफ़िल हो चुका है कि अजान होती है और मुसलमान बातों में मशगूल है, अज़ान हो रही है और मुसलमान के घरों में टीवी चल रही है, गाने की आवाज बाहर तक आ रही है, मस्जिद में नमाज़ हो रही है मगर मुसलमान जिक्रे खुदा से गाफिल मस्जिद के बाहर बैठा नज़र आ रहा है।

हज़रात ! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है कि जब तुम अहले बला को देखा करो तो ख़ुदा से आफ़ियत तलब करो। तो बारगाहे करम में सवाल हुआ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अहले बला कौन लोग हैं तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, अहले बला वह लोग हैं जो ज़िक्रे ख़ुदा से ग़ाफ़िल हैं। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 1, स. 23)

हज़रात ! ज़िक्रे ख़ुदा से ग़फ़लत बहुत बड़ी बला और मुसीबत है। अब जो लोग नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हैं गोया वह बहुत बड़ी बला और मुसीबत में गिरफ़्तार हैं उस का बेहतरीन इलाज और तावीज़ यह हैकि ग़फ़लत से तौबह करके ज़िक्रे ख़ुदा नमाज़ व रोज़ा में मशग़ूल हो जाए, ख़ुद बख़ुद इलाज हो जाएगा।

परिन्दा हज़रत जुनैद की ज़ियारत के लिये आया करता था

हज़रत अब्दुर्रहमान सफ़ूरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि फिर वह परिन्दा अल्लाह तआला के वली हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ियारत के लिये आया करता था और आप के हमराह दस्तर ख़्वान पर खाना भी खाया करता था, जब हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल हो गया तो वह परिन्दा ज़मीन पर गिरा और उस ने भी अपनी जान दे दी।

बादे विसाल हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को किसी ने ख़्वाब में देखा और हाल पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि उस परिन्दे पर मैंने रहम किया था तो अल्लाह तआला ने मुझ पर भी रहम फ़रमा कर बख़्श दिया है। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 1, स. 23)

हज़रात ! सहीह हदीस शरीफ़ है कि :

مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ

यानी जो शख़्स अल्लाह का होता है तो अल्लाह तआला उस का हो जाता है।

हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह तआला के बन गए थे तो परिन्दा जानवर भी आप का बन गया था। अब यह राज़ समझ में आ गया कि अगर किसी चीज़ कोअपना बनाना हो तो ख़ुद अल्लाह तआला के बन जाओ तो वह चीज़ ख़ुद ब ख़ुद अपनी बन जाएगी।

ग़फ़लत वाली नमाज़ों पर बुज़ुर्ग रो पड़े

शैख़ अबू अली दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह कहते हैं कि मैं ऐसे बीमार नेक आदमी की अयादत को गया जिन का शुमार बड़े बुज़ुर्गों में होता था, उन के आस पास उन के शागिर्द बैठे हैं और शैख़ अबू अली रहमतुल्लाहि तआला अलैह रो रहे थे, मैं ने कहा ऐ शैख़ ! क्या आप दुनिया पर रो रहे हैं ? तो शैख़ ने फ़रमाया नहीं मैं अपनी नमाज़ों के क़ज़ा (ख़राब) होने पर रो रहा हूँ मैंने कहा आप तो इबादत गुज़ार शख़्स थे फिर नमाज़ें किस तरह क़ज़ा हुईं? उन्होंने फ़रमाया मैं ने हर सज्दा ग़फ़लत में किया और हर सज्दे से ग़फ़लत में सर उठाया और अब ग़फ़लत की हालत में मर रहा हूँ। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 30)

हज़रात ! ग़फ़लत बहुत ही मोहलिक मरज़ है, ग़फ़लत की हालत में पढ़ी जाने वाली नमाज़ें बे लज़्ज़त और सज्दे बे कैफ़ होते हैं।

हज़रत हसन बसरी का बहुत ही प्यारा जवाब

इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि तअज्जुब है कि मैं इबादत में लुत्फ़ नहीं पाता हूँ। तो आप ने उस शख़्स को जवाब दिया कि शायद तूने किसी ऐसे शख़्स को देख लिया है जो अल्लाह तआला से नहीं डरता। यानी अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल है।

(मुकाशफ़तुल कुलूब, स. 23)

हज़रात ! ग़फ़लत वाली जगहों और ग़फ़लत में मुब्तला लोगों से और ग़ाफ़िल मख़लूक़ से हर हाल में बचना चाहिये और उन से दूर रहना चाहिये।

एक नेक लड़की

हज़रात ! वाक़िआ बहुत ही मशहूर है और हिदायत व नसीहत से लबरेज़ है, इस लिये बयान किया जा रहा है मुलाहज़ा कीजिये। एक बुज़ुर्ग मछलियाँ पकड़ रहे थे और आप के साथ आप की छोटी लड़की भी थी। आप जो मछली पकड़ते वह अपनी लड़की को देते जाते और लड़की अपने वालिद से मछलियाँ ले, ले कर फिर दरया में डालती जाती। वह बुज़ुर्ग जब मछली पकड़ कर फ़ारिग़ हो गए लड़की से फ़रमाया बेटी मछलियाँ कहाँ है ? तो वह बोली ! अब्बा जान मैं ने तो उन सब को फिर दरया में डाल दिया है।

बुज़ुर्ग ने फ़रमाया ! तुम ने यह क्या किया ? सारे दिन की मेहनत बरबाद कर दी। तो वह लड़की बोली कि आप ही ने तो सुनाया था कि जो मछली यादे इलाही से ग़ाफ़िल होती है वही जाल में फंसती है और शिकारी के हाथ आती है, तो आप जिस मछली को पकड़ते थे मैं समझ जाती थी कि यह मछली ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल है जभी पकड़ी गई है। इस लिये मैं ने इस ख़याल से कि यह ग़ाफ़िल मछली खा कर उस की सोहबत से कहीं हम भी ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल न हो जाएं। इस लिये मैं ने उन तमाम मछलियों को फिर दरया में डाल दी है।

(नुज़हतुल मजालिस, जि. 1, स. 23)

ज़्यादा खाना भी ग़फ़लत लाता है

हज़रात ! ज़्यादा खाना भी आदमी को ग़फ़लत में डाल देता है इसी लिये बहुत से अल्लाह वालों ने चन्द खजूरों पर रात बसर कर दी ताकि ग़फ़लत न पैदा हो और ज़िक्रे इलाही में सुस्ती और काहिली न पैदा होने पाए।

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद है :

لَا تُمِيْتُوا الْقُلُوْبَ بِكَثْرَةِ الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ فَاِنَّ الْقَلْبَ كَالزَّرْعِ يَمُوْتُ اِذَا كَثُرَ عَلَيْهِ الْمَاءُ ط

(अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 184)

यानी बे शक अपने दिलों को खाने पीने की ज़्यादती से मुर्दा न करो क्यों कि दिल खेती की तरह है जो पानी की ज़्यादती से ख़राब हो जाती है।

खाने के लिये पेट के तीन हिस्से करो

मुस्तफ़ा करीम ने इरशाद फ़रमाया : आदमी अपने पेट से बढ़ कर किसी बरतन को बुराई से नहीं भरता। इन्सान के लिये चन्द लुक़मे काफ़ी हैं। इन्सान के लिये ज़रूरी है कि अपने पेट के तीन हिस्से करे। (1) एक तिहाई हिस्सा खाने के लिये।
(2) एक तिहाई हिस्सा पानी के लिये (3) और एक तिहाई हिस्सा सांस लेने के लिये।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 4, स. 132)

भूक और प्यास का सवाब जिहाद जैसा है

शाहे तैबा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : भूक और प्यास के ज़रीए अपने नफ़्सों के ख़िलाफ़ जिहाद करो क्यों कि उस का सवाब अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करने वाले के सवाब जैसा है।

وَاِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ عَمَلٍ اَحَبَّ اِلَی اللّٰہِ مِنْ جُوْعٍ وَّعَطَشٍ ط

(अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 182)

यानी बे शक अल्लाह तआला को भूक और प्यास से बढ़ कर कोई अमल पसन्द नहीं।

कम खाने और पीने वाला अफ़ज़ल इन्सान है

महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पूछा गया कौन शख़्स अफ़ज़ल है ?

(1) आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस का खाना और हंसना कम हो (2) और इतने लिबास पर राज़ी हो जाए जिस से सतर को छुपा ले।
(3) मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

سَیِّدُ الْاَعْمَالِ الْجُوْعُ وَذُلُّ النَّفْسِ لِبَاسُ الصُّوْفِ ط

यानी आमाल का सरदार भूक है और नफ़्स की ज़िल्लत ऊनी लिबास में है। (4) आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلْفِکْرُ نِصْفُ الْعِبَادَۃِ وَقِلَّۃُ الطَّعَامِ ھِیَ الْعِبَادَۃُ ط

यानी ग़ौर फ़िक्र निस्फ़ इबादत है और कम खाना (मुकम्मल) इबादत है। (5) महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला की बारगाह में क़ियामत के दिन वह शख़्स अफ़ज़ल होगा जो ज़्यादा देर भूका रहता है और ज़्यादा बुरा वह शख़्स है जो ख़ूब सोता है और ज़्यादा खाता, पीता है। (6) आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भूका रहना पसन्द फ़रमाते थे। (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 183) (7) हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : बे शक शैतान, इन्सान में ख़ून की तरह गरदिश करता है पस शैतान के रास्तों को فَضَيِّقُوا مَجَارِيَهُ بِالْجُوعِ وَالْعَطَشِ ط

भूक और प्यास के ज़रीए तंग कर दो। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 156)

जन्नत का दरवाज़ा खट खटाओ भूक और प्यास से

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

أَدِيْمُوا قَرْعَ بَابِ الْجَنَّةِ يُفْتَحْ لَكُمْ

यानी जन्नत के दरवाज़े को खट खटाते रहो तुम्हारे लिये खोल दिया जाएगा।

(सही मुस्लिम, जि. 2, स. 812)

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हम किस तरह जन्नत का दरवाज़ा हमेशा खट खटाएं तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया भूक और प्यास के ज़रीए।

आक़ा करीम ने कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने कभी नहीं देखा कि महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पेट भर कर खाना खाया हो।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रोटी का एक टुकड़ा ले कर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो आप ने पूछा यह टुकड़ा कैसा है ? तो सय्यिदा ने अर्ज़ किया कि मैं ने एक रोटी पकाई थी तो मैं ने आप के बग़ैर खाना पसन्द नहीं किया इस लिये यह टुकड़ा आप के लिये लाई हूँ। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तीन दिनके बाद यह पहला खाना है जोतुम्हारे वालिद के मुंह में जा रहा है। (मोअजम कबीर तबरानी, जि. 1, स. 259)

भूक से सोच अज़ीम और दिल ज़िन्दा होता है

अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَنْ أَجَاعَ بَطْنَهُ عَظُمَتْ فِكْرَتُهُ وَفَطُنَ قَلْبُهُ ط

यानी जो शख़्स अपने पेट को भूका रखता है उस की सोच और उस का दिल होशियार हो जाता है। (2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ شَبِعَ وَنَامَ قَسَا قَلْبُهٗ जो शख़्स सेर हो कर खाए और सो जाए उस का दिल सख़्त हो जाता है। (3) और फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لِكُلِّ شَيْءٍ زَكَاةٌ وَزَكَاةُ الْبَدَنِ الْجُوْعُ

यानी हर चीज़ की ज़कात है और बदन की ज़कात भूक है।

(इब्ने माजह, स. 126, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 192)

इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि कम खाना ग़फ़लत की नीन्द से महफ़ूज़ रखता है। कम खाने से इबादत करने में आसानी होती है, कम खाने से बार बार पानी नहीं पीना पड़ता और इस्तिंजा वग़ैरह के लिये बार बार नहीं जाना पड़ता इस लिये कम खाने में नफ़ा ज़्यादा है।

हज़रत सिर्री सक़्ती रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत अली जुरजानी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास सत्तू देखे जिन्हें वह फांक रहे थे। मैंने पूछा आप सत्तू क्यों फांक रहे हैं ? तोउन्होंने ने जवाब दिया कि मेरा ख़याल है कि चबाने और फांकने के दरमियान में सत्तर तस्बीहात का वक़्त होता है। इस लिये मैंने चालीस साल से रोटी नहीं चबाई। (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 196)

हज़रात ! कम खाने से बदन की तन्दुरुस्ती बर क़रार रहती है और बीमारियाँ दूर रहती हैं। और भूका रहना अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है।

अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : صُوْمُوْا تَصِحُّوْا ط यानी रोज़ा रखो सेहत मन्द रहो। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 83)

ऐ ईमान वालो ! इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ज़िक्रे इलाही से ग़फ़लत से और गुनाहों की कसरत का सबब आदमी का पेट और शर्म गाह है और शर्मगाह की ख़्वाहिश की वजह पेट की ख़्वाहिश है और कम खाने और भूका रहने से यह तमाम बातें ख़त्म हो जाती हैं इसी लिये आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَدِيْمُوْا قَرْعَ بَابِ الْجَنَّةِ بِالْجُوْعِ ط

यानी हमेशा जन्नत का दरवाज़ा भूक के ज़रीए खट खटाते रहो।

(सही बुख़ारी, जि. 2, स. 812, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 199)

पेट भर के खाना अस्ल बीमारी है

आक़ा करीम, अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَلْبِطْنَةُ اَصْلُ الدَّاءِ وَالْحِمْيَةُ اَصْلُ الدَّوَاءِ

यानी शिकम सेरी (पेट भर के खाना) अस्ल बीमारी है और परहेज़ करना (शिकम सेरी) से अस्ल दवाई है। (अहया उलूम, जि. 3, स. 198)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

पहला जुमा .... पहला बयान

हज़रत सिद्दीक़े अकबर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

के फ़ज़ाइल

Scanned with CamScanner

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِيْلَانِيِّ الْبَغْدَادِيْ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْخَوَاجَهِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِيْرِيْ اَجْمَعِيْنَ ۝

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ج

तर्जमा : जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है।

(पारा 10, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े रसूल, नाइबे सिद्दीक़े अकबर, सरकार आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

यानी उस अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बअ़दर्रुसुल
सानी इसनैने हिजरत पे लाखों सलाम

यानी उस अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बादर्रुसुल
सानियस्सनैन हिजरत पे लाखों सलाम

अस्दक़ुस्सादेक़ीन सय्यदुल मुत्तक़ीं
चश्मो गोशो ज़ारत पे लाखों सलाम

आप का नाम और नसब : ऐ ईमान वालो ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम अब्दुल्लाह है । अबू बक्र आप की कुन्नियत और सिद्दीक़ व अतीक़ लक़ब है । आप के वालिद का नाम अबू क़हाफ़ा उस्माने और वालिदा मोहतरमा का नाम उम्मुल ख़ैर सलमा है । आप का शजरए नसब सातवीं पुश्त में हमारे हुज़ूर पुर नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सिलसिलए नसब से मिल जाता है आप वाक़िआ फ़ील के तक़रीबन ढाई साल बाद मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा अरबी, स. 21)

हज़रात ! अफ़ज़लुल बशर बअदल अम्बिया बित्तहक़ीक़ अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बहुत ज़्यादा क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया, काफ़िरों को उस पर हैरत हुई और यह कहने लगे कि सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऐसा इस लिये किया कि उन पर बिलाल का कोई बड़ा एहसान होगा जब बड़ी क़ीमत दे कर बिलाल को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई :

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّى ۝ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَى ۝
إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَى

तर्जमा : और बहुत उस से दूर रखा जाएगा (दोज़ख़ से) जो सब से बड़ा परहेज़गार जो अपना माल देता हो कि सुथरा हो और किसी का उस पर कुछ एहसान नहीं जिस का बदला दिया जाए, सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सब से बलन्द है और बे शक क़रीब है कि वह राज़ी होगा। (पारा 30, रुकू 17, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! आयते मुबारका में ज़ाहिर फ़रमाया गया कि हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह काम सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये था किसी के एहसान का बदला नहीं और न ही उन पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तअआला अन्हु का एहसान है। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा और बहुत से ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कराया है।

तमहीद : हमारे सरकार, मदीने के ताजदार अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब कोहे सफ़ा से दावते इस्लाम दी तो सब से पहले जिस पाक क़ल्ब ने नूरे ईमान को क़ुबूल किया। अपनेदिल को इस्लाम का, काशाना बनाया और ग़ुलामिये महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़लादा अपने गले में पहना वह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी थी। जिस की तारीफ़ व तौसीफ़ में अल्लाह तआला ने अपने कलाम क़ुरआने मजीद में आयतें नाज़िल की और उन की शान व अज़मत में ख़ुद नबिये दो आलम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ऐसे फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए जिस से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम सहाबा में मुमताज़ और

यगाना नज़र आते हैं। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सब से पहले कलमा पढ़ने का शरफ़ हासिल किया यानी सब से पहले मुसलमान होने का शरफ़ आप को हासिल है।

शाने सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

कौन सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ? जिन के वालिद, बेटा, पोता, सहाबी हुए। कौन सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ? जिन के किरदार व गुफ़्तार में, अक़वाल व अफ़आल में अल्लाह तआला के प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मुताबिक़त थी। जिस की ख़लवत व जलवत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत थी। जिस को हासिल नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िलाफ़त और सहाबा की इमामत थी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का यारे ग़ार था और यारे मज़ार भी है।

बयां हो किस ज़बान से मरतबा सिद्दीक़े अकबर का
है यारे ग़ार महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अकबर का
लुटाया राहे हक़ में घर कई बार इस महब्बत से
कि लू लूट कर हसन घर बन गया सिद्दीक़े अकबर का

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब से पहले इस्लाम लाए

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का शुमार साबेक़ीने अव्वलीन में है। बहुत से सहाबए किराम और ताबेईने इज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम फ़रमाते हैं कि सब से पहले इस्लाम लाने वाले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। मशहूर मुहद्दिस हज़रत मेमून बिन मेहरान से किसी ने सवाल किया कि हज़रत अबू बक्र अहले इस्लाम लाए या हज़रत अली ? तो उन्होंने जवाब दिया :

وَاللّٰہِ لَقَدْ اٰمَنَ اَبُوْبَکْرٍ بِالنَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ زَمَنَ بُحَیْرٰی رَاہِبْ

यानी हज़रत अबू बक्र तो बुहेरी राहिब के ज़माने ही में मुसलमान हो चुके थे (उस वक़्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदा भी नहीं हुए थे)

इब्ने असाकिर ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है। उन्होंने फ़रमाया :

اَوَّلُ مَنْ اَسْلَمَ مِنَ الرِّجَالِ اَبُوْبَکْرٍ सब से पहले मर्दों में हज़रत अबू बक्र मुसलमान हुए।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 23)

बाज़ सहाबए किराम और ताबेईने इज़ाम ने फ़रमाया कि सब से पहले इस्लाम लाने वाले हज़रत अली हैं और कुछ हज़रात ने यह कहा कि सब से पहले उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा इस्लाम में दाख़िल हुईं। इन तमाम अक़वाल की रोशनी में सिराजुल उम्मा हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यूँ ततबीक़

फ़रमाई है कि मर्दों में सब से पहले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए। औरतों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और बच्चों में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 26)

हज़रत अबू बक्र का क़ुबूले इस्लाम : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक क़ाफ़ला के साथ मुल्के शाम तिजारत के लिये तशरीफ़ ले गए, जब दिन ने अपनी चादरे नूर को समेटा, उजालों की जगह अन्धेरों ने अपनी काली ज़ुल्फ़ों को कायनात पर वसीअ व अरीज़ किया यानी रात हो गई तो क़ाफ़ला एक गिरजा घर के क़रीब ठहर गया। सब सो गए हज़रत अबू बक्र भी महवे ख़्वाब थे क्या देखा कि चाँद मेरे क़रीब आ रहा है और मैं उसे अपनी गोद में ले रहा हूँ ख़्वाब से बेदार हुए, गिरजा घर के राहिब से ख़्वाब बयान किया, बुहीरा राहिब ने हज़रत अबू बक्र से आप का नाम पूछा, आप ने अबू बक्र बताया फिर राहिब ने सवाल किया कि आप का वतन कहाँ है आप ने फ़रमाया मेरा वतन मक्का है फिर सवाल किया कि आप का ख़ानदान कौन सा है आप ने क़ुरैश बताया तो बोहीरा राहिब कहने लगा अगर आप का ख़्वाब सच्चा है तो उस की ताबीर यह है कि नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हयाते ज़ाहिरी में वज़ीर और बादे विसाल ख़लीफ़ा होंगे और वह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब मक्का से हिजरत फ़रमाएंगे तो ग़ारे सौर में क़याम करेंगे इस हाल में कि तुम्हारी गोद में उनका सर होगा।

बहीरा राहिब से ख़्वाब की ताबीर सुनने के बाद हज़रत अबू बक्र जब दारुल हरम मक्का शरीफ़ पहुँचे तो नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुए और अर्ज़ गुज़ार हुए कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मुझे कलमा शरीफ़ पढ़ाइये और इस्लाम में दाख़िल कर लीजिये कलमा शरीफ़ पढ़ा और मुसलमान हो गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्लाम क़ुबूल करने के बाद बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि जो नबी व रसूल होता है उस को मोअजिज़ा अता किया जाता है कोई मोअजिज़ा दिखा दें ताकि ईमान मज़बूत हो और क़ल्ब को इत्मीनान नसीब हो जाए। हमारे आक़ा नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

ऐ अबू बक्र ! मुल्के शाम तिजारत की ग़रज़ से गए थे, रात को सोए, ख़्वाब देखा, बहीरा राहिब से ख़्वाब बयान किया राहिब ने जो ताबीर बताई वह मेरा मोअजिज़ा नहीं तो और क्या है। (तलख़ीस नुज़हतुल मजालिस, 254)

ऐ ईमान वालो ! क़ुरबान जाइये निगाहे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कि तशरीफ़ फ़रमा हैं मक्का शरीफ़ में और मुल्के शाम के ख़्वाब को बयान फ़रमा रहे हैं।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

गोया हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम समझाना और बताना चाहते हैं कि हमारा उम्मती कहीं भी हो किसी भी हाल में हो, मेरी नज़र में है। वह मुझ से छुपा नहीं है मैं उसे हर हाल में देखता हूँ।

हज़रत अबू बक्र बग़ैर तरद्दुद ईमान लाए : मुहम्मद बिन इस्हाक़ फ़रमाते हैं कि मुझ से मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान तमीमी ने रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मैं ने किसी को इस्लाम की दावत दी तो उस ने तरद्दुद किया। अलावा अबू बक्र के जब मैं ने अबू बक्र पर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने बग़ैर तरद्दुद के इस्लाम कुबूल कर लिया और मेरा साथ दिया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 27)

हज़रत उमर का इरशाद : अल्लाह के दोस्त अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि अबू बक्र हमारे सरदार हैं हज़रत अबू बक्र के ईमान को और तमाम ज़मीन के मोमिनों के ईमान को वज़न किया जाए तो हज़रत अबू बक्र के ईमान का पल्ला भारी रहेगा। हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाया करते थे कि काश मैं अबू बक्र के सीने का एक बाल होता। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 25)

हज़रत मौला अली का इरशाद : असदुल्लाहिल ग़ालिब अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि लोग जब अपने ईमान को छुपाते थे, मगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ईमान को अलल ऐलान ज़ाहिर फ़रमाते थे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 25)

सिद्दीक़े अकबर की शान में कुरआन : अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़ज़ाइलो मनाक़िब बे शुमार हैं, अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के बाद तमाम इन्सानों में सब से आला व अफ़ज़ल हैं। बारगाहे ख़ुदा व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में आप की मक़बूलियत व महबूबियत का यह हाल है कि आप की शान में बहुत सी आयतें नाज़िल हुईं और अहादीसे करीमा में आप का ज़िक्रे जमील मौजूद है।

आयत नं. 1 :

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ
لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ج فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ
كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ط وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ط وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ 0

तर्जमा : अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुआ। सिर्फ़ दो जान से जब वह दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा, बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने

उस पर अपना सकीना उतारा और उन फ़ोजों से उस की मदद की जो तुमने न देखीं और काफ़िरों की बात नीचे डाली। अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है। (पारा 10, रुकू 12, तर्जमा कन्जुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! सूरए तोबह की यह मुक़द्दस आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में नाज़िल हुई है इस बात पर तमाम मुफ़स्सेरीन का इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ारे सौर में हिजरत की रात हमारे सरकार अहमद मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व अस्हाबिही वसल्लम के साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा कोई भी रफ़ीक़ ग़म गुसार नहीं था।किसी आशिक़े ने क्या ख़ूब कहा है :

कुरआं ने उन को सानी इस्नैन कह दिया
सानी नहीं ख़ुदा की क़सम यार ग़ार का

कुरआन से सहाबियत का सुबूत : हज़रात ! आयते करीमा : اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सहाबियत कुरआने करीम से साबित है। आप का सहाबिये रसूल होना क़तई यक़ीनी है।

आप सहाबी हुए, सहाबियत का इनकार कुरआने पाक का इनकार हुआ और यह कुफ़्र है। इनकार करने वाला काफ़िर हुआ। अब वह लोग यानी राफ़ज़ी, शीआ, हज़रात जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सहाबी नहीं मानते और तबर्रा बकते हैं, गालियाँ देते हैं गोया कुरआने करीम का इनकार करते हैं जिस की वजह से काफ़िर हुए बल्कि बद तरीन काफ़िर हुए।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝ الَّذِىْ يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰى ۝
اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝

तर्जमा : और बहुत उस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार जो अपना माल देता है कि सुथरा हो और किसी का उस पर कुछ एहसान नहीं जिस का बदला दिया जाए। सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है। जो सब से बलन्द है और बेशक क़रीब है कि वह राज़ी होगा।

(पारा 30, रुकू 17, तर्जमा कन्जुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! अल्लामा इब्ने जोज़ी और दूसरे मुहद्देसीन व मुफ़स्सेरीन ने बिल इत्तिफ़ाक़ फ़रमाया है कि सूरए वल्लैल की यह आख़री आयतें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में नाज़िल हुई हैं। सहाबिये रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का बयान है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन कमज़ोर व नहीफ़ ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा देते जो ईमान लाने की वजह से काफ़िरों के हाथों सताए जाते थे। एक रोज़ आप के वालिदे गिरामी हज़रत अबू क़हाफ़ा ने फ़रमाया, बेटा अबू बक्र ! तुम ज़ईफ़, कमज़ोर ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद करते हो। अगर तुम जो उन और बहादुर ग़ुलामों को ख़रीदते और आज़ाद

करते तो वह तुम्हारे मुश्किल वक़्त में काम आते और तुम्हारी मदद करते।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने वालिदे गिरामी को जवाब दिया कि अब्बा जान उन गुलामों को ख़रीदना और फिर आज़ाद करना यह अमल दुनियावी किसी फ़ायदे के लिये नहीं करता हूँ बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने रब्बे करीम की ख़ुशी के लिये करता हूँ।

और हज़रत अरवा बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मेरे इल्म में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन सात गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया जिस को इस्लाम लाने की वजह से सताया जाता था। इसी लिये आप की इन्हीं ख़िदमतों और कारनामों पर सूरए वल्लैल की इन आयतों का नुज़ूल हुआ। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 48)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝

तर्जमा : तो बेशक अल्लाह उन का मददगार है और जिब्रईल और नेक ईमान वाले और उस के बाद फ़रिश्ते मदद पर हैं। (पारा 28, रुकू 19, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! इस आयते करीमा के बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिनउमर और हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इस आयत में यानी सालेहुल मोमिनीन मुरादुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 48)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝

तर्जमा : और वह जो यह सच लेकर तशरीफ़ लाए और वह जिन्होंने उन की तस्दीक़ की यही डर वाले हैं। (पारा 23, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! इस आयते मुबारका के बारे में मौलाए कायनात हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि इस आयत यानी وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ से मुराद हज़रत नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और صَدَّقَ بِهٖ से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं क्यों कि सब से पहले हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने हुज़ूर की रिसालत व नुबुव्वत की तस्दीक़ फ़रमाई और सब से पहले ईमान से मुशर्रफ़ हुए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 37)

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ط

तर्जमा : बेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा इज़्ज़ वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है। (पारा 26, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! इस आयते करीमा के बारे में मुहद्देसीने किराम फ़रमाते हैं कि इस आयत यानी اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर अतक़ा यानी सब से ज़्यादा परहेज़गार हैं और जो बन्दा अल्लाह तआला की बारगाह में ज़्यादा परहेज़गार होगा वही बन्दा अल्लाह तआला की बारगाह में ज़्यादा इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाला होगा। इसी लिये हज़रत अबू बक्र

सिद्दीक़े अकबर का लक़ब अफ़ज़लुल बशर बअ़दल अम्बिया है।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं।

यानी अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बअ़दर्रुसुल
सानी इस्नैने हिजरत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ج وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ٥

तर्जमा : वह जोअपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिनमें छुपे और ज़ाहिर, उन केलिये उन का नेग है। उन के रब के पास, उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

(पारा 3, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु जब इस्लाम लाए, मुसलमान हुए, महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जाम नोश फ़रमाया उस वक़्त आप के पास चालीस हज़ार दीनार मौजूद थे ईमान लाने के बाद सारी दौलत राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दिये। दस हज़ार रात में,. दस हज़ार दिन में, दस हज़ार छुपा कर, दस हज़ार ज़ाहिर करके। इस क़ुरबानी पर अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा को हज़रत सिद्दीक़े अकबर के हक़ में नाज़िल फ़रमाया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारा 3, रुकू 6)

दुरूद शरीफ़ :

हदीस शरीफ़ और सिद्दीक़े अकबर : ऐ ईमान वालो ! कितने प्यारे अन्दाज़ से ख़ुद अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में महबूब मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान व शौकत को बयान किया, आइये कुछ अहादीसे शरीफ़ा जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में हैं मुलाहज़ा फ़रमा लें ताकि यारे ग़ारे मुस्तफ़ा, इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु ताला अन्हु की अक़ीदत व महब्बत में मज़ीद बरकत और तक़वियत हासिल हो जाए और मालूम हो जाए कि क्या शान व अज़मत है। महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कि अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम में और हमारे प्यारे आक़ा करीम, रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी हदीस शरीफ़ में बयान फ़रमाई है :

क़ुरआं ने उन को सानिये इस्नैन कह दिया
सानी नहीं ख़ुदा की क़सम यारे ग़ार का

दुरूद शरीफ़ :

हदीस शरीफ़ : हमारे आक़ा, कौनैन के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَا لِاَحَدٍ عِنْدَنَا يَدٌ اِلَّا وَقَدْ كَافَيْنَاهُ مَا خَلَا اَبَابَكْرٍ فَاِنَّ لَنَا عِنْدَهٗ يَدًا يُكَافِئُهُ اللهُ بِهَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمَا نَفَعَنِيْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَا نَفَعَنِيْ مَالُ اَبِيْ بَكْرٍ وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيْلًا لَاتَّخَذْتُ اَبَابَكْرٍ خَلِيْلًا اَلَا وَاِنَّ صَاحِبَكُمْ خَلِيْلُ اللهِ

यानी जिस का भी एहसान मुझ पर था मैंने उस के एहसान का बदला दे दिया। सिवाए अबू बक्र के कि मैं ने अबू बक्र के एहसान का बदला नहीं दिया बल्कि अल्लाह तआला अबू बक्र के एहसान का बदला क़ियामत के दिन अता फ़रमाएगा और किसी के माल ने मुझे इतना फ़ायदा नहीं दिया जो अबू बक्र के माल ने फ़ायदा पहुँचाया और अगर मैं किसी को अपना ख़लील बनाता तो यक़ीनन अबू बक्र को अपना ख़लील बनाता लेकिन मैं अल्लाह तआला का ख़लील हूँ। (मिश्कात शरीफ़, स. 555)

हदीस शरीफ़ : हमारे सरकार, अहमदे मुख़्तार, हबीबे परवरदिगार, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ से इरशाद फ़रमाया : اَمَا اِنَّكَ يَا اَبَابَكْرٍ اَوَّلُ مَنْ يَّدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ اُمَّتِيْ यानी ऐ अबू बक्र ! सुन लो कि मेरी उम्मत में सब से पहले तुम जन्नत में दाख़िल होगे। (मिश्कात शरीफ़, स. 556)

हदीस शरीफ़ : नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : مَا نَفَعَنِيْ مَالُ اَحَدٍ مَا نَفَعَنِيْ مَالُ اَبِيْ بَكْرٍ

यानी किसी आदमी के माल ने मुझ को वह फ़ायदा नहीं पहुँचाया, जो फ़ायदा अबू बक्र के माल ने पहुँचाया है। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 207, मिश्कात शरीफ़, स. 554)

हदीस शरीफ़ : हम ग़रीबों के सहारे, प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

اَنْتَ صَاحِبِيْ فِي الْغَارِ وَصَاحِبِيْ عَلَى الْحَوْضِ

यानी ऐ अबू बक्र ग़ारे सोर में तुम मेरे साथ रहे और हौज़े कौसर पर भी मेरे साथ रहोगे (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 208)

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुसल्ले पर

हदीस शरीफ़ : हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब अलील हुए और बीमारी बढ़ती गई तो हमारे सरकार अबद क़रार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

यानी अबू बक्र को हुक्म दो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं तो हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम मेरे बाप बहुत नर्म दिल के हैं वह आप की जगह नमाज़ न पढ़ा सकेंगे, फिर हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مُرُوْا اَبَابَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ

यानी अबू बक्र सिद्दीके अकबर से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं फिर हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे बाप नर्म दिल के हैं वह आप की जगह खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ा सकेंगे तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने नाराज़ हो कर ताकीद के साथ फ़रमाया कि अबू बक्र को हुक्म दो कि मेरी जगह पर लोगों को नमाज़ पढ़ाएं, तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसल्ले पर यानी हुज़ूर की जगह खड़े हो कर इमामत फ़रमाई यानी लोगों को नमाज़ पढ़ाई और कई दिन तक नमाज़ पढ़ाते रहे। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 91, मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 178, तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 208)

बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ की यह हदीस हज़रत आएशा सिद्दीक़ा, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत इब्ने मस्ऊद, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत अबू सईद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुमआ व हज़रत मौला अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से मरवी है, और बाज़ शारेहीने हदीस ने इस हदीस को मुतवातिर बताया है और उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि इस हदीस से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम सहाबा में सब से अफ़ज़ल हैं और अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को ख़िलाफ़त और इमामत के लिये चुन लिया है।

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

यानी उस अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बअदर्रुसुल
सानी इस्नैने हिजरत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की महब्बत तमाम उम्मत पर वाजिब है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

حُبُّ اَبِىْ بَكْرٍ وَشُكْرُهٗ وَاجِبٌ عَلٰى كُلِّ اُمَّتِىْ ٥

यानी अबू बक्र से महब्बत करना और उन का शुक्र अदा करना तमाम उम्मत पर वाजिब है। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 40)

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का लक़ब अतीक़ क्यों पड़ा

हदीस शरीफ़ : मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर पुर नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फ़रमाया :

اَنْتَ عَتِيْقُ اللّٰهِ مِنَ النَّارِ۝

यानी तू अल्लाह की जानिब से जहन्नम की आग से आज़ाद कर दिया गया इसी लिये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ का लक़ब अतीक़ है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 208)

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक नेकी

हदीस शरीफ़ : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि एक रात जो तारों से जगमगा रही थी, सारा आसमान तारों से भरा था, मेरे बिस्तर पर माहताबे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा गर थे, मैं ने दरबारे करम में मअ़रूज़ा पेश किया यानी सवाल किया कि या रसूलल्लालह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आसमान में जितने तारे हैं इतनी नेकियाँ क्या आप के किसी सहाबी की हैं, ज़बाने रहमत खुली, मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, हाँ उमर फ़ारूक़ की नेकियाँ इतनी हैं यानी आसमान में जितने तारे हैं। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने फिर अर्ज़ किया कि अबू बक्र यानी मेरे बाप की नेकियों का क्या हाल है ? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि उमर फ़ारूक़ की तमाम ज़िन्दगी की नेकियाँ अबू बक्र यानी तुम्हारे बाप की एक नेकी के बराबर हैं। (मिश्कात शरीफ़, स. 560)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! कैसी प्यारी हदीस शरीफ़ आप हज़रात ने सुनी, यक़ीनन ईमान को ताज़गी मयस्सर आई होगी कि कैसी शान व शौकत अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने महबूब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सच्ची गुलामी के सिले में अता फ़रमाया है।

अर्ज़ यह करना है कि सरकार के ग़ुलाम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की एक नेकी का जब यह आलम है तो पूरी हयाते तैय्यिबा की तमाम नेकियों का आलम क्या होगा। और फिर दूसरी अर्ज़ यह करमा है कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नेकियाँ इस शान की हैं तो आक़ा व मौला सरकारे मदीना, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नेकियों की शान का आलम क्या होगा।

और तीसरी अर्ज़ यह है कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाहे नुबुव्वत से उम्मती के नामए आमाल में कितनी नेकियाँ हैं वह सब छुपी नहीं हैं। निगाहे नुबुव्वत में आसमान के तारों की तादाद भी है और उम्मती के नामए आमाल में नेकियों की तादाद भी। जभी तो हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उमर की नेकियाँ आसमान के तारों के बराबर हैं। गोया निगाहे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में हज़रत उमर भी हैं

और आप की नेकियों की तादाद भी और आसमान के तारों की तादाद का इल्म भी बल्कि हमारा ईमान तो यह है कि ज़मीन हो कि आसमान, फ़र्श हो कि अर्श, ख़ाकी हो या क़ुदसी, तमाम मख़लूक़ात का इल्म हमारे सरकार मदीने के तादार की नज़र में मिस्ले हथेली है।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

अंगूठी पर नामे मुबारक : एक मरतबा हमारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपनी अंगूठी अता फ़रमाई और फ़रमाया इस पर किसी नक़्क़ाश से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه लिखवा लाओ। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अंगूठी लेली और नक़्क़ाश को जाकर फ़रमाया कि इस अंगूठी पर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه लिख दे जब वह अंगूठी आप ने बारगाहे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में पेश की तो उस पर लिखा था لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه اَبُوْ بَكْر صِدِّيْق सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब देखा तो फ़रमाया, दो नामों की ज़्यादती कैसी है ? हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया। आक़ा आप के नाम को तो मैं ने बढ़ाया है क्यों कि मेरी महब्बत ने यह गवारा नहीं किया कि रब के नाम और आप के नाम में जुदाई हो। लेकिन मेरा नाम मैंने नहीं लिखवाया है, इधर सिदरा के मकीं हज़रत जिब्रीले अमीं बारगाहे करम में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे।

وَقَالَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَمَّا اِسْمُ اَبِيْ بَكْرٍ فَكَتَبْتُهٗ اَنَا لِاَنَّهٗ مَا رَضِيَ اَنْ يُّفَرِّقَ
اِسْمَكَ عَنْ اِسْمِ اللّٰهِ فَمَا رَضِيَ اللّٰهُ اَنْ يُّفَرِّقَ اِسْمَهٗ عَنْ اِسْمِكَ

(तफ़सीरे कबीर, जि. 1, स. 87)

और हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम मैंने लिखा है। क्योंकि सिद्दीक़े अकबर का नाम महबूब के नाम से जुदा हो।

प्यारे नबी की तीन प्यारी चीज़ें : हमारे प्यारे नबी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दुनिया की तीन चीज़ें पसन्द थीं, जैसा कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

حُبِّبَ اِلَيَّ مِنْ دُنْيَاكُمْ ثَلٰثٌ اَلطِّيْبُ وَالنِّسَآءُ وَجُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ ۝

यानी मुझे तुम्हारी दुनिया की तीन चीज़ें पसन्द हैं। अव्वल ख़ुश्बू, दौम औरत, सौम नमाज़ जो मेरी आँख की ठन्डक है। (नसाई शरीफ़, जि. 2 स. 77)

पहली पसन्दीदह चीज़ ख़ुश्बू : ऐ ईमान वालो ! हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़ुश्बू बहुत पसन्द थी, हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : لَا تَرُدُّوا الطِّيْبَ

यानी ख़ुश्बू के तोहफ़े को लौटाया मत करो। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 6, स. 285)

हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुश्बू को बहुत पसन्द फ़रमाया करते थे। इस लिये ख़ुश्बू इस्तिमाल करना सुन्नत है।

हमारे सरकार, अम्बिया के सरदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे मुबारक से जो पसीना शरीफ़ निकलता, वह मुश्क व अंबर से भी ज़्यादा ख़ुश्बू दार हुआ करता था। आप के जिस्मे मुबारक से ऐसी प्यारी ख़ुश्बू और महक निकलती थी कि जिस राह से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़र हो जाता वह रास्ते ख़ुश्बू से महकने लगते थे।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

उन की महक ने दिल के गुन्चे खिला दिये हैं
जिस राह चल गए हैं कूचे बसा दिये हैं

दुरूद शरीफ़ :

हदीस शरीफ़ : सहाबिये मुस्तफ़ा, हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे घर आराम फ़रमा थे और जिस्मे अक़दस से पसीना बह रहा था। मेरी वालिदा हज़रत उम्मे सलीम हुज़ूर के मुबारक पसीना को एक बोतल में जमा करने लगीं। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने चश्मे रहमत खोली और इरशाद फ़रमाया। ऐ उम्मे सलीम ! तुम मेरे पसीने को क्या करोगी। उम्मे सलीम ने अर्ज़ किया। نَجْعَلُهُ فِيْ طِيْبِنَا وَهُوَ اَطْيَبُ الطِّيْبِ

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व अला आलिका वसल्लम हम इस को अपनी ख़ुश्बू यानी इत्र में मिलाऐंगे।

(बुख़ारी शरीफ़ मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 257, मिश्कात शरीफ़, स. 517)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वसियत की थी कि मेरे इन्तिक़ाल के बाद मेरे कफ़नमें वही ख़ुश्बू लगाई जाए जिस में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पसीना शरीफ़ मिला हुआ है। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स......)

ऐ ईमान वालो ! जब हमारे हुज़ूर, सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्यारे पसीने से सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम इस तरह महब्बत फ़रमाते थे तो पसीना वाले नबी से महब्बत का आलम क्या होगा।

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

और सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

दूसरी पसन्दीदा चीज़ औरत : ऐ ईमान वालो ! हमारे आक़ा, रहमते आलम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशादे पाक में बे शुमार हिकमतें जलवागर हैं चन्द हिकमतें बयान कर रहा हूँ पूरी तवज्जोह से समाअत फ़रमाएं।

पहली हिकमत : हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اِلَیَّ مِنْ دُنْیَاکُمْ ثَلٰثٌ मुझे पसन्द हैं तुम्हारी दुनिया की तीन चीज़ें सिर्फ़ दुनिया न फ़रमाया बल्कि तुम्हारी दुनिया फ़रमाया। इस में क्या हिकमत है ? साफ़ ज़ाहिर है कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अस्ल दुनिया कोई और है और वह कुर्बे रब तआला है। जो सिर्फ़ नूर ही नूर की दुनिया है।

दुरूद शरीफ़ :

दूसरी हिकमत : अल्लाह तआला के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी दुनिया की मुझे तीन चीज़ें पसन्द हैं। पहली ख़ुश्बू, दूसरी औरत है। उस में क या हिकमत है कि हमारे सरकार अबद क़रार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने औरत को पसन्द फ़रमाया।

अर्ज़ करना चाहूँगा कि वह ज़माना याद करें ज़ब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जलवा गरी नहीं हुई थी तो औरतों का क या मक़ाम था। बेवा औरतें मनहूस समझी जाती थीं और लड़कियाँ पैदा होते ही ज़िन्दा दफ़न कर दी जाती थीं।

मुआशरे में औरत को ज़िल्लत और नफ़रत से देखा जाता था। औरतें दर्दो कर्ब में मुब्तला थीं और रोती थीं, आहो बका करती थीं, किसी रहमत वाले, करम वाले, दर्द मन्द, मुसीबत दूर करने वाले, मसीहा, मुश्किल कुशा को तलाश कर रही थीं, आवाज़ देती रहती थीं, पुकारती रहती थीं, मगर ज़ुल्म व जब्र के अन्धेरे इतने गहरे और मोटे थे और हर जानिब से मुसल्लत थे कि दर्दो कर्ब की मारी औरत की आवाज़ पर कोई लब्बैक कहने वाला न था। शर्क से ग़र्ब तक, शिमाल से जुनूब तक, ज़ालिमों का, चोरों का, हराम कारों का राज था। सिर्फ़ सोचो, समझो, ग़ौर करो कि औरतों के लिये कैसा नाज़ुक दौर था, कितना भयानक ज़माना था। कैसे अन्धेरे थे, ज़ुल्म हद से आगे गुज़र चुका था। कुदरत को जलाल आ ही गया।

मशियत को अपने बन्दों पर प्यार आ ही गया बाबे रहमत खुला एक नूर ने नूरे मुजस्सम को मबऊस किया उजाले फेले अर्श से फ़र्श तक नूर की किरन फूटी। अब्दुल्लाह के घर से आमिना तैय्यिबा की गोद से, अन्धेरे मुंह छुपाने लगे, ज़ुल्म दम तोड़ने लगा, जिहालत रूपोश हुई, नूर व रहमत की सुबह हुई, हर सू ज़माने में नूर ही नूर था। चमक ही चमक थी, रोशनी ही रोशनी थी।

क्या शाने अहमदी का चमन में ज़हूर है
हर गुल में हर शजर में मुहम्मद का नूर है

आसमान से ज़मीन तक ख़ैरात बटने लगी, नूर के सदक़े बटने लगे

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का

नारियों का दौर था, दिल जल रहा था नूर का
तुम को देखा, हो गया ठन्डा कलेजा नूर का

यानी हमारे हुज़ूर, सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम फ़ज़्लुर्रहमान बन कर, रहमते तमाम बन कर, बेकसों के कस, बे यारों के यार बन कर मुश्किल कुशा, मुईन व मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, अहमदे मुख़्तार बन कर, जलवा गर हुए आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क्या ही ख़ूब फ़रमाते हैं :

वही रब है जिस ने तुझ को हमा तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया
तुझे हम्द है ख़ुदाया, तुझे हम्द है ख़ुदाया

औरतों को जीने का हक़ और इज़्ज़त का मक़ाम दिया। बेवाओं को मनहूस की बजाए मुबारक फ़रमाया और बेवा की ख़िदमत को नेकी बना दिया। लड़कियों को ज़िन्दा दर गोर होने से बचा कर ज़िन्दगी का शुऊर अता फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया बच्चियाँ गाड़ने के लिये नहीं, पालने के लिये हैं। उन की परवरिश पर जन्नत की बशारत दी और फ़रमाया जन्नत मां के क़दम के नीचे है।

अब ज़ाहिर व बाहिर हो गया कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बेअसत से पहले ज़माने का हाल क्या था और औरतों का मक़ाम क्या था, ज़ुल्म की चक्की में पिसने वाली औरत को ज़ुल्म से छुड़ाया किस ने ? बेवा औरत को मनहूसियत की लअनत से बचया किस ने ? ज़िन्दा बच्ची को ज़मीन में गड़ने से बचाया किस ने ? रोती, बिलकती, सिसकती औरत को इज़्ज़त व अज़मत के साथ मुस्कुराने की तबस्सुम रेज़ हयाते तर ज़िन्दगी किस ने अता की। वह ज़ाते गिरामी कौन हैं ? तो वह नूर का पैकर, रहमते तमाम, मुजस्सम करम, हमारे प्यारे नबी प्यारे रसूल अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं। आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क्या ही ख़ूब फ़रमाते हैं :

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हज़रात ! वह लोग जाहिल भी हैं और ज़ालिम भी, जो यह कहते हैं कि इस्लाम ने औरतों को उन का हक़ नहीं दिया वह मज़हबे इस्लाम है और पैग़म्बरे इस्लाम हैं जिन्होंने हर औरत को उस का मुकम्मल हक़ दिलाया है अगर बच्ची लडकी है तो उस का हक़, बहन है तो उस का हक़, मां है तो उस का हक़, बेवा है तो उस का हक़, सारे हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त भी की और दिलाया भी।

दुरूद शरीफ़ :

तीसरी पसन्दीदा चीज़ नमाज़ : हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तीसरी पसन्दीदा चीज़ नमाज़ है। हमारे सरकार अबद क़रार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

جُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ

यानी मेरे आँखों की ठन्डक नमाज़ है। (कन्ज़ुल उम्माल, स. 117)

और आक़ा व मौला मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : اَلصَّلٰوةُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِيْن

यानी नमाज़ मोमिनों की मेअराज है। प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने रहमत से इरशादे पाक सुना तो आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि सच फ़रमाया आप ने या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम وَحُبِّبَ اِلَيَّ مِنَ الدُّنْيَا ثَلٰثٌ कि मुझे भी दुनिया की तीन चीज़ें पसन्द हैं।

अव्वल : اَلنَّظْرُ اِلٰى وَجْهِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمْ यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए मुबारका का दीदार करना।

दौम : وَاِنْفَاقُ مَالِيْ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمْ यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर अपना माल क़ुरबान करना।

सौम : وَاَنْ يَّكُوْنَ اِبْنَتِيْ تَحْتَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمْ यानी मेरी बेटी आएशा सिद्दीक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के निकाह में है।

(मिम्बहात, तस्नीफ अल्लामा इब्ने हजर रहमतुल्लहि तआला अलैह)

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह !! इश्क़ हो तो ऐसा महब्बत हो तो ऐसी कि जां निसारे नबी। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हर महबूब तमन्ना इश्क़े रसूल में डूबी हुई है। तीनों महबूब तमन्नाएं ऐसी हैं जिस से महब्बते रसूल का जाम छलकता नज़र आ रहा है

गोया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बताना और समझाना यह चाहते हैं कि मोमिन की हर आरज़ू और तमन्ना में इश्क़े नबी जलवा गर होना चाहिये।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

दहन में ज़बां तुम्हारे लिये बदन में है जां तुम्हारे लिये
हम आए यहाँ तुम्हारे लिये उठें भी वहाँ तुम्हारे लिये

फिर भी आशिक़े मुस्तफ़ा, सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जी नहीं भरा। दिल की प्यास बाक़ी है फ़रमाते हैं :

सबा वह चले कि बाग़ फुले वह फूल खिले कि दिन हों भले
लिवा के तले सना में खुले रज़ा की ज़बां तुम्हारे लिये

हज़रत अबू बक्र के बचपन का वाक़िआ : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने कभी बुत परस्ती नहीं की। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब पन्द्रह साल के हुए तो आप ने बुतों को तोड़ डाला यानी बुत शिकनी फ़रमाई। हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी किताब तन्ज़ीहुल मकानतुल हैदरिया, स. 13 पर रक़म तराज़ हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वालिदे गिरामी हज़रत अबू क़हाफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप को बुत ख़ाना ले गए और बुतों की तरफ़ इशारा फ़रमा कर हज़रत अबू बक्र से कहा :

هٰذِهٖ اٰلِهَتُكَ الشُّمُّ الْعُلٰى فَاسْجُدْ لَهَا यहतुम्हारे बुज़ुर्ग ख़ुदा हैं इन को सज्दा करो। बाप ने यह कहा और चले गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क़ज़ाए मुबरम की तरह बुत के सामने तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : اِنِّىْ جَائِعٌ فَاَطْعِمْنِىْ

मैं भूका हूँ मुझे खाना खिला दे मगर बुत कुछ न बोला फिर आप ने फ़रमाया : اِنِّىْ عَارٍ فَاكْسِنِىْ

मैं नंगा हूँ मुझे कपड़ा पहना दे। मगर बुत कुछ न बोला बुत कुछ न बोला हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने एक पत्थर हाथ में लेकर फ़रमाया, मैं तुझ को पत्थर मारता हूँ :

فَاِنْ كُنْتَ اِلٰهًا فَامْنَعْ نَفْسَكَ अगर तू मअ़बूद है तो अपने आप को बचा वह पत्थर बुत ही बना रहा। आप ने पूरी ताक़त से उस बुत को पत्थर मारा तो वह झूटा ख़ुदा पत्थर का बना हुआ मुंह के बल गिर पड़ा। इसी असना में आप के वालिदे गिरामी तशरीफ़ ले आए। यह सब कुछ देखकर फ़रमाने लगे। मेरे बेटे तुम ने यह क्या किया, आप ने फ़रमाया वही किया जो आप देख रहे हैं। आप के वालिदे ागिरमी आप की वालिदा माजिदा के पास लाए और सारा वाकिआ सुनाया। वालिदा ने फ़रमाया इस बच्चे को उस के हाल पर रहने दो। कुछ न कहो। जिस रात यह बच्चा पैदा हुआ मेरे पास कोई न था मैं ने सुना, एक ग़ैबी आवाज़ आ रही थी।

يَا اَمَةَ اللّٰهِ عَلَى التَّحْقِيْقِ اَبْشِرِىْ بِالْوَلَدِ الْعَتِيْقِ اِسْمُهٗ فِى السَّمَاءِ الصِّدِّيْقُ لِمُحَمَّدٍ صَاحِبٌ وَّرَفِيْقٌ

यानी ऐ अल्लाह की सच्ची बन्दी, तुझे मुर्ज़दा हो उस अतीक़ बच्चे की जिस का नाम आसमानों में सिद्दीक़ है और यह सच्चा बच्चा मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दोस्त और रफ़ीक़ है।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

पहला जुमा .... दूसरा बयान

हज़रत सिद्दीक़े अकबर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु **और**

महब्बते रसूल

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ج

तर्जमा : जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है।

(पारा 10, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दौरे जाहिलियत में भी ख़ानदाने क़ुरैश के बड़े मुअज़्ज़म और मुकर्रम शख़्सियत माने और जाने जाते थे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ख़ानदान में साहिबे दौलत थे। हज़रत अबू बक्र बा वक़ार और साहिबे एहसान व मुरव्वत थे। गम शुदा की तलाश और मेहमानों की ख़ूब तवाज़ोअ, ख़ातिर फ़रमाया करते थे। हज़रत अबू बक्र क़ुरैश के उन ग्यारह अश्ख़ास में हैं जिन को दौरे जाहिलियत और ज़मानए इस्लाम दोनों में, शरफ़ व बुज़ुर्गी हासिल रही है।

हज़रत अबू बक्र दौरे जाहिलियत में, ख़ून बहा और जुरमाने के मुक़दमात का फ़ैसला फ़रमाया करते थे जो उस ज़माने का बहुत ही बड़ा एज़ाज़ का मन्सब था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दौरे जाहिलियत में भी कभी शराब नहीं पी, एक मरतबा की बात है मजमअ है सहाबा किराम का। सवाल किया गया हज़रत अबू बक्र से कि आप ने दौरे जाहिलियत में कभी शराब नोशी को पसन्द फ़रमाया। तो आप ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला की पनाह। मैंने कभी शराब नहीं पी। सवाल हुआ क्यों नहीं पी ? तो आप ने फ़रमाया :

كُنْتُ اَصُوْنُ عِرْضِيْ وَاحْفَظُ مُرُوْتِيْ यानी मैं अपनी शराफ़त व इज़्ज़त और मुरव्वत की हिफ़ाज़त करता था इसलिये कि जो शराब पीता है उस की इज़्ज़त व शराफ़त तबाह व बरबाद हो जाती है। इस बात को जब प्यारे नबी, हमारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सुना तो आप ने दो मरतबा फ़रमाया कि अबू बक्र ने सच कहा, अबू बक्र ने सच कहा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 23)

हज़रत अबू बक्र की तब्लीग़ का असर : यारे ग़ारे नबी, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पुर ख़ुलूस कोशिश और अच्छी तब्लीग़ से हज़रत उस्माने ग़नी, हज़रत ज़ुबैर बिन अलअवाम, हज़रत तलहा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत उबैदा बिन जर्राह जैसे बहुत से हज़रात मुसलमान और साहिबे ईमान हुए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 32)

ऐ ईमान वालो ! मालूम हुआ कि अगर आज भी हम पुर ख़ुलूस कोशिश करें और अच्छी नसीहत से काम लें यक़ीनन असर होगा। अल्लाह तआला अपने प्यारे हबीब, हम बीमारों के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले से हम सब को ख़ुलूस की दौलत अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत अबू बक्र बेमिस्ल आलिम और ख़ता से पाक : महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इल्म ला जवाब था, आप बे मिस्ल आलिम और बिल इत्तिफ़ाक़, अअ़लमुस्सहाबा यानी जमाअते सहाबा में सब से ज़्यादा इल्म वाले हाफ़िज़े क़ुरआन के साथ फ़न्ने क़िरअत में माहिर थे। इल्मुल अन्साब, ताबीरे ख़्वाब और ख़ुतबात की फ़साहत व बलाग़त में बे नज़ीर, आप की ज़ाते बा बरकत थी। दरमियाने सहाबा जब कोई मस्अला पेश आता, चाहे कितना ही मुश्किल क्यों न हो, आप की ख़िदमत में पेश किया जाता। आप हदीस शरीफ़ सुनाते और मुश्किल से मुश्किल मस्अला हल हो जाता। लोगों के क़ुलूब मुतमइन हो जाया करते थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस शान के साहिबुर्राए थे कि एक सहाबी हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे यमन का क़ाज़ी बनाने का इरादा फ़रमाया तो हमारे सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत उसैद बिन ख़ुसैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन वग़ैरहुम सहाबा किराम से मशवरा फ़रमाया। हर एक ने अपनी अपनी राए पेश की। तो हग़रीबों के आक़ा हम फ़क़ीरों की सरवत मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया, मआज़ बिन जबल तुम्हारी क्या राए है ? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं हज़रत

अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर की राए से इत्तिफ़ाक़ करता हूँ, तो हुज़ूर नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला को गोया गवारा नहीं कि अबू बक्र ख़ता करें। (तबरानी, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 33)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अबू बक्र को सिद्दीक़ का लक़ब : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास मेअराज की रात की सुबह, दुश्मने रसूल अबू जहल और उस के साथी मुशरेकीन आए और कहने लगे कि अबू बक्र आप को कुछ ख़बर है ? आप के साहिब, आप के दोस्त मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कह रहे हैंकि रात को बैतुल मुक़द्दस आसमान, अर्श वग़ैरह की सेर दो गया और रात ही में आसमानों वग़ैरह की सेर कर के वापस भी आ गया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या वाक़ई वह ऐसा फ़रमा रहे हैं? अबू जहल और उस के साथियों ने कहा हाँ वह ऐसा ही कह रहे हैं तो आप ने फ़रमाया :

إِنِّي لَأُصَدِّقُهُ بِأَبْعَدَ مِنْ ذَٰلِكَ यानी अगर वह उस से भी ज़्यादा बईद और बड़ी बात की ख़बर दें गे तो बेशक मैं उस की भी तस्दीक़ करूँगा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 23)

किस शान का ईमान था हज़रत अबू बक्र का : बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आप के बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हैं। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया कि अब्बा जान आप पर मेरा एक ऐहसान है और वह यह है कि ग़ज़वए बद्र में आप हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ थे और मैं अबू जहल और कुफ़्फ़ार के साथ था। लड़ाई हो रही थी, सर कट कट के गिर रहे थे और कई मरतबा आप मेरी तलवार के ज़द में आ गए लेकिन आप को मैं ने बाप होने की वजह से क़त्ल नहीं किया, यह एहसान है आप पर मेरा। इता सुनना था कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जोशे ईमानी के साथ इरशाद फ़रमाया : لَوْ أَهْدَفْتَ لِي لَمْ أَنْصَرِفْ عَنْكَ

यानी ऐ मेरे बेटे अब्दुर्रहमान सुन लो अगर तुम मेरी तलवार की ज़द में आ जाते तो क़सम ख़ुदा की, मैं तुम को बेटा समझ कर नहीं छोड़ता बल्कि उस वक़्त अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दुश्मन समझ कर तुम को क़त्ल कर देता।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 34)

क्या ख़ूब फ़रमाया प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा, सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

दुश्मने अमहद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

इब्तिदाए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता वह अपने इस्लाम को छुपाए रखता था और हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी छुपाने की तलक़ीन फ़रमाते थे ताकि कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन तकलीफ़ न दें ज़ब मुसलमानों की तादाद अड़तीस हुई तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअला अन्हु ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में अर्ज़ की। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अब हमें इस्लाम की तब्लीग़ अलल ऐलान करना चाहिये। नबिये बरहक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ प्यारे सिद्दीक़। अभी हम तादाद के लिहाज़ से थोड़े हैं हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बार बार इसरार किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मन्ज़ूर फ़रमा लिया और सारे सहाबा को लेकर मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गए।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़ुतबा यानी तक़रीर शुरू की और यह सब से पहला ख़ुतबा है जो इस्लाम में पढ़ा गया। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अमीरे हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इसी दिन इस्लाम लाए। ख़ुतबा का शुरू होना था कि चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार व मुशरेक़ीन मुसलमानों पर टूट पड़े। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़मत व शराफ़त मक्का वालों में मुसल्लम थी उस के बावजूद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस क़दर मारा कि पूरा चेहरा लहू लुहान हो गया और आप बे होश हो गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़बीला बनू तमीम के लोगों को ख़बर हुई तो वह लोग आप को वहाँ से उठा कर लाए और किसी को भी यह उम्मीद नहीं थी कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस ज़द कोब (मार) के बाद बच सकेंगे। आप के क़बीला के लोग मस्जिदे हराम में आए और ऐलान किया कि अगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस हादिसा में इन्तिक़ाल कर गए तो हम उन के बदला में बनी रबीआ को क़त्ल करेंगे क्योंकि इसी ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मारने में बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया था।

शाम तक आप बेहोश रहे और जब होशमें आए तो सब से पहला लफ़्ज़ यह था कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क्या हाल है? इस बात पर लोगों ने आप को बहुत मलामत की कि उन्हीं की वजह से यह मुसीबत पेश आई और दिन भर बे होश रहने के बाद बात की तो सब से पहले उन्हीं का नाम लिया और उन का नाम क्यों न लेते इस लिये कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र कर और याद ही तो मोमिन की शान और ईमान की जान है। आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे

रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं।

जान है इश्क़े मुस्तफ़ा रोज़ फ़ज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यों

कुछ लोग इस ख़याल से उठ कर चले गए कि जब बोलने लगे हैं तो अब जान बच जाए गी। आप की वालिदा मोहतरमा हज़रत उम्मुल ख़ैर रज़ियल्लाहु तआला अनहा से कुछ लोगों ने कहा कि आप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के खाने, पीने का कुछ इन्तिज़ाम कर दें आप की वालिदा मोहतरमा कुछ खाने पीने का सामान लेकर आईं और आप को खाने के लिये बहुत कहा मगर आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वही एक सदा थी कि हमारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क्या हाल है ? आप की वालिदा ने फ़रमाया कि मुझे कुछ नहीं मालूम कि उन का क्या हाल है ? हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बहन उम्मे जमील रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास जाकर मालूम करो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क्या हाल है ? वह अपने बेटे की बे क़रारी को दूर करने के लिये उम्मे जमील के पास गईं और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हाल दरयाफ़्त किया।

वह भी उस वक़्त तक अपने इस्लाम को छुपाए हुए थीं उन्होंने टाल दिया, और कोई सही जवाब नहीं दिया और कहा कि अगर तुम कहो तो मैं चल कर तुम्हारे बेटे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखूँ कि उन का क्या हाल है। उन्हों ने कहा कि हाँ चलो। हज़रत उम्मे जमील रज़ियल्लाहु तआला अन्हा उन के घर गईं और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हालत देख कर बरदाश्त न कर सकीं और रोने लगीं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन सब से भी पूछा कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क्या हाल है ? हज़रत उम्मे जमील रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने आप की वालिदा की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाया कि वह सुन रही हैं आप ने फ़रमाया कि उन से न डरो। तो उम्मे जमील ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बख़ैरो आफ़ियत हैं आप ने फ़रमाया कि इस वक़्त कहाँ हैं ? उम्मे जमील ने कहा कि हज़रत अरक़म के घर तशरीफ़ रखते हैं। फ़रमाया क़सम है अल्लाह वाहिदे ज़ुल जलाल की मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं खाऊँगा जब तक अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार न कर लूँगा।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

और फ़रमाया :

ज़हन में ज़बां तुम्हारे लिये बदन में है जां तुम्हारे लिये
हम आए यहाँ तुम्हारे लिये उठें भी वहाँ तुम्हारे लिये

आप की वालिदा मोहतरमा तो बहुत ज़्यादा बे क़रार थीं कि आप कुछ खा पी लें मगर आप ने क़सम खा ली कि जब तक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत न कर लूँगा कुछ नहीं खाऊँगा। तो आप की वालिदा ने लोगों की आमदो रफ़्त के बन्द हो जाने का इन्तिज़ार किया ताकि ऐसा न हो कि कोई आप को देख कर फिर तकलीफ़ दे। जब रात ज़्यादा गुज़र गई और लोगों का आना जाना बन्द हो गया तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उन की वालिदा मोहतरमा लेकर सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पहुँचीं। आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अपने महबूब आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से लिपट कर ख़ूब रोए और प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी अश्कबार हो गए हत्ता कि तमाम हाज़िरीन पर रिक़्क़त तारी हो गई और सब रो पड़े। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 35)

इसी गिरया व ज़ारी व महब्बत के माहौल में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने करीम, रऊफ़ो रहीम, आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरगाहे इनायत में अर्ज़ किया कि आक़ा करीम मां मुझ से बड़ी महब्बत फ़रमाती हैं आप मेरी वालिदा के हक़ में दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला मेरी मां को ईमान की दौलत से मालामाल फ़रमा दे और जहन्नम से नजात दे दे और जन्नत का हक़दार बना दे। जाने ईमान, मालिके जन्नत, अल्लाह तआला के प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आप की वालिदा की तरफ़ निगाहे नुबुव्वत व रहमत से देखना था कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदा मोहतरमा ने कलमा पढ़ा और ईमान व सहाबियत से मुशर्रफ़ हो गईं। (हयातुस्सहाबा उर्दू अल बिदाया वन्निहाया)

ख़ूब फ़रमाया मेरे आक़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

वल्लाह वह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुँचेंगे
इतना तो हो कोई जो आह करे दिल से

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

कुल माल नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कुरबान : हदीस शरीफ़ की दो मशहूर किताब तिर्मिज़ी शरीफ़ और अबू दाऊद शरीफ़ में है। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक दिन हम लोगों को अल्लाह तआला की राह में सदक़ा और ख़ैरात करने का हुक्म दिया और इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त मेरे पास बहुत माल था। मैं ने अपने दिल में ख़याल किया कि अगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नेकी में आगे बढ़ जाना किसी दिन मेरे लिये मुमकिन होगा तो वह दिन आज का दिन होगा। मैं बहुत ज़्यादा माल अल्लाह तआला की राह में दे कर उन से नेकी में आगे बढ़ जाऊँगा। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं कुल दौलत का आधा माल लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया :

مَا اَبْقَيْتَ لِاَهْلِكَ यानी अपने घर वालों के लिये तुम ने कितना छोड़ा।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि आधा माल घर वालों के लिये छोड़ दिया है फिर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जो कुछ उन के पास था सारी दौलत, कुल सरमाया हत्ता कि खाने पकाने का बरतन, कपड़ा सिलने की सुई पहनने का कपड़ा भी सामान में शामिल फ़रमा लिया और फटा पुराना कम्बल अपने जिस्मे अक़दस पर औढ़लिया और बटन की जगह बबूल का कांटा लगा लिया। और इसी शान के साथ सब का सब माल ले कर उसी लिबास में अपने आक़ा करीम प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में शरफ़े हुज़ूरी से मुशर्रफ़ हुए। फिर उस वक़्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िरे ख़िदमत हुए और वह भी फटे पुराने कम्बल ओढ़े हुए बटन की जगह बबूल का कांटा लगाए हुए थे। हमारे आक़ा करीम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पूछा ऐ सिदरा के मकीं जिब्रईले अमीन! आज मैं तुम को किस लिबास में देख रहा हूँ। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, ऐ महबूबे ख़ुदा! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब से आप की महब्बत में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस लिबास को पहन लिया है अल्लाह तआला ने आसमानों में हर फ़रिश्ते को हुक्म दे दिया है कि तुम उसी लिबास को पहन लो जिस लिबास में मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के महबूब अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नज़र आ रहे हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 102, नुज़हतुल मजालिस)

مَا اَبْقَيْتَ لِاَهْلِكَ यानी ऐ अबू बक्र अपने घर वालों के लिये क्या छोड़ आए हो ?

فَقَالَ اَبْقَيْتُ لَهُمُ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 30)

यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि घर वालों के लिये अल्लाह व रसूल को छोड़ आया हूँ।

परवाने को चिराग़, बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात! अब थोड़ी देर ठेहर जाइये एक नुक्ता अर्ज़ करता चलूँ ग़ौर से सुनिये।

आज हमारा मुख़ालिफ़ बद अक़ीदा कहता है नबी एक हैं हर जगह कैसे हो सकते हैं सुन्नी मुसलमान कहते हैं हमारी महफ़िलों में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आते हैं, हम जहाँ याद करें, हमारे नबी जलवा फ़रमा हो सकते हैं।

तो बद दीन वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी से कहो और उस से पूछो कि हमारे सरकार नबिये मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ से फ़रमाया कि घर वालों के लिये क्या छोड़ आए। तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यही कहा था कि अल्लाह व रसूल को घर वालों के लिये छोड़ आया हूँ। अब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यह पूछो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो आप के पास सहाबए किराम की महफ़िल में तशरीफ़ फ़रमा हैं। वह और कौन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं जिन को आप घर वालों के लिये छोड़ आए हैं तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान पुकारेगा और जवाब देगा कि मेरे रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) एक हैं मगर उन का जलवा हर जगह है।

इसी को आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ला मकां तक उजाला है जिस का वह हैं
हर मकां का उजाला हमारा नबी

और उस्ताज़े ज़मन मौलना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

तूर पर ही नहीं मौक़ूफ़ उजाला तेरा
कौन से घर में नहीं जलवए ज़ेबा तेरा

ऐ ईमान वालो! याद रखो! मोमिन जलवए हुज़ूर देखता है मुनाफ़िक़ को दिखाई नहीं देता अबू जहल को जलवए महबूबे ख़ुदा कभी भी नज़र नहीं आया और आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु महफ़िले सहाबा में भी जलवए यार देखते हैं और घर में भी दजलवए महबूबे ख़ुदा का नज़ारा करते हैं।

अन्दाज़ हसीनों को सिखाए नहीं जाते
बू जहल को महबूब दिखाए नहीं जाते

हदीस शरीफ़ : हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

قُلْتُ لَا اَسْبِقُهُ اِلٰى شَيْئٍ اَبَدًا

यानी मैंने अपने दिल में कहा किसी चीज़ में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मैं कभी आगे नहीं बढ़ सकता हूँ। (मिश्कात शरीफ़, स. 556)

आप की बहादुरी : अल्लामा बज़ार रहमतुल्लाहि अलैह अपनी मुस्नद में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों से दरयाफ़्त किया कि सब से ज़्यादा बहादुर कौन है तो सब लोगों ने कहा कि सब से ज़्यादा बहादुर आप हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मैं तो हमेशा अपने बराबर से लड़ता हूं फिर कैसे मैं सब से ज़्यादा बहादुर हुआ। तुम लोग यह बताओ कि सब से ज़्यादा बहादुर कौन है। लोगों ने अर्ज़ किया हज़रत हम को नहीं मालूम है आप ही बताएं। आप ने फ़रमाया कि सब से ज़्यादा बहादुर दिलेर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। सुनो ! जंगे बद्र में हम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये एक अरीश यानी झोपड़ा बनाया था ताकि हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस में आराम फ़रमाएं और गर्दो गुबार और धूप से महफ़ूज़ रहें तो हम लोगों ने आपस में कहा कि लड़ाई के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास कौन रहेगा। कहीं ऐसा न हो कि कोई दुश्मन आप पर हमला कर दे।

فَوَاللّٰهِ مَا دَنَا مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا اَبُوْبَكْرٍ यानी ख़ुदा की क़सम उस काम के लिये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा कोई आगे नहीं बढा। आप नंगी तलवार हाथ में लेकर महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास खड़े हो गए फिर किसी दुश्मन को आप के पास आने की जुरअत नहीं हो सकी और अगर किसी दुश्मन को आता देखते तो उस पर झपट पड़ते। इसी लिये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही हम लोगों में सब से ज़्यादा बहादुर थे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 25)

हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रोज़ काफ़िरों ने हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पकड़ लिया और कहने लगे कि तुम ही हो जो कहते हो कि ख़ुदा एक है। हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि क़सम ख़ुदा की कि उस मौक़े पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे बढ़े और काफ़िरों को मारा और उन्हें धक्के दे दे के पीछे हटाया और फ़रमाया तुम पर अफ़सोस है कि तुम ऐसी ज़ात को सताते हो, मारते हो जो यह कहता है कि मेरा माबूद, परवरदिगार सिर्फ़ अल्लाह है और हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि लोग अपने ईमान को छुपाते थे मगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ईमान को अलल ऐलान ज़ाहिर फ़रमाते थे इस लिये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़रज़ियल्लाहु तआल अन्हु सब से ज़्यादा बहादुर थे।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 28)

शबे हिजरत : मुसलमानों पर कुरैश के ज़ल्मो सितम का सिलसिला इतना आगे बढ़ चुका था कि मुसलमान हिजरत करने पर मजबूर हो गए थे, चुनाँचे सहाबा की एक जमाअत हबशा की तरफ़ हिजरत कर गई, बाक़ी कुछ लोग मदीना मुनव्वरा हिजरत करके पहले चले गए थे। मक्का मुकर्रमा में चन्द मुसलमान रह गए थे तो कुरैशे मक्का ने कहा कि अब रसूलुलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मआज़ल्लाह क़त्ल कर देने का अच्छा मौक़ा है। मशवरे के लिये दारुन नदवा में दुश्मनाने इस्लाम जमा हुए सब ने अपना अपना मशवरा पेश किया। आख़िर तय यह पाया कि हर क़बीला से एक जवान को तय्यार किया जाए।

यह सब जवान बहादुर नंगी शमशीर लेकर रात की तारीकी में सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के काशानए नुबुव्वत (मकान) को घेर लें और जब सुबह होगी आप नमाज़ के लिये बाहर तशरीफ़ लाएं तो यह सब कुरैश के नौजवान बहादुर एक साथ मिल कर उन पर हमला कर दें। उस तदबीर का फ़ायदा यह होगा कि जिस क़त्ल में तमाम क़बीले शामिल होंगे उस का बदला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़बीला न ले सकेगा और न ही रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथी, मानने वाले ले सकेंगे।

तय शुदा प्रोग्राम के मुताबिक़ कुरैश के नौजवानों ने नंगी तलवारों के साथ महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के काशानए नुबुव्वत (मकान) को घेर लिया। और इधर अल्लाह तआला नेअपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दुश्मनाने इस्लाम की साज़िशों से ख़बरदार फ़रमाया और हुक्म दिया कि ऐ प्यारे हबीब ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मक्का से हिजरत फ़रमा कर आप मदीना तशरीफ़ ले जाएं। हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस रात सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ थे। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने बिस्तर पर सोने का हुक्म दिया और फ़रमाया अली! फ़लां, फ़लां की अमानत है उसे देकर तुम भी मदीना आ जाना और ख़ुद सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम काशानए अक़दस (मकान) से बाहर तशरीफ़ लाए। दुश्मनाने इस्लाम घात में थे कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम घर से बाहर निकलेंगे तो हम अपना काम कर लेंगे यानी क़त्ल कर देंगे।

लेकिन अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सूरए यासीन فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ तक तिलावत फ़रमाई और दस्ते मुबारक में मिट्टी ली और उन के सरों पर फेंक दी और उन के बीच से तशरीफ़ ले गए मगर कोई काफ़िर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न देख सका।

एक नुक्ता : आज कल हमारा मुख़ालिफ़ यह कहता है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़िन्दा हैं। हयात में तो हमें नज़र क्यों नहीं आते तो मेरा जवाब यह है कि तुम को तो उस वक़्त भी नज़र न आए जब शबे हिजरत तुम्हारे पास से गुज़रे तो अब चौदह सो बरस के बाद कैसे देखोगे। सरकार का दीदार तो मोमिनों का हिस्सा है।

आँख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे
दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! मेरे सरकार दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम काशानए रहमत (मकान) से निकले

लेकिन कोई काफ़िर आप को न देख सका। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर तशरीफ़ ले गए और उन्हें इत्तिला दी कि अल्लाह तआला ने मक्का से हिजरत करके मदीना जाने का हुक्म फ़रमाया है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की। आक़ा क्या मेरा भी साथ होगा ? आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नेफ़रमाया। हाँ अबू बक्र ! तुम भी हमारे साथ चलोगे। यह पैग़ामे हिजरत सुन कर फ़र्ते महब्बत से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आँखों में आंसू आ गए। कुछ तय्यारी की गई। फिर नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दोनों मक्का से चले, ग़ारे सोर की तरफ़ सफ़र शुरू था। ग़ारे सोर मक्का से तीन मील दूर जुनूब की जानिब एक बलन्द पहाड़ की चोटी पर वाक़ेअ़ थी। ग़ारे सोर पर चढ़ने से पहले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे रहमत में अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम चढ़ाई बहुत लम्बी है रास्ता दुश्वार है। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे कन्धे पर सवार हो जाएं। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बग़ैर तरद्दुद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कन्धे मुबारक पर सवार हो गए।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कन्धे मुबारक पर इस अन्दाज़ से तशरीफ़ फ़रमा हुए कि दोनों पाए अक़दस हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सीने से चिमटे हुए थे गोया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कन्धा रहल था और बोलता कुरआन इस रहल पर रखा हुआ था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने सरकार प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दोनों पाए अक़दस सीने से चिमटाए हुए थेऔर कभी दाहिने पैर को चूमते और कभी बाईं पैर को बोसा देते। आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आश्नाई

हज़रात ! आलमे महब्बत में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कैसी गुज़री। क्या हाल था ? तो जवाब मिलेगा, न पूछो क्या हाल था। नूर की बरसात थी। करम का समां था, इतनी लम्बी चढ़ाई मुकम्मल कैसी हुई कुछ पता न चला। हम अपने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलिही वसल्लम को लेकर ग़ारे सोर तक पहुँच गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की, आक़ा ! आप ज़रा ठेहरें ताकि

ग़ार को साफ़ कर लूँ। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ग़ार के अन्दर तशरीफ़ ले गए और उसे साफ़ किया और जितने सूराख़ थे अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर उन सूराख़ों को बन्द किया। कपड़ा ख़त्म हो गया एक सूराख़ बाक़ी रह गया उस सूराख़ पर अपने पैर का अंगूठा रख दिया, ताकि कोई जानवर सांप वग़ैरह अन्दर न आने पाए। और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में अर्ज़ किया।

ثُمَّ قَالَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ اُدْخُلْ فَدَخَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَوَضَعَ رَاْسَهٗ فِيْ حِجْرِهٖ وَنَامَ.

तर्जमा : फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया कि आप अन्दर तशरीफ़ लाइये तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और अपना सरे मुबारक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गोद में रखा और सो गए। (मिश्कात शरीफ़, स. 556)

सुबह हुई तो लोगों ने क्या देखा कि नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) के बिस्तर से अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) उठ रहे हैं। हैरान व परेशान हो कर पूछा कि ऐ अली ! तुम्हारे आक़ा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) कहाँ गए। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया जाग कर पहरा तुम लोग दे रहे थे और मैं रात भर बड़े आराम से सोता रहा। फिर मुझ से पूछते हो कि आक़ा कहाँ गए। दुश्मनाने इस्लाम परेशान हैं कि कहाँ गए।

इसी असना में ग़ार के दरवाज़े पर मकड़ी ने जाला बना दिया और कबूतर ने अन्डा दिया। इधर कुफ़्फ़ारे मक्का सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तलाश करते हुए ग़ारे सोर के दहाने तक पहुँच गए उन के क़दमों की आहट से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहुत मुज़तरिब और परेशान हुए अर्ज़ किया। आक़ा ! दुश्मन ग़ार के पास खड़े हैं अगर यह लोग अपने क़दमों की तरफ़ देखें तो हम को यह लोग देख लेंगे तो सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَا ظَنُّكَ يَا اَبَابَكْرٍ بِاثْنَيْنِ اللهُ ثَالِثُهُمَا ऐ अबू बक्र ! उन दोनों के ब ारे में तुम्हारा क्या गुमान है जिस का तीसरा साथी अल्लाह है। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स. 672)

दुश्मनाने इस्लाम ग़ार के इर्द गिर्द घूतमे रहे, चक्कर लगाते रहे मगर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न देख सके।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे, रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

जान हैं, जान क्या नज़र आए
क्यों अदू गिर्द ग़ार फिरते हैं

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नबी पर जान कुरबान की

हज़रात ! एक उमर रसीदा सांप हज़ारों बरस से उसी ग़ार के पास रहता था। उस सांप ने सुन रखा था कि उसी ग़ार में इमामुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ब वक़्ते हिजरत क़याम फ़रमाएंगे तो मैं भी सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होंगा। आज वक़्त है ज़ियारत का, मगर दीदार के लिये आने का रास्ता बन्द है, बहुत कोशिश किया कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पेर हटा दें रास्ता मिल जाए और दीदार हो जाए मगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कब एक ज़हरीले सांप को अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) के पास आने की इजाज़त देंगे। आख़िर कार सांप ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को डस लिया और ज़हर सारे बदन में सरायत कर गया और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जानते थे कि पुराना ज़हरीला सांप है उस के ज़हर का असर बहुत ही ख़तरनाक साबित हो सकता है। मगर प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तकलीफ़ न पहुँचने पाए और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आराम में ख़लल न होने पाए इस लिये अपनी जान को जाने ईमान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ातिर ख़तरे में डालना गवारा किया और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह भी जानते थे कि सांप के ज़हर में मारने की सलाहियत है तो हमारे प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला ने शिफ़ा देने और जलाने की ताक़त अता फ़रमाई है।

इसी को तो सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

जिन के तलवों का धोवन है आबे हयात
है वह जाने मसीहा हमारा नबी

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

दुरूद शरीफ़ :

فَلُدِغَ اَبُوْبَکْرٍ فِیْ رِجْلِہٖ مِنَ الْحُجْرِ وَلَمْ یَتَحَرَّكْ مَخَافَۃً اَنْ یَّنْتَبِہَ رَسُوْلُ اللہِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَسَقَطَتْ دُمُوْعُہٗ عَلٰی وَجْہِ رَسُوْلِ اللہِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

तर्जमा : अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पाओं में सूराख़ से डसा गया, आप ने बिल्कुल जुम्बिश न की उस डर से कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जाग जाएंगे, फिर आप के आंसू रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरे पर गिरे। (मिश्कात शरीफ़, स. 556)

यानी सांप ने डसना शुरु किया, आप ने तकलीफ़ को बरदाश्त किया और अपनी जगह से भी हरकत न की ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आराम में ख़लल न पैदा हो जाए। सांप का ज़हर आप के पूरे जिस्म में हुलूल कर चुका था। आप की आँखों से आंसू जारी हो गए, कोई रोता है उस के आंसू ज़मीन पर गिरते हैं, किसी के आंसू दामन में लगते हैं, किसी के अ ांसू आस्तीन पे पड़ते हैं मगर ऐ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप तो बहुत क़ीमती हैं मगर आप के आंसू भी क़ीमती हैं आप की आँखों के आंसू गिरे और चेहरए महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर पड़ गए। तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आँखों को खोला और फ़रमाया: مَالَكَ يَا اَبَابَكْرٍ قَالَ لُدِغْتُ فِدَاكَ اَبِيْ وَاُمِّيْ

ऐ अबू बक्र क्या हुआ ? या रसूलल्लाह ! (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) मेरे मां बाप आप पर कुरबान, मुझे सांप ने डस लिया है। रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना लुआबे दहन लगा दिया ज़हर ख़त्म हो गया। शिफ़ा मिल गई। (ज़ुरक़ानी, जि 1, स. 389, मिश्कात, स. 556)

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जान अपनी दे चुके
और हिफ़्ज़ जान तो अस्ल फ़रूज़े ग़र की है
साबित हुआ कि जुमला फ़राइज़ फ़रोअ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को उस काम पर मामूर किया था कि तुम दिन के वक़्त लोगों की बातें सुनो कि वह हमारे बारे में क्या कहते हैं और जब रात हो जाए हमारे पास आकर उन बातों से मुत्तलअ करो ? आमिर बिन फ़हर को हुक्म दिया कि दिन के वक़्त मैं बकरियाँ चराऊँ और रात के वक़्त बकरियों को ग़ार के पास ले आऊँ जिस से ताज़ा दूध हासिल हो जाए और अपनी बेटी अस्मा को खाना लाने पर मुतअय्यन फ़रमाया कि ख़ामोशी से यह तीनों हज़रात अपनेअपने काम अन्जाम दें।

(इब्ने हश्शाम, जि. 1, स. 172)

चौथे दिन हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने आशिक़, यारे ग़ार के साथ मदीना शरीफ़ की तरफ़ कूच फ़रमाया, इधर दुश्मन तलाश करते रहे, मगर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न पा सके तो मजबूर हो कर यह एलान किया कि जो शख़्स मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को गिरफ़्तार करके लाए उसे सौ ऊंट इनआम दिये जाऐंगे। इनआम के लालच में अरब का बहादुर नो जवान जिस का नाम सुराक़ा बिन मालिक है। हमारे आक़ा

करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तलाश में मदीना की जानिब निकल पड़ा। सुराक़ा बिन मालिक घोड़ा दौड़ाता रहा आख़िर कार सरकार के क़रीब पहुँच चुका था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सुराक़ा को आते हुए देखा तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहीवसल्लम की ख़िदमते आलिया में अर्ज़ किया कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) सुराक़ा आ रहा है तो हमारे सरकार उम्मत के ग़म ख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

يَا اَبَا بَكْرٍ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ऐ अबू बक्र ! ग़म न करो अल्लाह तआला हमारे साथ है। मगर सुराक़ा बिन मालिक दो तीन नेज़ों के बराबर क़रीब आ चुका था। ग़ैब दां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम देख रहे हैं कि सुराक़ा की नियत सही नहीं है। अपनी ख़ादिमा ज़मीन को हुक्म सादिर फ़रमाया : يَا اَرْضُ خُذِيْهِ ऐ ज़मीन ! सुराक़ा को पकड़ ले। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमाने ज़ीशान सुनना था कि घोड़ा टख़्नों तक धंसा हुआ ज़मीन में चला गया।

आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

वह ज़बान जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

जब सुराक़ा बिन मालिक ने यह माजरा देखा कि आए थे गिरफ़्तार करने और ख़ुद ही गिरफ़्तार हो गए तो मुआफ़ी का तलबगार हुआ, मेरे रहीमो करीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुआफ़ फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया يَا اَرْضُ اُتْرُكِيْهِ ऐ ज़मीन सुराक़ा को छोड़ दे। ज़मीन ने सुराक़ा के घोड़े को छोड़ दिया। थोड़ी ही दूर सुराक़ा गया था कि फिर नियत ख़राब हो गई। फिर पलटा और मालिके अर्ज़ो समा के क़रीब हुआ फिर सरकार का हुक्म जारी हुआ يَا اَرْضُ خُذِيْهِ ऐ ज़मीन सुराक़ा को पकड़ ले। अब सुराक़ा बिन मालिक का घोड़ा घुटनों तक धंसा हुआ ज़मीन में चला गया, सुराक़ा परेशान हुआ और शर्मिन्दा भी। आख़िर मुआफ़ी का तालिब हुआ। मेरे आक़ा रहमते तमाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फिर सुराक़ा को मुआफ़ फ़रमा दिया।

इरशाद हुआ يَا اَرْضُ اُتْرُكِيْهِ ऐ ज़मीन सुराक़ा बिन मालिक को छोड़ दे।

इशारा पाना था कि ज़मीन ने सुराक़ा को छोड़ दिया अब सुराक़ा मक्का की तरफ़ चला, कुछ दूर पहुँचा फिर नियत बदली, शैतान ने अपने चाल में लिया कि एक बार और कोशिश करो हो सकता है कामयाब हो जाओ। सरकार को गिरफ़्तार करने की नियत से सुराक़ा बिन मालिक फिर पलटा, क़रीब हुआ, आक़ा का हुक्म फिर जारी हुआ يَا اَرْضُ خُذِيْهِ ऐ ज़मीन सुराक़ा को पकड़ ले। अब की मरतबा सुराक़ा का घोड़ा कमर तक धंसता हुआ ज़मीन में चला गया। आख़िर सुराक़ा बिन मालिक सोचने पर मजबूर हो गया कि एक बार की बात नहीं है बल्कि तीन मरतबा हम ने अपनी आँखों से देख लिया कि हुक्म होता है और ज़मीन अमल करती नज़र आती है तो जिस का हुक्म ज़मीन पर नाफ़िज़ है। सुनी सुनाई नहीं ब़ल्कि देखी हुई बात

है वह यक़ीनन सच्चे हैं और उन का दीन सच्चा है। अब सुराक़ा बिन मालिक का दिल बदल चुका है। नफ़रत की जगह महब्बत और कुफ़्र के अन्धेरों की जगह इस्लाम का उजाला नज़र आने लगा है। घोड़े से नीचे उतरे, अदब से मुआफ़ी के ख़्वास्तगार हुए। हमारे सरकार रहमते परवरदिगार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुआफ़ फ़रमाया। और इरशाद फ़रमाया कि सुराक़ा बिन मालिक के हाथ में, मैं किसरा का कंगन देख रहा हूँ।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 554, 555)

चुनाँचे मुरादे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में किसरा फ़तह हुआ, जहाँ बे शुमार ख़ज़ाने, सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात हासिल हुए और मदीना तैय्यिबा में लाए गए और बैतुल माल में जमा हुए। उन्हीं ख़ज़ानों में ईरान के बादशाह किसरा का कंगन जो सोने का था, वह कंगन भी था। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस सोने के कंगन को हज़रत सुराक़ा बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पहनाया। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक पूरा हुआ।

(ख़साइसे कुबरा, जि. 2, स. 113)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

दूसरा जुमा .... पहला बयान

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी अहादीसे नबविया की रौशनी में

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْکُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِی الْاَرْضِ کَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ص وَلَیُمَکِّنَنَّ لَهُمْ دِیْنَهُمُ الَّذِی ارْتَضٰی لَهُمْ وَلَیُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ط

तर्जमा : अल्लाह ने वादा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा। जैसी उन से पहलों को दी और ज़रूरत उन के लिये जमा देगा उनका वह दीन जो उन के लिये पसन्द फ़रमाया है और ज़रूर उन के अगले ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा। (पारा 18, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और आप के सहाबा मक्का मुकर्रमा में रहे तो हर वक़्त कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन की तरफ़ से अज़ियत और तकलीफ़ का सामना था। हिजरते मदीना के बाद मुशरेकीन के हमलों का सिलसिला जारी रहा। एक सहाबी ने हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कभी हम पर ऐसा वक़्त भी आएगा कि हम अमन व इत्मीनान से रह सकेंगे। हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बहुत जल्द ऐसा वक़्त आने वाला है।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबा से वादा फ़रमाया है कि उन को ज़मीन में हुकूमत अता फ़रमाएगा उन के हाथों से दुनिया में दीने इस्लाम को क़ाइम फ़रमाएगा। कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन का ख़ौफ़ उस वक़्त मुसलमानों को मरऊब न कर सकेगा और मुसलमान अमन व इत्मीनान के साथ रहेंगे।

अल्लाह तआला का यह वादा चारों ख़ुलफ़ा के मुबारक ज़माने में पूरा हुआ। यह आयते करमा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और दूसरे ख़ुलफ़ाए राशेदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन की ख़िलाफ़त के हक़ और सही होने और अल्लाह तआला के नज़दीक पसन्दीदा होने की दलील है। (तफ़सीर मदारिक, ख़ाज़िन, इब्ने कसीर)

आयते करीमा :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗ
اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ
لَوْمَةَ لَآئِمٍ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ 0

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अनक़रीब अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वह अल्लाह के प्यारे और उन का प्यारा, वह लोग मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त, अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाली मलामत का अन्देशा न करेंगे। यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है। (पारा 6, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! मफ़स्सेरीने किराम इस आयते मुक़द्दसा की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि क़ौम से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उनके साथी हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के बाद जब कुछ लोग इस्लाम से फिर गए यानी मुरतद हो गए तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के अस्हाब ही ने मुरतद्दों से जिहाद किया और फिर उन को मुसलमान बनाया। हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल फ़रमाने के बाद जब अरब के लोग दीन से फिर गए यानी मुरतद हो गए तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन से क़िताल फ़रमाया तो उस ज़माने में हम लोग यानी सहाबा आपस में कहा करते थे कि यह आयते करीमा (जो ऊपर ज़िक्र की गई) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और आप के अस्हाब ही की शान में नाज़िल हुई है। इसी लिये हज़रत इब्ने अबी हातिम, इब्ने क़तीबा और दीगर मुफ़स्सेरीन फ़रमाते हैं कि यह आयते करीमा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़लीफ़ए बरहक़ होने पर एक बड़ी दलील है और इस आयत में यह फ़रमाया गया है कि वह अल्लाह तआला के महबूब होंगे और अल्लाह तआला उन का महबूब है तो साबित हुआ कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आप के तमाम साथी अल्लाह तआला के महबूब हैं। (तफ़सीरे मदारिक, ख़ाज़िन, मज़हरी, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 61, नूरुल अबसार, स. 185)

आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

हदीस शरीफ़ : हज़रत जबीर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में एक औरत किसी काम केलिये हाज़िर हुई, सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस औरत से फ़रमाया, फिर किसी वक़्त आना। उस औरत ने अर्ज़ किया अगर मैं आऊँ और आप को न पाऊँ यानी आप विसाल फ़रमा जाएं तो फिर मैं क्या करूँ। प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ ख़ातून अगर तू मुझे न पाए तो अबू बक्र सिद्दीक़ के पास चली जाना। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1 मुस्लिम शरीफ़, जि. 2)

यानी अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा मेरे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस इरशादे गिरामी में वाज़ेह इशारा है कि मेरे बाद अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा होंगे। हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं। यह हदीस दलील है हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़लीफ़ए बरहक़ होने पर। (अल इस्तीआब, जि. 2, स. 249)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اِقْتَدُوْا بِالَّذِیْنَ مِنْ بَعْدِیْ اَبِیْ بَکْرٍ وَّ عُمَرَ

यानी उन लोगों क़ी पैरवी करो जो मेरे बाद हैं यानी अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। (तिर्मिज़ी, अल मुस्तदरिक, इमाम हाकिम, जि. 3, स. 75)

इमाम हाकिम नीशापूरी और हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पूछा गया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप के बाद सदक़ा किस के हवाले करें? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, अबू बक्र को देना

(फ़तहुल बारी, जि. 7, स. 24, अल मुस्तदरिक, जि. 3, स. 77)

रसूलुल्लाह के विसाल के बाद अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुए

नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़लीफ़ा, जा नशीन कौन बनेगा। हदीस की मशहूर किताब बैहक़ी में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि ख़िलाफ़त के मुआमले को हल करने के लिये सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान पर जमा हुए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा केअलावा बहुत से सहाबा मौजूद थे। सब से पहले एक अन्सारी सहाबी खड़े हुए और उन्हों ने लोगों से ख़िताब किया कि ऐ मुहाजिरीन!

आप लोगों को मालूम है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम किसी शख़्स को कहीं का हाकिम मुक़र्रर फ़रमाते थे तो अन्सार में से भी एक शख़्स को उस के साथ कर दिया करते थे। लिहाज़ा इसी तरह हम चाहते हैं कि ख़िलाफ़त के मुआमले में भी एक शख़्स मुहाजेरीन में से हो और एक अनसारी में से हो। फिर एक दूसरे अन्सारी सहाबी खड़े हुए और उन्होंने भी इसी क़िस्म की तक़रीर की। उन हज़रात की तक़रीरों के बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और फ़रमाया, क्या आप लोगों को मालूम नहीं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुहाजिरीन में से थे। लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़लीफ़ा और जा नशीन भी मुहाजिरीन ही में से होगा और जिस तरह हम लोग पहले आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुआविन व मददगार रहे। अब इसी तरह ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मददगार रहेंगे। यह फ़रमाने के बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ा और कहा आप हमारे हाकिम और ख़लीफ़ा हैं और फिर हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप से बैअत की। इस के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बैअत की और फिर तमाम अन्सार व मुहाजिरीन ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत की।

इस के बाद मस्जिदे नबवी शरीफ़ में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और मजमे पर एक निगाह डाली तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूद नहीं थे। फ़रमाया उन को बुलाया जाए। जब हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आ गए तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फूफी के बेटे हैं और हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़ास सहाबी हैं। मुझे उम्मीद है कि आप मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ नहीं पैदा होने देंगे, यह सुन कर हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ! ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप फ़िक्र न करें यह कहने के बाद खड़े हुए और आप ने भी बैअत कर ली। फिर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मजमे को देखा तो उस में हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी मौजूद नहीं थे। फ़रमाया हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाया जाए जब हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ लाए तो आप ने फ़रमाया ऐ अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा ज़ाद भाई और दामाद हैं। मुझे उम्मीद है कि आप इस्लाम को कमज़ोर होने से बचाने में मेरी मदद करेंगे। हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा। ऐ ख़लीफ़ा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप कुछ भी फ़िक्र न करें। यह कह कर उठे और बैअत कर ली। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : قَدَّمَكَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَنِ الَّذِيْ يُؤَخِّرُكَ

यानी हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आप को आगे बढ़ा दिया है तो फिर कौनआप को पीछे कर सकता है। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 718)

हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मक़सद था कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ का इमाम बना दिया है तो अब हमारे ख़लीफ़ा भी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं।

दुरूद शरीफ़ :

इमामत का वाक़िआ : सन् 10 हि. में हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आख़री हज अदा फ़रमाया उस मौक़े पर भी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ थे। अरफ़ात के मैदान में हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक शानदान ख़ुतबा दिया जो इस्लाम के जुमला अख़्लाक़ी व रूहानी निज़ाम का मजमुआ था। आख़िर में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाया। क्या मैं ने आप लोगों तक अल्लाह तआला के त माम अहकाम पहुँचा दिये हैं ? जुमला सहाबा ने अर्ज़ किया कि बेशक आप ने सारे अहकाम पहुँचा दिये हैं इसी दिन यह आयते करीमा नाज़िल हुई। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ط

तर्जमा : आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।

(पारा 6, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो तमाम सहाबा बड़े ख़ुश हुए कि हमारा दीन मुकम्मल हो चुका है और अल्लाह तआला ने हम पर नेअ़मत को पूरी फ़रमा दी और हमारे लिये दीने इस्ला पसन्द फ़रमाया सब ख़ुश थे मगर ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोने लगे। हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) क्यों रो रहे हो। अर्ज़ किया आक़ा ! आप दीन मुकम्मल करनेऔर नेअमतों को पूरी करने के लिये तशरीफ़ लाए थे। अब दीन मुकम्मल हो गया और नेअ़मत पूरी कर दी गई यानी इस का मतलब है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अब हमारे दरमियान नहीं रहेंगे। इसी लिये मैं रो रहा हूँ कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हम से जुदा हो जाएंगे।

आयते मुबारका का मतलब किसी ने नहीं समझा मगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु समझ गए।

इसी तरह एक दिन ज़माना अलालत (बीमारी) में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया।

अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को इख़्तियार दिया है कि वह दुनिया को पसन्द करे या आख़िरत को लेकिन उस ने आख़िरत में अल्लाह तआला के कुर्ब को पसन्द कर लिया।

इस फ़रमाने ज़ीशान को सुनते ही हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु समझ गए कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुद अपना ज़िक्र फ़रमा रहे हैं। ज़ारो क़तार रोने लगे यहाँ तक कि हिचकी बन्द हो गई और अर्ज़ किया

या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप पर हम और हमारी औलाद कुरबान हों, हम आप के बाद ज़िन्दा रह सकेंगे। यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस फ़रमान से समझ गए कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हम से जुदा हो रहे हैं।

हदीस शरीफ़ : इब्ने ज़ुमआ की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब अलील हुए तो अय्यामे अलालत (बीमारी के दिनों) में फ़रमाया :

مُرُوْا اَبَابَکْرٍ فَلْیُصَلِّ بِالنَّاسِ

अबू बक्र को हुक्म दो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 94, तबक़ात इब्ने सअद, जि. 3)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया मेरे बाप अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रक़ीकुल क़ल्ब (नर्म दिल) इन्सान हैं जब वह मुसल्ला ख़ाली देखेंगे और आप को न पाएंगे तो बरदाश्त नहीं कर सकते, रोने लगेंगे तो नमाज़ क्या पढ़ाएंगे इस लिये आप हज़रत उमर को हुक्म दें कि वह नमाज़ पढ़ाएं। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूद न थे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे बढ़े ताकि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَا. لَا. لَا. یَاْبَی اللّٰہُ وَالْمُسْلِمُوْنَ اِلَّا اَبَابَکْرٍ یُصَلِّی بِالنَّاسِ اَبُوْبَکْرٍ

यानी नहीं नहीं नहीं अल्लाह तआला और तमाम मुसलमान अबू बक्र ही से राज़ी हैं वही लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 48)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल वाले दिन फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। शदीद बीमारी और नक़ाहत (कमज़ोरी) के सबब तीन दिन हो चुके थे कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सहाबा के पास तशरीफ नहीं लाए थे कि अचानक हुजरा शरीफ़ का दरवाज़ा खुला और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पर्दा उठाया, सरकार आला हज़रत आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उठा दो परदा दिखा दो चेहरा कि नूर बारी हिजाब में है
ज़माना तारीक हो रहा है कि महर कब से निक़ाब में है

सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने पर्दा उठाया نظر الینا فتبسم हमारी तरफ़ देखा और मुस्काराए उस वक़्त आप का रुख़े अनवर खुले कुरआन के वर्क़ की तरह लगता था। आप के चेहरे से ज़्यादा ख़ूबसूरत हम ने किसी का चेहरा नहीं देखा। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने अपने सहाबा को नमाज़ की हालत में देखा और मुस्कुराए तो सहाबा भी हालते नमाज़ में अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम को देखने लगे। ज़ियारत की अजीब व ग़रीब हालत थी और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुसल्लए इमामत से पीछे हट गए कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम नमाज़ के लिये तशरीफ़ ला रहे हैं अजीब समां था क़िब्ला से चेहरा हटा कर, क़िब्ला के क़िब्ला प्यारे नबी को देखने लगे। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम नाराज़ न हुए, डांटा नहीं, फटकारा नहीं कि ऐ सहाबा नमाज़ की हालत में हो और मुझे देख रहे हो। बल्कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने उंगलियों से इशारा किया और फ़रमाया اتموا صلوتکم यानी तुम अपनी नमाज़ पूरी कर लो। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने पर्दा गिरा दिया और हुजरे में तशरीफ़ ले गए और सहाबा ने अपनी नमाज़ पूरी की।

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 1 ,स. 93)

इसी दिन सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने विसाल फ़रमाया।

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 179)

(1) तौज़ीह : हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने अपने सामने तमाम सहाबा की मौजूदगी में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कोमुसल्ले पर खड़ा कर के गोया यह ऐलान फ़रमा दिया कि मेरे बाद अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ए बरहक़ हैं।

(2) तौज़ीह : मेअराज की शब मस्जिदे अक़सा में तमाम अम्बियाए किराम की सफ़ में हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम सब से अफ़ज़ल थे इस लिये अल्लाह तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम को तमाम नबियों का इमाम बनाया और तमाम सहाबा की सफ़ में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अफ़ज़ल थे। इस लिये हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इमाम बनाया। क्यों कि इमाम अफ़ज़ल को बनाया जाता है।

दुरूद शरीफ़ :

(3) तौज़ीह : विसाले महबूब और अबू बक्र सिद्दीक़ : 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ बरोज़े दो शम्बा सन् 11 हि. को हमारे सरकार अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हुआ। उस वक़्त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक़ामे सख़ी में थे ख़बर पाते ही हाज़िर हुए और हुजरए आएशा सिद्दीक़ा में दाख़िल हुए तो देखा कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक मुनक़्क़श यमनी चादर ओढ़े आराम फ़रमा हैं। रुख़े अनवर से चादर को हटाया और झुक कर पेशानी मुबारक का बोसा लिया फिर अर्ज़ किया।

मेरे मां बाप आप पर फ़िदा हों, आप ज़िनदगी में भी पाक और साफ़ थे और मौत के बाद भी पाक व साफ़ हैं। जिस के हाथ में मेरी जान है उस की क़सम! अल्लाह आप को हर गिज़ दो मोतें न देगा वह मौत जो अल्लाह तआला ने आप के लिये मुक़द्दर की थी वह तो आप को आ ही गई।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाए, क्या देखा कि लोग आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जुदाई के सदमे से निढाल हैं हर तरफ़ हुज़्नो मलाल का आलम है और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दीवानगी, वारुफ़तगी और कर्बो बे चैनी का यह आलम था कि नंगी तलवार लिये हुए ऐलान कर रहे थे कि जो शख़्स यह कहेगा कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वफ़ात हो गई उस को मैं क़त्ल करूँगा। ऐसे नाज़ुक वक़्त में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात थी जो इस्लाम के लिये सिपर बन कर सामने आई। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक जामेअ और मुअस्सर तक़रीर फ़रमाई।

اَلَا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ ٥

यानी ऐ लोगो! जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इबादत करता था तो बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इन्तिक़ाल कर गए और जो शख़्स अल्लाह तआला की इबादत करता था तो अल्लाह तआला ज़िन्दा है उसे मौत नहीं।

फिर यह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई।

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ
عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْــًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ٥

तर्जमा : और मुहम्मद तो एक रसूल हैं और उन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाओं फिर जाओगे और जो उलटे पाओं फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़सान न करेगा और अनक़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा

(पारा 4, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़बान से यह आयत सुन कर लोगों के ख़यालात बदल गए और बे क़रारी जाती रही आयते करीमा के हक़ीक़ी मफ़हूम से

लोग वाक़िफ़ हुए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि ख़ुदाए तआला की क़सम ! यूँ लगा कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तिलावत से पहले लोग जानते ही न थे कि यह आयते करीमा नाज़िल हुई है। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 419)

हज़रात ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बा असर तक़रीर से पता चलता है कि आप को अपनी ज़ात पर किस क़दर क़ाबू था और उन को मसाइब व तकालीफ़ का मुक़ाबला करने की कितनी ज़बरदस्त कुव्वत हासिल थी। अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ और महबूब ज़ात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के वक़्त आप का क़दम न लड़ खड़ाया बल्कि आप साबित क़दम रहे। यह वक़्त मुसलमानों के लिये क़ियामत से कम न था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिर्फ़ अपने आपको ही न संभाला बल्कि तमाम सहाबा किराम को हौसला और हिम्मत अता की और जब भी इस्लाम पर सख़्त वक़्त आया तो आप की ज़ात इस्लाम के लिये सहारा बनी।

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

(4) तौज़ीह : ऐ ईमान वालो ! यह मामूली बात नहीं है। ईमान का मुआमला है। आज हमारा मुख़ालिफ़ वहाबी, देवबन्दी कहता है और लिख कर छापता भी है कि नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़याल आने से नमाज़ बातिल हो जाती है। यानी टूट जाती है।

मुलाहज़ा फ़रमाइये : वहाबियों, देवबन्दियों के इमाम मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं कि नमाज़ में हुज़ूरे अकरम का ख़याल लाना, अपने गधे और बेल के ख़याल लाने से बदतर है। यानी नमाज़े बातिल हो जाती है। (सिराते मुस्तक़ीम, स. 86)

हज़रात ! कैसी खुली अदावत और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से दुश्मनी है। अब भी न पहचानोगे तो कब पहचानोगे। उनकी नमाज़, उन का रोज़ा, उन की दाढ़ी, उन की ज़कात, उन का हज न देखिये बल्कि, उन का अक़ीदा जो उन की किताबों में है उसे देखिये और बग़ौर पढ़िये और उन से अपने ईमान व अक़ीदा को बचाइये

हज़रात ! सहाबए किराम का अक़ीदा मुलाहज़ा कीजिये कि

ऐन हालते नमाज़ में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और तमाम सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने सरकार मक्की व मदनी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम की और ऐन हालते नमाज़ में अपने चेहरों को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तरफ़ फेर लिया और दीदार कर रहे थे और कमाले ईमान है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुसल्ला छोड़ दिया और पीछे आ गए और अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुदा भाती सूरत तकने लगे।

वह हुस्न है ऐ सय्यदे अबरार तुम्हारा
अल्लाह भी है तालिबे दीदार तुम्हारा
क्यों दीद के मुश्ताक़ न हों हज़रते यूसुफ़
अल्लाह का दीदार है दीदार तुम्हारा

हज़रात ! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जानिब चेहरा करना, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अदब व ताज़ीम में इमामत का मुसल्ला छोड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तकना। इतना सब कुछ हुआ और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का खयाल नमाज़ में न आए क्या मुमकिन है ? हरगिज़ मुमकिन नहीं। बिला शक व शुबा यक़ीनन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़याल नमाज़ में आया और यक़ीनन आया तो अब ? हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन की नमाज़ हुई या नहीं।

बद अक़ीदा वहाबी जवाब दे लेकिन क़ियामत तो आ सकती है मगर बद अक़ीदे जवाब नहीं दे सकते।

इस लिये वहाबियों को तौबह कर के महबूबे ख़ुदा, नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में एक मुजरिम की हैसियत से अर्ज़ करना चाहिये कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम !

मैं मुजरिम हूँ आक़ा मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले

और मरने से पहले तौबह कर लेना चाहिये वर्ना मौत के बाद कुछ हासिल न होगा।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से
फिर न मांगेगे क़ियामत में अगर मान गया

खुतबए ख़िलाफ़त : जब सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने बिल इत्तिफ़ाक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लिया और सारे मुसलमानों ने आप से बैअत कर ली। तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खड़े हो कर तमाम सहाबा के बीच ख़ुतबा दिया। पहले अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की। उस के बाद फ़रमाया ऐ लोगो ! अल्लाह तआला की क़सम! मुझे हर गिज़ अमीर बनने की ख़्वाहिश नहीं थी। मैं तुम्हारा हाकिम और ख़लीफ़ा बनाया गया हूँ। अगर मैं नेक काम करूँ तो तुम मेरी मदद करो और अगर मैं बुरा काम करूँ तो तुम सब मुझे मना करना और रोकना। सच अमानत है और झूट ख़यानत है। तुम्हारा कमज़ोर शख़्स मेरे नज़दीक क़वी है। जब तक उस का हक़ उस को न दिला दूँ औरतुम्हारा क़वी

आदमी मेरे नज़दीक कमज़ोर है जब तक उस के ज़िम्मे जो हक़ है हक़ वालों को न दिला दूँ और जो क़ौम अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद तर्क कर देती है उस पर अल्लाह तआला ज़िल्लत व ख़्वारी मुसल्लत फ़रमा देता है और जब किसी क़ौम में बे हयाई फेल जाती है तो अल्लाह तआला उस पर बलाएं और अज़ाब नाज़िल फ़रमा देता है। तुम मेरी इताअत करो जब तक मैं अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इताअत करूँ और जब मैं अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ना फ़रमानी करने लगूँ तो तुम मेरी इताअत तर्क कर देना। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 52)

लश्करे उसामा की रवांगी : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मस्नदे ख़िलाफ़त पर जलवा गर हुए और मन्सबे ख़िलाफ़त संभाला तो बड़े बड़े मुश्किल मसाइल सामने थे, फ़ौरन मुद्दयाने मुरतद्दीन और मुनकेरीने ज़कात से जंग के लिये तैयार हो गए मुनकेरीने ज़कात मदीना मुनव्वरा पर हमला करने के लिये गिर्दोनवाह (आस पास) जमा होने लगे, मुसलमानोंकी मां हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं अगर यह मुश्किलात पहाड़ पर डाल दिये जाते तो मज़बूत पहाड़ भी रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर जाते लेकिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुस्ने तदबीर और सब्रो इस्तिक़लाल से हर मुश्किल का मुक़ाबला किया और उन का हल तलाश किया। लश्करे उसामा जिस को आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने अहदे मुबारक के आख़िर में शाम की तरफ़ रवाना फ़रमाया था। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन की उम्र सतरह साल की थी और ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस लश्कर का अमीर बनाया था अभी यह लश्कर थोड़ी ही दूर पहुँचा और मदीना मुनव्वरा के पास ज़ी ख़शब ही में था कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हो गया। विसाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़बर सुन कर अतराफ़े मदीना के अरब इस्लाम से फिर गए और मुरतद हो गए। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम जमा हुए और ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर ज़ोर देकर कहने लगे कि आप लश्करे उसामा को वापस बुला लें इस वक़्त लश्कर उसामा को रवाना करना मसलेहत के ख़िलाफ़ है। मदीना मुनव्वराके क़ुर्ब व जवार के बहुत से अरब क़बीले कसीर तादाद में मुरतद हो गए हैं और लश्करे उसामा मुल्के शाम भेज दिया जाए ?

यह वक़्त इस्लाम के लिये नाज़ुक तरीन था। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल से कुफ़्फ़ार व मुरतद्दीन के हौसले बढ़ गए थेऔर उन की मुर्दा हिम्मतों में जान पड़ गई थी। मुनाफ़िक़ीन का ख़याल था कि अब खेल खेलने का वक़्त आ गया है। कमज़ोर ईमान वाले दीन से फिर गए थे मुसलमान बहुत बड़े सदमे से निढाल थे। दिल

टूट रहे थे बे सरो सामानी का आलम था जिस की मिसाल दुनिया की आँखों ने कभी नहीं देखी थी। उन के दिल घायल हैं और आँखों से अश्क जारी हैं। खाना, पीना बुरा मालूम होता है ज़िन्दगी एक ना गवार मुसीबत नज़र आती है। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ा को नज़्म संभालना। दीन को संभालना, मुसलमानों क़ी हिफ़ाज़त करना, इरतिदाद के सैलाब को रोकना कितना दुश्वार था, आसान न था। इस के बावजूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रवाना किये हुए लश्कर को वापस बुलाना और मर्ज़ी मुबारक के ख़िलाफ़ जुरअत करना। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सरापा सिदक़ का राब्तए नियाज़ मन्दी गवारा न करता था और उस को वह हर मुश्किल से सख़्त तर समझते थे। उस पर सहाबए किराम का इसरार कि लश्करे उसामा को वापस बुला लिया जाए और ख़ुद हज़रत उसामा का लौट कर आना और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ करना कि अरब के क़बीले आमादए जंग और दरपए तख़रीबे इस्लाम हैं। और कार आज़मा बहादुर मेरे लश्कर में हैं। उन्हें इस वक़्त रूम भेजना और मुल्क को ऐसे दिलावर मरदाने जंग से ख़ाली कर देना किसी तरह मुनासिब नहीं मालूम होता है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअला अन्हु के लिये और मुश्किलात थीं, सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने एतिराफ़ किया है कि उस वक़्त अगर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जगह कोई दूसरा होता तो हर गिज़ मुस्तक़िल न रहता और मसाइब व अफ़कार का यह हुजूम और अपनी जमाअत की परेशान हालत मबहूत कर डालती मगर अल्लाहु अकबर! हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के पाए सिबात को ज़र्रा बराबर लग़ज़िश न हुई और उन के इस्तिक़लाल में एक शम्मा फ़र्क़ न आया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अगर परिन्दे मेरी बोटियाँ नोच खाएं तो मुझे यह गवारा है मगर आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मर्ज़ी मुबारक में अपनी राए को दख़्ल देना और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रवाना किये हुए लश्कर को वापस बुलाना गवारा नहीं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 56)

यह मुझ से नहीं हो सकता। चुनाँचे ऐसी हालत में आप ने लश्करे उसामा को रवाना फ़रमा दिया। उस से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की हैरत अंगेज़ शुजाअत और लियाक़त और कमाले दिलेरी व जवां मरदी के अलावा तवक्कुले सादिक़ और महब्बते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का भी पता चलता है और दुश्मन भी इन्साफ़न यह कहने पर मजबूर नज़र आता है कि अल्लाह तआला ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद ख़िलाफ़त व जा नशीनी की आला क़ाबलियत व अहलियत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अता फ़रमाई थी।

लश्करे उसामा रवाना हुआ और जो क़बीले मुरतद होने के लिये तय्यार थे और यह समझ गए थे कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद इस्लाम का

शीराज़ा बिखर जाएगा और इस्लाम की सतवत व शौकत बाक़ी न रहेगी उन्होंने देखा कि लश्करे इस्लाम रोमियों की सर कोबी के लिये रवाना हो गया। उसी वक़्त उन के ख़याली मन्सूबे ग़लत हो गए और उन्होंने समझ लिया कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने अहदे मुबारक में इस्लाम के लिये ऐसा ज़बरदस्त नज़्म फ़रमा दिया है जिस से मुसलमानों का शीराज़ा दिरहम बरहम नहीं हो सकता और वह ऐसे ग़म व अन्दोह के वक़्त में भी इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअत और उस के सामने अक़वामे आलम को सरनिगूं करने के लिये एक मशहूर व ज़बरदस्त क़ौम पर फ़ौज कशी करते हैं। लिहाज़ा यह ख़्याल ग़लत है कि इस्लाम मिट जाएगा और उस में क़ुव्वत बाक़ी न रहेगी बल्कि अभी सब्र के साथ देखना चाहिये कि यह लश्करे उसामा किस शान से वापस होता है। फ़ज़्ले इलाही और इआनते ख़ुदावन्दी से उसामा का लश्कर ज़फ़र पैकर फ़तह याब हुआ। रोमियों को हज़ीमतद शिकस्त हुई। जब यह फ़ातहे लश्कर वापस आया उस वक़्त वह तमाम क़बीले जो मुरतद होने का इरादा कर चुके थे उस नापाक क़स्द से बाज़ आए और इस्लाम पर सिद्क़ दिल के साथ क़ाइम हो गए। बड़े बड़े जलीलुल क़द्र सहाबा जो उस लश्कर की रवांगी के वक़्त निहायत शिद्दत से इख़्तिलाफ़ फ़रमा रहे थे अपनी फ़िक्र की ख़ता और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राए मुबारक के साइब और उन के इल्म की वुसअत के मोअतरिफ़ हो गए। (सवानेह करबला)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। अगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा मुक़र्रर न हुए होते तो रूए ज़मीन पर अल्लाह तआला की इबादत बाक़ी न रह जाती। इसी तरह आप ने क़सम के साथ तीन बार फ़रमाया। लोगों ने आप से अर्ज़ किया ऐ अबू हुरैरह! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? आप ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लश्कर का अमीर मुक़र्रर करके शाम की तरफ़ रवाना फ़रमाया और वह अभी ज़ी ख़शब मक़ाम पर थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हो गया। उस ख़बर को सुन कर अतराफ़े मदीना के अरब मुरतद हो गए। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस बात पर ज़ोर दिया कि उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लश्कर को वापस बुला लें तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

وَالَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَوْ جَرَّتِ الْکِلَابُ بِاَرْجُلِ اَزْوَاجِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ

مَا رَدَدْتُ جَیْشًا وَجَّهَهٗ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ۝

यानी क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई माबूद नहीं अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व वसल्लम की पाक बीवियों के पाओं कुत्ते पकड़ कर घसीटें तब भी मैं उस लश्कर को वापस नहीं बुला सकता जिस को अल्लाह तआला के रसूल

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रवाना फ़रमाया है। और न मैं उस परचम को सर निगूं होने दूँगा जिस को मेरे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने लहराया है। यह फ़रमा कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लश्करे उसामा को रवाना फ़रमाया। लश्कर के सरदार हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घोड़े पर सवार थे और मुसलमानों के अमीर व ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदल साथ चल रहे थे। अमीरे लश्कर हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप सवार हो जाएं या मैं सवारी से उतर जाऊँ। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया न तुम उतर सकते हो और न मैं सवार होउँगा, मैं इस वक़्त पैदल इस लिये चल रहा हूँ ताकि अल्लाह तआला की राह में कुछ देर पैदल चल कर अपने क़दम ख़ाक आलूद कर लूँ। क्यों कि मुजाहिद के हर क़दम के बदले में सात सो नेकियाँ लिखी जाती हैं। सात सो दरजे बढ़ाए जाते हैं और सात सो ख़ताएं मुआफ़ की जाती हैं। (तबरी, जि. 2, स. 463)

असनाए राह में हज़रत उसामा से कहा। अच्छा होता अगर तुम उमर बिन ख़त्ताब को मेरे पास छोड़ जाते हज़रत उसामा ने इजाज़त दी।

ख़लीफ़ा अव्वल का ख़िताब लश्करे उसामा से : ऐ लश्कर के जवानो ! इन बातों को याद रखना। ख़यानत न करना। निफ़ाक़ न बरतना। बद अहदी न करना। छोटे बच्चों, बूढ़ों और औरतों को क़त्ल न करना। किसी खजूर के दरख़्त को न काटना, न जलाना। फल दार दरख़्त को न काटना। बे ज़रूरत गाय, बकरी, ऊंट को ज़िबह न करना। इस के अलावा भी नसीहत फ़रमाई। (तबरी, जि. 1, स 463)

और उसामा को आगे बढ़ने का हुक्म दिया और रवाना हुए तो मुरतद क़बीले दहशत ज़दा हो गए। यहाँ तक कि लश्करे उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रूम की हुकूमत के हद में दाख़िल हो गए तरफ़ैन में जंग हुई (काफ़िरों को शिकस्त का सामना करना पड़ा और अल्लाह तआला ने अपने प्यारे हबीब, अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल मुसलमानों को कामयाबी से सर फ़राज़ फ़रमाया) मुसलमानों का लश्कर फ़तह याब होकर वापस हुआ तो इस तरह इस्लाम का बोलबाला हो गया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 51)

ऐ ईमान वालो ! हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इश्क़ और महब्बत देखना है तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात में देखो ! कि तमाम सहाबा बज़िद हैं, बार बार इसरार कर रहे हैं कि लश्कर उसामा बुला लिया जाए। अभी मुश्किल वक़्त है मदीना मुनव्वरा में ज़रूरत है लेकिन ग़ैब दां आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रवाना फ़रमाया था तो आशिक़े सादिक़ इस लश्कर को वापस कैसे बुला सकता है। आक़ाए कायनात के बलन्द किये हुए झन्डे को सर निगूं होता हुआ कैसे देख सकता है। यह महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम और निस्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताक़त व कुव्वत थी जिस ने इस्लाम का बोल बाला कर दिया।

कुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

मानेईने ज़कात से जिहाद : हमारे सरदार दो आलम के मालिको मुख़्तार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पर्दा फ़रमाना था कि कुफ्र व इरतिदाद ने ख़ूब खेल खेला। कुछ लोग वह थे जो मुकम्मल इस्लाम के मुनकिर हो कर काफ़िर व मुरतद हो गए और कुछ लोग ऐसे थे जो इस्लाम के कुछ अहकाम पर अमल करते थे और कुछ अहकाम के मुनकिर हो गए और कहने लगे कि हम ज़कात नहीं देंगे। जब कि ज़कात की फ़रज़ियत नस्से क़तई से साबित है। इस लिये ज़कात का मुनकिर भी मुरतद है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़कात के मुनकिरीन से जिहाद का इरादा फ़रमाया तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और दूसरे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने उन से अर्ज़ किया कि इस मुश्किल वक़्त में मुनकेरीने ज़कात से जंग करना मसलेहत के ख़िलाफ़ है तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह तआला की क़सम ! जो शख़्स हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़माने में एक रस्सी या बकरी का एक बच्चा भी, ज़कात दिया करता था और अब देने से इनकार करेगा तो मैं उन से जंग करूँगा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 51)

हज़रात ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सहाबा किराम को साथ लया और मुनकेरीने ज़कात की तरफ़ कूच किया मगर मुनकेरीने ज़कात मैदान छोड़ कर भागने लगे तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अमीरे लश्कर बना कर आप वापस तशरीफ़ ले आए। उन्होंने आराब को जगह जगह घेरा और अल्लाह तआला ने उन्हें हर जगह फ़तह व नुसरत अता फ़रमाई। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ख़ास कर , हज़रत उमर फ़ारुक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप के फ़ैसले का सही होने का एतिराफ़ किया और अर्ज़ करने लगे कि ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अहु का सीना खोल दिया है और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जो किया वह हक़ है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस वक़्त ज़कात के मुनकिरों से जंग करके उन को शिकस्त दे कर उन की कमर तोड़ दी। अगर उस वक़्त उन को छूट दे दी जाती तो फिर कुछ लोग नमाज़ के मुनकिर पैदा हो जाते और बाज़ लोग रोज़े से भी इनकारी हो जाते तो इस्लाम में रह किया जाता इस तरह इस्लाम फ़ना हो जाता और मिट जाता। मगर लाखों करोड़ों सलामो रहमत हो प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के

अस्हाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन पर जिन की बे पनाह कोशिशों और इख़्लास से लबरेज़ कुरबानियों ने इस्लाम की कश्ती को डूबने से बचा लिया।

इस्लाम तेरी नब्ज़ न डूबेगी हश्र तक
तेरी रगों में ख़ून है रवां चार यार का

एक झूट बात : आज कल कुछ लोग बहुत ज़ोर लगा कर शिद्दद से कहते हैं कि मक्का, मदीना, अरब में काफ़िर नहीं होंगे तो उन से पूछा जाए कि ज़कात का इनकार करने वाले, इस्लाम से फिर कर काफ़िर मुरतद होने वाले, जिन से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जिहाद किया। जंग की, क्या वह लोग देवबन्द या भोपाल या सहारनपूर या हिन्दूस्तान के रहने वाले थे बल्कि सारे मुनकेरीने ज़कात और काफ़िर व मुरतद होने वाले मदीना मुनव्वरा या मक्का मुकर्रमा बहर हाल अरब के रहने वाले थे तो यह कहना कि अरब में काफ़िर नहीं होंगे। कितनी झूट बात है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

हज़रत सिद्दीक़े अकबर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

विसाल और करामात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ج

तर्जमा : जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बे शक अल्लाह हमारे साथ है।

(पारा 10, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल के अस्बाब मुख़्तलिफ़ बयान किये गए हैं लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाले मुबारक की अस्ल वजह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल शरीफ़ है। बस महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जुदाई के ग़म में बीमार हो गए। और उसी बीमारी में विसाल फ़रमाया। (शवाहिदुन्नुबुव्वत, स. 262)

आप की वसियत : आप ने अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया : मेरे पास बैतुल माल की एक ऊंटनी और एक प्याला है उन दोनों चीज़ों को हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास बैतुल माल में जमा करा देना और जो वज़ीफ़ा का रुपया मैं बैतुल माल से लेता था। एक ज़मीन है मेरी उसे बेच कर, बैतुल माल से लिया हुआ रुपया सब लौटा दिया जाए। आप के हुक्म के मुताबिक़ ऊँटनी। प्याला और वज़ीफ़े की रक़म बैतुल में माल जमा कर दी गई तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रो पड़े और कहा अल्लाह तआला अबू बक्र रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु पर रहम फ़रमाए और वह बाद वाले ख़लीफ़ा को सख़्त मशक़्क़त में डाल गए।
(शवाहिदुन्नुबुव्वत, स. 262)

दीदारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :रात के आख़री हिस्से में महवे ख़्वाब था कि मेरे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदारे पुर अनवार से मुशर्रफ़ हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ से सलाम फ़रमाया और मुसाफ़हा से मुशर्रफ़ फ़रमाया और अपना नूरानी हाथ मेरे सीने पर रखा जिस से मेरा इज़्तिराब दूर हो गया।

फिर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमें तुम से मिलने का शौक़ बहुत है क्या अभी वक़्त नहीं आया तुम मेरे पास आ जाओ। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ख़्वाब में बहुत रोया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रोने की आवाज़ सुन कर घर वाले भी रोने लगे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआलाअन्हु ने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में अर्ज़ किया कि आप जिसे चाहें ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दें तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दिया है जो सादिक़ व क़वी और ज़मीन व आसमान में नेक हैं और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे सलाम किया। फिर हज़रत जिब्रईल और मीकाई अलैहिस्सलाम ने सलाम किया और कहा अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, आसमानों में सिद्दीक़, ज़मीनों में सिद्दीक़, इन्सानों में सिद्दीक़, फ़रिश्तों में सिद्दीक़ हैं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले गए और मैं बेदार हो गया। मेरे रुख़सार पर आंसू बह रहे थे और मेरे घर वाले मेरे सरहाने खड़े हो कर रो रहे थे।
(शवाहिदुन्नुबुव्वत, स. 262)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और दूसरे सहाबए किराम को बुलाकर मशवरा फ़रमाया और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया :

विसाले मुबारक : महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी मुकम्मल ज़िन्दगी इस्लाम की ख़िदमत और महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में बसर की और जब ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियाँ आप को सुपुर्द की गईं तो उन को भी इस तरह निभाया कि आने वाली नसलों के लिये मीनारए नूर साबित हुईं।

वाक़दी और हाकिम में है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 7 जुमादल उख़रा सन् 13 हि. दो शम्बा मुबारका के दिन गुस्ल फ़रमाया उस दिन सरदी बहुत ज़्यादा थी जिस की वजह से आप को बुख़ार आ गया और पन्द्रह दिन तक आप बीमार रहे।

मौलाए कायनात हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के विसाले मुबारक का वक़्त जब क़रीब आया, तो उन्होंने मुझे बुलाया और अपने सर के क़रीब बिठा कर फ़रमाया। अली ! रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मेरा विसाल हो जाए यानी मेरी रूह मेरे जिस्म से निकल जाए तो मुझे अपने हाथों से गुस्ल देना, जिन हाथों से तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को गुस्ल दिया था। फिर ख़ुश्बू लगाना और मुझे रोज़ए अक़्दस के सामने ले जाना यानी मेरा जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुजरे के सामने रख देना और अर्ज़ करना हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप का अबू बक्र यारे ग़ार, रफ़ीक़े मज़ार भी बनना चाहता है यानी या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम आप का सिद्दीक़ आप के पहलू में दफ़्न होने की इजाज़त चाहता है। अगर हुजरए मुबारक का दरवाज़ा ख़ुद ब ख़ुद खुल जाए तो मुझे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के पहलू में दफ़्न कर देना और अगर दरवाज़ा न खुले तो मुसलमानों के क़ब्रिस्तान (जन्नतुल बक़ीअ) में दफ़्न कर देना। (वाक़दी, हाकिम)

एक अक़ीदे की बात : ऐ ईमान वालो ! महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कितना प्यारा अक़ीदा था कि वह अपने प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़िन्दा जानते और मानते थे और हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का भी यही अक़ीदा था कि हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़िन्दा हैं और अगर ज़िन्दा न मानते तो वसियत सुन कर कह देते कि ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) का तो विसाल हो गया। हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो पर्दा फ़रमा चुके। मैं किस से जाकर आप की अर्ज़ पेश करूँ। गोया सिद्दीक़ व अली और तमाम सहाबा का यह ईमान व अक़ीदा था कि बादे विसाल भी हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़िन्दा हैं और उम्मती की फ़रियाद सुनते हैं। ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

तू ज़िन्दा है वल्लाहु तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

और फ़रमाते हैं :

फ़रियाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

दुरूद शरीफ़ :

उम्मुल मोमिनीन हजरत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मेरे बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुझ से पूछा ! मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कितने कपड़ों में कफ़न दिया गया था ? गोया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तमन्ना थी कि कफ़न में भी सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इत्तिबाअ़ हो और दफ़्न भी आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मर्ज़ी से किया जाए। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया। तीन कपड़ों में। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, मेरे दोनों कपड़े धो लो और वह दोनों कपड़े पुराने और बोसीदा थे और एक कपड़ा नया मेरे लिये ख़रीद लो। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने कहा। अब्बा जान ! आप ख़लीफ़ए रसूल और नाइबे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं आप को अच्छा कफ़न मिलना चाहिये। आप ने फ़रमाया ऐ आएशा ! मरने वाले आदमी की निस्बत ज़िन्दा आदमी कपड़े का ज़्यादा मुस्तहिक़ है। दो साल तीन माह के क़रीब ख़िलाफ़त की नाज़ुक तरीन ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने के बाद विसाल फ़रमाया। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 148)

बयां हों किस ज़बान से मरतबा सिद्दीक़े अकबर का
हैं यारे ग़ार महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अकबर का
इलाही रहम फ़रमा ख़ादिमे सिद्दीक़े अकबर हूँ
तेरी रहमत के सदक़े वास्ता सिद्दीक़े अकबर का

हज़रात ! विसाल के वक़्त आप की उम्र शरीफ़ तिरसठ (63) साल थी, शबे सह शम्बा (मंगल की रात) 22 जुमादल उख़रा सन् 13 हि. को आप ने विसाल फ़रमाया।
(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 148)

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वसियत के मुताबिक़ आप को ग़ुस्ल और कफ़न दिया गया। तारीख़े तबरी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब विसाल फ़रमाया तो उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ तिरसठ साल थी। महबूबे मुस्तफ़ा ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र मुबारक विसाल के वक़्त तिरसठ साल थी। जिस चार पाई पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जसदे नूर उठाया गया उसी चार पाई पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को उठाया गया। (तारीख़े तबरी)

जिस की हर हर अदा सुन्नते मुस्तफ़ा
ऐसे सिद्दीक़े नुबुव्वत पे लाखों सलाम
जिस का हर हर अमल अदाए मुस्तफ़ा
ऐसे यारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का जसदे पाक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए पाक के दरवाज़े के सामने रख दिया गया। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं (वसियत के मुताबिक़) में आगे बढ़ा।

فَقُلْتُ يَارَسُوْلَ اللهِ هٰذَا اَبُوْبَكْرٍ يَّسْتَاْذِنُ فَرَاَيْتُ الْبَابَ قَدْ فُتِحَ فَسَمِعْتُ قَائِلًا يَّقُوْلُ
اُدْخُلُوا الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ فَاِنَّ الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ مُشْتَاقٌ

मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अबू बक्र आप से यहाँ दफ़्न होने की इजाज़त मांग रहे हैं। फिर मैंने देखा (रोज़ए अक़दस) का दरवाज़ा खुल गया और आवाज़ आई। हबीब को हबीब के पास दाख़िल कर दो बे शक हबीब, हबीब की मुलाक़ात का मुश्ताक़ है। (ख़साइसुल कुबरा, जि. 2, स. 281)

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा मुसलमानों की मां फ़रमाती हैं कि रोज़ए अक़दस से जो आवाज़ आई कि हबीब को हबीब के पास दाख़िल कर दो। महबूब को महबूब के पास ले आओ। उस आवाज़ को तमाम हाज़िरीन हत्ता कि मस्जिद में मौजूद तमाम लोगों ने सुनी।

(शवाहिदुन्नुबुव्वत, स. 263)

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

जिस की हर हर अदा सुन्नते मुस्तफ़ा
ऐसे यारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

ईमान अफ़रोज़ नुक्ता : आज हमारा मुख़ालिफ़ कहता है और बकता फिरता है कि यह अक़ीदा रखना कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी क़ब्रे पाक में ज़िन्दा हैं और पुकारने वाले की सदा सुनते हैं, यह अक़ीदा सहाबए किराम का नहीं था बल्कि बरैलवियों ने यह अक़ीदा गढ़ लिया है। और उस का सुबूत हदीस में नहीं है।

ऐ ईमान वालो ! मुख़ालिफ़ से सवाल करो कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा क्या बरैलवी थे इस लिये कि उन बुज़ुर्गों का अक़ीदा था कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़िन्दा हैं और सुनते हैं। अगर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़िन्दा मानना और दूरो नज़दीक से सुनने वाला मानना, यह अक़ीदा अगर बरैलवियत है तो उन मुख़ालिफ़ों से कहो कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत अली शेरे ख़ुदा और जुमला सहाबा पर बरैलवियत का फ़तवा लगा दो कि यह सब बरैलवी थे। अगर तुम लोग देवबन्द से नज्द तक। वहाबियत से इब्लीसियत तक यह समझते और मानते हो कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा और दीगर सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की इत्तिबाअ अल्लाह तआला के महबूब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही रसल्लम के इश्क़ो महब्बत में मीलाद

शरीफ़ मनाना, अंगूठे चूमना, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कहना, रसूले आज़म व नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़िन्दा मानना, मालिको मुख़्तार मानना, दूरो नज़दीक से सुनने वाला मानना, इस के अलावा बे शुमार कमालात व मोअ़जिज़ात का जामेअ मानना, अगर यह सब बरैलवियत है तो हम सुन्नियों को ऐसी बरैलवियत पर नाज़ो फ़ख़्र है।

ऐ ईमान वालो ! ग़ौर से सुनो कि बरैलवियत कोई नया दीन या और नया मज़हब व मसलक नहीं है, हर गिज़ नहीं है बल्कि सहाबए किराम की आदत व सुन्नत और बुज़ुरगाने दीन के किरदार व अमल को उस ज़माने में बरैलवियत और मस्लके आला हज़रत के नाम से याद किया जाता है। खूब फ़रमाया औलादे अली सय्यद आले मुस्तफ़ा मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने:

या इलाही मस्लके अहमद रज़ा ख़ां ज़िन्दाबाद
हिफ़्ज़े नामूसे रिसालत का जो ज़िम्मेदार है

दुरूद शरीफ़:

हज़रत अली रो पड़े : हज़रत उसैद बिन सफ़वान से रिवायत है कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल हुआ और उन के ऊपर चादर डाली गई तो लोगों की आहो बका से पूरा मदीना लरज़ा उठा, लोग सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के दिन की तरह परेशान थे। हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोते हुए और إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْن पढ़ते हुए आए और फ़रमाने लगे आज ख़िलाफ़ते नबवी मुनक़तअ हो गई। फिर आप उस मकान के दरवाज़े पर खड़े हो गए जिस के अन्दर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जसदे पाक रखा गया था और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए। ऐ अबू बक्र ! आप सब से पहले इस्लाम लाने वाले और ईमान में सब से ज़्यादा इख़्लास वाले, और अल्लाह तआला पर सब से ज़्यादा यक़ीन रखने वाले और अल्लाह तआला से सब से ज़्यादा डरने वाले और सब से ज़्यादा अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास रहने वाले और सब से ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में शरफ़ो मन्ज़िलत वाले। और सब से ज़्यादा मुकर्रम व मोअ़तमद थे। अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में शरफ़ व मन्ज़िलत वाले और सब से ज़्यादा मुकर्रम व मोअ़तमद थे। अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप को इस्लाम और मुसलमानों की तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। आप ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तस्दीक़ उस वक़्त की जब लोगों ने आप की तकज़ीब की। इस लिये अल्लाह तआला ने आप को अपनी किताब में सिद्दीक़ के नाम से याद फ़रमाया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

الَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖ वह ज़ात जो हक़ ले कर आई यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और वह जिस ने तस्दीक़ की यानी अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। आप ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ग़मख़्वारी की जबकि लोगों ने बुख़्ल किया, आप सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ खड़े रहे, जब लोगों ने साथ छोड़ दिया, आप पर सकीनानाज़िल हुई। आप हिजरत और हर मुश्किल मक़ाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रफ़ीक़ और साथी थे। आप उम्मत के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बहतरीन ख़लीफ़ा साबित हुए वर्ना लोग मुरतद हो गए थे। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला की क़सम ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के बाद आप की मौत से बड़ा सदमा मुसलमानों पर नाज़िल नहीं हुआ। आप की ज़ात दीन के लिये इज़्ज़त और जाए पनाह, मुसलमानों के लिये क़िला, और दारुल अमन, और आप मुनाफ़िक़ों के लिये सरापा शिद्दत और ग़ैज़ व ग़ज़ब थे अल्लाह तआला हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मिला दे और हमें आप के अज्र से महरूम न फ़रमाए और हक़ पर साबित क़दम रखे। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْن

जब तक हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कलाम फ़रमाते रहे लोग ख़ामोशी से सुनते रहे और फिर इस क़दर रोए जैसा कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के दिन रोए थे और सब हाज़िरीन बोल उठे। ऐ अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दामाद (हज़रत अली) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बे शक आप ने सच फ़रमाया। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 3)

करामाते सिद्दीक़े अकबर : नाइबे मुस्तफ़ा ख़लीफ़ए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी सरापा करामत है बल्कि आप से जो ख़ुश नसीब सच्ची महब्बत करे वह भी करामत वाला हो जाए।

पहली करामत : मुसलमानों की मां हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया कि मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुझे मरज़े विसाल में नसीहत फ़रमाई। ऐ आएशा मेरी बेटी मेरे पास जोभी दौलत है वह दौलत वारिसों की हो चुकी है। मेरे वारिसों में तुम्हारे दो भाई अब्दुर्रहमान और मुहम्मद हैं और तुम्हारी दो बहनें हैं। मेरे माल को तुम लोग क़ुरआने मजीद के फ़रमान की रौशनी में तक़सीम कर के अपना हिस्सा ले लेना। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि अब्बा जान मेरी तो एक ही बहन अस्मा हैं यह दूसरी बहन कौन हैं ? आप ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी सोतेली मां हबीबा बिन्ते ख़ारिजा जो हामिला हैं उन के पेट में लड़की हैऔर वह तुम्हारी दूसरी बहन है। आप के विसाल फ़रमाने के बाद आप ने जैसा फ़रमाया उसी के

मुत्मबिक़ हबीबा बिन्ते ख़ारिजा के शिकम से लड़की पैदा हुई। (जिस का नाम उम्मे कुलसूम रखा गया) (मुअत्ता इमाम मुहम्मद, स. 348)

इस हदीसे पाक में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दो करामत का ज़हूर हुआ।

पहली करामत : लड़की की पैदाइश बाद में होगी और मेरा विसाल पहले हो जाएगा।

दूसरी करामत : मेरी बीवी हबीबा हामिला हैं और उस के शिकम में लड़की ही है। अपनी बेटी हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा को वसियत फ़रमाई कि तुम्हारी सो तितली मां हबीब बिन्ते ख़ारिजा जो हामिला हैं उन के शिकम में लड़की है वही तुम्हारी दूसरी बहन है।

ऐ ईमान वालो ! आज हमारा मुख़ालिफ़, वहाबी कहता है कि नबी को इल्म ग़ैब नहीं है। हवाला मुलाहज़ा फ़रमाइये।

वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी लिखते हैं कि रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है और लिखते हैं कि शैतान और मलकुल मौत के इल्म से रसूलुल्लाह का इल्म कम है। (बराहीने क़ातिआ, स. 51)

मगर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अपनी मौत से बा ख़बर हो जाना और औरत के शिकम में लड़की ही है इस बात का इल्म होना यह भी इल्मे ग़ैब है।

अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम मुलाहज़ा फ़रमाइये कि अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इल्मे ग़ैब अता फरमाया। जब ख़लीफ़ा और नाइब के इल्म ग़ैब का यह आलम है तो सरकारे दो आलम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब का आलम क्या होगा।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दूसरी करामत : हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक दिन मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से तीन आदमियों को अपने घर लाए और उन को खाना खिलाने का हुक्म फ़रमाया और ख़ुद प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में चले गए और आप ने खाना सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ तनावुल फ़रमाया। काफ़ी रात गुज़र गई फिर आप मकान पर तशरीफ़ लाए तो आप की बीवी ने कहा कि आप को किस चीज़ ने रो रखा था ? आप ने फ़रमाया क्या तुम ने मेहमानों को अब तक खाना नहीं खिलाया। तो बीवी ने अर्ज़ क्या कि मैं ने खाना पेश किया था मगर मेहमानों ने आप के बग़ैर खाना खाने से इनकार कर दिया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु अपने बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर बहुत नाराज़ हुए और उन को सख़्त सुस्त फ़रमाया और कहा उस ने मुझे ख़बर क्यों नहीं किया। फिर खाना हाज़िर किया गया। आप मेहमानों के साथ खाने के लिये बेठ गए। रावी का कहना है।
ايم الله ما كنا ناخذ من اللقمة الا ربا من اسفلها اكثر منها यानी अल्लाह तआला की क़सम हम जो भी लुक़मा उठाते थे उस के नीचे खाना उस से ज़्यादा हो जाता। यहाँ तक कि हम सब के पेट भर गए, शिकम सेर हो गए और जितना खाना पहले था उस से भी ज़्यादा खाना बच गया। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तअज्जुब से अपनी बीवी को फ़रमाया कि यह क्या मुआमला है कि बरतन में पहले से ज़्यादा खाना नज़र आ रहा है। आप की बीवी ने क़सम खा कर कहा कि बेशक यह खाना पहले से तीन गुना ज़्यादा है। फिर वह खाना अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में पेश किया गया। सुबह तक खाना सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में रहा। सुबह एक, एक लश्कर जिस में काफ़ी लोग थे हाज़िर हुए, पूरी फ़ौज ने उस खाने को खाया और ख़ूब शिकम सेर होकर खाया मगर फिर भी वह खाना कम नहीं हुआ। (बुखारी शरीफ़, जि. 1, स. 506)

ऐ ईमान वालो ! खाने में इतनी ज़्यादा बरकत का होना, खाने का तीन गुना ज़्यादा हो जाना यह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़ीम करामत थी।

सिद्दीक़ी ख़ुसूसियात : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बे शुमार फ़ज़ाइल और कमालात के जामेअ हैं। चन्द ख़ुसूसियात का हम ज़िक्र करने की सआदत हासिल कर रहे हैं।

(1) आप सब से पहले मुसलमान हुए।
(2) आप ने सब से पहले क़ुरआन को जमा किया।
(3) आप सब से पहले कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन से लड़े।
(4) आप सब से पहले ख़लीफ़ा हुए।
(5) आप सब से पहले उम्मत के इमाम बने।
(6) सब से पहले आप का नाम सिद्दीक़ हुआ उस से पहले किसी का नाम सिद्दीक़ नहीं हुआ
(7) सब से पहले आप ने इस्लाम में मस्जिद बनाई।
(8) सब से पहले उम्मत में आप जन्नत में जाएंगे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 137)

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अदब : महबूबे मुस्तफ़ा अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिम्बरे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर उस जगह कभी नहीं बैठे जिस जगह आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा होते थे। इसी तरह हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिम्बर पर उस जगह नहीं बैठे जहाँ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैठे थे और फिर हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु मिम्बर पर उस जगह नहीं बैठे जहाँ हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैठते थे। (तारीखुल ख़ुलफ़ा, स. 137)

ऐ ईमान वालो ! हम अपने ईमान को ताज़ा करें और ख़ूब मज़बूत कर लें कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अदब कितना ज़रूरी है। बज़ाहिर सामने हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नहीं हैं। बल्कि मिम्बर की वह जगह है जहाँ आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बैठा करते थे तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस जगह का अदब क्या जहाँ सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बैठते थे तो जब निस्बत का यह अदब है तो अगर ख़ुद आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सामने हों तो अदब का आलम क्या होगा। बा अदब बा नसीब। बे अदब कम नसीब

हज़रात ! आज हमारा मुख़ालिफ़ देवन्बदी वहाबी कहता हैकि सुन्नी मुसलमान ग़ौस व ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के मानने वाले बिदअत करते हैं, शिर्क करते हैं बात क्या है जिस की वजह से हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन को बिदअती और मुशरिक कहा जाता है तो उस की साफ़ वजह यह है कि हम सुन्नी मुसलमान अपने आक़ा करीम के नामे पाक का अदब व ताज़ीम करते हैं और जब नामे पाक हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) सुनते हैं तो अपने उंगूठे चूम कर आँखों से लगा लिया करते हैं, कभी मूएमुबारक का अदब, कभी पैरहने मुबारक का अदब, कभी आप की आल का अदब, कभी महफ़िले मीलाद का अदब, कभी आप की उम्मत के उलमा का अदब, कभी पीरो मुर्शिद का अदब, कभी उस्ताज़ व मां, बाप का अदब, कभी बुज़ुर्गों के मज़ारात का अदब ओर कभी क़िस्मत का सितारा चमका अल्लाह तआला का फ़ज़्ल हुआ मदीनामुनव्वरा की हाज़िरी हुई तो रोज़ए मुबारका का अदब। बहर हाल जहाँ जहाँ हम ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत देखी अदब किया, एहतिराम किया, हक़ीक़त में यह दर्स और सबक़ ख़लीफ़ए मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दिया है। और मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और सहाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन की सुन्नत व आदत है।

आक़ा करीम सरकारे मदीना रहमत व बरकत के गन्जीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हदीसे मुबारका है।

اَصْحَابِی کَالنُّجُوْمِ بِاَیِّهِمْ اِقْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ۔

मेरे सहाबा मिस्ल सितारों के हैं जिन की भी इक़्तिदा कर लोगे हिदायत पा जाओगे। (मिश्कात, जि., स. 554)

अलहम्दु लिल्लाह ! सुम्मा अलहम्दु लिल्लाह ! हम सुन्नी मुसलमान, ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के गुलाम बिदअती नहीं बल्कि निस्बते सरकार

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अदब करके सहाबा किराम की सुन्नत पर अमल करके सुन्नती यानी सुन्नी हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले

लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

दुरूद शरीफ़ :

मगर सुन्नियो ! फिर हमारा मुख़ालिफ़ मक्रो फ़रेब का एक जाल डालेगा और आप को गुमराह करना चाहेगा कि यह तो नबी का अदब का मुआमला है और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अदब तो हम भी करते हैं (हालांकि यह सरासर झूट और ग़लत है) मुख़ालिफ़ का दावा है कि कोई हदीस हो तो दिखाओ और बताओ कि सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने किसी वली या नेक का अदब किया है तो ग़ौर से सुनिये और याद रखिये और मुख़ालिफ़ को जवाब दीजिये कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस जगह का अदब व एहितराम किया जहाँ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैठते थे और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस जगह का अदब व एहतिराम किया जहाँ हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैठतेथे और हज़रत अबू बक्रसिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा दोनों में से कोई भी नबी नहीं हैं बल्कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत के एक और सहाबी हैं। पता चला और मालूम हुआ कि नेकों का अदब करना भी सुन्नते सहाबा है।

दुरूद शरीफ़ :

हम दुआ करते हैं और आप हज़रात भी इस फ़क़ीर क़ादरी गदाए ख़्वाजा अनवार अहमद क़ादरी रज़वी के लिये दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला सिद्दीक़ व उमर, उस्मान व हैदर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन जैसा ईमान अता फ़रमाए और उन बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

तीसरा जुमा .... पहला बयान

ग़ीबत की मज़म्मत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ 0 اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ 0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ 0

وَلَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ

तर्जमा : और एक दूसरे की ग़ीबत न करो, क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए। तो यह तुम्हें गवारा न होगा। (पारा 26, रुकू 14, तर्जमा कन्जुल ईमान)

हदीस शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! ग़ीबत करना किस कदर बड़ा गुनाह है और ग़ीबत करने वाला कितने बड़े अज़ाब में मुब्तला होगा मुलाहज़ा कीजिये।

मुसलमान पर मुसलमान की इज़्ज़त वाजिब है : अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ : كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُهٗ وَمَالُهٗ وَعِرْضُهٗ 0

(सहीह मुस्लिम, जि. 2, स. 31, मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 133)

तर्जमा : हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का ख़ून, माल और इज़्ज़त हराम है।

मुसलमान ! हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि मुसलमान को चाहिये कि मुसलमान के जान व माल और उस की इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करे।

ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है

हदीस शरीफ़ : अल्लाह के महबूब हमारे आका करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने आप को ग़ीबत से बचाओ। बे शक ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है क्यों कि एक आदमी ज़िना के बाद तौबह करता है तो अल्लाह तआला कबूल कर लेता है।

وَاِنَّ صَاحِبَ الْغِيْبَةِ لَا يُغْفَرُلَهٗ حَتّٰى يَغْفِرَلَهٗ صَاحِبُهٗ ٥

(अद्दर्रुल मन्सूर, जि. 6, स. 97, मिश्कात शरीफ़, जि. 2, स. 415, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 314)

और ग़ीबत करने वाले की बख्शिश उस वक़्त तक नहीं होती जब तक वह शख़्स मुआफ़ न करे जिस की ग़ीबत की है।

अल्लाह तआला की पनाह। हज़ार बार अल्लाह तआला की पनाह

हज़रात! ज़िना कितना बुरा फ़ेअल और किस क़दर अज़ीम गुनाह है मगर उस से बुरा और बड़ा जुर्म ग़ीबत का है। ऐ ग़ीबत करने वाला तो कितना बुरा और किस क़दर बुरा गुनाहगार है ज़रा ग़ौर तो कर।

हदीस में ग़ीबत और तोहमत की तारीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से इरशाद फ़रमाया : هَلْ تَدْرُوْنَ مَا الْغِيْبَةُ

क्या तुम जानते हो कि ग़ीबत क्या है ? तो अर्ज़ किया गया कि :

اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ

अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेहतर जानते हैं तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ग़ीबत यह है कि : ذِكْرُكَ اَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُهٗ ٥

यानी तुम अपने भाई का इस तरह ज़िक्र करो जिस को वह ना पसन्द करता है। फिर पूछा गया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अगर वह बात उस में मौजूद हो तो ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो बात तुम कह रहे हो अगर वह उस शख़्स में हो तो तुम ने उस की ग़ीबत की और अगर उस में न हो तो तुम ने उस पर तोहमत लगाई।

(सही मुस्लिम, तिर्मिज़ी शरीफ, जि. 2, स. 15 मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 1, स. 384)

ग़ीबत करने वाला अपने नाख़ुन से क़ियामत के दिन अपना चेहरा छीलेगा

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया शबे मेअराज मैंने ऐसी क़ौम को देखा जो अपने चेहरों को अपने नाख़ुनों से छील रहे थे हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम यह वह लोग हैं ज़ो लोगों की ग़ीबत करते थे और उन की इज़्ज़तों के पीछे पड़ते थे। (अबू दाऊद, जि. 2, स. 313, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 314)

हज़रात! ग़ीबत करने वाला बरोज़े क़ियामत किस क़दर मुसीबत में मुब्तला किया जाएगा कि अपने ही हाथों के नाख़ुनों से अपने चेहरे को नोच नोच कर काट रहा होगा। इस लिये आज ही ग़ीबत से तौबह कर लो ताकि क़ियामत की मुसीबतों से नजात मिल सके।

नेकी की किसी बात को हक़ीर नहीं जानना चाहिये : हज़रत सलीम बिन जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मुझे कोई अच्छी बात बताएं जिस से में नफ़ा हासिल करूँ तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ : नेकी में से किसी बात को भी हक़ीर (यानी कम) न जानना अगरचेह अपने डोल में से प्यासे के बरतन में पानी डालो और अपने भाई के साथ खन्दा पेशानी से पेश आओ

وَاِنْ یُّرِوْا فَلَا تَغْتَابَنَّهٗ

यानी और वह चला जाए तो हर गिज़ उस की ग़ीबत न करो।

(मुस्नद अहमद, जि. 5, स. 63, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 314)

ग़ीबत करने वाला अपने घर में भी ज़लील रहता है

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ उन लोगों के गिरोह, जो ज़बान से ईमान लाए और उन के दिल ईमान नहीं लाए। मुसलमानों की ग़ीबत न करो और उन की पर्दा दरी न करो (यानी उन के ऐबों को न खोलो) और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई का पर्दा उठाएगा। (यानी उस के छुपे को ज़ाहिर करेगा) तो अल्लाह तआला उस का पर्दा उठादेगा (यानी अल्लाह तआला उस के सारे छुपे हुए ऐबों को ज़ाहिर फ़रमादेगा) और अल्लाह तआला जिस का पर्दा उठा दे।

يَفْضَحْهُ فِيْ جَوْفِ بَيْتِهٖ

तो उसे घर के अन्दर भी रुसवा करता है। (सुनने अबू दाऊद, जि. 2, ,स. 313)

हज़रात ! जो शख़्स दूसरों की ग़ीबत करता है तो अल्लाह तआला उस शख़्स को उस के घर के अन्दर भी उस का ऐब खोल देता है और वह शख़्स अपने घर वालों में भी ज़लील व रुसवा हो कर रहता है। अल इयाज़ बिल्लाहि तआला।

ग़ीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में डाला जाएगा : नाइबे मुस्तफ़ा, हुज्जतुल इस्लाम, इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं मनक़ूल है कि : अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ वही भेजी कि जो शख़्स ग़ीबत से तौबह करते हुए फ़ौत हो जाए तो वह जन्नत में सब से आख़िर में दाख़िल किया जाएगा और जो शख़्स ग़ीबत के गुनाह की हालत में फ़ौत हो वह जहन्नम में सब से पहले डाला जाएगा।

(अहयाउल उलूम, स. 3, जि. 315)

हज़रात ! जितना जल्दी हो सके ग़ीबत से तौबह कर लो वर्ना सब से पहले ग़ीबत करने वाला ही दोज़ख में डाला जाएगा।

ग़ीबत करने वाले ने ख़ून की उल्टी की

हदीस : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने

सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को एक दिन का रोज़ा रखने का हुक्म दिया और फ़रमाया जब तक में इजाज़त न दूँ कोई भी इफ़्तार न करे। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने (अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म से) रोज़ा रखा यहाँ तक कि जब शाम हुई तो लोग आना शुरू हो गए एक कहता कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं रोज़ा दार हूँ। इजाज़त फ़रमाएं कि मैं इफ़्तार करूँ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसे इजाज़त अता फ़रमाई। इस तरह फिर दूसरा शख़्स आया फिर तीसरा, और लोग आते रहे (और इजाज़त ले कर इफ़्तार करते रहे) हत्ता कि एक शख़्स हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम दो औरतें रोज़ा दार हैं और वह आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास आते हुए झिझक महसूस करती हैं उन्हें इफ़्तार की इजाज़त अता फ़रमा दीजिये आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने (उन की जानिब से) चेहरए अनवर फेर लिया। उस शख़्स ने फिर अर्ज़ किया तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने तवज्जोह न फ़रमाई फिर अर्ज़ किया तो आक़ाए दो आलम मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया उन दोनों (औरतों) ने रोज़ा नहीं रखा और वह आदमी रोज़ादार कैसे हो सकता है ? जिस का दिन यूँ गुज़रता है कि वह लोगों का गोश्त खाता है।

जाओ ! और उन दोनों औरतों से कहो कि अगर उन्होंने रोज़ा रखा है तो वह क़ै करें उस शख़्स ने वापस आकर बताया तो दोनों औरतों ने जमे हुए ख़ून की क़ै की। वह शख़्स आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में लोट कर आया और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बताया, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है अगर यह (ख़ून) उन के पेटों में बाक़ी रहता तो उन दोनों औरतों को आग (यानी दोज़ख़ की आग जला देती।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 3, स. 507, अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 315)

एक रिवायत में है, जब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस से मुंह फेरा तो उस ने आकर अर्ज़ किया।

या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम दोनों औरतें मर गई हैं या मरने के करीब हैं तो मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उन दोनों औरतों को मेरे पास लाओ, जब वह दोनों आईं तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक प्याला मंगवाया और उन में से एक से फ़रमाया क़ै करो तो उस औरत ने पीप और ख़ून का क़ै किया हत्ता कि प्याला भर गया और दूसरी औरत से फ़रमाया तुम भी क़ै करो तो उस ने भी इसी तरह क़ै किया तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया इन दोनों औरतों ने उस चीज़

से रोज़ा रखा जो अल्लाह तआला ने उन के लिये हलाल फ़रमाई है और अल्लाह तआला ने जो कुछ हराम किया है उस के ज़रीए रोज़ा तोड़ दिया यह दोनों बैठ कर लोगों का गोश्त खाने लगीं (यानी ग़ीबत करने लगीं) (अद्दुर्रुल मन्सूर, जि. 6, स. 95, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 316)

हज़रात ! ग़ीबत कैसा ख़राब और बद तरीन गुनाह है कि ग़ीबत करने वाला अपने पेट में बदबू दार ख़ून और पीप जमा करता है अल्लाह तआला ग़ीबत के फ़रेब से बचाए। आमीन सुम्मा आमीन।

ग़ीबत करने वाले की कोई इबादत क़ुबूल नहीं होती

ग़ैबदां रसूल मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने देखा, दो शख़्स जब नमाज़े ज़ोहर या अस्र से फ़ारिग़ हुए तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम दोनों वुज़ू करो और नमाज़ दोहरा लो और रोज़ा पूरा करो और दूसरे दिन उस रोज़े की क़ज़ा करना तो उन दोनों रोज़ादारों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ऐसा हुक्म किस लिये दिया गया ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम ने फ़लां शख़्स की ग़ीबत की है। (शअ़बिल ईमान, जि. 5, स. 303)

हज़रात ! ग़ीबत अज़ीम तरीन गुनाह है कि जिस की वजह से नमाज़ व रोज़ा और आमाले ख़ैर की मक़बूलियत व नूरानियत जाती रहती है और नमाज़ व रोज़ा में कराहत आती है लेकिन नमाज़ व रोज़ा न गया। मुलख़्ख़सन (बहारे शरीअत, जि. 1, दुर्रे मुख़्तार, जि. 3)

सूद से भी बड़ा गुनाह
मुसलमान की इज़्ज़त पर हाथ डालना है

आलिमे रब्बानी, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ग़ीबत के बयान के दरमियान सूद का गुनाह और मुसलमान की इज़्ज़त पर हाथ डालने के गुनाह को भी बयान फ़रमाते हैं।

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी तक सूद का जो एक दिरहम पहुँचता है वह अल्लाह तआला के नज़दीक छत्तीस मरतबा ज़िना करने से भी बड़ा गुनाह है और सब से बड़ा सूद (यानी सूद से भी बड़ा गुनाह) मुसलमान की इज़्ज़त पर हाथ डालना है। (अल कामिल लि इब्ने अदी, जि. 4, स. 1548, अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 316)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से भी कोई ग़ीबत के अज़ाब व गुनाह को न समझे तो उस से बड़ा नादान कौन ? कि सूद का एक रुपया का गुनाह छत्तीस बार ज़िना करने के गुनाह से ज़्यादा है और उस से भी बड़ा गुनाह ग़ीबत करना है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

ग़ीबत मोमिन के दीन में बहुत जल्द असर अन्दाज़ होती है

हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की क़सम! मोमिन आदमी के दीन में ग़ीबत इतनी जल्दी सरायत करती है जितनी जल्दी आकला! बीमारी उस के जिस्म को ख़राब नहीं करती। (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 317)

और हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की क़सम! ग़ीबत! (खाने का) लुक़मा के पेट में पहुँचने से भी जल्द तर, मोमिन के दीन में रख़्ना (फ़साद) डाल देती है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 136)

हज़रात! आकला! एक बीमारी है जो जिस्म को बहुत जल्द ख़राब कर देती है मगर ग़ीबत वह ख़तरनाक गुनाह है जो मोमिन के दीन को उस से भी जल्दी तबाह व बरबाद कर के रख देता है।

मगर! मुसलमान कुछ भी समझने को तैय्यार नहीं दिन रात एक दूसरे की ग़ीबत में मशग़ूल हैं और अपने दीन को बरबाद करता नज़र आता है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

ग़ीबत खजूर सी मीठी और शराब से ज़्यादा तेज़ है

हज़रत इब्ने हजर मक्की शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मनक़ूल है कि ग़ीबत में खजूर सी मिठास और शराब जैसी तेज़ी और सुरूर है। (अज़्ज़वाजिर, जि. 2, स. 19)

हज़रात! शराब की आदत छोड़ देना आसान नहीं है और ग़ीबत तो उस से भी ज़्यादा तेज़ी और सुरूर रखती है मगर अल्लाह तआला जिसे तौफ़ीक़ दे।

अपने ऐब को देखो, कामयाब हो जाओ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब तुम किसी दूसरे के ऐब का ज़िक्र करना चाहो तो (पहले) अपने ऐब को याद करो।

और! हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि तुम में से एक शख़्स अपने भाई की आँख में तिनका देख लेता है लेकिन अपनी आँख का शहतीर उसे नज़र नहीं आता। (हिलयतुल औलिया, जि. 3, स. 104)

और! हज़रत अली बिन हुसैन, इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने एक शख़्स को दूसरे की ग़ीबत करते हुए सुना तो फ़रमाया ग़ीबत से बचो! यह लोगों में से जो कुत्ते हैं उन का सालन है (उन की ख़ूराक है)

और! मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया तुम पर अल्लाह तआला का ज़िक्र करना लाज़िम है बे शक उस में शिफ़ा है और लोगों के ज़िक्र (यानी ग़ीबत) से बचो, यह बीमारी है। हम अल्लाह तआला से उस की इबादत की अच्छी तौफ़ीक़ का सवाल करते हैं। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 318)

सच बात को पीठ पीछे कहना ग़ीबत है

हदीस शरीफ़ : हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास एक शख़्स का ज़िक्र किया गया तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने कहा कि वह बहुत आजिज़ है तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तुम ने अपने भाई की ग़ीबत की है तो उन्होंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हम ने वही बात कही है जो उस में पाई जाती है तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम ऐसी बात कहते जो उस में नहीं है तो तुम उस पर बोहतान बांधते। (मजमउज़्ज़वाइद, जि.8, स. 94)

ऐ ईमान वालो ! आज कल ग़ीबत की बुराई इस क़दर आम हो चुकी है कि ग़ीबत करने वाला ग़ीबत भी करता जाता है और यह भी कहता नज़र आता है कि मेरी निय्यत ग़ीबत और बुराई की नहीं है। मुलाहज़ा फ़रमाइये कि ग़ीबत किया है।

सिर्फ़ इतना कहा कि क़द छोटा है तो भी ग़ीबत है

हदीस शरीफ़ : हम मुसलमानों की मां हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि हमारे पास एक औरत आई जब वह वापस जाने लगी तो मैं ने हाथ से इशारा किया कि उस का क़द छोटा है तो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (ऐ आएशा तुम ने उस की ग़ीबत की है।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 6, स. 206, अद्दर्रुल मन्सूर, जि. 6, स. 94)

सिर्फ़ इतना कहा कि दामन लम्बा है तो भी ग़ीबत है

हदीस शरीफ़ : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मौजूदगी में एक औरत के बारे में कहा कि उस औरत का दामन लम्बा है तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : थूको, थूको तो मैं ने गोश्त के टुकड़े की क़ै की। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 3, स. 504, अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 320)

हज़रात ! ग़ीबत को समझिये और उस के अज़ीम व बाल से बचने की फ़िक्र कीजिये और याद रखिये सिर्फ़ इतना कह देना कि फ़लां का क़द छोटा है या उस के कपड़े का दामन लम्बा है यह भी ग़ीबत है मगर हम तो सिर्फ़ क़द को ही नहीं बल्कि पूरे जिस्म को ही बुरा कहते नज़र आते हैं और सिर्फ़ कपड़े के दामन को ही नहीं बल्कि मुसलमान के पूरे लिबास को नोच नोच कर फाड़ते नज़र आते हैं। अब अगर हम ऐसा करते हैं तो हमारा हाल क्या होगा ? (अल अमान वल हफ़ीज़)

बुज़ुरगों की नज़र में ग़ीबत से बचना इबादत है

आलिमे रब्बानी, नाइबे मुस्तफ़ा, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि मनक़ूल है कि अस्लाफ़ (बुज़ुरगों) को देखा कि वह इबादत (सिर्फ़) नमाज़ व रोज़ा ही को नहीं समझते थे बल्कि लोगों की बुराई और ग़ीबत से बचने को इबादत समझते थे। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 317)

नमाज़ व रोज़ा अदा किया मगर ग़ीबत की तो जहन्नम में जाएगा

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने किसी औरत का ज़िक्र किया गया कि वह बहुत ज़्यादा नमाज़ें पढ़ती है और (ख़ूब) रोज़े रखती है लेकिन अपनी ज़बान से अपने पड़ोसियों को अज़ियत पहुंचाती है (यानी उन की ग़ीबत करती है)

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : वह (औरत) जहन्नम में जाएगी। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 440)

हज़रात ! यह इरशादे पाक, महबूबे रहमान, मुख़्तारे दो जहाँ, मालिके इनसो जां, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का है। आसमान बदल सकता है, ज़मीन बदल सकती है, चाँद व सूरज का निकलना डूबना बन्द हो सकता है, आलम का निज़ाम बदल सकता है लेकिन महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक न बदला है न बदल सकता है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

हज़रात ! उस आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है कि नमाज़ पढ़ने वाला, रोज़ा रखने वाला अगर ग़ीबत ख़ोर है तो उस की नमाज़ व रोज़ा ना मक़बूल और वह शख़्स जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा।

हज़रात ! तो अब ! जहन्नम से बचने की एक ही सूरत है कि ग़ीबत से तोबह कर ली जाए और जिस की ग़ीबत की है उस से भी मुआफ़ी मांग ली जाए तो अल्लाह तआला मुआफ़ी दे कर जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ व मामून फ़रमा देगा।

एक बार की ग़ीबत सो मरतबा ज़िना से बदतर है

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत अबुल्लैस बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ग़ीबत के मुतअल्लिक़ पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि मैं एक बार की ग़ीबत को सौ मरतबा के ज़िना से बदतर समझता हूँ।

और! हज़रत अबू हफ़्स अल कबीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल है कि मैं किसी इन्सान की ग़ीबत करने को, रमज़ान के रोज़े न रखने से बदतर समझता हूँ।

और! जिस ने किसी आलिम की ग़ीबत की तो क़ियामत के दिन उस के चेहरे पर लिखा होगा, यह (शख़्स) अल्लाह तआला की रहमत से महरूम है। (मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 136)

ग़ीबत से नमाज़ व रोज़ा मक़बूल नहीं होते

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि (अल्लाह के वली) हज़रत अता रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अगर किसी नमाज़ी ने ग़ीबत की तो दोबारह वुज़ू करके नमाज़ पढ़े और अगर किसी रोज़ा दार ने ग़ीबत की तो दूसरे दिन फिर से रोज़ा रखे। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 317)

हज़रात! बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि ग़बीत करने वाला ऐसा है जैसे उस ने सौ मरतबा ज़िना किया और आलिमे दीन की ग़ीबत तो और भी बड़ी मुसीबत है कि उस की पेशानी पर लिख दिया जाता है कि यह शख़्स अल्लाह की रहमत से महरूम है और नमाज़ का नूर और रोज़े की बरकत ग़ीबत से ज़ाइल हो जाती है, गोया ग़ीबत करने वाले की नमाज़ और रोज़ा ना मक़बूल हो कर रह जाते हैं। (अल अमान वल हफ़ीज़)

ग़ीबत सुनना भी ग़ीबत है : नाइबे मुस्तफ़ा, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि ग़ीबत सुनने पर ख़ुश होना और उस की तरफ़ कान लगाना भी ग़ीबत है और वह इस लिये कि जब (ग़ीबत करने वाला) ख़ुशी और तअज्जुब का इज़हार करता है तो ग़ीबत करने वाला ख़ुश होता है और ग़ीबत करने के लिये तैय्यार होता है गोया वह इस तरीक़े से उस से ग़ीबत करवाता है। मसलन वह कहता है (यानी ग़ीबत सुनने वाला) तअज्जुब है हम तो उस शख़्स को ऐसा नहीं ज़ानते थे, मैं तो उसे अब तक अच्छा आदमी समझता रहा हूँ, मैं तो उसे कुछ और ही समझता रहा, अल्लाह तआला हमें आज़माइश से बचाए। यह सब कुछ ग़ीबत करने वाले की तस्दीक़ है और ग़ीबत की तस्दीक़ भी ग़ीबत होती है बल्कि ग़ीबत के वक़्त ख़ामोश रहने वाला भी ग़ीबत में शरीक होता है।

(अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 323)

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَلْمُسْتَمِعُ اَحَدُ الْمُغْتَابِيْنَ

यानी ग़ीबत सुनने वाला भी ग़ीबत करने वालों में से एक होता है।

(तारीख़े बग़दाद, जि. 8, स. 226, अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 323)

हदीस शरीफ़ : दो शख़्स थे उस में से एक ने दूसरे से कहा कि फ़लां शख़्स बहुत सोता है फिर उन्होंने महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सालन मांगा, ताकि रोटी खाएं तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम सालन खा चुके हो। उन्हों ने अर्ज़ किया कि हमें तो उस का इल्म नहीं। तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : हाँ क्यों नहीं; तुम दोनों ने अपने भाई का गोश्त खाया है। (अद्दर्रुल मन्सूर, जि. 6, स. 95)

हज़रात ! ग़ौर कीजिये कि इतना भी कहना कि फ़लां शख़्स ज़्यादा सोता है भी ग़ीबत है और एक साहब ने कहा था और दूसरे साहब ने सुना था मगर ! आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम दोनों ने ग़ीबत की यानी कहने वाला और सुनने वाला दोनों ग़ीबत में शरीक है, अल अमान वल हफ़ीज़।

ज़बान से रोके और दिल से ख़ुश होता है तो मुनाफ़िक़ है

नाइबे मुस्तफ़ा हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स ज़बान से (ग़ीबत करने वाले से) कहे ख़ामोश हो जाओ लेकिन दिल से सुनना चाहता है तो यह मुनाफ़िक़त है और जब तक दिल से बुरा न जानेगा गुनाह से बाहर नहीं होगा और सिर्फ़ हाथ के इशारे से ख़ामोश कराना काफ़ी न होगा। या यह कि अपने अबरूओं और पेशानी से इशारा करे क्यों कि यह सुस्ती और उस बात को मामूली समझने की अलामत है बल्कि उसे सख़्ती के साथ और वाज़ेह अलफ़ाज़ से रोकना चाहिये।

(अहया उल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 323)

मुसलमान की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करने वाला क़ियामत के दिन रुसवा न होगा।

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स के पास किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वह शख़्स ताक़त के बावुजूद उस मोमिन की मदद न करे :

اَذَلَّهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى رُءُوْسِ الْخَلَائِقِ

यानी अल्लाह तआला क़ियामत के दिन लोगों के सामने उस शख़्स को रुसवा करेगा।

(मुस्नद इमाम अहमद, जि. 3, स. 487, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 324)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पता चला कि अगर किसी मुसलमान भाई की कोई शख़्स ग़ीबत व बुराई कर रहा है और अगर ताक़त है तो सुनने वाले पर लाज़िम है कि ग़ीबत करने वाले को रोके चाहे ज़बान से, या ताक़त से, बहर हाल रोके। और जिस भाई की ग़ीबत व बुराई की जा रही थी उस की इज़्ज़त की हिफ़ाज़ करे तो अल्लाह तआला बरोज़े क़ियामत उस की इज़्ज़त की मुहाफ़िज़त फ़रमाएगा और उस को रुसवा होने से बचालेगा। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे तो अल्लाह तआला के ज़िम्मए करम पर है कि :

اَنْ يَّرُدَّ عَنْ عِرْضِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

वह क़ियामत के दिन उस की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त फ़रमाए।

(मुस्नद इमाम अहमद, जि. 6 , स. 449)

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की पीठ पीछे उस की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे।

كَانَ عَلَى اللّٰهِ اَنْ يُّعْتِقَهٗ مِنَ النَّارِ

तो अल्लाह तअला के ज़िम्मए करम पर है कि वह उस शख़्स को दोज़ख़ से आज़ाद कर दे।

(मुस्नद इमाम अहमद, जि. 6, स. 641)

हज़रात ! हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान से यह साबित हो गया कि मुसलमान भाई की इज़्ज़त बचाने वाला क़ियामत के दिन इज़्ज़त पाएगा और जो शख़्स ताक़त होने के बावजूद अपने भाई की इज़्ज़त नहीं बचाएगा तो वह शख़्स बरोज़े क़ियामत बहुत रुसवा और ज़लील होगा। लेकिन आज कल इज़्ज़त बचाना तो कुजा ! एक भाई, अपने भाई को ज़लील करने में फ़ख़्र महसूस करता है और दोज़ख़ का हक़दार बनता नज़र आता है। अल अमान वल हफ़ीज़।

ग़ीबत ख़ोर, दोस्त से तन्हाई बहतर है

हज़रात ! ग़ीबत करने वाले दोस्त से तन्हाई बेहतर है कि तन्हाई में गुनाह से तो महफ़ूज़ रहेगा मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : हज़रत इमरान बिन हत्तान कहते हैं कि मैं अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गया तो उन्हें कम्बल ओढ़े हुए मस्जिद में तन्हा बैठे हुए देखा मैं ने कहा अबू ज़र ! यह तन्हाई कैसी ? तो उनहों ने जवाब दिया कि मैं ने महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते सुना कि तन्हाई बेहतर है बुरे साथी से और अच्छा साथी तन्हाई से बेहतर है और अच्छी बात बोलना ख़ामोशी से बेहतर है और बुरी बात बोलने से चुप रहना बेहतर है। (शअ़बिल ईमान, ज. 4, स. 256)

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अच्छा साथी वह है कि उस के देखने से तुम्हें अल्लाह तआला याद आए और उस की गुफ़्तुगू से तुम्हारे अमल में ज़्यादती हो और उस का अमल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए। (शअ़बिल ईमान, जि. 7, स. 57)

ऐ ईमान वालो ! ग़ीबत करने वाले और इस की, उसकी बुराई और नुक्ता चीनी करने वाले को दोस्त हर गिज़ न बनाओ वर्ना दीन में फ़साद पैदा होगा और आखिरत तबाह व बरबाद हो कर रह जाएगी।

हाँ ! दोस्त (साथी) ऐसा हो जो तुम्हारे ईमान की फ़िक्र करता हो और तुम को अच्छे अमल की दावत देता हो और जिस के साथ बैठने उठने और रहने से खुदा याद आता हो अल्लाह तआला हमें ऐसा ही नेक दोस्त और अच्छा साथी नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वली ने ग़ीबत सुनी तो मजलिस से चले गए

मशहूर बुज़ुर्ग अल्लाह तआला के वली हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दावत में तशरीफ़ ले गए लोगों ने आपस में कहा कि फ़लां शख़्स अभी तक नहीं आया तो एक शख़्स बोला कि वह मोटा तो बड़ा सुस्त है। इस पर हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने आप को मलामत करते हुए फ़रमाने लगे : अफ़सोस ! मेरे पेट की वजह से मुझ पर यह आफ़त आई है कि मैं एक ऐसी मजलिस में पहुँच गया जहाँ एक मुसलमान की ग़ीबत हो रही है, यह कह कर वहाँ से वापस तशरीफ़ ले गए और तीन दिन तक खाना न खाया (और सदमे से बे हाल रहे)। (तन्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

हज़रात ! नेक लोगों की हर बात नेक होती है यह नेक थे तो ग़ीबत की बात सुन कर मजलिस से चले गए और तीन दिन तक सदमे में रहे कि ऐसी मजलिस में क्यों गया और खाना तक न खाया।

और ! एक हम हैं कि ग़ीबत ही की मजलिस को तलाश कर के जाते हैं और खूब ग़ीबत करते हैं और ग़ीबत को सुनते भी हैं अल्लाह तआला ग़ीबत के गुनाह से तौबह की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

अल्लाह के वली हज़रत शैख़ बदरुद्दीन अहमद रज़वी ने अपने ख़ादिम को ग़ीबत से तौबह कराई

हज़रात ! मशहूर आलिमे बा अमल अल्लाह तआला के वली हज़रत शैख़ बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन की ज़िन्दगी की कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं और मुसल्ले पर ही विसाल फ़रमाया। मैं उन के हमराह हिन्द के राजा, हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह ग़रीब नवाज़ी में हाज़िर था। हज़रत के ख़ादिम ने हज़रत की खिदमत में अर्ज़ किया कि मैं रमज़ान शरीफ़ में अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुआ था और फ़लां सय्यद साहब क़िब्ला के घर क़याम किया था, मगर सय्यद साहब ने फ़रमाया कि आप इफ़्तार शाहजहानी मस्जिद में करके आ जाइयेगा, जो मुझे अच्छा नहीं लगा। तो अल्लाह के वली शैख़ बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि इस बारगाह

में भी आप गुनाह से बाज़ नहीं आते आप ने हमारे सय्यद साहब की ग़ीबत की, जल्दी उठिये और जाकर वुज़ू करके बारगाह में मुआफ़ी तलब कीजिये कि हुज़ूर आप की बारगाह में मुझ से ग़ीबत का गुनाह हो गया है, मुआफ़ फ़रमा दीजिये और आइन्दा हम से ग़ीबत का गुनाह न हो हम पर करम फ़रमा दीजिये। (अनवार अहमद क़ादरी)

हज़रात ! यह शान होती है अल्लाह वालों की कि ग़ीबत करते नहीं और ग़ीबत सुनते भी नहीं। अल्लाह तआला हमें भी ग़ीबत करने और ग़ीबत सुनने दोनों बला से महफ़ूज़ रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

ग़ीबत के बदले ख़र्चा देते थे : ख़ानदाने बरकात के मूरिसे आला हज़रत सय्यद मीर अहमद बिल गिरामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ग़ीबत किया करता था तो हज़रत महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस शख़्स को ख़र्च के लिये रुपये भेजा करते थे, यह सिलसिला एक ज़माने तक चलता रहा, वह शख़्स ग़ीबत करता रहा और हज़रत उस को ख़र्च भेजते रहे एक दिन उस ग़ीबत ख़ोर की बीवी ने कहा कि आप ग़ीबत करते हैं और हज़रत महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप के ख़र्च के लिये रुपये देते हैं, क्या यह इन्साफ़ की बात है ? कि तुम ख़र्च भी लेते हो और ग़ीबत भी करते हो, तो उस शख़्स को अपनी बीवी की नसीहत समझ में आ गई और उस शख़्स ने ग़ीबत करना छोड़ दिया तो हज़रत महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख़्स को ख़र्च के लिये रुपया देना बन्द कर दिया तो वह शख़्स हाज़िर हुआ और कहने लगा कि जब मैं आप की ग़ीबत करता था तो आप मुझे ख़र्च दिया करते थे और मैं ने आप की बुराई बन्द कर दी है तो आप ने मेरा ख़र्च बन्द कर दिया तो हज़रत महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि जब तू मेरी ग़ीबत करता था तो तेरी नेकियाँ मुझे मिलती थीं गोया तू मेरा काम करता था इस लिये मैं तुम को ख़र्च का रुपया देता था और जब तुम ने मेरी ग़ीबत बन्द कर दी गोया मेरा काम करना तुम ने बन्द कर दिया तो मैं ने भी तुम को ख़र्च का रुपया देना बन्द कर दिया। (ख़ुलासा सबअ सनाबिल शरीफ़, स. 59)

ग़ीबत के बदले तोहफ़ा दिया : आलिमे रब्बानी, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से एक शख़्स ने कहा कि फ़लां शख़्स ने आप की ग़ीबत की है तो हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस के पास खजूर का एक थाल भेजा और फ़रमाया कि मुझे मालूम हुआ है कि तुम ने मुझे नेकियों का तोहफ़ा दिया है तो मैं उस का बदला देना चाहता हूँ, मुझे माज़ूर समझो ! मैं पूरी तरह बदला नहीं दे सकता। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 342)

हज़रात ! हमारे अस्लाफ़, ग़ीबत का जवाब ग़ीबत से नहीं, बुराई का जवाब बुराई से नहीं बल्कि नेकी और भलाई से दिया करते थे। मुलाहज़ा फ़रमाइये। ख़लीफ़ए आला हज़रत, हज़रत सय्यद नईमुद्दीन सदरुल अफ़ाज़िल मुराद आबादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

फ़रमाते हैं कि जहल को हिल्म से, बद सुलूकी को दर गुज़र से, कि अगर कोई तेरे साथ बुराई करे तो मुआफ़ कर। इस ख़सलत का नतीजा यह होगा कि दुश्मन दोस्तों की तरह महब्बत करने लगेंगे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ग़ीबत नहीं बल्कि बुराई को ज़ाहिर करना वाजिब है

आलिमे रब्बानी, नाइबे मुस्तफ़ा, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास से गुज़रे और कहा गया है कि हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु आला अन्हु के पास से गुज़रे तो उन्होंने सलाम का जवाब न दिया और वह महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास चले गए और उन से यह बात अर्ज़ की तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ ले गए और उन की इस्लाह कर दी तो ! यह उन लोगों के नज़दीक ग़ीबत नहीं थी। इसी तरह जब मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को यह ख़बर पहुँची कि अबू हब्ज़ल ने मुल्के शाम में शराब पी है। चुनाँचे उन्होंने तौबह कर ली तो जो बात हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तक पहुँची है तो उन्होंने उसे ग़ीबत क़रार नहीं दिया। क्यों कि ख़बर पहुँचाने वाले का मक़सद उस की बुराई को ज़ाहिर करना था ताकि अमीरुल मोमिनीन उसे नसीहत करें क्यों कि जिस क़दर आप की नसीहत फ़ायदे मन्द हो सकती थी किसी दूसरे की नसीहत इतना काम न देती तो उस का जवाज़ नेक नियती की वजह से है और अगर यह मक़सद न हो तो वह ग़ीबत होगी और ग़ीबत हराम है।

फ़तवा हासिल करना : जिस तरह कोई शख़्स किसी मुफ़्ती से कहता है कि मुझ पर मेरे बाप या बीवी या भाई ने ज़ुल्म किया है तो मैं उस से किस तरह बच सकता हूँ, लेकिन यहाँ बेहतर यह है कि (नाम न ले) इशारों में कहे। मसलन यह कि आप उस आदमी के बारे में क्या कहते हैं जिस पर उस का बाप या भाई या बीवी ज़ुल्म करते हैं और अगर नाम ले ले तो भी जाइज़ है हज़रत हिन्दा बिन उतबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में शिकायत की कि अबू सुफ़ियान बख़ील हैं,. मुझे कम ख़र्च देते हैं जो मेरी औलाद के लिये काफ़ी नहीं तो मैं क्या उस की ला इल्मी में कुछ ले सकती हूँ तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मुनासिब तीरक़े से इस क़दर ले सकती हो जो तुम्हें और तुम्हारी औलाद को काफ़ी हो, तो उन्होंने उन का बुख़्ल और ज़ुल्म ज़ाहिर किया लेकिन उन का मक़सद मस्अला मालूम करना था इस लिये आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनको झिड़का नहीं।

मुसलमान को बुराई से डराना मक़सूद है : जब तुम किसी आलिम को देखो (या किसी भी मुसलमान को देखो) कि किसी बिदअती या फ़ासिक़ के पास जाता है और तुम्हें डर हो कि

उस की बिदअत व फ़िस्क़ उस में सरायत कर जाएगा तो तुम्हें चाहिये कि उस की बिदअत और फ़िस्क़ उस पर ज़ाहिर कर दो, जब कि मक़सद अच्छा हो। इसी तरह जब कोई शख़्स गुलाम ख़रीदे (या कोई भी चीज ख़रीदे) और तुम्हें मालूम है कि गुलाम में या फ़लां चीज़ में यह कमी है तो तुम उस के ऐब को बता सकते हो क्यों कि तुम्हारी ख़ामोशी से ख़रीदार को नुक़सान होगा उस जगह ख़रीदार की रिआयत बहुत ज़रूरी है। इसी तरह अगर शादी के सिलसिले में किसी से मशवरा लिया जाए या किसी के पास अमानत रखने के बारे में राए मांगी जाए तो उसे चाहिये कि मशवरा मांगने वाले को ख़ैर ख़्वाही के साथ जो कुछ मालूम है, बता दे ग़ीबत न होगी। अगर उसे मालूम हो कि सिर्फ़ मना करने से वह उस के साथ निकाह करने से बाज़ रहेगा तो बताना वाजिब है और अगर उसे मालूम हो कि जब तक उस का ऐब न बताया जाए यह बाज़ नहीं आएगा तो वाज़ेह अलफ़ाज़ में बता दे (ग़ीबत नहीं होगी) क्यों कि :

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम फ़ाजिर का ज़िक्र करने से रुकते हो, उस का पर्दा फ़ाश करो ताकि लोग उस को पहचान लें।

اُذْكُرُوْهُ بِمَا فِيْهِ حَتّٰى يَحْذَرَ النَّاسُ

और उस में जो ख़राबी हो उस को बयान करो ताकि लोग उस से बचें।

(सुनने कुबरा, बैहक़ी, जि. 10, स. 210)

और जो शख़्स खुल्लम खुल्ला (अलल ऐलान) फ़िस्क़ का मुरतकिब हो (यानी गुनाह के काम करता हो) जैसे हिजड़ा, शराब की मजलिस क़ाइम करने वाला और ऐलानिया शराब पीने वाला और ज़ुलमन लोगों को माल लेने वाला। यह लोग (अलल ऐलान) खुल्लम खुल्ला यह काम करते हों और अगर कोई शख़्स उन की यह बुराई बयान करे तो महसूस न करते हों और न ही पसन्दीदगी का इज़हार करें। अब अगर तुम उन से उन गुनाहों का ज़िक्र करो तो कोई हरज नहीं।

हदीस शरीफ़ : अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ اَلْقٰى جِلْبَابَ الْحَيَاءِ عَنْ وَجْهِهٖ فَلَا غِيْبَةَ لَهٗ

यानी जो आदमी अपने चेहरे से हया की चादर हटा दे उस की ग़ीबत नहीं होती।

(सुनने कुबरा, बैहक़ी, जि. 10, स. 210)

हज़रत हसन बसरी का क़ौल कि तीन आदमी की ग़ीबत नहीं होती

हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि तीन आदमियों की ग़ीबत नहीं होती (1) नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर चलने वाला (2) ऐसा फ़ासिक़ जिस का फ़िस्क़ वाज़ेह हो (यानी ज़ाहिर हो) (3) और ज़ालिम हाकिम, यह तीन लोग अपने अफ़आल को

ज़ाहिर करते हैं और बाज़ औक़ात फ़ख़ भी करते हैं तो वह उस बयान को कैसे पसन्द करेंगे जब कि वह ज़ाहिर करने का इरादा करते हैं। अल बत्ता वह अमल जो ज़ाहिर नहीं करते उन का ज़िक्र करना गुनाह है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 238)

हज़रात ! सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हमारे प्यारे आक़ा रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक चाँद व सूरज से ज़्यादा रोशन और ज़ाहिर है कि :

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ

यानी सारे आमाल का दारोमदार नियतों पर है और दिलों के अहवाल को जानना हमारे इख़्तियार से बाहर की बात है। लिहाज़ा फ़ासिक़ व फ़ाजिर और अलल ऐलान गुनाह करने वाले से लोगों को आगाह किया जाएगा वर्ना दूसरे लोग भी इस फ़िस्क़ में मुब्तला हो सकते हैं ख़ास कर बद मज़हबों की। यानी वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी वग़ैरह जो अपनी तक़रीर व तहरीर की बुनियाद पर काफ़िर व मुरतद हैं उन से लोगों को बचाना और दूर रखना जभी मुमकिन है कि उन के बातिल अक़ाइद से लोगों को आगाह किया जाए यह बद मज़हब अलल ऐलान अपनी तक़रीरों में बयान करते हैं और अपनी किताबों में लिख रखा है तो ज़रूरी हुआ कि उन के गन्दे अक़ीदे अलल ऐलान तक़रीरों में बयान किये जाएं और किताबों में छाप कर लोगों को आगाह किया जाए।

जैसे मुलाहज़ा कीजिये :

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा, अल्लाह तआला के मुतअल्लिक़

(1) ग़ैर मुक़ल्लिद अहले हदीस कहलाने वाले वहाबियों के शैख़ुल इस्लाम, इमाम व मुजद्दिद इब्ने तीमिया नजदी का अक़ीदा कि :

إِنَّهُ بِقَدْرِ الْعَرْشِ لَا أَصْغَرَ وَلَا أَكْبَرَ

तर्जमा : अल्लाह तआला अर्श के बराबर है न छोटा है न बड़ा।

(फतावा हुदैबिया, स. 100, मतबुआ मिस्र)

(2) ग़ैर मुक़ल्लिद, अहले हदीस कहलाने वाले वहाबी, देवबन्दी और तब्लीग़ी जमाअत के इमाम व पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी का अक़ीदा कि ख़ुदाए तआला झूट बोल सकता है। (रिसाला यक रोज़ी, स. 145)

और ! वहाबी, देवन्बदी जमाअत के पीरो मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही का अक़ीदा कि अल्लाह तआला झूट बोल सकता है। (फ़तावा रशीदिया, स. 113)

हज़रात ! अल्लाह तआला की ज़ात पर झूट का धब्बा लगाना, वहाबियों,. देवबन्दियों का शेवा है जैसा कि आप हज़रात ने मुलाहज़ा कर लिया।

ईमान वालों का अक़ीदा कि अल्लाह तआला हर ऐब से पाक है

मशहूर मुहद्दिस अहले सुन्नत के इमाम व पेशवा हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि :

(1) झूट बोलना ऐब है और अल्लाह तआला)की ज़ात) में ऐब होना मुहाल है।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 4, स.138)

और ! हम अहले सुन्नत के इमाम व पेशवा हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक और मक़ाम पर लिखते हैं कि ख़ुदाए तआला की ज़ात पर झूट का गुमान करना भी ईमान से ख़ारिज कर देता है। यानी कहने वाला काफ़िर हो जाता है। (तफ़सीरे कबीर, जि. 5, स. 179)

हज़रात ! हम अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि हमारा रहमान व रहीम अल्लाह तआला झूट और हर ऐब व नुक़्स से पाक है अल्लाह तआला इसी प्यारे अक़ीदे पर ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए आमीन सुम्मा आमीन।

वहाबियों, देवबन्दियों का अक़ीदा प्यारे नबी के मुतअल्लिक़

ग़ैर मुक़ल्लिद अहले हदीस कहलाने वाले मौलवी अहमद दीन का अक़ीदा कि :

(1) नबी को नूर समझने वाले और यहूदियों में कोई फ़र्क़ नहीं। (बुरहानुल हक़, स. 101)

और ! अहले हदीस कहलाने वालों का अक़ीदा कि :

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़ुदा का नूर मानना कुफ़्र है। (सहीफ़ए अहले हदीस कराची, स. 5, 28 नवम्बर 1954 ई.)

ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी ख़ुदा का नूर हैं : आशिक़े मुस्तफ़ा, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं और अलल ऐलान फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नूर हैं बल्कि फ़रमाते हैं कि :

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

और अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी का हक़ अदा करते हुए क़ुरआने मजीद सुबूत में पेश करते हैं :

अल्लाह तआला का इरशाद :

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ

तर्जमा : बे शक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब।

(पारा 6, रुकू7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि उलमा फ़रमाते हैं यहाँ नूर से मुराद, मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं। (मजमुआ रसाइले मस्अला नूर और साया, स. 62)

तमाम मुहद्देसीन और अइम्मा फ़रमाते हैं कि आयते करीमा में नूर से मुराद हुज़ूर, सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी है।

(तफ़सीरे इब्ने जोज़ी, जि. 2, स. 317)

हज़रात ! महबूबे ख़ुदा, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला का नूर न मानना कुरआने मजीद का इनकार है जो कुफ़्र है।

वहाबियों देवबन्दियों के इमाम व पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी का अक़ीदा कि :

(1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपना हाल कि क़ब्र में और क़ियामत के दिन मेरे साथ अच्छा होगा या नहीं , कुछ मालूम नहीं ।

(तक़वीयतुल ईमान, स. 41)

वहाबियों और देवबन्दियों के पेशवा मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी का अक़ीदा कि :

(2) रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है और लिखते हैं कि शैतान और मलकुल मौत के इल्म से रसूलुल्लाह का इल्म कम है। (बराहीने क़ातिआ, स. 51, मतबुआ कानपूर)

हज़रात ! ईमान वालों का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अल्लाह तआला का इरशाद :

وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا

तर्जमा : ऐ महबूब (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है। (पारा 5, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! अल्लाह तआला अपने प्यारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देता है और वहाबी इनकार करते हैं :

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

और तुम पर मेरे आक़ा की इनायत न सही
नजदियो कलमा पढ़ाने का भी एहसान गया

हदीस शरीफ़ : मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक बार हम में खड़े हो कर इब्तिदाए अफ़रीनिश से ले कर जन्नतियों के जन्नत और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में जाने तक का हाल हम से बयान फ़रमा दिया। (सही बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स. 1083)

हज़रात ! इसी तरह इल्मे ग़ैब के सुबूत में सही मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 290 पर और मिश्कात शरीफ़, स. 70 पर भी हदीस शरीफ़ मौजूद है मगर ! बे ईमान मुनाफ़िक़ को पूरा दफ़्तर और भरा समन्दर भी ना काफ़ी है।

ऐ ईमान वालो ! ऐसे मुनाफ़िक़ों, गुमराहों से क़ौम को आगाह करना और उन के मक्रो फ़रेब से लोगों के ईमान व अक़ीदा को बचाने के लिये उन की गुस्ताख़ी और गुमराही को अलल ऐलान बयान करना फ़र्ज़े ऐन है, ग़ीबत व बुराई नहीं है।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

चुग़ल ख़ोरी का फ़साद और अज़ाब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ۝ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۝

तर्जमा : ज़लील बहुत ताने देने वाला, बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला, भलाई से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, गुनाहगार, दरश्त ख़ू, उस सब पर तुर्रा यह कि उस की अस्ल में ख़ता। (पारा 29, रुकू 3, कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! गुनाह तो बहर हाल गुनाह है और मोमिन की शान है कि हर छोटे और बड़े गुनाह से अपने आप को महफ़ूज़ रखे, यही वजह है कि गुनाह आदमी को विलायत व बुज़ुर्गी से बहुत दूर कर देता है और गुनाह पर मुदावमत (हमेशगी) इख़्तियार करने वाला अल्लाह तआला के कुर्ब की मन्ज़िल से दूर रहता है और ऐसा शख़्स उस की दोस्ती की ख़ुश्बू से महरूम होता है।

चुग़ल ख़ोरी वह बद तरीन गुनाह है जिस की बदबू से चुग़ल ख़ोर घर और बाहर, सब जगह बदनाम और ग़ैर मोअ़तबर होकर रह जाता है। यह दुनिया का बहुत बड़ा अज़ाब है और चुग़ल ख़ोर के लिये आख़िरत का अज़ाब बहुत ही दर्दनाक है कि उस की क़ब्र में आग के शोअ़ले होंगे जिस में वह बुरी तरह जल रहा होगा और बरोज़े क़ियामत उस के मुंह पर आग का लगाम लगाया जाएगा जिस से उस की ज़बान और मुंह जलते रहेंगे। अल अमान वल हफ़ीज़।

हज़रात ! मज़कूरा आयते करीमा में ज़नीम का लफ़्ज़ है, ग़ौर से सुनिये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ज़नीम से मुराद वह शख़्स है जो अपने बाप का न हो और इस में उस बात की जानिब इशारा है कि जो शख़्स बात को नहीं छुपाता और चुग़ली खाता है तो यह उस के वलदुज़्ज़िना (यानी हरामी) होने की दलील है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 342)

चुग़ल ख़ोर का अन्जामे बद : महबूबे ख़ुदा, शाहे मदीना, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ نَمَّامٌ

चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स. 895, मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 10, मुस्नद अहमद, जि. 5, स. 311, मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 135, स. 586, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 343)

चुग़ली खाने वाले सब से बुरे हैं

शाहे तयबा, आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तुम में सब से बुरे वह लोग हैं जो चुग़ली खाते हैं, दोस्तों में फ़साद डालते हैं और बे ऐब लोगों में ऐब तलाश करते हैं।

(कन्ज़ुल उम्माला, जि. 3, स. 15, मुस्नद इमाम अहमद जि. 6, स. 459)

तीन क़िस्म के लोग जन्नत में नहीं जाएंगे

शाहे मदीना, राहते सीना, करम व बख़्शिश के गन्जीना, हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जब जन्नत को पैदा किया तो इरशाद फ़रमाया : मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम कि आठ क़िस्म के लोग तेरे अन्दर नहीं आएंगे। (उस में से यह लोग भी हैं)

(1) हमेशा शराब पीने वाला (2) बार बार ज़िना करने वाला (3) चुग़ल ख़ोर (4) बे ग़ैरत, वग़ैरह (मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 587)

चुग़ल ख़ोर की वजह से पूरी मजलिस की दुआ कुबूल नहीं हुई

हदीस शरीफ़ में है कि बनी इसराईल में एक दफ़ा क़हत पड़ा और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को ले कर दुआ के लिये निकले और बारिश के लिये दुआ की लेकिन बारिश न हुई तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ की कि ऐ रब्बुल आलमीन ! तू दुआ को शरफ़े कुबूलियत क्यों नहीं बख़्शता ? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम्हारी दुआ इस लिये मक़बूल नहीं हो रही है कि उन दुआ करने वालों में एक चुग़ल ख़ोर है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने मालूम किया कि या अल्लाह तआला वह कौन है ? कि मैं उस गुनाहगार को बाहर निकाल दूँ तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं चुग़ल ख़ोरी को पसन्द नहीं करता हूँ और चुग़ली खाने से मना करता हूँ तो यह क्यों कर हो कि मैं किसी की चुग़ली करूँ चुनाँचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने सारी क़ौम को चुग़ल ख़ोरी से तौबह करने की हिदायत की जब सब ने तौबह की तो बारिश हो गई।

(अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 345)

हज़रात ! चुग़ली खाना किस क़दर बुरा फ़ेअल है कि चुग़ल ख़ोर अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसे नबी की महफ़िल में मौजूद हो तो नबी की दुआ मक़बूल होने से रोक दी

जाती है तो हमारी मस्जिदों के अइम्मा हज़रात की दुआ क़ुबूल न होती हो तो कोई तअज्जुब की बात नहीं। इस लिये हमें मस्जिद व महफ़िल में जाने से पहले हर गुनाह ख़ास कर ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी से तौबह कर लेना चाहिये ताकि हमारी वजह से दूसरों की दुआ रद न हो।

चुग़ली की तारीफ़ : हज़रात ! चुग़ली क्या है ? और चुग़ली किस को कहते हैं, मुलाहज़ा कीजिये आलिमे रब्बानी, नाइबे मुस्तफ़ा, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि चुग़ली की तारीफ़ यह है कि जिस बात को ज़ाहिर करना ना पसन्दीदा हो उसे ज़ाहिर करना चुग़ली है।

और आम लोगों के नज़दीक चुग़ली की तारीफ़ यह है कि एक शख़्स किसी आदमी से जाकर कहता है कि फ़लां शख़्स तुम्हारे बारे में यह कहता था (तो यह भी चुग़ली है)।

(अहयाउल उलूम शरीफ, जि. 3, स. 346)

और ! लिखते हैं कि जब किसी शख़्स के सामने चुग़ली पेश हो और कहा जाए कि फ़लां शख़्स ने तुम्हारे बारे में यह बात कही है या तेरे हक़ में फ़लां काम किया है या वह तेरे मुआमले को ख़राब करना चाहता है ! तो उस आदमी पर (जिस के सामने यह बातें की गई हों) पांच बातें लाज़िम हैं।

(1) वह शख़्स उस की तस्दीक़ न करे। क्यों कि चुग़ल ख़ोर फ़ासिक़ होता है और उस की गवाही मरदूद है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो कि कहीं किसी क़ौम को बे जाने ईज़ा न दे बैठो। (पारा 26, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

(2) उस शख़्स को इस बात से मना कर दे और उस को नसीहत करे और उस के सामने उस के उस अमल (यानी चुग़ली खाने) की बुराई बयान करें।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक : وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ

तर्जमा : और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना करे।

(पारा 21, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

(3) अल्लाह तआला की रज़ा जोई के लिये उस से बुग़्ज़ रखे और उस आदमी से बुग़्ज़ रखने को पसन्द करे जो शख़्स अल्लाह तआला से बुग़्ज़ रखता है।

(4) और अपने ग़ाइब भाई के बारे में बद गुमानी न करे।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक है : اِجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो बे शक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

(पारा 26, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास एक चुग़ल ख़ोर

आदिल व मुत्तक़ी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अदालत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और उस ने किसी दूसरे से

कोई बात ज़िक्र की। (यानी चुग़ली खाई) तो आप ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआमले की तहक़ीक़ करें ! अगर तुम झूटे हुए तो इस आयत के मिस्दाक़ होगे।

اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا

तर्जमा : अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो। (पारा 26 रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और अगर तुम सचे हुए तो इस आयत के मिस्दाक़ होगे।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ

तर्जमा : बहुत ताने देने वाला, बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला। (पारा 29 रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआफ़ कर दें,. उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि अमीरुल मोमिनीन मुआफ़ कर दीजिये आइन्दा मैं ऐसा नहीं करूँगा । (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 347)

ऐ ईमान वालो ! हमारे अस्लाफ़, अल्लाह वाले, ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी को सुनते भी नहीं थे बल्कि चुग़ल ख़ोर को बहुत ज़्यादा बुरा और ना पसन्द समझते थे और आज के दौर में ग़ीबत करने वाले और चुग़ली खाने वाले को दोस्त और ख़ैर ख़्वाह समझा जाता है, जिस का नतीजा है कि घर घर में फ़ितना, फ़साद नज़र आ रहा है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

नाइबे मुस्तफ़ा हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स तेरे पास (किसी और की) चुग़ली खाता है (बुराई करता है) वह शख़्स तेरे ख़िलाफ़ (दूसरे के पास) भी चुग़ली खाता होगा।

लिहाज़ा ! चुग़ल ख़ोर को ना पसन्द किया जाए और उस को बुरा जाना जाए और उस की बात का एतिबार न किया जाए और न ही उस को सच्चा जाना जाए।

(अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 347)

हज़रत मौला अली और एक चुग़ल ख़ोर : सर चश्मए विलायत, मेरे आक़ा, इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के वालिदे गिरामी हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने एक शख़्स ने दूसरे आदमी की चुग़ली खाई तो आप ने फ़रमाया : ऐ फ़लां ! जो कुछ तुम ने कहा है हम उस के बारे में तहक़ीक़ करेंगे, अगर तुम सच्चे हुए तो हम तुम से नाराज़ होंगे और अगर तुम झूटे हुए तो हम तुम को सज़ा देंगे अब अगर तुम चाहो तो अपनी बात वापस ले लो, हम तुम्हें मुआफ़ कर देंगे उस शख़्स ने कहा अमीरुल मोमिनीन ! मुआफ़ कर दीजिये। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 348)

चुग़ली पर यक़ीन रखना चुग़ली खाने से ज़्यादा बुरा है

आलिमे रब्बानी हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत मुसइब बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे नज़दीक चुग़ली पर यक़ीन रखना चुग़ली खाने से ज़्यादा बुरा है।

और ! फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद बिन कअब क़रतबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा गया कि मोमिन की कौन सी आदत उस की क़दर को कम करती है ? तो फ़रमाया (1) ज़्यादा गुफ़्तुगू करना (2) राज़ फ़ाश करना (3) और हर एक की बात को मान लेना।

और तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत हम्माद बिन सलमा फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने गुलाम बेचा और ख़रीदार से कहा कि उस में चुग़ल ख़ोरी के अलावा कोई ऐब नहीं । उस ख़रीदार ने कहा कि मुझे मन्ज़ूर है। (यानी चुग़ली को हलका फुलका समझा तो उस का कितना भयानक अन्जाम हुआ मुलाहज़ा कीजिये) चुनाँचे उस ने गुलाम ख़रीद लिया और चन्द दिनों तक तो गुलाम ख़ामोश रहा फिर अपने मालिक की बीवी से कहने लगा कि मेरा मालिक तुझे पसन्द नहीं करता और वह शादी करके दूसरी औरत लाना चाहता है। (अगर तुम चाहती हो कि तुम्हारा शोहर दूसरी शादी न करे और तुम से महब्बत करे) तो तुम ऐसा करना कि जब रात को तुम्हारा शोहर सो जाए तो तुम एक उस्तरे से उस की दाढ़ी के चन्द बाल काट लेना ताकि मैं उस पर कोई अमल करूँ और तुम्हारा शोहर तुम से महब्बत करने लगेगा।

हज़रात ! (चुग़ल ख़ोर ने इस तरह उस औरत को बहकाया) फिर उसके शोहर के पास पहुँचा और कहने लगा (ऐ मेरे आक़ा) आप की बीवी ने किसी को दोस्त बना रखा है और वह तुम को क़त्ल करना चाहती है, अगर आप को मेरी बात पर यक़ीन न आए तो आज रात घर जाकर आँखें बन्द कर के यूँ लेट जाएं जैसे सो रहे हों , आप को ख़ुद ब ख़ुद मेरी बात का यक़ीन हो जाएगा। आदमी ने उस की बातों पर यक़ीन कर लिया और दिखावे के तौर पर सोया रहा और औरत उस्तरा ले कर आई ताकि दाढ़ी के बाल काटे शोहर उठ गया और सोचा कि वाक़ई उस की बीवी उस को क़त्ल करना चाहती है और उस ने बीवी को क़त्ल कर दिया औरत के घर वाले आए तो उन्हों ने उस आदमी को क़त्ल कर दिया और इस तरह चुग़ल ख़ोर की बात में आकर मियां बीवी दोनों क़त्ल हो गए। और दो ख़ानदानों के दरमियान जंग जारी हो गई। (अहयाउल उलूम शरीफ, जि. 3, स. 351)

हज़रात ! यह है चुग़ल ख़ोर की बात सुनने का अन्जाम कि घर का घर तबाह व बरबाद हो गया। अल अमान वल हफ़ीज़।

हज़रत लुक़मान की नसीहत : हज़रत लुक़मान हकीम ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ बेटा ! मैं तुम्हें चन्द बातों की नसीहत करता हूँ अगर तुम उन पर अमल करते रहे तो हमेशा तुम सरदार रहोगे।

(1) मख़लूक़ से अच्छा सुलूक करो वह क़रीबी हों या दूर के। (2) इज़्ज़त दार और कमीने दोनों से जहालत (बुराई) को दूर करो। (3) और क़रीबी रिश्तेदारों से सिला रहमी करो। चुग़ल ख़ोर की बात को हर गिज़ न मानो और चुग़ल ख़ोर से उन को महफ़ूज़ रखो और किसी फ़सादी की बात न सुनो और फ़रेब देने वाले की बात न मानो। (4) और तुम्हारे दोस्त ऐसे लोग होना चाहिये कि जब तुम एक दूसरे से अलैहदा हो तो न तुम उन के ऐब बयान करो और न वह तुम्हारे ऐब बयान करें। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 350)

चुग़ल ख़ोर की क़ब्र में अज़ाब : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम एक सफ़र में महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हमराह थे हम दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : उन दोनों क़ब्रों वालों को अज़ाब हो रहा है और फ़रमाया : إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرٍ أَمَّا أَحَدُهُمَا فَكَانَ لَا يَسْتَتِرُ مِنَ الْبَوْلِ وَأَمَّا الْآخَرُ فَكَانَ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ ٥

तर्जमा : बे शक उन दोनों क़ब्र वालों को अज़ाब हो रहा है और वह किसी कबीरा गुनाह की वजह से नहीं बल्कि एक तो पेशाब (के छींटें) से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ल ख़ोरी करता था। (सही बुख़ारी, स. 190, मुस्लिम, मश्कात शरीफ़, स. 42)

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक हरी शाख़ यानी तर शाख़ मंगवाई (खजूर या बबूल की) फिर उस को तोड़ कर आधी एक क़ब्र पर और आधी दूसरी क़ब्र पर रख दिया और फ़रमाया।

सुनो ! जब तक यह शाख़ हरी और ताज़ा रहेगी (तो अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करेगी) तो उन क़ब्र वालों के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होती रहेगी।

(सही बुख़ारी ,स. 190, मुस्लिम, मिश्कात शरीफ़, स. 42)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ की रोशनी में बुज़ुर्गों ने इस बात को साबित किया है कि मज़ारों और क़ब्रों पर फूल डालना नाजाइज़ व बिदअत नहीं बल्कि सुन्नत है।

और दूसरी बात ! इस हदीस शरीफ़ से यह मालूम हुई कि आक़ा करीम, अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब नबिये दो आलम, आलिमे मा काना वमा यकून, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ग़ैबदां हैं क़ब्र के ऊपर से मुशाहदा फ़रमाया कि उन दोनों क़ब्र वालों पर अज़ाब हो रहा है और यह भी देखा कि कौन सा अज़ाब हो रहा है और सहाबए किराम ने مَا كَانَ وَمَا يَكُونُ कह कर मान भी लिया कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जो बात बता रहे हैं वह हक़ और सच है।

तो साबित हुआ कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को आलिमे ग़ैब यानी ग़ैबदां मानना यह सहाबए किराम की सुन्नत है। अलहम्दु लिल्लाह ! हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा सहाबए किराम के मज़हब व मसलक पर आमिल हैं और हमारा ईमान है कि हमारे प्यारे नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आलिमे मा काना वमा यकून और ग़ैब दां हैं।

वहाबियों का अक़ीदा

हज़रात ! और वहाबी, देवन्बदी का अक़ीदा मुलाहज़ा कीजिये। और उन से बचते रहिये।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपना हाल मालूम नहीं: वहाबियों देवबन्दियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी का अक़ीदा कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना हाल कि क़ब्र में और क़ियामत के दिन मेरे साथ अच्छा होगा या नहीं कुछ मालूम नहीं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 41)

रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं : वहाबियों देवबन्दियों के मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी का अक़ीदा कि :

रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है और लिखते हैं कि शैतान और मलकुल मौत के इल्म से रसूलुल्लाह का इल्म कम है और जो रसूलुल्लाह का इल्म साबित करे वह मुश्रिक है। (बराहीने क़ातिआ, स. 51, मतबुआ कानपूर)

हज़रात ! वहाबी देवबन्दी कितने बद तरीन मु[illegible]फ़िक़ हैं कि शैतान जैसे मरदूद के लिये इल्मे ग़ैब मान रहे हैं और महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म का इनकार करते हैं सच है कि जैसों को तैसा।

चुग़ल ख़ोर की क़ब्र में आग ही आग : हज़रत अम्र बिन दीनार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मदीना तैय्यिबा में एक शख़्स रहता था जिस की बहन मदीना तैय्यिबा के क़रीब इलाक़े में रहती थी, वह बीमार हो गई तो यह शख़्स बहन की तीमार दारी में लगा रहा लेकिन वह मर गई तो उस शख़्स ने उस की तजहीज़ व तकफ़ीन का इन्तिज़ाम किया, आख़िर जब उसे दफ़्न कर के वापस आया तो उसे याद आया कि वह रुपयों की एक थेली क़ब्र में ही भूल आया है उस शख़्स ने अपने एक दोस्त का सहारा लिया और दोनों ने क़ब्र को खोद कर रुपयों की थेली निकाल ली तो उस शख़्स ने दोस्त से कहा कि ज़रा मैं देखूँ तो सही कि मेरी बहन किस हाल में है। उस शख़्स ने क़ब्र में झाँक कर देखा तो क़ब्र में आग ही आग है और उस की बहन आग में जल रही है उस शख़्स ने (जल्दी जल्दी क़ब्र को ढका) और चुप चाप आया और मां से पूछा कि मेरी बहन में क्या ख़राब आदत थी ? तो मां ने कहा कि तेरी बहन की आदत थी कि पड़ोसियों के दरवाज़ों से कान लगा कर उन की बातें सुनती थी और चुग़ल ख़ोरी किया करती थी।

पस ! उस शख़्स को मालूम हो गया कि अज़ाब का सबब किया है। तो जो शख़्स अज़ाबे क़ब्र से रुस्तगारी (छुटकारा) चाहता है उस को चाहिये कि वह ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी से परहेज़ करे। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 136)

दो मुंह वाला सब से बुरा

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

تَجِدُوْنَ مِنْ شَرِّ عِبَادِ اللّٰهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ذَا الْوَجْهَيْنِ يَأْتِيْ هٰؤُلَاءِ بِحَدِيْثٍ وَهٰؤُلَاءِ بِحَدِيْثٍ

यानी क़ियामत के दिन तुम उस शख़्स को सब से बुरा आदमी पाओगे जिस के दो मुंह हैं इन लोगों से वह और बात करता है और उन लोगों से दूसरी बात।

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 496 सही मुस्लिम, जि. 2, स. 325, मिश्कात, स. 411)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ كَانَ لَهُ وَجْهَانِ فِي الدُّنْيَا كَانَ لَهُ لِسَانَانِ مِنْ نَارٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ○

यानी जो शख़्स दुनिया में दो चेहरों वाला होता है क़ियामत के दिन उस की दो ज़बानें आग की होंगी। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 312)

हज़रात! अल्लाह तआला दो मुंह वाला होने से बचाए। यानी मुंह पर कुछ, पीठ पीछे कुछ, इस के पास कुछ, उस के पास कुछ।

ऐसे ही शख़्स को हदीस शरीफ़ में दो मुंह वाला कहा गया है।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

चौथा जुमा .... पहला बयान

इस्लाम में अदब का मक़ाम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِی الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! हुक्म मानो अल्लाह का, और हुक्म मानो रसूल का, और उनका जो तुम में हुकूमत वाले हैं। (पारा 5, रुकू 5, कंजुल ईमान)

हज़रात ! तफ़सीराते अहमदिया में है कि हमारे हुज़ूर नूरुल अला नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक लश्कर जिहाद के लिये भेजा और लश्कर के अमीर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे और हज़रत अम्मार बिन यासिर सिपाही थे। जब लश्करे इस्लाम कुफ़्फ़ार के शहर के क़रीब पहुँचा तो कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ से भाग गए, सिर्फ़ एक शख़्स बाक़ी रहा जो छुप कर हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ेमा में आ गया और अमान हासिल कर ली। सुबह के वक़्त हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ेमा में आ गया और अमान हासिल कर ली। सुबह के वक़्त हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसे गिरफ़्तार कर लिया और उस के माल को माले ग़नीमत में भेज दिया। हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी अमान की ख़बर दी तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुने उसे गिरफ़्तार कर लिया और उस के माल को माले ग़नीमत में भेज दिया। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी अमान की ख़बर दी तो हज़रत ख़ालिद बिनवलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं अमीरे लश्कर था, तुम ने मेरी इजाज़त के बग़ैर उस को अमान क्यों दी ? और उन की बात न मानी।

जब लश्करे इस्लाम फ़तह व ज़फ़र के साथ मदीना तैय्यिबा में हाज़िर हुआ तो यह मुआमला बारगाहे नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में पेश हुआ। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अमान क़ाइम रखी और क़ैदी को छोड़ दिया और आइन्दा के लिये हुक्म दिया कि अमीर की इजाज़त के बग़ैर कोई किसी को अमान न दे। इस पर हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुछ तअन आमेज़ बात हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कही तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अगर इस मजलिसे पाक का एहतिराम न होता तो उस ग़ुलाम को मैं जवाब देता (हज़रत अम्मार हाशिम बिन मुग़ीरा के ग़ुलाम थे) आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ ख़ालिद! अम्मार की रज़ा में ख़ुदा की रज़ा है और अम्मार के ग़ज़ब में ख़ुदा का ग़ज़ब है। बात ख़त्म हो गई। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुआफ़ी चाही। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

आयते करीमा : يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं। (पारा 5, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! आज का मौज़ूअ़ है इस्लाम में अदब व ताज़ीम का मक़ाम।

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में शआइरिल्लाह के अदब व ताज़ीम का हुक्म फ़रमाया।

अल्लाह तआला का इरशाद : وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝

तर्जमा : और जो अल्लाह के निशानों की ताज़ीम करे तो यह दिलों की परहेज़ गारी से है।

(पारा 17, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आयते करीमा से साफ़ ज़ाहिर और साबित है कि शआइरिल्लाह का अदब और ताज़ीम इस्लाम का एक बड़ा हिस्सा है।

चुनाँचे एक शख़्स ने आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप के नज़दीक अदब व ताज़ीम का क्या दरजा है ? तो महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया اَلْاِسْلَامُ كُلُّهٗ اَدَبٌ

यानी इस्लाम मुकम्मल अदब है। हमारे इस्लाम में बे अदबी की कहीं गुन्जाइश नहीं है।

हज़रात ! हर चीज़ की ताज़ीम उस के मुनासिब की जाएगी जैसे अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अदब और ताज़ीम यह है कि उन के हुक्म पर अमल किया जाए और उन की ना फ़रमानी से बाज़ रहा जाए वग़ैरह। कअ़बा मुअज़्ज़मा का अदब यह है कि उस की तरफ़ पाऊँ न किया जाए और मुंह या पुश्त कर के पाख़ाना या पेशाब न किया जाए वग़ैरह। मस्जिद का अदब यह है कि नापाकी की हालत में उस

में दाख़िल न हो और उस में दुनियावी गुफ़्तुगू न करे वग़ैरह। माहे रमज़ान का अदब यह है कि उस महीने में रोज़ा व तिलावते कुरआन का पाबन्द रहे और अगर माज़ूर रोज़ा न भी रखे तब भी सब के सामने न खाए, न पिये वग़ैरह। कुरआने करीम का अदब यह है कि ख़ामोशी से सुने और बा अदब उस की तिलावत करे वग़ैरह।

सहाबए किराम का अदब

हदीस शरीफ़ : हज़रत उसामा बिन शुरेक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

اَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَصْحَابُهٗ حَوْلَهٗ كَاَنَّمَا عَلٰى رُءُوْسِهِمُ الطَّيْرُ

तर्जमा : मैं आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सहाबा आस पास बैठे थे, ऐसे कि गोया उन के सरों पर परिन्दे बैठे हैं। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 31)

हज़रात! महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मक़ाम समझना है और बारगाहे मुस्तफ़ा का अदब व एहितराम सीखना है तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से सीखिये, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर का अदब : महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अदब का यह आलम था कि आप नमाज़ पढ़ा रहे थे कि दरमियाने नमाज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहुत आला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अदब की वजह से मुसल्ला छोड़ कर पीछे हट गए। नमाज़ के बाद आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ अबू बक्र तुझे किस चीज़ ने रोका था कि तू साबित रहता, जब कि मैंने तुझे हुक्म दिया।

فَقَالَ اَبُوْ بَكْرٍ مَا كَانَ لِابْنِ اَبِيْ قُحَافَةَ اَنْ يُّصَلِّيَ بَيْنَ يَدَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि अबू क़हाफ़ा के बेटे को लाइक़ न था कि नमाज़ पढ़ाए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आगे। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 94)

ऐ ईमान वालो ! ग़ौर करो ! कि महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ जैसी अफ़ज़ल इबादत में भी आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अदब व एहतिराम का ख़याल रखा और सरकार सल्लल्लाहु तअला अलैहि व आलिही वसल्लम के आने पर हालते नमाज़ में मुसल्ले से पीछे आ गए। इसी अदब ने आप को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाइब व ख़लीफ़ा बने और बादे विसाल पहलूए महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में मदफ़ून हुए और कियामत तक के लिये यारे मज़ार बने।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

महबूबे रब्बे अर्श है उस सब्ज़ कुबह में
पहलू में जलवा गाह अतीक़ो उमर की है

दुरूद शरीफ़ :

मूए मुबारक का अदब : सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाल शरीफ़ का अदब व एहतिराम बहुत ही शान व शौकत से करते थे और महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मूए मुबारक को दुनिया और उस की तमाम चीज़ों से ज़्यादा क़ीमती समझते थे, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

لَقَدْ رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْحَلَّاقُ يَحْلِقُهٗ وَاَطَافَ بِهٖ
اَصْحَابُهٗ فَمَا يُرِيْدُوْنَ اَنْ تَقَعَ شَعْرَةٌ اِلَّا فِيْ يَدِ رَجُلٍ

यानी बे शक मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा, जबकि हज्जाम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाल बना रहा था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबा आप सल्ललल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के (चारों तरफ़) इर्द गिर्द फिर रहे थे और उस ख़याल में रहते थे कि कोई बाल शरीफ़ गिरे मगर किसी के हाथ में (यानी आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का कोई बाल शरीफ़ ज़मीन पर न गिरने पाए) (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 31)

अल्लाहु अकबर ! किस शान का अदब था। और जब बाल शरीफ़ के साथ अदब व महब्बत का यह आलम था तो ख़ुद आक़ा करीम मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते अक़दस के साथ अदब व महब्बत का आलम क्या रहा होगा।

आला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

इमाम मालिक का अदब : (1) हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु चालीस साल तक मदीना तैय्यिबा में रहे मगर कभी पाख़ाना और पेशाब न किया और न ही अपने पाओं में जूते और चप्पल पहने। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 33)

(2) हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहुतआला अन्हु के पास जब महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र शरीफ़ किया जाता तो उन के चेहरे का रंग बदल जाता और झुक जाते अदब व ताज़ीम की वजह से। यहाँ तक कि कुछ लोगों पर गिरां गुज़रा। तो हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :

لَوْ رَاَيْتُمْ مَا رَاَيْتُ لَمَا اَنْكَرْتُمْ عَلَيَّ مَا تَرَوْنَ۔

यानी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अज़मत का मक़ाम मैं जानता हूँ अगर तुम जानते तो हर गिज़ इनकार न करते वह जो मुझ पर तुम देखते हो।

(शिफ़ा शरीफ़, स. जि. 2, स. 33)

(3) हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में अगर कोई शख़्स मस्अला दरयाफ़्त करने आता तो उसी वक़्त मस्अला बता देते और अगर कहता कि हदीस शरीफ़ पूछने आया हूँ तो आप ग़ुस्ल फ़रमाते और नए कपड़े पहनते, अमामा शरीफ़ बाँधते और ख़ुश्बू लगाते और आप के लिये एक ख़ास कुर्सी बिछाई जाती उस पर बैठते और निहायत अदब व वक़ार से हदीस शरीफ़ बयान फ़रमाते और जब तक हदीस शरीफ़ बयान फ़रमाते रहते ख़ुश्बू सुलगती रहती।

(शिफा शरीफ, जि. 2, स. 36, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 163, अनवारे मुहम्मदिया, स. 317)

(4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहुत आला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर था और आप हदीस शरीफ़ बयान फ़रमा रहे थे कि आप को बिच्छू ने सोलह या सतरह मरतबा काटा, आप के चेहरे का रंग ज़र्द हो गया मगर आप ने हदीस बयान करने को क़तअ न किया और जब हदीस शरीफ़ बयान कर चुके तो मैं ने हाल मालूम किया तो फ़रमाया कि आज मेरे हदीस बयान करने में बिच्छू ने सोलह या सतरह मरतबा काटा और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अज़मत और अदब के बाइस सब्र के साथ हदीस बयान करता रहा। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 36, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 162, अनवारे मुहम्मदिया, स. 317)

ऐ ईमान वालो ! यह अदब व ताज़ीम थी हमारे बुज़ुर्गों की महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे आलिया में लिहाज़ा हम को भी बुज़ुर्गों की इत्तिबाअ में अपने मुशफ़िक़ नबी और महरबान रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह का मुकम्मल अदब व एहतिराम करना चाहिये।

बे अदब, बद नसीब को ख़ुदा ही जाने
बा अदब बड़े ख़ुश नसीब होते हैं

हज़रात ! कुरआन व हदीस के फ़रमान और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और बुज़ुरगाने दीन के अक़वाल व अहवाल से रोज़े रौशन से ज़्यादा ज़ाहिर और साबित हुआ कि अदब व एहितराम करने वाले बड़े ख़ुश नसीब और अल्लाह वाले होते हैं और अदब करने वाले किस क़दर नवाज़े जाते हैं मुलाहज़ा कीजिये।

नामे मुबारक के अदब की वजह से दो सौ बरस का गुनाहगार बख़्शा गया

हज़रत वहब बिन मुंबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि : बनी इसराईल में एक शख़्स बहुत बड़ा गुनाहगार था जिस ने दो सो बरस तक अल्लाह तआला की ना फ़रमानी की, जब वह शख़्स मर गया तो लोगों ने उस को ऐसी जगह में फेंक दिया जहाँ शहर की गन्दगी, कूड़ा करकट डाला जाता था। उस वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर वही आई कि उस शख़्स को गन्दी जगह से उठा कर लाओ और उस गुस्ल दे कर उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो और क़ब्रिस्तान में दफ़्न करो ! हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह तआला ! बनी इसराईल गवाही देते हैं कि वह शख़्स दो सो बरस तक तेरी ना फ़रमानी करता रहा तो अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि यह सच है, लेकिन उस की आदत थी कि जब वह तौरात खोलता।

وَنَظَرَ اِسْمَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّلَهُ وَوَضَعَهُ عَلٰى عَيْنَيْهِ وَصَلّٰى عَلَيْهِ
فَشَكَرْتُ ذَالِكَ لَهُ وَغَفَرْتُ ذُنُوْبَهُ وَزَوَّجْتُهُ سَبْعِيْنَ حُوْرَاءَ

(हिलयतुल औयिा, अबू नुएम, सीरते हलबिया, जि. 1, स. 80 मुआरिजुन्नुबुव्वत, स. 82)

और मेरे महबूब, मुहम्मद सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे मुबारक को देखता तो उस को चूम कर आँखों पर रख लेता और उन पर दुरूद पढ़ता इस लिये मैं ने उस को बख़्श दिया और सत्तर हूरें उस के निकाह में दीं।

हज़रात ! महब्बत और अदब कितनी बड़ी नेअमत है कि दो सो बरस का गुनाहगार आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे मुबारक का अदब वमहब्बत करने और चूमने की वजह से बख़्श दिया गया और वह शख़्स जन्नती हो गया।

कुरआने करीम के अदब से जन्नत मिली : तारीख़े इस्लाम में नेक व मुत्तक़ी बादशाह व अमीर कम हुए हैं,. उन्हीं नेकों में हज़रत महमूद ग़ज़नवी बादशाह का नाम भी रौशन है, महमूद ग़ज़नवी बादशाह अपने ख़ास कमरे में तशरीफ़ लाए कि आराम करें देख कि अल्लाह का कलाम कुरआने मजीद ताक़ में रखा हुआ है, ख़याल आया कि मैं उस कमरे में पाओं फेला कर आराम करूँ जिस में कुरआने करीम रखा है उठे और कुरआने करीम को दूसरे कमरे में रख आए। फिर ख़याल आया कि तुम ने किया क्या, यह अदब के ख़िलाफ़ है अदब तो यह था कि तुम को दूसरे कमरे में जाकर सोना चाहिये और कलामे इलाही कुरआने करीम को अपनी जगह पर ही रहने देना चाहिये था। फिर उठे और कुरआने करीम को ला कर पहले वाली जगह पर रखा और ख़ुद दूसरे कमरे में ज़ाकर सोए। कुरआने करीम का यह अदब अल्लाह तआला को पसन्द आ गया, इन्तिक़ाल के बाद ख़्वाब में देखा गया तो बहुत ख़ुश नज़र आए। तो सवाल किया कि मरने के बाद आप के साथ क्या सुलूक हुआ ? तो हज़रत महमूद ग़ज़नवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया कि कुरआने करीम के अदब की वजह से अल्लाह

तआला ने मुझ को बख़्श दिया। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 21,22)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! अदब व एहितराम खुश नसीब हज़रात ही करते हैं और अदब व एहतिराम के सिले में अल्लाह तआला उस शख़्स का ठिकाना जन्नत बना देता है।

अज़ान के अदब से जन्नत मिली

मलका ज़ुबैदा बादशाह हारून रशीद की बीवी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करने वाली नेक ख़ातून थीं।

एक रोज़ की बात है कि मलका ज़ुबैदा ने पीने के लिये पानी तलब किया, ख़ादिमा ने पानी का गिलास ला कर हाज़िर किया, ख़ादिमा के हाथ से पानी का गिलास अपने हाथ में लिया ही था कि अज़ान की आवाज़ आई, फ़ौरन पानी का गिलास रख दिया और अज़ान सुनने और उस का जवाब देने में लग गईं, अज़ान का अदब किया और उस वक़्त तक पानी न पिया जब तक अज़ान होती रही।

हज़रत ज़ुबैदा रहमतुल्लाहि तआला अलैहा का जब इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत ज़ुबैदा जन्नत के बाग़ों में टहल रही हैं तो उन से पूछा गया कि आप को यह दर्जा किस वजह से नसीब हुआ है तो हज़रत मलका ज़ुबैदा ने जवाब दिया कि अज़ान के अदब से नजात व बख़्शिश और जन्नत मिली है।

गुनाहगार बन्दी ने वली का अदब किया तो जन्नती हो गई

उलमा के बयान में सुना गया है कि हज़रत ज़करिया मुल्तानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहर के बाज़ार से गुज़र रहे थे, सारा शहर आप के अदब व एहितराम में दस्त बस्ता खड़ा था, एक तवाइफ़ अपने यारों के साथ कोठे पर बेठी थी, आवाज़ कानों में पड़ी कि अल्लाह के वली हज़रत ज़करिया मुलतानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ ला रहे हैं,. अदब से खड़े हो जाओ। इतना सुनना था कि उस तवाइफ़ ने यारों की महफ़िल को छोड़ा और बड़ी तेज़ी के साथ ऊपर से उतर कर नीचे आ गई और दरवाज़े की आड़ से अल्लाह तआला के वली हज़रत ज़करिया मुलतानी रज़ियल्लाहु अन्हु का दीदार किया। अल्लाह तआला के वली हज़रत ज़करिया मुल्तानी रज़ियल्लाहु तआला अहु तशरीफ़ ले गए और वह तवाइफ़ अपनी जगह पर पहुँची तो उस के यारों ने उस से पूछा कि अगर अल्लाह वाले का दीदार करना था तो मकान के ऊपर से दीदार ज़्यादा आसान था, नीचे जाने की कोई हाजत न थी। तो तवाइफ़ ने जराब दिया कि सिर्फ़ दीदार ही मक़सूद न था बल्कि अल्लाह के वली का अदब करना भी मक़सूद था कि मैं ग़न्दी बन्दी ऊपर रहूँ और अल्लाह तआला का पाक व नेक बन्दा नीचे रहे। इस लिये मैं नीचे हाज़िर हो गई कि अल्लाह वाले का अदब भी मलहूज़ रहे और दीदार भी हो जाए। उस तवाइफ़ का इन्तिक़ाल हो गया तो एक अल्लाह वाले ने ख़्वाब में देखा कि वह तवाइफ़ जन्नत में है तो उस से मालूम किया कि कौन सी नेकी तुम ने की थी जिस की वजह से

अल्लाह तआला ने तुम को जन्नत नसीब की तो तवाइफ़ ने जवाब दिया कि मेरे आमाल का बदला तो जहन्नम ही था लेकिन अल्लाह तआला के वली हज़रत ज़करिया मुल्तानी के अदब करने की वजह से अल्लाह तआला ने मुझ को बख़्श दिया और जन्नत मेरा मकान है।

जिस को जो मिला अदब से मिला : सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह के अदब ने चमकाया।

ताबईन अलैहिमुर्रिज़वान को सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के अदब ने चमकाया

हमारे पीरे आज़म, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि अदब से ही आदमी संवरता है।

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुईनुद्दीन को जो कुछ मिला है पीरो मुर्शिद की ख़िदमत और अदब से मिला है। आला हज़रत, मुजद्दिदे आज़म, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी और आले नबी के अदब से आला हज़रत बने और चमक गए।

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(6)

जुमादल उख़रा

गुफ़्तगू और ख़ामोशी

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ اَلَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ ۝

तर्जमा : बे शक मुराद को पहुँचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं और वह जो किसी बे हूदा बात की तरफ़ इलतिफ़ात नहीं करते। (पारा 18, रूकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हदीस शरीफ़ : मेरे आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَقَامُ الرَّجُلِ بِالصَّمْتِ اَفْضَلُ مِنْ عِبَادَةِ سِتِّیْنَ سَنَةً ۝

यानी मर्द का चुप रहना साठ साल की इबादत (जो कसरते कलाम के साथ हो) बहतर है। (मिश्कात शरीफ़, स. 414))

हज़रत उक़बा बिन आमिर से रिवायत है कि मैं ने अल्लाह तआला के हबीब हम बीमारों के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पूछा कि مَا النَّجَاةُ यानी नजात किस बात में है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَمْلِكْ عَلَيْكَ لِسَانَكَ ۝ यानी अपनी ज़बान की हिफ़ाज़ करो। (मिश्कात, स. 413)

ख़ामोशी भी आमाल में अफ़ज़ल है : हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैं ने मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से एक मरतबा सवाल किया कि तमाम आमाल में कौन सा अमल सब से ज़्यादा अफ़ज़ल है ? तो मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी ज़बाने मुबारक मुंह से निकाली और उस पर उंगली रख कर फ़रमाया कि ख़ामोशी। (कीमियाए सआदत, स. 370)

ख़ामोशी में रहमत ही रहमत है : आलिमे रब्बानी हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि इबादत दस तरह की है उन में नो इबादत तो ख़ामोशी में है और एक लोगों से भागना है। (कीमियाए सआदत, स. 311)

हज़रात ! अक़्ल मन्द आदमी वह शख़्स है जो ख़ामोश रहने को पसन्द करता है और क़िस्म क़िस्म की ज़हमतों और शर्मिन्दगी से महफ़ूज़ व मामून रहता है और नादान शख़्स वह है जो ख़ामोश रहना तो जानता ही नहीं और ज़्यादा बोल कर ज़हमत ही उठाता है और लोगों के बीच में शर्मिन्दा भी होता नज़र आता है।

जो अपनी ज़बान और शर्म गाह की हिफ़ाज़त करे वह जन्नती है

हदीस (1) : हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स मुझे अपनी दाढ़ों और टांगों के दरमियान वाली चीज़ों (यानी ज़बान और शर्मगाह) की ज़मानत दे मैं उस को जन्नत की ज़मानत देता हूँ। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 66)

हदीस (2) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि शाहे मदीना, सरवरे क़ल्बो सीना, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिस ने दाढ़ों और टांगों वाली चीज़ों (यानी ज़बान और शर्मगाहों को बुराई से बचा लिया वह जन्नत में दाख़िल होगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 66)

अच्छी बात सदक़ा है : हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया कि आफ़ताबे नुबुव्वत, महताबे रिसालत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अच्छी बात भी सदक़ा है। (बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 1, स. 324)

फ़हश कलाम करने वाले पर जन्नत हराम है

महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : फ़हश कलाम (यानी बुरी बात) करनेवाले पर जन्नत हराम है। (कीमियाए सआदत)

आपस में हंसी मज़ाक़ करना मना है : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : आपस में हंसी मज़ाक़ मत किया करो कि दिलों में नफ़रत पैदा हो जाती है और क़ुलूब बुराई की तरफ़ लग जाते हैं। (कीमियाए सआदत)

हज़रात ! हंसी मज़ाक़ की महफ़िलों में शरीक होना सख़्त मना है। अब उन हज़रात का क्या हाल होगा जो फ़हश और बे हूदा ड्रामों के शौक़ीन हैं और नाजाइज़ मनाज़िर, हराम की जगहों पर देखते और दिल बहलाते हैं, ऐसे लोग इबरत हासिल करें।

फ़हश बात करने वाला क़ियामत के दिन कुत्ते की शक्ल में होगा

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत इब्राहीम बिन मैसरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान फ़रमाया कि फ़हश कलाम करने वाला (यानी बे हयाई की बातें करने वाला) क़ियामत के रोज़ कुत्ते की शक्ल में आएगा। (कीमियाए सआदत)

गाना भी फ़हश कलामी में दाख़िल है : हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : كَسْبُ الْمُغَنِّيْ وَالْمُغَنِّيَةِ حَرَامٌ

यानी गाने वाले मर्द और गाने वाली औरत की कमाई हराम है। (अल मुदख़ल, जि. 3, स. 102)

हज़रात ! नाचने और गाने वाले मर्दो और औरतों पर बहुत से मुसलमान फ़ख़्र करते नज़र आते हैं और अगर वह गाने और नाचने वाला शहर में आजाए तो बहुत से मुसलमान ऐसे फ़ासिक़ों को अपनी आफ़िसों और घरों में लेजाते हैं और उन के साथ फ़ोटो खिंचा कर बड़ा फ़ख़्र महसूस करते हैं।

हज़रात ! ऐसे गाने और नाचने वाले ख़ुद तो गुनाहगार हैं और अपने गानों और उरयां औरतों के स ाथ नाच नाच कर और दूसरों के जज़्बात को उभार कर उनके गुनाहों का हिस्सा भी पाते हैं और जब तक उन का गाना और उन की बे हूदा हरकत जारी रहेगी और लोग देखते रहेंगे उन सब को तो गुनाह मिलेगा मगर सब के बराबर उस नाचने वाले और नाचने वाली को गुनाह मिलता रहेगा। (अल इयाज बिल्लाहि तआला)

अच्छी बात से जन्नत मिलती है : हज़रत ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलातो वस्सलाम की ख़िदमते बा बरकत में लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ हज़रत ! कोई ऐसा अमल बताइये जिस से जन्नत मिले। तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कभी बोलो मत ! लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ हज़रत ! यह तो मुमकि नहीं ! तो फ़रमाया कि अच्छी बात के अलावा कुछ ज़बान से मत निकालो। (अहयाउल उलूम)

हज़रात ! जहाँ भी हुक्म दिया गया है कलाम कम करो, चुप रहो तो उस से मुराद यह है कि बुरी बात से बचो और जब बात करो तो सच्ची और अच्छी बात करो।

ज़बान सीधी है तो सारे आज़ा सीधे हैं

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि मेरे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : इन्सान जब सुबह करता है तो तमाम आज़ा ज़बान से कहते हैं कि तू अल्लाह से डर कि हम सब तेरे साथ वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रही तो हम सब सीधे रहेंगे और तू टेढ़ी हो गई तो हम सब टेढ़े हो जाएंगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

खाली खामोशी ग़फ़लत है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इरशादे मुबारक है कि जो कलाम भी अल्लाह के ज़िक्र से खाली है वह लग़्व, (बेकार) है और जो खामोशी फ़िक्रे आख़िरत से खाली है वह ग़फ़लत है। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे मुबारक है कि लमहा भर (आख़िरत के बारे में) ग़ौरो फ़िक्र से ऐक साल की इबादत का सवाब मिलता है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

ज़बान का ज़ख़्म कभी नहीं भरता : सर चश्मए विलायत अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल है कि तलवार का ज़ख़्म भर जाता है लेकिन ज़बान का ज़ख़्म कभी नहीं भरता (यानी वक़्त, वक़्त पर ताज़ा होता रहता है।

हज़रत सुफ़ियान सोरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो बड़े बुज़ुर्गो में से हैं फ़रमाते हैं कि इन्सान को तीर मारना, उस को ज़बान से तअन व तशनीअ़ करने से कम है, क्यों कि ज़बान का निशान कभी ख़ता नहीं करता। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

हज़रात ! तीर व तलवार से जिस्म ज़ख़्मी होता है और ज़बान से दिल ज़ख़्मी हो जाताहै जो कभी दवा से भरता नहीं। इसी लिये मोमिन की ज़बान बहुत ही सोच, समझ कर बोलती है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़सम है अल्लाह तआला की कि ज़बान से ज़्यादा कोई चीज़ हिफ़ाज़त के क़ाबिल नहीं। (अहयाउल उलूम)

ज़बान से डरते रहो ! हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप किस चीज़ से डरते हैं तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ कर फ़रमाया इस से (यानी ज़बान से)। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

ऐ ईमान वालो ! मेरे आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ कर यह फ़रमाना कि मैं ज़बान से डरता हूँ, यह तालीमे उम्मत के लिये था गोया मेरे मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उम्मत को तालीम दे रहे हैं कि हर हाल में ज़बान संभाल कर रखो और हर वक़्त ज़बान से ड़रते रहो।

ज़बान संभल गई तो सब काम बन गए

हज़रत यूनुस बिन उबैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस की ज़बान अच्छी रहती है उस के सब काम अच्छे रहते हैं और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अगर बात करना चाँदी है तो ख़ामोश रहना सोना है। (अहयाउल उलूम, जि. 1)

इन्सान कामिल कब होता है ?

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने बेटे हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को वसियत की कि बेटा हसन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) कम बोलना आदत बना लो इस लिये कि इन्सान जब कामिल हो जाता है तो उसकी बात मुख़्तसर हो जाती है। (नहजुल बलाग़ा, स. 7)

कम बोलो और काम ज़्यादा करो : हज़रत इमाम ओज़ाई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मोमिन बात कम और काम ज़्यादा करता है। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

ज़्यादा बोलने वाले का दिल सख़्त हो जाता है

हज़रत ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि अल्लाह तआला के ज़िक्र के अलावा कोई बात न करो वर्ना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे और सख़्त दिल अल्लाह तआला को पसन्द नहीं। (तंबीहुल गाफिलीन)

अच्छी बात से दिल ख़ुश कर देना सुन्नत है

हज़रात ! कभी और किसी वक़्त ऐसी बात कहना कि सुनने वाला मुस्कुरा दे और उस का दिल ख़ुश हो जाए मगर बात झूट न हो बल्कि सची हो तो जाइज़ और दुरुस्त है।

एक दफ़ा का वाक़िआ है कि हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक बूढ़ी औरत से फ़रमाया कि बूढ़ी औरत जन्नत में नहीं जाएगी वह बूढ़ी औरत यह सुनकर रोने लगी तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ औरत ! ग़मज़दा न हो अल्लाह तआला हर बूढ़े और बूढ़ी को जवान कर के जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (कीमियाए सआदत)

हज़रात ! क्या प्यारा अन्दाज़ है बात करने का और किसी के दिल को ख़ुश करने का।

एक मरतबा एक शख़्स ने महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ की कि मुझे ऊंट पर बिठाइये ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम को ऊंट के बच्चे पर बिठाऊँगा। वह शख़्स कहने लगा कि मुझे ऊंट के बच्चे पर नहीं बैठना है इस लिये कि वह मुझे गिरा देगा। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : क्या कोई ऊंट ऐसा भी है जो ऊंट का बच्चा न हो। (कीमियाए सआदत)

आशिक़े रसूल, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उन के निसार कोई कैसे ही रन्ज में हो
जब याद आगए हैं सब ग़म भुला दिये हैं

एक दिल हमारा क्या है आज़ार उस का कितना
तुम ने तो चलते फिरते मुर्दे जिला दिये हैं

दुरूद शरीफ़ :

बेवक़ूफ़ के लिये ख़ामोशी बहतर है

फ़िक़ा हन्फ़ी के बहुत बड़े इमाम हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मजलिस में एक शख़्स हमेशा हाज़िर हुआ करता था जो कभी कोई सवाल नहीं पूछता था और मजलिस में ख़ामोश बैठ कर बातें सुना करता था एक दिन हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस से फ़रमाया कि ऐ फ़लां ! तुम हमेशा हमारी मजलिस में आते हो और चुप ही रहते हो, कभी तुम भी बोला करो और कोई मस्अला तुम भी पूछ लिया करो ? तो उस शख़्स ने कहा कि हुज़ूर ! मुझे एक मस्अला दरयाफ़्त करना है वह यह है कि रोज़ा किस वक़्त इफ़्तार करना चाहिये ? हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, जब सूरज डूब जाए तो रोज़ा इफ़्तार कर लेना चाहिये तो वह शख़्स कहने लगा कि अगर आधी रात तक सूरज न डूबे तो फिर क्या करे ? हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुस्कुरा पड़े और फ़रमाया कि तुम्हारा चुप रहना ही बेहतर है।

(हयातुल हैवान, जि. अव्वल)

जन्नती आदमी की पहचान : आलिमे मा काना वमा यकून रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अभी एक जन्नती मर्द जहाँ आएगा। तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दरवाज़े से दाख़िल हुए तो लोगों ने यह बशारत उन को सुनाई और दरयाफ़्त किया कि वह कौन सा अमल है ? जिस की वजह से यह बशारत दी गई है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मेरा अमल तो बहुत थोड़ा है लेकिन कभी मैं ने उस चीज़ के बारे में सवाल नहीं किया जिस से मेरा तअल्लुक़ न होता और न मैंने कभी लोगों का बुरा चाहा। (कीमियाए सआदत)

कलाम ज़्यादा तो ग़लतियाँ ज़्यादा

हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स का कलाम ज़्यादा होगा उस की ग़लतियाँ भी ज़्यादा होंगी, जिस का माल ज़्यादा होगा उस के गुनाह ज़्यादा होंगे, जिस के अख़्लाक़ बुरे होंगे वह अज़ाब में मुब्तला होगा।

या अल्लाह तआला ! हमें गुनाहों से बचा ले और कम बोलने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिए इस बहरे बे करां के लिये

(7)

रजब शरीफ़

पहला जुमा .... पहला बयान

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی حَبِیْبِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی اٰلِہِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاہِرِیْنَ
وَاَصْحَابِہِ الْمُکَرَّمِیْنَ وَابْنِہِ الْکَرِیْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِیْلَانِیِّ الْبَغْدَادِیِّ
وَابْنِہِ الْکَرِیْمِ الْخَوَاجَہِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِیْرِیِّ اَجْمَعِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ
بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ عَلَیْہِمْ وَلَا ہُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَکَانُوْا یَتَّقُوْنَ ۝
صَدَقَ اللّٰہُ الْعَظِیْمُ وَصَدَقَ رَسُوْلُہُ النَّبِیُّ الْاَمِیْنُ الْکَرِیْمُ وَنَحْنُ عَلٰی ذٰلِکَ لَمِنَ الشَّاہِدِیْنَ
وَالشَّاکِرِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म, वह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं। (पारा 11, रुकू 12, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

बगरदाबे बला उफ़तादह कश्ती
ज़ईफ़ाने शिकस्ता राह तू पुश्ती
बहक़्क़े ख़्वाजा उस्माने हारून
मदद कुन या मोईनुद्दीन चिश्ती

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा
(उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरेलवी)

यह दाग़ कहाँ तक रंज सहे, तुम से न कहे तो किससे कहे
तुम आले नबी औलादे अली सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़
(दाग़ देहलवी)

तेरे पाए का कोई हमने न पाया ख़्वाजा
तू ज़मीन वालों पे अल्लाह का साया ख़्वाजा
(सय्येदुल उलमा मारेहरवी)

हिन्द में आप हैं सौग़ाते रसूले अरबी
हर तरफ़ अबरे करम आप का छाया ख़्वाजा
(सय्यद अशरफ़ मारेहरवी)

तम्हीद : ऐ ईमान वालो ! आज का यह दौर अल्लाह तआला के नेक व पारसा बन्दे और आकाए कायनात नबिये रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नेक व सालेह और मुत्तक़ी परहेज़गार उम्मती औलिया अल्लाह से बेज़ारी और इस्लाम की सचाई से दूरी का है तो अरबाबे इस्लाम को ग़ौर व फ़िक्र की दावत देता है।

यहूदो नसारा और मुश्रेकीन के नापाक मुन्सूबों के तहत स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों की तालीम के निसाब और कोर्स की किताबों में ऐसे ग़लत और मन गढ़त वाकेआत को शामिल किया गया है जिसके पढ़ने के बाद शक व वहम और तज़बज़ुब का दरवाज़ा खुलता नज़र आता है और एक नौजवान मुसलमान अल्लाह तआला की सची बन्दगी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मज़बूत गुलामी से अपना तअल्लुक़ व रिश्ता कमज़ोर करता हुआ नज़र आता है। और आए दिन इन बातों का मुशाहदा भी हो रहा है कि हमारा नौजवान शक व वहम और तज़बज़ुब में मुब्तला होकर तरह तरह के एतराज़ात करता हुआ नज़र आता है, कभी अल्लाह व रसूल के तअल्लुक़ से तो कभी औलिया अल्लाह की रूहानियत व करामत और उनके मज़ारों पर हाज़री के हवाले से, यह सारी ख़ुराफ़ातें और इस्लाम मुख़ालिफ़ बातें स्कूल व कॉलेज और यूनिवर्सिटियों की ग़लत व बेहूदा तालीम और बद अक़ीदा मुनाफ़िक़ लोगों की सोहबत का नतीजा नज़र आती है जिसकी वजह से हमारी नई नस्ल नौजवान मुसलमान शक व वहम और तज़बज़ुब के दल दल में धंसते चले जा रहे हैं और इस्लाम की सचाई और ईमान व यक़ीन की हक़ीक़त से दूरी बढ़ती चली जा रही है।

मुसलमानो ! यह एक हक़ीक़त है कि औलिया अल्लाह से दूर होना, इस्लाम से दूर होना है क़ुरआनो सुन्नत से यह बात ज़ाहिर व साबित है कि इस्लाम अल्लाह तआला का पसन्दीदा दीन और आख़री मज़हब है और क़ुरआने मजीद अल्लाह तआला की आख़री आसमानी किताब है और पैग़म्बरे इस्लाम महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के आख़री नबी और रसूल हैं, अब क़ियामत तक कोई नया नबी नहीं आएगा।

तो अब एक सवाल पैदा होता है कि अगली उम्मतों में एक के जाने के बाद हिदायत व रहबरी के लिये दूसरे नबी तशरीफ़ लाते रहे और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद कोई नबी पैदा नहीं होगा तो इस्लाम की तब्लीग़ और रुश्दो हिदायत का काम आगे कैसे बढ़ेगा ?

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :
عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ کَاَنْبِیَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ ○ यानी मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के नबियों की तरह हैं। (कन्ज़ुल उम्माल जि. 10, स. 59, हदीस नं. 28673)

यानी रुश्दो हिदायत का जो फ़रीज़ा पहले के अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम अन्जाम देते थे, अब यह काम मेरी उम्मत के उलमा पूरा करेंगे।

और इन सच्चे नेक व पारसा उलमाए किराम के गरोह को जो जा नशीने मुस्तफ़ा, नाएबीन नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं उन्हीं नेक व सालेह और मुत्तक़ी व परहेज़गार लोगों को औलिया अल्लाह कहा जाता है।

हज़रात ! तारीख़ शाहिद है हिस्टी गवाह है कि इस्लाम बादशाहों और अमीरों का मरहूने मिन्नत कभी भी नहीं रहा बल्कि अकसर मुसलमान कहलाने वाले बादशाहों और अमीरों ने इस्लाम के पाक व साफ़ दामन को दाग़दार किया और इस्लाम की बढ़ती हुई ताक़त व कुव्वत को नुक़सान पहुँचाया।

अल्लाह तआला की ज़मीन तक़वा, तहारत और नेकी से आबाद हुई और इस्लाम ख़ूब फूला और फला तो बादशाहों और अमीरों के ज़रीए नहीं बल्कि उन पाक और नेक लोगों के ज़रीए अमल में आया जिन को औलिया अल्लाह कहा जाता है, अल्लाह के यह वली दुनिया के जिस ख़ित्ते में गए तो अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सीरत व सूरत की सच्ची तसवीर बन कर गए, उनका वुजूदे मस्ऊदे मुजस्सम इस्लाम था उन का किरदार व अख़लाक़, महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के किरदार व अख़लाक़ का साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ आईना था।

उन्हीं अल्लाह वालों की पाक व नेक सोहबत की ख़ुश्बू से इलाक़ा का इलाक़ा मुअत्तर हो गया और कुफ़्र व शिर्क के घटा टोप अन्धेरे ख़त्म हुए और इस्लाम का पुर नूर सवेरा तुलूअ़ हुआ और ईमान व यक़ीन का उजाला फेला।

अल्लाह के वली जिस राह से गुज़र गए इस्लाम की ख़ूबियों से आगाही देते गए और ईमान के नूर से अन्धे कुलूब को मुनव्वर व मुजल्ला करते गए।

इन्हीं अल्लाह वालों ने अपने इल्मो अमल, अख़्लाक़ो किरदार और रूहानी कमालात व करामात के ज़रीए कुफ़्र व शिर्क और वहम व शक के अन्धेरों में भटकने वाले इन्सानों पर इस्लाम के बरकात व हसनात को ज़ाहिर व रोशन कर दिया जिसके सबब से गांव का गांव, क़स्बे का क़स्बा, शहर का शहर, मुल्क का मुल्क इस्लाम के दामने करम में अबदी पनाह हासिल करता गया।

इन्हीं पाक बाज़, बा करामत और बा कमाल अरबाबे रूहानियत हस्तियों में हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा, अताए रसूल सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा मोईमुद्दीन हसन चिश्ती, बन्दा नवाज़, करम नवाज़, हुज़ूर ग़रीब नवाज़ संजरी, अजमेरी, रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का नामे नामी इस्मे ग्रामी सबसे रोशन व मुनव्वर है और आपकी ख़िदमात सबसे ज़्यादा नुमायां और ताबनाक हैं। हमारे प्यारे ख़्वाजा की रहमत व बरकत वाली ज़ाते पाक ने हिन्दूस्तान के अन्दर कुफ़्रो शिर्क और शक व वहम और तज़बज़ुब के अन्धेरे माहौल में इस्लाम व ईमान और यक़ीन का चिराग़ जलाया और हक़ व सदाक़त का दीप रोशन किया।

आपके न आने तक हिन्द में अन्धेरा था
रोशनी घर घर फेली आप ही के आने से

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के तक़वा, तहारत, और रूहानियत व विलायत के पाकीज़ा किरदार व अमल और मवाइज़े हसना की बरकत व तासीर से एक आलम फ़ैज़ियाब हुआ। काफ़िर, मुसलमान हुए। चोर अब्दाल हुए। गुनाहगार व ख़ताकार, नेक व सालेह और मुत्तक़ी व परहेज़गार हुए। इस तरह तक़रीबन नव्वे लाख इन्सान इस्लाम के दामने करम से वाबस्ता होकर ईमान व यक़ीन की अबदी नेअमत और हक़्क़ो सदाक़त की सरमदी दौलत से सरफ़राज़ हुए।

मुर्शिद व रहनुमाए अहले सफ़ा
हादिये इन्सो जाँ मोईनुद्दीन

कुर्बे हक़ ऐ नियाज़, गर ख़्वाही
साज़ विर्दे ज़बां मोईनुद्दीन

(हज़रत न्याज़ बरैलवी)

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की विलादत

तारीख़े विलादत : 530 हि.
बमुक़ाम : सन्जर इलाक़ा सीस्तान

हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस दहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं

سجزی بکسر سین وسکون جیم وکسر زائے معجمہ نسبت بہ سیستان

سیستان را بزبان عربی سجستان و سنجری گویند

यानी सिजज़ी सीन के कस्र, जीम के सुकून और ज़ाए मुअज्ज़मा के कस्र के साथ सीस्तान की तरफ़ निस्बत है, सीस्तान को अरबी ज़बान में सजिस्तान और संजरी कहते हैं।

(इन्तिबाह सलासिले औलिया अल्लाह, स. 88)

तारीख़े विसाल : 6 रजब शरीफ़ सन् 627 हि.
बमुक़ाम : अजमेर शरीफ़ (हिन्दूस्तान)
नामे नामी इस्मे ग्रामी : मोईनुद्दीन हसन
अलक़ाब : हिन्दल वली, अताए रसूल, ग़रीब नवाज़ ख़्वाजए बुज़ुर्ग, नाइबे रसूल, वारिसुल अम्बिया, आफ़ताबे चिश्तियां, सुल्तानुल हिन्द।

चिश्ती कहलाने की वजह : जमाअते अहले सुन्नत की आला तरीन शख़्सियत, अलमबरदारे मस्लके आला हज़रत, अल्लामा अरशदुल क़ादरी रहमतुल्लाहे तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि ....

हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के सिलसिलए तरीक़त के

मुरिसे आला हज़रत ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब मुरीद होने की ग़रज़ से हज़रत ख़्वाजा मुमशाद अली दीनोरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने मेरा नाम दरयाफ़्त किया।

अर्ज़ किया : आजिज़ को अबू इस्हाक़ शामी कहते हैं।

मुर्शिद ने फ़रमाया : आज से हम तुम को अबू इस्हाक़ चिश्ती कहेंगे और क़ियामत तक जो तेरे सिलसिले में दाख़िल होगा वह भी चिश्ती कहलाएगा।

इसी निस्बत से हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो भी चिश्ती कहलाते हैं। (सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 42)

हमारे प्यारे ख़्वाजा नजीबुत्तरफ़ैन सय्यद हैं

आपका पिदरी नसब सय्यदना इमाम हुसैन बिन मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से मिलता है और आपका मादरी नसब हज़रत सय्यदना इमाम हसन बिन मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से मिलता है। इस तरह हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हुसैनी और हसनी सय्यद हैं।

हमारे प्यारे ख़्वाजा का पिदरी नसब नामा

(1) सय्यद मोईनुद्दीन हसन (2) बिन सय्यद ग़यासुद्दीन (3) बिन सय्यद कमालुद्दीन (4) बिन सय्यद अहमद हुसैन (5) बिन सय्यद नजमुद्दीन ताहिर (6) बिन सय्यद अब्दुल अज़ीज़ (7) बिन सय्यद इब्राहीम (8) बिन सय्यद इमाम अली रज़ा (9) बिन सय्यद मूसा काज़िम (10) बिन सय्यद इमाम जअफ़र सादिक़ (11) बिन सय्यद मोहम्मद बाक़िर (12) बिन सय्यद इमाम अली ज़ैनुल आबिदीन (13) बिन सय्यद इमाम हुसैन (14) बिन सय्यदुस्सादात अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन।

(ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 1, स. 257)

हमारे प्यारे ख़्वाजा का मादरी नसब नामा

(1) सय्यद मोईनुद्दीन हसन (2) बिन उम्मुल वराअ सय्यदा माहे नूर (3) बिन्त सय्यद दाऊद (4) विन सय्यद अब्दुल्लाह हम्बली (5) बिन सय्यद यहया ज़ाहिद (6) बिन सय्यद मोहम्मद रूही (7) विन सय्यद दाऊद (8) बिन सय्यद मूसा सामी (9) बिन सय्यद अब्दुल्लाह सानी (10) बिन सय्यद मूसा उख़वन्द (11) बिन सय्यद अब्दुल्लाह (12) बिन सय्यद हसन मुसन्ना (13) बिन सय्यदना इमाम हसन मुज्तबा (14) बिन सय्येदुस्सादात मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन।

(सालेकुस्सालेकीन, जि. 2, स. 271)

हमारे प्यारे ख़्वाजा की वालिदा का बयान

वालिदा माजिदा बयान फ़रमाती हैं कि जब मेरे प्यारे बेटे मोईनुद्दीन हसन (रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो) मेरे शिकम में थे तो मैं बड़े अजीबो ग़रीब और अच्छे ख़्वाब देखा करती थी। मेरे घर में ख़ूब ख़ैरो बरकत थी, मेरे दुश्मन मेरे दोस्त बन गए थे, विलादत के वक़्त मेरा सारा घर अनवारे इलाही से रौशन था। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 80)

हमारे प्यारे ख़्वाजा मां के शिकम में

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की वालिदा माजिदा हज़रत सय्यदा माहे नूर रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बहुत ही नेक और बड़ी आबेदा, ज़ाहिदा थीं।

हमारे प्यारे ख़्वाजा का बचपन

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो के बचपन का दौर बड़ी ख़ुशहाली और नेक नामी के साथ गुज़रा और आपके बचपन ही में आसारे विलायत आपकी जबीने सआदत पर नुमायां और ज़ाहिर थे। अल्लाह तआला की दी हुई नेअ़मत व दौलत सब कुछ थी, बड़े नाज़ व नअ़म के साथ पले और बढ़े थे और हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो दो भाई थे। (हफ़्ताद औलिया, स. 288 बहवाला ख़ानक़ाहे बरकातिया का तर्जमान अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008 ,स. 78)

हमारे प्यारे ख़्वाजा के वालिद का विसाल

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो के वालिदे माजिद हज़रत ख़्वाजा सय्यद ग़यासुद्दीन रज़ियल्लाहो अन्हो बहुत नेक और बड़े मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। अभी हमारे प्यारे ख़्वाजा की उम्र शरीफ़ पन्द्रह साल ही की थी कि वालिदे गिरामी का विसाल हो गया। (मीरअतुल असरार, स. 593)

हमारे प्यारे ख़्वाजा की तालीमो तरबियत

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सात साल की उम्र शरीफ़ तक आपकी परवरिश ख़ुरासान में हुई, इब्तिदाई तालीम का ज़माना वालिदे बुज़ुर्ग वार के ज़ेरे आतिफ़त गुज़रा उसके बाद संजर की मशहूर दर्सगाह में दाख़िल हुए और वहीं से तफ़सीरो हदीस और फ़िक़ह की तालीम मुकम्मल हुई, चौदह साल की उम्र शरीफ़ में और किताब मिरअतुल इसरार के मुताबिक़ पन्द्रह साल की उम्र शरीफ़ में वालिदे बुज़ुर्गवार का साया सर से उठ गया और आपके वालिदे माजिद का मज़ारे मुबारक बग़दादे मुक़द्दस में है।

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पैदाइशी वली हैं, वालिदे ग्रामी और वालिदा माजिदा से लेकर हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा तक सारे ख़ानदान और पूरे कुंबे का एक एक फ़र्द वली और क़ुतुब है, इस प्यारी निस्बत के

बावजूद हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मदरसा में दाखला लेते हैं और कुरआनो हदीस और तफ़सीर वग़ैरह की तालीम मुकम्मल फ़रमाते नज़र आते हैं और वक़्त के जय्यिद आलिम व फ़ाज़िल बनते नज़र आते हैं।

मगर आज कल कुछ पीर और बुज़ुर्ग कहलाने वाले यह कहते हुए नज़र आते हैं कि हमको किसी मदरसे की तालीम की ज़रूरत नहीं है, हम को कुरआनो हदीस की तालीम किसी मौलाना से हासिल करने की कोई हाजत नहीं है हम सब कुछ पढ़े पढ़ाए हैं।

तो ऐसे पीर व बुज़ुर्ग कहलाने वाले हज़रात से एक सवाल है कि हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तो पैदाइशी वली थे, क्या आप भी पैदाइशी वली हैं? हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का पूरा ख़ानदान नेक व सालेह और वली है। क्या आपके वालिद और वालिदा और तमाम खानदान वली हैं? तो यक़ीन जानिये कि इन तमाम सवालों का जवाब देना बड़ा मुश्किल हो जाएगा।

इस लिये गुज़ारिश है कि पीर व बुज़ुर्ग होने का दावा करने से पहले अपने प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तालीमात पर अमल कीजिये और कुरआनो हदीस और तफ़सीर वग़ैरह की तालीम हासिल करके वली तो कुजा, गुलामे हुज़ूर ख़्वज़ा ग़रीब नवाज़ बन जाईये। यही सआदत आप जैसे पीर व बुज़ुर्ग कहलाने वालों के लिये बारगाहे ख़ुदावन्दी में काफ़ी व शाफ़ी हो जाएगी।

ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद
कि हरगिज़ ब मन्ज़िल न ख़्वाहद रसीद

हमारे प्यारे ख़्वाजा की जायदाद
एक बाग़ और एक पनचक्की

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा आक़ा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की जायदाद में से एक हरा भरा बाग़ और एक पनचक्की मिली थी उसी को आपने अपने लिये ज़रीअए मआश बनाया।

ख़ुद ही बाग़ की निगेहबानी करते और दरख़्तों को पानी पिलाते इस तरह आपकी ज़िन्दगी बहुत आसूदा और इत्मीनान से गुज़र रही थी। (सियरुल आरेफ़ीन, स: 50)

मगर क़ुदरत ने हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बाग़े अशजार (दरख़्तों) की निगेहबानी के लिये नहीं बल्कि आपको इन्सानों की तरबियत और बाग़े इस्लाम की आबयारी के लिये पैदा फ़रमाया था।

गुलशने हिन्द है शादाब कलेजे ठन्डे
वाह ऐ अबरे करम ज़ोर बरसना तेरा

(मौलाना हसन रज़ा बरेलवी)

हमारे प्यारे ख़्वाजा की मुलाक़ात, इब्राहीम क़न्दोज़ी मजज़ूब बुज़ुर्ग से

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने बाग़ में दरख़्तों को पानी दे रहे थे कि इशारए ग़ैबी से अल्लाह तआला के वली मस्त व मजज़ूब बुज़ुर्ग हज़रत इब्राहीम क़न्दोज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बाग़ में तशरीफ़ लाए, जब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़र साहिबे विलायत मजज़ूब बुज़ुर्ग पर पड़ी तो हमारे प्यारे ख़्वाजा बड़े अदब व एहतिराम के साथ उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनको एक साया दार दरख़्त के पास बिठाया और ताज़ा अंगूर का एक गुच्छा उनकी ख़िदमत में पेश किया और ख़ुद उनकी ख़िदमत में दो ज़ानूं होकर बैठ गए।

हज़रत इब्राहीम क़न्दोज़ी बुज़ुर्ग ने अंगूर तनावुल फ़रमाए और हमारे प्यारे ख़्वाजा के अदब व एहतिराम और आप की ख़िदमत से ख़ुश होकर बग़ल से खली का एक टुकड़ा निकाल कर अपने मुंह में डाला, दन्दाने मुबारक से चबाकर हमारे प्यारे ख़्वाजा के मुंह में डाल दिया। उस खली को खाते ही हमारे प्यारे ख़्वाजा का बातिन नूरे मारेफ़त से रौशन हो गया और क़ल्ब व रूह में अनवारे इलाही जगमगाने लगे और आपके दिल की दुनिया ज़ेरो ज़बर हो गई। इस तरह आपके दिल में बाग़ और पनचक्की और घर के सारे साज़ो सामान से बेज़ारी पैदा हो गई।

इसी आलम में हमारे प्यारे ख़्वाजा ने बाग़ और पनचक्की फ़रोख़्त करके सारी दौलत फ़ुक़रा व मसाकीन और बे सहारों पर लुटा दी और बे ख़ुदी के आलम में ख़ुरासान की तरफ़ राहे हक़ की तलाश में निकल गए। (ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, स. 35, गिरअतुल असरार, स. 593)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अपने नेक व महबूब बन्दों यानी औलिया अल्लाह की निस्बत व तअल्लुक़ में किस क़दर रहमत व बरकत और तासीर रखी है कि अल्लाह तआला के वली मस्त व मजज़ूब बुज़ुर्ग हज़रत इब्राहीम क़न्दोज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की चबाई हुई खली खाते ही हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बातिन नूरे मारेफ़त से रौशन होता नज़र आया और क़ल्ब व रूह मुजल्ला व मुसफ़्फ़ा हो गये और दिल की दुनिया में इन्क़िलाब बरपा होता नज़र आया।

लिहाज़ा हम गुलामाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को भी अपने प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आदत व सुन्नत पर अमल करते हुए अल्लाह वालों की बारगाह में बा अदब ख़िदमत की सआदत हासिल करना चाहिये ताकि अल्लाह वालों की निगाहे कीमिया असर से हम गुनाह गारों, ख़ताकारों के क़ुलूब (दिलों) की स्याही धुल जाए और हमारे दिलों में नूरे मारेफ़त का उजाला पैदा हो जाए और ज़िन्दगी कामयाब व बा मुराद हो जाए।

निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें
जो हो ज़ौक़े यक़ीं पैदा तो कट जाती हैं ज़न्जीरें

न जाने कौन दुआओं में याद करता है
मैं डूबता हूँ दरिया उछाल देता है

हमारे प्यारे ख़्वाजा पीरो मुर्शिद की तलाश में : हज़रात ! इल्मे ज़ाहिर के बाद इल्मे बातिन है। इल्मे सफ़ीना के बाद इल्म सीना है। ज़ाहिर उलूम के लिये उस्ताज़ की ज़रूरत पड़ती है और उस्ताज़ ज़ाहिर उलूम के ज़रीए हक़ व सच का रास्ता दिखा देता है लेकिन मन्ज़िले मक़सूद अभी आगे है और उलूमे बातिनी के लिये पीरो मुर्शिद की ज़रूरत होती है, पीरो मुर्शिद उलूमे बातिनी के ज़रीए मन्ज़िले मक़सूद यानी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तक पहुँचा देता है और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस मुरीदे सादिक़ को रब तआला तक पहुँचा देते हैं और यही मन्ज़िल अव्वलीन व आख़रीन की मन्ज़िले मक़सूद है।

मौलाना रूम रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़रमाते हैं :

मौलवी हरगिज़ न शुद मौलाए रूम
ता ग़ुलामे शम्स तबरेज़ी न शुद

और किसी ने कहा है :

जब तक बिके न थे तो कोई पूछता न था
तुमने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आलिम व फ़ाज़िल, मुहद्दिस व मुफ़स्सिर और मुफ़्ती यहाँ तक कि तमाम उलूमे ज़ाहिरी से आरास्ता होने के बाद मर्दे हक़ आगाह, ख़ुदा रसीदा, शेख़े कामिल, पीर व मुर्शिद की तलाश व जुस्तुजू शुरू फ़रमा दी। शैख़े मुअज़्ज़म पीरो मुर्शिद की तलाश में बहुत सी ख़ानक़ाहों में औलियाए बा कमाल व बा करामत की ख़िदमत में हाज़िरी के शरफ़ से बा रियाब होते। जवाब यह मिलता कि मोईनुद्दीन हसन तुम्हारा हिस्सा हमारे पास नहीं है, तुम्हारा हिस्सा किसी और के पास है। फिर वहाँ से उलूमे बातिनी की तशनगी के साथ मुर्शिद की तलाश में सफ़र शुरू फ़रमा देते। आख़िर कार वह नेक घड़ी और साअते सईद और वह रोज़े रोशन अपनी तमाम रहमतों व बरकतों के साथ आ ही गया। पुर ख़ुलूस जोहदे पैहम और सच्ची तलाश और जुस्तुजू ने मन्ज़िले मक़सूद का पता वसीला शैख़े कामिल, अल्लाह के वली, मेहबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सच्चा नाइब हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जैसे अज़ीमुश्शान पीरो मुर्शिद के चश्मए करम पर लाकर खड़ा कर दिया और सच तो यह है कि -

दरे करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता
जो मांगने का तरीक़ा है उस तरह मांगो

सय्येदुल उलमा सय्यद आले मुस्तफ़ा मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने देखा कि एक

मर्द बुज़ुर्ग तशरीफ़ ला रहे हैं, जैसे ही उनकी निगाह मुझ पर पड़ी तो उन बुज़ुर्ग ने इरशाद फ़रमाया हसन तुम आ गए ? हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बड़ा तअज्जुब हुआ कि मैंने तो इन बुज़ुर्ग को कभी देखा नहीं और आज पहली मरतबा मुलाक़ात कर रहा हूँ, मगर यह बुज़ुर्ग तो मुझे पहचानते हैं। मैंने उन बुज़ुर्ग को सलाम करने के बाद पूछा कि ऐ हज़रत ! क्या आप मुझे पहचानते हैं ? तो उन बुज़ुर्ग ने इरशाद फ़रमाया कि हिन्दूस्तान के बादशाह को कौन नहीं पहचानेगा, मैं तो तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा था और तुम्हारे इन्तिज़ार ही में अब तक जी रहा हूँ। वह बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रदियल्लाहो तआला अन्हो व अर्दाहो अन्ना थे। (अहले सुन्नत की आवाज, सन् 2008, स. 38)

हमारे प्यारे ख़्वाजा खुद मुर्शिद की मुलाक़ात और बैअत का वाक़िआ बयान फ़रमाते हैं कि मैं शैख़े कामिल, पीरो मुर्शिद की तलाश व जुस्तुजू में बग़दादे मुअल्ला सय्येदुत्ताइफ़ा हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मस्जिद में हाज़िर हुआ अपने शैख़े मुअज़्ज़म पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की दौलते पा बोसी से मुशर्रफ़ हुआ यानी खुलासए कलाम यह है कि मैंने अपने पीरो मुर्शिद के क़दम को चूमा उस वक़्त रूए ज़मीन के बड़े बड़े मशाइख़े इज़ाम और औलियाए किराम हमारे पीरो मुर्शिद की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर थे। जब मैंने सरे न्याज़ ज़मीन पर रखा तो पीरो मुर्शिद ने इरशाद फ़रमाया : दो रकअत नमाज़ अदा करो। मैंने अदा कर ली। फिर पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया, क़िब्ला रू बैठ जाओ। मैं बैठ गया। फिर पीरो मुर्शिद का हुक्म हुआ, सूरए बक़रह पढ़ो। मैंने पढ़ी। फिर पीरो मुर्शिद का फ़रमान हुआ, इक्कीस मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ो। मैंने पढ़ा। फिर पीरो मुर्शिद खड़े हो गए और मेरा हाथ पकड़कर आसमान की तरफ़ मुंह किया और फ़रमाया, आ तुझे ख़ुदा तक पहुँचा दूँ।

उसके बाद क़ैंची लेकर मेरे सर पर चलाई और कुलाह चहार तुर्की मेरे सर पर रखी और गलीमे ख़ास अता फ़रमाई, फिर पीरो मुर्शिद ने इरशाद फ़रमाया बैठ जाओ। मैं बैठ गया। फिर पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया : हमारे सिलसिले में एक दिन और एक रात के मुजाहदा का मामूल है, तुम आज रात और दिन मुजाहदा में मशग़ूल रहो।

मैं पीरो मुर्शिद के फ़रमान के मुताबिक़ मुजाहदा में मशग़ूल रहा दूसरे दिन जब ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ तो पीरो मुर्शिद ने इरशाद फ़रमाया : आसमान की तरफ़ देखो ! मैं ने देखा तो पीरो मुर्शिद ने दरयाफ़्त फ़रमाया : कि तुम कहाँ तक देखते हो ? तो मैं ने अर्ज़ किया कि अर्शे आज़म तक देखता हूँ। फिर पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया ज़मीन की तरफ़ देखो, मैं ने देखा तो पीरो मुर्शिद ने पूछा ! कि अब तुम कहाँ तक देखते हो तो मैं ने अर्ज़ किया तहतुस्सरा (सातों ज़मीन के बीच) तक देख रहा हूँ। पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया : हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ो ! मैं ने पढ़ी। फिर पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया आसमान की तरफ़ देखो ! मैं ने देखा तो पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया कहाँ तक देखते हो ? तो मैं ने अर्ज़ किया कि हिजाबे अज़मत तक। फिर पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया आँखें बन्द करो ! मैं ने बन्द कर लीं। पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया खोल दो ! मैं ने आँखें

खोल लीं फिर पीरो मुर्शिद ने अपनी दो उंगलियाँ ऊपर उठाई और फ़रमाया कि मेरी इन दोनों उंगलियों के द रमियान देखो और फ़रमाया क्या देखते हो ? मैं ने अर्ज़ किया कि आप की दोनों उंगलियों के बीच मैं अठारह हज़ार आलिम देख रहा हूँ।

इस के बाद पीरो मुर्शिक का हुक्म हुआ कि सामने जो ईंट पड़ी हुई है उस को उठाओ ! मैं ने जब उस ईंट को उठाया तो उस के नीचे सोने के रुपये पड़े थे। पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया उन रुपयों को उठा लो और ले जाकर ग़रीबों और फ़क़ीरों में तक़सीम कर दो। मैं ने ऐसा ही किया। वापस लोट कर आया तो पीरो मुर्शिद का हुक्म हुआ कि तुम कुछ दिन हमारी सोहबत में गुज़ारो। तो मैं ने अर्ज़ किया कि पीरो मुर्शिद का हुक्म सर आँखों पर। (अनीसुल अरवाह, स. 1-2)

ऐ ईमान वालो ! इस नूरानी वाक़िआ को सुनने के बाद यक़ीनन हम सब का ईमान ताज़ा हो गया होगा कि जब अल्लाह तआला के वली हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की दोनों उंगलियों के दरमियान अठारह हज़ार आलम दिखाई दे सकते हैं तो सिद्दीक़ व फ़ारूक़ और उस्मान व हैदर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के पीरो मुर्शिद बल्कि अव्वलीन व आख़रीन के शैख़े आज़म महबूबे ख़ुदा रसूले आज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कमालात व मोअजिज़ात का क्या आलम होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माने की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

हमारे प्यारे ख़्वाजा बीस साल तक मुर्शिद की ख़िदमत में रहे

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि जब मैं शरफ़े बैअत हासिल कर चुका (मुरीद हो गया) तो मैंने बीस साल तक अपने मुशफ़िक़ व मेहरबान पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमते अक़दस में गुज़ारे और इस तरह ख़िदमत में लगा रहा कि पल भर के लिये अपनी जान को आरम न लेने दिया और मैं हमेशा पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में मशग़ूल रहता, सफ़र हो कि हजर, पीरो मुर्शिद का बिस्तर और खाने पीने के सामान और सफ़र के अस्बाब सर पर रख कर ले जाता था। (सियरुल औलिया, स. 55, मिरअतुल असरार, स. 556, अनीसुल अरवाह, स. 3, अख़बारुल अख़यार, स. 22)

ऐ ईमान वालो ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मुरीद होने के बाद एक दो तीन साल नहीं मुकम्मल बीस साल तक अपने शैख़, अपने प्यारे पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में लगे रहे और आज कल एक मुरीद हम भी हैं कि बीस साल तो बहुत दूर की बात है, बीस घन्टे भी पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में दीनी मअलूमात हासिल क़रने के लिये और अपने ईमान व अक़ीदा को संवारने और मज़बूत बनाने के लिये भी

वक़्त नहीं दे पाते हैं। अपने शैख़ की ख़िदमत करना और पीरो मुर्शिद के बिस्तर और अस्बाबे ज़िन्दगी को सर पर उठाना तो बहुत ही मुश्किल नज़र आता है।

हज़रात ! कोई शख़्स यह कह सकता है कि आज, कल के पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूने जैसे कहाँ हैं ?

तो एसे शख़्स से मैं पूछना चाहता हूँ कि आज कल के मुरीद, हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जैसे कहाँ हैं ?

जब आप हमारे प्यारे ख़्वाजा जैसे मुरीद नहीं बन सकते तो ख़्वाजा उस्माने हारूनी जैसे पीरो नुर्शिद भी नहीं मिल सकते। आप हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जैसे सच्चे और पक्के मुरीद बन कर दिखा दो तो अल्लाह तआला हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी जैसे पीरो मुर्शिद से तुम को मिला देगा। यह दुनिया कभी भी अल्लाह वालों से खाली नहीं रही है और न ख़ाली रहेगी, हमारी तलब सच्ची होनी चाहिये। अल्लाह तआला नेकों को नेक ही देता है। मस्ल मशहूर है, जैसों को तेसा।

हज़रात ! इस नूरानी वाक़िआ से और एक मस्अला ज़ाहिर व साबित होता है और इस हक़ीक़त का पता मिलता है कि बग़ैर ख़िदमत के इज़्ज़त व अज़मत नहीं मिला करती है।

हर कि ख़िदमत कर्द ऊ मख़दूम शुद

मेरे आक़ाए नेअ़मत हुज़ूर आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़िल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते मिटते इनाम हो ही जाएगा

साइलो ! दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

नेकों की ख़िदमत से मक़सद पा गए

सुल्तानुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया फ़रमाते हैं कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्ज शकर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने एक साहिबे दिल दुरवेश को देखा और उन की विलायत व बुज़ुर्गी को पहचान गए। उन बुज़ुर्ग को अपने घर के अन्दर ले गए और बड़े अदब व ताज़ीम से उन बुज़ुर्ग को बिठाया और उन के खाने के इन्तिज़ाम में लग गए घर में थोड़े से जौ के अलावा कुछ न था, उस जौ को ख़ुद चक्की में पीसा और छलनी में छाना और ख़ुद बाबा फ़रीदुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने रोटी पकाई तो दुरवेश ने कहा कि तुम्हारा हाल यह था कि तुम्हारे घर में थोड़े से जौ के अलावा कोई चीज़ न थी, तुमने उस जौ को किस तरह पीसा और उस की रोटी पकाई ? ऐ फ़रीदुद्दीन मैं सब कुछ देख रहा था, मैं तुम्हारी ख़िदमत से ख़ुश हूँ, क्या चाहते हो मांगो ! हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की जो तमन्ना थी वह ज़ाहिर की, अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम और उस दुरवेश फ़क़ीर की दुआ से हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्ज शकर रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो की तमन्ना पूरी हुई और अपना मक़सद पा गए। (सीयरुल औलिया, स. 52)

हज़रात ! आपने देख लिया कि नेकों और अल्लाह वालों की ख़िदमत से सब कुछ मिल जाता है, तमन्ना पुरी होती नज़र आती है और मक़सद पूरा होता नज़र आता है।

तमन्ना दर्दे दिल की है तो कर ख़िदमत फ़क़ीरों की
यह वह गोहर है जो मिलता नहीं है बादशाहों के ख़ज़ीनों में

मुरीद दो क़िस्म के होते हैं

सुल्तानुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि मुरीद की दो क़िस्में हेती हैं, एक रस्मी और दूसरी हक़ीक़ी।

रस्मी मुरीद वह शख़्स होता है कि पीर व मुर्शिद नसीहत व तलक़ीन फ़रमाते हैं तो वह शख़्स देखे को अन देखी और सुनी को अन सुनी कर देता है यानी रस्मी मुरीद उसको कहते हैं जो पीर व मुर्शिद के पन्द व नसीहत को सुन कर उस पर अमल नहीं करता।

और हक़ीक़ी मुरीद वह शख़्स है जो पीरो मुर्शिद की महब्बत में फ़ना होकर उनके इरशादात व फ़रमूदात पर अमल पैरा रहता है। (सियरुल औलिया, स. 329)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की इरादत व बैअत के तज़किरे के दरमियान दो फ़रमूदात और इरशादात जो पन्द व नसीहत से लबरेज़ हैं उन को बयान कर दिया है ताकि अल्लाह करीम अपने करम से हमारे सीने को पीराने किराम और बुज़ुर्गाने दीन की ख़िदमत व महब्बत का मदीना बना दे। आमीन सुम्मा आमीन।

हमारे प्यारे ख़्वाजा की नसीहत मुरीद के लिये

शैख़ुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि हमारे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

(1) जिस शख़्स ने जो कुछ पाया, पीर व मुर्शिद की ख़िदमत से पाया, पस हर मुरीद पर लाज़िम है कि पीरो मुर्शिद के हुक्म व फ़रमान पर अमल करे।

(2) पीरो मुर्शिद जो कुछ मुरीद को नमाज़ व इबादत और औरादो वज़ाइफ़ का दर्स अता फ़रमाएं तो मुरीद पर लाज़िम है कि गोशे होश से सुने और उस पर अमल करे ताकि मुरीद किसी आला मुक़ाम पर पहुँच सके।

(3) हमारे ख़्वाजा ने इरशाद फ़रमाया कि क़ब्रिस्तान में खाना पीना गुनाहे कबीरा है, जो शख़्स क़ब्रिस्तान में खाएगा वह मलऊन व मुनाफ़िक़ है क्यों कि क़ब्रिस्तान इबरत की जगह है

(4) हमारे प्यारे ख़्वाजा फ़रमाते हैं कि कौन सी चीज़ है जो अल्लाह तआला की क़ुदरत व ताक़त में नहीं है, मर्द को चाहिये कि अहकामे इलाही बजा लाने में सुस्ती और कोताही न करे फिर जो कुछ चाहेगा उसे मिल जाएगा। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 2, 16)

मुरीद कामिल कब होता है : हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो एक सवाल के जवाब में फ़रमाते हैं कि मुरीद साबित क़दम यानी कामिल मुरीद उस वक़्त होता है जब उस शख़्स के नामए आमाल में आमाले बद लिखने वाला फ़रिश्ता बीस साल तक कोई गुनाह न लिखे। (सियरुल औलिया, स. 55)

ऐ ईमान वालो ! अपने प्यारे प्यारे और अच्छे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का इरशादे पाक और फ़रमाने महरबान सुन लिया तो ख़ूब ग़ौर से सोच कर फ़ैसला करो कि क्या हम सच्चे और कामिल मुरीद बन गए हैं ? इस लिये कि सच्चे और कामिल मुरीद बनने के लिये उस शख़्स के नामए आमाल में एक गुनाह भी न हो और हमारा हाल तो यह है कि हर दिन हज़ारों गुनाह नामए आमाल में लिखे जाते हैं। हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के फ़रमाने ज़ीशान की रोशनी में यह बात साबित हुई कि अभी हम सच्चे और कामिल मुरीद ही नहीं बन सके हैं और पीरों, आलिमों और इमामों में ग़लती और कमी ढूँढ ढूँढ कर निकालते नज़र आते हैं। मौलाना रूम रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़रमाते हैं।

नेकों के अन्दर कमी और ग़लती तलाश करना शैतान की आदत है। (मसनवी मौलाना रूम)

अल्लाह तआला नेकों की महब्बत के साथ अपनी पनाह व अमान में रखे। आमीन सुम्मा आमीन

मुर्शिद को नाज़ है मुरीद पर

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो अन्हो के मुरीदों में हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो से बहतर कोई मुरीद न था। हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो अन्हो अकसर फ़रमाया करते थे कि हमारा मोईनुद्दीन अल्लाह तआला को महबूब है और मुझे अपने मुरीद मोईनुद्दीन पर फ़ख़्र व नाज़ है। (मिरअतुल असरार, स. 595)

हमारा प्यारे ख़्वाजा का शजरए तरीक़त

ख़ानक़ाहे बरकातिया का तर्जमान अहले सुन्नत की आवाज़ सन् 2008 के सफ़ा 85 पर हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे दहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का रक़म कर्दा शजरा शरीफ़ का ज़िक्र किया गया है।

(1) ख़्वाजा मोईनुद्दीन संजरी, (2) ख़्वाजा उस्माने हारूनी (3) ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी (4) ख़्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती (5) ख़्वाजा अबू अहमद चिश्ती (6) ख़्वाजा अबू इस्हाक़ शामी (7) ख़्वाजा उलुअद्दीनोरी (8) ख़्वाजा हुबैरा बसरी (9) ख़्वाजा हुज़ैफ़ा मरअशी (10) ख़्वाजा इब्राहीम बिन अदम बल्ख़ी (11) ख़्वाजा फुज़ैल बिन इयाज़ (12) ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद (13) ख़्वाजा हसन बसरी (14) ख़्वाजए विलायत सय्यदना अली इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन 0

(अल इन्तिबाह फ़ी सलासिले औलिया, स. 87)

हमारे प्यारे ख़्वाजा मुर्शिद के हमराह सफ़र में

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मुरीद

होने के बाद शैख़े तरीक़त की ख़िदमत में मशग़ूल रहे, जहाँ कहीं पीरो मुर्शिद तशरीफ़ ले जाते हमारे प्यारे ख़्वाजा आप का बिस्तर और सामाने सफ़र अपने सर पर रखकर पीरो मुर्शिद के हमराह चलते, मुकम्मल बीस साल पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में रहकर सेरो सियाहत के दौरान सीस्तान, दमिश्क़, तोस, बदख़्शां, बग़दादे मुअल्ला, मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा और दीगर शहरों में गए और वहाँ के औलियाए किराम से मुलाक़ातें कीं और उनसे फ़ैज़ हासिल किये।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे कराँ के लिये

(7)

रजब शरीफ़

पहला जुमा .... दूसरा बयान

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

का अजमेर शरीफ़ में वुरूदे मस्ऊद

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ

हिन्द की बे मिस्ल खानक़ाहे बरकातिया के अज़ीम ताजदार उलमा व मशाइख के सरदार, मस्लके आला हज़रत के अलमबरदार पीरो फ़क़ीर, हाजी व मुफ़्ती अल्लामा मौलाना अश्शाह सय्यद आले मुस्तफ़ा सय्यद मियां क़ादरी चिश्ती बरकाती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो साहिबे सज्जादा खानक़ाहे बरकातिया मारेहरा मुताहरा बयान फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जिस वक़्त बग़दादे मुक़द्दस पहुँचे तो उस वक़्त कुतुबुल अक़ताब महबूबे सुब्हानी, शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाहो तआला अन्हो व अर्दाहो अन्ना कबीरुस्सिन यानी बुढ़े हो चुके थे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया हमारे खाला ज़ाद भाई हसन संजरी को हमारे खास हुजरे में ठहराया जाए और तीन दिन तक हमारे प्यारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हमारे प्यारे ख्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की महमान नवाज़ी की और तीसरे दिन तन्हाई और खलवत में अपने प्यारे भाई को सीने से लगाया और आपको इस्मे आज़म तालीम फ़रमाया। उस के बाद इरशाद फ़रमाया कि जाओ हमें उम्मीद है कि तुम बग़दाद फिर वापस आओगे लेकिन हमारी मुलाक़ात नहीं होगी। मैंने जान लिया है कि तुम्हारा हिस्सा कहां मिलने वाला है। हमारे प्यारे ख़्वाजा फिर जब दुबारा हज के बाद बग़दादे मुक़द्दस आए तो मालूम हुआ कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का विसाल हो चुका है।

(अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 35)

हज़रात ! मालूम हुआ कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हुज़ूर

ख़्वाजए आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मुलाक़ात हुई है और हमारे प्यारे पीर सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की उम्र शरीफ़ बुढ़ापे की थी और हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की उम्र शरीफ़ जवानी की थी और दूसरी बात यह मालूम हुई कि हमारे दोनों बुज़ुर्ग आपस में ख़ाला ज़ाद भाई थे।

कअ़बए मुअज़्ज़मा की हाज़री

हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि मैं अपने मुशफ़िक़ व करीम मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के हमराह मक्का मुकर्रमा में ख़ानए काबा की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ। मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हतीमे काबा में मीज़ाबे रहमत के नीचे मुझे लेकर गए और मेरा हाथ पकड़कर मेरे हक़ में दुआ की, या अल्लाह तआला ! मैंने मोईनुद्दीन को तेरे सुपुर्द किया, मेरे बस में जितना था मैंने मोईनुद्दीन को बना, संवार दिया है अब तू कुबूल फ़रमा ले। पर्दए ग़ैब से आवाज़ आई मैंने मोईनुद्दीन को कुबूल कर लिया।

पीरो मुर्शिद हज़रत उस्माने हारूनी इस आवाज़ को सुन कर बहुत ख़ुश हुए और बारगाहे इलाही में सज्दए शुक्र अदा किया। (अनीसुल अरवाह, स. 2)

मज़ारे अनवर व अक़दस की हाज़री

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हज से फ़राग़त के बाद मैं अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के हमराह मदीना तैय्यिबा में महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अक़दस दरे अनवर पर हाज़िर हुआ तो पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया : सुल्ताने दो जहाँ को सलाम करो !

मैंने मज़ारे अनवर पर बड़े अदबो एहतिराम के साथ सलाम पेश किया। तो रोज़ए पाक से आवाज़ आई व अलैकुमुस्सलाम या क़ुतुबे मशाइख़ बर्रो बहर यानी व अलैकुमुस्सलाम ऐ (ख़ुश्क व तर) जंगलों और पहाड़ों के सरदार।

जब यह आवाज़ आई तो पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया : ऐ मोईनुद्दीन ! अब तुम्हारा काम मुकम्मल हो गया। (अनीसुल अरवाह, स. 2)

ऐ ईमान वालो ! इस नूरानी वाक़िआ से मालूम हुआ कि मदीना तैय्यिबा में विलायत व बुज़ुर्गी, रहमत व बरकत, नेअ़मत व दौलत का बाड़ा आठों पहर बटता नज़र आता है। मदीना तैय्यिबा में झोली फैलाकर तो देखो दस्ते तलब दराज़ करके तो देखो, तलब से ज़्यादा पा जाओगे, सवाल से सिवा हासिल हो जाएगा और गुम्बदे ख़ज़रा के साए में मज़ारे अनवर पर और दरे अक़दस के हुज़ूर रहमतो नूर की ख़ैरात के लिये दामन फैलाना, हाथ उठाना, हमारे ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा और औलिया अल्लाह की सुन्नत व आदत है।

चाहे जो मांगो अता फ़रमाएंगे, ना मुरादो हाथ उठाकर देख लो
यह कभी इनकार करते ही नहीं, बे नवाओ ! आज़मा कर देख लो
(जमील रजवी बरेलवी)

खरक़ए खिलाफ़त : जमाअते अहले सुन्नत की मोअ़तबर व मुस्तनद शख़्सियत रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी रहमतुल्लाहे तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि दौराने सफ़र बीस साल तक अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत करने के बाद हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बावन साल की उम्र में अपने पीरो मुर्शिद से रुख़सत हुए। रुख़सत के वक़्त पीरो मुर्शिद ने आपको ख़रक़ए खिलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया और तबर्रुकाते मुहम्मदी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जो हज़रात ख़्वाजगाने चिश्त में सिलसिला ब सिलसिला चले आ रहे थे हमारे ख़्वाजा को अता फ़रमा कर अपना जा नशीन और साहिबे सज्जादा बना दिया। ख़ुद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने इन वाक़िआत की तफ़सील अपने क़लम से यूँ बयान फ़रमाई है :

आक़ाए नेअ़मत व दौलत हज़रत पीरो मुर्शिद ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मोईनुद्दीन ! मैंने यह सब काम तुम्हारी तकमील के लिये किया है तुमको इस पर अमल करना लाज़िम है। फ़र्ज़न्दे ख़लफ़ वही है जो अपने होशो गोश में अपने पीर के इरशादात को जगह दे।

इस इरशाद के बाद असाए मुबारक, नअ़लैन चौबी (खड़ाऊं) और मुसल्ला इनायत फ़रमाया, फिर इरशाद फ़रमाया : यह तबर्रुकात हमारे पीराने तरीक़त की यादगार हैं जो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से हम तक पहुँचे हैं और हमने तुम को दिये हैं, इनको इसी तरह अपने पास रखना जिस तरह हमने रखा। जिसको मर्द पाना उसको हमारी यह यादगार देना और ख़ल्क़ से तमअ़ (लालच) न रखना, आबादी से दूर मख़लूक़ से किनारा कश रहना और किसी से कुछ तलब न करना।

पीरो मुर्शिद ने यह इरशाद फ़रमा कर मुझे अपने आग़ोशे रहमत में ले लिया फिर मेरे सर और आँखों को बोसा दिया और फ़रमाया मैंने तुमको ख़ुदा के सुपुर्द किया फिर आलमे तहय्युर में मशग़ूल हो गए और मैं रुख़्सत हुआ। (अनीसुल अरवाह, स. 34, 35, सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 49, अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 372)

ऐ ईमान वालो ! पीरी मुरीदी, जाह व माल और दुनिया कमाने का ज़रीआ नहीं है। यह मुबारक व मस्ऊद अमल सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह व रसूल जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रज़ा और ख़ुश्नोदी के हुसूल का ज़रीआ है। खिलाफ़त व इजाज़त हर किसी को देने की चीज़ नहीं है। हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जो पैदाइशी वली हैं, बीस साल तक पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में गुज़ारे और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी से सरफ़राज़ हुए, फिर पीरो मुर्शिद ने आपको खिलाफ़त व इजाज़त से नवाज़ा मगर आज इल्मो मारेफ़त और तक़वा, तहारत नहीं बल्कि चापलोसी

और लम्बे नज़रानों की बुनियाद पर पीरो मुर्शिद बनने वाले, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, बे अमल और बे इल्म और बे नमाज़ी लोगों को भी खिलाफ़त व इजाज़त देते नज़र आते हैं। अल इयाज़ बिल्लाहि तआला

पुर ख़ुलूस गुज़ारिश : पीरो मुर्शिद साहब और मुरीद साहब दोनों की खिदमत में पुर ख़ुलूस गुज़ारिश है कि कभी तन्हाई में ठन्डे दिल से अपने गिरेबान में बार बार झांक कर देखिये और ग़ौर व फ़िक्र करिये कि क्या हमारे इस तर्ज़े अमल से हमारे मशाइख़ और पीराने किराम के नूरानी और रूहानी सिलसिले की बे अदबी और गुस्ताख़ी नहीं है। अगर है तो तौबह कर लीजिये और सच्चे पीर व मुरीद बन जाइये।

कुतबे आलम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

अहले, गहले, मशाइख़ आज कल हर हर गली
बे हमा व बा हमा मर्दे ख़ुदा मिलता नहीं
हैं सफ़ाए ज़ाहिरी के सामां ख़ूब ख़ूब
जिसका बातिन साफ़ हो वह बा सफ़ा मिलता नहीं

अय्यामे सफ़र के वाक़िआत

रईसुल क़लम अल्लामा अरशदुल क़ादरी रहमतुल्लाहे तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने सत्तर साल की तवील मुद्दते सफ़र में इल्मो इरशाद के बड़े बड़े मशाहीर और नादिरए रोज़गार अस्हाबे कमाल से मुलाक़ातें कीं। दिलों की तस्ख़ीर, रूहों का तजकिया और जहांने आबो गिल में तसर्रुफ़ात के ऐसे ऐसे हैरत अंगेज़ वाक़ेआत आपसे ज़हूर में आए जिनसे आज तक अक़्लो दानिश को सकता है। (सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 50)

दूसरी मरतबा मक्का मुअज़्ज़मा की हाज़री

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रुख़सत हुए तो मुशाहादए आलम और मुतालआ जहाँ और अहलुल्लाह की ज़ियारत की ग़रज़ से सफ़र का आग़ाज़ किया, बहुत से मुल्कों और शहरों में तशरीफ़ ले गए और वहाँ के मरदाने हक़ और औलियाए किराम से मुलाक़ात हुई और फ़ैज़ हासिल किया। दौराने सफ़र जहाँ भी जाते पीरो मुर्शिद की हिदायत के मुताबिक़ ख़ुद को आम लोगों से अलैहदा रखते, सफ़र जारी रखा, दूसरी मरतबा मक्का मुअज़्ज़मा हाज़िर हुए।

हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दूसरी मरतबा सन् 583 हि. में मक्का मुअज़्ज़मा हाज़िर हुए और काबा शरीफ़ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए। दिन व रात काबे का तवाफ़ और इबादतो रियाज़त में मशग़ूल रहते। एक दिन हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने काबए मुअज़्ज़मा में परदए ग़ैब से यह आवाज़ सुनी :

ऐ मोईनुद्दीन ! हम तुझ से खुश हैं, तुझे बख़्श दिया, जो कुछ चाहे मांग ताकि अता करूँ।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो यह सुनकर बहुत खुश हुए और सज्दए शुक्र अदा किया और अपने रहमानो रहीम रब तआला की बारगाहे करम में अर्ज़ किया :

या इलाही ! तेरे बन्दे मोईनुद्दीन के लिये इस से बड़ी और क्या सआदत हो सकती है कि तूने मुझे अपनी बारगाह का मक़बूल बना लिया। इस के बाद अगर कोई आरज़ू है तो सिर्फ़ यह है कि तू अपने फ़ज़्लो करम से मेरे सिलसिले के मुरीदों को बख़्श दे।

आवाज़ आई ! कि ऐ मोईनुद्दीन ! तू हमारा ख़ास बन्दा है, तेरी आरज़ू मुबारक हो, जो तेरे मुरीद और तेरे सिलसिले में क़ियामत तक मुरीद होंगे उन सब को बख़्श दूँगा।

(सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 51)

फिर कुछ दिन मक्का मुकर्रमा में गुज़ारे, फिर मदीना तैय्यिबा के लिये रवाना हो गए।

मदीना तैय्यिबा की हाज़री और बशारत

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हमा वक़्त अपने प्यारे नाना जान महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर क़ब्रे नूर पर हाज़िर रहते, एक दिन मज़ारे अनवर पर हाज़िर थे कि आप पर गुनूदगी तारी हो गई, ख़्वाब में आक़ाए कायनात नबिये दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। मुश्फ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बशारत अता की।

ऐ मोईनुद्दीन ! तुम मेरे दीन के मोईन हो, मैंने तुमको हिन्दूस्तान की विलायत अता की। हिन्दूस्तान में कुफ्रो शिर्क की ज़ुल्मत फेली हुई है, तुम अजमेर जाओ ! तुम्हारे वुजूद की बरकत से कुफ्रो शिर्क और बातिल का अन्धेरा दूर होगा और इस्लाम की सुबह का उजाला फेल जाएगा। (सियरुल अक़ताब, स. 124)

इस शानदार और पुर बहार बशारत से हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो बहुत ख़ुश और मसरूर हुए मगर हैरान थे कि अजमेर कहाँ है ? अजमेर का रास्ता क्या है ? इसी सोच व फ़िक्र में थे कि दोबारा आँख लग गई और हादी व रहबर आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम आपको ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर थोड़ी ही देर में मदीना तैय्यिबा से हिन्दूस्तान के तमाम रास्ते और अजमेर का तमाम शहर और क़िला और पहाड़ियाँ आपको दिखला दिया, फिर एक जन्नती अनार हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को देकर मालिको मुख़्तार आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, ऐ मोईनुद्दीन ! हम तुम को अल्लाह तआला के सुपुर्द करते हैं और आपको रुख़सत फ़रमाया। (मूनिसुल अरवाह, स. 330, सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 53)

मदीना तैय्यिबा से अजमेर का सफ़र

अपने प्यारे आक़ा महबूबे परवर दिगार, रसूले मुख़्तार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान के सबब अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ख़्वाब से बेदार होकर चौलीस औलिया के साथ हिन्दूस्तान के लिये रवाना हो गए।

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे नबी, मालिको मुख़्तार रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की देन व अता से अपनी बारगाह से साइल व भिकारी की हर मुराद और आरज़ू पूरी फ़रमा देते हैं। अताए रसूल, हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा नहीं, बल्कि सिर्फ़ सोचा था कि अजमेर कहाँ है ? अजमेर का रास्ता क्या है तो आक़ाए कायनात सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सोच व फ़िक्र और मुराद को देख लिया और उसी वक़्त मदीना तैय्यिबा से हिन्दूस्तान के सारे रास्ते और अजमेर का शहर और उसका क़िला और तमाम पहाड़ियाँ दिखला दीं।

क्या ही ख़ूब फ़रमाया मेरे आक़ाए नेअमत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने :

वल्लाह वह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुँचेंगे
इतना भी हो कोई जो आह करे दिल से

दौराने सफ़र रूनुमा होने वाले वाक़ेआत

पहला वाक़िआ : क़ुतुबुल अक़ताब हज़रत क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हज़रत शैख़ औहदुद्दीन व हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी और मेरे पीरो मुर्शिद हज़रदत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम शहर ख़ुरासान की एक मजलिसे ख़ैर में बैठे हुए थे। अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र हो रहा था कि सामने से सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश जिसकी उम्र उस वक़्त बारह साल की थी, हाथ में एक प्याला लिये जा रहा था, जैसे ही हमारे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़र उस पर पड़ी, इरशाद फ़रमाया : जब तक यह लड़का दहली का बादशाह न होगा ख़ुदा इसे दुनिया से न उठाएगा। (फ़वाइदुस्सालेकीन, स. 15)

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़बान ग़ैबे तर्जमान से निकला हुआ यह जुमला तक़दीरे इलाही बन गया।

तारीख़े हिन्द शाहिद है कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के इरशाद के मुताबिक़ सन् 607 हि. में शमसुद्दीन अलतमश नाम का एक गुमनाम शख़्स तूफ़ान की तरह उठा और देखते ही देखते सारे हिन्दूस्तान पर छा गया और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो की एक खुली करामत बन कर एक दिन शमसुद्दीन अलतमश देहली के तख़्त पर क़ब्ज़ा करके बादशाह हुआ।

जज़्ब के आलम में जो निकले लबे मोमिन से
वह बात हक़ीक़त में तक़दीरे इलाही है

दूसरा वाक़िआ : हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मदीना तैय्यिबा से रवाना होकर बग़दादे मुअल्ला, चिश्त ख़िरक़ान, जहना, किरमा, उस्तर आबाद, बुख़ारा, तबरेज़, अस्फ़हान, हरात होते हुए ख़ुरासान के शहर सब्ज़ा वार पहुँचे थे सब्ज़ा वार का हाकिम यादगार मुहम्मद था जो मुतअस्सिब शीआ था, शहर के किनारे उस का एक ख़ूब सूरत और पुर फ़िज़ा बाग़ था। हमारे प्यारे ख़्वाजा एक दिन उस बाग़ में तशरीफ़ ले गए, बाग़ में एक साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ होज़ था, होज़ में ग़ुस्ल किया और होज़ के किनारे नमाज़ अदा की और तिलावते क़ुरआन में मशग़ूल हो गए। इसी दरमियान यादगार मुहम्मद शाहाना कर्रो फ़र के साथ उस की सवारी बाग़ में दाख़िल हुई। होज़ के क़रीब एक मुसलमान फ़क़ीर को देख कर ग़ज़बनाक हो गया और बद ख़ुलक़ी और बद तमीज़ी से बोला ऐ फ़क़ीर! तुम को शाही बाग़ में आने की इजाज़त किस ने दी? हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की निगाहे विलायत उठी नज़र का नज़र से मिलना था कि यादगारे मुहम्मद कांपने लगा और बेहोश हो कर गिर पड़ा। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस के मुंह पर पानी छिड़का, यादगारे मुहम्मद होश में आया तो दिल की दुनिया बदल चुकी थी, बद अक़ीदगी का फ़साद ख़तम हो चुका था। निहायत आजिज़ी के साथ अपनी ग़लती की मुआफ़ी मांगी और अपने तमाम ख़ादिमों और मुलाज़िमों के साथ बद अक़ीदगी से तोबा कर के हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मुरीद हो गया और ख़िदमते अक़दस में रह कर उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी की तकमील कर ली। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उसे ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। अब यादगार मुहम्मद सब्ज़ावार की ज़ाहिरी व बातिनी सल्तनत का बादशाह बन चुका था।

(ख़ज़ीनतुल औलिया, स. 158, मूनिसुल अरवाह, स. 28)

हज़रात! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की निगाहे विलायत की तासीर व फ़ैज़ान किस क़दर बलन्द है कि शिआ बद अक़ीदगी से तौबह करके आपका मुरीद व मोअ़तक़िद हो गया।

इस लिये मैं अकसर कहा करता हूँ कि जब भी कोई मुश्किल अम्र व दुश्वारी पेश आए और आपकी हाजत पूरी न होती नज़र आए तो सीधे अजमेर शरीफ़ चले जाओ और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो के मज़ारे अनवर पर आपके रू बरू चन्द आंसूओं के क़तरे गिरा दो। अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से निगाहे ख़्वाजा उठेगी और तक़दीर बदल जाएगी।

ग़म जहाँ के सताए हैं दर पर आए हैं
तुम्हारा दर है कि दारुल अमां ग़रीब नवाज़

रसूले पाक के सदक़े में राह दिख ला दो
भटक रहा है मेरा कारवां ग़रीब नवाज़

बल्ख़ का वाक़िआ : हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सब्ज़ा वार से बल्ख़ पहुँचे। बल्ख़ में उन दिनों एक बहुत बड़ा नामी ग्रामी हकीम और फ़लसफ़ी शख़्स रहा करता था। (प्रोफ़ेसर) ज़ियाउद्दीन हकीम के नाम से मशहूर था, फ़लसफ़ा और हिकमत में बड़ा कमाल हासिल था (प्रोफ़ेसर) ज़ियाउद्दीन हकीम अहले तसव्वुफ़ पीराने तरीक़त और सूफ़ियाए किराम बुज़ुर्गों का मज़ाक़ बनाया करता था और अल्लाह वालों से बड़ा मुतनफ़्फ़िर (नफ़रत करने वाला) रहा करता था और कहा करता था कि सूफ़िया अक़्लो ख़िरद से आरी और ख़ाली होते हैं, उसको अपने फ़लसफ़ा और हिकमत पर बड़ा नाज़ और घमण्ड था, बल्ख़ शहर में उसका एक पुर फ़ज़ा बाग़ था और उसी बाग़ में फ़लसफ़ा और हिकमत का एक मदरसा था जिसमें वह पढ़ाया करता था।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का गुज़र उस इलाक़े से हुआ जहाँ (प्रोफ़ेसर) हकीम ज़ियाउद्दीन का बाग़ और उसकी फ़लसफ़ी दर्सगाह थी। हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने क्लंग का शिकार किया, ख़ादिम ने उसको भून कर तैयार किया और हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नमाज़ अदा करने लगे। उसी दौरान (प्रोफ़ेसर) हकीम ज़ियाउद्दीन आ गया, देखा कि एक फ़क़ीर नमाज़ पढ़ रहा है और उसका ख़ादिम क्लंग भून रहा है। जब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो ख़ादिम ने भूना हुआ परिन्दा पेशे ख़िदमत किया। (प्रोफ़ेसर) ज़ियाउद्दीन भी पास ही बैठ गया। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ कर परिन्दे की एक रान हकीम ज़ियाउद्दीन को अता फ़रमा दी और दूसरी रान खुद तनावुल फ़रमाने लगे (प्रोफ़ेसर) ज़ियाउद्दीन गोश्त खाते ही बेहोश हो गया। जब प्रोफ़ेसर साहब को होश आया तो दिल की दुनिया बदल चुकी थी, फ़लसफ़ा व हिकमत और प्रोफ़ेसरी का घमण्ड व ग़ुरूर सब मिट चुका था और औलिया व सूफ़िया से बुग़्ज़ो इनाद दिल से मिट चुके थे, दिल की पाकी व सफाई के साथ हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मोअतक़िद बन चुका था। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मुरीद हुआ। घर पहुँच कर हिकमत व फ़लसफ़ा और प्रोफ़ेसरी की तमाम किताबें दरिया में डाल दीं, उलमा और सूफ़िया की सोहबत ने मर्दे कामिल बना दिया और शबो रोज़ (दिन रात) ज़िक्र व फ़िक्र को अपना मामूल बना लिया। यह सारी तब्दीलियाँ एक सच्चे सूफ़ी, एक वलिये कामिल हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो की निगाहे विलायत का जीता जागता सुबूत है। (ख़ज़ीनतुल असफ़िया, जि. 1, स. 259, मूनिसुल अरवाह, स. 29)

हज़रात ! (प्रोफ़ेसर) हकीम ज़ियाउद्दीन और उस के तमाम शागिर्दों के दिमाग़ पर हमा वक़्त प्रोफ़ेसरी और हिकमत व फ़लसफ़ा का भूत सवार रहता था और सूफ़ियाए किराम और औलियाए किराम और उलमाए किराम के वअ़ज़ व नसीहत और उन की रूहानी ताक़त का

मज़ाक़ बनाना और उन बुज़ुर्गों की हक़ीक़त व हैसियत का इनकार करना यह सब शैतानी फ़ितरत वालों की आदत थी मगर हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की एक निगाहे विलायत ने उन प्रोफ़ेसरों और फ़लसफ़ियों के सरों से प्रोफ़ेसरी और हिकमत व फ़लसफ़ा के तमाम भूतों और शैतानों को उतार कर रख दिया और सूफ़िया औलिया की रूहानी ताक़त व कुव्वत को तस्लीम करने पर मजबूर कर दिया।

हज़रात ! आज कल भी कुछ डाक्टर, प्रोफ़ेसर, हकीम, इन्जीनियर और जदीद उलूम के माहिर व स्कॉलर कहलाने वाले हकीम ज़ियाउद्दीन फ़लसफ़ी की तरह उलमा, मशाइख़ और सूफ़ियाए किराम की रूहानियत व करामत का मज़ाक़ बनाते नज़र आते हैं जब कि यही बिगड़े बिगड़ाए लोग हुकूमते वक़्त के बनाए हुए हाकिमों और अफ़सरों की वक़्ती ताक़त व कुव्वत को तस्लीम करते नज़र आते हैं और उन की शान में ख़ुत्बा और क़सीदा पढ़ते दिखाई देते हैं कि फ़लां हाकिम व अफ़सर ने कालेज में और फ़लां अफ़सर ने यूनिवर्सिटी में और फ़लां हाकिम ने महकमए पुलिस और फ़लां साहेब ने रेलवे वग़ैरह में जगह दिला दी उस अफ़राद व हाकिम की पहुँच और ताक़त बहुत है।

ऐ जदीद उलूम के माहिर व स्कॉलर साहब ! जब हुकूमते वक़्त के बनाए हुए वक़्ती हाकिमों और अफ़सरों की पहुँच और ताक़त का यह आलम है तो हाकिमे मुतलक़ अल्लाह तआला ने भी अपने महबूब बन्दों, औलिया, सूफ़िया और हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हमारे प्यारे पीर दस्तगीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को दीनो दुनिया का हाकिम और अपनी मख़लूक़ का अफ़सर बनाया है तो अल्लाह तआला के बनाए हुए इन हाकिमों और अफ़सरों की पहुँच और ताक़त व कुव्वत का क्या आलम होगा।

मगर ज़रूरत है हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जैसे साहिबे रूहानियत बुज़ुर्ग की। इस लिये मेरी पुर ख़ुलूस इल्तिमास है हर प्रोफ़ेसर, डॉक्टर, इन्जीनियर, स्कॉलर के लिये कि अजमेर शरीफ़ में हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर पर हाज़री दें और अपनी खुली आँखों से देखें कि एक सूफ़ी अल्लाह के वली की पहुँच कहाँ तक है कि पहले भी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला ने फ़लसफ़ियत का भूत उतारा था और आज भी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर पर हर दिन हर क़िस्म के भूत व जिन्न उतारे जाते हैं और क़ियामत तक यह सिलसिला जारी रहेगा। इन्शाअल्लाह।

ख़ूब फ़रमाया हज़रत शाह नियाज़ बरैलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह ने -

मुर्शिद व रहनुमाए अहले सफ़ा
हादिये इन्सो जां मोईनुद्दीन
आशिक़ां रा दलीले राहे यक़ीन
सद्दे रहे गुमां मोईनुद्दीन

और शहज़ादए हुज़ूर अहसनुल उलमा हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ क़ादरी बरकाती

मद्दज़िल्लहुल आली क्या ही ख़ूब फ़रमाते हैं -

बहरे ज़ुलमात में तुम एक जज़ीरा ख़्वाजा
बीच मंजधार में तुम मेरा किनारा ख़्वाजा

दाता साहब के मज़ार पर हमारे प्यारे ख़्वाजा की हाज़री

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़िल्लाहो तआला अन्हो बल्ख़ से रवाना होकर समर क़न्द और दूसरे सूबों और शहरों से होते हुए लाहोर पहुँचे और कई महीनों तक हज़रत शैख़ अली हिजवेरी दाता गंज बख़्श रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़री दी और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला ने हज़रत दाता गन्ज बख़्श रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर के पास एक हुजरा में चालीस दिन का चिल्ला किया। वह हुजरा आज भी मौजूद है और ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है और हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रुख़सत होते वक़्त हज़रत दाता गन्ज बख़्श रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रूहानियत बरकात व कमालात से मतास्सिर हो कर आप की शाने अक़दस में यह शेअ़र कहा जो आलमगीर शोहरत का हामिल है और आज तक हज़रत दाता गन्ज बख़्श रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे पुर अनवर की लौहे पेशानी पर लिखा हुआ है। वह शेअ़र यह है।

गन्ज बख़्श फ़ैज़े आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा
ना क़िसां रा पीरे कामिल कामिलां रा रहनुमा

(सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 55)

मज़ारों पर हाज़री देना, हमारे ख़्वाजा की सुन्नत है

ऐ ईमान वालो ! आज कुछ बद अक़ीदा और मुनाफ़िक़ लोग मज़ाराते औलिया पर हाज़री देने और अल्लाह तआला के वलियों की क़ब्रों से फ़ैज़ व बरकत हासिल करने को शिर्क व बिदअत कहते नज़र आते हैं। वह लोग अपने होश को संभालें और बद अक़ीदगी और मुनाफ़िक़त से तौबह करें। अगर औलियाए किराम के मज़ारों और क़ब्रों पर हाज़री और उन के फ़ैज़ व करम का हुसूल कुफ़्र व शिर्क और बिदअत व गुमराही होता तो हादिये हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत दाता गन्ज बख़्श रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर और क़ब्रे अक़दस पर हाज़िर होकर फ़ैज़ व बरकत हासिल नहीं करते। हादिये हिन्दूस्तां अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के इस अमल से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि अल्लाह तआला के महबूब बन्दों औलियाए किराम के मज़ारों और क़ब्रों पर हुसूले बरकत व रहमत के लिये हाज़री देना अल्लाह तआला के नेक बन्दों और हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आदत व सुन्नत है।

हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

हमारे प्यारे ख़्वाजा का वुरुद अजमेर में

हादिये हिन्दूस्तां जिसको आज पूरा आलम ख़्वाजा मोईनद्दीन हसन चिश्ती संजरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के नाम से जानता है और सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मुक़द्दस लक़ब से याद करता है और पुकारता है हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बे ख़ौफ़ व ख़तर दुश्वार गुज़ार रास्तों, लक़ व दक़ सेहराओं और बे आबो गयाह मैदानों को तय करते हुए मन्ज़िले मक़सूद की तरफ़ रवां दवां थे, राह में जहां कहीं शाम हो जाती क़याम फ़रमाते और रात भर इबादते इलाही में मशगूल रहते। सुबह होती फिर सफ़र शुरू फ़रमा देते।

लाहौर में हज़रत दाता गंज बख़्श रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे पुर अनवार पर कई महीनों तक हाज़िर राह कर फ़ैज़ो बरकत हासिल करके लाहौर से रवाना हुए, देहली होते हुए राजिस्थान के इलाक़े में दाख़िल हुए, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का वजूदे मस्ऊद मुकम्मल इस्लाम था, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जिस शहर या देहात के क़रीब से गुज़र गए आपके क़दमों की बरकत से शहर और दिहात वालों को हिदायत की सआदत हासिल हुई। और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जिस ज़मीन पर क़याम फ़रमाया वह ज़मीन का हिस्सा सज्दा गाह बन गया।

राजिस्थान के सेहराओं, पहाड़ियों और कांटों से भरे रास्तों से गुज़रते रहे और सफ़र तय करते रहे।

हमारे प्यारे ख़्वाजा का दौराने सफ़र जूता टूट गया

आले नबी, औलादे अली, सय्येदुल उलमा हज़रत सय्यद आले मुस्तफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि दौराने सफ़र हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आपके साथियों के जूते टूट गए तो तांत के टुकड़े से जूते बाँध लेते थे।

(अहले सुन्नत की आवाज़, स. 2008, स. 44)

हमारे ख़्वाजा के पांव ज़ख़्मी हो गए थे

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का सफ़र इस क़दर दुश्वार गुज़ार था कि सफ़र करते करते क़दमे मुबारक ज़ख़्मी हो गए थे और पैरों के नाख़ुन तक गिर गए थे, चुनाँचे हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पैदल चल कर सफ़र तय फ़रमा रहे थे, न तो उनके पास सामाने सफ़र था और न ही उनके पास खाने पीने की कोई चीज़ थी। (अहले सुन्नत की आवाज़, स. 2008, स. 44)

अल्लाहु अकबर ! हिन्दूस्तान में आसानी के साथ इस्लाम नहीं फैला है, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और उनके रुफ़क़ा ने फ़ाक़े पर फ़ाक़ा किया है और भूक व प्यास को बरदाश्त किया है तब हिन्दूस्तान में इस्लाम फैला है, सफ़र करते करते जूते टूटे हैं और सफ़र की कुलफ़तों और सऊबतों से अपने पैरों को ज़ख्मी किया है तब हिन्दूस्तान में इस्लाम फूला और फला है।

हज़ारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

मन्ज़िले इश्क़ में तस्लीमो रज़ा मुश्किल है
जिनके रुत्बे हैं सिवा उनको सिवा मुश्किल है

रसूले ख़ुदा की मर्ज़ी से हमारे ख़्वाजा हिन्दूस्तान आए

अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब देहली से अजमेर के लिये रवाना हुए और राजिस्थान की पहाड़ियों और जंगलों के दरमियान सफ़र जारी था कि इसी अस्ना में जंगलों के बीच पृथ्वी राज की फ़ोज से शिकस्त व हार से दो चार, सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी के लश्कर का एक सिपाही हैरान व परेशान तने तन्हा राजिस्थान के जंगलों में भटक रहा था, सुन्सान जंगल व ब्याबान में उस फ़ोजी सिपाही मुसलमान ने जब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आपके साथियों को देखा कि अजमेर जा रहे हैं तो उस सिपाही मुसलमान ने बड़ी मिन्नत व समाजत के साथ अर्ज़ किया कि आप हज़रात मुसलमान हैं और मैं भी सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी के लश्कर का एक मुसलमान सिपाही हूँ और अपनी फ़ौज से बिछड़ गया हूँ। आपसे गुज़ारिश है कि आप हरगिज़ अजमेर न जाएं इस लिये कि अजमेर का राजा पृथ्वी राज बहुत ज़ालिम व जाबिर है और उसके पास बहुत बड़ी फ़ौज है। जब शहाबुद्दीन जैसा बादशाह कामियाब न हो सका तो आपके पास तो फ़ौज और हथियार भी नहीं हैं तो आप कामियाब व कामरां कैसे होंगे, आपको नुक़सान उठाना पड़ेगा, और क़त्ल कर दिये जाओगे, इस लिये अजमेर जाने का इरादा मुल्तवी कर दीजिये और अजमेर न जाइये।

हमारे ख़्वाजा ने इरशाद फ़रमाया : वह शहाबुद्दीन था और मैं मोईनुद्दीन हूँ। शहाबुद्दीन अपनी मर्ज़ी से आया था और मोईनुद्दीन मुख़्तारे दो आलम रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मर्ज़ी से आया है और सुल्तान शहाबुद्दीन फ़ौज और अस्लहा के सहारे आया था और मोईनुद्दीन अल्लाह व रसूल के सहारे आया है और ऐ मुसलमान भाई ग़ौर से सुनो और याद रखो कि जो शख़्स फ़ौज और अस्लहा पर भरोसा करता है वह नाकाम और बे मुराद होता है और जो मर्दे मोमिन अल्लाह व रसूल पर भरोसा करता है वह कामियाब व बा मुराद होता नज़र आता है। यह फ़र्क़ है शहाबुद्दीन और मोईनुद्दीन में।

ख़्वाजए ख़्वाजगां मोईनुद्दीन
फ़ख़रे कोनो मकां मोईनुद्दीन

सिर्रे हक़ रा बयां मोईनुद्दीन
बे निशां रा निशां मोईनुद्दीन
(हज़रत नियाज़ बरेलवी)

हमारे ख़्वाजा का जोहदे पैहम : हादिये हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सफ़र मुसलसल करते हुए दुश्वार गुज़ार राहों से गुज़रते हुए चालीस दुरवेशों के क़ाफ़ले के हमराह पहला क़दम अजमेर की धरती पर रखा।

हमारे ख़्वाजा दीन के मोईन थे

हादिये हिन्दूस्तां हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के वुरूदे मस्ऊद से पहले हिन्दूस्तान में हर जानिब कुफ्र व काफ़िरी और बुत परस्ती का दौर दौरा था, हिन्दूस्तान के सरकश लोग अकसर ख़ुदाई का दावा करते थे और ख़ुदा बुज़ुर्ग व बरतर के शरीक बनते थे। पत्थरों, दरख़्तों, जानवरों, चोपायों और गाय के गोबर तक को पूजते थे, सब दीन और इस्लाम से ग़ाफ़िल और ख़ुदा व रसूल से बे ख़बर थे, किसी ने कभी कअ़बे का रुख़ न देखा और न कभी अल्लाहु अकबर की सदा सुनी थी।

हादिये हिन्दूस्तां अताए रसूल ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी अजमेरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के आने की बरकत से हिन्दूस्तान की ज़मीं से कुफ्र व शिर्क का अन्धेरा दूर हो गया और हर सू इस्लाम का उजाला फैल गया। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हक़ीक़त में दीन के मोईन थे। (सियरुल औलिया, स. 57)

आपके न आने तक हिन्द में अन्धेरा था
रौशनी घर घर फैली आप ही के आने से

ऊँट बैठे रह गए : हादिये हिन्दूस्तां हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का नूरानी और रूहानी क़ाफ़ला अजमेर पहुँचा तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने शहर के बाहर एक मक़ाम पर साया दार दरख़्तों के नीचे क़याम करना चाहा तो राजा पृथ्वी राज के मुलाज़िमों ने बड़ी बद अख़्लाक़ी और निहायत बद तमीज़ी का मुज़ाहरा करते हुए उस जगह क़याम करने से मना किया और सारबानों ने कहा कि इस जगह पर हमारे राजा के ऊँट बैठते हैं।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया मैं यहाँ से जाता हूँ, तुम्हारे ऊँट बैठते हैं तो अब बैठे ही रह जाऐंगे यह फ़रमाकर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो वहाँ से रवाना हो गए और अना सागर के क़रीब क़याम फ़रमाया। वह जगह आज भी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चिल्ले के नाम से मशहूर है। जब शाम हुई तो राजा के ऊँट अपनी चरागाहों से आए और अपनी जगह पर बैठ गए, तो ऊँट ऐसे बैठ गए कि उठाने से भी न उठ सके, ऐसा महसूस होता था कि उनके सीने ज़मीन से चिपक गए हों। सुबह के वक़्त जब राजा के मुलाज़िमों, सारबानों ने ऊँटों को उठाना चाहा तो हज़ार कोशिश के बाद भी ऊँट न उठ सके। मुलाज़िमों, सारबानों ने सारे वाक़िआ की इत्तिला राजा को दी तो राजा पृथ्वी राज ने

कहा कि तुम लोग उस दुरवेश की ख़िदमत में हाज़िर होकर उनसे अपनी ग़लती और बे अदबी की मुआफ़ी तलब करो। चुनाँचे मुलाज़िमों से हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर होकर माज़िरत तलब की और अपनी बे अदबी की मुआफ़ी चाही। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मुआफ़ फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया : जाओ अल्लाह तआला की बारगाह से तुम्हारे ऊँटों के उठने का हुक्म हो चुका है। जब यह सारबान ऊँटों के पास आए तो हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रूहानी ताक़त व करामत देखकर हैरान व शुशदिर रह गए कि हक़ीक़त में सारे ऊँट खड़े हो गए हैं।

(सियरुल अक़ताब, स. 124, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 1, स. 268, मसालिकुस सालेकीन, स. 274, मूनिसुल अरवाह, स. 31)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला औलियाए किराम को इस क़दर इख़्तियारात व तसर्रुफ़ात अता फ़रमाता है कि वली के ताबेअ़ फ़रमान ज़मीन भी रहती है जैसा कि हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमा दिया तो ज़मीन ने फ़ौरन हुक्म पर अमल किया और ऊँटों को पकड़ लिया

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहे तआला अलैह अपनी मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

औलिया रा हस्त कुदरत अज़ इलाह
तीर जस्ता बाज़ गरदानन्द ज़िराह

फ़रमाते हैं कि औलियाए किराम को अल्लाह तआला ऐसी ताक़त व कुदरत अता फ़रमाता है कि कमान में से तीर छोड़ दिया जाए और वह तीर मकान से निकल कर हवा में जा रहा हो और अल्लाह का वली यह कह दे कि ऐ तीर कमान में वापस आ जा तो वह तीर कमान में वापस आ जाता है।

और फ़रमाते हैं :

गुफ़्तह उ गुफ़्तए अल्लाह बुवद
गरचेह अज़ हुलक़ूमे अब्दुल्लाह बुवद

यानी औलियाए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम जो कहते हैं वह अल्लाह का कहा होता है अगरचेह तुम्हारी आँखों के सामने वह एक बन्दे की ज़बान से निकल रहा होता है लेकिन हक़ीक़त में वह क़ौल अल्लाह तआला का क़ौल होता है। (मसनवी शरीफ़)

राम देव महन्त का कुबूले इस्लाम

अनासागर के आस पास सेंकड़ों मन्दिरों में एक सबसे बड़ा मन्दिर था और वह बड़ा मन्दिर राजा पृथ्वी राज और उसके ख़ानदान के लिये मख़सूस था और उस मन्दिर का महन्त राम देव था। राम देव एक बलन्द क़ामत (लम्बा पूरा) और ताक़तवर इन्सान था, बहुत बड़ा जादूगर और सिफ़ली अमल का जानकार भी था।

राम देव के कुबूले इस्लाम का वाक़िआ इस तरह बयान किया गया है कि :

जब हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रूहानी ताक़त

व कुव्वत से अजमेर की ज़मीन पर इस्लाम का शजर फूलने और फलने लगा और अजमेर की धरती से ईमान व यक़ीन का चश्मा उबलने लगा और अल्लाह व रसूल के मारेफ़त के अनवार व तजल्लियात से खल्के ख़ुदा मुनव्वर व मुजल्ला होने लगी तो इस्लाम की बढ़ती हुई कुव्वत व ताक़त और मुसलमानों की रोज़ अफ़ज़ूं (दिन ब दिन बढ़ती) तादाद को देखकर राजा पृथ्वी राज घबरागया और उसी हैरानी व परेशानी के आलम में रामदेव महन्त के पास आया और कहने लगा कि आप अपने जादू और सिफ़ली अमल से उस मुसलमान फ़क़ीर को हलाक व बरबाद करदो या उस मुसलमान फ़क़ीर को हमारे मुल्क से बाहर निकाल दो वर्ना पूरा अजमेर मुसलमान हो जाएगा और हमारी हुकूमत ख़तरे में पड़ जाएगी। राजा पृथ्वी राज की गुफ़्तुगू को सुनने के बाद रामदेव महन्त थोड़ी देर ख़ामोश बैठा रहा और बोला कि ऐ राजा साहब यह मुसलमान दुरवेश बहुत ही कुव्वत व ताक़त और कमाल का मालिक है, इस फ़क़ीर से इस तरह मुक़ाबला आसान नहीं है, मैं कोशिश करता हूँ कि इस फ़क़ीर पर जादू और सिफ़ली अमल से कामियाबी मिले इसके अलावा कोई तरीक़ा नहीं है।

राम देव महन्त अपने चेलों और शागिर्दों के साथ अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास पहुँच गया और जादू व सिफ़ली अमल का मन्तर व तन्तर पढ़ने लगा, एक मुरीद ने हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमते विलायत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया: या ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो यह कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन जादूगर की हिमायत में फिर वापस आ गए हैं और जादू चला रहे हैं ताकि मुसलमानो को मग़लूब व परेशान कर दें।

अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इरशाद फ़रमाया कि न घबराओ, उन सब का जादू बातिल है। इन्शाअल्लाहो तआला हम मुसलमानों पर उनके जादू का कोई असर नहीं होगा बल्कि राम देव जादू गर उन लोगों पर हमला करता नज़र आएगा।

यह इरशाद फ़रमाकर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नमाज़ में मशग़ूल हो गए यहाँ तक कि तमाम कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन रामदेव महन्त के हमराह क़रीब आ गए।

मगर जब उन कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन की निगाहें हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के रूहानियत वाले चेहरे पर पड़ीं तो उनके जिस्मों पर लरज़ा तारी हो गया, उनके क़दमों में चलने की ताक़त ख़त्म हो चुकी थी और ज़बानें गूंगी हो चुकी थीं और राम देव महन्त बेद की तरह कांप रहा था और उसके दिल की दुनिया बदल चुकी थी। कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन रामदेव महन्त को इस लिये लाए थे कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को परेशान व हैरान करेगा मगर रामदेव महन्त हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हिमायत में आ गया और लकड़ी और पत्थर से दुश्मनों को मारकर भगा दिया।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने रामदेव महन्त की यह मुजाहिदाना शान और रूहानियत देखी तो एक प्याला पानी अपने रूहानी हाथों से अता फ़रमाया और

बड़े शफ़क़त और महब्बत से फ़रमाया कि इस पानी को तुम पीलो। रामदेव महन्त ने उस पानी को बड़ी अक़ीदत के साथ पी लिया। पानी का पीना था कि रामदेव महन्त का दिल कुफ़्र व शिर्क के अन्धेरों से साफ़ पाक हो गया और उसके क़ल्ब व जिगर में इस्लाम की रोशनी और ईमान व यक़ीन का उजाला फैल गया और वह बेखुद होकर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के नूरानी क़दमों पर गिर पड़ा और मुसलमान हो गया।

वह देव मुसलमान होकर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से अर्ज़ करता है कि हुज़ूर ! आपके चेहरए पुर नूर के दीदार से मैं बहुत शाद (ख़ुश) हूँ। तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस मुनासिबत से उसका नाम शादी देव रखा। मुलख़्ख़सन (सियरुल अक़्ताब)

एक ज़रूरी वज़ाहत : देव संस्कृत ज़बान में देवता के लिये भी बोला जाता है और अहले हिन्द देवता का लफ़्ज़ महान और साहिबे कमाल इन्सान के लिये भी बोलते हैं।

पृथ्वी राज की मां की पेशीनगोई

हादिये हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हिन्दूस्तान आमद से बारह साल पहले राजा पृथ्वी राज की मां ने इल्मे नुजूम के ज़रीए मालूम कर लिया था कि अजमेर में एक मुसलमान फ़क़ीर आएगा जो साहिबे कमाल होगा। चुनाँचे मां ने अपने बेटे राजा पृथ्वी राज को पेशीनगोई करते हुए नसीहत की कि जब वह मुसलमान फ़क़ीर तुम्हारे मुल्क अजमेर में आए तो उस फ़क़ीर के साथ नर्मी व अदब और तवाज़ोअ से पेश आना, अगर तुमने उस मुसलमान दुरवेश के साथ बे अदबी और बद सुलूकी का मुज़ाहरा किया तो तुम्हारा मुल्क तबाह हो जाएगा और तुम हलाक व बरबाद हो जाओगे। यह सुनकर पृथ्वी राज मग़मूम और मुतफ़क्किर हुआ। (अहले सुन्नत की आवाज, सन् 2008, स. 45,46)

ऐ ईमान वालो ! जब ठोकर खाना और बरबाद होना क़िस्मत में लिख दिया जाता है तो किसी नसीहत और अच्छी बात भी समझ में नहीं आती और अल्लाह वालों की बे अदबी और उनकी गुस्ताख़ी इस क़दर बड़ा अज़ाब और सख़्त मुसीबत लाती है कि फिर आदमी बच नहीं पाता और हलाक व बरबाद हो जाता है। अल्लाह तआला नेकों के अदब के साथ अपने अमन व पनाह में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

अना सागर हमारे ख़्वाजा के प्याले में

शादी देव के मुसलमान हो जाने के बाद कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन और राजा पृथ्वी राज का ग़म व गुस्सा और ज़्यादा हो गया, कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ने पृथ्वी राज को मशवरा दिया कि अनासागर पानी पर पहरा बिठा दिया जाए, पानी न मिलने की सूरत में यह मुसलमान फ़क़ीर और इसके तमाम रुफ़क़ा परेशान होकर अजमेर छोड़ कर चले जाएंगे।

यज़ीदी दिमाग़ : हज़रात करबला में भी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के जद्दे करीम सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आपके साथियों पर

यज़ीदियों ने पानी बन्द करने के लिये नहरे फ़ुरात पर पहरा लगाया था मगर करबला और अजमेर के हालात जुदा जुदा हैं। करबला में मुक़ाबला खुले काफ़िरों और मुश्रिकों से नहीं था और अजमेर में हमारे प्यारे ख़्वाजा का मुक़ाबला बुत परस्तों, काफ़िरों और मुश्रिकों से था। करबला में सब्र का इम्तिहान हो रहा था, उम्मत को सब्र का सबक़ सिखाया जा रहा था और अजमेर में सब्र का इम्तिहान नहीं था बल्कि बुत परस्तों और मुश्रिकों को रूहानी और ईमानी ताक़त व कुव्वत दिखाकर इस्लाम की हक़्क़ानियत व सचाई को उजागर करना था।

अनासागर जिसका पानी चरिन्द व परिन्द तक पीते थे मगर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आपके साथियों पर पानी बन्द कर दिया गया था, तालाब के किनारे सिपाहियों का सख़्त पहरा बिठा दिया गया था, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के एक मुरीद जब अनासागर पर पानी लेने के लिये गए तो देखा कि तालाब के इर्द गिर्द फ़ौज का पहरा लगा है और पानी लेने से मना कर दिया गया। मुरीद ने आकर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को सारा क़िस्सा सुनाया, यह सब ग़ैर अख़्लाक़ी तर्ज़े अमल को सुनकर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आँखों में विलायत व रूहानियत की रौशनी चमकी और आपकी पैशानी की लकीरों से जलाल व हैबत के आसार नमूदार हुए और पुर जलाल अन्दाज़ में आपने फ़रमाया :

शादी देव ! यह मेरा प्याला लो और अनासागर से कहो ! तुझे मोईनुद्दीन ने बुलाया है।

शादी देव अताए रसूल मालिके हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के हुक्म के मुताबिक़ प्याला लेकर अनासागर पर पहुँचे और प्याले को अनासागर के पानी में डालकर कहा :

ऐ पानी ! चल तुझे मेरे ख़्वाजा ने बुलाया है।

मालिके हिन्दूस्तां अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का हुक्म सुनते ही अनासागर का सारा पानी प्याले में आ गया यहाँ तक कि अजमेर के दूसरे तालाब और कुए का पानी भी प्याले में समा गए और सारे तालाब और कुऐं ख़ुश्क हो गए और मज़ीद हैरत की बात तो यह है कि औरतों और जानवरों का दूध भी सुख गया। (अह्ले सुन्नत की आवाज, स. 2008, स. 45)

हज़रात ! हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को हैरान व परेशान करने वाले ख़ुद हैरानी और परेशानी में मुब्तला नज़र आने लगे। पानी बन्द करने वालों पर पानी बन्द होता हुआ नज़र आया।

फ़ासला कितना बड़ा है अनासागर का मगर
हुक्म पाते ही तेरे कूज़े में आया ख़्वाजा

(मौलाना मोहम्मद रफ़ीउद्दीन अशरफ़ी)

अजमेर के लोग घबरा गए और राजा पृथ्वीराज के पास पहुँचे और पृथ्वीराज से बताया कि राजा ग़ज़ब हो गया, यह मुसलमान फ़क़ीर बड़ा ही कमाल व बुज़ुर्गी वाला है, हमने तो उस

फ़क़ीर पर पानी बन्द किया था मगर उस दुरवेश ने अपने एक मुरीद के ज़रीए तमाम अनासागर और पूरे अजमेर का पानी अपने एक प्याले में बुलाया है, अब पूरे अनासागर का पानी उस मुसलमान फ़क़ीर के क़ब्ज़े में मौजूद है और हम लोग उस फ़क़ीर को परेशान करने वाले खुद दर बदर की ठोकरें खा रहे हैं और अगर पानी न मिला तो मौत व हलाकत के सिवा कोई सूरत नहीं नज़र आती।

तो राजा पृथ्वीराज ने लोगों की मुसीबत व ज़ेहमत को देखकर मेहसूस किया कि अगर पानी न मिला तो हमारी क़ौम पानी के बग़ैर हलाक व बरबाद हो जाएगी। बड़ा मजबूर और लाचार होकर कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन का राजा पृथ्वीराज, औलिया व अस्फ़िया के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और अपनी ग़लती और बे अदबी का माज़िरत ख़्वाह हुआ और मुआफ़ी तलब की।

रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शहज़ादे रहमतुल हिन्द हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने राजा पृथ्वीराज से इरशाद फ़रमाया कि आज के बाद किसी शख़्स पर भी पानी बन्द न करना और अपने नए नए मुरीद शादी देव को हुक्म दिया कि पानी का प्याला ले जाकर अनासागर में डाल दो। शादी देव ने पानी से लबरेज़ प्याले को अनासागर में उन्डेल दिया। प्याला उस वक़्त तक खाली नहीं हुआ जब तक अनासागर पानी से लबरेज़ नहीं हो गया।

सवाल करबला पर है और जवाब अजमेर से मिल रहा है

लश्करे रज़ा के एक सच्चे सिपाही हज़रत अल्लामा मश्ताक़ अहमद निज़ामी अलैहिर्रहमा बयान फ़रमाते हैं। जिस को आप हज़रात बग़ौर समाअत फ़रमाएं।

हज़रात ! हमारा यह कहना है कि सय्येदुश्शोहदा नवासए रसूल जिगर गोशए बतूल सय्यदी सरकार इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मैदाने करबला में मज़लूम थे मगर मजबूर नहीं थे। अगर पानी के इरादे से करबला की ज़मीन पर अपनी एड़ियों की ठोकर मार देते तो नदियाँ बह जातीं, चश्मे उबल पड़ते, नेनवा जल थल हो जाता, हर तरफ़ पानी ही पानी नज़र आता। वह महज़ वली नहीं वली गर थे। अगर वह किसी मर्दे मुसलमान पर अपनी निगाहे करम व नज़रे इनायत उठा देते तो वली बना देते इसी लिये तो हज़रत नियाज़ बरैलवी ने फ़रमाया है :

ऐ दिल बगीर दामने सुल्ताने औलिया
यानी हुसैन इब्ने अली जाने औलिया

अल्लाहु अकबर ! क्या कहना मेरे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के बलन्द मरतबे जिसने महबूबे खुदा प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गोद में मअरेफ़ते हक़ हासिल की हो और सय्यदना अलिये मुर्तज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के कान्धों से कायनात की बलन्दी को देखा हो और छुआ हो और हज़रत सय्यदना फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा की चादर में सिमटी हुई पूरी

कायनात का मुतालआ किया हो।

कोई बद बातिन और आँख का अन्धा ही कह सकेगा कि इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो वली नहीं हैं या फिर इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो करबला में मजबूर थे।

हज़रात ! सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो सिर्फ़ वली नहीं, वली गर थे इसी लिये मैंने अर्ज़ किया था कि करबला में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मज़लूम थे, मजबूर नहीं थे। अगर वह चाहते तो एड़ियों की ठोकर से मैदाने करबला को जल थल कर देते।

हज़रात कहीं मेरा उन्वान भूल न जाइयेगा कि :

सवाल करबला पर है और जवाब अजमेर से मिल रहा है।

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो करामत वाले हैं मगर करामत दिखा नहीं रहे हैं कि उन्हें क़ौम को (नाना की उम्मत को) दस्तूरे हयात और उसूले ज़िन्दगी देना है, यानी ऐ लोगो ! अगर तुम जीने का ढंग सीखना चाहते हो तो हुसैन (रज़ियल्लाहो तआला अन्हो) को फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के आंगन में देखना और अगर मरने का सलीक़ा सीखना है तो हुसैन (रज़ियल्लाहो तआला अन्हो) को करबला में देखना, मैं तुम्हें मौत व ज़िन्दगी दोनों का सबक़ पढ़ाने आया हूँ।

लेकिन हमारा मुख़ालिफ़ बहुत ही ज़िद्दी और हट धर्म है, हमारी इस बात पर मुतमईन नहीं होता, गले की रगें फुला कर कहता है, हम यह नहीं जानते, हम तो यह देखता चाहते हैं कि अगर इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो करामत वाले थे तो अली असग़र और ख़ेमे के दूसरे अइज़्ज़ा और अक़रबा के लिये पानी क्यों न मंगाया।

हज़रात ! अब मुझे कह लेने दीजिये कि मैंने यही तो कहा था कि सवाल करबला पर है और जवाब अजमेर से दिया जा रहा है।

ऐ नादानो ! मेरे ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अनासागर का पानी मंगाकर क्या बताया, यही तो बताया कि औलादे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में हूँ, वह मेरे बाप दादा तो ही हैं और दरख़्त अपने फल से पहचाना जाता है, लिहाज़ा तुम करबला ही को मत देखो, अजमेर भी देखो ! कि जब उनका बेटा पोता ऐसी करामत वाला हो सकता है तो उनके अजदाद व अमजाद की करामतों का क्या आलम होगा। लेकिन हमारा हरीफ़ न मानने की क़सम खाए बैठा है, वह कहता है हमें मनतिक़ व फ़लसफ़ा की भूल भुलइय्या नहीं चाहिये, हम तो आँख का मुशाहदा चाहते हैं, लिहाज़ा बात वह कहो जो कलेजे में उतर जाए।

लिहाज़ा ऐ दोस्तो ! हमारे हरीफ़ को आवाज़ दो, मैं अब वह बात कहने जा रहा हूँ कि ज़हनों के ज़ंग आलूद ताले टूट जाएंगे।

हज़रात ! अब मैं आपके इन्साफ़ का तलबगार हूँ, हमारे हरीफ़ से कह दीजिये कि वह मंगाना ही न देखे बल्यि यह भी देखे कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के सामने कौन है और हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के सामने कौन? तो अब मुझे अर्ज़

कर लेने दीजिये कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो यह (दाढ़ी पर हाथ फेर के) यानी दाढ़ी वाले और हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के सामने वह हैं (सर पर हाथ फेर के) यानी एरियल वाले। लिहाज़ा मालूम होना चाहिये कि करामत एरियल वालों को दिखाई जाती है, दाढ़ी वालों को नहीं।

सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर तो यही जलाल तारी था कि नाना का कलमा भी पढ़ता है और करामत भी देखना चाहता है। इसी लिये मैंने अर्ज़ किया था कि सवाल करबला पर था और जवाब अजमेर से मिल रहा है।

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के प्याले में पूरे अनासागर का पानी सिमट आया था और तालाब बिल्कुल ख़ाली हो गया था और फिर वही प्याला पानी से भरा हुआ तालाब में उन्डेल दिया गया तो तालाब पानी से लबरेज़ हो गया गोया हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का प्याला वह है जो पूरे तालाब का पानी अपने दामन में समो लेता है और वही प्याला जब फैलता है तो तालाब को पानी से लबालब भर देता है। यह तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का प्याला है।

और बरोज़े क़ियामत हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दामने करम और चादरे शफ़ाअत जब फैलेगी तो तमाम गुनाहगारों को दामने करम और चादरे नूर में समेट लेगी।

तो मुझे कहना यह है कि जब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के प्याले की वुसअत व फैलाव का यह आलम है तो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की चादरे शफ़ाअत की वुसअत व फैलाव का आलम क्या होगा।

मेरे आक़ाए नेअ्मत प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अनहो फ़रमाते हैं :

वुसअतें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जाएंगे और वह छुपाते जाएंगे

हज़रात ! अगर आज का मुरीद होता तो अनासागर से पानी लेने जाता नहीं, पीर से मुनाज़रा और बहस करता और कहता कि हुज़ूर ! कहाँ यह छोटा सा प्याला और कहाँ अनासागर, जो कहने में सागर और देखने में झील मालूम होता है, भला उसका पानी इसमें कैसे आ सकता है लेकिन वह पन्द्रहवीं सदी का मुरीद नहीं था बल्कि निगाहे ख़्वाजा का परवरदा था, उसने दर्सगाहे ख़्वाजा में तरबियत पाई थी, जिनकी एक निगाहे करम राह ज़न को राह बर कर दे, हुक्म पाते ही मुरीद ने प्याला उठाया और हुक्म बजा लाया, चूँकि वह मुरीद जानता था कि भेजने वाला प्याला भी देख रहा है और तालाब भी।

हमारे ख़्वाजा के साथ बदसुलूकी

हादिये हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की

इस करामत और रूहानी ताक़त व कुव्वत का शोहरा पूरे अजमेर और आसपास के इलाकों तक फेल गया, कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन और ख़ुद राजा पृथ्वीराज को बेचेनी हो गई और इज़्तिराब पैदा हो गया और उनके ख़ुद साख़्ता धरम की बुनियादें हिलने लगीं, कुछ लोगों ने राजा पृथ्वीराज के पास जाकर कहा कि ऐ राजा यह दुरवेश जो अनासागर के पास हमारे मन्दिरों के बीच क़याम पज़ीर हो गया, उस जगह पर उस मुसलमान फ़क़ीर का ठहरना मुनासिब नहीं है, उस मुसलमान फ़क़ीर को उस जगह से हटा देना बेहतर है बल्कि हो सके तो उस मुसलमान फ़क़ीर को अपने मुल्क ही से निकाल देना ज़्यादा बेहतर होगा। राजा पृथ्वीराज ने चन्द मुसल्ला सिपाहियों को उन लोगों के हमराह किया और उन मुसल्ला सिपाहियों को हुक्म दिया कि उस मुसलमान फ़क़ीर को अनासागर तालाब के पास से हटा कर हमारी पूरी हुकूमत के हुदूद से बाहर निकाल दें। जब राजा के मुसल्ला सिपाही और पन्डितों की एक बड़ी जमाअत हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास पहुँची और वह लोग आप को सख़्त व सुस्त कहने लगे और आपको अज़ियत देने का इरादा किया तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उनकी नियतों को भांप लिया और उनके तेवर को देखकर ज़मीन से एक मुट्ठी ख़ाक उठाकर और उस पर आयतुल कुर्सी पढ़कर उस ख़ाक को उन शरीरों की तरफ़ फेंक दिया जिससे मुसल्ला सिपाही और तमाम पन्डित परेशानी में मुब्तला हो गए और सब के सब उठ कर राहे फ़रार इख़्तियार करते नज़र आए इस तरह से दुश्मन अपने बातिल इरादे में नाकाम हो गए।

(तज़किरतुल औलिया, स. 8, बहवाला सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़, स. 101)

ऐ ईमान वालो ! हिन्दूस्तान में इस्लाम बड़ी मुश्किलों और तकलीफ़ों के साथ फैला है। हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने भूके प्यासे रहकर काफ़िरों, मुश्रिकों और पन्डितों, जादूगरों और हुकूमते वक़्त के मुसल्लह फ़ोजियों के साथ मुक़ाबला फ़रमाया है और ख़ुदादाद रूहानी कुव्वत व ताक़त और करामत से आपने हर मुक़ाबिल को शर्मिन्दा और नाकाम व ना मुराद किया है और कुफ़्र व शिर्क और जादूगरी व ज़ाहिरी अस्लहों की हर कुव्वत व ताक़त को हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो की रूहानियत व विलायत की कुव्वत व करामत के सामने ज़लील व रुसवा होना पड़ा है, इस तरह से बे हिसाब कोशिशों और जोहदे पैहम करने के बाद हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस्लाम का फरेरा लहराया है और पूरे हिन्द में ईमान व यक़ीन का उजाला फैलाया है।

हज़रात ! बड़ा तअज्जुब होता है उस वक़्त जब कोई मुनाफ़िक़ मुसलमान कहलाने वाला शख़्स कहता है कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर पर हाज़िरी देना और ख़्वाजा साहब के मज़ार शरीफ़ पर जाकर दुआ मांगना और यह ख़याल करना कि ख़्वाजा साहब सुनते हैं और हमारी मदद करेंगे यह सब शिर्क व बिदअत है। अल इयाज़ बिल्लाहि तआला।

और वह मुनाफ़िक़ मुसलमान बद अक़ीदा शख़्स कहता है कि हम तो तौहीद वाले

मुसलमान हैं और हम अल्लाह ही से मांगेंगे, ख़्वाजा साहब से नहीं मांगेंगे।

हज़रात ! इसी तरह की बातें यहूदी और मुनाफ़िक़ भी महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से किया करते थे कि हम तो अल्लाह तआला की तौहीद के मानने वाले हैं, हम आपको रसूल मानें यह हमारे मुसलमान होने के लिये ज़रूरी नहीं है। उन्हीं यहूदियों और मुनाफ़िक़ों की राह पर चलने वाले आज के वहाबी देवबन्दी और तब्लीग़ी भी नज़र आते हैं कि हम तौहीद के मानने वाले मुसलमान हैं अम्बिया और औलिया को मानना और उनके मज़ारों पर हाज़री देना, उनको सिफ़ारिशी बनाना, हम तौहीद वाले मुसलमानों के नज़दीक कुफ्र व शिर्क है। (मआज़ल्लाह)

वहाबी देवबन्दी जमाअत के इमाम व पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

अल्लाह तआला ने किसी को यानी अंम्बिया और औलिया को आलम में तसर्रुफ़ करने की कुदरत नहीं दी और कोई नबी और वली किसी की हिमायत नहीं कर सकता और उनको यानी नबी और वली को सिफ़ारिशी समझना, चाहे वह शख़्स उसको यानी नबी और वली को अल्लाह का बन्दा और मख़्लूक़ ही समझे तो भी उस शख़्स का और अबू जहल का शिर्क बराबर है। (तक़वीयतुल ईमान, स. 29)

अब इस कुफ्र व शिर्क में डूबी हुई इबारत को पढ़ने के बाद भी आप उन गुमराह लोगों से नहीं बचते और उनसे दूर नहीं रहते तो फ़ैसला खुद ही कर लीजिये कि आपका ठिकाना भी उनहीं मुनाफ़िक़ों के साथ होगा।

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ

यानी जो शख़्स जिसके साथ महब्बत करेगा उसका हश्र भी उसी के साथ होगा।

हज़रात ! बुख़ारी व मुस्लिम और बहुत सी सही हदीसों से ज़ाहिर और साबित है कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की बारगाह में वकील व सिफ़ारिशी बनाते थे और सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद मज़ारे अनवर पर हाज़री देते और अपने चेहरे को क़ब्रे अनवर की जानिब करके दुआ मांगते थे और इस तरह अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मदद व इस्तिआनत के लिये दरख़्वास्त करते जैसे आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में मांगा करते थे और सवाल किया करते थे।

एक सहाबी ने मज़ारे अनवर पर हाज़िर होकर अपने मुश्फ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम से इस अन्दाज़ से अर्ज़ किया जैसे वह सहाबी अपने आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम को देख रहे हों। वह सहाबी मज़ारे अनवर पर इस तरह अर्ज़ करते हैं : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका व सल्लम मैं भूका हूँ आप मुझे खाना खिलाइये। कहते कहते वह सहाबी सो गए ख़्वाब में अपने नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों से रोटी खाई और जब

ख़्वाब से बेदार हुए तो एक टुकड़ा रोटी का उनके हाथ में मौजूद था, उस वक़्त सैंकड़ों औलियाए किराम दरबारे करम में हाज़िर थे, सब ने यह नूरानी मन्ज़र अपनी आँखों से देखा।

और हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो के दौरे खिलाफ़त में क़हत पड़ गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो को सहाबए किराम की मौजूदगी में वसीला बनाया तो बरसात हो गई।

औलिया के सरदार हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के महबूब वली हज़रत मअरूफ़ कर्ख़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अक़दस पर अकसरो बेश्तर हाज़री दिया करते थे।

और हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बे शुमार औलियाए किराम के मज़ारों पर हाज़री दी।

अल मुख़्तसर ! अल्लाह वालों के मज़ारे अनवर पर हाज़री देना और अल्लाह वालों को अल्लाह तआला की बारगाह में वकील व सिफ़ारिशी बनाना किताब व सुन्नत से साबित और ज़ाहिर है मगर ईमान व यक़ीन वाले ख़ुश अक़ीदा सुन्नी मुसलमान ही चौदह सौ बरस से मानते हैं और क़ियामत तक मानते रहेंगे।

हज़रात ! इस गुमराह और जहन्नमी जमाअत को अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम और अल्लाह तआला के प्यारे बन्दे वली से किस क़दर अदावत और बुग़्ज़ है कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम और औलियाए इज़ाम रज़ियल्लाहो अन्हुम जिनको अल्लाह तआला ने इस क़दर अज़ीमुश्शान मन्सब व मरतबा अता फ़रमाया है जिसका रौशन सुबूत कुरआन और सुन्नत है। आइये बद अक़ीदों मुनाफ़िक़ों की एक और खुली हुई दुश्मनी और नफ़रत से भरी हुई इबारत मुलाहज़ा फ़रमाइये।

मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं कि :

हवाला : अल्लाह का मख़लूक़ और अल्लाह का बन्दा होने में औलिया व अम्बिया में और जिन्न व शैतान में और भूत व परी में कुछ फ़र्क़ नहीं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 30)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ

यानी हमने रसूलों में बाज़ पर बाज़ को फ़ज़ीलत दी है। (पारा 3, रुकू 1)

हज़रात ! अल्लाह तआला साफ़ तौर पर कुरआने करीम में ऐलान फ़रमा रहा है कि तमाम मख़लूक़ और तमाम इन्सान तो क्या, और मेरे महबूब बन्दे मोमिन और औलिया तो क्या, हमारे तमाम रसूल सब मख़लूक़ से अफ़ज़ल व आला हैं और सब रसूल भी मक़ाम व मरतबा में एक दूसरे के बराबर नहीं हैं बल्कि हमने रसूलों में भी बाज़ रसूलों को बाज़ पर फ़ौक़ियत और फ़ज़ीलत से नवाज़ा है यानी एक रसूल दूसरे रसूल के बराबर नहीं।

हज़रात ! अल्लाह तआला के फ़रमान की रोशनी में आप फ़ैसला करें और ईमान से बताएं कि जब नबी, नबी के बराबर नहीं और रसूल, रसूल के बराबर नहीं हो सकते तो जिन्न और

शैतान और भूत व परी जैसे मख़लूक़ को अम्बिया और औलिया के बराबर समझना और यह कहना कि उनमें कुछ फ़र्क़ नहीं है। क्या ऐसी बोली किसी मोमिन और मुसलमान की हो सकती है ? क्या ऐसी तहरीर कोई मोमिन और मुसलमान लिख सकता है ? नहीं। हरगिज़ नहीं। ऐसी गन्दी बोली मुनाफ़िक़ की है और नापाक तहरीर भी दुश्मने नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की है।

पुर ख़ुलूस गुज़ारिश ! इस लिये हम आपसे पुर ख़ुलूस गुज़ारिश करते हैं कि ऐसे बे ईमान व बद अक़ीदा लोगों से बचें और उन मुनाफ़िक़ों के पीछे नमाज़ हरगिज़ न पढ़ें और यह मुनाफ़िक़ मर जाएं तो इनकी नमाज़े जनाज़ा में शरीक न हों, इन मुनाफ़िक़ों के यहाँ शादी ब्याह न करें, न लड़की दें और न लड़की लें। इन मुनाफ़िक़ों के साथ खाने पीने से भी बचें वर्ना ईमान का तोता उड़ जाएगा, न नमाज़ काम आएगी न रोज़ा, न हज न ज़कात, न दाढ़ी और न सज्दा कुछ भी काम न आऐंगे सब मुंह पर मार दिये जाऐंगे।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या लौहो क़लम तेरे हैं

(डॉ. इक़बाल)

हमारे ख़्वाजा के मुक़ाबले के लिये जोगी जयपाल आया और मुसलमान हो गया।

न पूछ इन ख़र्क़ा पोशों को, इरादत हो तो देख इनको
यदे बे ज़ा लिये बैठे हैं अपनी आस्तीनों में

हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की करामतों का शोहरा हुआ, अजमेर और कुर्बो जवार में आपकी रूहानी कुव्वत व ताक़त का चर्चा होने लगा और इस्लाम बड़ी तेज़ी से फेलने लगा तो अजमेर के कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन और ख़ुद राजा पृथ्वीराज यह ख़याल करने लगा कि यह मुसलमान फ़क़ीर जादूगर है और इसके पास जादू की ताक़त है इस लिये इस मुसलमान दुरवेश का मुक़ाबला जादू ही से किया जा सकता है। उस वक़्त हिन्दूस्तान में जोगी अजयपाल जादूगरी में बहुत मशहूर था और जादू के फ़न में निहायत महारत और कमाल रखता था, जोगी अजयपाल के डेढ हज़ार शागिर्द थे और मुल्क में बे पनाह असर रखता था और बड़े बड़े राजा भी उसकी इज़्ज़त व तकरीम करते थे।

चुनाँचे राजा पृथ्वीराज ने अपने बातिल ख़यालात की बुनियाद पर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुक़ाबले के लिये जोगी अजय पाल को अजमेर बुलाया, जोगी अजयपाल अपने डेढ हज़ार जादूगर शागिर्दों के साथ अनासागर के क़रीब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तरफ़ बढा, अजयपाल जादूगरी के नशे में चूर था और ग़ुरूर व घमण्ड का मुकम्मल शैतान बना हुआ था, अजयपाल जोगी का ख़याले फ़ासिद था कि अभी थोड़ी ही देर में अपनी जादूगरी की ताक़त से इस मुसलमान फ़क़ीर को और इसके साथियों को हलाक व बरबाद कर देंगे और अन्जाम से बे ख़बर था और उसको अल्लाह वालों की रूहानी ताक़त का बिल्कुल अन्दाज़ा न था।

और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जब देखा कि जोगी अजयपाल अपने डेढ़ हज़ार शागिर्दो के साथ हमारे मुक़ाबले के लिये आया है तो अपनी असाए मुबारक से लकीरों का हिसार खींच दिया और फ़रमाया इन्शाअल्लाहो तआला कोई दुश्मन इस लकीर के अन्दर दाख़िल नहीं हो सकता। जोगी अजयपाल ने जादू का करिश्मा दिखाना शुरू किया पहाड़ी के हज़ारों पत्थर ज़हरीले सांप बनकर उस लकीर की तरफ़ लहराते हुए चले। जैसे ही हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बनाई हुई लकीर के पास पहुँचते हलाक व बरबाद हो जाते। जब यह जादू नाकाम हो गया तो अजय पाल ने फिर जादू का फ़न दिखाया जिससे आग के शोअलों की बारिश होने लगी मगर आग के शोअले लकीर के बाहर गिरते लकीर के अन्दर नहीं, हिसार के अन्दर का हिस्सा बिल्कुल महफ़ूज़ व मामून रहता।

जब अजयपाल के जादू से हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आपके साथियों का बाल बीका न हुआ तो जोगी अजयपाल कहने लगा कि मैं अपना आख़िरी कमाल दिखाता हूँ और आसमान की जानिब जाता हूँ, वहाँ से इतनी बड़ी बड़ी बला भेजूँगा कि तुम बच नहीं सकते। अजय पाल ने हिरण का मर्ग छाला हवा में फेंका और उछल कर उस पर बैठ गया। देखते ही देखते वह फ़ज़ा में परवाज़ करने लगा और निगाहों से ग़ायब हो गया। देखने वाले लोग हैरान व परेशान थे कि अब क्या होता है। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अजयपाल के जादू का यह करिश्मा देखा और लोगों की हैरत देखी तो अपने पैर की खड़ाउं से इरशाद फ़रमाया : ऐ इस्लाम के रास्ते में चलने वाली खड़ाउं अल्लाह तआला के हुक्म से उस दुश्मने ख़ुदा जादूगर को मारते हुए ज़मीन की तरफ़ ले आ। इशारा पाते ही खड़ाउं उडी और जोगी अजयपाल के सर पर पहुँच गई और खड़ाउं ने उसके सर पर मारना शुरू किया और थोड़ी हो देर में लोगों ने देखा कि खड़ाउं अजयपाल को मारते और पीटते हुए फ़ज़ा (हवा) से ज़मीन पर ले आई और जोगी अजयपाल ज़मीन पर हमारे प्यारे ख़्वाजा के क़दमों में गिरा और पड़ा नज़र आ रहा था। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की खड़ाउं ने जोगी अजयपाल के सारे ग़ुरूर व घमण्ड के बातिल ख़याल को तोड़ कर रख दिया था और एक वली की रूहानी ताक़त और इस्लाम की सचाई के सामने जादूगरी का फ़रेब और धोका ख़त्म हो चुका था और लोगों को मालूम हो गया कि औलिया अल्लाह जादूगर नहीं बल्कि रूहानियत व करामत की अज़ीम कुव्वत व ताक़त के मालिक होते हैं।

जोगी अजयपाल हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़दमों में गिर कर कहने लगा कि ऐ अल्लाह के वली ! आज मुझे पता चला कि जादूगरी का करिश्मा बातिल और झूट है और अल्लाह तआला के वली की रूहानियत व करामत की ताक़त हक़ और सच है।

ऐ ख़्वाजा ! जब तेरे क़दमों में रहने वाली लकड़ी की खड़ाऊं की ताक़त व कुव्वत का यह आलम है तो तेरी ताक़त व कुव्वत का आलम क्या होगा। फिर जोगी अजय पाल ने हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के हाथ पर तौबह किया और कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गए।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उनका नाम अब्दुल्लाह बियाबानी रखा, अर्ज़ की : हुज़ूर हमारे लिये दुआ फ़रमा दें कि क़ियामत तक ज़िन्दा रहूँ। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने दुआ फ़रमाई कि या अल्लाह ! इस बन्दे की दुआ कुबूल फ़रमा। जब कुबूलियत का असर ज़ाहिर हुआ, आपने इरशाद फ़रमाया तूने क़ियामत तक की ज़िन्दगी हासिल कर ली मगर लोगों की निगाहों से पोशीदा रहेगा। मशहूर है कि अब्दुल्लाह बियाबानी अजमेर के जंगलों और पहाड़ियों में रहते हैं और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में हाज़री देने वालों में से अगर कोई राह भूल जाए तो रास्ता बताते हैं और भूका है तो खाना खिलाते हैं। (गुलख़्ख़सन, खज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 1, स. 262, मूनिसुल अरवाह, स. 32, अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 46)

ऐ ईमान वालो ! आज का दौर भी कुफ़्र व काफ़िरी का है अब हिन्द में फिर मोईनुद्दीनकी ज़रूरत है।

हज़रत सय्यद मोहम्मद अशरफ़ बरकाती फ़रमाते हैं :

वालिये हिन्द यहाँ हिन्द में मुश्किल है बहुत
फ़ज़्ले रब्बी से हो तुम मेरा सहारा ख़्वाजा

और राज़ इलाहआबादी फ़रमाते हैं :

जलाए जाते हैं फिर आशियां ग़रीबों के
फिर उठ रहा है चमन से धुआं ग़रीब नवाज़

लबे झालरा पर क़याम : हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने शादी देव और अब्दुल्लाह बिया बानी के मुसलमान हो जाने के बाद अनासागर की क़याम गाह को छोड़कर अपने रुफ़क़ा (साथियों) के साथ शहर अजमेर में लबे झालरा उस मक़ाम पर क़याम फ़रमाया जहाँ इस वक़्त आपका मज़ारे अनवर व अक़दस है और यह जगह शादी देव की मिलकियत थी। (सियरे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 237)

पृथ्वीराज की बरबादी : हादिये हिन्दूस्तां अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रूहानी कुव्वत व ताक़त के ज़रीए शादी देव और अब्दुल्लाह बियाबानी बानी के मुसलमान हो जाने और हर दिन बे शुमार कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन का कुफ़्र व शिर्क की नापाकी से ताइब होकर इस्लाम में दाख़िल होने से राजा पृथ्वीराज घबरा चुका था और उसी ग़ैज़ो ग़ज़ब में पागल होकर कहने लगा कि इस मुसलमान फ़क़ीर को एक दिन अजमेर से बाहर निकाल दूँगा।

हज़रात ! होना तो यह चाहिये था कि पृथ्वीराज अपने गुरू अजयपाल और अपने उस्ताज़ रामदेव की तरह वह भी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में सची तौबह करके मुसलमान हो जाता। उस सूरत में उसका राज पाट भी महफ़ूज़ व सलामत रह जाता और उसकी आख़िरत भी संवर जाती

मगर जब बद नसीबी और शिक़ावत तक़दीर में लिख दी जाती है तो अक़्ल अन्धी हो जाती

है और सब कुछ देखने के बाद भी समझ में नहीं आता और हिदायत की ला ज़वाल नेअमत व दौलत से महरूम रहता है और दीन व दुनिया दोनों तबाह व बरबाद होते नज़र आते हैं।

अल्लाह तआला नेकों और सच्चों की बुराई और दुश्मनी से महफ़ूज़ रखे। आमीन सुम्मा आमीन

तमन्ना दर्दे दिल की है तो कर ख़िदमत फ़क़ीरों की
यह वह गोहर है जो मिलता नहीं है बादशाहों के ख़ज़ीने में

पृथ्वी राज को दावते इस्लाम : हादिये हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने लबे झालरा शहर में तशरीफ़ लाने के बाद पृथ्वीराज को ख़त के ज़रीए दावते इस्लाम पेश की और इरशाद फ़रमाया :

ऐ पृथ्वीराज ! तेरा अक़ीदा जिन लोगों पर था वह सब अल्लाह तआला के हुक्म से मुसलमान हो गए। अगर तू भलाई चाहता है तो तू भी मुसलमान हो जा वर्ना ज़लीलो ख़्वार होगा

मगर पत्थर दिल पृथ्वीराज पर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हक़ व सच दावत व नसीहत का कुछ असर न हुआ और वह संग दिल काफ़िर का काफ़िर ही रहा। तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो ने मुराक़बा किया और मुतफ़क्किर लहजे में फ़रमाया :

अगर यह बद बख़्त ईमान न लाया तो मैं उसको इस्लाम लश्कर के हाथों ज़िन्दा गिरफ़्तार करा दूँगा (सियरुल अक़्ताब, स. 132)

हज़रात ! जब इन्सान अज़ाब व मुसीबत और क़हर व बला में मुब्तला होता है तो उसकी अक़्ल मारी जाती है और समझ बेकार हो जाती है तो वह ज़ुल्मो सितम का बाज़ार गर्म करता नज़र आता है।

हमारे ख़्वाजा का इरशाद
पिथोरा रा ज़िन्दा गिरफ़्तार करदेम

एक मरतबा का वाक़िआ है कि हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का एक मुरीद जो राजा पृथ्वीराज के दरबार में मुलाज़िम था, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुरीद पर मुसलमान होने की वजह से पृथ्वीराज ने बहुत ज़ुल्मो सितम किया और सताया। उस मुरीद ने मालिके हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में उस ज़ुल्मो सितम की शिकायत पेश की। हिन्द के हक़ीक़ी राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने एक शख़्स को पृथ्वीराज के पास भेजा और कहलाया कि तुम ख़ल्के ख़ुदा पर ज़ुल्मो ज़्यादती करने से अपने हाथों को रोक लो। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हिदायत पृथ्वीराज को बुरी लगी और आपकी शाने अक़दस में ना ज़ैबा अल्फ़ाज़ कहे और यह भी कहा कि यह मुसलमान फ़क़ीर हमारे शहर में आकर ग़ैब की बातें करता है और अपने एक सरदार के ज़रीए हमारे प्यारे ख़्वाजा के पास यह हुक्म भेजा कि तुम अपने तमाम साथियों के साथ अजमेर से फ़ौरन निकल जाओ वर्ना हम तुमको गिरफ़्तार कर लेंगे।

जब पृथ्वी राज का यह गुस्ताख़ाना हुक्म और ज़ालिमाना रवैय्या हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने सुना तो आपकी निगाहों का तेवर बदल गया और आलमे जलाल में इरशाद फ़रमाया :

यानी हमने राए पिथोरा को ज़िन्दा गिरफ़्तार करके इस्लामी फ़ौज के हवाले कर दिया।

(सियरुल औलिया, स. 56, फ़वाइदुस्सालेकीन, स. 24, मूनिसुल अरवाह, 37)

जो जज़्ब के आलम में निकले लबे मोमिन से
वह बात हक़ीक़त में तक़दीरे इलाही है

हज़रात ! अल्लाह वालों की टेढ़ी नज़र (यानी क़हर की नज़र) से हर हाल में बचने की कोशिश करनी चाहिये वर्ना तक़दीर के ख़राब हो जाने का अन्देशा है।

किसी ने कहा है :

तुम क़हर से देखो ! तो शादाब चमन जल जाए
और मुस्कुरा दो ! तो अन्धेरे में उजाला हो जाए

हमारे ख़्वाजा की बशारत

हिन्दूस्तान में शिकस्त पर शिकस्त खाकर सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी ग़ज़नी पहुँचकर अपनी हार व नाकामी का दाग़ मिटाने के लिये मज़बूत इरादा और बलन्द हौसला के साथ फिर जंगी तैय्यारियों में मसरूफ़ हो गया और हिन्दूस्तान पर हमला करने के लिये एक बड़ी फ़ौज को जमा करने में लग गया और सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी ने एक लाख बीस हज़ार सिपाहियों का अज़ीम लश्कर जमा कर लिया मगर हिन्दी राजाओं से मुक़ाबले के लिये फ़ौज बहुत कम थी। एक रात की बात है कि शहाबुद्दीन ग़ोरी ने ख़्वाब में एक नूरानी सूरत बुज़ुर्ग को देखा और वह बुज़ुर्ग फ़रमा रहे हैं : ऐ शहाबुद्दीन ! अल्लाह तआला तुमको मुल्के हिन्द की बादशाहत अता करने वाला है तुम हिन्द की तरफ़ तवज्जोह करो।

शहाबुद्दीन ग़ोरी ख़्वाब में इस बशारत को सुनने के बाद बड़ा ख़ुश हुआ कि किसी अल्लाह वाले ने मेरी कामियाबी के लिये बशारत दे दी है और उसको यक़ीने कामिल हो गया कि अब मैं हिन्दूस्तान पर जंग करके कामियाब व कामरान हो जाऊँगा।

(सियरुल अक़्ताब, स. 132, मोईनुल अरवाह, स. 167)

मालिके हिन्दूस्तां हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इशारए अबरू और आपकी बशारत के बाद सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी अपना लश्कर लेकर तराइन पहुँचा, तराइन में राजपूतों की तीन लाख फ़ौज मौजूद थी, जंग हुई शहाबुद्दीन ग़ोरी कामियाब हुआ। तराइन की फ़तह से शहाबुद्दीन का हौसला बहुत ज़्यादा बलन्द हो गया था और कुफ़्फ़ार और मुश्रेकीन के हौसले टूटते नज़र आ रहे थे। इस तरह शहाबुद्दीन की फ़ौज आगे बढ़ती गई और फ़तहो नुसरत उनके क़दमों को बोसा देती रही और राजा पृथ्वीराज भागते हुए दरियाए सरसोती के कनारे सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी के फ़ौज के हाथों गिरफ़्तार हुआ और फिर

इस्लामी फ़ौज ने उसको क़त्ल कर दिया और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की पेशेन गोई पूरी होती हुई नज़र आई। (तारीख़े फ़रिश्ता, जि. 1, स. 58, सवानेह गौसो ख़्वाजा, स. 59, अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 50)

हज़रात ! हमारा ईमान व यक़ीन है कि ज़माना बदल सकता है, आलम का निज़ाम बदल सकता है, सब कुछ बदल सकता है मगर अल्लाह वालों का फ़रमान नहीं बदल सकता। (मस्नवी शरीफ़)

हमारे ख़्वाजा की बारगाह में शहाबुद्दीन

शहाबुद्दीन ग़ोरी ने मुसलसल कामियाबी हासिल करते हुए सरसोती, पांसी, समाना, कोहराम के क़िल्ओं को फ़तह करते हुए पूरे मुल्के हिन्दूस्तान पर क़ब्ज़ा कर लिया और मदीनतुल हिन्द अजमेर शरीफ़ पहुँचा। जिस वक़्त सुल्तान शहाबुद्दीन अजमेर शरीफ़ के पहाड़ी इलाक़ा में दाख़िल हुआ तो शाम हो चुकी थी। मग़रिब का वक़्त था कि एक पहाड़ की जानिब से अज़ान की सदाए दिल नवाज़ सुनी तो हैरत में पड़ गया और मालूम किया कि अज़ान की यह आवाज़ कहाँ से आ रही है ?

लोगों ने बताया कि एक फ़क़ीर कुछ दिनों से यहाँ तशरीफ़ लाए हैं, यह आवाज़ वहीं से आ रही है। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी इस पहाड़ की जानिब चल पड़ा जिधर से आवाज़ आ रही थी। पहाड़ी पर पहुँच कर देखा कि अल्लाह वालों की एक जमाअत अल्लाह तआला की बारगाह में सफ़ बनाए हुए नमाज़ अदा कर रही है।

शहाबुद्दीन भी जमाअत में शामिल हो गए। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब नमाज़ ख़त्म हुई तो शहाबुद्दीन ग़ोरी की निगाह हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर पड़ी तो हमारे प्यारे ख़्वाजा को देख कर हैरत में डूब गया और बड़ा ख़ूश हुआ कि यह तो वही बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने मुझे हिन्दूस्तान बुलाया और फ़तह व कामियाबी की बशारत दी थी। शहाबुद्दीन ग़ोरी अपने जज़्बात को क़ाबू में न रख सका और हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़दमों में गिर पड़ा और ख़ूब रोता रहा और शाही ताज और शाही लिबास और अपनी तलवार को हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़दमों में डाल कर अर्ज़ गुज़ार हुआ कि मुल्के हिन्दूस्तान में सही मअ़नों में हिन्द के राजा शहाबुद्दीन ग़ोरी नहीं, हिन्द के राजा ख़्वाजा मोईनुद्दीन हैं। फिर शहाबुद्दीन ग़ोरी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुरीद हो गए।

(मुलख़्ख़सन अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 51,340)

हमारे ख़्वाजा से हिन्द में इस्लाम

(1) मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी लिखते हैं :

ایں فتح بموجب راندن نفس مبارک رحمن آں قطب ربانی نمود۔

यानी हिन्दूस्तान की फ़तह व कामयाबी और हिन्दूस्तान में इस्लाम की ताक़त व कुव्वत कुतुबे रब्बानी हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अजमेरी की बरकतों

से हुई। (मुन्तख़बुत्तवारीख़, जि. 1, स. 50)

(2) सय्येदुल उलमा हज़रत मौलाना मुफ़्ती अश्शाह सय्यद आले मुस्तफ़ा क़ादरी बरकाती सय्यद मियां मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

हिन्दूस्तान में इस्लाम का चराग़ जलाने वाले और ईमानो यक़ीन की रोशनी फैलाने वाले अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हैं।

(अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 53)

और हज़रत सय्येदुल उलमा अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं :

बरबते इश्क़ पे मिज़राबे अमल से तुमने
नग़मा तौहीद का, क्या ख़ूब सुनाया ख़्वाजा
तेरे पाए का कोई हमने न पाया ख़्वाजा
तू ज़मीं वालों पे अल्लाह का साया ख़्वाजा

हमारे प्यारे ख़्वाजा ने दो शादी की

हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी हयाते तय्यिबा के आख़री दौर में दो शादियां कीं। आपका निकाह किस साल हुआ, उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ कितनी थी, और आपका निकाह किस बीवी से पहले हुआ और दोनों बीवियों की औलाद कौन हैं इन सब के मुतअल्लिक़ मुअर्रख़ीन (लेखक) के बयानात में बहुत इख़्तिलाफ़ात हैं।

पहली शादी : हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक रात हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : ऐ मोईनुद्दीन ! तुम हमारे दीन के मोईन हो, फिर भी तुमने हमारी एक सुन्नत को छोड़ रखा है।

एक हाकिम जो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मुरीद था, एक क़िला फ़तह किया, बहुत से लोग क़ैद हुए, उन्हीं क़ैदियों में एक राजा की लड़की भी थी। हाकिम ने उस लड़की को हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में पेश किया, उसने इस्लाम क़ुबूल किया। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उसका नाम बीबी उम्मतुल्लाह रखा। बीबी उम्मतुल्लाह की रज़ा से आपने उनसे निकाह किया, बीबी उम्मतुल्लाह निहायत पारसा और नेक थीं।

दूसरी शादी : सय्यद वजीहुद्दीन मशहदी अम्मे मोहतरम सय्यद हुसैन मशहदी जो शहीद हैं, उनका मज़ार शरीफ़ तारा गढ़ पहाड़ी पर है। उनकी एक लड़की जवान हो चुकी थी जिसकी शादी की फ़िक्र हमेशा लगी रहती थी, वह किसी अच्छे रिश्ते की तलाश में थे, एक रात ख़्वाब में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ियारत नसीब हुई, हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : ऐ सय्यद वजीहुद्दीन हमारे नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

का हुक्म है कि तुम अपनी नेक सीरत लड़की का निकाह ख़्वाजा मोईनुद्दीन के साथ कर दो सय्यद वजीहुद्दीन ने हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से ख़्वाब बयान किया तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस रिश्ते को क़ुबूल फ़रमा लिया और सय्यद वजीहुद्दीन की नेक सीरत बेटी बीबी अस्मतुल्लाह से दूसरा निकाह फ़रमाया।
(तारीख़े फ़रिश्ता, जि. 2, स. 611)

हमारे ख़्वाजा की औलादे अमजाद

हज़रत अब्दुर्रहमान चिश्ती और गुलाम सरवर लाहोरी लिखते हैं :

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो की औलादे अमजाद में तीन बेटे सय्यद फ़ख़रुद्दीन अबुल ख़ैर सय्यद ज़ियाउद्दीन अबू सईद, सय्यद हिसामुद्दीन अबू सालेह और एक बेटी सय्येदा बीबी हाफ़िज़ा जमाल थीं, जिनका मज़ार हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ार शरीफ़ के पाइंती की तरफ़ मुत्तसिल है।

ख़्वाजा सय्यद हिसामुद्दीन अबू सालेह बचपन ही में अब्दालों की सोहबत में शामिल होकर ग़ायब हो गए। (मिरअतुल इसरार, स. 602, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 1, स. 263)

ख़्वाजा फ़ख़रुद्दीन चिश्ती

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के बड़े बेटे साहिबे रूहानियत बुज़ुर्ग थे और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़लीफ़ा भी थे। आपके विसाल शरीफ़ के बाद बीस साल तक हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के जा नशीन रहे।

और हज़रत ख़्वाजा फ़ख़रुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रिज़्क़े हलाल के लिये अजमेर से क़रीब मान्दन गांव में खेती किया करते थे। पाँच शअ़बान 661 हि. मुताबिक़ 1263 ई. में क़स्बा सरवार में विसाल हुआ और क़स्बा सरवार के तालाब के किनारे आपका मज़ारे अनवर है। (मिरअतुल इसरार, स. 603, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, स. 284)

ख़्वाजा हिसामुद्दीन सोख़्ता

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पोते, हज़रत फ़ख़रुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के बेटे हज़रत ख़्वाजा हिसामुद्दीन सोख़्ता बहुत पाया के बुज़ुर्ग हुए हैं। हज़रत ख़्वाजा हिसामुद्दीन सोख़्ता रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने लम्बी उम्र पाई, विसाल शरीफ़ सन् 741 हि. में हुआ, मज़ारे अक़दस क़स्बा सांभर शरीफ़ में है। (अख़बारुल अख़यार, स. 212)

हज़रत बीबी हाफ़िज़ा जमाल

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की प्यारी बेटी हज़रत सय्येदा बीबी हाफ़िज़ा जमाल रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बड़ी साहिबे कमाल, आली

मकाम और आरिफ़ा कामिला थीं। क्यों कि आपकी तरबियत हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़रे ख़ास से हुई थी, आपका मज़ार हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर के पाइंती की तरफ़ मुत्तसिल है।

(मिरअतुल इसरार, स. 603)

मन्झले बेटे ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन अबू सईद

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मन्झले बेटे हज़रत ख़्वाजा सय्यद ज़ियाउद्दीन अबू सईद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने वालिदे गिरामी के हमराह रहे। पचास या साठ साल की उम्र में विसाल अजमेर शरीफ़ में हुआ, झालरा के क़रीब हौज़ के पास आपका मज़ारे मुबारक है। (अहले सुन्नत की आवाज, सन् 2008, स. 102)

हमारे ख़्वाजा के मशहूर ख़ुलफ़ा

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़ुलफ़ा कसीर तादाद में हुए हैं। चन्द मशहूर ख़ुलफ़ा के अस्माए गिरामी यह हैं :

1) ख़लीफ़ए आज़म हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो। (तारीख़े विसाल, 14 रबीउल अव्वल, सन् 633 हि. महरोली शरीफ़ देहली)

2) ख़लीफ़ए अरशद हज़रत ख़्वाजा सय्यद फ़ख़रुद्दीन चिश्ती रज़ियल्लाहो अन्हो।
(तारीख़े विसाल 5 शअ़बान, सन् 661 हि. सरवार शरीफ़)

3) हज़रत ख़्वाजा सूफ़ी हमीदुद्दीन नागोरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
(तारीख़े विसाल 29 रबीउल अव्वल, नागोर शरीफ़, राजस्थान)

4) हज़रत ख़्वाजा क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागोरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।
(तारीख़े विसाल 5 मुहर्रम शरीफ़, सन् 643 हि. देहली)

5) हज़रत ख़्वाजा वजीहुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
(तारीख़े विसाल 11 रजब शरीफ़, हरात)

5) हज़रत ख़्वाजा बुरहानुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
(विसाल 14 रजब शरीफ़ सन् 664 हि. अजमेरे मुअल्ला)

7) हज़रत अब्दुल्लाह बियाबानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो (5 रजब सन् 648 हि.)

8) हज़रत सय्यदा बीबी हाफ़िज़ा जमाल रज़ियल्लाहो तआला अन्हा
(अजमेरे मुक़द्दस)

हमारे ख़्वाजा की तसानीफ़

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हाफ़िज़े क़ुरआन और ज़बरदस्त आलिमे दीन थे। बाज़ रिवायात में उन के दर्से हदीस का तज़किरा भी मिलता है और क़लम कारों ने हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तसानीफ़ और आप के शेअ़री दीवान का ज़िक्र भी किया है।

एक अहम गुज़ारिश : मुसन्नेफ़ीन के तज़किरों में बेशुमार इख़्तिलाफ़ात पाए जाते हैं और हक़ीक़त किया है बज़ाहिर तरद्दुद बाक़ी रह जाता है इस लिये किसी की तहक़ीक़ को ग़लत

साबित करना बहुत ही दुश्वार है और इस मज़मून निगार का नाम ले कर इस के क़लम को मजरूह नहीं बनाया जा सकता।

मैदाने तस्नीफ़ व तहक़ीक़ में क़लम कार और मज़मून निगार का रावी के नेक व सालेह होने की निस्बत ही मलहूज़ होती है, हमारा क़लम मुजादला और मुक़ाबला वाला नहीं बल्कि इख्लास व महब्बत वाला होना चाहिये, मुख़लिसों और नेकों के मज़ामीन और किताबें हर दौर में मक़बूल रही हैं और सुबहे क़ियामत तक मक़बूल रहेंगी, इन्शाअल्लाहो तआला।

(अनवार अहमद कादरी)

हज़रत मीर अब्दुल वाहिद बिल गिरामी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं:

हज़रत ख़्वाजा मोईनुल हक़ वद्दीन हसन संजरी रज़ियल्लाहो अन्हो इल्मे कामिल रखते थे, आपकी तसानीफ़ ख़ुरासान के अतराफ़ व जवानिब में कसरत से मिलती हैं।

(सबअ सनाबिल शरीफ़, स. 435)

ज़ेल में चन्द तस्नीफ़ात का ज़िक्र किया जाता है।

(1) अनीसुल अरवाह (2) कश्फ़ुल असरार (3) कन्ज़ुल असरार (4) रिसाला आफ़ाक़ व अन्फ़स (5) हदीसुल मआरिब (यह रिसाला नादेरुल वजूद है) (6) दीवाने मोईन। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2006, स. 105)

हज़रात ! हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का हर मज़मून और आपकी हर तस्नीफ़ ज़ाहिरी उलूम के साथ बातिनी और रूहानी उलूम का ख़ज़ाना है, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तहरीर में सूज़ो गदाज़ के साथ साथ हक़ व सच का जलवा और ख़ुलूस व लिल्लाहियत की रूहानियत भी मौजूद व अयां नज़र आती है जिसकी वजह से हर क़ारी का क़ल्ब व जिगर ख़शियते इलाही (ख़ुदा का ख़ौफ़) और हुब्बे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और औलियाए किराम अलैहिमुर्रिज़वान की अक़ीदत व महब्बत से मालामाल होता हुआ नज़र आता है।

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं, ताक़ते परवाज़ मगर रखती है

वर्क़ तमाम हुा, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बेकराँ के लिये

(7)

रजब शरीफ़

दूसरा जुमा .... पहला बयान

हज़रत ख़्वाजा की करामात
और
शाने ग़रीब नवाज़ी

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۞ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۞

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म

(पारा 11, रुकूअ 12, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के अख़्लाक़ बहुत ही बलन्द थे, लोगों के मुलाक़ात के वक़्त ऐसे अख़्लाक़े करीमाना का मुज़ाहरा फ़रमाते कि लोग आप ही के होकर रह जाते। कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ख़ुद भी और अपने बच्चों को भी बीमारी के इलाज के लिये दुआ और दम कराने के लिये हाज़िरे बारगाह होते। अख़्लाक़े करीमाना के साथ उनके लिये दुआ और उन पर दम करते, आपकी दुआ और दम करने की बरकत से ज़ाहिरी बीमारी से वह लोग शिफ़ा हासिल कर लेते और बातिनी मरज़ कुफ़्र व शिर्क का भी इलाज हो जाता। इस तरह वह लोग हमारे ख़्वाजा के नूरानी हाथों पर तौबह करते और मुसलमान हो जाते। ख़ुश तबई और ख़ुश मिज़ाजी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आदत थी, आप किसी पर ग़ुस्सा न करते मगर कभी कभी नाराज़ हो जाया करते।

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाया करते थे कि मैं जब तक हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमते अक़दस में रहा, कभी आपको नाराज़ होते नहीं देखा सिवा एक दिन के।

हमारे ख़्वाजा कभी कभी नाराज़ होते

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने ख़ादिम शैख़ अली के हमराह कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, दरमियाने राह में एक शख़्स ने आपके ख़ादिम का दामन पकड़कर सख़्त व सुस्त और बुरा भला कहना शुरू कर दिया। उस शख़्स पर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को जलाल आ गया और उससे फ़रमाया कि क्या बात है ? जो तूने दामन पकड़ा और बुरा भला कहा। मुलख़्ख़सन (अह्ले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 335)

हज़रात ! बुरी बात और ज़ुल्म व बद ख़ुल्क़ी पर नाराज़ होना ईमान की पुख़्तगी और मज़बूती की अलामत है। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जलाल में आकर और नाराज़ होकर ही राजा पृथ्वीराज को गिरफ़्तार कराया। आपने नाराज़ होकर ही ऊँटों को बैठा दिया तो न उठ सके, जब तक मुआफ़ी न मांगी गई। हमारे प्यारे ख़्वाजा ने नाराज़ होकर ही अनासागर का पानी प्याले में बन्द कर दिया था। इन वाक़ेआत से ज़ाहिर और साबित हुआ कि ज़ुल्म व जब्र और बुरी बातों पर नाराज़ होना हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आदत व सुन्नत है और यही हुक्म कुरआन व सुन्नत का भी है।

इन्तिबाह ! हज़रात ! आज कल कुछ लोग इस तरह की बातें करते नज़र आते हैं कि इस्लाम में गुस्सा हराम है और नाराज़ होना मना है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कभी नाराज़ नहीं होते थे, सहाबए किराम कभी गुस्सा नहीं करते थे, बुज़ुर्गों ने कभी नफ़रत नहीं किया। इस लिये हमें भी गुस्सा करने, नाराज़ होने और नफ़रत करने से बचना चाहिये, यह काम हराम व गुनाह हैं। (अल अमान वल हफ़ीज़)

हज़रात ! इस तरह की बोली बहुत बड़ी मक्कारी और धोका है।

हज़रात ! हक़ीक़ते हाल यह है कि वह लोग जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम और औलियाए किराम, बुज़ुर्गाने दीन की बारगाहों में बे अदबी और गुस्ताख़ी और उनकी शाने अक़दस में बे हूदा कलेमात कहते और लिखते हैं, अकसर उन्हीं लोगों की यह बोली है और उन लोगों का मतलब व मक़सद यह है कि हमारे बे ईमान और बद अक़ीदगी को तुम देखते और सुनते रहो मगर हमको बुरा न कहो और हम पर गुस्सा न करो और हमसे नफ़रत व नाराज़गी का इज़हार न करो जब कि मुनाफ़िक़ व बद अक़ीदा ज़ालिम व जाबिर शख़्स से गुस्सा व नफ़रत करना और उससे नाराज़गी का इज़हार करना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम, सहाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन से साबित है।

(1) सअलबा इब्ने हातिब ने ज़कात न अदा की तो अल्लाह तआला ने नाराज़ होकर उसके हक़ में आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबा के दरमियान सअलबा पर जलाल व नाराज़गी का इज़हार किया

(2) बुख़ारी व मुस्लिम की सही हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम ने मुनाफ़िक़ों को मस्जिदे नबवी शरीफ़ में ऐन जुमा के ख़ुतबा के वक़्त सहाबए किराम की मौजूदगी में बाहर निकाला।

(3) हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने गुस्से में आकर एक मुनाफ़िक़ को क़त्ल किया और

(4) हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो ने नाराज़ होकर आलमे जलाल में दुआ कर दी तो शैख सनआनी की विलायत जाती रही और हलाकत व बरबादी के क़रीब चले गे

(5) हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने एक ज़ालिम हाकिम के हक़ में दुआए हलाकत फ़रमा दी तो वह शख़्स शिकार के लिये गया हुआ था वापस नहीं आया जंगल ही में हलाक व बरबाद हो गया।

अल मुख़्तसर ! क़ुरआन व सुन्नत और बुज़ुर्गों के अहवाल व अक़वाल से साफ़ तौर से ज़ाहिर और साबित हुआ कि अल्लाह व रसूल जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुस्ताख़ों और उनको बुरा कहने वालों के साथ महब्बत का बरताव करना, अख़्लाक़ नहीं है बल्कि ईमान व अक़ीदा की कमज़ोरी है।

हमारे ख़्वाजा के अख़्लाक़ व आदात

ऐ ईमान वालो ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो महबूब ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अख़्लाक़े हसना के नूरानी पर्तो और शहकार नमूना थे।

और रसूले ख़ुदा रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सब्र व तहम्मुल और हिल्म व बुर्दबारी के अक्से जमील थे।

और अपने नाना जान मुश्फ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अफ़्व व दर गुज़र (मुआफ़ करना) और ग़रीब पववरी और बेकस नवाज़ी और गिरो पड़ें के साथ शफ़क़त व महब्बत और ग़रीब नवाज़ी की हू बह तस्वीर थे। अल्लाह तआला के बे हिसाब एहसान व करम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अता से, अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पेदाइशी ग़रीब नवाज़ थे।

हमारे प्यारे ख़्वाजा पैदाइशी ग़रीब नवाज़

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का घर ग़रीबों और बेकस व बे सहारा लोगों के लिये दारुल अमान और दारुल क़रार था।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की पैदाइश के बाद अय्यामे शीर ख़्वारी (दूध पीने के ज़माने) ही में शाने ग़रीब नवाज़ी का ज़हूर होने लगा था।

एक मरतबा का वाक़िआ है कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपनी मां के गोद में वालिदा माजिदा की छाती से दूध नोश फ़रमा रहे थे कि एक ग़रीब औरत गुरबत व

अफ़लास के दर्द व ग़म की दवा के लिये आपकी वालिदा तैय्यिबा की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उस ग़रीब ख़ातून की गोद में एक शीर ख़्वार बच्चा था, थोड़ी ही देर के बाद वह बच्चा भूक से निढाल होकर रोने लगा, वालिदा माजिदा हज़रत माहे नूर रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने उन ग़रीब ख़ातून से इरशाद फ़रमाया : ऐ बहन ! तुम्हारा बच्चा बहुत ही भूका है और भूक ही की वजह से रो रहा है, अपने बच्चे को दूध पिला दो। उस बेकस व लाचार औरत की पलकें नमनाक हो गईं और उसकी आँखों से आंसूओं की बरसात होने लगी। अपने आंचल से आंसूओं को पूछते हुए अर्ज़ गुज़ार हुई, ऐ सय्येदा माहे नूर ! कितने दिन हो चुके हैं कि अनाज का दाना हलक़ के नीचे नहीं उतरा, मैं फ़ाक़ा के साथ वक़्त गुज़ार रही हूँ, भूक से परेशान हूँ जिसकी वजह से मेरी छाती का दूध खुश्क हो गया है। यही वजह है कि बच्चा भूक से रो रहा है। आग़ोशे मादर में हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने दर्द व ग़म के सारे मनाज़िर को देखा और सारी बातों को सुना। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपना मुंह मां की छाती से हटा लिया और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी प्यारी प्यारी छोटी छोटी उंगलिये मुबारक से ग़रीब औरत के रोते हुए बच्चे की तरफ़ इशारा फ़रमाया। उस इशारे को वालिदा माजिदा समझ गईं कि मेरा प्यारा बेटा मोईनुद्दीन हसन कह रहा है कि एक छाती का दूध मैं पी रहा हूँ और दूसरी छाती का दूध उस ग़रीब बच्चे को पिला दो।

वालिदा तैय्यिबा ने उस ग़रीब बच्चे को अपनी गोद में लिया और दूध पिलाने लगीं। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उस मन्ज़र को देखकर बहुत खुश हो रहे थे और फ़र्ते मसर्रत से हंसते थे। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 170)

इसी लिये मैं कहता हूँ कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पैदाइशी ग़रीब नवाज़ थे।

हुज़ूर मुहद्दिसे आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

न मुझ सा कोई गदा है न तुम सा कोई करीम
न दर से उठूँगा बे कुछ लिये ग़रीब नवाज़
तुम्हारी ज़ात से मेरा बड़ा तअल्लुक़ है
कि मैं ग़रीब बड़ा, तुम बड़े ग़रीब नवाज़

हमारे ख़्वाजा बचपन ही से ग़रीब नवाज़

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बचपन के ज़माने में हम उम्र छोटे छोटे बच्चों को अपने घर बुला लाते और उन बच्चों को खाना खिलाते। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 170)

इसी लिये मैं अर्ज़ करता हूँ कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बचपन ही से ग़रीब नवाज़ थे।

सय्यद अब्दुल हक़ क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़राते हैं :

मैं तंगदस्त हूँ दामन भी तंग है मेरा
अता है आपकी बे इन्तिहा ग़रीब नवाज़
मोईनुल हिन्द मैं मज़लूम और बेकस का
है और कौन तुम्हारे सिवा ग़रीब नवाज़

दूसरा वाक़िआ : हमारे ख़्वाजा अहदे तिफ़ली (बचपन) में ग़रीब नवाज़ः हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के अहदे तिफ़ली (बचपन) का एक नूरानी वाक़िआ है कि ईद का दिन था, हर तरफ़ मसर्रतों की चहल पहल थी, सारी फ़ज़ा रंगारंग फूलों की ख़ुश्बू से महक उठी थी, आबादी की हर जानिब से मुसलमानों का ठांठें मारता हुआ समन्दर ईदगाह की तरफ़ बढ़ रहा था, बेश क़ीमत पैरहन (क़ीमती लिबास) में मलबूस हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो भी अपने घर वालों के हमराह ईदगाह के लिये रवाना हुए, रास्ते में हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़र एक नाबीना अन्धे लड़के पर पड़ी जो रहगुज़र के क़रीब फटे पुराने लिबास में मलबूस, उदास ग़मगीन खड़ा था, उसका उतरा हुआ चेहरा, फटा हुआ लिबास ग़ुरबत ज़दा हाल और उसकी बेचरागी देखकर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का दिल भर आया, उसी वक़्त अपने नए कपड़े उतारकर उस ग़रीब व नाबीना बच्चे को पहना दिया और उसे अपने हमराह ईदगाह ले गए।

इस नूरानी वाक़िआ की रोशनी में यह कहना ग़लत न होगा कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बचपन ही से ग़रीब नवाज़ थे। (सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 43)

ऐ ईमान वालो ! चलो अजमेर चलें ! हर दर्द व ग़म की दवा व इलाज अजमेर में है। हर बेकस व मजबूर का आसरा और सहारा अजमेर में है। हर भूके और प्यासे का ग़मख़्वार व ग़म गुसार अजमेर में है। हर दुखियारे और वक़्त के सताए की आह व फ़रियाद सुनने वाला अजमेर में है हर मिस्कीन व ग़रीब का मिस्कीन परवर और ग़रीब नवाज़ अजमेर है।

हुज़ूर सय्येदुल उलमा सय्यद आले मुस्तफ़ा मारेहरवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़रमाते हैं :

तेरे पाए का कोई हमने न पाया ख़्वाजा
तू ज़मीन वालों पे अल्लाह का साया ख़्वाजा

और शहज़ादए सय्येदुल उलमा हज़रत सय्यद आले रसूल हस्नैन मियां रज़वी मारेहरवी दामत बरकाताहुमुल आलिया फ़रमाते हैं :

अजमेर चलो ! अजमेर चलो ! दरबार लगा है ख़्वाजा का
रिन्दो अपनी झोली भर लो ! मयख़ाना सजा है ख़्वाजा का

हमारे ख़्वाजा की ग़रीब नवाज़ी

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमते अक़्दस में एक ग़रीब काश्तकार हाज़िर हुआ और अपनी मुसीबत और परेशानी बयान किया

कि हाकिम ने मेरे खेत की पैदावार ज़ब्त कर ली है, वह हाकेम कहता है कि जब तक बादशाह से शाही फ़रमान न लिखा लाओगे उस वक़्त तक मैं तुम को ज़ब्त की हुई पैदावार नहीं दूँगा। इस लिये मैं आपकी ख़िदमत में मदद के लिये हाज़िर हुआ हूँ, आप हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के नाम एक ख़त लिख दें, वह बादशाह से खेती के काग़ज़ात दिला देंगे। इस बात को किसी को बताए बग़ैर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उस ग़रीब किसना को लेकर अजमेर से पैदल सफ़र करते हुए देहली पहुँच गए। हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास क़याम किया, हज़रत कुतुब साहब ने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत बजा लाने के बाद तशरीफ़ आवरी का सबब मालूम किया तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रजियल्लाहो तआला अन्हो ने उस ग़रीब किसान की जानिब इशारा करके फ़रमाया कि इस ग़रीब के एक काम के लिये आया हूँ। हज़रत कुतुब साहब ने अर्ज़ किया कि पीरो मुर्शिद का हुक्म आ जाता तो बादशाह से कागज़ात हासिल करके मैं इस ख़िदमत को अन्जाम दे देता, पीरो मुर्शिद को इतने लम्बे सफ़र की ज़ेहमत उठाने की क्या ज़रूरत थी ?

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इरशाद फ़रमाया : कागज़ात के हुसूल का जहाँ तक मुआमला है तो ख़ादिम के ज़रीए क़ाग़ज़ात मंगाए जा सकते थे, हुक्म भेज कर आग़ज़ात हासिल किये जा सकते थे, मगर मुआमला यह है कि एक मुसलमान ज़िल्लत व ग़ुरबत के वक़्त ख़ुदा की रहमत से क़रीब होता है, जब यह ग़रीब शख़्स मेरे पास आया था बहुत रंजीदा और दुखयारा था, मुझे इशारए ग़ैबी मिला कि किसी मुसलमान के रन्ज व ग़म में शरीक होना ऐन बन्दगी है और अदाए बन्दगी के लिये मैं ख़ुद आया हूँ। मुलख़्ख़सन

(सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 113)

हज़रात ! इस वाक़िआ के सिलसिले में हज़रत अब्दुर्रहमान चिश्ती रहमतुल्लाहे तआला अलैह लिखते हैं कि :

हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का एक ग़रीब मुसलमान की मदद के लिये अजमेर शरीफ़ से पैदल सफ़र करके बादशाह के पास देहली जाना अपने मुरीदीन की बेहतरी के लिये था क्यों कि औलिया अल्लाह पीरो मुर्शिद होने पर फ़ख़्र नहीं करते और जिस काम में मुरीदों की बेहतरी और भलाई हो महज़ बलन्द मक़ाम की बिना पर बाज़ नहीं रहते और अस्ल वजह यह है कि औलिया अल्लाह हर काम के लिये मामूर मिनल्लाह होते हैं और अपने इख़्तियार और मर्ज़ी को दरमियान में हरगिज़ नहीं लाते, चुनाँचे हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस बाब में फ़रमाया है :

रुबाई का मफ़हूम व मतलब : हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि इश्क़ आया और मेरे रग व रेशे में ख़ून की तरह दाख़िल हो गया, इश्क़ ने मुझे अपने आप से ख़ाली कर दिया और मेरे अन्दर दोस्त भर दिया, मेरे वजूद के सब अज्ज़ा दोस्त ने ले लिये और मेरा नाम ही रह गया बाक़ी सब वही है। मुलख़्ख़सन (मिरअतुल असरार, स. 606)

ऐ ईमान वालो! इस नूरानी वाक़िआ को बार बार बयान किया जाए और इसके बरकात व हसनात को दिल के निहां खाने में महफ़ूज़ किया जाए। और इस वाक़िआ से यह भी पता चला कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ग़रीबों और परेशान हाल वालों पर किस क़दर मुश्फ़िक़ व मेहरबान हैं कि एक काग़ज़ के लिये अजमेर शरीफ़ से पैदल सफ़र फ़रमा कर देहली तशरीफ़ ले गए और ग़रीब की मुश्किल कुशाई फ़रमाई।

ऐ ग़ोसो ख़्वाजा व रज़ा के दीवानो! हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो आज भी ग़मज़दा की फ़रियाद सुनते हैं और बे कसों, लाचारों और मजबूरों की मदद फ़रमाते हैं हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पैदाइशी ग़रीब नवाज़ थे बचपन में ग़रीब नवाज़ थे और आज भी ग़रीब नवाज़ हैं।

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

(हज़रत हसन रज़ा बरैलवी)

ज़माने भर के सताए हुए यहाँ आते हैं
तेरा दर है कि दारुल अमाँ ग़रीब नवाज़

हमारे ख़्वाजा किस शान के ग़रीब नवाज़

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि एक शख़्स मेरा पीर भाई था, उस का इन्तिक़ाल हो गया, उस के जनाज़े में शरीक था, जब मेरे पीर भाई को लहद में रख दिया गया और उस की क़ब्र तैयार कर दी गई तो सब लोग अपने अपने घरों को लौट गए वह शख़्स मेरा पीर भाई था, उस निस्बत और तअल्लुक़ के सबब में अपने पीर भाई की क़ब्र के पास थोड़ी देर के लिये ठहर गिया और मुराक़बा में मशग़ूल हो गया। घड़ी दो घड़ी ही गुज़री थी कि मैंने देखा कि अज़ाब देने वाले फ़रिश्ते उस की क़ब्र में आ गए और उस शख़्स को अज़ाब देना चाहा, मेरा पीर भाई आलमे तन्हाई में घबरा कर बड़ा परेशान नज़र आ रहा था, जब मैंने अपने पीर भाई को क़ब्र में हैरान व परेशान देखा तो मैं इस तदबीर में लग गया कि किसी तरह मैं अपने पीर भाई की मदद करूँ और उस को अज़ाब से छुटकारा दिलाऊं। अभी मैं सोच विचार ही में था कि मैंने देखा कि पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने मुरीद की ख़बर गीरी के लिये क़ब्र में तशरीफ़ ले आए हैं। हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रिश्तों से फ़रमाया, उस को अज़ाब न दो। यह मेरा मुरीद है। फ़रिश्तों ने कहा कि यह शख़्स आप के ख़िलाफ़ काम करता था। हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि बे शक यह शख़्स गुनाहगार है और मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारता था मगर ख़ुद को मेरे दामन से बाँध रखा था। ग़ैबी हुक्म हुआ कि ऐ फ़रिश्तो! मेरे महबूब बन्दा उस्माने हारूनी के मुरीद से हाथ उठा लो और उस को अज़ाब न दो! हम मुरीद को उस के पीर व मुर्शिद के सुपुर्द करते हैं। (सियरुल औलिया, स. 54)

ऐ ईमान वालो ! इस नूरानी वाक़िआ से पहली बात तो यह मालूम हुई कि जब हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने पीर भाई को क़ब्र में अज़ाब व बला में मुब्तला होता हुआ देखा तो बे चैन व मुज़्तरिब हो गए और तदबीरें सोचने लगे कि किस तरह से मैं उस की मदद करूँ।

हज़रात ! एक बाप को अपने भाई से ज़्यादा अपने बेटों से प्यार होता है और हम हिन्दी मुसलमान क़ादरी नक़्शबन्दी सोहरवर्दी बरकाती अशरफ़ी रज़वी अर्ज़ यह है कि सुन्नी मुसलमान हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रूहानी औलाद हैं और सब चिश्ती हैं। और जब पीर भाई के साथ ग़रीब नवाज़ी का यह आलम है तो अपनी रूहानी औलाद हम बे कस व मजबूर गुलामों के साथ शफ़क़त व महब्बत का क्या आलम होगा। और इस नूरानी वाक़िआ से दूसरी बात का यह पता चला कि हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर सब कुछ रौशन है क़ब्र के ऊपर से देख लिया कि क़ब्र के अन्दर क्या हो रहा है और आज क़ब्रे अनवर व अक़्दस से देख रहे हैं कि हिन्दूस्तान में हमारे मुरीद और गुलाम किस हाल में हैं और उन पर किया गुज़र रही है और इस नूरानी वाक़िआ से तीसरी बात यह मालूम हुई कि वह शख़्स गुनाहगार व ख़ताकार होने के बावजूद क़ब्र के अज़ाब से इस लिये बचा लिया गया कि वह शख़्स अल्लाह तआला के वली हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो अन्हो का मुरीद था, आप के दामन से वाबस्ता था।

मेरे आक़ाए नेअ़मत पयारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं।

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

साइलो ! दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

(हदाइके बख़्शिश)

हमारे ख़्वाजा टूटे दिलों का सहारा

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दुनिया के सताए हुए बे कस व बे बस के आसरा और टूटे दिलों के सहारा हैं।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बे मिसाल हमदर्दी और ग़रीब नवाज़ी का वाक़िआ ब गौर समाअत फ़रमाएं।

एक मरतबा मेरे आक़ाए नेअ़मत, मुर्शिदे शरीअत व तरीक़त, वलिये कामिल, आलिमे बा अमल, आशिक़े आला हज़रत, हज़रत अल्लामा अश्शाह मौलाना मुफ़्ती बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अजमेरे मुक़द्दस दरगाह मुअल्ला के हुजरा नम्बर 69 में क़याम फ़रमा थे इरशाद फ़रमाया कि वलियों के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर के चारों तरफ़ जवारे नूर में यह सब जो क़ब्रें नज़र आ रही हैं,

कोई क़ब्र छोटी सी बनी है, किसी क़ब्र सा थोड़ा सा निशान है, प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ज़ाएरीन उन क़ब्रों के इर्द गिर्द बैठे नज़र आ रहे हैं, कोई क़ब्र ही पर बैठा है और उन क़ब्रों के ऊपर से लोग गुजरते नज़र आते हैं उन क़ब्रों में आराम फ़रमाने वाले बड़े बड़े कुतुब व अब्दाल और वली हैं, अगर यह अल्लाह वाले किसी दूसरे मक़ाम पर होते तो उन के मज़ारों के बड़े बड़े गुम्बर और कुब्बे होते। मगर विलायत के उन सितारों ने अपने आप को आफ़ताबे विलायत, माहताबे रूहानियत व करामत हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के जल्वों में गुम कर रखा है। और मेरे शैख़ ने फ़रमाया उन्हीं क़ब्रों में एक क़ब्र ख़ाली है और वाक़िआ बयान फ़रमाया कि मियां बीवी अपने नो मौलूद शीर ख़्वार बच्चे के साथ उर्स के अय्याम में हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाहे अक़दस की ज़ियारत व हाज़री के लिये आए हुए थे, उर्स की भीड़ भाड़ में एक क़ब्र के पास अपने शीर ख़्वार बच्चे को लिये खड़े थे कि बच्चे ने पेशाब कर दिया, पेशाब के कुछ क़तरात क़ब्र के ऊपर गिरे, क़ब्र में आराम फ़रमा वली को नाराज़गी हुई और आलमे जलाल में बच्चे पर नज़र डाली, साहिबे क़ब्र की नज़रे ग़ज़ब से बच्चा तड़पा और मर गया।

माँ की ममता चीख़ मार कर रोने लगी, अपने गोद में मुर्दा बच्चे को लिये हुए भागी और दौड़ती हुई हिन्द के मसीहा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़ब्रे अनवर व अक़दस पर अपने मुर्दा बच्चे को डाल दिया और चीख़ते चिल्लाते हुए फ़रियाद की, ऐ हमारे मसीहा प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो आप की बारगाह में लोग मुर्दा लाते हैं और आप के करम से ज़िन्दा ले कर वापस जाते हैं और मैं कैसी बद नसीब हूँ कि आप के दरे करम पर अपना ज़िन्दा और सही सालिम बच्चा लाई थी और अब मैं अपने बच्चे को मुर्दा हालत में ले जाऊँ यह कैसे हो सकता है ?

हमारे शैख़ ने फ़रमाया कि उसी वक़्त क़ब्रे अनवर शक़ हो गई और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो एक ग़रीब औरत की आह व पुकार व गिरया व ज़ारी को बरदाश्त न कर सके और क़ब्रे अनवर से बाहर आ गए और मुर्दा बच्चे को अपनी आग़ोशे रहमत व शफ़क़त में उठा लिया और मुर्दा बच्चे को दम किया बच्चा ज़िन्दा हो गया, बच्चे को अपनी गोद में लिये हुए उस क़ब्र पर पहुँचे जिस क़ब्र वाले बुज़ुर्ग की निगाहे ग़ज़ब से बच्चा मरा था, क़ब्र में लेटे हुए वली से इरशाद फ़रमाया इसी वक़्त तुम क़ब्र ख़ाली कर दो और हमारे अजमेर से चले जाओ।

हमारे पास अच्छे बुरे सब आएंगे, उसी को यहाँ रहने की इजाज़त है जो सब को बरदाश्त करे और निभा ले।

यह शान बन्दा नवाज़ी तो देखिये उन की
वहीं ग़रीब खड़े हैं जहाँ ग़रीब नवाज़

हमारे सामने एक रोज़ यूँ भी आ जाओ
कोई हिजाब न हो दरमियां ग़रीब नवाज़

(राज़ इलाह आबादी)

नोट : यह वाक़िआ जब हमारे शैख़ हज़रत बंदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा ने बयान फ़रमाया तो उस वक़्त हज़रत सय्यद फ़ारूक़ मियां चिश्ती ख़ादिम ख़्वाजा साहब और बहुत से हज़रात भी मौजूद थे। (अनवार अहमद क़ादरी)

हज़रात ! इन वाक़ेआत से ज़ाहिर और साबित है कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हु पैदाइशी ग़रीब नवाज़ थे बचपन में ग़रीब नवाज़ थे, पीर भाइयों के लिये ग़रीब नवाज़ थे, ता हयात ख़ल्क़े ख़ुदा के लिये ग़रीब नवाज़ थे और क़ियामत तक के लिये टूटे दिलों का सहारा और ग़रीब नवाज़ हैं।

हमारे प्यारे ख़्वाजा की करामात

ऐ ईमान वालो ! इन्सान को समझाना आसान नहीं है, आदमी की फ़ितरत है उसी को मानेगा जो अक़्ल कहेगी। अक़्ल व ख़िरद पर अगर इस्लाम और ईमान का क़ब्ज़ा है तो अक़्ल सीधी राह बताती नज़र आती है और अगर अक़्ल बे महार और आज़ाद है तो इन्सान को फ़िरऔन व क़ारून और शद्दाद व नमरूद और यज़ीद बना देती है।

इसी लिये अल्लाह तआला ने इन्सानों की हिदायत व रहबरी के लिये अम्बियाए किराम और रसूलाने इज़ाम को मोअजिज़ा की ताक़त व कुव्वत अता फ़रमा कर मबऊस फ़रमाया और सिलसिलए नुबुव्वत ख़त्म होने के बाद उलमा और औलिया की नूरानी जमाअत को आदमियों की रुश्दो हिदायत के लिये करामत का कमाल अता फ़रमाया।

हज़रात ! आज हम मुसलमानों की कम नसीबी है कि हम मैं कोई साहिबे रूहानियत और विलायत की बुज़ुर्गी वाला वली दिखाई नहीं देता।

हज़रात वली ज़रूर हैं मगर हमारी ज़ाहिरी निगाहों से रू पोश हैं उन्हीं के क़दमों की बरकत से यह दुनिया क़ाइम है वर्ना गुनाहों की कसरत की वजह से ज़मीन धंस जाए।

कल तक हमारे बीच में औलिया अल्लाह चलते फिरते नज़र आते थे, यहूदो नसारा और कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन जो अक़्ल के गुलाम थे, जो सिर्फ़ अक़्ल की ताक़त व कुव्वत को तस्लीम करते थे उनके मुक़ाबले में हमारे बुज़ुर्गों ने औलिया अल्लाह ने विलायत व रूहानियत और करामत की ला ज़वाल कुव्वत व ताक़त को पेश फ़रमाया, किताबे माज़ी के औराक़ को पलटिये और देखिये कि वली की ताक़त इस क़दर होती है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के उम्मत के वली हज़रत आसिफ़ बिन बरख़िया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हज़ारों टन के वज़न का तख़्ते बिलक़ीस सैंकड़ों मील की दूरी से पलक झपकने से पहले दरबार में लाकर हाज़िर करते हैं। (क़ुरआन)

और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मदीना तैय्यिबा मस्जिदे नबवी में ऐन ख़ुतबा के वक़्त सैंकड़ों मील की दूरी पर मुल्क शाम में इस्लामी फ़ौज को देख लेते हैं और बीच ख़ुतबा में इरशाद फ़रमाते हैं :

यानी ऐ सारिया ! पहाड़ की तरफ़ देखो (मिश्कात शरीफ़, स. 546)

हज़रत अबू यूसुफ़ शागिर्दे रशीद हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा का अंग्रेज़ों, ईसाइयों से मुनाज़रा तय होता है कि तुम मज़हबे ईसाइयत को साबित करो और हम मुसलमान मज़हबे इस्लाम के हक़ व सच होने का सुबूत पेश करते हैं। वक़्त मुक़र्रर हो गया, इन्सानों का ठांठें मारता हुआ समन्दर दरियाए दजला के किनारे जो मुनाज़रा गाह था मुनाज़रा देखने के लिये जमा हो जाता है, ईसाइयों के बड़े बड़े आलिम किताबों के साथ मुनाज़रा गाह पर जमा हो गए, मुनाज़रे का वक़्त हो गया, मुसलमानों के आलिम, मुनाज़िर हज़रत अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बग़ैर किसी किताब के कन्धे पर मुसल्ला डाले हुए और हाथ में तस्बीह लिये हुए तशरीफ़ लाते हैं और मुनाज़रा गाह में मिम्बर पर आने के बजाए दरियाए दजला के पानी पर चलते हुए बीच दरया में पानी के ऊपर अपना मुसल्ला बिछा देते हैं और वहीं से आवाज़ देते हैं कि ऐ ईसाइ मौलवियो ! आ जाओ और मुनाज़रा कर लो ! यह मन्ज़र सारे लोगों ने अपनी खुली आँखों से देखा और ईसाई मौलवियों ने भी अल्लाह तआला के वली की इस करामत को देखा तो तमाम ईसाई मौलवियों ने कहा कि ऐ हज़रत ! मुनाज़रा तो हो गया, हमने अपने माथे की आँखों से इस्लाम के हक़ व सच होने को देख लिया, हम तो पानी पर नहीं आ सकते इस लिये कि हमारा मज़हब ही ग़लत और बातिल है। आप आ जाएं और हमको कलमा पढ़ा कर इस्लाम में दाख़िल फ़रमा लें। सारे ईसाई नाइबे रसूल आलिमे इस्लाम हज़रत अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की विलायत और बुज़ुर्गी और करामत देखकर मुसलमान हो गए।

इसी तरह हम क़ादरियों के क़ब्र के उजाला, आख़िरत के सहारा हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अल्लाह तआला की अता से विलायत व रूहानियत और करामत की ताक़त व कुव्वत से क़ब्र के मुर्दे को ज़िन्दा फ़रमा दिया, तमाम ईसाई मुसलमान हो गए।

और हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने ऊँटों को बिठा दिया तो फिर न उठ सके। अनासागर को अपने प्याले में बन्द कर दिया। राम देव महन्त को उसके तमाम जादू और करतब से आरी व ख़ाली करके बेहोश कर दिया और जोगी अजयपाल को अपनी लकड़ी की खड़ाउं से मरवाकर और पिटवाकर ज़मीन पर गिरा दिया और उसके तमाम जादू के कमाल के तान बान सब टूटते और बिखरते नज़र आए। राजा पृथ्वीराज को इस्लाम की फ़ौज से गिरफ़्तार कराया।

इस तरह हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की विलायत व रूहानियत के अनवार व तजल्लियात और करामात की कुव्वत व ताक़त ने हिन्दूस्तान में कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन की काफ़िरी और मुश्रिकी की तारिकी और बुत परस्ती के अन्धेरे से निकालकर इस्लाम के अबदी नूर और हमेशगी का उजाला अता फ़रमाया। देखते ही देखते सारा हिन्दूस्तान इस्लाम के नूर से रोशन और मुनव्वर हो गया।

हज़रात ! हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की विलायत व रूहानियत की

ताक़त व कुव्वत का यह आलम था कि पल भर में बन्दों को ख़ुदा से मिला देना आपकी अदना करामत थी।

मोजिज़ा और करामत की तफ़्सीली बहस में न जाते हुए सिर्फ़ इतना बताना चाहूँगा कि मोजिज़ा और करामत अल्लाह तआला की बख़्शी हुई वह कुव्वत व ताक़त है जिसको अक़्ले इन्सानी समझने से क़ासिर हो और अक़्ले इन्सानी को मुतहय्यर व हैरान कर दे।

मोजिज़ा : वह ख़िलाफ़े आदत कमाल है जो किसी नबी से सादिर हो।

करामत : वह ख़िलाफ़े आदत कमाल है जो किसी वली के ज़रीए ज़ाहिर हो।

मऊनत : वह ख़िलाफ़े आदत चीज़ जो आम मोमिन मुसलमान से ज़ाहिर हो।

इस्तिदराज : वह ख़िलाफ़े आदत अम्र जो किसी फ़ासिक़ व फ़ाजिर मुसलमान या काफ़िर से रूनुमा हो।

इहानत : वह ख़िलाफ़े आदत काम जो किसी काफ़िर से ज़ाहिर हो। (बहारे शरीअत, हिस्सा 1, स. 27)

ऐ ईमान वालो ! हम को पता कैसे चलेगा कि यह करामत ही है तो याद रखिये कि करामत उसी मर्दे मोमिन से ज़ाहिर होगी जो वली होगा और वली वही मोमिन हो सकता है जिसका क़ौल व फ़ेअ़ल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ौल व फ़ेअ़ल के मुताबिक़ व मुआफ़िक़ हो।

मुलाहज़ा फ़रमाइये हमारे पीर, पीराने पीर रोशन ज़मीर, सरदारे औलिया हुज़ूर ग़ौसे आज़म महबूबे सुब्हानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं :

كَرَامَةُ الْوَلِيِّ اِسْتِقَامَةُ فِعْلِهٖ عَلٰى قَانُوْنِ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ

यानी वली की करामत यह है कि उसका फ़ेल महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ानून के फ़रमान के मुताबिक़ हो।

(बहजतुल असरार शरीफ़, स. 105)

वली क्या ? हर मोमिन के लिये वाजिब है

नाइबे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत सय्यदना अबुल हुसैन अहमदे नूरी क़ादरी चिश्ती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

यानी हर वली, हर पीर, हर मोमिन के लिये वाजिब है कि अहले सुन्नत व जमाअत के मज़हबे मुहज़्ज़ब के मुताबिक़ अपने ईमान व अक़ीदे को सही रखे कि हक़ इन्हीं में मुनहसर है और सब औलियाए किराम से अकमलुल औलिया हज़रत सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और इमामुल औलिया सय्यदना हज़रत अलिये मुर्तज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से अब तक और अब से क़ियामत तक इसी मज़हब पर होंगे और जो शख़्स जमाअत से एक बालिश्त दूर हटेगा बिला शुबा उसने इस्लाम का पट्टा अपनी गरदन से निकाल डाला और जो लोग नेक नहीं हैं अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स से जमाअते अहले सुन्नत की मुख़ालफ़त करते हैं और फिर बे अक़्ली से सुन्नियत का दम भरते हैं (यानी वह लोग जो झूटे वली और पीर बनते हैं और वहाबियों, देवबन्दियों की नमाज़े जनाज़ा में शरीक होते हैं

और उनके पीछे नमाज़ पढ़ लेते हैं और बद अक़ीदों को लड़की देते और उनसे लड़की ले लेते हैं और उन मुनाफ़िक़ों की दावत खाते और खिलाते हैं) और अपने पैरो कारों, मानने वालों और चमचों को बताते हैं कि जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं वही मशाइख़ और औलियाए किराम का रास्ता है और कुछ किताबें और बातें बुज़ुर्गों की तरफ़ मन्सूब करते हैं जो सरासर झूटी होती हैं, अपनी मुवाफ़क़त व ताईद में पेश करते हैं तो यह लोग यानी झूटे वली और पीर कहलाने वाले ऐसे हैं जैसे इस्लाम में मुनाफ़िक़। मुलख़्ख़सन

(सिराजुल अवारिफ़ फ़िल वसाया वल मआरिफ़, स. 23)

हज़रात! हज़रत सय्यदना अबुल हुसैन नूरी मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो क़सम खाकर फ़रमाते हैं कि :

अल्लाह तआला की इज़्ज़त व जलाल की क़सम कि हम और हमारे मशाइखे इज़ाम और तमाम औलियाए किराम, ज़ाहिर व बातिन में, तन्हाई और मज्लिस में मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत ही पर हुए हैं और हैं और होंगे इन्शाअल्लाहु तआला और इसी मज़हब पर जिएँगे और इसी पर मरेंगे और इसी पर क़ियामत के दिन उठाए जाऐंगे। इन्शाअल्लाहो तआला।

और जो शख़्स (चाहे वली कहलाने वाला हो या पीर या मुरीद) इसके अलावा कहे या लिखे वह बहुत बड़ा झूटा और इल्ज़ाम लगाने वाला है। हम और हमारे पीराने किराम और सारे औलियाए इज़ाम दुनिया व आख़िरत में उस शख़्स से और उसके झूटे इल्ज़ाम से बेज़ार, हज़ार हज़ार बार बेज़ार हैं।

सुन लो! और याद रखो! और जो यहाँ हाज़िर नहीं हैं उनको पहुँचा दो! मुलख़्ख़सन

(सिराजुल अवारिफ़ फ़िल वसाया वल मआरिफ़, 23, 24)

ऐ ईमान वालो! जब बन्दए मोमिन वली हो जाता है तो अल्लाह तआला की बारगाह से उसको इस क़दर करामत व बुज़ुर्गी नसीब हो जाया करती है कि अपनी आँखों से दूर दराज़ की चीज़ों को देख लिया करता है और अपने कानों से दूर, दूर की बातों को सुन लिया करता है और अपने हाथों से जहाँ चाहता है मदद पहुँचा दिया करता है और अपने पैरों से जहाँ चाहता चले जाया करता है और क़दम में अपने मक़ाम से हज़ारों मील की दूरी तय कर दिया करता है इसके सुबूत में हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये।

हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तफ़सीरे कबीर में बुख़ारी शरीफ़ की हदीस नक़्ल फरमाते हैं :

إِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا

यानी अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मैं किसी बन्दे को महबूब बना लेता हूँ तो उसके कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है और उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है और उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है और उसके पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है। (मिश्कात शरीफ़, स. 197)

इसके बाद इमाम राज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो नक़्ल फ़रमाते हैं :

اَلْعَبْدُ اِذَا وَاظَبَ عَلَى الطَّاعَاتِ بَلَغَ الْمَقَامَ الَّذِىْ يَقُوْلُ اللهُ كُنْتُ لَهٗ سَمْعًا وَّبَصَرًا فَاِذَا صَارَ نُوْرُ جَلَالِ اللهِ سَمْعًا لَّهٗ سَمِعَ الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ وَاِذَا صَارَ ذٰلِكَ النُّوْرُ بَصَرًا لَّهٗ رَاٰى الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ وَاِذَا صَارَ ذٰلِكَ النُّوْرُ يَدًا لَّهٗ قَدَرَ عَلَى التَّصَرُّفِ فِى السَّهْلِ وَالصَّعْبِ وَالْقَرِيْبِ وَالْبَعِيْدِ ٥

यानी जब कोई बन्दा ताआत (फ़राइज़ व वाजिबात और सुनन व मुस्तहब्बात) का पाबन्दा हो जाता है तो वह उस मक़ाम तक पहुँच जाता है जिसके बारे में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि मैं उसके कान और आँख बन जाता हूँ यानी जब अल्लाह तआला के जलाल का नूर उसके कान हो जाता है तो वह महबूब बन्दा दूर व नज़दीक की आवाज़ सुन लेता है और जब अल्लाह तआला के जलाल का नूर उसकी आँख हो जाता है तो वह मक़बूल बन्दा दूर व नज़दीक की तमाम चीज़ों को देख लेता है और जब अल्लाह तआला के जलाल का नूर उसके हाथ हो जाता है तो वह वली बन्दा दूर व नज़दीक के मक़ामात पर आसान और मुश्किल चीज़ों पर तसर्रुफ़ करने पर क़ादिर हो जाता है। (तफ़सीरे कबीर, जि. 5, स. 480)

हज़रात ! सही बुख़ारी शरीफ़ की हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि औलियाए किराम को अल्लाह तआला इस क़दर बुज़ुर्गी और शान अता फ़रमाता है कि औलिया अल्लाह क़रीब और दूर की हर चीज़ को देखते हैं।

औलिया अल्लाह क़रीब और दूर की आवाज़ को सुनते हैं

औलिया अल्लाह क़रीब और दूर का आसान मुआमला हो या मुश्किल, हर मुआमला में मदद करने की ताक़त व कुव्वत रखते हैं

और हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुतअल्लिक़ हमारे मुख़ालिफ़ वहाबी और देवबन्दी हज़रात भी कहते और लिखते हैं जो उनकी किताबों से अयां (ज़ाहिर) है कि सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह तआला के बहुत बड़े वली हैं, तो जब साबित हो गया कि हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो वली ही नहीं बल्कि जमाअते औलिया के इमाम व पेशवा हैं तो यह भी साबित हो गया कि उनका मुरीद व ग़ुलाम बग़दाद से मदद के लिये पुकारे या अजमेर से या इन्दौर से या दुनिया के किसी मक़ाम से।

तो हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने ग़ुलामों की फ़रियाद सुनते हैं और मदद फ़रमाते हैं।

ख़ूब फ़रमाया मौलाना हसन रज़ा बरैलवी ने :

मोहयेदीं ग़ौस हैं और ख़्वाजा मोईनुद्दीन हैं
ऐ हसन ! क्यों न हो महफ़ूज़ अक़ीदा तेरा

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का फ़रमान : नुबुव्वत ख़ुदा का साया है और विलायत नुबुव्वत का साया है। (बहजतुल असरार शरीफ़, स. 104)

इमाम यूसुफ़ नबहानी का क़ौल : करामाते औलिया (अस्ल में अम्बियाए किराम के मोजिज़ात हैं। (करामाते औलिया, स. 76)

हज़रात ! मशहूर आशिक़े रसूल हज़रत अल्लामा इमाम यूसुफ़ नबहानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि औलियाए किराम के करामात को हर ज़माने में अइम्मा और उलमा ने लिखा और बयान फ़रमाया है।

और औलियाए किराम की करामतों को बयान करने से अल्लाह तआला के वजूद और उसकी अज़ीम क़ुदरत से ईमान क़वी होता है और महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नबी और रसूल होने का यक़ीन मुस्तहकम और मज़बूत होता है और अगर आदमी मोमिन न हो तो औलिया अल्लाह की करामात को देखकर उसे ईमान मिलता है और अगर पहले से मोमिन व मुसलमान था तो उन करामात को देखने के बाद ईमान व यक़ीन में मज़ीद क़ुव्वत पैदा होती है।

और यह भी साबित होता है कि मज़हबे इस्लाम ही हक़ और सच मज़हब है और बातिल मज़हब वालों को अल्लाह तआला करामत की दौलत नहीं अता फ़रमाता और औलिया अल्लाह की करामात, मज़हबे इस्लाम के हक़ और सच होने की दलील व सुबूत हैं।

(करामाते औलिया, स. 76)

हज़रात ! अहले सुन्नत व जमाअत के मुख़ालिफ़ जितने फ़िर्क़े हैं, वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी, राफ़ज़ी, ख़ारजी वग़ैरह इन फ़िर्क़ों में न वली हुए हैं और न हैं और न ही हो सकते हैं।

यह चीज़ भी उनके मज़हब के बातिल झूट होने की रोशन दलील है।

और आज तक जितने वली हुए हैं सब के सब मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत (यानी सुन्नी मुसलमानों) ही में हुए हैं। हुज़ूर बदरे मिल्लत, हुज़ूर अहसनुल उलमा, हुज़ूर सय्येदुल उलमा, हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत, हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत, हुज़ूर शेर बे शए अहले सुन्नत, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द जैसा ज़िन्दा वली अहले सुन्नत में, मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत अहले सुन्नत में, शाह बरकात अहले सुन्नत में, हज़रत मख़दूम अशरफ़ अहले सुन्नत में, हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी अहले सुन्नत में, हज़रत महबूबे इलाही अहले सुन्नत में, हज़रत साबिर कलयरी अहले सुन्नत में, हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जशकर अहले सुन्नत में, हज़रत क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी अहले सुन्नत में, हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ अहले सुन्नत में, हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन अहले सुन्नत में हैं।

हमारे दीन की हक़्क़ानियत के दोनों शाहिद हैं
मोईनुद्दीन अजमेरी मोहियुद्दीन जीलानी

ऐ ईमान वालो ! हर वली करामत वाले होते हैं मगर हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर

ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मुजस्सम करामत हैं।

हमारे ख़्वाजा ने दौराने सफ़र मुसलमान किया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब देहली से अजमेर तशरीफ़ ला रहे थे तो रास्ते में सात सौ मुश्रिकों को मुसलमान किया। (सियरुल औलिया, स. 57)

हज़रत नियाज़ बरैलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़रमाते हैं:

सिर्रे हक़ रा बयां मोईनुद्दीन
बे निशां रा निशां मोईनुद्दीन
मुर्शिद व रहनुमाए अहले सफ़ा
हादिये इन्सो जां मोईनुद्दीन

हमारे ख़्वाजा की करामत से हाथी पत्थर हो गया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब अजमेर तशरीफ़ लाए तो राजा पृथ्वी राज आपका जानी दुश्मन हो गया, उसने और उसके साथियों ने एक मरतबा एक पागल हाथी को आपकी तरफ़ दौड़ा दिया ताकि हाथी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को हलाक कर दे और मार डाले। मस्त हाथी दौड़ता हुआ जैसे ही आपके क़रीब आया तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने ज़मीन से एक मुश्त (मुट्ठी) ख़ाक उठाकर उस पागल हाथी की तरफ़ फेंकी तो अल्लाह तआला की कुदरत से वह हाथी पत्थर का हो गया। (सीरते ख़्वाजा, स. 307)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला अपनी कुदरते कामिला से ना मुमकिन को मुमकिन बना देता है, उसकी कुदरत से बे जान पत्थर जानदार हो जाते हैं और जानदार बे जान पत्थर हो जाते हैं। अल्लाह तआला की कुदरत व ताक़त के मज़हर अम्बियाए किराम होते हैं और अम्बियाए किराम की शान के मज़हर औलियाए किराम होते हैं। इस तरह औलियाए किराम से जो करामात ज़ाहिर होती हैं वह हक़ीक़त में अल्लाह तआला की कुदरत से ज़ाहिर होती हैं।

निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें
जो हो ज़ोक़े यक़ीं पैदा तो कट जाती हैं ज़ंजीरें

हज़रात! बे अक़्ल और बे ईमान है वह लोग जो औलियाए किराम की करामतों को तस्लीम करने से इनकार करते नज़र आते हैं।

हिन्दूस्तान में इस्लाम और मुसलमानों का वजूद औलियाए किराम की करामत से है।

हमारे ख़्वाजा हर रात काबा शरीफ़ में

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हर साल अजमेर शरीफ़ से ख़ानए काबा की ज़ियारत के लिये जाया करते थे, जो हाजी हज के लिये जाया करते थे वह हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को वहाँ पाते, हालांकि आप

अजमेर शरीफ़ में मौजूद होते और आप जब दरजए कमाल को पहुँच गए तो आपका यह मामूल था कि आप हर शब काबए मुअज़्ज़मा में गुज़ारते थे और नमाज़े फ़ज्र अजमेर शरीफ़ में अदा फ़रमाते थे। (फ़वाइदुस्सालेकीन, स. 26)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला की अता से जब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हर शब अजमेर शरीफ़ से काबए मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले जा सकते हैं तो अपने गुलामों, आशिक़ों के घर भी तशरीफ़ ला सकते हैं।

रहमत की घटा बनकर बरसा जो ग़रीबों पर
अजमेर में एक ऐसा अल्लाह का प्यारा है

हमारे ख़्वाजा की मज़लूम नवाज़ी

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का एक मुरीद आपकी खिदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हाकिमे शहर मुझे शहर से बाहर निकालना चाहता है। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो ने मालूम फ़रमाया कि वह हाकिमे शहर इस वक़्त कहाँ है ? अर्ज़ किया, शिकार खेलने गया है। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि अब हाकिमे शहर ख़ुद शहर में वापस नहीं आएगा, हमारे मुरीद को शहर से क्या निकालेगा। थोड़ी देर में यह ख़बर आई कि हाकिमे शहर जंगल में घोड़े से गिर कर मर गया। (असरारुल औलिया स. 92, गोईनुल अरवाह, स. 311)

ऐ ईमान वालो ! इस नूरानी वाक़िआ से पता चला और मालूम हुआ कि : नेकों और सच्चों और उनके गुलामों को सताना, उनसे दुश्मनी रखना बहुत बड़ी बला और मुसीबत और तबाही व बरबादी का सबब बन सकता है।

ख़ूब फ़रमाया हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने :

अल अमां क़हर है ऐ ग़ौस वह तीखा तेरा
मरके भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा

हमारे ख़्वाजा ने मक़तूल को ज़िन्दा फ़रमाया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाहे बेकस नवाज़ में एक औरत रोते बिलकते आई और शिकायत की कि हाकिमे वक़्त ने बिला क़ुसूर हमारे बेटे को फांसी दी है, आपसे मदद की तलब गार हूँ।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो असा मुबारक लेकर मक़तूल की मां के साथ रवाना हुए और ख़ुद्दाम और शहर के बहुत से लोग आपके साथ हो गए।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मक़तूल के क़रीब पहुँचे और असा मुबारक से उस मक़तूल की जानिब इशारा करके फ़रमाया : ऐ मज़लूम ! अगर तू बे गुनाह क़त्ल किया गया है तो अल्लाह तआला के हुक्म से ज़िन्दा हो जा और तख़्ताए दार से नीचे

चला आ। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के इरशाद और करामत से मक़तूल ज़िन्दा हो गया और तख़्तए दार से उतरकर ख़िदमते आलिया में हाज़िरी दी और अपनी मां के साथ अपने घर गया। (मसालेकुस्सालेकीन, जि. 2, स. 285)

ऐ ईमान वालो ! इस नूरानी वाक़िआ से पता चलता है कि अल्लाह तआला ने औलियाए किराम को किस क़दर कुव्वत व ताक़त का मालिक बनाया है कि अल्लाह तआला के महबूब वली, हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की करामत और रूहानी ताक़त से मुर्दा भी ज़िन्दा होता नज़र आता है।

ग़मे जहाँ के सताए हैं दर पर आते हैं
तुम्हारा दर है कि दारुल अमां ग़रीब नवाज़
यह शाने बन्दा नवाज़ी तो देखिये उनकी
वहीं ग़रीब खड़े हैं जहाँ ग़रीब नवाज़

हमारे ख़्वाजा एक बुत ख़ाना में गए

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़री बनवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का गुज़र एक दिन बुत ख़ाने पर हुआ, उस वक़्त सात काफ़िर बुत परस्ती में मशग़ूल थे। आप का जमाले बा कमाल देखते ही बेहोश हो गए और होश में आने के बाद आपके क़दमों में गिरकर कुफ़्र व शिर्क से तौबह की और मुसलमान हो गए। उन सातों के नाम हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हमीदुद्दीन रखा। उन्हीं सातों में से एक हज़रत शैख़ हमीदुद्दीन दहलवी हैं जो विलायत के मन्सब पर फ़ाइज़ हुए और मशहूर बुज़ुर्ग हुए।

(कलेमातुस्सादेक़ीन बहवाला मिरअतुल असरार, स. 599)

ऐ ईमान वालो ! हमारे अस्लाफ़ और बुज़ुर्गाने दीन ने बुत ख़ानों में जाकर पुजारियों को कलमा पढ़ा कर मुसलमान किया, इस तरह इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई और एक आज कल के नाम निहाद तब्लीग़ी जमाअत के लोग हैं जो मस्जिद की बे हुरमती करते नज़र आते हैं और मुसलमानों को बे दीन और बुज़ुर्गों का बे अदब व गुस्ताख़ बनाते नज़र आते हैं।

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वालो ! जागते रहियो ! चोरों की रखवाली है

हमारे ख़्वाजा ने रेहज़नों को तौबह कराया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के एक सफ़र में ज़ालिम व जाबिर डाकुओं ने आपको और आपके साथियों को घेर लिया, यह रेहज़न लोगों का माल व अस्बाब लूटने के अलावा उन्हें क़त्ल भी कर देते थे। जब डाकू बुरे इरादे से आपके पास आए तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की निगाहे रूहानियत व करामत पड़ते ही लरज़ा बरन्दाम हो गए, जब कुछ न बन सका तो इज्ज़ो नियाज़ मन्दी (आजिज़ी व इन्किसारी) से अर्ज़ गुज़ार हुए कि हम सब आपकी निगाहे करम के तालिब

हैं। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो ने डाकुओं को तौबह कराई और इस्लाम की अबदी नेअ़मत व दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया। वह तमाम रेहज़न (डाकू) आपकी सोहबत की बरकत से औलिया अल्लाह में शुमार हुए। (अहसनुस्सियर, स. 139, मोईनुल अरवाह, स. 312)

ऐ ईमान वालो! काफ़िरों, मुश्रिकों, गुनाहगारों ख़ताकारों और रेहज़नों को तौबह कराने वाले और इस्लाम की अबदी नेअ़मत व दौलत से नवाज़ने वाले औलिया अल्लाह हैं। वली के वसीले से नबी मिलते हैं और नबी के वसीले से ख़ुदा मिलता है।

हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं:

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो! हरगिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

हमारे ख़्वाजा की करामत से आतिश परस्त ईमान ले आए

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो एक रोज़ सेहरा (जंगल) से गुज़रे वहाँ सात मजूसी रियाज़त व मुजाहिदा में बहुत मशहूर थे। यह सातों मजूसी इस क़दर रियाज़रत व मुजाहिदा करते थे कि छः-छः महीने के बाद एक लुक़मा खाना खाते थे इस लिये ख़ल्क़े ख़ुदा उन से बहुत मुतास्सिर थी। एक दिन हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़रे विलायत उन मजूसियों पर पड़ी तो उन पर इस क़दर हैबत तारी हुई कि सब कांपने लगे और आप के क़दमों पर गिरते नज़र आए। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि तुम लोग आग की पूजा क्यों करते हो? तो उन मजूसियों ने अर्ज़ किया, हम इस लिये आग की इबादत करते हैं कि क़ियाम के दिन आग हमें न जलाए। आप ने फ़रमाया कि आग अल्लाह तआला के हुक्म के बग़ैर जला नहीं सकती। यह फ़रमा कर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी जूती मुबारक को आग में डाल दी। बहुत देर तक आप की जूती मुबारक आग में रही, जलना तो दर किनार आग का असर तक न आया। यह करामत देख कर सब ने सिद्क़ दिल से इस्लाम का कलमा पढ़ा और ईमान ले आए और आप की ख़िदमत में रह कर औलियाए कामिल हुए। (मसालेकुस्सालेकीन, जि. 2, स. 286, मोईनुल अरवाह, स. 312)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला ने औलियाए किराम को ऐसी कुव्वत व ताक़त बख़्शी है कि बुरे से बुरा, बद से बद तर और गुनाहगारों ख़ताकारों में बहुत बड़ा गुनाहगार और ख़ता कार क्यों न हो, अल्लाह वालों की सोहबत की तासीर व बरकत से वह शख़्स अपने गुनाह व ख़ता पर शर्मिन्दा होकर तौबह कर लेता है और नेक व सालेह बनता नज़र आता है और औलियाए किराम की नज़रे कीमिया असर से चोर व रेहज़न, कुतुब व वली बनते नज़र आते हैं जैसा कि बयान किये गए वाक़िआ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर व साबित होता है कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने चोरों और रेहज़नों को तौबह कराया और उन सब को वली बना दिया।

तेरे गदा हैं गुनाहगार व मुत्तक़ी दोनों
बुरे भले पे तेरा फ़ैज़े आम या ख़्वाजा
तेरा दयार है दारुस्सलाम या ख़्वाजा
तजल्लियाँ हैं नई सुबहो शाम या ख़्वाजा

हमारे ख़्वाजा ने काबा दिखा दिया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो समर क़न्द में तशरीफ़ फ़रमा थे, हज़रत ख़्वाजा अबूल्लैस समरक़न्दी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मकान के क़रीब एक मस्जिद तामीर हो रही थी, एक शख़्स ने एतराज़ किया कि सम्ते क़िब्ला दुरुस्त नहीं है, वह शख़्स लोगों से बहस व तकरार कर रहा था, किसी तरह काइल न होता था, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस शख़्स का मुंह काबा की तरफ़ करके फ़रमाया सामने देख ! किया नज़र आ रहा है ! उस शख़्स ने कहा ख़ानए काबा नज़र आ रहा है। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की करामत और नज़रे तवज्जोह से समर क़न्द से मक्का मुकर्रमा तक के तमाम हिजाबात और पर्दे उठ गए और वह शख़्स अपने शहर समरक़न्द से काबा मुअज़्ज़मा के दीदार से मुशर्रफ़ होता नज़र आया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 307)

ऐ ईमान वालो ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो की करामत व बुज़ुर्गी किस क़दर बलन्द व बाला है कि अपनी विलायत व रूहानियत की ताक़त से एक शख़्स को समर क़न्द से ख़ानए काबा का दीदार अता फ़रमा दिया।

हमारे ख़्वाजा इरादों को देख लेते हैं

एक बार का वाक़िआ है कि एक शख़्स ख़न्जर छुपा कर हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को क़त्ल करने के इरादे से आया, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी रूहानियत और विलायत की निगाह से उस शख़्स के बुरे इरादे को देख लिया, वह शख़्स हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़रीब आकर बैठ गया तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस के साथ अख़लाक़े करीमाना का बेहतरीन सुलूक फ़रमाया और अपने क़रीब बैठा कर इरशाद फ़रमाया कि तुम ख़न्जर बाहर निकालो और जिस इरादे से आए हो उस को पूरा करो ! यह सुनते ही वह शख़्स कांपने लगा और बड़ी आजिज़ी के साथ कहने लगा कि मुझ को लालच देकर आप को क़त्ल करने के लिये भेजा गया है। यह कह कर उसने बग़ल से ख़न्जर निकाल कर सामने रख दिया और क़दमों में गिर कर कहने लगा कि आप मुझ को मेरी ग़लती की सज़ा दीजिये बल्कि मेरे ख़न्जर से मेरा काम तमाम कर दीजिये। रहीम व करीम हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि हम दुरवेशों, फ़क़ीरों का शेवा है कि हमारे साथ कोई बदी भी करता है तो हम उस को नेकी और भलाई का सिला देते हैं। फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उसके लिये दुआ फ़रमाई, वह शख़्स बहुत मुतास्सिर हुआ और उसी वक़्त से ख़िदमत में रहने लगा। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो की सोहबत की बरकत से ताइब हुआ और उस को पैंतालीस (45) बार हज्जे कअ़बा की सआदत हासिल हुई और उसी मुक़द्दस ज़मीन में बअ़दे विसाल मदफ़ून हुआ। (मिरअतुल इसरार, स. 598)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला अपने महबूब व नेक बन्दों को रोशन ज़मीर बना देता है, अल्लाह वाले दिलों पर नज़र रखते हैं इसी लिये बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है आलिम के रूबरू ज़बान संभाल कर बोलो!

और वली के सामने दिल संभाल कर रखो!

हमारे ख़्वाजा रोज़ी का इन्तिज़ाम फ़रमा देते हैं

फ़ना फ़िर्रसूल हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्ज शकर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमते अक़दस में एक शख़्स ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मैं ने हिन्द के राजा मेरे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह बे कस पनाह में दुआ मांगी थी कि मेरी तंगदस्ती दूर हो जाए और मेरी रोज़ी का इन्तिज़ाम हो जाए। मैंने ख़्वाब में देखा कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मुझे 6 रोटियाँ इनायत फ़रमाईं। उस वक़्त से आज तक जिस को साठ साल का अर्सा गुज़र गया मुझे बिला नाग़ा रोटियाँ मिलती हैं। हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्ज शकर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि वह ख़्वाब न था बल्कि अल्लाह तआला का करम था जो हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने तुम पर महरबानी फ़रमाई ताकि तेरी गुरबत व अफ़लास दूर हो जाए और तुम को बराबर रोज़ी मिलती रहे।

(मसालिकुस्सालेकीन, जि. 2, स. 286, मोईनुल अरवाह, स. 313)

हज़रात! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह वह मक़बूल व महबूब बारगाह है जिस ने जो दुआ मांगी कुबूल हुई और जिस ने जो मांगा वह मिला उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं:

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

हमारे ख़्वाजा मुरीदों के मुहाफ़िज़ व निगेहबान हैं

एक दिन की बात है कि हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश देहली की सर ज़मीन पर सेर फ़रमा रहे थे, बहुत से उमरा और अरकाने सलतनत भी हमराह थे, एक बदकार औरत बादशाह के रूबरू हाज़िर होकर रोने और चिल्लाने लगी और बादशाह के दरबार में फ़रियाद की कि मेरा निकाह करा दीजिये मैं बड़े अज़ाब में हूँ।

बादशाह अलतमश ने कहा कि तेरा निकाह किस के साथ करा दूँ और तू क्यों अज़ाब में है? बदकार फ़ाहिशा औरत ने हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की जानिब इशारा करते हुए कहा कि उस शख़्स ने जिस को आप ने पीर व मुर्शिद बना रखा है, जो कुतुबुल अक़्ताब बने हुए हैं। (नऊज़ुबिल्लाहि तआला) इन्होंने मेरे साथ ज़िना किया है, हराम कारी की है (पेट की तरफ़ इशारा करते हुए) यह हमल उन्हीं का है।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़लीफ़ए आज़म हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जब यह बे हूदा बात सुनी तो आप का सर शर्मिन्दगी और नदामत से झुक गया।

बादशाह, उमरा और अरकाने सलतनत हैरान रह गए और थोड़ी देर के लिये सब पर सकते की कैफ़ियत तारी हो गई। हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो अन्हो ने अजमेर शरीफ़ की तरफ़ चेहरा करके अपने पीरो मुर्शिद का तसव्वुर करके अर्ज़ किया :

या मेरे पीरो मुर्शिद मेरी मदद फ़रमाइये। इधर याद किया, उसी वक़्त हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तशरीफ़ ले आए हज़रत कुतुब साहब और बादशाह अलतमश ने सलाम अर्ज़ किया और क़दम बोस हुए। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : क्या बात है तुम ने मुझे क्यों याद किया और मुझे क्यों पुकारा है ? हज़रत कुतुब साहब ने रोते हुए माजरा बयान किया तो मोईने बे कसां हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़र्ते महब्बत से तड़प उठे और उस बदकार व फ़ाहिशा औरत से पुर जलाल आवाज़ में फ़रमाया कि दुनिया दार और मक्कार लोगों के कहने पर दुनिया की दौलत के लालच में तूने मेरे कुतुब पर इलज़ाम लगाया है। सच किया है अभी ज़ाहिर होता है। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस औरत के पेट की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : ऐ पेट के बच्चे तुझे मोईनुद्दीन हुक्म देता है कि तू बता कि तेरा बाप कौन है ? हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का हुक्म सुनते ही बच्चा फ़ौरन अपनी मां के पेट में से बोला कि यह इलज़ाम सरासर ग़लत है, यह औरत निहायत बदकार और फ़ाहिशा, फ़ाजिरा है, मेरे बाप कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी नहीं हैं

बादशाह के क़हर व ग़ज़ब से घबरा कर उस बदकार औरत ने एतिराफ़ कर लिया कि हज़रत कुतुब साहब के दुश्मनों के वरग़लाने और इनआम के लालच की वजह से मैं ने हज़रत कुतुब साहब पर इल्ज़ाम लगाया था (मसालिकुस्सालेकीन, जि. 2, स. 282)

ऐ ईमान वालो ! हसद व बुग़्ज़ एक मोहलिक मर्ज़ और ख़तरनाक गुनाह है, हर दौर में नेकों और अल्लाह वालों को सताया गया और उन के साथ हसद व बुग़्ज़ का मुआमला किया गया है।

كُلُّ ذِيْ نِعْمَةٍ مَحْسُوْدٌ

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नेक नामी और बुज़ुर्गी का शोहरा जब आम हुआ तो दुनिया दार वज़ीरों व पीरों और सूफ़ी कहलाने वालों ने हसद व बुग़्ज़ की वजह से हज़रत कुतुबुद्दीन साहब को बदनाम व ज़लील करने के लिये एक बदकार व

फ़ाहिशा औरत को इनआम का लालच देकर इस बात के लिये तैय्यार किया गया कि हज़रत कुतुबुद्दीन साहब पर बदकारी व ज़िना का इल्ज़ाम लगाए। जैसा कि वाक़िआ आप हज़रात समाअत कर चुके।

हज़रात ! मुझे बताना यह है कि अल्लाह तआला औलियाए किराम के दामन से वाबस्ता रहने वाले मुरीदों और गुलामों की इज़्ज़त व अज़मत को हासिदों और दुश्मनों के तोहमत व इल्ज़ाम के शर से हिफ़ाज़त फ़रमाता है और अल्लाह तआला नेकों के गुलामों को दारैन की इज़्ज़त व अज़मत भी अता फ़रमाता है।

शेअर : हुज़ूर सय्येदुल उलमा रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं

मकरे शैतां से मुरीदों को बचा लेते हो
इस लिये पीर तुम्हें अपना बनाया ख़्वाजा
मेरी कश्ती अभी साहिल से लगी जाती है
एक ज़रा तुम ने अगर हाथ लगाया ख़्वाजा

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जिस को बना देते हैं फिर उसे बिगड़ने नहीं देते।

तस्बीह के दानों को बिखरने नहीं देते
ख़्वाजा जिस को बना देते हैं बिगड़ने नहीं देते

और सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

सुन लें अअ़दा में बिगड़ने का नहीं
वह सलामत हैं बनाने वाले

हमारे ख़्वाजा के करम से सूखे दरख़्त हरे भरे हो गए

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की निगाहे करम की तासीर व बरकत मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अजमेरे मुक़द्दस के कुर्बो जवार में एक बाग़ था उस बाग़ का मालिक हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि बाग़ के दरख़्त ख़ुश्क होकर बे बर्गो बार हो गए हैं।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मिट्टी के बरतन में पानी भर कर दिया और फ़रमाया यह पानी उन दरख़्तों की जड़ों में डाल दो !

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का दिया हुआ पानी ख़ुश्क दरख़्तों की जड़ों में डाल दिया गया। जिस की बरकत से वह बाग़ सर सब्ज़ व शादाब और हरा भरा हो कर फलदार हो गया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 309)

ऐ ईमान वालो ! जब हमारे प्यारे ख़्वाज हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की निगाहे करम की बरकत से सूखे दरख़्त हरे भरे हो सकते हैं तो हिन्द के राजा हमारे प्यारे

ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की एक नज़रे इनायत से हमारा इस्लाम व ईमान का शजर भी सर सब्ज़ो शादाब और हरा भरा हो कर फलदार हो सकता है और हमारी खुश्क हयात (सूखी ज़िन्दगी) में इत्मीनान व सुकून की रहमत व बरकत से शादाबी और ताज़गी मयस्सर आ सकती है।

इस लिये मैं अकसर कहा करता हूँ कि चलो अपने प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दरबारे अनवर की हाज़िरी और ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो जाओ। दीनो दुनिया की हर नेअ़मत दौलत हासिल हो जाएगी।

ख़्वाजाए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी मेहरूम नहीं मांगने वाला तेरा
खड़े हैं कब से बढ़ाए हम आस का दामन
उठा भी दीजिये दस्ते दुआ मोईनुद्दीन

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के विसाल के बाद की करामतें

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ाते अक़दस मतलए अनवार और मम्बए करामात है।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के विसाल के बाद भी आप की करामतों के ज़हूर का नूरानी सिलसिला जारी है और क़ियामत तक जारी रहेगा।

हुज़ूर सय्यदुल उलमा रहमतुल्लाहे तआला अलैह फ़रमाते हैं

तेरे पाए का कोई हमने न पाया ख़्वाजा
तू ज़मीं वालों पे अल्लाह का साया ख़्वाजा

हमारे ख़्वाजा का आस्ताना बीमारों के लिये शिफ़ा ख़ाना

आशिक़े मदीना इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर से बहुत कुछ फ़्यूज़ो बरकात हासिल होते हैं, मौलाना बरकात अहमद मरहूम जो मेरे पीर भाई हैं और मेरे वालिदे माजिद रहमतुल्लाहे अलैह के शागिर्द थे। उन्होंने मुझ से बयान किया कि मैंने अपनी आँखों से देखा कि :

एक हिन्दू के स र से पैर तक फोड़े थे। अल्लाह ही जानता है कि किस क़दर थे। ठीक दोपहर को वह बीमार शख़्स आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कन्करों और पत्थरों पर लौटता और कहता : ख़्वाजा अगन लगी है। तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि वह बीमार शख़्स बिल्कुल अच्छा हो गया। (अलमलफ़ूज़, जि. 3, स. 47)

ऐ ईमान वालो ! हर क़िस्म की बला और बीमारी के लिये हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब

नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का आस्ताना शिफ़ा ख़ाना है।

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से
उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उनके आस्ताने से

ज़माने भर के सताए हुए यहाँ आते हैं
तेरा दर है कि दारुल अमां ग़रीब नवाज़

हमारे ख़्वाजा की हुकूमत बद अक़ीदा पर

आक़ाए नेअ़मत मुजद्दिदे आज़मे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

भागल पूर से एक साहब हर साल अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुआ करते थे, एक वहाबी रईस से मुलाक़ात थी, उस बद अक़ीदा शख़्स ने कहा : मियाँ हर साल कहाँ जाया करते हो, बेकार इतना रुपया सर्फ़ करते हो। उन्हों ने कहा चलो ! और तुम ख़ुद इन्साफ़ की आँखों से देखो, फिर तुम को इख़्तियार। ख़ैर एक साल वह बद अक़ीदा शख़्स उनके साथ अजमेर शरीफ़ आया। देखा कि एक फ़क़ीर सोंटा लिये रोज़ा शरीफ़ा का तवाफ़ कर रहा है और यह सदा लगा रहा है : ख़्वाजा पाँच रुपये लूँगा और एक घंटे के अन्दर लूँगा और एक शख़्स से लूँगा। जब उस वहाबी को ख़याल हुआ कि अब बहुत वक़्त गुज़र गया एक घन्टा हो गया होगा और अब तक उसे किसी ने कुछ न दिया, जेब से उस बद अक़ीदा शख़्स ने पाँच रुपये निकाल कर उस के हाथ में रखे और कहा, लो। मियाँ तुम ख़्वाजा से मांग रहे थे, भला ख़्वाजा किया देंगे, लो हम देते हैं। फ़क़ीर ने वह रुपये तो जेब में रखे और एक चक्कर लगा कर ज़ोर से कहा : ख़्वाजा ! तोरी बलहारी जाऊँ दिलवाए भी कैसे ख़बीस मुनकिर से। (अलमलफ़ूज़, जि. 3, स. 47)

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर पर सदा लगाने वाले और भीक मांगने वाले फ़क़ीर भी रौशन ज़मीर होते हैं इसी लिये तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दर के फ़क़ीर ने अपनी रोशन ज़मीरी से देख लिया कि पाँच रुपये देने वाला हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का आशिक़ और ख़ुश अक़ीदा मुसलमान नहीं है बल्कि वहाबी बद अक़ीदा है और इस वाक़िआ से यह भी पता चला कि हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हक़ीक़त में हिन्दूस्तान के हाकिम व राजा हैं और आपकी हुकूमत ख़ुश अक़ीदा मुसलमान पर भी और बद अक़ीदा वहाबी पर भी आपकी हुकूमत है।

ख़लीफ़ए आला हज़रत हुज़ूर बुरहाने मिल्लत अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं :

सरकारे करम के सदक़े में ख़्वाजा का रोज़ा देख लिया
ख़्वाजा की ग़रीब नवाज़ी का दरबार में नक़्शा देख लिया

मिस्कीन व तवंगर सब यकसां जज़्बात से खिंचे आते हैं
एक क़ब्र में सोने वाले का इन्सानों पे क़ब्ज़ा देख लिया

हमारे ख़्वाजा ने क़ब्रे अनवर से आवाज़ दी

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपनी क़ब्रे अनवर में आज भी ज़िन्दा हैं और तमाम तसर्रुफ़ात के साथ मौजूद हैं और रोज़ए अनवर पर हाज़िरी देने वालों की आहो ज़ारी और फरियाद व दुआ व कुरआने मजीद की तिलावत को सुनते हैं।

एक मरतबा का वाक़िआ है हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि एक बार में कुछ अर्से तक हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन संजरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के रोज़ए अक़दस में मोअतकिफ़ रहा, अर्फ़े की रात थी रोज़ए मुबारका के नज़दीक नमाज़ अदा की और उसी जगह कुरआने मजीद पढ़ने में मशग़ूल हो गया। थोड़ी रात गुज़री थी कि मैंने पन्द्रह पारे ख़त्म कर लिये, सूरह कहफ़ या सूरह मरयम में एक हर्फ़ मुझसे छूट गया, हज़रत ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो के रोज़ए अनवर से आवाज़ आई कि यह हर्फ़ छोड़ गए, इसे पढ़ो! मैंने उस हर्फ़ को पढ़ा, फिर दुबारा आवाज़ आई, उम्दा पढ़ते हो! ख़लफ़ुर्रशीद (यानी अच्छी औलाद) ऐसा ही करते हैं। फिर हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि जब मैं कुरआने करीम पढ़ चुका तो हज़रत ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो के पांएती सर रख दिया और रोकर मुनाजात की, कि मुझे नहीं मालूम कि मैं किस गिरोह से हूँ। यही फ़िक्र थी कि हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के रोज़ए अक़दस से आवाज़ आई कि मौलाना! जो शख़्स यह नमाज़ अदा करता है वह बख़्शे हुओं में से है। फिर हज़रत ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो के क़दमों की तरफ़ सर रख दिया तो मालूम हुआ कि ठीक मैं उस गिरोह से हूँ जैसा कि फ़रमाया था।

कुछ देर के बाद बहुत सी नेअमत हासिल करके वापस चला आया। (राहतिल कुलूब, स. 53)

हमारे ख़्वाजा ने ओरंगज़ेब आलमगीर के सलाम का जवाब दिया

हज़रात! मशहूर वाक़िआ है कि हिन्दूस्तान के बादशाह हज़रत ओरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मज़ारात पर हाज़िर होते और सलाम करते, अगर मज़ार से सलाम का जवाब आ जाता तो ठीक वर्ना मज़ार को तोड़कर ज़मीन के बराबर कर देते।

इसी मक़सद व इरादे से हज़रत ओरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अजमेर शरीफ़ हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अक़दस पर हाज़िर हुए और बा आवाज़े बलन्द सलाम पेश किया।

हमारे शैख़ वलिये कामिल हुज़ूर बद्रे मिल्लत अलैहिर्रहमा को अकसर बयान फ़रमाते हुए मैंने खुद सुना है कि हज़रत ओरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो अन्हो ने दो मरतबा सलाम पेश किया

तो बारगाहे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो से जवाब नहीं मिला। मगर जब तीसरी मरतबा सलाम पेश किया तो क़ब्रे अनवर व अक़दस से जवाब आया व अलैकुम अस्सलाम या हुज्जतल इस्लाम।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के जवाबे सलाम से हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर एक ख़ास क़िस्म का असर ज़ाहिर हुआ और वज्द की कैफ़ियत तारी हो गई और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के जलाल व बुज़ुर्गी से इस क़दर मुतास्सिर हुए कि दरे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर मुराक़बा में मशग़ूल हो गए और आप पर नीन्द तारी हो गई। आलमे ख़्वाब में हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए, ख़िदमते आलिया में अर्ज़ की कि हुज़ूर ने मेरे दो मरतबा सलाम करने पर जवाब मरहमत नहीं फ़रमाया बल्कि तीसरी बार जवाबे सलाम अता फ़रमाया ? तो हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जवाब इरशाद फ़रमाया कि जब तुम ने मुझे सलाम किया तो उस वक़्त मैं कअ़बा मुअज़्ज़मा के पास सज्दे में था, जल्दी से मैंने सज्दा पूरा करके तुम्हारे सलाम का जवाब दिया मुलख्ख़सन (मोईनुल अरवाह, स. 316)

ऐ ईमान वालो ! हमारे पीरो मुर्शिद वलिये कामिल हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादिरी रज़वी हुज़ूर बद्रे मिल्लत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अकसर उर्से ख़्वाजा के मौक़े पर इस नूरानी वाक़िआ को बयान फ़रमाते थे।

हज़रात ! अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को किस क़दर अज़मत व बुज़ुर्गी से नवाज़ा है कि वक़्त के बादशाह व अमीर और ग़रीब, सब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर पर हाज़िरी देते नज़र आते हैं और अपने मन की मुरादें हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दरे अक़दस से हासिल करते नज़र आते हैं।

मिस्कीन व तवंगर यकसां जज़्बात से खिंचे आते हैं
एक क़ब्र में सोने वाले का इन्सानों पे क़ब्ज़ा देख लिया

हमारे ख़्वाजा का हाथ क़ब्र से बाहर आया और मुसाफ़हा किया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो किस शान के वली और बुज़ुर्ग हैं मुलाहज़ा फ़रमाइये :

हज़रत मौलाना जलालुद्दीन बुख़ारी मख़्दूम जहाँनिया जहाँ गश्त रहमतुल्लाहे तआला अलैह ने अपने सफ़र नामा में सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के आस्तानए पाक की हाज़िरी के तज़किरे में लिखा है कि :

अजमेर शरीफ़ की सरज़मीन में सिलसिलए चिश्तिया के सरकर्दा हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो आंसूदए ख़ाक हैं, आपकी क़ब्र शरीफ़ के पाएं

अनार का एक दरख़्त था जिसकी यह ख़ासियत थी कि जो शख़्स सात अनार खा लेता वह वली हो जाता और जिसने औलाद की आरज़ू के साथ खाया हक़ तआला ने उसको फ़रज़न्द अता किया, हिन्दूस्तान में आप ही के क़दम से इस्लाम आया। फ़क़ीर जब आपके मज़ार पर हाज़िर हुआ तो अर्ज़ किया : अस्सलामु अलैकुम या ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती ! या ख़्वाजा अपना दस्ते मुबारक दीजिये, दस्त बोसी करूँ। उसी वक़्त मज़ारे मुबारक से हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपना नूरानी हाथ बाहर कर दिया और सलाम का जवाब भी दिया। मैंने अपने ख़्वाजा के हाथ में हाथ देकर मुसाफ़हा किया और आपके दस्ते नूरानी को चूमा और बोसा दिया। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 317)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे ख़्वाजा सुल्तानुल हिन्द अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो अपने दरबार में आने वाले हर साइल के सवाल को पूरा फ़रमाते नज़र आते हैं।

साइल व ज़ाइर की आरज़ू थी कि मुसाफ़हा करुँगा तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी क़ब्रे नूर से दस्ते नूर को बाहर फ़रमा कर मुसाफ़हा की सआदत अता फ़रमा दी।

ख़ूब फ़रमाया हसन रज़ा बरैलवी ने :

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी मेहरूम नहीं मांगने वाला तेरा

हमारे ख़्वाजा ने पान अता फ़रमाया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की करामत व बुज़ुर्गी का यह आलम है कि अपने आशिक़ों के ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर नसीबा जगा दिया करते हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये :

हमारे मुर्शिदे आज़म सय्येदुल औलिया हज़रत मीर सय्यद मोहम्मद तिर्मिज़ी सुम्मा कालपवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सिलसिलए क़ादरिया के मशहूर बुज़ुर्ग हैं।

अल्लामा मीर अली गुलाम आज़ाद चिश्ती बिलगिरामी हज़रत सय्यद मोहम्मद तिर्मिज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हाज़री अजमेर शरीफ़ के तज़किरे में लिखते हैं कि :

आपका मामूल था कि हर साल हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अनवर की ज़ियारत व हाज़िरी के लिये अजमेर शरीफ़ हाज़िर होते थे। एक बार आप आठ रोज़ तक अजमेर शरीफ़ में हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर रहे, एक दिन दरे अक़दस पर मुराक़बा में मशग़ूल थे कि आप पर नीन्द का ग़लबा हुआ, आलमे ख़्वाब में सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तशरीफ़ ले आए और आपको पान की एक ग्लोरी इनायत फ़रमाई, मेरे आक़ा हज़रत सय्यद मोहम्मद तिर्मिज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब बेदार हुए तो आपने देखा कि पान की ग्लोरी आपके हाथ में मौजूद थी। हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में हज़रत सय्यद मोहम्मद तिर्मिज़ी कालपवी रज़ियल्लाहो तआला

अन्हो की मक्बूलियत व मकबूलियत का यह आलम था कि जिस जगह और जिस वक्त भी आप चाहते रूहानी मुलाकात से मुशर्रफ हो जाते। (सीरते ख्वाजा गरीब नवाज, स 318)

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख्वाजा हुजूर गरीब नवाज रजियल्लाहो तआला अन्हो की अता व नवाजिश का अबरे करम आलमे बेदारी ही में नहीं बल्कि आलमे ख्वाब में भी बरसता नज़र आता है।

बेदम वारसी फरमाते हैं :

लहद में, रोजे कयामत में, दीनो दुनिया में
तुम्हारे नाम का है आसरा गरीब नवाज
तुम्हारे दर की गदाई है आबरू मेरी
तुम्हारी दीद मेरा मुद्दआ गरीब नवाज

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख्वाजा हुजूर गरीब नवाज रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के खुलफाए किराम की तादाद की एक तवील फहरिस्त है।

हमारे प्यारे ख्वाजा रजियल्लाहो तआला अन्हो मुल्के हिन्दूस्तान के हर इलाके में इस्लाम की तालीमो तरबियत का मरकज कायम करना चाहते थे, यही वजह थी कि आप ने अपने बे शुमार मुखलिस मुत्तकी मुरीदों को उलूमे जाहिरी व बातिनी से आरास्ता फ़रमा कर नेअमते खिलाफत से सरफराज फरमाया और उन्हें मुल्क के गोशे गोशे में मज़हबे इस्लाम की तब्लीग व इशाअत के लिये मुतअय्यन फरमाया।

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख्वाजा हुजूर गरीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के खलीफए आज़म हज़रत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हैं। हजरत कुतुब साहब रजियल्लाहो तआला अन्हो की करामत व रूहानियत का मुख्तसर तजकिरा इस लिये कर रहा हूँ ताकि मालूम हो जाए कि हमारे प्यारे ख्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की साहबते पाक में रहने वाले और आप की निगाहे नाज़ से संवरने और निखरने वाले मुरीद व खलीफा किस कदर बुज़ुर्गी और करामत वाले थे।

तुम्हारे दर की करामत यह बारहा देखी
ग़रीब आए हैं और हो गए ग़रीब नवाज़
(हुजूर मुहद्दिसे आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा)

हो नज़र आप की तो बन जाए
बे हुनर बा हुनर ग़रीब नवाज़
(मुफ्ती रजब अली अलैहिर्रहमा)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बेकरां के लिये

(7)

रजब शरीफ़

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

हज़रत ख़्वाजा के आस्ताने पर बुज़ुर्गों की हाज़री

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म

(पारा 11, रुकूअ 12, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़लीफ़ए आज़म हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मरतबा औलियाए किराम में बहुत बलन्द है। हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जशकर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जैसे अज़ीमुश्शान बुज़ुर्ग व वली आप ही के मुरीद व ख़लीफ़ा हैं। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अजमेर शरीफ़ में जलवा अफ़रोज़ रहते और दूर व दराज़ इलाक़ों में तब्लीग़े दीन और सिलसिले का काम हज़रत कुतुब साहब अन्जाम देते थे।

हज़रत कुतुब साहब सतरह या बीस साल की उम्र में हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दामने करीम से वाबस्ता हुए और ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक रुश्दो हिदायत का मुक़द्दस फ़रीज़ा अपने पीरो मुर्शिद की रहनुमाई में अन्जाम देते रहे।

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सोहबत की बरकत और तालीमो तरबियत का इस क़दर अच्छा असर हज़रत कुतुब साहब पर मुरत्तब हुआ कि आप की ज़ात से बे शुमार करामात का ज़हूर होने लगा।

हज़रत कुतुब साहब का लक़ब काकी क्यों पड़ा

शैख़ुल मशाइख़ हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के घर वालों पर फ़ाक़े होने लगे, एक मरतबा तीन रोज़ तक घर में फ़ाक़ा रहा अहलिया मोहतरमा (बीवी) ने फ़ाक़ा और तंगदस्ती की शिकायत हज़रत कुतुब साहब रज़ियल्लाहो तआला

अन्हो से कर दी। हज़रत कुतुब साहब रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपनी अहलिया मोहतरमा से फरमाया : हमारे हुजरे के ताक में से बिस्मिल्ला शरीफ़ पढ़ कर ज़रूरत के मुताबिक काक (रोग़नी रोटी) ले लिया करो और घर वालों और दुरवेशों को खिला दिया करो! अब हर दिन अहलिया मोहतरमा कुदरते इलाही से उस ताक में से गरम गरम रोटियाँ लेती जाती और घर वालों और फुक़रा व मसाकीन को खिलाती रहती। इसी वजह से हज़रत कुतुब साहब काकी के लक़ब से मशहूर हुए। (मुनिसुल अरवाह, स. 65, सियरुल अक़ताब, स. 681)

हज़रत कुतुब साहब रोशन ज़मीर थे

हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़लीफ़ए आज़म हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमते अक़दस में एक शख़्स ने अपनी ग़रीबी और मोहताजी की शिकायत की, तो हज़रत कुतुब साहब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस शख़्स से फरमाया : अगर मैं यह कहूँ कि मेरी निगाह अर्शे मुअल्ला तक देखती है तो क्या तुम यक़ीन कर लोगे ? उस शख़्स ने कहा : हाँ, बल्कि उससे भी आगे, तो आपने फ़रमाया : जब तुम इस क़दर जानते हो तो फिर सुन लो कि तुम ने जो चान्दी के वह अस्सी सिक्के मकान में छुपा रखे हैं उन्हीं सिक्कों से खाने पीने का इन्तिज़ाम क्यों नहीं करते ? पहले तुम उस चाँदनी के अस्सी रुपयों को ख़र्च कर लो फिर ग़रीबी और मोहताजी की शिकायत करना। वह शख़्स हज़रत कुतुब साहब की रोशन ज़मीरी से अपना राज़ खुलता हुआ देखा तो बहुत शर्मिन्दा हुआ और तौबह किया फिर ज़मीने ख़िदमत को बोसा देकर घर लौट गया। (सियरुल औलिया, स. 62)

हज़रत कुतुब साहब के बोरिये के नीचे ख़ज़ाना

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमते आलिया में मलिक इख़्तियारुद्दीन ऐबक हाजब ने रुपयों से भरी हुई थैली का नज़राना पेश किया, आप ने कुबूल करने से इनकार कर दिया। फिर आप जिस बोरिये पर बैठे हुए थे उस का ज़रा सा कोना उठा दिया तो मलिक इख़्तियारुद्दीन ने यह हैरत अंगेज़ मन्ज़र देखा कि चटाई के नीचे सोने के सिक्कों की एक नहर मौजूद है।

हज़रत कुतुब साहब ने फ़रमाया हमें तुम्हारे नज़राना की ज़रूरत नहीं है उसे वापस ले जाओ। (सियरुल औलिया, स. 63)

ऐ ईमान वालो! यह करामत व बुज़ुर्गी हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नहीं बल्कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की है।

जब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो के मुरीद व ख़लीफ़ा को अल्लाह तआला ने रोशन ज़मीन और ख़ज़ानों का मालिक व मुख़्तार बनाया है तो हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो की रोशन ज़मीरी और तसर्रुफ़ व इख़्तियार का किया आलम होगा।

और मैं कहना चाहूँगा कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के नाना जान महबूबे ख़ुदा रसूले आज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व शौकत और अज़मत व बुज़ुर्गी का आलम किया होगा।

सरकारे मदीना के सदक़े में अता कर दो
दौलत भी तुम्हारी है मंगता भी तुम्हारा है
वह हिन्द के राजा हैं मैं उनका भिकारी हूँ
ख़ाली मैं चला जाऊँ कब उस को गवारा है
सरकारे मदीना के नाइब हैं मेरे ख़्वाजा
अजमेर की गलियों में तैबा का नज़ारा है
रहमत की घटा बन कर बरसा जो ग़रीबों पर
अजमेर में एक ऐसा अल्लाह का प्यारा है

(राज़ इलाह आबादी)

हज़रत कुतुब साहब का विसाल

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुरीदे सादिक़ और ख़लीफ़ए आज़म हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने शबे दो शम्बा 14 रबीउल अव्वल शरीफ़ 633 हि. में विसाल फ़रमाया।

(सियरुल औलिया, स. 25, फ़रिश्ता, जि. 2, स. 620)

हज़रत कुतुब साहब की नमाज़े जनाज़ा

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की वसियत थी कि मेरी नमाज़े जनाज़ा वह शख़्स पढ़ाए जिसने कभी हराम काम न किया हो और अस्र की सुन्नत तर्क न की हो और तकबीरे ऊला उसकी कभी फ़ौत न हुई हो।

ख़ल्के ख़ुदा इन्तिज़ार में थी कि वह नेक बख़्त कौन है ? और यह अज़मत व सआदत किसके हिस्से में आती है।

सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश जो कुतुब साहब के मुरीद व ख़लीफ़ा और देहली के बादशाह थे, एक तरफ़ खड़े थे, जब कोई नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिये आगे न बढ़ा तो सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश अपने पीरो मुर्शिद की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिये आगे बढ़े और कहा कि मैं चाहता था कि कोई मेरे हाल से बा ख़बर न हो लेकिन पीरो मुर्शिद ने मेरा हाल ज़ाहिर फ़रमा दिया। सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश ने अपने पीरो मुर्शिद हज़रत कुतुब साहब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (ख़ज़ीनतुल औलिया, जि. 1, स. 275)

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मज़ारे अनवर अक़दस महरौली शरीफ़ देहली में मरजए ख़लाइक़ है।

हमारे ख़्वाजा फ़ना फ़िर्रसूल थे

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने आक़ा महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इश्क़ व महब्बत में वारुफ़ता और फ़ना थे।

मुशफ़िक़ व महरबान नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते अक़दस से वाबस्तगी और वारुफ़तगी का यह आलम था कि जब महबूब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र फ़रमाते या हदीसे नबवी बयान फ़रमाते तो आँखें अश्कबार हो जातीं।

एक मरतबा हमारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इरशाद फ़रमाया : उस शख़्स पर अफ़सोस है जो क़ियामत के दिन आप से शर्मिन्दा होगा, उस का ठिकाना कहाँ होगा, जो आप से शर्मिन्दा हो वह कहाँ जाएगा। यह फ़रमाने के बाद हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बे इख़्तियार रोने लगे। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 10)

हमारे ख़्वाजा की इबादत व रियाज़त

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने चालीस साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी यानी चालीस साल तक रात में सोए नहीं बल्कि पूरी रात इबादत करते रहे। (सय्यदुल उलमा वहधाला अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 53)

हमारे ख़्वाजा की तालीमात व इरशादात

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो शैख़ुश्शुयूख़ मुर्शिदे राहे शरीअत व तरीक़त और हक़ीक़त, इसरारे रब्बानी के राज़दार, सर ज़मीने हिन्द में नाइबे रसूलुल्लाह थे। जहाँ आप की ज़ाते अक़दस मुजस्सम करामत थी वहीं आप की मजालिस व महाफ़िल रुश्दो हिदयात, तालीम व तलक़ीन की आला तरीन दर्सगाह थी।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तालीमात व इरशादात को आप के ख़लीफ़ए आज़म हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो लिख लिया करते थे जो तज़कियए नफ़्स और राहे हिदायत के लिये सर चश्मा हैं।

हमारे प्यारे ख़्वाजा ने फ़रमाया बहतरीन इताअत

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि बरोज़े क़ियामत हश्र का मैदान आग के धुएं से भर जाएगा, जो शख़्स भी उस दिन के अज़ाब से महफ़ूज़ व मामून होना चाहता है, उस शख़्स को वह इताअत व फ़रमां बरदारी करनी चाहिये जो अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत ही बहतरीन इताअत हो। लोगों ने हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से अर्ज़ किया, या मुर्शिद वह कौन सी इताअत है ? तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जवाब इरशाद

फ़रमाया कि दुख, दर्द वालों की फ़रयाद सुनना, मिस्कीनों ग़रीबों की हाजत पूरी करना, भूकों को खाना खिलाना।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो कहा करते थे कि जिस शख़्स में यह तीन ख़सलतें हों समझो कि अल्लाह तआला उस को दोस्त रखता है।

अव्वल : दरया की तरह सख़ावत।

दौम : सूरज की तरह शफ़क़त।

सौम : ज़मीन की तरह तवाज़ोअ और इन्किसारी।

फ़रमाया करते थे जिस किसी ने नेअ़मत पाई सख़ावत ही की बदौलत पाई।

और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि सच्चा मोमिन वह है जो अपनी तरफ़ से ख़ल्क़े ख़ुदा को किसी तरह का कोई रन्ज और तकलीफ़ न पहुँचाए।

(सियरुल औलिया, स. 56)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का इरशादे पाक कितना जामेअ और मानेअ़ है। मगर आज हम देखते हैं कि जिस को थोड़ी सी इज़्ज़त या ताक़त या दौलत नसीब हो जाती है वह हर किसी को अपना ग़ुलाम और मदह ख़्वाँ बनाना चाहता है और अगर उस की मदह ख़्वानी और चमचा गीरी न की जाए तो ज़ुल्म व सितम करके उस शख़्स को रन्ज व अलम पहुँचाया जाता है, जिस का नतीजा यह होता है कि वह शख़्स ख़ुद अल्लाह तआला के क़हर व ग़ज़ब का शिकार होकर ज़लील व रुसवा हो जाया करता है। इस लिये हमें चाहिये कि हम अपने प्यारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के फ़रमाने ज़ीशान के मुताबिक़ दौलत मन्द होने के बाद ग़रीबों की मदद करें।

ताक़त व कुव्वत हासिल होने के बाद मज़लूमों की मदद करें ताकि अल्लाह तआला हमारी इज़्ज़त व अज़मत और नेअ़मत व दौलत को बरबाद व तबाह होने से महफ़ूज़ रखे।

हज़रात ! नेकी का अज्र बहुत अज़ीम है और बदी का बदला बड़ा ख़तरनाक है (अल अमान वल हफ़ीज़)

हमारे ख़्वाजा के इरशादात

सोहबत की तासीर : हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि हदीस में आया है : اَلصُّحْبَةُ تُؤَثِّرُ

यानी सोहबत का असर ज़रूर होता है। अगर कोई बुरा शख़्स नेकों की सोहबत इख़्तियार करे तो उस के नेक हो जाने की उम्मीद है और अगर कोई नेक शख़्स बुरों की सोहबत में बैठने लगे तो वह भी बुरा हो जाएगा, क योंकि जिस को भी कुछ हासिल हुआ है वह सोहबत से ही मिला है और जो नेअ़मत मिली वह नेक लोगों ही के ज़रीए मयस्सर आई। फिर फ़रमाया कि अहले सुलूक के नज़दीक नेक लोगों की सोहबत नेक काम से बेहतर है और बुरों की सोहबत बुरे काम से ज़्यादा बुरी है। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 46)

फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

हिकायत : ख़लीफ़ए दौम अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दौरे ख़िलाफ़त में इराक़ का बादशाह एक जंग में गिरफ़्तार हो कर आया, हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि अगर तू मुसलमान हो जाए तो इराक़ की बादशाहत फिर तुझे सौंप दी जाएगी। उस ने इनकार कर दिया। तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया : إِمَّا الْإِسْلَامُ وَإِمَّا السَّيْفُ
यानी इस्लाम कुबूल करो या क़त्ल होने के लिये तैय्यार हो जाओ।
उस बादशाह ने फिर भी इस्लाम कुबूल करने से इनकार कर दिया
हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : तलवार लाओ ! वह बादशाह निहायत अक़्ल मन्द था। आप से मुख़ातब हो कर उस ने कहा मैं प्यासा हूँ मुझे पानी पिला दो ! हुक्म हुआ कि इसको पानी पिलाया जाए। बादशाह ने मिट्टी के बरतन में पानी पीने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। जब मिट्टी के बरतन में पानी उसे दिया गया तो उस ने कहा कि मुझ से वादा करो कि मैं जब तक यह पानी न पी लूँ मुझे क़त्ल न करोगे। आप ने फ़रमाया अच्छा मैंने वादा किया कि जब तक तू यह पानी नहीं पी लेगा मैं तुझे क़त्ल न करूँगा।

बादशाह ने फ़ौरन पानी का कूज़ा ज़मीन पर पटक दिया, मिट्टी का बरकन टूट गया और पानी ज़मीन में जज़्ब हो गया। फिर कहा आप ने मुझ से वादा किया है कि जब तक मैं यह पानी न पी लूँगा क़त्ल न किया जाऊँगा। हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अनहो उस की अक़्ल मन्दी और दानाई से हैरत ज़दा हो गए और फ़रमाया जाओ तुझे मुआफ़ किया। फिर उस बादशाह को एक सालेह और ज़ाहिद शख़्स के हवाले किया जब बादशाह ने उस नेक शख़्स की सोहबत में कुछ दिन गुज़ारे तो उस की अच्छी सोहबत ने बादशाह पर इस क़दर अच्छा असर करना शुरू कर दिया, जिस का नतीजा यह हुआ कि उस बादशाह ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में ख़ुद पैग़ाम भेजा कि मैं इस्लाम कुबूल करना चाहता हूँ। उस बादसाह के इस्लाम कुबूल करने के बाद हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि अब मैं तुझे इराक़ की हुकूमत देता हूँ, मगर उस ने जवाब दिया कि मुझे मुल्क और सलतनत नहीं चाहिये अल मुख़्तसर फिर आबदीदा होकर फ़रमाया कि वह बादशाह किस क़दर अक़्ल मन्द और दाना था

(दलीलुल आरेफ़ीन, स. 47)

हज़रात : बादशाह काफ़िर था मगर नेक व सालेह की सोहबत ने उस काफ़िर बादशाह को मुसलमान व मोमिन बना दिया। यह है अच्छों की सोहबत की बरकत।

हज़रत शैख़ सअ़दी शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद
सोहबते तालेह तुरा तालेह कुनद

हमारे ख़्वाजा फ़रमाते हैं : नमाज़ कुर्ब का ज़रीआ है।

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने

फ़रमाया कि सिर्फ़ नमाज़ ही ऐसी इबादत है जिस के ज़रीए लोग बारगाहे रब तआला से कुर्ब हासिल कर सकते हैं। इस लिये कि नमाज़ मोमिन की मेअ़राज है। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है। اَلصَّلٰوۃُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِیْنَ यानी नमाज़ मोमिनों के लिये मेअ़राज है।

हर मक़ाम में नमाज़ ही से नूर हासिल होता है और नमाज़ ही बन्दे को ख़ुदा से मिलाती है, नमाज़ एक राज़ है, जो बन्दा अपने ख़ालिक़ व मालिक से कहता है वही कुर्बे इलाही पा सकता है जो इस राज़ को राज़ रखने के लाइक़ हो। और यह राज़ भी नमाज़ के सिवा किसी और तरीक़े से हासिल नहीं किया जा सकता। हदीस शरीफ़ में आया है: اَلْمُصَلِّیْ یُنَاجِیْ رَبَّہٗ

यानी नमाज़ अदा करने वाला अपने रब तआला से राज़ की बातें करता है।

(दलीलुल आरेफ़ीन, स. 2)

दो फ़रिश्तों का नुज़ूल : हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि इमाम ख़्वाजा अबुल्लैस समरक़न्दी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जो अपने वक़्त के अज़ीमुश्शान फ़क़ीह व इमाम थे उस की तफ़सीर (तन्बीह) में लिखा है कि हर रोज़ दो फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं एक कअ़बा की छत पर खड़ा हो कर आवाज़ देता है कि –

ऐ इन्सानो और जिन्नो ! सुन लो और समझ रखो ! कि जो शख़्स अल्लाह तआला का क़ाइम किया हुआ फ़र्ज़ अदा नहीं करता, वह शख़्स अल्लाह तआला की हिमायत व पनाह से बाहर है।

और दूसरा फ़रिश्ता महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए अतहर की छत पर (यानी मस्जिदे नबवी शरीफ़ की छत पर) खड़ा हो कर आवाज़ देता है कि ऐ आदमियो ! और जिन्नातो ! सुन लो ! और अच्छी तरह जान लो ! कि जो शख़्स सुन्नते नबवी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अदा नहीं करता वह शख़्स आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत से महरूम रहेगा।

(दलीलुल आरेफीन, स. 2)

नमाज़ के लिये जलदी करो : हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया मेरा गुज़र ऐसे लोगों से हुआ जो वक़्त से पहले ही नमाज़ के लिये तैय्यार हो जाया करते थे। मैं ने पूछा कि उस में किया हिकमत ? तुम सब लोग वक़्त से पहली तैय्यार हो जाया करते हो, क्या सबब है ? तो उन लोगों ने जवाब दिया कि सबब यह है कि जब वक़्त हो तो फ़ौरन नमाज़ अदा कर लें जब तैय्यार न होंगे तो शायद वक़्त गुज़र जाए, फिर यह मुंह अपने प्यारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को किस तरह दिखा सकेंगे, क्यों कि हदीस शरीफ़ में आया है कि

عَجِّلُوْا بِالتَّوْبَةِ قَبْلَ الْمَوْتِ وَعَجِّلُوْا بِالصَّلٰوةِ قَبْلَ الْفَوْتِ

यानी मरने से पहले तौबह के लिये जल्दी करो और वक़्त गुज़र जाने से पहले नमाज़ के लिये जल्दी करो। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 10)

ऐ ईमान वालो ! हम अपनी बदतर हालत पर जिस क़दर आंसू बहाएं और रोएं तो कम है। आज मुसलमानों में शौक़े नमाज़ नहीं, आज हमारे दिलों में जज़्बए नमाज़ नहीं और अगर

कुछ नमाज़ें पढ़ भी लीं तो जल्दी जल्दी, न क़याम सुन्नत के मुताबिक़, न रुकूअ व सुजूद सुन्नत के मुताबिक़। और वक़्त होते हुए भी दुनियवी काम हम पर ग़ालिब नज़र आते हैं और हम यही सोचते रहते हैं कि अभी वक़्त बाक़ी है पढ़ लेंगे और पता चला कि वक़्त गया और नमाज भी गई। अल्लाह तआला हम को सच्चा पक्का नमाज़ी बना दे। आमीन सुम्मा आमीन।

हमारे ख़्वाजा सुन्नतों के पैकर थे

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हर सुन्नत पर आमिल थे, आप इरशाद फ़रमाते हैं कि –

मैं और शैख़ अजल शीराज़ी एक मक़ाम पर बैठे थे कि मग़रिब की नमाज़ का वक़्त हो गया। शैख़ अजल शीराज़ी ने ताज़ा वुज़ू किया लेकिन उंगलियों में ख़िलाल करना भूल गए। ग़ैबी फ़रिश्ते ने आवाज़ दी ऐ शैख़ अजल ! तुम तो हमारे महबूब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दोस्ती का दावा करते हो और उनकी सुन्नत को तर्क करते हो। शैख़ अजल ने यह आवाज़ सुन कर क़सम खाई कि इन्शाअल्लाहो तआला मरते दम तक मैं कोई सुन्नत तर्क नहीं करुँगा।

फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि एक मरतबा मैं ने शैख़ अजल शीराज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बहुत मुतफ़क्किर पाकर हालात मालूम किये तो शैख़े अजल ने फ़रमाया कि जिस दिन मुझ से उंगलियों का ख़िलाल भूल कर छूट गया, मैं फ़िक्र में हूँ कि यह मुंह अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बरोज़े क़ियामत कैसे दिखाउंगा। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 3)

ऐ ईमान वालो ! यह इबरत व नसीहत आमोज़ वाक़िआ सुनने के बाद यक़ीनन हमारे क़ुलूब में सुन्नतों का जज़्बा पैदा हो गया होगा कि हमारे अस्लाफ़, बुज़ुर्गाने दीन उंगलियों में ख़िलाल की सुन्नत भूल कर छूटने पर भी किस क़दर ग़मगीन व मुतफ़क्किर हो जाया करते थे और एक हमारा हाल है कि फ़र्ज़ व वाजिब हर दिन तर्क व क़ज़ा करते नज़र आते हैं फिर भी हम को न कोई फ़िक्र लाहिक़ होती है और न ही ग़म होता है।

आख़िर इस की वजह क्या है ? : ग़ौरो फ़िक्र करने के बाद पता चलता है कि आज हम सिर्फ़ दुनिया ही को सब कुछ समझ बैठे हैं, क़ब्र व हश्र से बे ख़ौफ़े और निडर हो चुके हैं। क़ब्र के अज़ाब और क़ियामत के तूफ़ान से ग़ाफ़िल हो गए हैं और अल्लाह तआला का ख़ौफ़ हमारे दिलों से ख़त्म हो चुका है। अल्लाह तआला जब अपना महबूब व नेक बन्दा बनाता है तो उस शख़्स के क़ुलूब को अपनी ख़शियत का मम्बअ़ व मअ़दन (खज़ानों) और अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत का सफ़ीना और मदीना बना देता है।

हमारे ख़्वाजा का इरशाद कि हर उज़्व तीनं बार धोना सुन्नत है

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि किताबुस्सलाते मस्ऊदी में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रिवायत से यह हदीस दर्ज है कि हमारे प्यारे सरकार अहमदे मुज्तबा, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि वुज़ू में हर उज़्व को तीन बार धोना मेरी और तमाम अम्बियाए किराम की सुन्नत है और इस से ज़्यादा करना सितम है औरं फ़रमाया कि एक मरतबा सय्येदुल अस्फ़िया हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने वुज़ू के वक़्त हाथ सिर्फ़ दो मरतबा ही धोए, जब नमाज़ अदा कर चुके तो उसी रात ख़्वाब में मुशिफ़क़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। तो सरकारे मदीना सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया फ़ुज़ैल ! मुझे तअज्जुब है कि तुम ने वुज़ू में मेरी सुन्नत तर्क कर दी और तुम ने नाक़िस वुज़ू किया। हज़रत फ़ुज़ैल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो डरे, सहमे, लरज़ते, कांपते ख़्वाब से बेदार हुए फ़ौरन ताज़ा वुज़ू करके नमाज़ अदा की और तर्के सुन्नत पर कफ़्फ़ारा के तौर पर एक साल तक पाँच सौ रकअत नमाज़ हर दिन अदा करते रहे। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 3)

बा वुज़ू सोने की बरकतें : हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि जो शख़्स रात को बा वुज़ू सोता है तो फ़रिश्तों को हुक्म होता है कि जब तक वह बेदार न हो उस के सरहाने खड़े हो कर उस के हक़ में दुआ करते रहें कि ऐ अल्लाह तआला ! इस बन्दे पर रहम फ़रमा कर बख़्श दे कि यह नेकी और तहारत के साथ सोया है फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला का कोई बन्दा जब बा वुज़ू सोता है तो फ़रिश्ते उस की रूह को अर्श के नीचे ले जाते हैं जहाँ उस को बारगाहे इलाही से ख़िलअते फ़ाख़िरा अता होता है और फ़रिश्ते उस को वापस ले आते हैं और जो शख़्स बे तहारत सोता है उस की रूह को पहले आसमान ही से वापस भेज दिया जाता है और फ़रिश्ते कहते हैं कि यह इस लाइक़ नहीं कि इसे ऊपर ले जाया जाए। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 3,4)

ऐ ईमान वालो ! बा तहारत और वुज़ू के साथ रहना और सोना अल्लाह तआला को यह अमल बहुत ज़्यादा पसन्द व महबूब है। इस लिये कि अल्लाह तआला पाक उस का प्यारा रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम महबूबे पाक। अल्लाह तआला का दीन, इस्लाम, पाक, अल्लाह तआला की किताब कुरआने पाक, सहाबा पाक, औलिया पाक, और जो मोमिन व मुसलमान पाक रहता है तो अल्लाह तआला उस बन्दे को महबूब व मक़बूल बना लेता है।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमायाः दाहिना हाथ मुंह धोने के

लिये और खाना खाने के लिये है और बायां हाथ इस्तिंजा करने के लिये है। और फिर इरशादे मुबारक हुआ कि जब आदमी मस्जिद में दाखिल हो तो सुन्नत यह है कि पहले दाहिना क़दम मस्जिद के अन्दर रखे और जब मस्जिद से बाहर निकले तो बायां क़दम पहले बाहर निकाले

फिर यह हिकायत बयान फ़रमाई कि एक मरतबा हज़रत सुफ़ियान सोरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मस्जिद में आए, भूल कर पहले बायां क़दम मस्जिद में रख दिया। उसी वक्त ग़ैब से आवाज़ आई, सोर (यानी बेल) ख़ुदा के घर, मस्जिद में इस तरह बे अदबी से घुस आता है। उसी दिन से लोग आप को सुफ़ियान सोरी कहने लगे। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 4)

हज़रात ! इस वाक़िआ से पता चला कि पहले दाहिना क़दम मस्जिद में रखना मस्जिद का अदब है और पहले बायां क़दम मस्जिद में रखना मस्जिद की बे अदबी है।

और बा अदब ख़ूश नसीब और बे अदब बद नसीब।

नमाज़े फ़ज्र के बाद लम्हा लम्हा रहमत बरसती है

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि अल्लाह वाले, इश्क़ व मारिफ़त वाले फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के बाद सूरज तुलूअ़ होने तक अपने मुसल्ले ही पर बैठे रहते हैं और ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूल रहते हैं ताकि उस को अल्लाह तआला की बारगाह में क़ुर्ब व मक़बूलियत हासिल हो और अनवारे इलाही की तजल्ली उस पर लम्हा लम्हा बरसती रहे। उस शख़्स के लिये एक फ़रिश्ते को हुक्म होता है कि वह जब तक मुसल्ले पर से न उठे उस के पास खड़ा रहे और उस के हक़ में अल्लाह तआला से बख़्शिश व मग़फ़िरत की दुआ करता रहे। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 4)

तमाम घर वालों की बख़्शिश हो जाती है

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बयान फ़रमाया कि सय्येदुत्ताइफ़ा हज़रत ख़्वाजा जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी किताब उम्दा में तहरीर फ़रमाया है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने शैतान इब्लीस को बहुत मायूस और ग़मगीन देखा तो आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने शैतान इब्लीस से उस का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो वह मलऊन कहने लगा कि मेरे मायूसी और रन्जो ग़म का सबब आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत के चार अमल हैं।

(1) पहला यह कि जो लोग मुअज़्ज़िन हैं उन की अज़ान सुनकर अज़ान के जवाब देने में मशग़ूल हो जाते हैं तो अल्लाह तआला अज़ान देने वाले और अज़ान का जवाब देने वाले सब को बख़्श देता है।

(2) दूसरे वह लोग हैं जो अल्लाह के लिये जिहाद के लिये निकलते हैं और नअ़रए तकबीर लगाकर राहे ख़ुदा में जंग करते हैं तो अल्लाह तआला उस मुजाहिद के तमाम मुतअल्लेक़ीन को बख़्श देता है।

(3) तीसरे वह लोग जो रिज़्क़े हलाल कमाते हैं और उस से ख़ुद खाते हैं औरों को भी खिलाते हैं तो अल्लाह तआला उन के गुनाहों को बख़्श देता है।

(4) चौथे वह लोग जो फ़ज्र की नमाज़ अदा करके सूरज निकलने तक यादे इलाही में मशगूल रहते हैं और फिर इशराक़ की नमाज़ अदा करते हैं तो अल्लाह तआला उस शख़्स के सत्तर हज़ार अहबाब व रिश्ते दार और घर वालों की बख़्शिश फ़रमाता है और दोज़ख के अज़ाब से खलासी इनायत फ़रमाता है।

फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने एक नूरानी हिकायत बयान फ़रमाई कि मैंने फ़िक़ह अकबर में लिखा देखा कि इमामुल अइम्मा इमामुल मुत्तक़ीन हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा कूफ़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक कफ़न चोर को ख़्वाब में देखा कि जन्नत में टहल रहा है। उस से पूछा कि तेरा अमल तो ऐसा न था कि तू जन्नत में टहलता। तो वह बोला कि अल्लाह तआला को मेरा एक अमल पसन्द आ गया, वह अमल यह कि फ़ज्र की नमाज़ के बाद मैं अपने मुसल्ले पर बैठकर सूरज निकलने तक यादे इलाही में मशग़ूल रहकर फिर इशराक़ की नमाज़ अदा करता मेरा रब तआला रहमान व रहीम मौला चूँकि थोड़े अमल को क़ुबूल करके और बदले में बहुत ज़्यादा देने वाला है इसलिये उसने अपने बे हिसाब फ़ज़्लो करम से मेरे इस अमल की बरकत से मुझे बख़्श दिया और मुझे इस दर्जे पर पहुँचा दिया। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 5)

हज़रात! नेकी और भलाई करने में जल्दी करो जो भी नेकी मिल जाए हाथ से जाने न दो। न जाने मेरा रहमान व रहीम रब तआला कौन सी नेकी क़ुबूल फ़रमा कर बख़्श दे। अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम बे हिसाब है, नेकियों और भलाइयों में हिस्सा लेते रहो और अपनी नज़र फ़ज़्ले रब्बी पर जमाए रहो, बस उस के फ़ज़्लो करम के इल्तिफ़ात की ज़रूरत होती है फिर बेड़ा पार है।

तेरा करम रहे तो सलामत है ज़िन्दगी
तेरा करम न हो तो क़ियामत है ज़िन्दगी

पाँच चीज़ों का देखना इबादत है

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि पाँच चीज़ों का देखना इबादत है।

पहली चीज़ : अपने मां बाप के चहरे को देखना

हदीस शरीफ़ में है जो फ़र्ज़न्द अपने मां बाप के चेहरे को मुहब्बत से देखता है उस के नामए आमाल में हज का सवाब लिखा जाता है।

फिर हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने यह हिकायत बयान फ़रमाई कि –

हिकायत : एक शख़्स बद अफ़आल व बद किरदार था और बहुत बदनाम था। उस के इन्तिक़ाल के बाद लोगों ने ख़्वाब में उस शख़्स को जन्नत में हाजियों के गिरोह के साथ टहलते हुए देखा तो उस शख़्स से पूछा कि तुझे यह मरतबा कैसे मिल गया, जब कि तू बदकार था। तो उस शख़्स ने जवाब दिया : बे शक मैं बहुत बदकार व बद अफ़आल था लेकिन जब मैं घर से निकलता तो अपनी बूढ़ी मां के क़दमों पर सर रख देता और मैं अपनी मां का बहुत अदब व एहतिराम किया करता था और मेरी बूढ़ी मां मुझे बहुत दुआएं देती थीं कि अल्लाह तआला तुझे बख़्श दे और तुझे हज का सवाब अता फ़रमाए। रहमान व रहीम अल्लाह तआला ने मेरी मां की दुआ कुबूल की और मेरे गुनाहों को बख़्श दिया और मुझे जन्नत में हाजियों के गिरोह के साथ जगह दी।

फिर मेरे प्यारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने एक दूसरी हिकायत बयान फ़रमाई कि -

हिकायत : एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा बा यज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहो अन्हो से पूछा गया कि यह मरतबा आप को किस तरह हासिल हुआ ? तो हज़रत ख़्वाजा बा यज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि मैं जब सात साल का था और मस्जिद में उस्ताज़ के पास कुरआने मजीद पढ़ने जाया करता था, जब मेरे उस्ताज़ ने यह आयते करीमा وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا यानी मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करना चाहिये।

तो मैंने अपने उस्ताज़े मोहतरम से उस आयत का मतलब मालूम किया तो उस्ताज़े मुअज़्ज़म ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का हुक्म है कि जिस तरह मेरी यानी अपने उस्ताज़ की ख़िदमत बजा लाते हो, अपने मां बाप की भी ख़िदमत व इताअत बजा लाओ। उस्ताज़े मुअज़्ज़म से यह सुनते ही घर आया और मां के क़दमों पर सर रख दिया और उन से अर्ज़ किया कि मेरी मां, मेरे हक़ में दुआ कर और मेरे लिये अल्लाह तआला से कुछ मांग कि अल्लाह तआला मुझे तेरी ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जब मैं ने अपनी मां से यह दरख़्वास्त की तो मेरी मां ने रहम खाकर दो रकअत नमाज़ अदा करने के बाद मेरा हाथ पकड़कर क़िब्ला रुख़ होकर अल्लाह तआला के सुपुर्द किया और मेरे लिये दुआ की। यह दौलत व नेअ़मत जो मुझे नसीब हुई यह सब मेरी मां की दुआ की वजह से थी।

और हज़रत ख़्वाजा बा यज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बयान फ़रमाया कि एक मरतबा सख़्त सर्दी के मौसम में रात के वक़्त मेरी मां ने पानी तलब फ़रमाया, मैं पानी का प्याला भर कर उन की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन की आँख लग गई थी और वह सो गई थीं। मैं ने जगाया नहीं और पानी का प्याला रात भर हाथ में लिये उन के सरहाने खड़ा रहा। चुनाँचे रात के आख़िरी हिस्से में जब मेरी मां बेदार हुईं तो मुझे पानी का प्याला लिये खड़ा देख कर हैरान रह गईं। सख़्त सर्दी की वजह से मेरा हाथ भी प्याला से चिपक गया था। जब मेरी मां ने पानी का प्याला मेरे हाथ से लिया तो प्याले के साथ ही मेरे हाथ का चमड़ा भी निकल आया, मेरी मां को रहम आया और मुझे अपनी गोद में ले लिया। प्यार किया और बोसा लिया

और कहा ऐ जाने मादर ! तूने मेरी ख़ातिर बड़ी तकलीफ़ उठाई, यह कहकर मेरे हक़ में दुआ की कि अल्लाह तआला तुझे बख़्शे मेरी मां की दुआ क़ुबूल हुई और यह सब दौलत मेरी मां की दुआ की बदौलत मुझे नसीब हुई। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 20-21)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला जिस शख़्स से राज़ी और ख़ुश होता है उसी ख़ुश नसीब को मां बाप की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है।

मां बाप की दुआ अम्बियाए किराम की दुआ के मिस्ल हुआ करती है, मां बाप की दुआ औलाद के हक़ में रद नहीं होती और मां बाप की बद दुआ का असर दीनो दुनिया दोनों को ख़राब व बरबाद कर देता है। इस लिये हर शख़्स को चाहिये कि अपने मां बाप को राज़ी और ख़ुश रखें और उन की ख़िदमत करके दुआएं हासिल करें ताकि दुनिया भी कामियाब रहे और आख़िरत भी आबाद रहे।

दूसरी चीज़ : क़ुरआन शरीफ़ को देखना

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि -

क़ुरआन शरीफ़ को देखना सवाब है। जो शख़्स कलामुल्लाह शरीफ़ को देखता है या देख कर पढ़ता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उस शख़्स को दो सवाब दो। एक क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने का, दूसरा क़ुरआन शरीफ़ देखने का। और हर हर्फ़ के बदले में उस शख़्स को दस नेकियाँ अता होती हैं और दस बदियाँ मिटाई जाती हैं।

फिर इसी मौक़े पर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो ने यह हिकायत बयान फ़रमाई

क़ुरआन शरीफ़ के अदब की बरकत

हिकायत : हज़रत सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के विसाल के बाद किसी ने उन को ख़्वाब में देखकर पूछा कि अल्लाह तआला ने आप के साथ क्या सुलूक किया ? तो हज़रत महमूद ग़ज़नवी रहमतुल्लाहे अलैह ने जवाब दिया कि एक मरतबा मैं किसी के घर मेहमान था। रात को जिस कमरे में मुझे आराम करना था वहाँ एक ताक़ में क़ुरआन शरीफ़ रखा हुआ था। मैं ने दिल में सोचा कि उस कमरे में क़ुरआने पाक रखा हुआ है मैं किस तरह सोउँगा। फिर ख़याल आया कि क़ुरआन शरीफ़ किसी और कमरे में रख दिया जाए मगर फिर ख़याल आया कि अपने आराम के ख़ातिर मैं क्यों उसे बाहर करूँ जब मेरी मौत हुई तो क़ुरआन शरीफ़ के अदब के सबब में बख़्श दिया गया। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 21)

फिर मेरे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने यह हिकायत बयान फ़रमाई कि -

क़ुरआन शरीफ़ के अदब की रहमत

हिकायत : पहले ज़माने में एक फ़ासिक़ व गुनाहगार जवान था जिस की बद कारी से लोगों को नफ़रत थी। जब वह बदकार व गुनाहगार जवान मर गया तो ख़्वाब में देखा गया कि वह

शख्स सर पर ताज रखे, जन्नती लिबास में मलबूस फ़रिश्तों के हमराह जन्नत में जा रहा है। उस शख्स से पूछा गया कि तू बदकार व गुनाहगार था। यह दौलत कैसे हासिल हुई ? तो उस शख्स ने जवाब दिया कि दुनिया में मुझ से एक नेकी हुई वह यह है कि जहाँ कहीं कुरआन शरीफ़ देख लेता, खड़े हो कर बड़े अदब से इज़्ज़त की निगाह से उस को देखता। अल्लाह तआला ने मुझे कुरआन शरीफ़ के अदब के बदौलत बख़्श दिया और यह दर्जा इनायत फ़रमाया (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 21,22)

कुरआन शरीफ़ देखने से बीनाई बढ़ती है

हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि - जो शख़्स कुरआन शरीफ़ को देखता है तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से उस की बीनाई ज़्यादा हो जाती है और उस की आंख कभी नहीं दुखती। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 21)

ऐ ईमान वालो ! कुरआन शरीफ़ का फ़ैज़ान जारी व सारी है। हमारे अस्लाफ़ बुज़ुर्गाने दीन अपने दुख दर्द और बीमारियों का इलाज कुरआन शरीफ़ से किया करते थे और आज हमारा हाल यह है कि अंग्रेज़ी दवाओं पर ही हम भरोसा करते हैं।

काश ! हमारा भरोसा कलामुल्लाह पर हो जाए और हम कुरआने करीम पढ़ना अपनी आदत बना लें तो कुरआने पाक के नूर से हमारी आँखें मुनव्वर व मुजल्ला रहें और हमारे कुलूब भी रौशन हो जाएं।

दर्से कुरआं जो हम ने न भुलाया होता
यह ज़माना, न ज़माने ने दिखाया होता

तीसरी चीज़ : उलमा के चेहरे को देखना

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि उलमा के चेहरे को देखना सवाब है। अगर कोई शख़्स उलमा की तरफ़ (महब्बत) से देखे तो अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाता है जो क़ियामत तक उस शख़्स के लिये बख़्शिश की दुआएं मांगता रहता है।

इस के बाद हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के दिल में उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम की महब्बत हो, हज़ार साल की इबादत उस के नामए आमाल में लिखी जाती है।

और अगर वह शख़्स इसी हाल में मर जाए तो उसे उलमाए किराम का दर्जा मिलता है और उस मक़ाम का नाम इल्लिय्यीन है महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो शख़्स उलमाए किराम के पास आमदो रफ़्त रखे और (कम से कम) साठ दिन उन की ख़िदमत करे तो अल्लाह तआला उस को बख़्श देता है और सात हज़ार साल की नेकी उस के नामए आमाल में लिखता है। ऐसी नेकी कि दिन को रोज़ा

रखे और रात को खड़े होकर इबादत में गुज़ार दे। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 22)

फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने यह हिकायत बयान फ़रमाई :

हिकायत : पहले ज़माने में एक आदमी था जो उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम को देखकर हसद व नफ़रत किया करता था और उनको देखकर अपना चेहरा दूसरी तरफ़ फेर लिया करता था। जब वह शख़्स मर गया तो लोगों ने उसका चेहरा क़िब्ले की तरफ़ करना चाहा लेकिन न हुआ। ग़ैब से आवाज़ आई कि इसको क्यों तकलीफ़ देते हो ? इसने दुनिया में उलमा और मशाइख़ से अपना चेहरा फेरा था इस लिये हमने अपनी रहमत से इसका मुंह फेर दिया है और क़ियामत के दिन रीछ (भालू) की सूरत में इसका हश्र करेंगे। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 22)

हज़रात ! आज कल तो कुछ मुसलमान कहलाने वालों की आदत ही पड़ गई है कि जब तक उलमाए किराम व मशाइख़े इज़ाम की ग़ीबत व बुराई न कर लें तो उनको सुकून ही नहीं मिलता जब कि हदीसे पाक और सरकार ग़रीब नवाज़ ख़्वाजए पाक के इरशादे पाक से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित है कि उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम की ख़िदमत व महब्बत का सिला और बदला बख़्शिश व नजात और रहमते परवरदिगार है और उनकी ग़ीबत व बुराई से दुनिया में रहमत व बरकत उठ जाती है और बरोज़े क़ियामत रीछ यानी भालू के जैसी शक्ल हो जाएगी और उसी सूरत में हश्र होगा।

हज़रात ! अल्लाह तआला की बारगाह से पनाह मांगते हुए उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम से महब्बत करो और हर गिज़ हरगिज़ उलमा व मशाइख़ की ग़ीबत व बुराई न करना वर्ना उसका वबाल व अज़ाब दीन व दुनिया दोनों को तबाह व बरबाद कर देगा।

चौथी चीज़ : ख़ानए कअ़बा को देखना

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि ख़ानए कअ़बा को देखना सवाब है।

हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं जो शख़्स ख़ानए कअ़बा की ज़ियारत करेगा वह इबादत में दाख़िल होगा, उसकी ज़ियारत से हज़ार साल की इबादत और हज का सवाब उनके नामए आमाल में लिखा जाएगा और औलिया का दर्जा उसे नसीब होगा। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 22)

पाँचवीं चीज़ : पीरो मुर्शिद की ज़ियारत

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि पीरो मुर्शिद की ज़ियारत व ख़िदमत सवाब है।

हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने बयान फ़रमाया कि मैंने मअ़रिफ़तुल मुरीदीन में पढ़ा है कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपने पीर की ख़िदमत ख़ुलूस व महब्बत से करता है अल्लाह तआला उस मुरीद

को बग़ैर हिसाब जन्नत में दाखिल फ़रमाएगा और उस को मोतियों के हज़ार महल अता करेगा और हज़ार साल की इबादत का सवाब उस मुरीद को नसीब फ़रमाएगा।

फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि मुरीद पर लाज़िम है कि जो कुछ पीरो मुर्शिद की ज़बान से इरशादात सुने उस पर पूरी कोशिश से अमल करे और पीरो मुर्शिद की ख़िदमत बजा लाए और हाज़िरे ख़िदमत रहे और पीरो मुर्शिद की ख़िदमत बजा लाने के लिये मुतवातिर हाज़िर होने की कोशिश करता रहे।

फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने यह हिकायत बयान फ़रमाई कि :

हिकायत : एक मरतबा एक ज़ाहिद (मुत्तक़ी परहेज़गार) शख़्स ने सौ साल तक अल्लाह तआला की इस तरह इबादत की कि दिन को रोज़ा रखता और रात भर खड़ा रहकर इबादत करता, किसी वक़्त यादे इलाही से ग़ाफ़िल न रहता और जो शख़्स उसके पास आता उसको इबादते इलाही बजा लाने की नसीहत भी करता।

वह ज़ाहिद शख़्स इन्तिक़ाल कर गया तो उसे ख़्वाब में देखकर पूछा गया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या सुलूक फ़रमाया तो उस ज़ाहिद शख़्स ने जवाब दिया कि अल्लाह तआल ने मुझे बख़्श दिया। पूछा गया कि किस अमल के बदले बख़्शिश हुई ? तो उस ने जवाब दिया कि मेरी रात व दिन की इबादत की वजह से नहीं बल्कि अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि तुमने अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में किसी तरह की कोताही और कमी नहीं की इस लिये तुझे हमने बख़्श दिया।

इसके बाद हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रोने लगे और भीगी पलकों के साथ फ़रमाया कि क़ियामत के दिन औलिया सिद्दीक़ीन और पीराने किराम को जब लाया जाएगा तो उनके कन्धों पर कम्बल पड़े होंगे और कम्बल में लाखों धागे लटकते होंगे। उन बुज़ुर्गों के मुरीद और चाहने वाले उन धागों को पकड़कर लटक जाएंगे और अल्लाह तआला की कुदरत व इनायत से उनके साथ पुल सिरात पार करके जन्नत में दाखिल हो जाएंगे। अलहम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 22,23)

ऐ ईमान वालो ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मुरीद होने के फ़वाइद व बरकात बयान फ़रमा दिये और यह भी फ़रमा दिया कि मुरीद को हर हाल में अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर रहकर पीर व मुर्शिद जो हुक्म अता फ़रमाएं मुरीद को दिल व जान से कुबूल करके उस पर अमल पेरा रहना चाहिये।

हज़रात ! मुरीद होने के बे शुमार फ़वाइद हैं मगर शर्त यह है कि वह शख़्स सच्चा और पक्का मुरीद हो, फिर मुरीद दुनिया में जिस मक़ाम पर भी रहेगा पीर व मुर्शिद की दुआएं और इनायतें उसके सर पर साया की तरह रहेंगी जिस की बरकत से दुनियवी मुआमले में आसानियाँ पैदा हो जाएंगी और मुश्किलात की ज़ंजीरें टूटती नज़र आएंगी और बरोज़े

क़ियामत अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से पीरो मुर्शिद की निस्बत से मुरीद को कोई सख़्ती लाहिक़ नहीं होगी और जन्नत में दाख़ला आसान हो जाएगा।

आशिक़े मदीना प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा
साइलो ! दामन सख़ी का थाम लो !
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

और सय्येदुल उलमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं

मक्रे शैतां से मुरीदों को बचा लेते हो
इस लिये तुम्हें अपना पीर बनाया ख़्वाजा

हमारे ख़्वाजा का मस्लक हन्फ़ी और मशरब चिश्ती था

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को मज़हबे हन्फ़ी की तक़लीद की नेअ़मत अपने शैख़ हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के वास्ते से मिली है, वह ख़ुद सय्यदना इमामे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुक़ल्लिद और हन्फ़ी थे, इसके कसीर शवाहिद हैं जिनसे यह साबित होता है कि हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मस्लक हन्फ़ी था।

और हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो मुरीद थे हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी चिश्ती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से, इस वजह से हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मशरब चिश्ती था। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 150)

हुज़ूर ग़ौसे आज़म और हुज़ूर ग़रीब नवाज़ की मुलाक़ात साबित है

हुज़ूर सय्येदुल उलमा सय्यद आले मुस्तफ़ा मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़ाला ज़ाद भाई थे हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

जब हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जवां साल थे और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के बुढ़ापे का ज़माना था। (अहले सुन्नत की आवाज़, स. 2008, स. 38)

और एक रिवायत के मुताबिक़ हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की वालिदा माजिदा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की चचा ज़ाद बहन हैं, इस रिश्ते से हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मामूं होते हैं।

और मुलाक़ात के वक़्त हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की उम्र पचास साल की थी और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की उम्र शरीफ़ 99 साल की थी। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 500)

विलायते हिन्द की ख़ुशख़बरी

ताजदारे अहले सुन्नत शहज़ादए आला हज़रत अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पीर व मुर्शिद क़ुतबे वक़्त हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के हुक्म से हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه यानी मेरा यह क़दम अल्लाह के हर वली की गर्दन पर है।

तो सारे औलिया अल्लाह ने अपनी गरदनें हुज़ूर ग़ौसियत मआब के क़दम के नीचे रख दीं और ख़्वाजा मोईनुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जो उस वक़्त नौ जवान थे और ख़ुरासान के किसी पहाड़ी के ग़ार में रियाज़त व मुजाहदा फ़रमा रहे थे, इस हुक्मे इलाही पर इत्तिला पाते ही तमाम औलियाए किराम से पहले अपना सर झुकाने की जल्दी की और सरे मुबारक ज़मीन पर रखकर फ़रमाया कि : बल्कि हुज़ूर के क़दम मेरे सर पर हैं।

अल्लाह तआला ने यह हाल हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर ज़ाहिर कर दिया तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने ख़्वाजा बुज़ुर्ग ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के बारे में औलियाए किराम के मजमे में इरशाद फ़रमाया कि हमारे क़दमे मुबारक के नीचे अल्लाह के वलियों और दोस्तों के गरदन रखने में ग़यासुद्दीन के बेटे (मोईनुद्दीन) ने सबक़त की लिहाज़ा वह अपनी इन्किसारी और हुस्ने अदब की वजह से अल्लाह और उसके रसूल का महबूब हो गया और क़रीब है कि मुल्क हिन्दूस्तान की वागें उसके हाथ में दे दी जाऐंगी और जैसा ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया वैसा ही हुआ और मौलाना शैख़ मोहम्मद जमालुद्दीन सोहरवर्दी ने सियरुल आरेफ़ीन में लिखा कि पहाड़ों में से किसी पहाड़ में हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के साथ इकट्ठा हुए और हुज़ूर ग़ौसे पाक की ख़िदमत में सत्तावन दिन और रात हाज़िर रहे और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से तरह तरह के फ़्यूज़े बातिनी और कमालात हासिल फ़रमाए।

(सिराजुल अवारिफ़ फ़िल वसाया वल मआरिफ़, स. 41)

हज़रात ! मज़कूरा हवालाजात की रोशनी में यह बात वाज़ेह और साबित हो गई कि हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने शैख़ुल

औलिया पीराने पीर दस्तगीर, रोशन ज़मीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मुलाक़ात फ़रमाई और फ़ैज़ व बरकत भी हासिल की।

इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं:

किस गुलिस्तां को नहीं फ़स्ले बहारी से नियाज़
कौन से सिलसिले में फ़ैज़ न आया तेरा

राज किस शहर में करते नहीं तेरे ख़ुद्दाम
बाज किस नहर से लेता नहीं दरया तेरा

मिज़रए चिश्त व बुख़ारा व इराक़ व अजमेर
कौन सी कश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा

और उस्ताज़े ज़मन फ़रमाते हैं:

मोहयेदीन ग़ौस हैं और ख़्वाजा मोईनुद्दीन हैं
ऐ हसन क्यों न हो महफ़ूज़ अक़ीदा तेरा

हमारे ख़्वाजा की अक़ीदत हुज़ूर ग़ौसे आज़म से

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की लिखी हुई मनक़बत मुलाहज़ा फ़रमाइये:

یا غوث معظم، نور ہدیٰ، مختار نبی، مختار خدا
سلطان دو عالم قطب علیٰ، حیراں ز جلالت ارض و سماں

यानी ऐ बा अज़मत ग़ौस! हिदायत के नूर बारगाहे मुस्तफ़ा के महबूब व मक़बूल, ख़ुदाए तआला के बरगुज़ीदा, पसन्दीदा, दो आलम के सुल्तान, बलन्द मरतबा क़ुतुब, आपकी अज़मत व बुज़ुर्गी के सामने आसमान व ज़मीन हैरत ज़दा हैं।

در صدق ہمہ صدیق وشی، در عدل و عدالت چوں عمری
اے کانِ حیا عثمان منشی، مانند علی با جود و سخا

यानी सच्चाइयों में हज़रत सिद्दीक़े अकबर के जा नशीने कामिल, अदलो इन्साफ़ में हज़रत उमर फ़ारुक़े आज़म के परतो, हज़रत उस्माने ग़नी की शर्मो हया के अमीन और जूदो सख़ा में मौलाए कायनात हज़रत अलिये मुरतज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के अक्से जमील।

در بزم نبی عالی شانی، ستار عیوب مریدانی،
در ملک ولایت سلطانی، اے منبع فضل و جود و سخا

यानी ऐ जूदो सख़ा के सरचश्मा! आप शेहरिस्ताने विलायत के सुल्तान हैं, मुरीदों के ऐब

पोश और बारगाहे नुबुव्वत अलैहिस्सलातो वत्तहिय्यत में निहायत आली क़द्र।

چوں پائے نبی شد تاج سرت تاج ہمہ عالم شد قدمت
اقطاب جہاں در پیش درت افتادہ چوں پیش شاہ گدا

चूँकि क़दमे नुबुव्वत आपके सरे अक़दस का ताज है इसी लिये आपका क़दमे मुबारक सारे जहां का ताज ठहरा, सारी दुनिया के क़ुतुब आपके आस्तानए करीम के हुज़ूर यूँ पड़े हुए हैं जैसे बादशाह के सामने गदागर।

گرداد مسیح بہ مردہ رواں، داری تو بدین محمد جاں،
ہمہ عالم محی الدین گویاں، بر حسن و جمالت گشتہ فدا

अगर सय्यदना ईसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने मुर्दों को ज़िन्दगी अता की तो आपने दीने मुहम्मदी में जान डाल दी, सारा आलम आपको मोहयुद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाले) के लक़ब से याद करता है और आपके हुस्नो जमाल पर फ़िदा है।

در شرع بغایت بہ کاری، چالاک چو جعفر طیاری
بر عرش معلی سیاری، اے واصف راز او ادنیٰ

आपको शरीअत में कामिल दस्तरस हासिल थी, हज़रत जअफ़र तैय्यार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मानिन्द होशियार थे, ऐ औ अदना के राज़ से वाक़िफ़ ! आपकी सेर गाह तो अर्शे मुअल्ला है।

از بس کہ قتیل نفس خودم بیمار خجالت مند دلم
شرمندہ سیہ رو منفعلم از فیض تو دارم چشم دوا

यानी अगरचेह मैं अपने नफ़्स का मकतूल हूँ, मेरा दिल बीमार और शर्मसार है और मैं ख़ुद भी ख़िजल, नादिम और सियाह रू हूँ लेकिन आपके फ़ैज़ो करम से अपने दर्द की दवा रखता हूँ

معین کہ غلام نام تو شد در یوزہ گر اکرام تو شد
شد خواجہ زاں کہ غلام تو شد دارد طلب تسلیم و رضا

मोईन जो आपके नामे नामी का ग़ुलाम, आपके इकराम का मंगता है और आपकी ग़ुलामी का शरफ़ हासिल होने की वजह से ख़्वाजा बन गया, आपकी तस्लीमो रज़ा का तालिब है।

(अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 295)

ऐ ईमान वालो ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो क़ुतुबुल अक़ताब फ़रदुल अफ़राद महबूबे सुब्हानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ाते वाला सिफ़ात से किस क़दर महब्बत व

अक़ीदत रखते थे ऊपर लिखी मनक़बत से साफ़ ज़ाहिर और साबित है और इस मनक़बत से यह भी पता चला कि या ग़ौस कहना बिदअत व दलालत नहीं बल्कि सुल्तानुल हिन्द हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आदत व तरीक़ा है।

हमारे ख़्वाजा ने या रसूलल्लाह कहा :

یا رسول اللہ شفاعت از تو میدارم امید

با وجود صد ہزاراں جرم در روزحساب

यानी या रसूलल्लाह बा वजूद लाखों गुनाह के क़ियामत के दिन आपकी करीम ज़ात से मुझे शफ़ाअत की आस लगी है। (अहले सुन्नत की आवाज़, स. 2008, स. 284)

हजरात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को या रसूलल्लाह कहकर मदद के लिये पुकारा। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की लिखी हुई नअ़त का एक शेअ़र मुलाहज़ा फ़रमाइये :

یا رسول اللہ بحالِ عاصیاں کن یک نظر

تا شود زاں یک نظر کار فقیراں ساختہ

यानी या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम हम गुनाहगारों की हालते ज़ार पर रहमत की एक निगाह डाल दीजिये ताकि इस निगाहे करम के सदक़े में हम फ़क़ीरों का काम बन जाए। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 285)

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हिन्दूस्तान की सर ज़मीन पर इन्सानों को कुफ़्र व शिर्क की लअ़नत से नजात दिलाई और इस्लाम की अबदी नेअ़मत अता फ़रमा कर मुसलमान होने का शरफ़ नसीब किया है।

अगर या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व अला आलिका वसल्लम पुकारना कुफ़्र व शिर्क होता या बिदअत व गुमराही होती तो अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हर गिज़ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम न पुकारते, न कहते।

मगर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम पुकारा और कहा तो साबित हो गया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम पुकारना और कहना कुफ़्र व शिर्क और बिदअत व गुमराही नहीं है बल्कि इस्लाम व ईमान की पहचान और हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आदत व तरीक़ा है

बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह कहा फिर तुझ को क्या ?

नजदी मरता है कि क्यों ताज़ीम की
यह हमारा दीन था फिर तुझ को क्या

शहज़ादए नबी फ़रज़न्दे अली हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा के नूरे ऐन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की शाने रफ़ीअ़ में हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की लिखी हुई यह रुबाई मशहूरे आलम है।

شاہ است حسین بادشاہ است حسین
دیں است حسین دیں پناہ است حسین
سرداد نہ داد دست در دستِ یزید
حقا کہ بنائے لا الہ است حسین رضی اللہ عنہ

(अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 257)

मौत की हक़ीक़त : कुतबुल अक़्ताब हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि हमारे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मलकुल मौत का ज़िक्र फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि बग़ैर मलकुल मौत के दुनिया की क़ीमत जो भर भी नहीं।

पूछा गया क्यों ? तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया इस लिये कि हदीस शरीफ़ में है : اَلْمَوْتُ جَسْرٌ يُوْصِلُ الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ

यानी मौत एक पुल है जो दोस्त को दोस्त तक पहुँचाता है।

फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो ने आबदीदा होकर फ़रमाया कि हमें इस जगह लाया गया है जहाँ हमारा मदफ़न होगा, हम चन्द दिनों में इस जहान से सफ़र कर जाऐंगे

अलमुख़्तसर ! ख़िलाफ़त व इजाज़त और तमाम तबर्रुकात हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के सुपुर्द किये और फ़रमाया :

जाओ मैंने तुम को ख़ुदा के हवाले किया और तुम्हारी मन्ज़िल तक इज़्ज़त से पहुँचाया।

नसीहत : इस के बाद फ़रमाया कि चार चीज़ें निहायत उम्दा हैं।

अव्वल : वह दुरवेशी जो तवन्गरी मालूम हो।

दौम : भूकों को पेट भर खाना खिलाना।

सौम : ग़म की हालत में मसरूर व मुतमइन दिखाई देना।

चहारुम : दुश्मन की दुश्मनी के जवाब में दोस्ती का मुज़ाहरा करना। (दलीलुल आरेफ़ीन, स. 58)

हमारे प्यारे ख़्वाजा का विसाल शरीफ़

शबे विसाल चन्द औलिया अल्लाह ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि आप किसी के इन्तिज़ार में खड़े हैं। फ़रमाया रहमते इलाही के हुजूम में आज मोईनुद्दीन की रूह आने वाली है। हम उसके इस्तिक़बाल के लिये आए हैं।

6 रजबुल मुरज्जब 627 हि. मुताबिक़ 21 मई 929 ई. बरोज़ दो शम्बा बाद नमाज़े इशा आप ने हुजरा शरीफ़ का दरवाज़ा बन्द कर लिया और ख़ुद्दाम को अन्दर दाख़िल होने की मुमानअत कर दी इस लिये सारे ख़ुद्दाम हुजरे के बाहर ही खड़े रहे रात भर कानों में सदाए वजुद आती रही। आख़िर शब में वह सदा बन्द हो गई। जब नमाज़े सुबह का वक़्त हुआ और हुजरा शरीफ़ का दरवाज़ा हस्बे मामूल न खुला तो ख़ुद्दाम व मोअ़तक़ेदीन को सख़्त तशवीश हुई, दरवाज़ा तोड़ कर देखा गया तो आप वासिले बहक़ हो चुके थे। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ

और जबीने मुबारक पर क़ल्मे क़ुदरत से लिखा हुआ था

هٰذَا حَبِیْبُ اللّٰهِ مَاتَ فِیْ حُبِّ اللّٰه

यानी यह अल्लाह का दोस्त अल्लाह की महब्बत में रुख़सत हुआ। (राहतुल क़ुलूब, स. 61, मसालेकुस्सालेकीन बहवाला मोईनुल अरवाह, स. 90, सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 60)

वक़्ते विसाल, उम्र शरीफ़

हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तक़रीबन 97 बरस की उम्र में अपने इसी हुजरे में विसाल किया जिस हुजरे में आज हुज़ूर का मज़ारे मुबारक है।

(हुज़ूर सय्येदुल उलमा का बयान, बहवाला अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 55)

हुज़ूर सय्येदुल उलमा बयान फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के विसाल शरीफ़ के बाद जब जुब्बा शरीफ़ उतारा गया तो आपका जुब्बा शरीफ़ बारह सेर का था उस की वजह यहथी कि जब जुब्बा फट जाता तो पेवन्द पर पेवन्द लगा लेते थे इस जुब्बा शरीफ़ पर बोरी, कम्बल के, चमड़े के पेवन्द लगे हुए थे। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 53)

हमारे ख़्वाजा की नमाज़े जनाज़ा

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के बड़े साहबज़ादे हज़रत ख़्वाजा फ़ख़रुद्दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 119)

हज़रात ! मशहूर आलिमे दीन रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी रहमतुल्लाहे तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं :

दिलों का मरकज़े इश्क़ : किशवरे हिन्द में हज़रत ख़्वाजा में हज़रत ख़्वाजा का रोज़ए पुर नूर दिलों का मरकज़े इश्क़ है जुमला अक़तारे अर्ज़ से शौक़ के क़ाफ़लों का वह हर दौर में कअ़बए मक़सूद रहा है। आज भी हिन्दी मुसलमानों का वह क़िब्लए आरज़ू है। बिला तफ़रीक़े मज़हबो मिल्लत हज़रत ख़्वाजा के संगे आस्तां पर सब की गरदने अक़ीदत ख़म रही है, आज भी ख़म है और क़ियामत तक ख़म रहेगी। ग़रीब, अमीर, नेक व बद, आलिम व जाहिल, सालिक व मजज़ूब, हाकिम व महकूम, शाहो गदा, सरमस्त व होशियार, यकसां तौर पर सब के लिये ख़्वाजा का आस्ताना दिल की तस्कीन, रूह की कशिश और पेशानियों की तस्ख़ीर का गहवारा रहा है।

मुसलमान बादशाहों (और अक़ताब व औलिया) से लेकर बरतानवी फ़रमां रवाओं तक सब ने हज़रत ख़्वाजा की अज़मते ख़ुदा दाद के आगे अक़ीदतों का ख़राज पेश कर के उस की मअनवी हुकूमत के साथ अपनी वफ़ादारी का सुबूत दिया।

अलमुख़्तसर ! सलतनते मुग़लिया के एक अज़ीम फ़रमां रवा शाह जहाँ बादशाह और उस की बेटी शहज़ादी जहां आरा बेगम की रिक़्क़त अंगेज़ हाज़िरी का एक वाक़िआ जिसे ख़ुद अपने क़लम से शहज़ादी ने किताब मूनिसुल अरवाह में तहरीर किया है, इख़्तिसार के साथ पेशे ख़िदमत है।

शहज़ादी जहाँ आरा बेगम दरबारे ख़्वाजा में

वालिदे बुज़ुर्गवार के हमराह आगरा से अजमेर (शरीफ़) पहुँच कर ज़मीन बोस हुई, क़याम के दौरान ब पासे अदब कभी पलंग पर नहीं सोई और न रोज़ए अक़दस की तरफ़ कभी पाऊँ और पुश्त किया, मरक़दे अनवर की ख़ाक व ख़ुश्बू को सुरमए चश्म बनाया, इस से दिल पर जो ज़ोक़ व शौक़ की कैफ़ियत तारी हुई वह तहरीर में नहीं आ सकती। ग़ायते शौक़ के आलम में सर असीमा हो गई, कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ख़ुद को किया करूँ और क्या कहूँ।

अलक़िस्सा मुख़्तसर : मैं ने क़ब्र शरीफ़ पर इत्र अपने हाथों से मला और चादरे गुल जो मैं अपने सर पर रख कर लाई थी मज़ार शरीफ़ पर पेश किया, बादे अज़ां संगे मर मर की मस्जिद में नमाज़ अदा की। यह मस्जिद (शाह जहानी मस्जिद) दो लाख चालीस हज़ार रुपया सर्फ़ करके वालिदे बुज़ुर्गवार (शाह जहाँ) ने तामीर कराई है।

मग़रिब तक वहाँ हाज़िर रही और आँ हुज़ूर के यहाँ शम्ए रोशन करके झालरा शरीफ़ के पानी से रोज़ा इफ़्तार किया।

हज़रात ! शहज़ादिये जहाँ आरा बेगम की आप बीती और दिल के तास्सुरात का यह हिस्सा इन्तिहाई रिक़्क़त आमेज़ है। इसे पढ़ कर एक अजीब सुरूर हासिल होता है। अमीरे किशवरे हिन्द की लाडली बेटी की ज़रा ख़ुश अक़ीदगी मुलाहज़ा फ़रमाइये, लिखती हैं।

अजब शाम थी जो सुबह से बेहतर थी कितनी फ़रख़ुन्दा रात थी जिस पर कई बार दिन का उजाला निसार किया। हज़रत ख़्वाजा के जवार में सपेदए सहर नहीं तुलूअ होता, ना मुरादियों के अन्धेरे में फ़ीरोज़ बख़्ती की किरण फूट पड़ती थी।

अगरचेह इस मुतबर्रक मक़ाम और इस गहवारए फ़ैज़ से घर वापस आने को जी नहीं चाहता था मगर मजबूर थी, अगर ख़ुद मुख़्तार होती तो हमेशा उस गोशए जन्नत में कहीं अपना आशयाना बना लेती, नाचार रोती हुई उस दरगाहे रहमत से रुख़सत हो कर घर आई, तमाम रात बे क़रारी में गुज़री। (मूनिसुल अरवाह बहवाला सवानेहे ग़ौसो ख़्वाजा, स. 65)

हज़रत सुल्तान औरंगज़ेब की हाज़री दरबारे ख़्वाजा में : सुल्तान मोहयुद्दीन हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मुतअद्दिद मरतबा अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुए। उन का मामूल था कि अपनी क़ियाम गाह से पा प्यादा रोज़ए अक़दस तक जाते थे।

(मोईनुल अरवाह, स. 244)

हज़रात ! हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जहाँ एक नेक व मुत्तक़ी बादशाह थे वहीं वलिये कामिल और मुजद्दिद भी थे।

सिलसिलए क़ादिरया रज़विया के बुज़ुर्ग, आलिमे बा अमल हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हर बात तहक़ीक़ के दायरे में हुआ करती थी आप अपनी मजलिसों में बयान फ़रमाया करते थे कि हज़रत औरंगज़ेब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की अक़ीदत व महब्बत बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से इस क़दर बढ़ी हुई थी कि जब हिन्दूस्तान का बादशाह हज़रत औरंगज़ेब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अजमेरे मुक़द्दस हाज़िर होते तो कभी कभी फ़क़ीर का लिबास ज़ेबतन फ़रमा लिया करते थे और मुशकीज़ा बग़ल में लेकर हाज़िरीने दरबार को पानी पिलाया करते और कभी लंगरे ख़्वाजा हासिल करने के लिये फ़क़ीरों की क़तार में खड़े हो कर लंगर हासिल किया करते थे।

एक मरतबा किसी शख़्स ने अर्ज़ किया कि आप क़तार में न खड़े हों मैं लन्गर हाज़िरे ख़िदमत कर देता हूँ तो बादशाह औरंगज़ेब रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हिन्द के राजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के फ़क़ीरों के बीच खड़े होने से मुझे अमीद है कि कल बरोज़े क़ियामत अताए रसूल ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने गुलामों में शामिल फ़रमा लेंगे तो मेरी नजात व बख़्शिश का सामान पैदा हो जाएगा।

मन्ज़िले इश्क़ में तस्लीम व रज़ा मुशकिल है
जिन के रुत्बे हैं सिवा उन को सिवा मुशकिल है

और हज़रत औरंगज़ेब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने यह भी फ़रमाया कि तुम उन फ़क़ीरों को क्या समझते हो ? हम ने ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को उन फ़क़ीरों के साथ देखा है और दीदार किया है।

तेरे गदा हैं गुनाहगार व मुत्तक़ी दोनों
बुरे भले पे तेरा फ़ैज़ आम या ख़्वाजा

बारगाहे ख़्वाजा में हज़रत औरंगज़ेब और एक अन्धा

मशहूर वाक़िआ है जिसको उलमा बयान किया करते हैं और मैंने ख़ुद वलिये कामिल हज़रत अश्शाह मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी हुज़ूर बदरे मिल्लत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से बयान फ़रमाते हुए सुना है कि -

एक मरतबा हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में हाज़िर हुए तो देखा कि एक अन्धा फ़क़ीर दरवाज़े पर खड़ा है और भीक मांग रहा है और इससे पहले भी उस अन्धे फ़क़ीर को बारगाह में भीक मांगते हुए देख चुके थे।

हज़रत आलमगीर रहमतुल्लाहे अलैह ने इस अन्धे फ़क़ीर के बाज़ू को पकड़ा और इरशाद

फ़रमाया कि तुम कितने साल से इस बारगाह में हाज़िर हो ? उस फ़क़ीर ने जवाब दिया : दो तीन साल हो गए हैं। हज़रत आलमगीर रहमतुल्लाहे अलैह ने फ़रमाया बारगाहे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में तुम्हारी हाज़िरी का मक़सद क्या है ? उस फ़क़ीर ने जवाब दिया : अन्धा हूँ, ख़्वाजा की बारगाह में आँख लेने आया हूँ, यह सुन कर बादशाह आलमगीर ने पुर जलाल आवाज़ में फ़रमाया कि फिर तुम को आँख क्यों नहीं नसीब हुई तुम अभी तक अन्धे क्यों हो ?

ऐ अन्धे फ़क़ीर कान खोल कर सुन ले, मैं हिन्दूस्तान का बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर हूँ ख़्वाजा की क़ब्र शरीफ़ पर फ़ातिहा पढ़ने मज़ार शरीफ़ के अन्दर जा रहा हूँ और फ़ातिहा पढ़ कर वापस आऊँ तो तेरी आँख नज़र आनी चाहिये और अगर तू अन्धा ही रहा तो मैं तुझे इस तलवार से क़त्ल कर दूँगा। हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मज़ारे अनवर व अक़दस के अन्दर तशरीफ़ ले गए।

इधर यह अन्धा फ़क़ीर जान जाने के ख़ौफ़ से बिलक बिलक कर रोता हुआ फ़रियाद करने लगा ऐ हमारे प्यारे ख़्वाजा अभी तक तो आँख ही नहीं थी अब तो जान भी चली जाए गी, करम कर दो ! रहम कर दो ! आँख का अन्धा पन दूर कर के आँख वाला बना दो। ग़रीब फ़क़ीर का रोना बिलकना उन को कब गवारा है। अल्लाह तआला की क़ुदरत से और हमारे प्यारे ख़्वाजा की निगाहे करम से वह फ़क़ीर आँख वाला हो गया।

हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़ातिहा पढ़ कर और दुआ मांग कर जब बाहर तशरीफ़ लाए तो क्या देखा कि वह अन्धा फ़क़ीर, अब अन्धा न था बल्कि आँख वाला हो चुका था।

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

(मौलाना हसन रज़ा बरेलवी)

हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस फ़क़ीर से फ़रमाया अगर तुम को आँख नसीब न हुई होती और तू अन्धा ही रहता तो भी हम तुम को क़त्ल नहीं करते और जो मैंने तुम को क़त्ल करने के लिये कहा था वह सिर्फ़ इस बात का मालूम करने के लिये था कि तुम ने अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से ख़ुलूस व महब्बत से तड़प कर मांगा था या नहीं। पहली बार रोते हुए भीगी पलकों के साथ फ़रयाद की और आँख अता हो गई।

ख़्वाजा तेरे रोज़े पर क्या किया नज़र आता है
अल्लाह की क़ुदरत का जलवा नज़र आता है

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का आस्ताना अल्लाह तआला की क़ुदरत से रहमत व बरकत के हुसूल का ठिकाना है, अगर कोई शख़्स अजमेरे मुक़द्दस हमारे प्यारे ख़्वाजा की चौखट पर हाज़री दे और फिर भी

उसकी झोली खाली रह जाए तो यक़ीनन साइल की तलब में कमी है, हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की अता व बख़्शिश में कमी नहीं है।

वल्लाह यह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुँचेंगे
इतना तो हो कोई जो आह करे दिल से

दिल पे हर वक़्त दिल दार की नज़र रहती है
उन की सरकार में कुछ भी नहीं निय्यत के सिवा

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का दरबार वह दरबारे करम है जहाँ अमीर व ग़रीब, आलिम व जाहिल, नेक व गुनाहगार नहीं देखा जाता बल्कि हर साइल व भिकारी पर अता ही अता और करम ही करम होता है।

बल्कि मैं तो अकसर व बेशतर कहा करता हूँ कि अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को आदत हो गई है भीक देने की।

हज़रात ! हमारी आदत है भीक मांगने की और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आदत है भीक देने की -

यह कभी इनकार करते ही नहीं
बे नवाओ ! आज़माकर देख लो !

चाहे जो मांगो अता फ़रमाएंगे
ना मुरादो ! हाथ उठा कर देख लो !

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहलवी दरबारे ख़्वाजा में

मशहूर आशिक़े रसूल बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में हाज़िरी का वाक़िआ अपनी किताब शरह सफ़रुस्सआदह में तहरीर फ़रमाते हैं कि -

मैं अजमेरे मुक़द्दस में अताए रसूल सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के रोज़ए अक़दस पर हाज़िर हुआ और बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में अर्ज़ किया कि ऐ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपना तमाम इल्म आप की चौखट के बाहर छोड़ आया हूँ, यह दामन ख़ाली है, आप जो चाहेंगे अता फ़रमा दें। (शरह सफ़रुस्सआदह)

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी की हाज़री बारगाहे ख़्वाजा में

सिलसिलए नक़्शबन्दिया के मशहूर व मारूफ़ बुज़ुर्ग इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी शैख़ सर हिन्दी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बारगाहे सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में हाज़िर हुए।

हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अक़दस के सरहाने सन्दली

मस्जिद के गोशे में ज़िक्र व फ़िक्र और तिलावते कुरआन शरीफ़ में मशगूल रहते। इस तरह तक़रीबन चालीस दिन तक चिल्ला कशी करते रहे और हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो अन्हो के फ़ैज़ाने करम से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तनीर हुए। मुलख़्ख़सन (मुईनुल अरवाह, स. 222)

ऐ ईमान वालो ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाहे करम में इमाम व मुजद्दिद और मुहद्दिस, कुतुब व अब्दाल और वली सब साइल व भिकारी नज़र आ रहे हैं।

ख़ूब फ़रमाया हुज़ूर सय्यदुल उलमा मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने

है यह अक़लीमे हिन्द तेरे क़दमों में हुज़ूर
हिन्द के सारे वली तेरी रिआया ख़्वाजा

हज़रत वारिसे पाक दरबारे ख़्वाजा में

मशहूर व मअरूफ़ मजज़ूब बुज़ुर्ग हज़रत वारिसे पाक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो देवा शरीफ़ वाले। मशहूर है कि जब आप ने अजमेरे मुक़द्दस हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की चौखट की हाज़री दी तो जूता (चप्पल) पहनना छोड़ दिया और फिर ता हयात कभी भी न पहना। (मुईनुल अरवाह, स. 227)

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को अल्लाह तआला ने किस क़दर अज़मत व बुज़ुर्गी से नवाज़ा है कि मस्त व मजज़ूब बुज़ुर्ग अजमेर शरीफ़ के शहरे पाक की क़दर व मन्ज़िलत को पहचानते हैं और इस शहरे ख़्वाजा में जूता, चप्पल पहनना भी अदब व एहतिराम के ख़िलाफ़ समझते हैं तो इन मस्तों और मजज़ूबों के क़ल्ब व जिगर में हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के अदब व एहतिराम का क्या आलम होगा। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 365)

तुम्हारे हुस्न की वह शान है ख़्वाजा
दो आलम जिस पे हैं क़ुरबान ख़्वाजा
पिलाइये जामए उल्फ़त का जाम ख़्वाजा
रहे गुलाम न अब तिशना काम ख़्वाजा

हज़रत अबुल हुसैन नूरी की हाज़री बारगाहे ख़्वाजा में

क़ुतुबे ज़मां, वलीए कामिल हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पीरो मुर्शिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो एहतिमाम के साथ हर साल हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के उर्स के मौक़े पर अजमेरे मुक़द्दस दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में हाज़िरी दिया करते थे।

सरकारे नूर, हुज़ूर नूरी मियां रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इरशाद फ़रमाते थे कि सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दरबार से फ़क़ीर को हुक्म हुआ है कि

अपने ख़ुद्दाम व मुरीदीन को बता दें कि अगर किसी शख़्स को कुछ अर्ज़ करना हो तो दरख़्वास्त लिख कर वह आप को दे दें और फिर आप की मअरिफ़त में उस दरख़्वास्त को कुबूल कर लूँगा। (सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 366)

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में मारेहरा शरीफ़ के बुज़ुर्गों की महबूबियत व मक़बूलियत का यह आलम है कि कोई ख़ादिम और मुरीदे ख़ानदान शाहे बरकात के किसी शहज़ादे को अपनी दरख़्वास्त पेश कर दे और वह बरकाती शहज़ादे हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सुल्तानुल हिन्द की बारगाह में वह दरख़्वास्त पेश फ़रमा दें तो हुज़ूर ग़रीब नवाज़ इस अरीज़ा को कुबूल फ़रमा लेते हैं।

हज़रात ! ख़ानदाने बरकात बड़ी शान व बुज़ुर्गी वाला घराना है, जभी तो मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बरकाती घराने को अपना पीर ख़ाना बनाया है।

और प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं -

ऐ रज़ा यह अहमदे नूरी का फ़ैज़े नूर है
हो गई मेरी ग़ज़ल बढ़ कर क़सीदा नूर का
तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

ग़रीब नवाज़ के दरबार में आला हज़रत की हाज़री

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ख़ादिमे ख़ास हज़रत सय्यद फ़ख़रुद्दीन गरदेज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की औलाद में से हज़रत सय्यद हुसैन अली वकील जावरा, ख़ादिमे आस्ताना हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो, मुरीद व ख़लीफ़ा हैं सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहोतआला अन्हो के।

सय्यद हुसैन अली साहब अपनी किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि

मेरे पीरो मुर्शिद मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी मौलाना अहमद रज़ा ख़ां साहब क़द्दसा सिर्रुहुल अज़ीज़ भी दो बार, दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िर हुए (दरबारे चिश्त, स........मुलख़्ख़सन अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 569)

हज़रात ! मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने मुर्शिदे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ग़ुलामी और मुरीदी पर बे शक व शुबह फ़िदा और क़ुरबान थे आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुन्दरजा ज़ेल अशआर आप की ग़ायत दरजए अक़ीदत व महब्बत को ज़ाहिर व साबित करते नज़र आते हैं।

क़ादरी कर क़ादरी रख क़ादरियों में उठा
क़दरे अब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वास्ते
तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा

मगर ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा, अताए रसूल, हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो अन्हो की शाने ग़रीब नवाज़ी व बन्दा परवरी का भी सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपनी मजलिसों व महफ़िलों और तहरीरों में तज़किरा किया करते थे।

चुनाँचे एक सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं कि –

हुज़ूर सय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ज़रूर दस्तगीर हैं और हज़रत सुल्तानुल हिन्द मोईनुल हक़ वद्दीन ज़रूर ग़रीब नवाज़। (फ़तावा रज़विया, जि. 11, स. 43)

हज़रात ! गुलाम मोईनुद्दीन और अजमेर शरीफ़ न लिखने वाले पर आला हज़रत रज़ियल्लाहो अन्हो किस क़दर नाराज़ और पुर जलाल दिखाई देते हैं मुलाहज़ा फ़रमाइये।

मस्अला : अगर कोई मौलवी (या कोई शख़्स) अजमेर के साथ लफ़्ज़े शरीफ़ नहीं लिखता और नाम, गुलाम मोईनुद्दीन पर गुलाम नहीं लिखता है तो किया यह ख़िलाफ़े अक़ीदए अहले सुन्नत है या नहीं ?

जवाब ! अजमेर शरीफ़ के नामे पाक के साथ लफ़्ज़े शरीफ़ न लिखना और उन तमाम मवाक़ेअ़ (यानी बोलने चालने में अजमेर कहना, अजमेर शरीफ़ न कहना) अगर इस वजह से है कि हुज़ूर सय्यदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की जलवा अफ़रोज़ी, हयाते ज़ाहिरी और मज़ारे अनवर व अक़दस को (जिस के सबब मुसलमान अजमेर शरीफ़ कहते हैं) वजहे शराफ़त नहीं जानता तो गुमराह बल्कि अदुव्वुल्लाह (अल्लाह का दुश्मन) है। सही बुख़ारी शरीफ़ में है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

مَنْ عَادٰى لِيْ وَلِيًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ

और अगर यह नापाक इल्तिज़ाम व सुस्ती काहिली और कोताह क़ल्मी की जह से है (तो ऐसा शख़्स) सख़्त बे बरकती व फ़ज़्ले अज़ीम व ख़ैरे जसीम से मेहरूमी है।

كَمَا اَفَادَهُ الْاِمَامُ الْمُحَقِّقُ مُحْيُ الدِّيْنِ اَبُوْ زَكَرِيَّا قُدِّسَ سِرُّهٗ فِي الْاَذْكَارِ

और अगर इस का मुबना वहाबियत है तो वहाबियत कुफ्र है (यानी ऐसा कहने वाला अगर वहाबी अक़ीदा रखता है तो वह शख़्स काफ़िर है।

तो उसके बाद ऐसी बातों की किया शिकायत ?

مَا عَلٰى مِثْلِهٖ يُعَدُّ الْخَطَاءُ

अपने नाम से गुलाम का हज़फ़ (यानी गुलाम का लफ़्ज़ निकाल देना) अगर इस बिना पर

है (यानी वहाबी होने की वजह से है) कि हुज़ूर ख़्वाजए ख़्वाजगां रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का गुलाम बनने से इनकार व इस्तिकबार (यानी घमण्ड) रखता है तो यक़ीनन गुमराह और बेहुक्मे हदीस मज़कूर अदुव्वुल्लाह (यानी अल्लाह तआला का दुश्मन) है और उस का ठिकाना जहन्नम है قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى "اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ٥

और अगर बर बिनाए वहाबियत है कि गुलामे औलियाए किराम बनने वालों को मुश्रिक और गुलाम मोहयुद्दीन और गुलाम मोईनुद्दीन को शिर्क जानता है तो वहाबिया ख़ुद ज़िन्दीक़, बे दीन, कुफ़्फ़ारो मुरतद्दीन हैं। وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ

वल्लाहु तआला अअ़लम (फ़तावा रज़विया, जि. 6, स. 187,188)

ऐ ईमान वालो ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ाते मुबारका से मुजद्दिदे आज़मे दीनो मिल्लत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को किस क़दर अक़ीदत व महब्बत थी कि शहरे ख़्वाजा, अजमेर शरीफ़ को ख़ाली अजमेर कहने वालों से नाराज़गी का इज़हार फ़रमाते हुए तहरीर फ़रमा दिया कि ऐसा शख़्स अल्लाह का दुश्मन है या ऐसा शख़्स रहमत व बरकत से महरूम है।

हज़रात ! जब सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हमारे प्यारे ख़्वाजा के शहर अजमेर शरीफ़ को इस क़दर शरीफ़ जानते हैं तो ख़ुद हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को किस क़दर शरीफ़ व बुज़ुर्ग जानते और मानते होंगे।

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मज़ारे अक़दस व अनवर को इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मक़ामे मक़बूला में शुमार फ़रमाते हुए तहरीर फ़रमाते हैं।

हमारे ख़्वाजा का आस्ताना मक़ामाते मक़बूला में से है

मरक़दे मुबारक हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मोईनुद्दीन चिश्ती कुद्दसा सिर्रहु मक़ामाते मक़बूला में से है। (अहसनुल विआअ लि आदाबिद्दुआ)

यानी हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के आस्तानए रहमत व बरकत पर जो दुआ मांगी जाती है अल्लाह तआला दुआ मांगने वाले को नहीं देखता बल्कि हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह की महबूबियत व मक़बूलियत की वजह से उस की दुआ को क़ुबूल फ़रमा लेता है।

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

हज़रात ! सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तमाम औलिया अल्लाह और बुज़ुर्गाने दीन के मद्दाह और शैदा थे और सर ज़मीने हिन्द में बे शुमार औलियाए किराम आराम फ़रमा हैं। ख़ुद सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो के मुर्शिदाने इज़ाम मौजूद हैं मगर मुजद्दिदे आज़म हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने किसी बुज़ुर्ग के मज़ारे अनवर को मक़ामाते मक़बूला में शुमार नहीं कराया और न ही लिखा। वल्लाहु तआला अअ़लम।

लेकिन ख़्वाजाए कामिलाँ ख़्वाजगान, मुर्शिदे कामिलाँ हम ग़रीबों के ग़मगुसार, बे कसों के हामी व मददगार, ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी सुम्मा अजमेरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आप की नूरानी चौखट और आस्तानए नूर को मक़ामाते मक़बूला में शुमार फ़रमाया है।

हज़रात ! इस तहरीर से बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की अक़ीदत व उल्फ़त नूरे आफ़ताब से ज़्यादा ज़ाहिर और रोशन नज़र आती है।

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के गुलामो ! ज़रा सोचो तो रही कि कुछ लोग ऐसे सचे आशिक़े ख़्वाजा की बुराई और बे अदबी करते नज़र आते हैं और हक़ीक़त में बात सिर्फ़ यह है कि जो उन का बातिल गुमान है मेरा नाम ज़माना क्यों नहीं लेता।

हर महफ़िल में आला हज़रत का ज़िक्रे ख़ैर होता नज़र आता है कोई भी महफ़िल हो आपकी लिखी हुई नअ़तें, आपका सलाम पढ़ा और गुनगुनाया जाता है।

हज़रात ! बे काम के नाम नहीं होता। काम से नाम।

ऐ सुन्नी मुसलमानो ! मज़ारों पर हाज़री देने वालो ! न्याज़ व फ़ातिहा दिलाने वालो ! ख़्वाजा ख़्वाजगान के नाम पर एक हो जाओ और मस्लके आला हज़रत पर चलते हुए बुज़ुर्गों के, हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मिशन को ज़िन्दा करके आम करो। ख़्वाजाए ख़्वाजगान के मिशन पर ख़ुद चलो और ज़माने को इस मुबारक मिशन पर चलने की दावत दो। मज़ार हो या मदरसा। मस्जिद हो या ख़ानक़ाह। गांव हो या शहर, कूचा हो या बाज़ार हर मक़ाम से ख़्वाजा या ख़्वाजा की सदाए दिल नवाज़ सुनाई देती नज़र आए।

अल्लाह तआला तमाम सुन्नी मुसलमानों को हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सीरते तैय्यिबा पर अमल करते हुए एक और नेक होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

महबूबे इलाही के मज़ार पर आला हज़रत ने हाज़िरी दी

आशिक़े मदीना सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

कि मेरी उमर का तीसवां साल था कि हज़रत महबूबे इलाही (ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया चिश्ती देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो) की दरगाह में हाज़िर हुआ। इहाते में मज़ामीर वग़ैरा का शोर मचा था, तबीअत मुन्तशिर होती थी। (हज़रत महबूबे इलाही रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से) मैं ने अर्ज़ किया, हुज़ूर ! मैं आप के दरबार में हाज़िर हुआ हूँ,

इस शौर व शग़ब से मुझे नजात मिले।

जैसे ही पहला क़दम रोज़ए मुबारक में रखा है कि मालूम हुआ कि सब एक दम चुप हो गए। मैं ने समझा कि वाक़ई सब लोग ख़ामोश हो गए। क़दम दरगाह शरीफ़ से बाहर निकाला फिर वही शोरो गुल था। फिर अन्दर क़दम रखा फिर वही ख़ामोशी।

मालूम हुआ कि यह सब हज़रत का तसर्रुफ़ है। यह बय्यन करामत देख कर मदद मांगनी चाही। बजाए हज़रत महबूबे इलाही रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के नामे मुबारक के या ग़ौसाह ज़बान से निकला।

हज़रात! मालूम हुआ कि किसी भी मज़ार पर हाज़िरी दी जाए तोअपने पीर के तवस्सुल से ही साहिबे मज़ार से अर्ज़ किया जाए और दुआ मांगी जाए तो यक़ीनन साहिबे मज़ार करम फ़रमाएंगे और हाज़िरी मक़बूल हो जाएगी। और यही राह, राहे आला हज़रत है।

यह रास्ता सीधा रास्ता है नजात के दर से जा मिलेगा
तरीक़े अहमद रज़ा पे चलिये नबी मिलेंगे ख़ुदा मिलेगा

(सय्यद मोहम्मद अशरफ़ बरकाती मारेहरा)

दरबारे ख़्वाजा में लार्ड करज़न की हाज़िरी

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दरे अक़दस पर हिन्दूस्तान का वायसराए लार्ड करज़न भी 1902 ई. में हाज़िर हुआ।

मज़ारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर हर मज़हब व क़ौम की हाज़िरी और हर क़ौम के लोगों में हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मक़बूलियत और आप के दरबार का शाहाना रोअब व जलाल और शान व शौकत को देख कर अपने ख़यालात का इज़हार इस तरह किया और लिखा है।

लार्ड करज़न लिखता है कि मैं ने हिन्दूस्तान में एक क़ब्र को हुकूमत करते देखा है।

(मोईनुल अरवाह, स. 244)

ख़लीफ़ए आला हज़रत, हज़रत बुरहाने मिल्लत फ़रमाते हैं :

मिस्कीन व तवंगर सब यकसां जज़्बात से खिंचे आते हैं
एक क़ब्र में सोने वाले का इन्सानों पे क़ब्ज़ा देख लिया

हज़रात! जिस तरह हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का फ़ैज़ व करम आपकी ज़ाहिर हयात में जारी व सारी था कि सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी और सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश को अपनी रूहानी ताक़त से हिन्दूस्तान का बादशाह बनाया और जोगी अजयपाल और रामदेव महन्त जैसे जादूगरों को अपनी रूहानी कुव्वत से कुफ़्र व शिर्क की नजासत से निजात दिलाकर इस्लाम व ईमान की अबदी नेअ़मत व दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया। इसी तरह आज भी रूहानी तौर पर हिन्दूस्तान की सलतनत आपके तसर्रुफ़ में है। इसी सबब से आपको सुल्तानुल हिन्द के लक़ब से याद

किया जाता है।

जिस को भी यहाँ देखो ख़्वाजा से अक़ीदत है
अजमेर के राजा की हर दिल पे हुकूमत है

सुल्तानुल हिन्द बनाके तुम्हें भेजा मदीना वाले ने
सदा ऊँचा तेरा झंडा मोईनुद्दीन अजमेरी

हमारे ख़्वाजा का उर्स मुबारक

हमारे ख़्वाजा का उर्स मुबारक 6 रजब शरीफ़ को हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का उर्स शरीफ़ होता है। 6 रजब शरीफ़ को उर्से मुबारक के मौक़े पर रहमतें और बरकतें ज़ाहिर तौर पर जो महसूस भी होती हैं, हर ज़ाइर पर बरस्ती नज़र आती हैं और उस साअते सईद में हर शख़्स अपनी मुराद हासिल करता नज़र आता है।

उर्से ख़्वाजा और उर्से रज़ा की बरकतें

मशहूर आलिम बुज़ुर्ग, वलिये कामिल हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अजमेर शरीफ़ में उर्स के मौक़े पर इरशाद फ़रमाया कि:

उर्से ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में हाज़िरी देने वाला साल भर तक बे हिसाब रोज़ी व दौलत पाता रहेगा और उसकी रोज़ी व दौलत में साल भर तक कोई कमी नहीं आएगी। उर्से मुबारक में हाज़िर होने वालों के लिये हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह से यह इकराम व तोहफ़ा नसीब होता है।

और उर्से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में हाज़िर होने वाले का ईमान ताज़ा और मज़बूत रहेगा।

इस लिये हर सुन्नी मुसलमान को चाहिये कि मुशफ़िक़ व महरबान मोहसिने आज़म हुज़ूर ख़्वाजए आज़म सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आक़ाए नेअ़मत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के उर्स की हाज़री को लाज़िम कर ले और उस पर मुदावमत करता रहे।

अजमेर के आशिक़ हैं ख़ादिम हैं बरैली के
यह दर भी हमारा है वह दर भी हमारा है

(राज़ इलाहआबादी)

हर महीने की छटी शरीफ़

हर महीने की छः तारीख़ को आशिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की छटी शरीफ़ के नाम से याद करते और मनाते हैं। हर महीने की छः तारीख़ को अजमेरे मुक़द्दस में आशिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दरे दौलत पर हाज़िर होकर या हाज़िर नहीं हो सके

तो अपने घरों में, मस्जिदों में अपने करीम व रहीम ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के नाम की फ़ातिहा दिलाते हैं और हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की गुलामी और वफ़ादारी का सुबूत पेश करते हैं और अताए रसूल हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की दुआओं से मन की मुरादें भी हासिल करते नज़र आते हैं।

इरादे रोज़ बनते हैं और बनके टूट जाते हैं
वही अजमेर जाते हैं जिसे ख़्वाजा बुलाते हैं
जिसे चाहा दर पे बुला लिया, जिसे चाहा अपना बना लिया
यह बड़े करम के हैं फ़ैसले यह बड़े नसीब की बात है

बेकस की फ़रियाद! मुशिफ़क़ व महरबान बन्दा नवाज़, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बारगाह में:

बगरदाबे बला उफ़तादा कश्ती, ज़ईफ़ाने शिकस्ता रा तू पुश्ती
बहक़्क़े ख़्वाजए उस्माने हारून, मदद कुन या मोईनुद्दीन चिश्ती

परदेस में हूँ मौला कोई नहीं है हामिल
बे आसरा तुम्हारा बन्दा नवाज़ ख़्वाजा
सारा चमन मुख़ालिफ़ सारी फ़ज़ा है दुश्मन
कोई नहीं सहारा बन्दा नवाज़ ख़्वाजा
कहते हैं सब भिकारी ख़्वाजा के दरका मुझको
रखियो भरम ख़ुदारा बन्दा नवाज़ ख़्वाजा
गुलामे क़ादरी हूँ अर्ज़े चिश्ती है वतन मेरा
अता कर ग़ौस का सदक़ा मोईनुद्दीन अजमेरी

ऐ हमारे ख़्वाजा वह दो कि मेरे घर भर का भला हो

(अनवार अहमद क़ादरी)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे कराँ के लिये

(7)

रजब शरीफ़

तीसरा जुमा .... पहला बयान

मेअ़राजुन्नबी

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝

तर्जमा : पाकी है उसे जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम से, मस्जिदे अक़्सा तक। जिस के गिर्द इगिर्द (आस पास) हम ने बरकत रखी कि हमउसे अपनी अज़ीम निशानियाँ दिखाएं। बेशक वह सुनता देखता है। (पारा 15, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

वह सरवरे किशवरे रिसालत जो अर्श पर जलवा गर हुए थे
नए निराले तरब के सामां अरब के मेहमान के लिये थे

यही समां था कि पैके रहमत ख़बर यह लाया कि चलिये हज़रत
तुम्हारी ख़ातिर कुशादा हैं जो कलीम पर बन्द रास्ते थे

बढ़ ऐ मुहम्मद ! क़रीं हो अहमद ! क़रीब आ सरवरे मुमज्जद
निसार जाऊँ यह क्या निदा थी, यह क्या समां था, यह क्या मज़े थे

तबारकल्लाह शान तेरी तुझी को ज़ेबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वह जोशे लन तरानी कहीं तक़ाज़े विसाल के थे

नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत, रज़ा पे लिल्लाह हो इनायत
उसे भी इन ख़िलअतों से हिस्सा जो ख़ास रहमत के वां बटे थे

और फ़रमाते हैं :

किस को देखा यह मूसा से पूछे कोई
आँख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

शबे असरा के दूल्हा पे दाइम दुरूद
नोशए बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम

और मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बना आसमां मन्ज़िल इब्ने मरयम
गए ला मकां ताजदारे मदीना

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : आज के बयान का मौज़ूअ है मेअराजे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस लिये कि यह मुबारक महीना रजब शरीफ़ का है और इसी महीने की 27 वीं शब में अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मेअराज शरीफ़ अता किया।

इन्शाअल्लाह आज हम आप के सामने अपने आक़ा मेअराज के दूल्हा मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मेअराज शरीफ़ के हवाले से गुफ़्तुगू करेंगे। हम अहले सुन्नत ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के ग़ुलामों का ईमान है और हम दिल व जान से तस्लीम भी करते हैं कि हमारे हुज़ूर, सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला ने अपने ख़ास करम व इनायत से जो मेअराज की नेअमत अता की है वह आलमे बेदारी और जिस्मे अनवर के साथ मेअराज का शरफ़ हासिल हुआ। फ़र्श से अर्श तक जाना और फिर आन की आन में वापस तशरीफ़ ले आना जब कि ज़न्जीर भी हिलती रही और बिस्तर भी गरम रहा।

मेअराज शरीफ़ हमारे सरकार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मोअजिज़ात में से एक अज़ीमुश्शान मोअ़जिज़ा है और ख़ुसूसी एजाज़ है और नबी के मोअ़जिज़ा पर हमारा ईमान है और मोअ़जिज़ा हक़ीक़त में अल्लाह तआला की क़ुदरत से ज़ाहिर होता है। क़ुरआन फ़रमाता है : إِنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

बेशक अल्लाह हर शै पर क़ादिर है।

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब याद कर लो ! अगर कोई काम वासिते के बग़ैर आदम के ख़िलाफ़ अल्लाह तआला की क़ुदरत से ज़ाहिर हो तो उसे आयत कहते हैं। यानी अल्लाह तआला की निशानी कहते हैं जैसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का वुजूदे मस्ऊद जो बिन मां बाप के होना और हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का बग़ैर मां के वुजूद में आना और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बग़ैर बाप के पैदा होना। क़ुरआने पाक फ़रमाता है :

لِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ (पारा 3, रुकू 3)

हज़रात ! यह सारे उमूर (काम) अल्लाह तआला की क़ुदरत से ज़ाहिर हुए। अल्लाह तआला की आयत यानी निशानी हैं और अगर कोई अमल आदत के ख़िलाफ़ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ज़ाहिर हो तो उसे मोअ़जिज़ा कहते हैं जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा का सांप बन जाना, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दों को ज़िन्दा करना, मादर ज़ाद अन्धों और कोढ़ियों का हाथ फेर ने से शिफ़ा पा जाना और हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

का आसमान के चाँद का दो टुकड़े फ़रमाना। मक़ामे सहबा में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये सूरज का पलट आना, कंकरियों से कलमा पढ़वाना, दरख़्त को अपने पास बुला लेना और अपनी नवाज़ी उंगलियों से पानी का चश्मा जारी करना वग़ैरहुम।

और अगर कोई अमल आदत के ख़िलाफ़ वली से ज़ाहिर हो तो उसे करामत कहते हैं जैसे हम क़ादरियों के पीर, पीराने पीर, रौशन ज़मीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक वक़्त में सत्तर मुरीदों के घर जाकर इफ़्तार करना, बारह साल की डूबी हुई कश्ती को तिराना वग़ैरहुम और हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अना सागर को एक प्याले में भर लेना। आन की आन में अजमेर शरीफ़ से देहली जाना और अपने मुरीद व ख़लीफ़ा की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करना वग़ैरह। अल्लाह तआला की आयत हो या नबी का मोअजिज़ा या वली की करामत सब ख़ुदाए तआला की क़ुदरत से ज़ाहिर होते हैं। अब अगर कोई बद नसीब अल्लाह तआला की आयत या नबी का मोअजिज़ा या वली की करामत का इनकार करे तो हक़ीक़त में वह अल्लाह तआला की क़ुदरत का इनकार करता है। इस लिये कि यह सारे उमूर (काम) अल्लाह तआला की क़ुदरत से ज़हूर वज़ीर होते हैं।

आज कल कुछ अक़्ल के गुलाम वह बात जो उन की अक़्ल में न आए उससे इनकार कर देते हैं और कहते हैं कि हम उसे नहीं मानेत जो हमारी अक़्ल में न आए और मेअराज शरीफ़ का वाक़िआ भी हमारी अक़्ल और समझ में नहीं आता इस लिये हम जिस्मानी मेअराज को तस्लीम नहीं करते। हालांकि हक़ीक़त यह है कि मेअराज शरीफ़ हमारे प्यारे आक़ा नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का रौशन तरीन मोअजिज़ा कहते हैं। मोअजिज़ा कहते ही उसे हैं जो अक़्ल और समझ में न आ सके और जो अक़्ल में आ जाए वह मोअजिज़ा नहीं हो सकता।

हज़रात ! मेअराज शरीफ़ का इनकार करना खुली हुई गुमराही और बद दीनी है। हमारे सरकार मदीने के ताजदार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिह वसल्लम ने जब मेअराज की सुबह को वाक़िअए मेअराज बयान फ़रमाया तो जहन्नमियों के सरदार अबू जहल ने मेअराज का इनकार किया और ख़ूब मज़ाक़ बनाया तो अल्लाह तआला के इताब और सख़्त पकड़ का नज़ारा करो कि अबू जहल जहन्नमी और ज़िनदीक़ हुआ। और जब मेअराज की सुबह को जन्नतियों के सरदार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वाक़िए मेअराज सुना तो उसी वक़्त तस्दीक़ फ़रमाई और दिल व जान से सच जाना और तस्लीम किया तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ले ख़ास और अज़ीम इनआम व इकराम का भी नज़ारा देखो कि उन को सिद्दीक़ के आला और मुअज़्ज़ज़ लक़ब से नवाज़ा गया। अब अगर कोई बद नसीब वाक़िअए मेअराज का इनकार करता है तो वह अबू जहली गुलाम होने का सुबूत देता है और जो ख़ुश नसीब वाक़िअए मेअराज को सही और दुरुस्त तस्लीम करता है तो वह सिद्दीक़ी गुलाम होने का सुबूत पेश करता है।

दुरूद शरीफ़ :

मेअराजे जिस्मानी : सहाबए किराम और ताबेईने इज़ाम की कसीर तादाद और मज़हबे जमहूर यह है कि हमारे प्यारे आक़ा शबे असरा के दूल्हा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मेअराज शरीफ़ आलमे बेदारी में जिस्मानी थी।

(रूहुल मआनी, जि. 8, स. 7, मिरक़ात, जि. 11, स. 138)

हज़रात ! आलमे बेदारी में जिस्मानी मेअराज शरीफ़ पर बे शुमार दलाइल मौजूद हैं हम यहाँ पर कुछ दलाइल पेशे ख़िदमत कर रहे हैं बग़ौर मुलाहज़ा कीजिये।

(1) अल्लाह तआला का इरशादे पाक : اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ (पारा 16, रुकू 1) फ़रमाना लफ़्ज़ 'अब्द' कुरआन शरीफ़ और हदीस शरीफ़ या अरब की बोली में सिर्फ़ रूह को नहीं कहा जाता है या सिर्फ़ जिस्म के लिये नहीं बोला जाता है बल्कि रूह और जिस्म के मजमूआ को कहा जाता है इस लिये लफ़्ज़ अब्द इस्तिमाल करना इस बात की दलील है कि मेअराज शरीफ़ जिस्मानी थी।

(2) हदीस शरीफ़ में है कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये बुराक़ की सवारी पेश की गई जिस पर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सवार हो कर तशरीफ़ ले गए। (बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 1, स. 91, मिश्कात, स. 527)

रूह को सवारी की हाजत नहीं

हज़रात ! बुराक़ का सवारी बनना और हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बुराक़ पर सवार होना इस बात की दलील है कि मेअराज शरीफ़ जिस्मानी थी।

(3) अल्लाह तआला का फ़रमान : ''असरा'' रात की सैर को कहते हैं ''इसरा'' का इतलाक़ उस सैर पर नहीं होता जो ख़्वाब में हो बल्कि ''असरा'' का इतलाक़ उस सैर पर होता है जो रात के वक़्त आलमे बेदारी में हो इस लिये ''असरा'' का इस्तिमाल होना इस बात की दलील है कि मेअराज शरीफ़ जिस्मानी थी।

(4) अल्लाह तआला का फ़रमान : مَازَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى

तर्जमा : आँख न किसी तरफ़ फिरी, न हद से बढ़ी। (पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

''बसर'' का लफ़्ज़ जिस्मानी निगाह के लिये बोला जाता है ख़्वाब में देखने को बसर का लफ़्ज़ नहीं बोला जाता। इस लिये ''बसर'' के लफ़्ज़ का इस्तिमाल होना इस बात की दलील है कि मेअराज शरीफ़ जिस्मानी थी।

(5) मेअराज शरीफ़, हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अज़ीमुश्शान मोअजिज़ा है अगर ख़्वाब में मेअराज होती तो ख़्वाब की बात मोअजिज़ा कैसे बन जाती। मेअराज का मोअजिज़ा होना इस बात की दलील है कि मेअराज शरीफ़ जिस्मानी थी।

(6) हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिस्मानी

मेअराज का ज़िक्र किया था अगर मेअराज शरीफ़ ख्वाब की बात होती तो मक्का के काफ़िर मज़ाक़ न बनाते, तकज़ीब न करते, कुफ़्फ़ारे मक्का का इस शिद्दत से मेअराज का इनकार करना इस बात की दलील है कि मेअराज शरीफ़ जिस्मानी थी।

ऐ ईमान वालो ! ग़ौर से सुनो और मुनकिरे मेअराज शरीफ़ को दन्दां शिकन जवाब दो कि अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को आलमे बेदारी में जिस्मे अक़दस और रूहे पाक के साथ अर्शे आज़म पर अपने क़ुर्बे ख़ास में बुला कर अपनी ऐन ज़ात का मुशाहदा कराया और दीदार अता फ़रमाया :

وَلَا يَخْفٰى اَنَّ الْمِعْرَاجَ فِي الْمَنَامِ اَوْبِالرُّوْحِ لَيْسَ مِمَّا يُنْكِرُ كُلَّ الْاِنْكَارِ وَالْكَفَرَةُ

اَنْكَرُوْا اَمْرَ الْمِعْرَاجِ غَايَةَ الْاِنْكَارِ بَلْ كَثِيْرٌ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ فَقَدِ ارْتَدُّوْا بِسَبَبِ ذٰلِكَ

यानी मेअराज शरीफ़ जिस्मानी थी बल्कि काफ़िरों ने बड़ी शिद्दत से इनकार कर दिया और बहुत से कमज़ोर ईमान वाले वाक़िअए मेअराज सुन कर मुरतद हो कर बे ईमान जहन्नमी हो गए

(शरह अक़ाइद नसफ़ी, स. 105)

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उफ़ रे मुनकिर यह बढ़ा जोशे तअस्सुब आख़िर
भी में हाथ से कम बख़्त के ईमान गया

उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल हम्द मैं दुनिया से मुसलमान गया

हज़रात ! हमारे आक़ा प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह नहीं फ़रमाया कि मैं ख़ुद ब ख़ुद यानी अपने आप से यह अज़ीम सफ़र तय कर के अर्श पर गया और अल्लाह तआला ने भी यह नहीं फ़रमाया कि मेरा महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुद ब ख़ुद अपने आप अर्शे आज़म पर मेरे क़ुर्ब में आया बल्कि अल्लाह तआला फ़रमाता है : سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ

(यानी पाक है वह ज़ात जो अपने ख़ास बन्दे को ले गया)

यानी ले जाने वाला अल्लाह तआला है और जाने वाले हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की ज़ात, पाक है हर इज्ज़ और नुक़्स से कमी और मजबूरी से। जब भी यह ख़याल आए कि इतना तवील सफ़र कैसे तय हुआ। तो अल्लाह तआला की क़ुदरत को देखो اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

बेशक अल्लाह हर शय पर क़ादिर है। अल्लाह तआला ले जाने की ताक़त रखता है तो उस का महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की अता से जाने की ताक़त रखते हैं और तशरीफ़ ले गए।

क़ुरआनी दलाइल : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हमारी मां हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा दोनों इन्सानी जिस्म के साथ जन्नत में रहे। अल्लाह तआला

फ़रमाता है। قُلْنَا يٰاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ

तर्जमा : और हम ने फ़रमाया ऐ आदम ! तू और तेरी बीवी इस जन्नत में रहो।

(पारा 1, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

(1) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और उन की बीवी हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा इसी जिस्म के साथ जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए।

(2) हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम इसी जिस्मे ख़ाकी के साथ आसमानों में तशरीफ़ ले गए और जन्नत में दाखिल हुए।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ٥ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ٥

और किताब में इदरीस को याद करो, बे शक वह सिद्दीक़ था, ग़ैब की ख़बरें देता और हम ने उसे बलन्द मक़ाम पर उठा लिया। (पारा 16, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

(3) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने जिस्मे ख़ाकी के साथ आसमानों में तशरीफ़ ले गए और अब भी चौथे आसमान पर जलवा फ़रमा हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ٥ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ٥

तर्जमा : और बे शक उन्होने उस को क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है। (पारा 6, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! अगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा जन्नत में रहें और आसमानों से होकर ज़मीन पर आ सकते हैं और हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम आसमानों में जा सकते हैं और फिर जन्नत में दाख़िल हो सकते हैं। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमानों में जा सकते हैं और चौथे आसमान पर हैं और फिर आसमानों से ज़मीन पर तशरीफ लाएंगे। यह अम्बियाए किराम की शान व अज़मत है। तो हमारे नबी शबे असरा के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तमाम अम्बिया से अफ़ज़ल व आला हैं तो शबे मेअराज आसमानों में तशरीफ़ ले गए जन्नत देखी, अर्शे आज़म कोअपने नूरानी क़दमों से शरफ़ याब फ़रमाया तो उस में तअज्जुब की क्या बात है

हज़रत हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बना आसमां मन्ज़िल इब्ने मरयम
गए ला मकां ताजदारे मदीना

और आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जिस को शायां है अर्शे ख़ुदा पर जुलूस
है वह सुल्ताने वाला हमारा नबी
सब से आला व औला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जवाब

वाक़िअए मेअराज की सुबह को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मेअराज की तस्दीक़ की तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने कहा कि इस पर दलील क्या है तो आप ने फ़रमाया कि जब जिब्रईल अलैहिस्सलाम सुबह व शाम और बार बार हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास सिदरा से आ सकते हैं तो हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी आसमानों पर जा सकते हैं। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 109)

हिकायत : हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अकाबिरे औलिया में से हैं उन का एक मरीद दरयाए दजला पर गुस्ल करने गया। दरया के कनारे कपड़े उतारे और खुद दरया में नहाने लगा और जब दरया से बाहर निकला तो क्या देखता है कि मैं हिन्दूस्तान में मौजूद हूँ, फिर उस ने यहाँ शादी की और औलाद हुई काफ़ी मुद्दत हिन्दूस्तान में रहा। एक दिन वह गुस्ल करने के लिये दरया पर गया और ग़ोता लगाया, जब बाहर निकला तो क्या देखता है कि वही दरयाए दजला है और उस के कपड़े दरया के कनारे मौजूद हैं जैसे उस ने पहले रखा था। कपड़े पहने और अपने शैख़ हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़ानक़ाह में हाज़िर हुआ तो देखा कि लोग अभी भी उसी नमाज़ के लिये वुज़ू कर रहे हैं। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 112)

एक सांस में हज़ार साल की इबादत

हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, जब मर्दे कामिल मक़ामे विलायत पर फ़ाइज़ होता है तो एक सांस में हज़ार साल की ताअत (यानी इबादत) कर सकता है। नीज़ बहुत से बुज़ुरगाने दीन ने एक साअत में पूरा कुरआन ख़त्म किया।

(मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 113)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़त्मे कुरआन

सर चश्मए विलायत बाबे मदीनतुल इल्म हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब एक पांव रिकाब में रखते तो कुरआन शरीफ़ पढ़ना शुरू करते और दूसरा पांव रिकाब में रखने से पहले तमाम कुरआन ख़त्म कर लेते। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 113)

अब अगर हमारे नबी, नबियुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रात के थोड़े से हिस्से में सारे आलम को देखा और ख़ल्लाक़े आलम को देख कर वापस तशरीफ़ ले आए तो तअज्जुब क्या है ? मगर मेअराज की तस्दीक़ करना और मानना ईमान वाले का हिस्सा है और न मानना, मेअराज शरीफ़ का इनकार करना मुनाफ़िक़ बे ईमान की आदत है।

मेअराज की हिकमतें

पहली हिकमत : अल्लाह तआला फ़रमाता है :

إِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ط

तर्जमा : बे शक अल्लाह ने मुसलमानों से उन के माल व जान खरीद लिये हैं, इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है। (पारा 11, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात! अल्लाह तआला ख़रीदने वाला, और मोमिन बेचने वाले हैं और मोमिन की जान व माल बिकने वाला माल। और उस की क़ीमत जन्नत है। और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस सोदे के वकीले आज़म हैं और वकील का यह काम होता है कि वह मालों को भी देखे और क़ीमत को भी देखे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया। ऐ हबीबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप ने अपनी उम्मत को भी देखा और उन की जान व माल का भी मुशाहिदा फ़रमा लिया है। आओ जन्नत को भी देख लो जो उस की क़ीमत है और ख़रीदने वाले अपने रब तआला को भी देख लो तो इस लिये अल्लाह तआला ने आप को मेअराज शरीफ़ अता फ़रमाई। (मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 92)

दूसरी हिकमत : हमारे नबी इमामुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पहले जितने नबी और रसूल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए सब का कलमा था اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه यानी मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं। मगर यह शहादत यानी गवाही सुनी हुई थी, किसी भी नबी ने अल्लाह को देखा नहीं था और शहादत की इन्तिहा, गवाही का इख़्तिताम देखने पर होती है। इस लिये ज़रूरी था कि कोई नबी इस शान का हो जो अल्लाह तआला को देख कर गवाही दे ताकि उस की गवाही पर शहादत मुकम्मल हो जाए फिर क़ियामत तक न किसी और नबी के आने की हाजत रहे और न शहादत की ज़रूरत बाक़ी रहे। इसी सबब से अलल्लाह तआला ने हमारे आक़ा करीम, इमामुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मेअराज शरीफ़ अता फ़रमाई ताकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुदाई को भी देख लें और ख़ुदाए तआला को भी देख लें और देख कर फिर गवाही दें यही वजह है कि हमारे सरकार नबियों के ताजदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद अब कोई नबी नहीं आ सकता इस लिये कि गवाही मुकम्मल हो चुकी। अल्लाह तआला को देखने वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले आए। शहादत पूरी हो गई इस लिये अल्लाह तआला ने आप को मेअराज शरीफ़ अता फ़रमाई।

तीसरी हिकमत : अल्लाह तअला ने ज़मीन व आसमान को पैदा फ़रमाया तो ज़मीन व आसमान में एक तवील बहस और मुनाज़रा हुआ। ज़मीन ने कहा ऐ आसमान मैं तुझ से बेहतर हूँ कि मुझ में शजर, हजर, चरिन्द, परिन्द हैं और मेरे दामन में रंग बिरंगे फूल हैं जो मेरी ज़ीनत हैं। आसमान ने जवाब दिया ऐ ज़मीन सुन। मुझ में चाँद, सूरज, सितारे, लोहो क़लम,

अर्श व कुर्सी हैं। ज़मीन ने कहा मुझ पर बैतुल मुक़द्दस और ख़ानए कअ़बा है। जिस की ज़ियारत अम्बिया औलिया और तमाम मुसलमान करते हैं। आसमान ने कहा मुझ में बैतुल मामूर है जिस का तवाफ़ फ़रिश्ते करते हैं आसमान ने कहा ऐ ज़मीन। मुझ में जन्नत है तो ज़मीन ने मुस्कुरा कर ख़ुशी में डूब कर अपना सर ऊँचा किया और आसमानों को मुख़ातब करके कहा ऐ आसमान सुन अगर जन्नत तुझ में है तो मालिके जन्नत अर्श की ज़ीनत महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मुझ में जलवा फ़रमा हैं।

आशिके रसूल, इमाम अहमद रज़ा आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं

ख़म हो गई पुश्ते फ़लक इस तअने ज़मीन से
सुन हम पे मदीना है वह रुतबा है हमारा

यह सुन कर आसमान ने एतिराफ़े इज्ज़ करते हुए सर झुका दिया और बारगाहे उलूहियत में अ़र्ज़ किया कि मौला अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अर्शे आज़म पर बुलाता, कि वह अपने क़दमे रहमत से नवाज़ कर शरफ़ याब फ़रमाएं, ताकि ज़मीन के सामने शर्मिन्दा होने से हम बच सकें। हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शबे मेअराज आसमानों से गुज़रे गोया अल्लाह तआला ने आसमान की दुआ को कुबूल फ़रमाया। आप को मेअराज शरीफ़ अता की।

(ख़ुलासा अज़ मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 93)

चौथी हिकमत : हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आख़री नबी और आख़री रसूल हैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) अब आप के बाद क़ियामत तक कोई नया नबी नहीं आ सकता। क़ियामत तक का ज़माना हमारे नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ही ज़माना है और यह ज़माना ऐसे है कि साइंस अपने उरूज के शबाब पर है। दिन का उजाला हो कि रात का अन्धेरा। गांव गांव, क़स्बा क़स्बा, शहर शहर, हर कूचा व बाज़ार में साइंस का कमाल नज़र आ रहा है। ऐसी हैरत में डालने वाली चीज़ें साइंस ने ईजाद की हैं कि उसे देख कर अक़्ल हैरान व परेशान है। साइंस ही की ईजाद है कि राकिट जो मिन्टों में हज़ारों किलोमीटर की दूरी पर जाकर वापस भी आ जाता है। साइंस का दावा है कि हम चाँद पर गए और फिर वहाँ से मिट्टी लेकर वापस भी आ गए अब इस साइंस के ज़माने के लिये ज़रूरी था कि अल्लाह तआला अपने आख़री नबी महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को एक ऐसा मोअजिज़ा भी अता फ़रमाए जो इस ज़माने के साइंस दानों के कमालात का भी जवाब हो और क़ियामत तक आने वाले तमाम साइंस दानों का भी जवाब हो। इसी लिये अल्लाह तआला ने अपने आख़री नबी, नबियुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मेअराज शरीफ़ का मोअजिज़ा अता फ़रमाया ताकि चाँद पर जाने का दावा करने वाले यह देख लें कि हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम चाँद को भी गर्दे राह बना कर और सातों आसमानों को अपना ज़ीना बना कर अर्शे आज़म जलवा गर हुए। फिर ला मकां हाज़िर हुए और आन की आन में वापस तशरीफ़ लाए तो ज़न्जीर भी हिलती रही और बिस्तर भी गर्म रहा और वुज़ू का पानी जो गिरा था बह रहा था। साइंस के कमाल वाले यह देख कर हैरान हैं और इन्शाअल्लाह तआला क़ियामत तक आने वाले साइंस दां हैरान रहेंगे कि अल्लाह तआला ने जहाँ अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दम को पहुँचाया है वहाँ तक साइंस वालों की अक़्ल भी नहीं पहुँच सकती।

पांचवीं हिकमत : إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ O (पारा 30, सूरह कौसर, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

ज़मीन से आसमान तक, फ़र्श से अर्श तक कुल आलम का कब्ज़ा व इख़्तियार अल्लाह तआला ने अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अता फ़रमा दिया। यही वजह है कि जन्नत के दरवाज़े पर और जन्नत के पत्ता पत्ता और डाली डाली पर लिखा है لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ

यानी तमाम आलम का, सब चीज़ों का, ज़र्रे ज़र्रे का पत्ते, पत्ते का, क़तरे क़तरे का, ख़ालिक़ यानी पैदा करने वाला ख़ुदाए तआला है और यह तमाम आलम का, सब चीज़ों का, ज़र्रे ज़र्रे का, पत्ते पत्ते का, क़तरे क़तरे का, मालिक व मुख़्तार अल्लाह तआला ने अपनी अता से अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बनाया है।

ख़ालिक़े कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनों जहाँ हैं आप के क़ब्ज़ा व इख़्तियार में

तो अल्लाह तआला ने चाहा कि जिस प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़र्श से अर्श तक कुल आलम का मालिक बनाया है तो शबे मेअराज महबूबे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बुला कर सेर करा कर, मालिक को उस की मिलकियत दिखा दी जाए इसी लिये अल्लाह तआला ने आप को मेअराज शरीफ़ अता फ़रमाई।

मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा तक

ऐ ईमान वालो ! हमारे आक़ा सय्यिदुल अम्बिया महबूबे किबरिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बे शुमार फ़ज़ाइलो कमालात और मोअजिज़ात में से रोशन तरीन कमाल और मोअजिज़ा, मेअराज शरीफ़ है। अल्लाह तआला ने असरा और मेअराज से हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जो ख़ुसूसियत और फ़ज़ीलत अता फ़रमाई किसी नबी और रसूल को वह मक़ाम बलन्द नसीब न हुआ। कुरआने पाक में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ
بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ O

तर्जमा : पाकी है उसे जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम से, मस्जिदे अक़सा तक। जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानियाँ दिखाएं, बे शक वह सुनता देखता है। (पारा 15, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

मेअराज के तअल्लुक़ से अक़ीदा

मक्का शरीफ़ से मस्जिदे अक़सा तक इसका का सुबूत कुरआन शरीफ़ से है। इस का मुनकिर काफ़िर है और मस्जिदे अक़सा से आसमानों तक की सेर का सुबूत अहादीसे मशहूरा से है इस का मुनकिर मुबतदअ और फ़ासिक़ है और दीगर अजीब व ग़रीब अहवाल का सुबूत हदीसों से है। इस का मुनकिर जाहिल और महरूम है। (मदारिजुन्नब्वत, जि. 1, स. 287)

असरा और मेअराज : अगरचेह बोल चाल में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के उस पूरे सफ़र यानी मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा और वहाँ से आसमानों और ला मकां तक तशरीफ़ ले जाने को मेअराज कहा जाता है। लेकिन मुहद्देसीने किराम और मुफ़स्सिरीने इज़ाम की इस्तिलाह में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा तक का सफ़र असरा कहा जाता है और मस्जिदे अक़सा से आसमानों की तरफ़ उरूज फ़रमाना मेअराज कहलाता है इस के लिये अहादीसे सहीहा में मेअराज और उरूज के अलफ़ाज़ मिलते हैं

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मस्जिदे हराम से बैतुल मुक़द्दस तक का सेर असरा है और बैतुल मुक़द्दस से आसमानों की सेर मेअराज है और आसमानों से मक़ाम क़ाबा क़ौसैन तक एराज है। (फ़वाइदुल फ़वाइद, जि. 4, स. 358)

आयते मेअराज में फ़वाइद और निकात

इस आयते करीमा में हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सफ़रे मेअराज को बयान किया गया है। सफ़र नामा में सात चीज़ों का बयान ज़रूरी होता है (1) सफ़र किस ने कराया (2) सफ़र किसने किया (3) सफ़र कहाँ से किया (4) सफ़र कहाँ तक किया (5) सफ़रात में हुआ या दिन में (6) सफ़र कितनी देर में किया (7) सफ़र किस लिये किया।

इस आयते मुबारका में अल्लाह तआलाने बड़ी तकरीम के साथ इन सात चीज़ों क़ाज़िक्र फ़रमाया दिया (1) सफ़र किस ने कराया ? फ़रमाया। सुब्हान ने। (2) सफ़र किस ने किया? फ़रमाया उस के अब्दे ख़ास यानी ख़ास बन्दे मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने। (3) सफ़र कहाँ से किया ? مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ मस्जिदे हराम से (4) सफ़र कहाँ तक किया ? फ़रमाया। إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى मस्जिदे अक़सा तक। (5) सफ़र किस वक़्त हुआ ? फ़रमाया। इसरा रातों रात ले गया। (6) सफ़र कितनी देर में हुआ ? फ़रमाया लैलन रात के थोड़े से हिस्से में। (7) सफ़र किस लिये कराया ? फ़रमाया: لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا ताकि दिखाएं हम उन को अपनी निशानियाँ।

नुकता : ऐ ईमान वालो ! आम तौर से होता यह है और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी में हम आप

देखते रहते हैं कि कामयाबी का सफ़र अगर बाप करता है तो बेटा बयान करता है। पीरो मुर्शिद सफ़र करता है तो ख़लीफ़ा या मुरीद बयान करता है। उस्ताद सफ़र करता है तो शागिर्द बयान करता है। हाकिम सफ़र करता है तो महकूम बयान करता है। बादशाह सफ़र करता है तो वज़ीर बयान करता है मगर उस सफ़रे मेअराज में हमारे तुम्हारे नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व शौकत का क्या कहना कि सफ़र हमारे प्यारे नबी, बन्दए ख़ास सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने किया और बयान सुब्हान यानी अल्लाह तआला ने किया।

ख़ूब फ़रमाया प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा आशिक़े सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने।

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा

दुरूद शरीफ़ :

मेअ्राज किस मक़ाम से हुई

हज़रत इब्ने हजर रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने मुख़्तलिफ़ रिवायतों में ततबीक़ फ़रमाई फिर बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी चचा ज़ाद बहन हज़रत उम्मेहानी के घर आराम फ़रमा थे यानी मक़ाम उम्मे हानी से मेअराज की इब्तिदा हुई। (सीरते हलबी, स. 405, तफ़सीर इब्ने कसीर, जि. 2, स. 254, अत्तवक़ातुल कुबरा, जि. 1, स. 214)

मेअ्राज शरीफ़ का महीना और तारीख़

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि जानना चाहिये कि दयारे अरब में लोगों के दरमियान मशहूर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मेअराज शरीफ़ 27 रजबुल मुरज्जब को हुई। (मा सबत बिस्सुन्नह, स. 139)

''सुब्हाना'' अल्लाह ने इस अज़ीम सफ़र को ''सुब्हाना'' से शुरु फ़रमाया जो तअज्जुब के मक़ाम में इस्तिमाल किया जाता है चूँकि सफ़रे मेअराज भी एक अजीब व ग़रीब सफ़र था जो इन्सानी अक़्ल व फ़हम से बलन्द तर था। यही वजह थी जो कुफ़्फ़ारे मक्का ने इनकार कर दिया तो अल्लाह तआला ने ''सुब्हाना'' फ़रमा कर यह बता दिया कि सफ़रे मेअराज एक अजीब व ग़रीब सफ़र है मगर उस ज़ात ने यह सफ़र कराया जो ''सुब्हाना'' है। इज्ज़ो ऐब और मजबूरी से पाक है उस के यहाँ कोई मुश्किल नहीं वह हर शय पर क़ादिर है। लेकिन काफ़िर क्यों इनकार करते हैं?

الَّذِيْٓ اَسْرٰى लफ़्ज़ असरा ज़बाने अरब में रात की सैर को कहते हैं यानी ज़ात ने रात को सैर कराई, यहाँ सैर कराने वाला, अल्लाह तआला है। यानी अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को रात में सैर कराने ले गया।

बि अबदिही में जो लफ़्ज़ ब है यह मुसाहेबत के लिये है। यानी सेर कराने वाला, सेर कराने वाले के साथ था और यह सोहबत व मईयत कैसी थी जो बयान में नहीं आ सकती और बि अबदिही में ही ज़मीर है। उस का मरजअ ज़ाते रब तआला है और अबदि ख़ास हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ात है। सिर्फ़ अब्द होना और बात है अबदिही होना बड़े कमाल का दरजा रखता है। अब्द दीगर अब्दुहू चीज़े दीगर। हज़रात अब्द का ज़िक्र हो रहा है कोई आम अब्द नहीं है। अल्लाह तआला का ख़ास अब्द है। जिस की अब्दियत पर उसे नाज़ है।

अल्लाह तआला अपनी उलूहियत में यकता और तन्हा है तो उस का ख़ास अब्द भी अपनी अब्दियत में यकता और तन्हा है।

आशिके मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

यही बोले सिदरा वाले चमने जहाँ के थाले
सभी मैंने छान डाले तेरे पाए का न पाया
तुझे यक ने यक बनाया तुझे यक ने यक बनाया

दुरूद शरीफ़ :

''लैलन'' में जो तन्वीन नकेरहा है बराए तक़लील व तहसीर है यानी मेअराज सारी रात नहीं हुई बल्कि रात के थोड़े से हिस्से में इतना तवील और अज़ीम सफ़र हुआ है।

हज़रत इमाम सुबकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं उस अज़ीम सफ़र पर सिर्फ़ एक लहज़ा यानी एक लम्हा लगा है और यह कोई तअज्जुब की बात नहीं। इस लिये कि अल्लाह तआला क़ादिर है कि क़सीर (छोटे) ज़माना को तवील (बड़ा) कर दे और तवील ज़माना को क़सीर कर दे। (सीरते हलबी, स. 414)

हज़रात ! यह सैर ख़ास निशानियाँ दिखाने के लिये थीं और देखना दिखाना अच्छी तरह रात में नहीं बल्कि दिन में होता है तो फिर रात में सेर क्यों कराई और वह रात यानी सत्ताइसवीं रात जिस में चाँद नज़र ही नहीं आता मतलब यह हुआ कि न सूरज की रौशनी में और न चाँद की चाँदनी में सेर कराई। गोया अल्लाह तआला यहाँ पर भी अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वल्लम की शान व शौकत को बताना चाहता है कि ऐ दुनिया वालो? देख लो और अच्छी तरह से जान लो कि हमारा महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम न चाँदनी के मोहताज हैं और न सूरज की रौशनी के, बल्कि चाँद की चाँदनी और सूरज की रौशनी हमारे मदीने वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर का सदक़ा हैं।

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَ يَاسَيِّدَ الْبَشَرْ
مِنْ وَّجْهِكَ الْمُنِيْرُ لَقَدْ نُوِّرَ الْقَمَرْ
لَا يُمْكِنُ الثَّنَاءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ
بعد از خدا بزرگ تُوئی قِصّہ مُختصر

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

दुरूद शरीफ़ :

मिनल मस्जिदिल हराम : मस्जिदे हराम मक्का शरीफ़ की वह इज़्ज़त वाली मस्जिद है जिस के बीच में बैतुल्लाह शरीफ़ वाक़ेअ़ है मगर मस्जिद से मुराद मक्का शरीफ़ है न ख़ुद मस्जिद शरीफ़ क्यों कि मेअराज हज़रत उम्मे हानी के घर से हुई जो हरम शरीफ़ में है।

(हाशिया जलालैन, स. 228)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हर नबी अलैहिस्सलाम को मोअजिज़ा अता फ़रमाया और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सिर्फ़ मोअजिज़ा अता नहीं किया बल्कि हमारे आक़ा प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सर से पैर तक सरापा मोअजिज़ा बनाया। हर नबी अलैहिस्सलाम को कमाल अता किया गया और हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सरापा कमाल बनाया गया।

तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को जितने मोअजिज़ा और कमालात दिये गए वह सारे मोअजिज़ात और कमालात बल्कि उस से कहीं ज़्यादा हमारे आक़ा नबिये पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तन्हा अता किये गए।

फ़ारसी.........................

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह !! क्या शान है हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मगर मानेगा वही जो ईमान वाला है।

सरकार आला हज़रत आशिक़े मदीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं।

मोमिन वह है जो उन की इज़्ज़त पे मरे दिल से
ताज़ीम भी करता है नजदी तो मरे दिल से

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर से सुनो ! एक दिन की बात कि आसमाने रुश्दो हिदायत के चाँद तारे, सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन आपस में बैठ कर अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के शान व अज़मत का तज़किरा फ़रमा रहे थे। कि गुलामों के दरमियान आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हुए। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सुना कि एक सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लील बनाया। दूसरे सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमा रहे हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलीम बनाया गया। तीसरे सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बोले। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को कलिमतुल्लाह बनाया। चौथे सहाबी कहने लगे। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सफ़ियुल्लाह बनाया है। हमारे सरकार मदीने के ताजदार सय्यिदुल अबरार व अख़यार अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। मैं ने तुम्हारी गुफ़्तुगू सुनी और तुम लोगों ने सच कहा है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़लीलुल्लाहु हैं। मूसा अलैहिस्सलाम कलीमुल्लाह हैं। ईसा अलैहिस्सलाम रूहुल्लाह हैं। आदम अलैहिस्सलाम सफ़ियुल्लाह हैं।
اَلاَ وَاَنَا حَبِيْبُ اللهِ मगर ग़ौर से सुन लो कि मैं हबीबुल्लाह हूँ। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। (मिश्कात शरीफ़, स. 505)

आशिक़े रसूल सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

सब से आला व औला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी
अपने मौला का प्यारा हमारा नबी
दोनों आलम का दूल्हा हमारा नबी

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हर नबी को उन के मरातिब व दरजात के मुताबिक़ मेअराज की दौलत से सरफ़राज़ किया।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मेअराज

अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को यह मरतबा और मक़ाम अता फ़रमाया कि उन की पैदाइश से क़ब्ल उन की ख़िलाफ़त व हुकूमत के चरचे किये फिर उन को अपनी कुदरते कामिला से पैदा फ़रमा कर फ़रिश्तों पर फ़ज़ीलत बख़्शी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को तमाम अशया के नाम सिखाए। मस्जूदे मलाइका बना कर ताजे ख़िलाफ़त उन के सर पर रखा। मकीने जन्नत होने का शरफ़ बख़्शा और अबुल बशर होने का एज़ाज़ अता फ़रमाया, यह है हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मेअराज।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मेअराज

अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यह मरतबा अता किया कि आप को एक पत्थर पर खड़ा किया गया और फिर उन के लिये ज़मीन व आसमान के तमाम हिजाबात उठा दिये गए। हत्ता कि अर्शे आज़म से ज़मीन के नीचे के हिस्से तक हर चीज़ का मुशाहिदा करा दिया गया यहाँ तक कि आप ने बहिश्ते बरीं में अपने महल को भी देख लिया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नारे नमरूद को गुलज़ार किया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपना घर कअबा तामीर करने का शरफ़ अता फ़रमाया। यह थी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मेअराज।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मेअराज

कुरआने मजीद ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मेअराज को इस तरह बयान फ़रमाया।

وَلَمَّا جَاءَ مُوسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ (पारा 9, रुकू 7)

यानी जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने हम कलामी के शरफ़ से नवाज़ा तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करते हैं।

कुरआन शरीफ़ फ़रमाता है : قَالَ رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْكَ قَالَ لَنْ تَرٰىنِیْ (पारा 9, रुकू 7)

यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की, ऐ रब मैं तुझे देखना चाहता हूँ तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया। ऐ मूसा तुम मुझे हर गिज़ नहीं देख सकते।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब अल्लाह तआला का दीदार करना चाहते हैं तो हुक म होता है कोहे तूर पर आओ चालीस दिन रोज़े रखो, दीदार की कैफ़ लिये, इश्क़ व मस्ती में जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे तूर पर पहुँचे तो हुक्म हुआ जो कुरआन बयान करता है

فَاخْلَعْ نَعْلَیْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ (पारा 16, रुकू 10)

यानी नअलैन उतारिये बेशक आप तवा के पाक दामन में हैं। हज़रत मूसा कोहे तूर पर जलवा फ़रमा हैं। पूरी पूरी रात क़याम में गुज़ारते हैं। क्यों ? दीदारे रब तआला के लिये।

चालीस दिन का रोज़ा रखा : क्यों ?

रब तआला का दीदार हो जाए। नअलैन उतरवाया जाता है क्यों ? इस लिये कि रब तआला का दीदार करना है तो नअलैन उतारिये। यह सब कुछ इस लिये हो रहा है ता कि रब तआला का दीदार हो जाए। दीदार की अजीब व ग़रीब कैफ़ियत है मौला सब कुछ गवारा है गर दीदार करा दे।

हर जफ़ा हर सितम गवारा है
इतना कह दे कि तू हमारा है

सदा पर सदा लगाए जा रहे हैं इश्क़ बढ़ता जा रहा है।महब्बत मोजें ले रही है :

رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْكَ

ऐ मेरे रब ! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूँ तो जवाब मिलता है : ''लन तरानी'' हरगिज़ तू मुझे नहीं देख सकता यानी फ़रमान का मक़सद है किमूसा मैं द़ीदार करासकता हूँ मगर तुम में देखने की ताक़त नहीं है।

नुकता : इस से साफ़ ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला का दीदार मुमकिन है यानी हो सकता है। गोया इशारों, इशारों में बताया जा रहा है कि मूसा तुम्हारी आँखों में वह ताक़त ही नहीं दी है जिस से तुम मुझे देख सको। मेरी ज़ात एक है मैं अहद हूँ और मैं ने एक ही ज़ात को वह ताक़त दी है। जो मेरी ज़ात को देख सके वह मेरे महबूब, अहमद व मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ात है।

यह सब कुछ इशारों , इशारों में बताया जा रहा है मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तलब जारी है जिस के मअना यह हैं कि या रब तआला मुझ में हौसला नहीं है मगर तेरा करम सब कुछ कर सकता है अल ग़रज़ इधर से तलब ''रब्बी अरिनी'' रही और उधर से जवाब लन तरानी ही रहा। इश्क़ो सफ़ा के पैकर, इश्क़ो वफ़ा के मुजस्समा के अरमान की तकमील के लिये रहमत महरबान हुई इरशाद हुआ। मूसा तूर पहाड़ी को ग़ौर से देखो मैं अपनी तजल्ली पहाड़ी पर डालता हूँ। (तलख़ीस पैग़ामे मेअराज, स. 188)

कुरआन बयान फ़रमाता है : فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ج (पारा 9, रुकू 7)

यानी अल्लाह तआला ने जो पहाड़ी पर तजल्ली फ़रमाई तो पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बे होश होकर गिर पड़े अब एक सवाल है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बे होश हो गए तो देखा किस को ? और अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कुछ नहीं देखते तो बे होश कैसे पड़ते ? इस से साफ़ ज़ाहिर हो गया कि कुछ तजल्ली ज़रूर हज़रत मूसा ने देखी थी जभी तो बे होश हुए अब वह कुछ तजल्ली क्या थी और कितनी थी ?

अल्लाह तआला की ज़ात की तजल्ली नहीं थी बल्कि ज़ाते बारी तआला की सिफ़त की तजल्ली थी और कितनी थी ? तो सुई के सूराख़ के हज़ार हिस्से से भी कम थी।

जब इतनी सिफ़त की तजल्ली का असर यह हुआ कि बे होश हो गए तो अगर अल्लाह तआला की सिफ़त देख लेते तो हज़रत मूसा की क्या कैफ़ियत होती और अगर ख़ुदाए तआला की ज़ात का दीदार कर लेते तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का आलम क्या होता। बयान से बाहर है समझा जा सकता है वह भी क़दरे बस यही कहा जा सकता है जो आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा है।

फ़र्क़ तालिब व मतलूब में देखे कोई
क़िस्सए तूर व मेअराज समझे कोई
कोई बे होश है जलवों में गुम कोई
किस को देखा यह मूसा से पूछे कोई
आँख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब होश में आए तो अल्लाह का शुक्र बजा लाए और अर्ज़ करने लगे ऐ मेरे रब तआला तूने मुझे ऐसी दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया है कि मुझ से पहले किसी नबी को तूने अता नहीं किया।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मूसा अगर तुम मेरा शुक्र अदा करना चाहते हो तो مُتْ عَلٰى تَوْحِيْدِيْ وَحُبِّ مُحَمَّدٍ ﷺ ऐ मूसा ! अगर मेरा शुक्रिया अदा करना है तो मेरी तौहीद और मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत के साथ रहो। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मुतअज्जिब हुए और अर्ज़ करने लगे या रब तआला ! तेरी तौहीद पर तो मेरा ईमान है मगर मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत भी क्या तेरी तौहीद के साथ लाज़िम व ज़रूरी है। (नुज़हतुल मजालिस)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

لَوْلَا مُحَمَّدٌ وَّاُمَّتُهٗ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاكَ وَالْاَرْضِيْنَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَلَا مَلَكًا مُّقَرَّبًا وَّنَبِيًّا مُّرْسَلًا وَّلَا اِيَّاكَ

यानी अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को और उन की उम्मत को पैदा करना मक़सूद न होता तो मैं ज़मीन को पैदा करता न आसमान को, न चाँद को

पैदा करता न सूरज को, न फ़रिश्तों को पैदा करता और न अम्बियाए किराम को पैदा करता। हत्ता कि ऐ मूसा तुझे भी न पैदा करता।

यानी ऐ मूसा (अलैहिस्सलाम) सुनो! फ़र्श से अर्श तक ज़मीन व ज़मां, शजर व हजर, बर्ग व बहर, शम्सो कमर, खुश्को तर, कुछ भी न होते हत्ता कि न कोई नबी होता न रसूल होते, न आदम होते न आदमी होता, यह सारी खलकत महबूब के सदके में पैदा किया है और तुम को भी इसी महबूब के सदके में पैदा किया है। खूब फ़रमाया आशिके रसूल प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये मकीनो मकां तुम्हारे लिये
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिये बने दो जहाँ तुम्हारे लिये

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अर्ज़ करते हैं :

يَارَبِّ اَنَا كَلِيْمُكَ وَمُحَمَّدٌ حَبِيْبُكَ فَمَا الْفَرْقُ بَيْنَ الْكَلِيْمِ وَالْحَبِيْبِ

या अल्लाह तआला मैं तेरा कलीम हूँ और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तेरे हबीब हैं तो कलीम और हबीब में फ़र्क क्या है? अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : اَلْكَلِيْمُ يَأْتِيْ عَلٰى طُوْرِ سِيْنَاءَ ثُمَّ يُنَاجِيْ कलीम वह है जो खुद तूर पहाडी पर आए और अर्ज़ करे। अल्लाह तआला मैं तुझे देखना चाहता हूँ तो जवाब में कहूँ 'लन तरानी' तुम मुझे नहीं देख सकते और اَلْحَبِيْبُ يَنَامُ عَلٰى فِرَاشِهٖ और हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वह हैं जो अपने बिस्तर इस्तिराहत पर आराम फ़रमा हो और मेरी तरफ़ से विसाल और दीदार के तकाज़े हो रहे हों यानी ऐ मूसा (अलैहिस्सलाम) कलीम वह है जो खुदा को देखना चाहता है और हबीब वह हैं जिन को खुदा देखना चाहता है।

اَلْكَلِيْمُ يَعْمَلُ بِرِضَا مَوْلَاهُ कलीम वह है जो अल्लाह तआला की रज़ा चाहता है

اَلْحَبِيْبُ يَعْمَلُ مَوْلَاهُ بِرِضَائِهٖ और हबीब वह है जिस की रज़ा अल्लाह तआला चाहता है यानी जो हबीब चाहे वही अल्लाह तआला चाहे। (नुज़हतुल मजालिस)

आशिके रसूल इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

खुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
खुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद

(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

कुरआन शरीफ़ फ़रमाता है : وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝

तर्जमा : रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

(पारा 30, सूरतुद्दुहा, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही का इरशाद

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने तूर पहाड़ी पर रब तआला की तजल्ली का जो नज़ारा किया

तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँखों के जलाल का यह आलम था कि किसी को ताब व ताक़त न थी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँख को देख सके और जो उन की आँख से आँख मिला लेता उस की आँख फूट जाती फिर वह आँख से महरूम हो जाता। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने चेहरे पर तरह तरह के निक़ाब डाले और वह सब जल गए जलाल की ताब बरदाश्त न कर सके। यहाँ तक कि लोहे, पत्थर और लकड़ी का निक़ाब बना कर डाला वह सब जल कर राख हो गए। आख़िर अल्लाह तआला के हुक्म से आप ने महबूबाने ख़ुदा के दामन यानी उन कपड़ों क़ा निक़ाब बनाया गया जिन को अल्लाह तआला के महबूब बन्दों ने इस्तिमाल किया था फिर वह निक़ाब बाक़ी रहा। (फवाइदुल फवाइद)

ऐ ईमान वालो ! जब अल्लाह तआला के महबूब बन्दों के मलबूसात यानी पहने हुए कपड़ों की बरकत का जब यह आलम है तो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दामने करम की शान का आलम क्या होगा।

वुसअत दी है ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जाएंगे और वह छुपाते जाएंगे

ऐ ईमान वालो ! ग़ौस व ख़्वाजा व रज़ा के ग़ुलामो ! ख़ूब ख़ूब याद रखो कि यह सब मानेगा वही जो ईमानवाला होगा।

जिस के दिल में प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहिव आलिही वसल्लम की चाहत ही नहीं है तो वह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मलबूसात यानी कपड़ों को क्या ख़ातिर में लाएगा। इसी लिये एसे बे ईमान वहाबियों, देवबन्दियों से हमें अपना ईमान बचाना है और उन से दूर रहना है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने चेहरे पर निक़ाब डाले हुए जब घर तशरीफ़ लाए तो आप की बीवी हज़रत सफ़ूरा रजियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह तआला के नबी मुआमला क्या है ? जो आप चेहरे पर नक़ाब डाले हुए हैं ? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ सफ़ूरा तूर पहाड़ी पर अल्लाह तआला ने मुझे अपनी तजल्ली से नवाज़ा और अपना दीदार अता किया। तो मेरी आँखों में उस तजल्ली की बरकत से इस क़दर जलाल का असर होगया है कि जो मेरी आँख को देखता है तो उस की आँख फूट जाती है और वह आँख से महरूम हो जाता है। अल्लाह तआला के हुक्म से मैं ने अपने चेहरे पर निक़ाब डाल लिया है ताकि किसी को तकलीफ़ न होने पाए और अगर तुम ने भी मेरी आँखों को देखा लिया तो तुम भी आँख से महरूम हो जाओगी इसी लिये मेरी आँख देखने की कोशिश मत करना।

हज़रत सफ़ूरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह तआला के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं तो उन आँखों को देखूँगी जिन आँखों ने रब तआला का दीदार किया है चाहे आँख रहे या जाए। बार बार इसरार करती हैं कि मैं उन आँखों को देखूँगी जिन आँखों ने रब तआला की तजल्ली का दीदार किया है। हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम ने बहुत मना किया रोका मगर हजरत सफूरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा दीदार करना चाहती हैं। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हारी आँख चली जाएगी तुम महरूम हो जाओगी। हज़रत सफूरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि आका ऐसी आँख का फूट जाना ही बहतर है जो आँखें जमाले यार का नजारा न कर सकें। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने चेहरे से निकाब उठा दिया और हज़रत सफूरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने एक आँख खुली रखी और दूसरी आँख पर अपना हाथ रख लेती हैं कि अगर फूटे तो एक आँख, और दूसरी सलामत रहे।

हज़रत सफूरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की नजर जैसे ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ऑख पर पडती है एक आँख फूट जाती है मगर हजरत सफूरा लज़्ज़ते दीदार में महव हैं तकलीफ का एहसास भी नहीं हुआ फिर फूटी हुई ऑख पर हाथ रख लेती हैं और दूसरी ऑख दीदार के लिये खोल देती हैं निगाह से निगाह मिलते ही दूसरी ऑख भी फूट जाती है मगर फूटी हुई पहली ऑख से जब हाथ हटाती हैं तो वह सही व सालिम हो जाती है फिर हाथ फूटी हुई पर रख लेती हैं तो खुदा तआला की शान कि हाथ हटाते ही फूटी हुई ऑख ठीक हो जाती है इसी तरह हज़रत सफूरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बार बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ऑखों में अल्लाह तआला की तजल्ली का दीदार करती जा रही हैं और बार बार उन को अल्लाह तआला ऑखें अता फ़रमा रहा है। (तलखीस पैगामे मेअराज, स. 173)

वर्क तमाम हुआ, और मदह बाकी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(7)

रजब शरीफ़

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

मेअ़राजे मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ○

तर्जमा : पाकी है उसे जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम से, मस्जिदे अक्सा तक। जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानियाँ दिखाएं। बेशक वह सुनता देखता है। (पारा 15, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हिजरत से पहले रजब शरीफ़ की सत्ताइसवीं रात को शबे दो शम्बा मुबारका में हमारे आका करीम, महबूबे खुदा, शबे असरा के दूल्हा, नौशए बज़्मे जन्नत, हम गरीबों के आका हम फकीरों की दौलत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी चचा ज़ाद बहन हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर आराम फरमा थे, अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को इरशाद फ़रमाया कि सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत साथ में ले लो और जन्नत को सजा दो। दारोगए जहन्नम मालिक को हुक्म दो कि दोज़ख के दरवाज़े बन्द कर दे। और हूराने बहिश्त उम्दा और नफ़ीस लिबास जेब तन कर लें। सब फ़रिश्ते मेअराज के दूल्हा की ताज़ीम के लिये कमर बस्ता हो जाएं। इस्राफ़ील आज सूर न फूंके। इज़राईल आज की रात किसी की रूह कब्ज़ न करें। तमाम कब्रों से अज़ाब उठा लिया जाए। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक तमाम अम्बियाए किराम शबे असरा के दूल्हा के इस्तिकबाल के लिये तय्यार हो जाएं।

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार फरिश्तों की जमाअत के साथ जन्नतमें बुराक लाने के लिये तशरीफ़ लाए। देखा कि जन्नत में चालीस हज़ार बुराक हैं हर एक बुराक की पेशानी पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम लिखा

हुआ है। एक बुराक़ को देखा जो रो रहा है सर नीचे डाले एक तरफ़ खड़ा है। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम उस के पास गए और रोने का सबब दरयाफ़्त किया। बुराक़ ने कहा चालीस हज़ार साल हुए कि हबीबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मेअराज का ज़िक्र सुना था कि सरकार नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मेअराज का सफ़र फ़रमाएंगे काश ! मुझे उन की सवारी के लिये मुन्तख़ब कर लिया जाता इसी शौक़े महब्बत में रो रहा हूँ कि सवारी मुझे बनाया जाए उस बुराक़ की महब्बत और इश्क़ को जब हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने देखा तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सवारी के लिये पसन्द फ़रमा लिया। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 114)

गुज़ारिश : ऐ ईमान वालो ! रोना अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है। सारे बुराक़ रह गए और इश्क़े नबी और महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में रोने वाला बुराक पसन्द कर लिया गया।

अगर हम भी चाहते हैं कि अल्लाह तआला हमें पसन्द करे तो हम भी इश्क़े नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में रोने की आदत बनाएं। मोमिन का आंसू जो ख़ौफ़े ख़ुदाए तआला और महब्बते नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में गिरता है तो तमाम गुनाहों को धो देता है। अल्लाह तआला हमें रोने वाली आँखें अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

जिब्रीले अमीन बुराक़ के साथ हज़रत उम्मे हानी के घर

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत के साथ बुराक़ ले कर हज़रत उम्मे हानी के घर हाज़िर हुए तो क्या देखा कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बिस्तरे इस्तिराहत पर आराम फ़रमा हैं। फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अपने नूरी ज़हन से सोचते हैं कि अल्लाह तआला का हुक्म है। [illegible] यानी अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि जिब्रईल जलदी करो। अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मुलाक़ात का मुश्ताक़ है अब हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हैरत में हैं कि अल्लाह तआला का हुक्म है जल्दी बुला कर लाओ और इधर महबूबे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आलम यह है कि आराम फ़रमा रहे हैं अगर आवाज़ दे कर जगाया तो बे अदबी है।

फ़ारसी.........................

और जल्दी महबूब को ले कर न गया तो अल्लाह तआला के हुक्म की उदूली होगी ग़ौर फ़िक्र में हैं कि क्या क्या जाए।

अल्लाह तआला का हुक्म होता है : [illegible] यानी ऐ जिब्रईल अलैहिस्सलाम ! आप के होंट काफ़ूर के हैं और हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के

तलवे नूर के। काफूर में ठन्डक होती है काफूरी होंटों से महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूरी तलवों को मस्स करो ठन्डक पहुँचेगी मेरे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेदार हो जाएंगे। हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अपने काफूरी लबों से महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूरी तलवों को बोसा दिया यानी चूमा। ठन्डक पहुँची सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेदार हुए। चश्माने करम वाकिया और फरमाया जिब्रईल अलैहिस्सलाम कैसे आए हो, आने का मकसद क्या है ? अर्ज किया ऐ आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला का हुक्म लाया हूँ।

إِنَّ اللّٰهَ اشْتَاقَ إِلٰى لِقَائِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَاٰلِكَ وَسَلَّمَ

बे शक अल्लाह तआला आप की मुलाकात का मुश्ताक़ है। और मौलाए करीम ने हुक्म दिया عجل جا جبرائیل जल्दी मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ले कर आओ यानी ऐ आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप मेअराज के दूल्हा बनने वाले हैं। मीकाईल व इसराफ़ील भी आप की ख़िदमत के लिये साथ में हैं। और सत्तर हजार नूरी फ़रिश्ते बराती हाज़िर हैं और जन्नती बुराक सवारी के लिये मौजूद हैं। (नुजहतुल मजालिस)

बुराक : हमारे आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं। बुराक खच्चर से छोटा और गधे से बड़ा था और वह सफ़ेद रंग का था। निगाहें जहाँ तक पहुँचती हैं बुराक का कदम वहाँ पड़ता है। (बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ, जि. 1, स. 91, मिश्कात शरीफ, स 527)

जिब्रईल अलैहिस्सलाम सोचते हैं कि यह ऐसी रात है कि पूरी दुनिया अन्धेरों में डूबी हुई है हाथ को हाथ नज़र नहीं आता, खुल्दे बरीं की नूरी शम्एं रौशन कर लेनी चाहिये इस लिये कि कौनैन का सुल्तान दूल्हा बना है और आज उस की बारात है रौशनी होना ज़रूरी है। गैब से निदा हुई कि ऐ जिब्रईल अलैहिस्सलाम क्या कह रहे हो। जन्नत की कन्दीलों की कोई हाजत नहीं। क्या आफ़ताब के सामने चिराग ले कर जाओगे मैंने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए नूरानी पर अपनी सिफ़ते गैरत के सत्तर हजार परदे डाल रखे हैं। सिर्फ़ एक पर्दा उठा दो फिर देखो सारा आलम जमाले रुखे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से जगमगा उठेगा और सारी शम्एं उस के सामने बे नूर हो कर रह जाएँगी। (फगाने मेअराज, स. 907)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

वह छूट पडती थी उन के रुख की कि अर्श तक चाँदनी थी छटकी
वह रात किया जगमगा रही थी जगह जगह नसब आईने थे

हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम का हमारे प्यारे आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे मुबारक, तलवे मुबारक को चूमना बता रहा है कि :

ऐ ईमान वालो ! उस प्यारे नबी मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम की शान व शौकत को पहचानो और मानो और देखो कि जहाँ फ़रिश्तों के सरदार जिब्रईल का सर है वहाँ मदीने वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़दमे मुबारक है।

हज़ारों जिब्रईल उलझे हुए हैं गर्दे मन्ज़िल में
न जाने किस बलन्दी पर है काशाना मुहम्मद का

रातों को बेदार रह कर गुनाहगारों की मग़फ़िरत के लिये दरया बहाने वाली आँखें ख़ुदा जाने आज किस ख़्वाबे शीरीं से सरशार हैं।

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं

मगर आज ख़्वाब में कितना लुत्फ़ और किस क़दर सुरूर है कि जिब्रीले अमीन ने बेदार किया मगर नीन्द ने दामन पकड़ लिया। मलाइका की फ़ौज दर फ़ौज जमाअत आस्तानए महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जुलूस की शक्ल में चलने के लिये तैय्यार हैं। जिब्रईल अलैहिस्सलाम कुछ दरे इन्तिज़ार के बाद बसद ताज़ीम व तकरीम मेअराज के दूल्हा को फिर बेदार करते हैं। चश्मनाने करम खुलती हैं मगर नीन्द फिर क़दमे नाज़ पर लौट जाती है, बार बार जिब्रईल अलैहिस्सलाम बेदार करते हैं और आक़ा बेदार होते हैं और सो जाते हैं गोया हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उम्मत को बताना चाहते हैं कि

ऐ ग़ुलामो ! आज अच्छी तरह देख लो और जान लो कि अल्लाह तआला की बारगाहे अज़मत में मेरा मक़ाम क्या है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम रब तआला को देखना चाहते थे और हक़ तआला मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखना चाहता है।

तबारकल्लाह शान तेरी तुझी को ज़ेबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वह जोशे लन तरानी कहीं तक़ाज़े विसाल के थे

[illegible] शरीफ़ :

आक़ा करीम शबे असरा के दूल्हा, मुस्तफ़ा [illegible] सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेदार होते हैं हुक्म सुनाया जाता है कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जन्नतें नई [illegible] ज़ीनत के साथ आरास्ता हो चुकी हैं।

आसमानों में आमद आमद का ग़लग़ला बलन्द हो चुका है नूर के पैकर आसमानों में [illegible] लिये खड़े हैं।

[illegible] सद्र का मोअजिज़ा ज़हूर पज़ीर होता है

[illegible] से [illegible] किया जाता है। मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व [illegible] के नहाने से जो नूरानी पानी मेअराज की रात गिरा था तो सितारों ने अपने अपने [illegible] कटोरों यानी प्यालों में भर लिये थे।

आशिके मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वही तो अब तक झलक रहा है वही तो जोबन टपक रहा है
नहाने में जो गिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिये थे

आशिके मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने दिल की तमन्ना और आरज़ूएं बयान करते हैं।

जो हम भी वां होते खाके गुलशन लिपट के क़दमों से लेते उतरन
मगर करें क्या नसीब में तो यह ना मुरादी के दिन लिखे थे

हुल्लए बहिश्ती (जन्नती लिबास) जेबे तन किया गया, दूल्हा बनाया गया, सवारी के लिये जन्नती बुराक पेश किया गया। मेअराज के दूल्हा ने बुराक पर सवार होने का इरादा फरमाया। बुराक वज्द में आ गया शोख़ी की। उछलने लगा, ना फ़रमानी से नहीं बल्कि नाज व फ़ख्र से उछल रहा था कि आज उस का नसीबा बेदार हुआ है इज्ज़त व करामत की साअत आई। महबूबे मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सवारी में रहने का शरफ़ मिला है। जोशे खुशी में अपने आप को संभाल न सका और उछलने लगा हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बुराक होश में आ, देख आज तुझ पर कौन सवार हो रहा है ? बुराक [illegible] पसीना पसीना हो गया और अदब और आजिज़ी के साथ बैठ गया। हमारे आका मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सवार होने का इरादा फरमाते हैं कि उम्मत की याद आ जाती है और गमे उम्मत में चश्मे करम से आंसू निकल पड़ते हैं। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आलमे हैरत में अर्ज करते हैं कि आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क्या खिदमत व तकरीम में कुछ कमी रह गई जो आप सवार होते होते रुक गए। तवक्कुफ़ फ़रमाया और आप के रोने की क्या वजह है [illegible]। मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिब्रईल तुम्हारी खिदमत व तकरीम में कोई कमी नहीं है। सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मेरी तकरीम के लिये और [illegible] सवारी के लिये हाज़िर है। आसमान को सजा दिया गया है। सारे [illegible] मेरे इन्तिज़ार में हैं। खुद ख़ालिको मालिक अल्लाह तआला मेरी [illegible] है। लेकिन मुझे मेरी गुनाहगार उम्मत याद आ रही है। ऐ जिब्रईल [illegible] मेरी उम्मत कमज़ोर और गुनाहगार है पुल सिरात बाल से ज़्यादा बारीक [illegible] से ज़्यादा तेज़ है। कमज़ोर उम्मत गुनाह का बोझ उठा कर पुल सिरात को पार [illegible] हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम पूरी ज़हन से फ़िक्र फ़रमाते हैं कि अल्लाह [illegible] जल्दी लौट कर आओ और महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को [illegible] उम्मत याद आ रही है। अभी जिब्रईल इसी सोच व विचार में थे कि [illegible] हुक्म होता है ऐ जिब्रईल मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम [illegible] कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ हबीब सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम आप अपनी उम्मत की फ़िक्र न करें आप की उम्मत को अल्लाह तआला पुल सिरात से ऐसे गुज़ार देगा कि उम्मत को खबर भी न होगी। मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब उम्मत के लिये यह ख़ुशी का पैग़ाम सुना तो बुराक़ पर सवार हुए। (तलख़ीस पैग़ामे मेअराज, स. 128, दुर्रे मन्सूर, जि. 3)

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो
जिब्रील पर बिछाएं तो पर को ख़बर न हो

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ग़मे उम्मत में रो रहे हैं और उम्मत की बख़्शिश के लिये क्या क्या अन्दाज़ अपना रहे हैं। और एक हम उम्मती हैं कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को भूले बैठे हैं कोई फ़िक्र नहीं कोई ख़याल नहीं।

आओ अहद करें और यह तय करें कि उस वक़्त तक हम सोएंगे नहीं जब तक अस्सलातु वस्सलामु अलैका व आलिका व अस्हाबिका या रसूलल्लाह पढ़ नहीं लेंगे और इन्शाअल्लाहो तआला हम वादा करते हैं कि तीन बार पढ़ेंगे।

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَاٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا رَسُوْلَ اللہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَاٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا رَسُوْلَ اللہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَاٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا رَسُوْلَ اللہ

फिर بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ेंगे फिर सोने की दुआ यानी اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰ इस के बाद तीन मरतबा कलमा शरीफ़ यानी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہ पढ़ेंगे फिर सोएंगे।

हज़रात ! मैं पूरी ज़िम्मेदारी और यक़ीन के साथ आप से कह रहा हूँ कि अगर आप ने इन मुबारक कलेमात को पढ़ कर सोने की आदत बना ली तो यक़ीन कर लीजिये कि एक न एक दिन सरकारे मदीना, नूर व रहमत के गन्जीना, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत ख़्वाब में आप को होगी और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत से सरफ़राज़ होने वाला मोमिन बड़ा ख़ुश नसीब और जन्नत का हक़दार होता है और जब सोकर बेदार हो जाएं तो दुआ पढ़ें यानी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

और फिर कलमा शरीफ़ तीन मरतबा पढ़े और उस के बाद अस्सलातु वस्सलामु अलैका व आलिका व अस्हाबिका या रसूलल्लाह तीन बार पढ़ लें। इन्शाअल्लाहु तआला दिन भर ख़ूब बरकत हो और हर बला व मुसीबत से महफ़ूज़ रहें और आप की तिजारत में ख़ूब बरकत भी होगी और नामए आमाल में ढेरों सवाब भी जमा हो जाएंगे। अल्लाह तआला हम सब को

अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और आशिक़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बनाए। आमीन सुम्मा आमीन।

महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सवारी चली

जब बुराक़ चला नूरानी रास्ते की जब गर्द उड़ी तो ऐसा नूर बरसा कि पूरे रास्ते पर बादल छाया रहा और ऐसी बारिश हुई कि बहरो बर, ख़ुश्को तर और दरया जल थल होगए। जंगल लबालब भर गए बल्कि ज़मीन से पानी उबलने लगा।

उठी जो गिर्दे रहे मुनव्वर, वह नूर बरसा कि रास्ते भर
घिरे थे बादल, भरे थे जल थल, उमन्ड के जंगल उबल रहे थे

महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सवारी चली, जिब्रीले अमीन रिकाब थामे हुए हैं मीकाईल लगाम पकड़ने की ख़िदमत अन्जाम दे रहें सत्तर हज़ार फ़रिश्तों का हुजूम है। सलातो सलाम की धूम है।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तजल्लिये हक़ का सहरा सर पर, सलातो तस्लीम की निछावर
दो रुवय्या क़ुदसी परे जमाकर, खड़े सलामी के वास्ते थे

इस शान व शौकत के साथ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की सवारी रवाना होती है। ऐसे जाहो जलाल के साथ कूच किया। बड़े सुकून व वक़ार के साथ सफ़र शुरू हुआ।

बाग़े आलम में बादे बहारी चली
सरवरे अम्बिया की सवारी चली

थोड़ी ही देर में हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़रा उस ज़मीन पर हुआ जिस में ख़जूर के दरख़्त कसरत से थे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्लाम ने अर्ज़ किया। यह यसारिब (मदीना मुनव्वरा) यानी आप के सुकूनत की जगह है। فَصَلِّ هٰهُنَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ यहाँ नमाज़ पढ़िये। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बुराक़ से उतर कर नमाज़ें पढ़ी। फिर हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का शहर मदयन आया। फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत की जगह बैतुल लहम और फिर जबले तूर आया हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहीवसल्लम ने उस मक़ामात पर नमाज़ पढ़ी। (मवाहिबुल लदुन्नियह, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 294)

हज़रात ! इन वाक़ेआत से मालूम हुआ कि उन जगहों पर नमाज़ पढ़ना बड़ी बरकत रखता है जिन जगहों की निस्बत महबूब बन्दों के साथ हो।

देवबन्दी हज़रात के बड़े मौलवी अशरफ़ अली थानवी लिखते हैं हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने रास्ते में बाज़ मक़ामाते मुतबर्रका पर नमाज़ पढ़ी इससे मालूम हुआ कि मक़ामाते शरीफ़ा में नमाज़ पढ़ना मूजिबे बरकत है। (नसरुत्तय्यिब, स. 92)

रास्ते में आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़र एक जमाअत पर हुआ। उन्होंने आप की ख़िदमत में इन अलफ़ाज़ के साथ सलाम पेश किया।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَوَّلُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اٰخِرُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَاشِرُ

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! उन के सलाम का जवाब दीजिये। आप ने उन के सलाम का जवाब दिया और वह जमाअत जिस ने आप को सलाम किया वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम थे। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 295, तफ़सीर इब्ने कसीर, जि. 3)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क़ब्र में नमाज़ पढ़ना

हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

مَرَرْتُ عَلٰى مُوْسٰى وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّيْ فِيْ قَبْرِهٖ

मैं मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र के पास से गुज़रा वह खड़े हो कर अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 268, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 295)

और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा اَشْهَدُ اَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ मैं गवाही देता हूँ कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 295)

हज़रात ! आप हज़रात ने सुना कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि शबे मेअराज जब मैं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र से गुज़रा तो मैं ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ते हुए देखा। इस हदीस शरीफ़ से आप को बताना और समझाना यह है कि क़ब्र वाला अगर मुर्दा होता है तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बाद मौत क़ब्र में नमाज़ कैसे पढ़ रहे हैं ? नमाज़ पढ़ने के लिये ज़िन्दा होना ज़रूरी है। पता चला कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बाद मौत अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं। जभी तो खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं और फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा और पहचान गए जभी तो हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रसूल होने की गवाही दी। इस से भी पता चला कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं।

हदीस शरीफ़ : اِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللهِ حَيٌّ يُّرْزَقُ ٥

(सुनने इब्ने माजह, स. 118, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 295, मोअजम तबरानी)

बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर नबियों के जिस्मों को खाना हराम कर दया है पस अल्लाह तआला के नबी ज़िन्दा हैं रिज़्क़ दिये जाते हैं।

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 295, मोअजम तबरानी)

आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अम्बिया को भी अजल आनी है
मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है

फिर उसी आन के बाद उन की हयात
मिस्ले साबिक़ वही जिस्मानी है

हज़रात ! जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं तो हमारे नबी तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भी नबी हैं तो हमारे आक़ा नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़िन्दगी का आलम क्या होगा।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाहु
मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! दूसरी बात यह है कि हमारे सरकार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़ब्र के ऊपर ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर क़ब्र के अन्दर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को देख रहे हैं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम किस हाल में हैं और उस कैफ़ियत यानी नमाज़ पढ़ने की हालत को भी मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं। गोया हमारे नबी ज़मीन पर रह कर क़ब्र में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उन की हालत को देख रहे हैं।

और आज हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी क़ब्र शरीफ़ से अल्लाह तआला की अता से सारे आलम का मुशाहदा फ़रमा रहे हैं, हम गुलामों को और हमारी हालतों को देख रहे हैं।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

हदीस शरीफ़ : हमारे आक़ा मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

إِنَّ اللّٰهَ رَفَعَ لِيَ الدُّنْيَا فَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهَا وَإِلٰى مَا هُوَ كَائِنٌ إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كَأَنَّمَا أَنْظُرُ إِلٰى كَفِّيْ هٰذِهٖ.

यानी अल्लाह तआला ने मेरे लिये तमाम दुनिया से परदा उठा दिया है लिहाज़ा मैं तमाम दुनिया और दुनिया में क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है सब को इस तरह देख रहा हूँ जैसे कि मैं अपनी हथेली को देख रहा हूँ। (मोअजम तबरानी, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 11, स. 189)

मस्जिदे अक़सा में इमामत फ़रमाना

फिर हमारे आक़ा नोशए बज़्मे जन्नत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बैतुल मुक़द्दस पहुँचे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने बुराक़ को मस्जिदे अक़सा के दरवाज़े के पत्थर के एक सूराख़ से बाँध दिया। इसी दरवाज़े को अब बाबे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहा जाता है।

(मुस्लिम, जि. 1, स. 91, तिर्मिज़ी, मिश्कात, स. 528)

फिर हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिदे अक़्सा में तशरीफ़ ले गए। मस्जिदे अक़्सा में तमाम अम्बियाए किराम, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक हमारे सरकार सय्यदे अबरार व अख़यार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस्तिक़बाल के लिये मौजूद थे। जुमला अम्बियाए किराम ने आप को देख कर अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की और आप की बारगाहे वजाहत में सलातो सलाम पेश किया और जुमला अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अफ़ज़ल व आला होने का एतिराफ़ किया। (मदारिजुन्नुबुव्वत, स. 295)

पेशवाए सुन्नियत, मुरीदे बारगाहे क़ादरियत, फ़िदाए अस्तानए चिश्तियत चश्मो चिराग़ ख़ानदाने बरकातियत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

अम्बिया से करूँ अर्ज़ क्यूँ मालिको
क्या नबी है तुम्हारा हमारा नबी

सब से आला व औला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

फिर अज़ान दी गई और तकबीर कही गई। हज़रात अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने सफ़ें दुरुस्त कीं। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने इमामुल अम्बिया सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुसल्लए इमामत पर आप रौनक़ अफ़रोज़ हों और नमाज़ पढ़ाएं। हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की इमामत फ़रमाई। शबे मेअराज में कुल अम्बिया अलैहिमुस्सलाम मुक़तदी हैं और हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इमाम हैं।

राज़ की बात : सारे अम्बियाए किराम दुनिया में पहले तशरीफ़ लाए और हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सब के बाद में तशरीफ़ लाए। कोई ख़याल कर सकता था कि पहले आने वालों का मरतबा ज़्यादा होगा इसी लिये तो पहले आए और बाद में आने वाले का मरतबा कम होगा क्यों कि बाद में आए। इसी लिये मेअराज की रात मस्जिदे अक़्सा में पहले आने वाले तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम हाथ बाँध कर पीछे खड़े हैं और सब के बाद में आने वाला महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इमामत के मुसल्ले पर सब से आगे हैं।

आशिक़े रसूल सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

नमाज़े अक़्सा में था यही सिर कि अयां हो मअना अव्वल व आख़िर
कि दस्ते बस्ता हैं पीछे हाज़िर जो सलतनत आगे कर गए थे

गोया यह ऐलान किया जा रहा है कि ऐ दुनिया वालो ! ऐ आसमान वालो ! यह नज़ारा देख

लो ! कि मस्जिदे अक़्सा में तमाम अम्बियाए किराम मुक़तदी हैं और महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सब के इमाम हैं।

सब से आला व औला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

सुब्हानल्लाह, माशा अल्लाह ! क्या शान है। हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे आली जाह में दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करें। ब आवाज़ बलन्द पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدَنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ 0

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(7)

रजब शरीफ़

चौथा जुमा .... पहला बयान

अजाइबात का मुशाहदा और दीदारे इलाही

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝

तर्जमा : फिर वह जलवा नज़दीक हुआ, फिर ख़ूब उतर आया तो उस जलवे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि उस से भी कम। अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई। (पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आज का दिन कितनामुबारक दिन हैकि मुद्दतों के बाद मस्जिदे अक़सा में अम्बियाए किराम व रसूलाने इज़ाम अलैहिमुस्सलाम का अज़ीमुश्शान इज्तिमाअ व इज्लास हो रहा है।

खिताबे आदम : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की और फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे बग़ैर मां बाप के ख़ास अपनी क़ुदरत से पैदा फ़रमाया और जन्नत को मेरा मस्कन बनाया और मुझे मस्जूदे मलाइका होने का शरफ़ अता किया और तमाम चीज़ों के नाम सिखाए और सफ़ियुल्लाह का मुबारक लक़ब अता फ़रमायाः

खिताबे ख़लील : तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये जिस ने मुझे ख़लील बनाया और मुल्के अज़ीम अता फ़रमाया और मुझे साहिबे क़ुनूत किया और मुझ पर नारे नमरूद को गुलज़ार फ़रमाया।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ख़िताब

तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये जिस ने मुझ से कलाम फ़रमाया और मुझे बर गुज़ीदा किया और मुझ पर तौरैत नाज़िल की और फ़िरऔन की हलाकत और बनी इसराईल की नजात मेरे हाथ पर ज़ाहिर की और मेरी उम्मत को हक़ व हिदायत वाली बनाया।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का ख़िताब

तमाम हम्दें अल्लाह तआला के लिये जिस ने मुझे मुल्के अज़ीम अता फ़रमाया और ज़बूर का इल्म दिया और मेरे लिये लोहे को मोम किया और पहाड़ों और परिन्दों को ताबेअ किया जो मेरे साथ तस्बीह पढ़ते हैं और मुझे ख़िताब व हिकमत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का ख़िताब

तमाम मुहामिद अल्लाह तआला के लिये जिस ने मेरे लिये हवाएं ताबेअ कीं और शैतानों, इन्सानों, जिन्नों और परिन्दों को मुसख़्ख़र किया और मुझे पाकीज़ा मुल्क अता किया जिस का हिसाब न होगा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ख़िताब

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये जिस ने मुझे कलिमतुल्लाह होने का शरफ़ अता किया। मुझे किताब व हिकमत, तौरैत, इन्जील का इल्म दिया। मुझे मादर ज़ाद अन्धों और जुज़ामी को शिफ़ा देने और मुर्दों को ज़िन्दा करने की ताक़त बख़्शी, मुझे और मेरी मां को शैतान मरदूद से पनाह दी।

ख़िताबे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

मेअराज के दूल्हा बज़्मे जन्नत इमामुल अम्बिया अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अज़ीमुश्शान ख़िताब हुआ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَرْسَلَنِیْ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ وَکَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا وَاَنْزَلَ عَلَیَّ الْفُرْقَانَ

فِیْهِ تِبْیَانُ کُلِّ شَیْءٍ وَجَعَلَ اُمَّتِیْ وَسَطًا وَجَعَلَ اُمَّتِیْ هُمُ الْاَوَّلُوْنَ وَهُمُ الْاٰخِرُوْنَ

وَشَرَحَ لِیْ صَدْرِیْ وَوَضَعَ عَنِّیْ وِزْرِیْ وَرَفَعَ لِیْ ذِکْرِیْ وَجَعَلَنِیْ فَاتِحًا وَّخَاتِمًا ○

यानी तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये जिस ने मुझे तमाम आलम के लिये रहमत बनाया और तमाम लोगों के लिये बशारत देने वाला और डराने वाला बनाया और मुझ पर फ़ुरक़ान को नाज़िल किया जिस में हर चीज़ का रौशन बयान है और मेरी उम्मत को बेहतर और एतिदाल पसन्द बनाया और मेरी उम्मत को अव्वल व आख़िर होने का शरफ़ अता किया और मेरा सीना खोला और मेरे ज़िक्र को बलन्द फ़रमाया और मुझे फ़ातेह और आख़री नबी होने का शरफ़ अता किया।

यह ख़िताबे मुबारक सुन कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

بِهٰذَا اَفْضَلَکُمْ مُحَمَّدٌ ﷺ

इस सबब से अल्लाह तआला ने आप को तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम से अफ़ज़ल फ़रमाया।

(तफ़सीर इब्ने कसीर, जि. 3, मवाहिबुल्लदुन्नियह, जि. 2, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 297)

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा, सरकार आला हज़रत, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

खल्क से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी
अम्बिया से करूँ अर्ज़ क्यों मालिको
क्या नबी है तुम्हारा हमारा नबी

हमारे आक़ा प्यारे नबी मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दौराने सफ़र मुलाहज़ा फ़रमाया :

मुजाहिदीन को देखा

हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने, ऐसी क़ौम को देखा जो दिन में खेती बोते हैं और उसी दिन काट लेते हैं फिर वह खेती ऐसी हो जाती है जैसे काटने के क़ब्ल थी। आप ने जिब्रीले अमीन से पूछा यह क्या है ? जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि यह लोग अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले हैं उन की नेकी सात सो गुना से ज़्यादा की जाती है। (मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 2, स. 15)

तारिके सलात को देखा

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़र ऐसी क़ौम पर हुआ जिन के सर पत्थर से कुचले जा रहे थे कुचलने के बाद फिर उन के सर सही सालिम हो जाते फिर कुचले जाते फिर उन के सर सही हो जाते यह सिलसिला बन्द नहीं होता। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पूछा कि यह कौन लोग हैं। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि यह वह लोग हैं जो नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

(मवाहिबुल्लदुन्नियह, जि. 2, स. 15, मदारिजुन्नुबुव्यत, जि. 1, स. 298)

ऐ ईमान वालो ! आप ने सुना कि नमाज़ न पढ़ने वाले पर कितना शदीद अज़ाब हो रहा है। बे नमाज़ी का सर फोड़ा जा रहा है और यह अज़ाब मरने के बाद क़ियामत तक होता रहेगा। अब जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते उन को तौबह करके नमाज़ी बन जाना चाहिये वर्ना उन का सर भी क़ियामत तक कुचला और फोड़ा जाएगा और उन को अज़ाब से कोई बचाने वाला न होगा। अल्लाह तआला बेनमाज़ी होने से बचाए और नमाज़ पढ़ने की आदत अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

तारिके ज़कात को देखा

हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़र ऐसी क़ौम पर हुआ जिन की शर्मगाह पर आगे और पीछे चिथड़े लिपटे हुए हैं और वह लोग जानवरों की तरह चर रहे हैं कांटे और जहन्नम के पत्थर खा रहे हैं।

(मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 2, स. 15, मदारिजुन्नुबुव्यत, जि. 1, स. 298)

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया यह वह लोग हैं जो अपने माल की ज़कात अदा नहीं करते थे इस लिये अल्लाह तआला ने उन पर यह अज़ाब मुसल्लत फ़रमाया है।

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर से सुन लो कि ज़कात न देना आप को कितने बड़े अज़ाब में मुब्तला कर सकता है।

अल्लाह तआला ज़कात को पूरा, पूरा अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

ज़ानी को देखा : हमारे सरदार, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुज़र ऐसी क़ौम पर हुआ जिन के सामने पाक और हलाल गोश्त रखा हुआ है और एक हांडी में कच्चा और बदबू दार गोश्त रखा है मगर वह लोग कच्चे और बदबूदार गोश्त को खा रहे हैं। पाक और हलाल गोश्त नहीं खाते हैं। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया यह लोग आप की उम्मत के वह मर्द हैं जिन के पास हलाल और पाक बीवियाँ हैं मगर यह लोग ख़बीस और गन्दी औरतों के पास रात गुज़ारते हैं इसी तरह वह औरतें हैं जिन के पास पाक और हलाल शोहर हैं मगर यह औरतें नापाक मर्दों के पास रात गुज़ारती हैं।

(मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 2, स. 15)

ऐ ईमान वालो ! ग़ौर से सुनो और याद रखो ! एक दिन मरना है और जो कुछ किया है उस का अज़ाब या सवाब हमारे सामने होगा। ज़िना करना यानी ग़ैर औरत से मिलना और उस के पास रात गुज़ारना यह वह अमले बद है जिस से नस्ल में बिगाड़ पैदा होता है और ज़ानी की रोज़ी घटा दी जाती है। अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

मस्जिदे अक़्सा से सिदरतुल मुन्तहा तक

ثُمَّ دَنٰى فَتَدَلّٰى فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝ तर्जमा : फिर वह जलवा नज़दीक हुआ, फिर ख़ूब उतर आया तो उस जलवे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि उस से भी कम। अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई। (पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! हमारे हुज़ूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मस्जिदे अक़्सा से आसमानों पर जाना फिर सिदरतुल मुन्तहा से आगे अर्श पर तशरीफ़ ले जाना, फिर उस से आगे ला मकां और फिर क़ाबा क़ौसैन की आला मन्ज़िल में ज़लवा गर होना, और अल्लाह तआला का बे हिजाब दीदार करना, और बे शुमार इनआम व इकराम हासिल करना।

इसी को आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

वह सरवरे किशवरे रिसालत जो अर्श पे जलवा गर हुए थे
नए निराले तरब के सामां, अरब के मेहमान के लिये थे
वहाँ फ़लक पर, यहाँ ज़मीं में, रची थी शादी, मची थीं धूमें
उधर से अनवार हंसते आते, इधर से नफ़हात उठ रहे थे

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! अम्बियाए किराम व मुरसलीने इज़ाम अलैहिमुस्सलाम मस्जिदे अक़सा में हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इक़्तिदा में नमाज़ अदा की और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व अज़मत को मुलाहज़ा किया, और रुख़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदार से मुशर्रफ़ हुए, अब हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिदे अक़सा से आसमानों की जानिब रवाना हुए।

हदीस शरीफ़ : फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आसमानों की तरफ़ बढ़े और जब आसमाने दुनिया पर पहुँचे तो दरवाज़ा खटखटाया आवाज़ आई कौन ? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा मैं जिब्राईल हूँ, फिर कहा गया आप के साथ कौन हैं ? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। फिर कहा गया क्या उन को बुलाया गया है ? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा हाँ ! (उन को बुलाया गया है) आवाज़ आई मरहबा, आने वाला कितना अच्छा है।

(मुस्लिम, जि. 1, स. 91, मिश्कात, स. 527)

सारे अच्छों से अच्छा समझिये जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी

आक़ाए दो आलम, मेअराज के दूल्हा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सवारी जब पहले आसमान पर पहुँची।

फ़लक पर गुल हुआ महबूबे रब्बुल आलमीन आए
बुलाया है ख़ुदा ने लेके जिब्राईले अमीन आए

अम्बिया को भी जिस ने ख़ुतबे दिये हैं
वह इमाम आ गया वह ख़तीब आ गया

पहले आसमान पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने आप को देख कर सलाम किया और कहा, ऐ सालेह नबी ! नेक फ़रज़न्द, मरहबा, मरहबा यानी आप का आना मुबारक हो। फिर हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में सलाम पेश किया। (मुस्लिम, जि. 1, स. 93)

ऐ ईमान वालो ! ग़ौर से सुनो और अपनी क़िस्मत पर ख़ूब नाज़ करो कि हमारे नबी की शान व अज़मत का क्या आलम है। मगर दुश्मने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वहाबी, देवबन्दी नहीं समझते।

उफ़ रे मुनकिर यह बढ़ा जोशे तअस्सुब आख़िर
भीड़ में हाथ से कम बख़्त के ईमान गया

उलमा फ़रमाते हैं अल्लाह तआला के महबूब, दानाए ख़िफ़ा, व ग़ुयूब मुहम्मद मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रूहानी बाप हैं क्यों कि सारा आलम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर से पैदा किया गया। हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ : اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِیْ وَاَنَا مِنْ نُّوْرِ اللّٰهِ وَكُلُّ الْخَلَائِقِ مِنْ نُّوْرِیْ ٥

(तफ़सीर रूहुल बयान, जि. 1, स. 548, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 7)

यानी सब से पहले अल्लाह तआला ने मेरे नूर को पैदा फ़रमाया और मेरे नूर से सारे आलम को पैदा फ़रमाया। यही वजह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक अबुल अरवाह है तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अगरचेह ज़ाहिर में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाप हैं मगर हक़ीक़त में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बेटे हैं।

सरकार आला हज़रत, आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उन की नुबुव्वत उन की उबुव्वत सब को आम
उम्मुल बशर उरूस उन्हीं के पिसर की है
ज़ाहिर में मेरे फूल हक़ीक़त में मेरे नख़्ल
इस गुल की याद में यह सदा अबुल बशर की है

इस के बाद मेहमाने अर्श, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दूसरे आसमान पर तशरीफ़ ले गए और हज़रत यहया और हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम से मुलाक़ात हुई, फिर तीसरे आसमान पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई और चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई और पांचवे आसमान पर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई और छटे आसमान पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। और जब सातवें आसमान पर हमारे आक़ा करीम, मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले गए तो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने जद्दे अमजद को सलाम किया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सलाम का जवाब दिया और इरशाद फ़रमाया सालेह नबी और सालेह बेटे! आप का तशरीफ़ लाना मुबारक हो। (रूहुल बयान, जि. 5, पैग़ामे मेअराज, स. 165)

सिदरतुल मुन्तहा : मेअराज के दूल्हा हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं ने सिदरा को देखा जो एक बेरी का दरख़्त है उस के पत्ते हाथी के कान की तरह चोड़े और उस का फल मटकों की तरह थे। (मुस्लिम, जि. 1, स. 91)

सिदरतुल मुन्तहा के पास बैतुल मअमूर है। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बैतुल मेअमूर में तशरीफ़ ले गए वहाँ सत्तर हज़ार फ़रिश्तों ने इस्तिक़बाल किया और मुबारकबाद पेश की और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

की बारगाह में अर्ज़ किया। बैतुल मअमूर में हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रिश्तों को नमाज़ पढ़ाई। बैतुल मुक़द्दस में इम्बयाए किराम अलैहिमुस्सलाम के इमाम और बैतुल मअमूर में फ़रिश्तों के इमाम बने। (रूहुल बयान, जि. 5, पैग़ामे मेअराज, स. 168)

बैतुल मअमूर : फ़रिश्तों का कअबा बैतुल मअमूर है। यह खानए कअबा के महाज़ व मुक़ाबिल है अगर यह नीचे आए तो खानए कअबा पर आएगा। जिस तरह इन्सान खानए कअबा का तवाफ़ करते हैं इसी तरह फ़रिश्ते बैतुल मअमूर का तवाफ़ करते हैं और हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते बैतुल मअमूर की ज़ियारत के लिये आते हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 301)

और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुबह और सत्तर हज़ार शाम को हबीबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए अनवर पर मदीना मुनव्वरा में ज़ियारत के लिये हाज़िर होते हैं और सलातो सलाम पेश करते हैं। (मिश्कात शरीफ़, स. 546)

फ़रिश्तों ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत की ख़्वाहिश का इज़हार किया तो उन्हें इजाज़त दी गई तो फ़रिश्तों ने अपनी कसरत से छपा लिया यानी तमाम फ़रिश्ते सिदरा पर बैठ गए ताकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत की सआदत हासिल करें। (अद्दर्रुल मन्सूर, जि. 6, स. 116)

हज़रत इमाम क़स्तलानी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं :

لَمْ يُجَاوِزْهُ اَحَدٌ اِلَّا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ

यानी सिदरतुल मुन्तहा से आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अलावा कोई भी न जा सका। (मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 2, स. 25)

यही वह मक़ाम है जहाँ जिब्रईल अलैहिस्सलाम भी रुक गए और अर्ज़ करने लगे कि हुज़ूर अब मैं यहाँ से आगे न चल सकूँगा आप का साथ न दे सकूँगा :

اِنْ تَجَاوَزْتُهُ اِحْتَرَقْتُ بِالنُّوْرِ (मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 2, स. 29)

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया अगर मैं सिदरा से आगे बढ़ूँगा तो तजल्लियाते रब्बानी की ताब न ला सकूँगा और मैं जल जाऊँगा। शैख मुहक़्क़िक़ फ़रमाते हैं। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे महबूबियत में अर्ज़ किया कि अगर मैं सिदरह से आगे एक बाल बराबर भी बढ़ूँ तो अल्लाह तआला के अनवार व तजल्लियात मेरे परों को जला कर राख कर देंगे (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1)

जलते हैं जिब्रईल के पर जिस मक़ाम पर
उस की हक़ीक़तों के शनासा तुम्हीं तो हो

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत सअदी शीराज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़ारसी..............................

एक पुरानी याद

हज़रात ! जब जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आने जाने से मअज़ूरी ज़ाहिर फ़रमाई तो हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को एक पुरानी याद ताज़ा हो गई और जिब्रईले अमीन से सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ जिब्रईल ! जब मेरे जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नारे नमरूद में डाला जा रहा था तो तुम हाज़िर हुए थे और मेरे जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से तुम ने कहा था : यानी क्या मेरे लाइक़ कोई ख़िदमत है। तो मेरे जद्दे आला ने तुम को जवाब दिया था, فلا لك حاجة मुझे तेरे साथ कोई हाजत नहीं। फ़रमाया हाजत तो है मगर तुम से नहीं और जिस से मुझे हाजत है वह मेरे हाल से वाक़िफ़ है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम से कोई मदद नहीं ली। मगर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने मदद करने की गुज़ारिश की थी तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने जद्दे आला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ से उस एहसान का बहतरीन बदला देना था तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जिब्रईल ! मैं अपने रब तआला के क़ुर्बे ख़ास में जा रहा हूँ। जहाँ कोई नबी और रसूल नहीं जा सकता, हत्ता कि ऐ जिब्रईल तू भी नहीं जा सकता अब अगर तुम्हारे पास कोई हाजत है, तो बताओ ? मैं अपने रब तआला की बारगाह में पेश कर दूँगा। (पैग़ामे मेअराज, स. 184)

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अम्बियाए किराम की ख़िदमत में हाज़री देते और उन की हाजत पूरी फ़रमाते और हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिब्रईले अमीन की हाजत पूरी फ़रमाई।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, या रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरी यह तमन्ना है कि रोज़े क़ियामत जब आप की उम्मत पुल सिरात से गुज़रने लगे तो मैं पुल सिरात पर अपने नूरानी पर बिछा दूँ ताकि आप की उम्मत आसानी से गुज़र जाए। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, सीरते हलबी, स. 444, नुज़हतुल मजालिस, जि. 2)

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं पुल सिरात अगरचेह बहुत नाज़ुक जगह है लेकिन जब क़ियामत के दिन उम्मत पुल सिरात से गुज़रने वाली होगी तो नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम पुलसिरात के पास खड़े हो कर दुआ फ़रमा रहे होंगे। رَبِّ سَلِّمْ اُمَّتِیْ رَبِّ سَلِّمْ اُمَّتِیْ यानी ऐ मेरे रब तआला ! मेरी उम्मत को आसानी से गुज़ार दे और जब उम्मत के गुज़रने की दुआ उम्मत के ग़मख़्वार ख़ुद सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने की है तो अब जिब्राईल के पर बिछाने की हाजत कहाँ है।

इसी को आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यूँ बयान फ़रमाते हैं :

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो
जिब्राईल पर बिछाएं तो पर को ख़बर न हो

अर्शे आज़म : हमारे आक़ा, दो आलम के ताजदार, महबूबे ख़ुदा, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अर्श पर जलवा गर हुए सिदरा से अर्श तक सत्तर हज़ार परदे हैं और हर परदे के दरमियान पाँच सो बरस का फ़ासला है। अर्श के ऊपर न कोई मकान है न सामान, सब अर्श के नीचे हैं अर्श के ऊपर ला मकां है जब हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अर्शे आज़म पर जलवा गर हुए तो उस वक़्त यह कैफ़ियत थी कि सिदरतुल मुन्तहा नीचे, सातों आसमान नीचे, सातों ज़मीन नीचे, ज़मीन व आसमान में रहने वाले नीचे, बैतुल्लाह नीचे, बैतुल मुक़द्दस नीचे। फ़रिश्तों का कअ़बा बैतुल मअमूर नीचे। जन्नत नीचे।

अल्लाह तआला का अर्श नीचे था और क़दमे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सब के ऊपर।

आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

वही ला मकां के मकीं हुए सरे अर्श तख़्ते नशीं हुए
वह नबी हैं जिन के हैं यह मकां वह ख़ुदा है जिस का मकां नहीं

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला ने अपने प्यारे महबूब रहमते आलम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इस क़दर रिफ़अत व बलन्दी बख़्शी कि सारी मख़लूक़ को अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमों के नीचे कर दिया और दिखा दिया और फ़रमा दिया ऐ मेरे महबूब ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैंने अपनी कुल कायनात को तेरे क़दमों के नीचे करदिया है और तेरे क़दमों को सारी मख़लूक़ के सर का ताज बना दिया है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

ज़हे इज़्ज़तो एतिलाए मुहम्मद
कि है अर्शे हक़ ज़ेरे पाए मुहम्मद

आक़ाए कायनात, महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब अर्शे आज़म पर जलवा गर हुए तो अर्श ने हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दामने अज़मत को थाम लिया और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम सिर्फ़ आप की ज़ाते अक़दस को अल्लाह तआला ने अपने जलाले अहदियत और जमाले समदियत से आगाह फ़रमाया और मैं ग़मज़दा हूँ, आहें भरता हूँ, मगर कोई राह नहीं पाता जिस से अपनी हाजत पूरी करूँ, जब कि अल्लाह तआला ने मुझे आज़मे ख़ल्क़ बनाया है और मैं हैबत व ख़ौफ़ में मुब्तला हूँ। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जब अल्लाह तआला ने मुझे पैदा फ़रमाया तो मैं उस के हैबत व ख़ौफ़ से कांपने लगा फिर मेरे पायह पर लिखा ला इलाहा इल्लल्लाह तो मेरी हैबत व घबराहट और बढ़ गई और मैं लरज़ने और कांपने लगा, फिर जब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) लिखा तो मुझे सुकून हासिल हुआ और मेरा हिलंना और कांपना दूर हुआ और मेरी बे चेनी और घबराहट ख़त्म हो गई। आप का इस्मे मुबारक मेरे दिल के लिये चैन और क़ल्ब के लिये इत्मीनान का सबब साबित हुआ। मुझ पर आप के इस्मे गिरामी की बरकत ज़ाहिर हुई अब तो बहुत कुछ बरकतें हासिल होंगी। इस लिये कि आप कीं नज़रे करम मुझ पर पड़ गई है।

اَنْتَ الْمُرْسَلُ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

आप तो तमाम आलम के लिये रहमत वाले रसूल हैं । सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और यक़ीनन मुझे भी आप की रहमत का हिस्सा ज़रूर मिलेगा। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 308)

ऐ ईमान वालो ! जब अल्लाह तआला का अर्शे आज़म हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहिव आलिही वसल्लम को पुकारता है और या रसूलल्लाह कहता है तो हम गुलामाने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हक़ ज़्यादा है कि अपने नबी सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पुकारें और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कहें। और अर्शे आज़म कहता है कि हम घबरा रहे थे, कांप रहे थे, आप का नामे पाक जब मुझ पर लिख दिया गया तो आप के नामे मुबारक की बरकत से मेरी घबराहट और बे चैनी दूर हो गई। पता चला और मालूम हुआ कि मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे पाक से फ़ायदा पहुँचता है। जैसा कि अर्श की घबराहट और बे चेनी ख़त्म हुई तो मुझे बताना और कहना यह है कि जब हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे मुबारक से अर्श को फ़ायदा मिला तो अगर मोमिन यानी गुलामे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम लें और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम पुकारें तो ज़रूर बिल ज़रूर फ़ायदा मिलेगा।

आशिक़े मुस्तफ़ा, आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं:

ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम और बुराक़ दोनों सिदरा पर रुक गए तो आप की ख़िदमत में रफ़ रफ़ पेश किया गया जो सब्ज़ रंग का था और उस का नूर सूरज की रौशनी पर ग़ालिब था आप उस रफ़रफ़ पर सवार हो कर अर्शे आज़म पर जलवा फ़रमा हुए।

(मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 152, अनवारे मुहम्मदिया, स. 348)

आशिक़े मुस्तफ़ा इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खूब नक़्शा खींचा है।

झुका था मुजरे को अर्शे आला, गिरे थे सज्दे में बज़्मे बाला
यह आँखें क़दमों से मल रहा था, वह गर्द कुरबान हो रहे थे
ज़ियाएं कुछ अर्श पर यह आई कि सारी क़न्दीलें झिलमिलाईं
हुज़ूरे ख़ुरशीद क्या चमकते, चिराग़ मुंह अपना देखते थे

दुरूद शरीफ़ :

हमारे आक़ा मेअराज के दूल्हा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रफ़रफ़ पर सवार हो कर अर्श से आगे तशरीफ़ ले गए। (अल यवाक़ीत जवाहर, स. 35)

हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रफ़रफ़ पर सवार थे। सफ़र जारी था, आगे बढ़ते रहे, बहुत से नूरानी हिजाबात व मक़ामात तय करने के बाद रफ़रफ़ भी रुख़सत हो गया, अब हमारे हुज़ूर पुर नूर मुहम्म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तन्हा जाने वाले थे।

आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा, सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सुराग़ ईनो मता......कहाँ था, निशान कैफ़े वाला कहाँ था
न कोई राही, न कोई साथी, न संगे मन्ज़िल न मरहले थे

हमारे सरकार मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने लामकां में सत्तर हिजाब नूर के तय किये, उस वक़्त हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को वहशत सी मालूम हुई (यानी कुछ घबराहट और अकेला पन मालूम हुआ) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आवाज़ में यह निदा सुनाई दी। قِفْ يَا مُحَمَّدُ اِنَّ رَبَّكَ يُصَلِّيْ ٥

ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ठहरिये आप का रब्बे आला आप पर सलात भेजता है।

हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं मुतफ़क्किर हुआ कि अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की आवाज़ कहाँ से आई और मुझे

मेरे अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की आवाज़ से उन्स और क़रार हासिल हुआ और मुझ से वहशत दूर हो गई। (मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 2, स. 34, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 305)

ऐ ईमान वालो ! ज़मीन वाले, ज़मीन पर, आसमान वाले आसमान पर अर्श वाले अर्श पर, और ख़ुद ख़ालिक़ो मालिक अल्लाह तआला ला मकां में अपने प्यारे महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद भेजता है।

आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अर्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श पे तुरफ़ा धूम धाम
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है

दुरूद शरीफ़ :

फिर अल्लाह तआला की जानिब से निदा हुई : اُدْنُ يَا خَيْرَ الْبَرِيَّةِ اُدْنُ يَا اَحْمَدُ اُدْنُ يَا مُحَمَّدُ

ऐ सारी मख़लूक़ से अफ़ज़ल व आला क़रीब आ। ऐ अहमद क़रीब आ। ऐ मुहम्मद क़रीब आ सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 305)

और हमारे आला हज़रत आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस को यूँ बयान फ़रमाते हैं :

यही समां था कि पेके रहमत ख़बर यह लाया कि चलिये हज़रत
तुम्हारी ख़ातिर कुशादा हैं जो कलीम पर बन्द रास्ते थे
बढ़ ऐ मुहम्मद ! क़रीं हो अहमद क़रीब आ सरवर मुमज्जद
निसार जाऊँ यह क्या निदा थी, यह क्या समां था, यह क्या मज़े थे

दुरूद शरीफ़ :

दीदारे रब तआला आँखों से

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे नबी मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सर की आँखों से रब तआला की ऐन ज़ात का दीदार किया। हवाला मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(1) اِخْتَلَفَ فِيْ تِلْكَ الرُّؤْيَةِ فَقِيْلَ رَاٰهُ بِعَيْنِهٖ حَقِيْقَةً وَهُوَ قَوْلُ جُمْهُوْرِ الصَّحَابَةِ وَالتَّابِعِيْنَ

(तफ़सीरे सावी, पारा 29, स. 116)

इस रिवायते बारी तआला में इख़्तिलाफ़ है कहा गया है कि आप ने अल्लाह तआला को अपनी आँख से देखा और यही क़ौल जमहूरे सहाबा और ताबेईन का है।

(2) اِنَّ الرَّاجِحَ عِنْدَ اَكْثَرِ الْعُلَمَاءِ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ رَاٰى رَبَّهٗ بِعَيْنَيْ رَاْسِهٖ لَيْلَةَ الْاِسْرَاءِ

(शरह मुस्लिम, स. 97)

यानी अकसर उलमा के नज़दीक राजेह यही है कि बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने शबे मेअराज अपने रब को अपने सर की आँखों से देखा।

(3) हमारे आक़ा मेअराज के दूल्हा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : رَاَيْتُ رَبِّیْ
अपने रब को देखा। (फ़तहुल बारी इब्ने हजर, जि. 10, स. 232)

(4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :
قَدْ رَاٰی مُحَمَّدٌ رَبَّهٗ
यानी बे शक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने रब को देखा।
(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 107)

(5) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने रब को देखा।
(उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी, जि. 19, स. 198, फ़तहुल बारी, जि. 8, स. 608)

(6) इब्ने इस्हाक़ बयान करते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया। هَلْ رَاٰی مُحَمَّدٌ رَبَّهٗ. قَالَ نَعَمْ क्या ? मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने रब को देखा। तो हज़रत अबू हुरहैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हाँ। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 1, स. 197)

(7) हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क़सम खा कर फ़रमाते हैं बे शक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला का दीदार किया।

(8) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ख़ुल्लत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिये, कलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिये और दीदार, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये।
(शरह मुस्लिम नववी, जि. 1, स. 97, फ़तहुल बारी, जि. 8, स. 608, शिफ़ा शरीफ़, जि. 1 ,स. 196)

(9) हज़रत इमाम अहमद इब्ने हंबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदारे रब तआला के बारे में पूछा गया तो आप फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला को देखा है। देखा है देखा है। इतनी बार फ़रमाते कि आप की सांस टूट जाती।
(रूहुल मआनी, जि. 14, स. 54, रूहुल बयान, जि. 9, स. 223)

(10) पीरों के पीर, रौशन ज़मीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रूयते बारी तआला यानी अल्लाह तआला का दीदार सिवाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के किसी और को दुनिया में हासिल नहीं हुआ। (अल यवाकीतुल जवाहर, जि. 1, स. 128)

महबूबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अस्माए रब तआला की बारगाह से गुज़रे तो उन अस्मा की सिफ़ात के मज़हर हो गए जब सिफ़ते रहीम से गुज़रे तो रहीम हुए। सिफ़ते ग़फ़ूर से गुज़रे तो ग़फ़ूर हो गए। सिफ़ते करीम से गुज़रे तो करीम, हो गए। सिफ़ते हलीम से गुज़रे तो हलीम हो गए। सिफ़ते शकूर से गुज़रे तो शकूर हो गए। सिफ़ते जव्वाद से गुज़रे तो जव्वाद हो गए। इसी तरह दीगर अस्माए रब तआला की बारगाह से गुज़रते गए। यहाँ

तक कि मेअराज से वापस तशरीफ़ नहीं लाए मगर कामिल व अकमल हो गए। (जवाहर, स. 36)

हदीस शरीफ़ :

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ رَأَيْتُ رَبِّيْ فِيْ اَحْسَنِ صُوْرَةٍ
فَوَضَعَ كَفَّهٗ بَيْنَ كَتِفَيَّ فَوَجَدْتُ بَرْدَهَا بَيْنَ ثَدْيَيَّ فَعَلِمْتُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मैंने अपने रब को हसीन सूरत में देखा फिर उस ने मेरे दोनों कन्धों के दरमियान अपना दस्ते कुदरत रखा उस से मैंने अपने सीने में ठन्डक पाई और ज़मीन व आसमान की हर चीज़ को मैंने जान लिया। (मिश्कात शरीफ़, स. 68)

और मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 2, स. 29, और रूहुल बयान, जि. 2, स. 402 की रिवायत में यह अलफ़ाज़ आए हैं।

فَاَوْرَثَنِيْ عِلْمَ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ

पस अल्लाह तआला ने मुझे तमाम अव्वलीन व आखरीन के उलूम का वारिस बना दिया।

مَقَامِ دَنَا فَتَدَلّٰى फिर हमारे हुज़ूर पुर नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने रब तआला के कुर्ब ख़ास में इतना क़रीब हुए। रब तआला ने फ़रमाया।

ثُمَّ دَنٰى فَتَدَلّٰى 0 فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى 0 فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى 0

तर्जमा : फिर वह जलवा नज़दीक हुआ, फिर ख़ूब उतर आया तो इस जलवे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि उस से भी कम अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई। (पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यानी हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़रीब हुए अपने रब तआला से और ज़्यादा क़रीब हुए तो अल्लाह तआला हमारे नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से दो कमानों के मिक़दार या उस से ज़्यादा क़रीब हुआ।

आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उठे जो क़सरे दना के परदे कोई ख़बर दे तो क्या ख़बर दे
वहाँ तो जा ही नहीं दोई की न कह कि वह भी न थे अरे थे

हिजाब उठने में लाखों परदे, हर एक परदे में लाखों जलवे
अजब घड़ी थी कि वस्ले फ़ुरक़त, जनम के बिछड़े गले मिले थे

वही है अव्वल, वही है आख़िर, वही है ज़ाहिर, वही है बातिन
उसी के जलवे, उसी से मिलने, उसी से, उस की तरफ़ गए थे

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हमारे हुज़ूर पुर नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कितने उलूम का सरमाया अता किया है ? हमारे

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं तमाम अव्वलीन व आख़रीन के उलूम मुझे दिये गए और ज़मीन व आसमान में ज़ो कुछ है। सब का इल्म अल्लाह तआला ने मुझे अता फ़रमाया।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शय नहीं वह जो तुझ पे अयां नहीं

दुरूद शरीफ़ :

मगर नहीं मानता तो बे ईमान वहाबी, देवबन्दी

उन का अक़ीदा मुलाहज़ा करो और उन से बचते रहो और अपने ईमान की हिफ़ाज़त करो

वहाबी का अक़ीदा : (1) वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को अपना हाल, कि क़ब्र में और क़ियामत के दिन मेरे साथ अच्छा होगा या नहीं कुछ मालूम नहीं। (तक़्वीयतुल ईमान, स. 41)

(2) वहाबियों देवबन्दियों के पेशवा मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी लिखते हैं कि रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है और लिखते हैं कि शैतान और मलकुल मौत के इल्म से रसूलुल्लाह का इल्म कम है और शैतान व मलकुल मौत का इल्म कुरआन से साबित है और रसूलुल्लाह का इल्म कुरआन से साबित नहीं और जो शख़्स रसूलुल्लाह का इल्म साबित करे वह मुशरिक है। (बराहीने क़ातिआ, स. 51, मतबुआ कानपूर)

हज़रात ! जो हदीस बयान की गई उसे आप हज़रात ने बग़ौर सुन लिया है कि महबूबे खुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही रसल्लम ने खुद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझ पर करम फ़रमाया कि मैं ने ज़मीन व आसमान में ज़ो कुछ है और अव्वल व आख़िर सारी चीज़ों को जान लिया और वहाबी, देवबन्दी कहते हैं कि रसूलुल्लाह को कुछ भी इल्म नहीं हत्ता कि दीवार के पीछे की भी ख़बर नहीं। तो आप को अब यक़ीन हो गया होगा कि वहाबी, देवबन्दी दुश्मने रसूल हैं, मोमिन नहीं मुनाफ़िक़ हैं उन से दूर रहना और उन को अपने से दूर रखना लाज़िम व ज़रूरी है। अल्लाह तआला अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे आमीन सुम्मा आमीन।

अल्लाह तआला से बे हिजाब कलाम किया

अल्लाह तआला की ऐन ज़ात का अपने सर की आँखों से दीदार फ़रमाया, और अल्लाह तआला की मुक़द्दस ज़ात रूबरू है और अपने रब तआला से बिला वास्ता कलाम किया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से कलाम किया तो आसमान के नीचे ज़मीन में कोहे तूर पर बे शुमार हिजाबात के बीच, मगर हमारे नबी मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने रब तआला से हम कलाम होते हैं तो ज़मीन से

ऊपर आसमानों के आगे अर्श के ऊपर ला मकान में रूबरू जाते रब तआला है और बग़ैर हिजाब के कुरआने पाक फ़रमाता है।

فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ۝

तर्जमा : अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई।

(पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! हमारे आक़ा शबे असरा के दूल्हा, मेहमाने ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब दीदार की नेअमत और कलाम के शरबत से नवाज़े जा चुके तो अल्लाह तआला की बारगाहे अहदियत में महबूबे अकबर और बन्दए ख़ास की हैसियत से तोहफ़ा पेश किया।

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالطَّيِّبَاتُ तमाम बदनी, ज़बानी और माली इबादतें अल्लाह तआला के लिये हैं तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तहिय्याते सलात और तैयिबात का तोहफ़ा आप ने मेरी बारगाह में मुझे पेश किया तो तुम्हारा रब तआला भी तुम को सलाम का इनआम अता फ़रमाता है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ यानी ऐ प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम आप पर सलाम व रहमत और बरकत नाज़िल हो। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 149)

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह ! क्या शान व मरतबा है मेअराज के दूल्हा हमारे प्यारे नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अगर हम को,, या आप को, कोई हाकिम या बादशाह, सलाम कर ले तो हमारा और तुम्हारा सर फ़ख़्र से ऊंचा हो जाता है तो ग़ौर करो और बताओ कि उस महबूबे पाक साहिबे लौलाक अहमदे मुज्तबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला_लैहि व आलिही वसल्लम की अज़मत व रिफ़अत का आलम क्या होगा। जिस को ख़ुद ख़ालिक़ो मालिक बादशाहों का बादशाह अहकमुल हाकिमीन सलाम फ़रमाता है।

हुज़ूर के सदक़े आशिक़े मुस्तफ़ा, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर लाखों सलाम ख़ूब फ़रमाया :

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा

अल्लाह तआला के सलाम की बे शुमार रहमतें व बरकतें, जब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर नाज़िल हो रही थीं उस वक़्त शफ़ीए उम्मत, नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी उम्मत को याद फ़रमाते हैं तो रब तआला बारगाहे करम में यूँ अर्ज़ करते हैं :

اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ.

यानी ऐ अल्लाह तआला तेरा सलाम हम पर, और तेरे नेक बन्दों पर यानी मेरी तमाम उम्मत पर भी तेरा सलाम हो। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 149)

ऐ ईमान वालो ! हमारे आक़ा रहमत व बरकत वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हम गुनाहगार उम्मत पर कितने मेहरबान और शफ़ीक़ हैं कि वहाँ यानी ला मकां, कुर्बे ख़ास में। जहाँ न कोई नबी व रसूल और न फ़रिश्ते की गुज़र है हम गुनाहगारों का ज़िक्रकिया। और हम उम्मतियों को याद फ़रमाया। अब हम उम्मत का, गुलामों का, फ़र्ज़ किया है कि ऐसे रऊफ़ो रहीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का भूल जाएं हर गिज़ नहीं हो सकता, हम गुलामाने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपने प्यारे आक़ा, नबिये रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को सुबहो शाम, रात व दिन याद करेंगे। महफ़िले मीलाद व मेअराज सजा कर याद करेंगे। आप का नामे मुबारक चूम कर याद करेंगे। हर नमाज़ के बाद सलातो सलाम पढ़ कर याद करेंगे।

आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आदत कीजिये
बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

और हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा की महब्बत का फ़ैसला यह है जो ब ज़ुबान सरकार आला हज़रत है कि :

ख़ाक हो जाएं अदू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जाएंगे

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! जब फ़रिश्तों को मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने कुर्बे ख़ास में मेअराज के दूल्हा, महबूबे आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर सलाम भेजा और हबीबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने तहिय्यात व सलवात और तैय्यिबात का नज़राना रब तआला की बारगाहे करम में पेश किया है तो फ़रिश्तों ने कहा :

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

मैं गवादी देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस के बन्दे और उस के रसूल हैं।

(मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 149)

हज़रात ! हमारे प्यारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब सफ़रे मेअराज यानी अल्लाह तआला की बारगाहे कुर्ब से वापस होने लगे तो

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब सफ़र से वापस होने वाला वापस आता है तो अपने घर वालों के लिये। दोस्त व अहबाब के लिये कुछ न कुछ तोहफ़ा लाता है। ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तुम एक अज़ीम सफ़र पर और अज़ीम बारगाह में आए हो। उम्मत के लिये क्या तोहफ़ा ले जाओगे ? मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अर्ज़ किया मेरे रब्बे करीम जो तू अता फ़रमाएगा वही ले कर जाऊँगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया जो तुम ने मेरी बारगाह में पेश किया और मैं ने जो तुम को दिया यानी सलाम और फ़रिश्तों ने जो कहा वह तोहफ़ा तुम अपनी उम्मत के लिये ले जाओ ताकि आप की उम्मत उस को नमाज़ में पढ़ें और हमेशा हमेश की सआदत हासिल करें। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 152)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(7)

रजब शरीफ़

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

शबे मेअ़राज की इबादतें

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

ثُمَّ دَنٰی فَتَدَلّٰی فَکَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی ٥

तर्जमा : फिर वह जलवा नज़दीक हुआ, फिर ख़ूब उतर आया तो उस जलवे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि उस से भी कम। अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई। (पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला ने शबे मेअराज, ला मकां अपने कुर्बे ख़ास में महबूबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को आप की उम्मत के लिये जो तोहफ़ा अता फ़रमाया वह तोहफ़ा नमाज़ है।

हदीस शरीफ़ : فُرِضَتْ عَلَیَّ الصَّلٰوةُ خَمْسِیْنَ صَلٰوةً فِیْ کُلِّ یَوْمٍ فَرَجَعْتُ

(मुस्लिम, जि. 1, स. 93, मिश्कात शरीफ़, स. 528)

मुझ पर यानी मेरी उम्मत पर और मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं फिर मैं वापस आया।

यादे उम्मत : हमारे प्यारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रब तआला को अपने सर की आँखों से देखा और किस शान से देखा, क़ुरआने पाक फ़रमाता है : مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی

तर्जमा : आँख न किसी तरफ़ फिरी और न हद से बढ़ी। (पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

मतलब पलक भी न झपकी और दीदार होता रहा। फिर हमारे प्यारे आक़ाए रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला की बारगाह में सज्दा किया उस के बाद राज़ो नियाज़ की बातें हुईं जिन की किसी को ख़बर नहीं।

(मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. 152)

रब तआला ने फ़रमाया : حَبِيْبِيْ اَنَا وَاَنْتَ وَمَا سِوَاكَ خَلَقْتُ لِاَجْلِكَ यानी ऐ मेरे हबीब मैं हूँ और तू है और तेरे अलावा जो कुछ मैं ने पैदा किया है वह सब तेरे लिये पैदा किया है।

मेअराज के दूल्हा, प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अर्ज़ करते हैं : اِلٰهِيْ اَنَا وَاَنْتَ وَمَا سِوَاكَ تَرَكْتُ لِاَجْلِكَ मेरे मअबूद में हूँ और तू है और मैं ने तेरे अलावा सब कुछ छोड़ दिया।

(मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, बहवाला पैग़ामे मेअराज, स. 191, 192)

अल्लाह तआला अपने प्यारे हबीब हम बीमारों के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से फ़रमाता है। मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप की मरज़ी से कुछ मांगो। जो तुम्हारा जी चाहे मांग लो। तुम्हारी रज़ा में मेरी रज़ा है।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं।

खुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
खुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद

जब अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जो चाहो मांगो लो तो मेरे रहीम व करीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अर्ज़ करते हैं : رَبِّ هَبْ لِيْ اُمَّتِيْ ऐ रब ! मेरी उम्मत मेरे हवाले फ़रमा दे और एक रिवायत में है कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अर्ज़ किया

اَلصَّالِحُوْنَ لِلّٰهِ وَالطَّالِحُوْنَ لِيْ

यानी ऐ रब तआला ! मेरी उम्मत के नेक लोगों को तू ले ले और मेरी गुनाहगार उम्मत को मुझे दे दे। (मआरिजुन्नुबुव्वत, जि. 3, स. ब हवाला पैग़ामे मेअराज, स. 194)

क्या ही खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

क्या ही ज़ौक़ अफ़ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह
क़र्ज़ लेती है गुनाह परहेज़गारी वाह वाह
सदक़े उस इनआम के क़ुरबान उस इकराम के
हो रही है दोनों आलम में तुम्हारी वाह वाह

अल्लाह तआला का ख़िताब सत्तर हज़ार मरतबा

सत्तर हज़ार मरतबा ख़िताबे बारी तआला होता है : حَبِيْبِيْ سَلْ مَا شِئْتَ मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जो चाहो मांग लो, हर मरतबा यही अर्ज़ करते हैं मेरे रब तआला मेरी उम्मत मुझे देदे। उस में यह राज़ है कि उम्मत जब मिल जाएगी तो गुनाहगारों को अल्लाह तआला की अता की हुई शफ़ाअत से जन्नत में दाखिल करूँगा क्यों कि रब तआला

की अता से जन्नत मेरी है और उम्मत भी मेरी है मगर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत से काफ़िर व मुशरिक और मुनाफ़िक़, वहाबी, देवबन्दी महरूम रहेंगे और मोमिन वफ़ादार हत्ता कि गुनाहगार सर फ़राज़ किये जाएंगे।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

किस को देखा यह मूसा से पूछे कोई
आँख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रज़ा और मतलब को कुबूल फ़रमाया और उम्मत की बख़्शिश का वादा फ़रमाया। अब हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने रब तआला के दीदारे पुर बहार से मुशर्रफ़ हो कर उम्मत की बख़्शिश का परवाना हासिल कर के पचास वक़्त की नमाज़ का तोहफ़ा ले कर वापस तशरीफ़ लाए। (पैग़ामे मेअराज, स. 194)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात

हदीस शरीफ़ : فَمَرَرْتُ عَلٰى مُوْسٰى فَقَالَ بِمَا اُمِرْتَ قُلْتُ اُمِرْتُ بِخَمْسِيْنَ صَلٰوةً كُلَّ يَوْمٍ
قَالَ اِنَّ اُمَّتَكَ لَا تَسْتَطِيْعُ خَمْسِيْنَ صَلٰوةً كُلَّ يَوْمٍ

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात, स. 528)

यानी हमारे आक़ा मेअराज के दूल्हा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के दीदार से मुशर्रफ़ हो कर वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो छटे आसमान पर हज़रत मूसा लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कहा कि रब तआला की तरफ़ से आप को किस चीज़ का हुक्म दिया गया है ? तो मैं ने कहा कि हर दिन मैं पचास नमाज़ों का हुक्म दिया गया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को रोकना चाहते थे और चेहरए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में बार बार जलवए ख़ुदा देखना चाहते थे, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मालूम था कि कोहे तूर पर सिफ़त की तजल्ली थी और निगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में रब तआला की ज़ात की तजल्ली है और तूर पहाड़ी वसीला बनी और जब तजल्ली का नुज़ूल हुआ तो तूर पहाड़ी रेज़ा रेज़ा होकर बिखर गई और मैं बे होश हो गया और दिल की हसरत दिल में रह गई। मेरा ख़्वाब पूरा न हुआ था, आरज़ू बाक़ी थी, अब वक़्त आया है कि दिल की हसरत पूरी करूँ, आरज़ुओं की तकमील करूँ मगर उन को रोकूँ कैसे

उन को रोकना आसान नहीं है तो उम्मत की कमज़ोरी और उम्मत की परेशानी का ज़िक्र किया और अर्ज़ किया कि आप की उम्मत कमज़ोर है हर रोज़ पचास वक़्त की नमाज़ें नहीं पढ़ सकेगी अपने रब के पास जाइये और नमाज़ें क़म कराइये।

इस मक़ाम पर एक सवाल पैदा होता है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इल्म था कि पचास वक़्त की माज़ें ज़्यादा हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को क्या यह इल्म नहीं था और जब अल्लाह तआला को पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ करनी थीं तो शुरू में पहले पचास नमाज़ें क्यों फ़र्ज़ कीं ? उस का जवाब यह है कि अल्लाह तआला को भी इल्म था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को भी इल्म था और बे शक व शुबा इल्म था कि पाँच वक़्त की नमाज़ें ही फ़र्ज़ रहेंगे।

मगर उस का जवाब यह है कि अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बार बार अपने क़ुर्ब में बुलाना चाहता था और मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी बार बार क़ुर्बे ख़ास में ज़लवा गर हो कर रब तआला का दीदार करना चाहते थे और उम्मत को यह ख़बर देना चाहते थे कि मेरी शान व अज़मत को मेरे ग़ुलामो ! ख़ूब जान लो और पहचान लो कि बज़ाहिर एक बार रब तआला ने बुलाया और नो बार में अपनी मर्ज़ी से गया।

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि पचास वक़्त की नमाज़ें ज़्यादा हैं रब तआला के पास जाकर नमाज़ें क़म कराइये। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने रब तआला के क़ुर्बे ख़ास में हाज़िर हुए। नमाज़ें क़म करने की दरख़्वास्त की तो अल्लाह तआला ने पाँच वक़्त की नमाज़ को कम कर दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पैंतालीस वक़्त की नमाज़ें लेकर वापस हुए। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, रब तआला ने कितनी नमाज़ें मुआफ़ की तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : पाँच वक़्त की नमाज़ें कम हुईं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फिर हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते मुबारका में अर्ज़ करते हैं कि अब भी नमाज़ें ज़्यादा हैं कम कराइये। इस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बार बार भेज रहे हैं कि नमाज़ें ज़्यादा हैं कम कराइये।

नुकता : हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए मुनव्वरा में जलवए ख़ुदा देखना चाहते थे इस लिये नमाज़ें कम कराने के बहाने से आप को भेज रहे थे कि बार बार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुदा को देखें और बार बार मैं मुस्तफ़ा को देखूँगा।

ख़ुदा का दीदार मुस्तफ़ा की मेअराज है
और मुस्तफ़ा का दीदार मूसा की मेअराज है

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! अगर हमारे आक़ा, मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिदे अक़्सा न जाते बल्कि सीधे आसमानों से हो कर सिदरा पर और ला मकां चले जाते तो आप की मेअराज तो हो जाती लेकिन एक लाख चौबीस हज़ार कम व बेश अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम की मेअराज न हो पाती। क्योंकि आप की मेअराज ख़ुदाए तआला को देखना है और कायनात की मेअराज आप को देखना है। मुहक़्क़ेक़ीन फ़रमाते हैं कि जब मेअराज के दूल्हा नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अम्बियाए किराम के इमाम बने तो आप की बशरियत की मेअराज हुई और जब सिदरा पर जिब्रईले अमीन से आगे तशरीफ़ ले गए तो आप की नूरानियत की मेअराज हुई और जब अर्श से आगे बढ़े तो आप की हक़ीक़त की मेअराज हो गई और हक़ीक़त तो यह है कि जब आप नबियों के इमाम हुए तो नबियों की मेअराज हुई। आसमानों पर पहुँचे तो आसमानों की मेअराज हुई। सिदरा पहुँचे तो सिदरा की मेआरज हुई। अर्श पर पहुँचे तो अर्श की मेअराज हुई और जब आप فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى पर पहुँचे औ ऐन ज़ात रब तआला को बे हिजाब देखा तो आप की मेअराज हो गई क्यों कि कायनात की मेअराज यह है कि वह आप को देखे और आप की मेआरज यह है कि आप ख़ुदा को देखें।

उन की मेअराज यह है कि ख़ुदा तक पहुँचे
हमारी मेअराज यह है कि हम उन के क़दम तक पहुँचे

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! हज़ारों हज़ारों साल का सफ़र, सफ़रे मेअराज, रात के बहुत ही क़लील वक़्त में तय फ़रमाया और वापस तशरीफ़ लाए तो ज़न्जीर भी हिल रही थी, बिस्तर गर्म था, और वुज़ू का पानी बह रहा था। (रूहुल मआनी, जि. 15, स. 12, रूहुल बयान, जि. 3, स. 404)

आशिक़े मुस्तफ़ा, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ख़ुदा की कुदरत कि चाँद हक़ के करोड़ों मन्ज़िल में जलवा करके
अभी न तारों की छाऊँ बदली कि नूर के तुड़के आ लिये थे
नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत रज़ा पे लिल्लाह हो इनायत
उसे भी उन ख़िलअतों से हिस्सा जो ख़ास रहमत के वां बटे थे

दुरूद शरीफ़ :

शबे असरा के दूल्हा हमारे प्यारे नबी शफ़ीए उम्मत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वापसी हुई मस्जिदे हराम में तशरीफ़ लाए।

हदीस शरीफ़ : فَاسْتَيْقَظْتُ وَاَنَا بِالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ तो मैं वापस हुआ तो मस्जिदे हराम में था। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 1, स. 246)

हमारे प्यारे नबी, मेअराज के दूल्हा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मेअराज से वापस आ कर सफ़रे मेअराज का ज़िक्र फ़रमाया तो मोमिनों

ने दिल व जान से तस्लीम किया और कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन ने इनकार किया और खूब हंसी और मज़ाक़ बनाया, अबू जहल लईन कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास पहुँचा और कहने लगा तुम्हारे साहब और तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहते हैं कि मैं रात बैतुल मुक़द्दस गया और सुबह से पहले इतना तवील सफ़र कर के वापस भी आ गया। ऐ अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) क्या यह झूटी बात नहीं है ? बताओ अब तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ? हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, मैं तस्दीक़ करता हूँ कि हमारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही सल्लम ने सच फ़रमाया है हक़ फ़रमाया है। सुबह हुई तो आप सिद्दीक़े अकबर के लक़ब से सरफ़राज़ हुए। (तफ़सीर इब्ने कसीर, जि. 3, स. 10)

सय्यिदुस्सादात हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद

إِنَّ اللّٰهَ أَنْزَلَ إِسْمَ أَبِي بَكْرٍ مِنَ السَّمَاءِ الصِّدِّيْقَ

सर चश्माए विलायत हज़रत अली अबुल हसन वल हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन फ़रमाते हैं, बे शक अल्लाह तआला ने अबू बक्र का नाम सिद्दीक़ आसमान से नाज़िल फ़रमाया है। (रूहुल बयान, जि. 3, स. 405)

कुफ़्फ़ारे मक्का ने जब वाक़िए मेअराज सुना तो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से तरह तरह के सवालात करने लगे। मक़सद यह था कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को किसी तरह झूटा साबित कर दें और शम्ए इस्लाम को बुझा दें मगर अल्लाह तअला जिसे बलन्द फ़रमाए उसे कौन मिटा सकता है

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्दा ज़न
फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा

दुरूद शरीफ़ :

उन काफ़िरों में अकसर ऐसे भी थे जिन्होंने बैतुल मुक़द्दस को देखा था, कुफ़्फ़ार कहने लगे अगर आप सचे हैं तो बैतुल मुक़द्दस की निशानियाँ हमें बताएं। हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बैतुल मुक़द्दस की निशायिाँ बयान करनी शुरू फ़रमाईं और अल्लाह तआला ने तमाम परदे हटा कर अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पेशे नज़र बैतुल मुक़द्दस कर दिया, कुफ़्फ़ार सवाल करते जाते थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बैतुल मुक़द्दस को देख कर जवाब दे रहे थे।

इधर से कौन गुज़रा था कि अब तक
दयारे कहकशां में रोशनी है

शबे मेअराज की इबादत

(1) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि नबिये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : कि रजब की सत्ताइसवीं रात में इबादत करने वालों को सो साल की इबादत का सवाब मिलता है जिस ने इस रात में बारह रकअत नमाज़ इस तरह पढ़ी कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा पढ़ कर कुरआने करीम की कोई सूरह पढ़े और दो रकअत पर तशहहुद (अत्तहिय्यात आख़िर तक) पढ़ कर (बाद दुरूद) सलाम फैरे और बारह रकअतें पढ़ने के बाद सौ मरतबा यह तस्बीह पढ़े :

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ फिर सो मरतबा اَسْتَغْفِرُ الله और सौ मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े। तो दुनिया व आख़िरत के उमूर के मुतअल्लिक़ जो कुछ चाहे दुआ करे और सुबह में रोज़ा रखे तो यक़ीनन अल्लाह तआला उस को तमाम दुआओं को कुबूल फ़रमाएगा मगर यह कि वह किसी गुनाह की दुआ न करे। (अहयाउल उलूम, जि. 1, स. 373)

(2) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि रजब वह पुर अज़मत महीना है जिस में अल्लाह तआला नेकियों का सवाब कई गुना ज़्यादा देता है। जिस ने इस माह में एक दिन का रोज़ा रखा तो गोया उस ने साल भर के रोज़े रखे और जिसने इस माह में सात दिन के रोज़े रखे तो उस परदोज़ख के सात दरवाज़े बन्द हो जाते हैं और जिस ने इस माह में आठ दिन के र ोज़े रखे उस के लिये जन्नत के आठ दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और इस माह में दस दिन के र ोज़े रखने वाला अल्लाह से जो मांगेगा वह उसे अता करेगा और जो इस माह में पन्द्रह रोज़े रखे तो आसमानी मुनादी आवाज़ देता है ऐ रोज़ा दार ! तेरे तमाम पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये गए अब नेक अमल शुरू कर दो, जो ज़्यादा अच्छे अमल करेगा उसे ज़्यादा सवाब दिया जाएगा।

(मा सबत बिस्सुन्नह मुतरजम, स. 170, 171, ब हवाला शअबिन ईमान बैहक़ी)

(3) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबिये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत में एक नहर है जिसे रजब कहा जाता है वह यानी (उस का पानी) दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा शीरीं है जो रजब में एक दिन रोज़ा रखेगा अल्लाह तआला उसे उस नहर से सैराब फ़रमाएगा। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 88, ब हवाला शअबिल ईमान, बैहक़ी)

(4) हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : पाँच रातों में कोई दुआ रद नहीं की जाती (1) रजब की पहली रात (2) शअबान की पन्द्रहवीं रात (3) जुमा की रात (4) ईद की रात (5) बक़रईद की रात। (मुकाशिफ़तुल कुलूब, अरबी, स. 249, ब हवाला देलमी)

जश्ने मेअराज

मेअराज शरीफ़ का जश्न मनाना, मोमिनों का हिस्सा है और मुनाफ़िकों को ख़ुद नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कोई ग़रज़ व मतलब नहीं है तो जश्ने मेअराज से उन को क्या फ़ायदा ? हाँ ईमान वाला मुसलमान रजब शरीफ़ की सत्ताइसवीं शब

से प्यार व महब्बत करता है कि यही रात हमारे नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का कुर्ब रब तआला में पहुँच कर दीदार का शरफ़ हासिल हुआ और इसी रात में उम्मत के लिये नमाज़ जैसी आला इबादत का तोहफ़ा मिला। इसी रात अल्लाह तआला ने उम्मत की बख़्शिश का वादा फ़रमाया। इस लिये हम ईमान वाले मेअराज की रात में जश्ने मेअराज की महफ़िल का इनइक़ाद करते हैं। अल्लाह तआला और उसके महबूब, मेअराज के दूल्हा, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र सुनते और सुनाते हैं । दुरूदो सलाम पढ़ते और पढ़ाते हैं, न्याज़ व फ़ातिहा दिलाते हैं दुआएं होती हैं खाने खिलाए जाते हैं मिठाइयाँ तक़सीम की जाती हैं।

ऐ ईमान वालो ! सोचो और ग़ौर करो कि जश्ने मेअराज मनाने में कोई ऐसा अमल है जो ना पसन्दीदा हो, अल्लाह तआला और प्यारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र है। दुरूदो सलाम है। नियाज़ व फ़ातिहा है दुआएं हैं, खाना खिलाना, मिठाइयाँ बांटना है यह सारे आमाल बरकत व रहमत वाले। अल्लाह तआला को राज़ी करने वाले हैं। मगर मुनाफ़िक़ तो उलटी ही चाल चलता है उस को हर वह अमल अच्छा नहीं लगता जिस में मदीने वाले आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान ज़ाहिर होती हो। मगर सुन्नी मुसलमान का ईमान तो यह कहता है कि अल्लाह तआला उसी अमल को कुबूल फ़रमाता है जिस में अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र हो। नअ़त हो दुरूदो सलाम हो।

इसी लिये आशिके मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ख़ाक हो जाएं अदू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जाऐंगे

ज़िक्र ख़ुदा जो उन से जुदा चाहो नजदियो
वल्लाह ज़िक्रे हक़ नहीं कुन्जी सक़र की है

अपील : ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर से सुन लो, और याद रखो और अपनी ग़ुलामी का रिश्ता नबिये पाक मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ख़ूब मज़बूत कर लो, वहाबी, देवबन्दी, बिदअत व शिर्क कहता रहे एक न सुनो। अपने प्यारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मेअराज का वाक़िआ ख़ुश हो कर दिल से सुनो और सहाबए किराम की सुन्नत पर अमल करके, नामए आमाल को नेकियों से पुर कर लो। मेअराज की रात में ख़ूब नवाफ़िल पढ़ो। दुरूदो सलाम कसरत से पढ़ो ख़ूशियों का एहतिमाम करो दिन में रोज़े रखो। सवाब ही सवाब है। मगर ईमान वाले के लिये।

अल्लाह तआला हमें भी इन तमाम नेकियों को हासिल करने की तौफ़ीक़ रफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बेहरे बे करां के लिये

(४)

शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म

पहला जुमा .... पहला बयान

सिराजुल उम्मत, इमामे आज़म

अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی حَبِیْبِهِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی اٰلِهِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاهِرِیْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُکَرَّمِیْنَ وَابْنِهِ الْکَرِیْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِیْلَانِیِّ الْبَغْدَادِیِّ وَابْنِهِ الْکَرِیْمِ الْخَوَاجِهِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِیْرِیِّ اَجْمَعِیْنَ ۰

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُاط

तर्जमा : अल्लाह से उस के बन्दों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

(पारा 22, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَۃَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ. لَوْ کَانَ الدِّیْنُ عِنْدَ الثُّرَیَّا لَذَهَبَ بِهٖ رَجُلٌ مِّنْ فَارِسَ اَوْ قَالَ مِنْ اَبْنَاءِ فَارِسَ حَتّٰی یَتَنَاوَلَهٗ

وَعَنْ اَبِیْ هُرَیْرَۃَ قَالَ کُنَّا جُلُوْسًا عِنْدَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَفِیْنَا سَلْمَانُ الْفَارِسِیُّ قَالَ فَوَضَعَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَدَهٗ عَلٰی سَلْمَانَ ثُمَّ قَالَ لَوْ کَانَ الْاِیْمَانُ عِنْدَ الثُّرَیَّا لَنَالَهٗ رِجَالٌ مِّنْ هٰؤُلَاءِ

तर्जमा : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : अगर दीन का इल्म सुरय्या सितारे के पास होता तो भी फ़ारस का एक मर्द उसे हासिल कर लेता।

नीज़ हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : अगर दीन का इल्म सुरया सितारे के पास होता तो भी फ़ारस का एक मुर्दा उसे हासिल कर लेता।

नीज़ हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि हम लोग नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में थे और हमारे दरमियान हज़रत सलमान

फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी थे। तो नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सलमान फ़ारसी के बदन पर अपना हाथ रख कर इरशाद फ़रमाया कि अगर ईमान (इल्मे दीन) सुरया सितारे के पास होता तो भी उन की क़ौम के कुछ लोग उसे हासिल कर लेते। (सही मुस्लिम शरीफ़, स. 312, जि. 2, बाब फ़ज़्ले फ़ारस)

दुरूद शरीफ़ :

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

तमहीद : हज़रात ! हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहरे शरीअत व तरीक़त के तेराक और रुमूज़े हक़ीक़त के शनासा थे, फ़रासत व ज़कावत में मुमताज़ और तफ़क्कोह फ़िद्दीन में यकताए रोज़गार और पूरी दुनिया आप मुहासिन व औसाफ़ से ब ख़ूबी वाक़िफ़ हैं।

सुब्हानल्लाह ! आज तेरह सौ साल के क़रीब हो गए, हजरत इमामे आजम अबू हनीफ़ा को विसाल फ़रमाए हुए मगर हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का परचमे इल्म आज भी बलन्द है और दुनिया के कोने कोने में क़ियामत तक बलन्द रहेगा।

ख़ूब फ़रमाया इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा हन्फ़ी बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

शाफ़ई, मालिक, अहमद, इमामे हनीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

इमामे आज़म की पैदाइश : 80 हि. कूफ़ा में हुई।

इमामे आज़म का नामे मुबारक : नोअ़मान, कुन्नियत अबू हनीफ़ा और लक़ब इमामे आज़म है।

इमामे आज़म का नसब : आप फ़ारसी युन्नस्ल फ़ारस के बादशाह नो शेर वां की औलाद से हैं, सिलसिला नसब इस तरह है, नोअ़मान बिन साबित बिन नोअ़मान बिन मरज़बान बिन साबित बिन क़ैस बिन यज़्द गर्द बिन शहर यार बिन परवरेज़ बिन नोशेरवां

आप के दादा इस्लाम लाए : इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दादा जान (जिन का नाम बाज़ अइम्मा ने ज़ोती और बाज़ लिखा है, इस तरह आप का नाम नोअ़मान है और आपके दादा जान का नाम भी नोअमान है) नोअ़मान मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो कर कूफ़ा शहर में बस गए।

मौला अली की दुआ : हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वालिदे गिरामी जब पैदा हुए तो आप के दादा नोअ़मान अपने बेटे हज़रत साबित को ले कर सर चश्मए विलायत हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में पेश किया तो ख़लीफ़ा चहारुम सय्यिदुस्सादात हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने इस बच्चे और उन की आने वाली औलाद के लिये दुआए ख़ैर फ़रमाई तो उस दुआ का असर यह ज़ाहिर हुआ कि हज़रत साबित के घर उम्मत का सिराज और इतना अज़ीम पैदा हुआ जिन को दुनिया हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा कहती है।

दुरूद शरीफ़ :

(2) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पोते हज़रत इस्माईल बिन हम्माद फ़रमाते हैं कि :

मेरे पर दादा, हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा के वालिद, साबित जब कि वह छोटे से थे तो हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िर हुए।

فَدَعَالَهٗ بِالْبَرَكَةِ فِيْهِ وَذُرِّيَّتِهٖ وَنَحْنُ نَرْجُوا مِنَ اللّٰهِ اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اسْتَجَابَ اللّٰهُ ذَالِكَ لِعَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ فِيْنَا

(तारीख़े बग़दाद, जि. 13, स. 327, तबयीज़ुस्सहीफ़ा, स. 31, अलख़ैरातुलहस्सान, स. 30)

तो आप ने साबित के लिये और उन की औलाद के लिये दुआ की। हम अल्लाह तआला से उम्मीद रखते हैं कि उस ने हमारे हक़ में हज़रत मौला अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ क़ुबूल फ़रमाई।

ऐ ईमान वालो ! हमारे आक़ा हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अनहु की दुआ की बरकत व तासीर का आलम ही कुछ और होता है जिस को उन की दुआ नसीब हो जाए तो वह अदना हो तो आला व आज़म बनता नज़र आता है, देखिये अबू हनीफ़ा, इमामे आज़म हो गए।

इमामे आज़म की सहाबा से मुलाक़ात हुई आप ताबई हैं

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में बाईस या छब्बीस सहाबा मौजूद थे।

अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तसरीह की है कि आठ सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से आप की मुलाक़ात साबित है। ख़ुसूसन हज़रत अनस बिन मालिक, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ओफ़ी, हज़रत मुक़अल बिन यसार और हज़रत वासिला बिन अल असक़अ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत वायला रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह से हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीसें भी रिवायत की हैं। (तारीख़े बग़दाद, अल ख़ैरातुल हस्सान, स. 80)

हदीस शरीफ़ : مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُّفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ 0

यानी अल्लाह तआला जिस को बहुत बड़ी भलाई देना चाहता है तो उसे दीन का फ़क़ीह बनाता है। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 16, मिश्कात शरीफ़, स. 23)

हदीस में आप के मुतअल्लिक़ बशारत : आशिक़े रसूल मुहद्दिसे जलील हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सियूती शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि मैं कहता हूँ कि महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सय्यदना

इमाम अबू हनीफा रजियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में इस हदीस शरीफ़ में बशारत दी है जिसे अबू नुएम ने हीला में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत से नक्ल किया कि हमारे प्यारे आका, मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया : لَوْ كَانَ الْعِلْمُ بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ رِجَالٌ مِّنْ اَبْنَاءِ فَارِسَ

यानी अगर इल्म सुरय्या पर हुआ तो फारस के रहने वालों में से एक शख्स उसे हासिल करेगा। (सही मुस्लिम, जि 4, स 1972, तबयीजिस्सहीफा, स 6)

और बुखारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ में इस तरह है :

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ رِجَالٌ مِّنْ فَارِسَ

यानी अगर ईमान सुरय्या पर हुआ तो फ़ारस के लोग उस को हासिल कर लेंगे।

(सही बुखारी, किताबुत्तफसीर, तबयीजिस्सहाबा, स 6)

और ! हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रजियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत यह है कि आका करीम, मुस्तफा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَوْ كَانَ الدِّيْنُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ نَاسٌ مِّنْ اَبْنَاءِ فَارِسَ ۝

यानी अगर दीन सुरय्या पर मुअल्लक रहा तो भी फारस के लोग उसे हासिल कर लेंगे।

(सही मुस्लिम बाब फज़ाले फारस, तबयीजिस्सहाबा, स. 6)

हज़रात ! इन अहादीसे करीमा में अबनाए फ़ारस औरज़ाल फ़ारस से हजरत इमामे आजम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के अस्हाब मुराद हैं।

तौरात शरीफ़ में इमामे आज़म का ज़िक्र

आशिके रसूल, हज़रत शैख अब्दुल हक मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा का ज़िक्र तौरात शरीफ़ में है। हज़रत कअब बिन अहबार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत में एक नूर होगा जिस की कुन्नियत अबू हनीफ़ा होगी। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लकब सिराजुल उम्मत से इस की ताईद होती है। वल्लाहु तआला अअलम।

(शैख अब्दुल हक मुहद्दिसे देहलवी, फिकह व तसव्वुफ)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गोद में इमामे आज़म

शैखुल औलिया, हज़रत दाता गंज बख्श अली हिजवेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैं मुल्के शाम में आशिके रसूल, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रोज़ए मुबारका के सरहाने की जानिब सोया हुआ था कि ख्वाब में देखता हूँ कि मैं मक्का मुअज़्ज़मा में हूँ और आका करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक बुज़ुर्ग को आग़ोशे मुबारक में लिये हुए हैं और बाब बनी शबीह में तशरीफ़ लाए

तो मैंने दौड़ कर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पांव मुबारक की पुश्त पर बोसा दिया। मैं मुतअज्जिब व हैरान था कि यह आग़ोशे मुबारक में कौन हैं? तो दिलों पर नज़र रखने वाले, ग़ैब दां, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे इमाम अबू हनीफ़ा हैं जो तुम्हारे ही मुल्क के हैं।

(कश्फुल महजूब, स. 93, तज़किरतुल औलिया, स. 127)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म से गोशा नशीनी को तर्क किया

हमारे इमाम, इमामे आज़म, अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दुनिया से कनारा कश हो कर इबादत व रियाज़त में मशग़ूल हो गए। और गोशा नशीनी का इरादा फ़रमाया तो एक रात ख़्वाब में आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए तो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ हनीफ़ा! तुम को अल्लाह तआला ने मेरी सुन्नत ज़िन्दा करने के लिये पैदा फ़रमाया है और तुम गोशा नशीनी का इरादा तर्क कर दो। इस बशारत के बाद हमारे इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अहयाए सुन्नत और दर्सो तदरीस (पढ़ने, पढ़ाने) में मशग़ूल हो गए।

हज़रात! हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़ारों मसाइल को जमा किये और इमाम अबू यूसुफ़, इमाम मुहम्मद, इमाम ज़फ़र और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक जैसे बे शुमार अइम्मा व मुहद्देसीन पैदा किये बल्कि जितने अइम्मए किराम और मुहद्देसीने इज़ाम हुए हैं या तो आप के शागिर्द हैं या शागिर्दों के शागिर्द हुए हैं और पूरी दुनिया में सब से ज़्यादा मस्लके हन्फ़ी ही फूला और फला है और इन्शाअल्लाह तआला क़ियामत तक मस्लके हन्फ़ी फूलता और फलता रहेगा। (तज़किरतुल औलिया, स. 124)

इमाम मुहम्मद बाक़िर ने इमामे आज़म की पेशानी पर बोसा दिया

हर दौर में मुख़ालिफ़ों, हासिदों ने ज़ुल्म व हसद को रवा रखा। इसी तरह हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुख़ालिफ़ों, हासिदों ने भी आप के साथ बुग़ज़ व हसद की कोई कसर बाक़ी न रखी थी। और आप के मुतअल्लिक़ यह बात मशहूर कर रखी थी कि इमामे आज़म क़यास पर अमल करते हैं और हदीस शरीफ़ पर अमल नहीं करते।

एक मरतबा हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर बिन इमाम ज़ैनुल आबेदीन बिन हज़रत इमाम हुसैन बिन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुए तो इमाम बाक़िर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आप ने मेरे नाना जान के दीन और उन की अहादीस को क़यास से बदल डाला। तो हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा

रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मआज़ल्लाह ! हदीस शरीफ़ की कौन मुख़ालिफ़त कर सकता है ?

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : आप तशरीफ़ रखिये ताकि मैं भी मुअद्दबाना तरीक़े से आप की ख़िदमत में बैठ कर कुछ अर्ज़ कर सकूँ मेरे नज़दीक आप इसी तरह लाइक़े एहतिराम हैं जैसे आप के नाना, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सहाबए किराम की नज़र में थे। हज़रत इमाम बाक़िर तशरीफ़ फ़रमा हुए, तो इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी ज़ानूए अदब तह कर के आप के सामने बैठ गए।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : मैं आप से तीन बातें दरयाफ़्त करना चाहता हूँ उस का जवाब मरहमत फ़रमाएं

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : नमाज़ अफ़ज़ल है या रोज़ा ?

हज़रत इमाम बाक़िर : नमाज़ अफ़ज़ल है।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : अगर मैं क़यास को हदीस शरीफ़ पर तरजीह देता तो कहता कि हाइज़ा औरत पर नमाज़ की क़ज़ा होनी चाहिये न कि रोज़ा की। हालांकि मैं हदीस शरीफ़ पर अमल करते हुए रोज़ा ही की क़ज़ा का हुक्म देता हूँ।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : पेशाब ज़्यादा नापाक है या मनी ?

हज़रत इमाम बाक़िर : पेशाब ज़्यादा नापाक है।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : अगर मैं क़यास को तरजीह देता तो कहता कि पेशाब से गुस्ल करना चाहिये और मनी से सिर्फ़ वुज़ू। मआज़ल्लाह ! मैं हदीस की मुख़ालिफ़त कैसे कर सकता हूँ ?

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : औरत कमज़ोर है या मर्द ?

हज़रत इमाम बाक़िर : औरत

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : वरासत में औरत का हिस्सा क्या है ?

हज़रत इमाम बाक़िर : मर्द को दो हिस्से और औरत को एक हिस्सा।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा : यह आप के नाना जान, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुक्म है। अगर मैं ने हदीस को बदल दिया होता तो क़यास के मुताबिक़ मर्द को एक हिस्सा देता और औरत को दो हिस्सा देता क्यों कि औरत कमज़ोर है। मगर मेरा फ़तवा वही है जो क़ुरआन का हुक्म है।

لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ

तर्जमा : बेटे का हिस्सा दो बेटियों बराबर है। (पारा 4, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यह सुन कर शहज़ादए रसूल हज़रत इमाम बाक़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जोशे महब्बत में उठ कर हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सीने से लगा लिया। और उन की पेशानी पर बोसा दिया क्यों कि उन को मालूम हो गया कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा क़ुरआन व हदीस के होते हुए क़यास पर अमल नहीं करते।

(हयात अबू हनीफ़ा अबू ज़हरा मिसरी, स. 128)

क़यास हदीस से साबित है

हदीस शरीफ़ : हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को यमन का क़ाज़ी बना कर भेजा।

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस से पूछा कि अगर तुम्हें कोई मस्अला दरपेश हो तो किस तरह फ़ैसला करो गए ? तो हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया। कुरआन मजीद के हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला करूँगा। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अगर वह मस्अला कुरआन मजीद में न मिले तो ? अर्ज़ की हदीस से फ़ैसला करूँगा। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। अगर हदीस में भी न मिले ? अर्ज़ किया उस वक़्त इजतिहाद व क़यास से काम लूँगा और तलाश करने में क़ोताही नहीं करूँगा। हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीना पर मार कर फ़रमाया। अल्लाह तआला का शुक्र है कि उस ने अपने रसूल के क़ासिद को उस काम की तौफ़ीक़ दी। जिस से अल्लाह का रसूल राज़ी है। (तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, मिश्कात, स. 324)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि जब कोई मस्अला कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ में न मिले तो क़यास व इजतिहाद के मुताबिक़ फ़तवा दे। उस काम से आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम राज़ी और ख़ुश हैं इसी लिये हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़यास व इजतिहाद को भी इख़्तियार फ़रमाया।

हज़रत इमामे आज़म की निगाहे विलायत : हज़रत इमाम अब्दुल वहहाब शअरानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब मीज़ानुल कुबरा में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ दोनों बड़े कश्फ़ वाले थे और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब लोगों के वुज़ू का धोवन देखते तो उन गुनाहों को पहचान लेते जो धुल कर पानी के ज़रीए गिरते थे और जुदा। जुदा तौर पर जान लेते कि यह धोवन गुनाहे कबीरा का है या सग़ीरा का। या मकरूह का। या ख़िलाफ़े ऊला का। बिला फ़र्क़ इसी तरह जैसे नज़र में आने वाले जिस्मों का कोई मुशाहदा करे और हज़रत ख़वास रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने यह भी फ़रमाया कि हमें यह रिवायत पहुँची है कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कूफ़ा की जामेअ मस्जिद के हौज़ पर तशरीफ़ ले गए एक जवान वुज़ू कर रहा था उस का पानी जो गिरा तो इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने देख कर उस जवान से फ़रमाया ऐ बेटे मां, बाप को सताने से तौबह कर, उस ने फ़ौरन तौबह कर ली और एक दूसरे शख़्स के वुज़ू के पानी को देख कर फ़रमाया : ऐ भाई ! ज़िना से तौबह कर ले, उस ने भी तौबह कर ली।

وَرَأَى غُسَالَةَ اٰخَرَ فَقَالَ تُبْ مِنْ شُرْبِ الْخَمْرِ وَسِمَاعِ الَاتِ اللَّهْوِ فَقَالَ تُبْتُ

यानी और एक शख़्स के वुज़ू के पानी को देख कर फ़रमाया कि शराब पीने और लहू व लअ़ब की चीज़ों के सुनने से तौबह कर ले तो उस शख़्स ने तौबह कर ली। (मीज़ानुल कुबरा, स. 225, व हवाला फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि. 1)

ऐ ईमान वालो ! जब हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कश्फ़ व करामत और बुज़ुर्गी का यह हाल है तो हमारे आक़ा करीम, रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बुज़ुर्गी और शान व शौकत का आलम क्या होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है मुख़्तार का आलम क्या होगा

निगाहे विलायत : कुछ बच्चे गेंद खेल रहे थे कि गेंद इत्तिफ़ाक़ से हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मजलिस में आप ही के सामने गिरी और बच्चों में से ख़ौफ़ के मारे किसी में हिम्मत न हुई कि आप के सामने से गेन्द उठा ले। लेकिन एक लड़के ने दौड़ कर आप के सामने से जब गेन्द को उठा लिया तो आप ने फ़रमाया कि यह लड़का हरामी है क्यों कि उस में हया नहीं (अदब नहीं) और जब मालूमात की गई तो पता चला कि वाक़ई वह लड़का हरामी है। (तज़किरतुल औलिया, स. 125)

हज़रात ! इस वाक़िआ से मालूम हुआ कि बुज़ुर्गों का जो बे अदब होता है हक़ीक़त में वह हरामी होता है।

हज़रत इमामे आज़म का मुनाज़रा : (1) मनक़ूल है कि एक मरतबा ख़ुदा के मुनकिरों, दहरियों ने हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुनाज़रा किया और मुतालबा किया कि आप किसी अक़्ली दलील से ख़ुदाए तआला के वुजूद को साबित कीजिये। आप ने फ़रमाया कि उस शख़्स के बारे में तुम लोग क्या कहोगे जो कहे कि मैं ने एक ऐसी कश्ती देखी है जो माल व सामान से लदी हुई थी और तूफ़ान की मोजों में सलामती के साथ चली जा रही थी। इस पर कोई मल्लाह नहीं था। वह कश्ती ख़ुद ब ख़ुद हर घाट पर ठहरती थी और सामान उतार कर फिर ख़ुद ब ख़ुद तूफ़ान की मौजों से बचती हुई आगे चली जाती थी। हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इतना ही कहने पाए थे कि मुनकेरीने ख़ुदा दहरियों ने कहा यह सब ग़लत है। ऐसा हो ही नहीं सकता और बिल्कुल अक़्ल के ख़िलाफ़ है। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया क्यों ? क्या ग़लत बात है ? तो मुनकेरीने ख़ुदा दहरियों ने कहा कि हमारी अक़्ल कभी इस को तस्लीम नहीं कर सकती कि कोई कश्ती बग़ैर मल्लाह के इस तरह तूफ़ान की मोजों में सलामती के साथ चली जाए। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुस्कुरा कर फ़रमाया कि सुब्हानल्लाह ! जब एक कश्ती बग़ैर मल्लाह के नहीं चल सकती तो यह ज़मीन आसमान का सारा निज़ाम बग़ैर किसी चलाने वाले के किस तरह चल सकता है ?

रावी का बयान है कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस

नूरानी तक़रीर से उन के कुलूब रौशन हो गए और उन लोगों ने कलमा पढ़ा और सब के सब मुसलमान हो गए। (हयाते इमाम अबू हनीफ़ा, स. 136, अल ख़ैरातुल हस्सान, स. 136)

मुनाज़रा ! (2) एक मरतबा क़िरअत ख़लफ़ुल इमाम यानी नमाज़ में इमाम के पीछे क़िरअत पढ़ने, क़िरअत करने के मस्अले में मुनाज़रा हुआ तो आप ने फ़रमाया कि आप लोगों क़ी पूरी जमाअत से ब यक वक़्त मुनाज़रा करना ग़ैर मुमकिन है। लिहाज़ा आप लोग अपनी जमाअत में से किसी एक ऐसे शख़्स को मुन्तख़ब कर लें ज़ो आप लोगों में सब से ज़्यादा साहिबे इल्म हो। ताकि मैं उस से मुनाज़रा करूँ। चुनाँचे उन लोगों नें क शख़्स को मुन्तख़ब कर के मुनाज़रा के लिये पेश कर दिया। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि क्या यह शख़्स जो कुछ कहेगा वह आप सब लोगों का कहा हुआ माना जाएगा ? तो उन सब ने कहा जी हाँ। फिर हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि उस की हार जीत आप सब लोगों क़ी हार, जीत शुमार की जाएगी ? तो सब लोगों ने जवाब दिया कि जी हाँ। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि ऐसा क्यों ? तो लोगों ने कहा कि इसलिये कि हम ने उस शख़्स को अपना इमाम मुन्तख़ब कर लिया है। लिहाज़ा उस का कहा हुआ, हमारा कहा हुआ। उस की हार जीत, हमारी हार जीत होगी। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि बस मुनाज़रा ख़त्म हो गया। यही तो हम भी कहते हैं कि हम ने नमाज़ में ज़ब एक शख़्स को अपना इमाम बना लिया है तो उस की क़िरअत हमारी क़िरअत होगी। लिहाज़ा मुक़्तदियों को इमाम के पीछे क़िरअत की ज़रूरत नहीं। (रूहुल बयान, जि. 3, स. 303)

हज़रत इमाम मालिक का क़ौल : हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अल्लाह तआला ने इल्म के साथ ज़हानत व दानाई, और अक़्ल का कमाल भी बे मिसाल अता फ़रमाया था।

चुनाँचे हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मस्लके मालिकिया के इमाम, हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया कि आप ने हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा है ? तो हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : نَعَمْ رَأَيْتُ رَجُلًا لَوْ كَلَّمَكَ فِيْ هٰذِهِ السَّارِيَةِ لَوْ يَجْعَلُهَا ذَهَبًا لَقَامَ بِحُجَّتِهٖ

यानी मैंने अबू हनीफ़ा को देखा है, अगर वह उस पत्थर के सुतून को सोना साबित करने पर उतर आते तो वह अपनी दलीलों से उस को सोना साबित कर देते। (तारीख़े बग़दाद, जि. 13, स. 338, सीरते नोअ़मान, स. 137, अल ख़ैरातुल हस्सान, स. 16)

हज़रत इमाम शाफ़ई का क़ौल : मस्लके शाफ़इय्या के इमाम हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने दादा उस्ताज़ हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में ख़िराजे अक़ीदत पेश करते हुए फ़रमाते हैं कि : فَاِنَّ النَّاسَ كُلُّهُمْ عِيَالٌ عَلَيْهِ فِي الْفِقْهِ ० यानी बेशक तमाम लोग फ़िक़ह हासिल करने में इमाम अबू हनीफ़ा के अयाल हैं। (तारीख़े बग़दाद, जि. 1, स. 123)

और ! इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं बरकत हासिल करता हूँ इमाम अबू हनीफ़ा से।

यानी जब मुझे कोई हाजत दर पेश होती है तो मैं उन की क़ब्र पर आता हूँ और दो रकअत नफ़्ल पढ़ता हूँ और फिर इमाम अबू हनीफ़ा की क़ब्र के पास अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ तो फ़ौरन मेरी हाजत पूरी हो जाती है।

(शामी, जि. 1, स. 51, तारीखे बग़दाद, जि. 1, स. 123, अद्दर्रस्सुन्नियह, स. 28)

हज़रत इमाम शाफ़ई का अदब : हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र पर ज़ियारत के लिये हाज़िर होते तो वहाँ नमाज़ में रफ़अ यदैन नहीं क़रते थे और नमाज़े फ़ज्र में दुआए क़ुनूत भी नहीं पढ़ते थे। किसी ने पूछा कि आप यहाँ अपने मज़हब पर अमल क्यों नहीं करते ? तो हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अदब की वजह से। (अल ख़ैरातुल हस्सान, स. 15)

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल का क़ौल : मस्लके हंबली के इमाम, हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने दादा उस्ताज़ हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में नज़रानए अक़ीदत पेश करते हुए फ़रमाते हैं कि :

(मेरे दादा उस्ताज़) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इल्म व तक़वा, दुनिया से बे रग़बती और दारे आख़िरत से दिलचस्पी के उस मक़ाम पर फ़ाइज़ थे कि उसे कोई दूसरा हासिल नहीं क़र सकता। (फ़िक़ह तसव्वुफ़, शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी)

हज़रात ! हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इल्म व अमल, तक़वा व परहेज़गारी के उस बलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ थे। जहाँ तक कोई इमाम न पहुँच सका बल्कि तीनों अइम्मा ने आप की जलालते शान व अज़मत का ख़ुतबा पढ़ा है।

इमामे आज़म की इबादत व मुजाहिदा : हज़रत अबू बक्र ख़तीब बग़दादी व हज़रत इब्ने कसीर और क़ुतबुल अक़ताब, हज़रत इमाम शअ़रानी ने लिखा है कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चालीस साल तक ईशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा की और जिस मक़ाम पर आप का विसाल हुआ उस जगह पर आप ने सात हज़ार मरतबा क़ुरआन मजीद ख़त्म किया था। (तारीख़े बग़दाद, जि. 13, स. 354, अल बिदाया वन्निहाया, जि. 10, स. 107, तबक़ाते कुबरा शअ़रानी, स. 46)

हज़रत अबू मुतीअ फ़रमाते हैं : छः साल तक आप हरमे कअ़बा में रहे, अबू मुतीअ क़हते हैं कि मैं जिस वक़्त भी हरम शरीफ़ में ग़या, हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़ानए कअ़बा का तवाफ़ करते हुए पाया।

और ! हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शागिर्दे रशीद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक रकअत में पूरा क़ुरआन ख़त्म करते थे।

और ! हज़रत इब्ने हजर मक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लिखा है कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर रोते कि देखने वालों क़ो आप पर रहम आता था। (अल ख़ैरातुल हस्सान, स. 81)

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इतनी देर तक इबादत करते कि देखने वाला आप को दरख़्त या सुतून समझता। कहते हैं कि जब हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल हो गया तो पड़ोस में रहने वाले शख़्स की बच्ची ने अपने बाप से दरयाफ़्त किया कि मेरे पड़ोस के घर में एक दरख़्त था वह अब नज़र नहीं आता। तो बाप रो पड़ा और कहने लगा बेटी वह दरख़्त नहीं था बल्कि मुसलमानों के इमाम हज़रत अबू हनीफ़ा थे जो रात भर खड़े हो कर इबादत करते थे, उनका विसाल हो गया

(तज़किरतुल औलिया, स. 124)

इमामे आज़म का अदब : मनक़ूल है कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने असातिज़ा का बे हद अदब करते थे। ख़ुद हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने उस्ताज़ हज़रत हम्माद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान की तरफ़ कभी पांव नहीं फेलाए।

इमाम जअ़फ़र सादिक़ की सोहबत की बरकत

शैख़ुल वाएज़ीन हज़रत अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया कि हुज़ूरे वाला, आप की उम्र कितनी है ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि दो बरस, साइल आप के उस अजीब जवाब से हैरान रह गया और जब हैरत से आँखें फाड़ फाड़ कर आप का मुंह तकने लगा तो आप ने फ़रमाया कि अज़ीज़े मन ! यूँ तो हमारी उम्र साठ बरस से ज़्यादा गुज़र चुकी लेकिन मैं अपनी ज़िन्दगी के उन तमाम बरसों में सिर्फ़ अपनी उसी दो बरस की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी शुमार करता हूँ जो हज़रत इमाम जअ़फ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मुक़द्दस सोहबत में इस तरह गुज़र गई कि उन के अनफ़ासे क़ुदसिया की बदौलत में एक लम्हा भी अल्लाह और उस के रसूल की याद से ग़ाफ़िल नहीं रहा। बाक़ी ज़िन्दगी के तमाम बरसों को इस क़ाबिल नहीं समझता कि उन को अपनी उम्र और ज़िन्दगी शुमार करूँ।

لَوْلَا السَّنَتَانِ لَهَلَكَ النُّعْمَانُ

तर्जमा : अगर यह दो बरस न मिलते तो नोअ़मान यानी अबू हनीफ़ा हलाक हो जाता।

(क़ुरआनी तक़रीरें, स. 52)

हज़रात ! इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस इरफ़ानी तक़रीर से यह पता चलता है अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की याद में गुज़रने वाली ज़िन्दगी की अनमोल साअतें कितनी बेश बहा और क़ीमती हुआ करती हैं।

इमामे आज़म का तक़वा : (1) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु बलन्द पाया इमाम होने के साथ मिसाली ताजिर भी थे और आप कपड़े का कारोबार करते थे।

एक औरत, एक मरतबा रेशमी कपड़ा बेचने के लिये लाई आप ने क़ीमत मालूम की तो वह बोली सो रुपया आप ने फ़रमाया कपड़ा ज़्यादा क़ीमत का है। वह औरत क़ीमत को बढ़ाती रही यहाँ तक कि चार सो तक पहुँच गई, आप ने फ़रमाया कि क़ीमत अभी भी कम है तो वह औरत कहने लगी आप मज़ाक़ कर रहे हैं तो हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि भाओ करने के लिये किसी मर्द को लाओ वह औरत एक आदमी को लाई तो हमारे इमाम ने वह कपड़ा पाँच सो रुपया में ख़रीदा।

(अल ख़ैरातुल हस्सान, स. 82, शैख़ अब्दुल हक़, फ़िक़ह तसव्वुफ़)

हज़रात ! अल्लाह वाले हर मक़ाम पर अल्लाह तआला से डरते रहते हैं ज़भी तो हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक ख़रीदार होने के बावजूद औरत का नुक़सान बरदाश्त न किया बल्कि सही क़ीमत दे कर कपड़े को ख़रीदा। यह हैं अल्लाह वाले जो हर हाल में अल्लाह के ब न्दों का भला करते हैं और अल्लाह तआला से डरते नज़र आते हैं।

तक़वा (2) : एक मरतबा हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इब्ने अब्दुर्रहमान को ख़रीद व फ़रोख़्त करने के लिये कुछ सामान भेजा और यह भी कह दिया कि कपड़े में ऐब है, उस ऐब दार कपड़े को बेचते वक़्त ख़रीदार को बता देना, इब्ने अब्दुर्रहमान ने कपड़ा बेच दिया और ऐब बताना भूल गए और यह भी मालूम न था कि ख़रीदार कौन है और कहाँ का है। जब हमारे इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला तो आप ने उस रोज़ जितने रुपये की तिजारत हुई थी वह कुल रक़म तीस हज़ार थी वह तीस हज़ार रक़म मोहताजों, फ़क़ीरों पर तक़सीम कर दिया। (शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी, फ़िक़ह व तसव्वुफ़)

तक़वा (3) : हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक शख़्स क़र्ज़ दार था और उसी के इलाक़े में एक शख़्स की नमाज़े जनाज़ा के लिये आप तशरीफ़ ले गए तो हर तरफ़ धूप फेली हुई थी और मौसम भी बहुत गर्म था और मक़रूज़ की दीवार के पास कुछ साया था। चुनाँचे जब लोगों ने अर्ज़ किया कि आप उस दीवार के साए में तशरीफ़ ले आएं तो आप ने फ़रमाया कि मकान का मालिक मेरा मक़रूज़ है इस लिये उस के मकान के साए से फ़ायदा उठाना मेरे लिये दरुस्त नहीं। (तज़किरतुल औलिया, स. 125)

हज़रात ! सुब्हानल्लाह ! यह थे हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कि जिस को क़र्ज़ दिया था उस से थोड़ा सा भी दुनियावी फ़ायदा हासिल करना गवारा नहीं हत्ता कि धूप थी तो उस के दीवार के साए में भी खड़ा होकर इतना फ़ायदा लेना भी गवारा नहीं किया

तक़वा (4) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहुत ही मोहतात और परहेज़गार बुज़ुर्गों में से थे। चुनाँचे एक मरतबा बादशाह ने क़ाज़ी का ओहदा क़ुबूल करने के लिये आप को कहा तो आप ने यह कह कर इनकार कर दिया कि मैं उस मन्सब की सलाहियत नहीं पाता। ख़लीफ़ा ने कहा कि आप झूट बोलते हैं तो हमारे इमामे

आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अगर मैं झूटा हूँ तो फिर एक झूटे को क़ाज़ी नहीं बनाया जा सकता और अगर मैं अपने क़ौल में सचा हूँ तो मैं उस मन्सब की सलाहियत नहीं रखता। इस तरह से हमारे इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़ाज़ी बनने से इनकार कर दिया। (तज़किरतुल औलिया, स. 125)

हज़रात ! यह थे हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा जिन्होंने क़ाज़ी का ओहदा जो चीफ़ जस्टिस का ओहदा होता था कुबूल करने से इनकार कर दिया और एक आज कल के कुछ आलिम और मौलाना कहलाने वाले हज़रात हैं ज़ो चन्द टुकड़ों के लिये मुशरेकीन नेताओं का चक्कर लगाते फिरते हैं और उन के पास जाना और उन को अपने यहाँ बुलाना फ़ख्र महसूस करते हैं। अल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

तक़वा (5) : हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मजूसियों ने गिरफ़्तार करलिया और उन्हीं में से एक जाबिर व ज़ालिम मजूसी ने आप से कहा कि मेरा क़लम बना दीजिये। (लकड़ी का क़लम बनाया जाता था) आप ने फ़रमाया मैं हरगिज़ नहीं बना सकता और जब उस मजूसी ने क़लम न बनाने की वजह पूछी तो आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का इरशादे पाक है कि क़ियामत के दिन फ़रिश्तों से कहा जाएगा कि ज़ालिमों को उन के मुआविनीन, साथ देने वालों के हमराह लाओ। लिहाज़ा मैं एक ज़ालिम का मुआविन, साथ देने वाला नहीं बन सकता। (तज़किरतुल औलिया, स. 125)

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर करो कि हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तो एक मजूसी, बद अक़ीदा की इतनी भी मदद न की कि उस का क़लम बना देते और आज के टी,टी ऐस सुन्नी कहलाने वाले कुछ लोग बद अक़ीदों की मदद भी करते हैं और यह भी कहते नज़र आते हैं कि हमें उस का अक़ीदा नहीं देखना है, वह अल्लाह की मख़लूक़ है। तो क्या हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम नहीं था कि यह मजूसी अल्लाह का बन्दा और उस की मख़लूक़ है। हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़ूब मालूम था कि यह शख़्स जो मजूसी है, अल्लाह ही का बन्दा और मख़लूक़ है मगर अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुस्ताख़ और बद अक़ीदा है इस लिये उस की मदद नहीं की। लिहाज़ा हम मुसलमानों को भी अपने इमाम, इमामुल अइम्मा हज़रत अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पेरवी करते हुए हर गुस्ताख़ और तमाम बद अक़ीदों से दूर रहना चाहिये।

ख़ूब फ़रमाया इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

तेरी गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़े रुख़ शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

और फ़रमाते हैं :

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये
ग़ैज़ में ल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

दुरूद शरीफ़ :

बद मज़हब व बद अक़ीदा से मेल जोल अज़ाब का सबब है

मनक़ूल है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (शागिर्द इमाम अबू हनीफ़ा) को उन के विसाल के बाद लोगों ने ख़्वाब में देखा और हाल पूछा तो आप ने फ़रमाया कि अरहमर राहिमीन ने मेरी सिर्फ़ एक बात पर इताब फ़रमाया, तीन बरस तक मुझ को खड़ा रखा और वह बात यह थी कि मैं ने एक मरतबा एक बद मज़हब, बिदअती को महब्बत व प्यार की नज़र से देख लिया था तो मेरे रब तआला ने उस की वजह से मुझ पर इताब फ़रमाया कि तुम ने मेरे दुश्मन को महब्बत व प्यार की नज़र से क्यों देखा ? और मेरे दुश्मनों से दुश्मनी क्यों नहीं रखी? (रूहुल बयान, जि. 3, स. 126)

और इसी तरह मरवी है कि किसी शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में सलाम भेजा तो सहाबिये रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़ासिद से फ़रमाया कि तुम लौट कर उस से मेरा सलाम मत कहना क्योंकि वह बद मज़हब (बद अक़ीदा) हो गया है। (रूहानी हिकायात, स. 150)

हज़रात ! बुज़ुर्गों के किरदार व अमल हमें बता रहे हैं कि बद मज़हब व बद अक़ीदा शख़्स से प्यार व महब्बत से बात करना अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत की तौहीन है और अज़ाबो इताब का सबब भी। सहाबी का तरीक़ा यही है कि बद अक़ीदा से सलाम न किया जाए जैसा कि हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हुआ।

तक़वा (6) : एक मरतबा इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाज़ार जा रहे थे कि गर्दो ग़ुबार के कुछ ज़र्रात आप के कपड़ों पर आ गए तो आप ने दरया पर जाकर कपड़े को ख़ूब अच्छी तरह धो कर पाक किया और जब लोगों ने पूछा कि आप ही का फ़तवा है कि इतनी नजासत से कपड़ा पाक रहता है तो फिर आप ने कपड़ा धोकर क्यों पाक किया तो हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि वह फ़तवा है और यह तक़वा है। (तज़किरतुल औलिया, स. 126)

तक़वा (7) : एक मरतबा हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जा रहे थे कि रास्ते में कीचड़ था, आप के पांव की ठोकर से कीचड़ उड़ कर एक यहूदी के मकान

की दीवार पर पड़ गया और उस मकान का मालिक यहूदी आप का मुक़रूज़ था, आप बहुत परेशान हुए कि उस यहूदी की मकान की दीवार कैसे साफ़ करें। इतने में यहूदी अपने मकान से बाहर आ गया और अप को देख कर समझा कि क़र्ज़ मांगने आए हैं। वह यहूदी उज़्र पेश करने लगा तो आप ने फ़रमया कि क़र्ज की बात छोड़ो मैं तो उस फ़िक्र में हूँ कि तुम्हारी दीवार को साफ़ कैसे करूँ ? हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बात सुनकर यहूदी बे साख़्ता कहने लगा हुज़ूर ! दीवार को बाद में साफ़ कीजियेगा पहले कलमा पढ़ा कर मेरा दिल पाक व साफ़ कर दें। चुनाँचे यहूदी ने कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गया। (तज़किरतुल मुहद्देसीन, स. 56)

हज़रात ! हमारे बुज़ुर्गों के किरदार व अख़लाक़ को देख कर बे शुमार बे ईमान, ईमान ले आए और लाखों गुमराह हिदायत पा गए।

हज़रत इमामे आज़म का अख़्लाक़ : हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहुत ही बा अख़्लाक़ और करीमुत्तबअ़ थे। आप ने कभी किसी से इन्तिक़ाम नहीं लिया। आप का पड़ोसी एक ऐसा शख़्स था जो आप को हमेशा परेशान करता रहता था और हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस से परेशान रहते थे मगर कभी उस को कुछ न कहा इत्तिफ़ाक़ से उस शख़्स को पोलिस वाले किसी वजह से गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिये। एक दो दिन गुज़रने के बाद जब वह शख़्स नज़र नहीं आया और उस की जानिब से जो तकलीफ़ पहुँचती थी वह परेशानी भी नहीं हुई तो हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मालूम किया कि हमारा पड़ोसी आज कल नज़र नहीं आता है तो लोगों ने बताया कि किसी जुर्म की वजह से पुलिस वाले उस को गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिये हैं। इतना सुनना था कि हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसी वक़्त कूफ़ा के गवर्नर ईसा बिन मूसा के पास तशरीफ़ ले गए तो गवर्नर ने आगे बढ़ कर आप का इस्तिक़बाल किया और अदब व ताज़ीम से आप को बैठाया और आप के आने का मक़सद मालूम किया और अर्ज़ की, आप ने क्यों तकलीफ़ फ़रमाई है मैं ख़ुद आप के पास हाज़िर हो जाता। तो हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि आप के कोतवाल ने हमारे पड़ोसी को गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिया है, मैं चाहता हूँ कि उस को रिहा कर दिया जाए। गवर्नर ने उसी वक़्त हुक्म दिया कि उसे रिहा कर दिया जाए। आप अपने पड़ोसी को साथ ले कर वापस आए और फिर उस पड़ोसी ने हमेशा के लिये गुनाहों से तौबह कर ली और आप के हलक़ा दर्स में बैठ कर दीन का इल्म हासिल करने लगा और आलिमे दीन बन कर फ़क़ीह के लक़ब से मशहूर हुआ। (सीरते नोअ़मान, स. 60, अल ख़ैरातुल हस्सान, स. 138)

आप से मरवी हदीसें सतरह सो हैं

शारेह मुअत्ता ने हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत की हुई हदीसों की तादाद में कई क़ौल नक़्ल किये हैं उस में से एक क़ौल यह है कि आप से रिवायत की हुई हदीसों की तादाद एक हज़ार सात सो है। (ज़ुरक़ानी)

हज़रात ! ग़ैर मुक़ल्लेदीन जो यह कहते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सिर्फ़ सतरह हदीसें पहुँची हैं और सुबूत में इब्ने ख़ुलदून का हवाला पेश करते हैं तो वह सरासर ग़लत है और इस ग़लती की बहुत सारी वजहें हैं और जो शख़्स आप की रिवायत कीहुई हदीसों को देखना चाहे वह आप के श ागिर्द हज़रत इमाम मुहम्मद और हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ की किताब, मुअत्ता इमाम मुहम्मद और किताबुल ख़िराज, किताबुल अमाली मजरद बिन ज़ियाद व ग़ैरहा का मुतालआ करे। इन किताबों में हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत की हुई कई सो हदीसें सही और हसन मिलेंगी।

मगर जब ख़ुदा दीन लेता है तो अक़्लें छीन लेता है।

और हज़रत मुल्ला अली क़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ौल के मुताबिक़ हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तिरासी हज़ार मसाइल हल फ़रमाए हैं और कुछ उलमा ने तो उस से भी ज़्यादा लिखा है।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह व रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उन की बे लोस और ख़ुलूस व महब्बत से लबरेज़ दीन व सुन्नत की ख़िदमत का सिला भी ख़ूब से ख़ूब तर अता किया कि आज पूरी दुनियाए इस्लाम में मज़हबे हन्फ़ी का बोल बाला है और महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में किस क़दर कुर्ब का दरजा नसीब हुआ मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत यहया मुआज़ राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आलमे ख़्वाब में आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि

اَيْنَ اَطْلُبُكَ يَارَسُوْلَ اللهِ قَالَ عِنْدَ عِلْمِ اَبِيْ حَنِيْفَةَ

यानी मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कहाँ तलाश करूँ तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू हनीफ़ा के पास मुझे तलाश करो। (कश्फ़ुल महजूब शरीफ़, स. 108, तज़किरतुल औलिया, स. 127)

क़ब्रे अनवर से इमामुल मुस्लेमीन का लक़ब मिला : हमारे इमाम हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहरे पाक, मदीना तैय्यिबा में रोज़ए अतहर, क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुए और सलाम अर्ज़ किया।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ

तो रोज़ए अतहर क़ब्रे अनवर से जवाब आया।

وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَااِمَامَ الْمُسْلِمِيْنَ

सलाम हो तुम पर ऐ मुसलमानों के इमाम। (सफ़ीनतुल औलिया, स. 51)

हज़रत इमामे आज़म का क़सीदा : हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान में

बहुत बेहतरीन क़सीदा लिखा, जिस के चन्द अशआर मुलाहज़ा फ़रमाइये।

يَا أَكْرَمَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَنْزَ الْوَرٰى
جُدْلِيْ بِجُوْدِكَ وَارْضِنِيْ بِرِضَاكَ

यानी ऐ सब से नेक व बुज़ुर्ग शख़्सियत नेअ़मते इलाहीके ख़ज़ाने अपने करम से मुझे भी अता फ़रमाइये और अपनी रज़ा से मुझे भी पसन्द फ़रमाइये।

وَالْأَنْبِيَاءُ وَكُلُّ خَلْقٍ فِي الْوَرٰى
وَالرُّسُلُ وَالْأَمْلَاكُ تَحْتَ لِوَاكَ

यानी तमाम अम्बिया व रुसुल और सारे फ़रिश्ते और मख़लूक़ क़ियामत के दिन आप के झन्डे के नीचे होंगे ऐ ख़ैरुल वरा!

أَنْتَ الَّذِيْ لَمَّا تَوَسَّلَ بِكَ آدَمُ
مِنْ زَلَّةٍ فَازَ وَهُوَ أَبَاكَ

यानी आप वह हैं कि जब हज़रत आदम ने आप को वसीला बनाया तो वह कामयाब हुए कुबूलियते दुआ से हालांकि वह आप के बाप हैं।

أَنَا طَامِعٌ بِالْجُوْدِ مِنْكَ وَلَمْ يَكُنْ
لِأَبِيْ حَنِيْفَةَ فِي الْأَنَامِ سِوَاكَ

यानी मैं आप के जूदो करम का मोहताज हूँ और मख़लूक़ में आप के सिवा अबू हनीफ़ा का कोई नहीं है। (क़सीदा नोअ़मानिया)

ऐ ईमान वालो! इन अशआर के ज़रीए हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ईमान व अक़ीदे का पता चलता है कि हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से हर नेअमत व दौलत का मालिक जानते हैं बल्कि जो कुछ भी किसी को मिला है या मिलेगा वह भी आक़ा करीम मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों ही से मिलेगा और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीला से हज़रत आदम की दुआ कुबूल हुई तो बग़ैर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले के अब किसी की भी दुआ कुबूल न होगी तो साबित हुआ कि आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बारे में हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जो ईमान व अक़ीदा था वही ईमान व अक़ीदा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का है।

और अलहम्दु लिल्लाह वही अक़ीदा हम ग़ुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा का भी है।

तेरे ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

दुरूद शरीफ़ :

इमामे आज़म की नसीहत : हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बवक़्ते विसाल अपने शागिर्द हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नसीहत फ़रमाई कि हमेशा क़ुरआन की तिलावत करते रहो, क़ब्रों और मशाइख़ की और मुबारक मक़ामात की कसरत से ज़ियारत किया करो।

(नुसरतुल अस्हाब, व हवाला अल इश्याह वन्नज़ाइर)

हज़रात ! इस नसीहत से भी मालूम होता है कि हम सुन्नियों, बरैलवियों का वही अक़ीदा है जो हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का था।

इमामे आज़म का विसाल : मशहूर रिवायत के मुताबिक़ हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल सत्तर साल की उम्र में 2 शअ़बानुल मुअज़्ज़म 150 हि. में हुआ। आप का मज़ारे मुबारक बग़दाद शरीफ़ में मरजए ख़लाइक़ है।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(४)

शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म

पहला जुमा .... दूसरा बयान

नमाज़
तोहफ़ए मेअ़्राज

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ○

तर्जमा : और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख। (पारा 16, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

यह एक सज्दा जिसे तो ग्राँ समझता है
हज़ार सज्दे से देता है आदमी को नजात

ज़िन्दगी आमद बराए बन्दगी
ज़िन्दगी बे बन्दगी, शर्मिन्दगी

ऐ ईमान वालो ! प्यारे आक़ा, शबे असरा के दूल्हा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब मैं मेअराज से वापस आया तो पचास वक़्त की नमाज़ रब तआला ने मुझे और मेरी उम्मत के लिये अता फ़रमाया। (मिश्कात शरीफ़, स. 528)

मेअराज के दूल्हा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं मूसा अलैहिस्सलाम पर गुज़रा तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा कि रब तआला ने आप को क्या दिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने पचास वक़्त की नमाज़ का तोहफ़ा मेरी उम्मत के लिये दिया है और फ़रमाया : اَلصَّلٰوةُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِيْنَ नमाज़ मोमिनों की मेअराज है।

ऐ प्यारे महबूब ! आप ने ख़ुदाए तआला को देखा यह आप की मेअराज है और आप की उम्मत नमाज़ पढ़ेगी तो नमाज़ मोमिनों की मेअराज है।

नमाज़ कम कराना : हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि आप की उम्मत कमज़ोर है बोझ नहीं उठा सकती और पचास वक़्त की नमाज़ आप रब तआला के हुज़ूर जाइये और नमाज़ों को कम कराइये। उम्मत की कमज़ोरी और परेशानी देख कर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उम्मत के ग़म में अल्लाह तआला की बारगाहे अक़दस में हाज़िर होते हैं और मअरूज़ा पेश करते हैं कि ऐ रब्बे करीम ! मेरी उम्मत कमज़ोर है पचास वक़्त की नमाज़ ज़्यादा है कुछ कम कर दे तो अल्लाह तआला ने पाँच वक़्त की नमाज़ को मुआफ़ फ़रमा दिया। हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वापस हुए फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा नमाज़ कितनी कम हुई है सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मूसा ! रब तआला ने बड़ा करम फ़रमाया और पाँच वक़्त की नमाज़ मुआफ़ फ़रमा दी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर अर्ज़ किया कि आप की उम्मत कमज़ोर है इतनी बोझ नहीं बरदाश्त कर सकती। जाइये और कम कराइये। उम्मत के ग़म को देख कर हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फिर रब तआला की बारगाह में हाज़िर हुए तो अल्लाह तआला ने और पाँच वक़्त की नमाज़ को कम फ़रमा दिया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने नो बार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कहा और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलही वसल्लम नो बार अपने रब तआला की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुए। इस तरह रब तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की सिफ़ारिश पर हुज़ूर की उम्मत के लिये पैंतालीस वक़्त की नमाज़ को मुआफ़ कर दिया और पाँच वक़्त की नमाज़ रह गई फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की कि अब भी ज़्यादा हैं और कम कराइये तो शर्म व हया के पैकर हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़ कम कराने की ग़रज़ से अब मुझे रब तआला के हुज़ूर जाने में शर्म आती है। (इब्ने माजह)

हमारे हुज़ूर सरापा रहमतो नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब पाँच वक़्त की नमाज़ का तोहफ़ा ले कर आ रहे थे तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरे हबीब (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ग़म न कीजिये कि नमाज़ों की तादाद घटी है तो सवाब भी कम हो गया होगा। बल्कि ऐ महबूब रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) उम्मत पढ़े गी पाँच वक़्त की नमाज़ और सवाब दिया जाएगा पचास वक़्त की नमाज़ का।

महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत को इनआम : जो शख़्स नेकी का इरादा करे और अभी क्या नहीं है तो उस के लिये एक नेकी लिखी जाती है और नेक काम कर ले तो उस को दस नेकी दी जाती है और जो शख़्स बुराई का इरादा करे

और बुरा काम न करे तो कोई गुनाह नहीं लिखा जाता और अगर बुरा काम कर ले तो एक ही गुनाह लिखा जाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हज़रात ! यह सब सदक़ा है महबूबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत का कि हम कैसे भी हैं मगर महबूब नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बद सही चोर सही मुजरिम व नाकारा सही
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा

अक़ीदे की बात : अहले सुन्नत का मुख़ालिफ़ कहता है कि क़ब्र वालों से मदद लेना बिदअत है शिर्क है और क़ब्र वालों की मदद नहीं लेनी चाहिये तो ऐसे लोगों से पूछा जाए कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हो चुका है। आप क़ब्र में तशरीफ़ फ़रमा हैं। पचास वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ हुई थी कम हो कर पाँच वक़्त की नमाज़ रह गई। तो यह नमाज़ की तख़फ़ीफ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की सिफ़ारिश और मदद से है अब वहाबी, देवबन्दी जो यह बकते फिरते हैं कि अल्लाह तआला की बारगाह में नबी या वली को वसीला बनाना शिर्क व बिदअत है और क़ब्र वालों से मदद मांगना जाइज़ नहीं है। तो उन को चाहिये कि पचास वक़्त की नमाज़ पढ़ें इस लिये कि पाँच वक़्त की नमाज़ तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की सिफ़ारिश और वसीला से कम हो कर मिली है।

दूसरी बात यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क़ब्र वाले हैं और उन की मदद से उम्मत की परेशानी दूर हुई है वर्ना पचास वक़्त की नमाज़ पढ़ना कितना दुश्वार होता। तो पता यह चला कि क़ब्र वाले भी मदद करते हैं जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूरी उम्मत की मदद की। तो मैं अर्ज़ करना चाहूँगा कि जब मूसा अलैहिस्सलाम क़ब्र वाले हो कर मदद कर सकते हैं तो गुम्बदे ख़ज़रा के मकीन, हमारे नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मदद और इस्तिआनत का आलम क्या होगा।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अपनी बनी हम आप बिगाड़ें
कौन बनाए बनाते यह हैं

लाखों बलाएं करोड़ों दुश्मन
कौन बचाए बचाते यह हैं

दुरूद शरीफ़ :

नमाज़ क्या है ? : हज़रात ! मख़्लूक़ का अपने ख़ालिक़ के हुज़ूर में बन्दगी का इज़्हार, उस की यकताई और बड़ाई का इक़रार, उस के रहमान व रहीम होने की याद, हुस्ने अज़ल

की हम्दो सना, उस ख़ालिको मालिक के बे शुमार एहसानात का शुक्रिया यह हमारे अन्दुरूनी एहसासात का अर्ज़े नियाज़, यह फ़ितरत की आवाज़, बे क़रार रूह की तसल्ली व तशफ़्फ़ी, मुज़तरिब क़ल्ब की राहत, मायूस दिलों की आस, ज़िन्दगी का हासिल, हस्ती का खुलासा اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ का फ़ितरी जवाब, मेअराज का तोहफ़ा, दीन का सुतून, कामयाबी का राज़ नमाज़ है। नमाज़ है, नमाज़ है।

नमाज़ की अफ़ज़लियत : हज़रात ! नमाज़ को जुमला इबादात में ख़ुसूसी फ़ज़ीलत हासिल है। हज ज़िन्दगी में एक मरतबा साहिबे इस्तिताअत मुसलमान पर फ़र्ज़ है। ज़कात साल में एक मरतबा साहिबे निसाब मुसलमान को देना है। रमज़ान शरीफ़ में रोज़े भी ग्यारह माह बाद आते हैं मगर नमाज़ वह इबादत है जो एक दिन में पाँच मरतबा फ़र्ज़ है। नमाज़ ही वह आला इबादत है जो हर मर्द औरत, अमीर व ग़रीब, पीर व सग़ीर, आज़ाद व असीर, अरबी व अजमी, गोरे और काले, जवान और बूढ़े, बीमार और तन्दुरुस्त, शाहो गदा, मरीज़ व हकीम, मुसाफ़िर व मुक़ीम, हर आक़िल व बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

अहादीसे मुबारका

हदीस शरीफ़ : اِنَّ اَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ صَلَاتُهٗ

क़ियामत के दिन सब से पहले बन्दे का हिसाब उस की नमाज़ का होगा। (नसाई, स. 55)

ऐ ईमान वालो ! यह दुनिया फ़ानी है और दुनिया की हर चीज़ फ़ानी है हमें चन्द रोज़ दुनिया में गुज़ार कर अपने प्यारे रब तआला की बारगाहे अज़मत में हाज़िर होना है और हर चीज़ का हिसाब देना है कितना कमाया और कहाँ ख़र्च किया। हिसाब देना है जवानी को हराम कारी में गुज़ारी या नेक कामों में, सब का हिसाब देना है, ज़िन्दगी की एक एक सांस, एक एक लम्हा, मिनट व सेकंड का हिसाब देना है मगर जो सब से पहले हिसाब होगा वह नमाज़ के बारे में होगा

हज़रत शैख़ सअ़दी शीराज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़ारसी..........................

हदीस 2 :

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اَوَّلَ مَا یُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ مِنْ عَمَلِهٖ صَلَاتُهٗ فَاِنْ صَلَحَتْ فَقَدْ اَفْلَحَ وَاَنْجَحَ وَاِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ فَاِنِ انْتَقَصَ مِنْ فَرِیْضَتِهٖ شَیْئًا قَالَ الرَّبُّ اُنْظُرُوْا هَلْ لِعَبْدِیْ مِنْ تَطَوُّعٍ فَیُكَمَّلَ بِهَا مَا انْتَقَصَ مِنَ الْفَرِیْضَةِ ثُمَّ یَكُوْنُ سَائِرُ عَمَلِهٖ عَلٰی ذٰلِكَ ۝

तर्जमा : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि : बे शक क़ियामत के दिन सब से पहले बन्दे के आमाल में से जिस चीज़ का हिसाब होगा वह नमाज़ है अगर वह दुरुस्त हुई तो वह कामयाबी और फ़लाह पाएगा और अगर वह दुरुस्त नहीं हुई तो वह ना मुराद और नाकाम होगा और उस की फ़र्ज़ नमाज़ में क़मी होगी तो अल्लाह तआला

फ़रमाएगा देखो मेरे बन्दे के नफ़्ल में ताकि उस से उस के फ़र्ज़ों की कमी पूरी की जाए, इस तरह उस के बाक़ी आमाल का हिसाब होगा। (तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 55, दुर्रे मन्सूर, जि. 1, स. 709)

हदीस 3 : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : सब से पहले क़ियामत के दिन बन्दा से नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा अगर यह दुरुस्त हुई तो बाक़ी आमाल भी ठीक रहेंगे और अगर यह बिगड़ी और ख़राब हुई तो तमाम आमाल बिगड़ेंगे। (तबरानी फ़िल औसत, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 283)

हमारे प्यारे आक़ा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

हदीस 4 : لِكُلِّ شَيْءٍ عَلَمٌ وَعَلَمُ الْإِيْمَانِ الصَّلٰوةُ

तर्जमा : हर चीज़ की अलामत होती है और ईमान की अलामत नमाज़ है

(मुनयतुल मुसल्ली, स. 4, मतबुआ लाहोर)

ऐ ईमान वालो ! आग की अलामत गर्मी है। बर्फ़ की अलामत ठंडक है। सूरज की अलामत धूप है। चाँद की पहचान रोशनी है फूल व गुलाब की पहचान ख़ुश्बू है और मोमिन की पहचान यह है कि नमाज़ी हो।

हज़रात ! अफ़सोस की बात है कि आप मोमिन हैं और नमाज़ नहीं पढ़ते, ऐसे मोमिन को अपने ईमान का जाइज़ा लेना चाहिये कि ईमान में कोई कमी तो नहीं है।

हदीस 5 : अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहिं व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है।

अव्वल : गवादी देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे और रसूल हैं।

दूसरा : नमाज़ क़ाइम करना तीसरा : हज करना

चौथा : हज करना पाँचवां : रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना।

(बुख़ारी, स. 6/1, मुस्लिम, स. 32/1, मिश्कात, स. 12)

सब से अफ़ज़ल बन्दा

हदीस 6 : हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की बारगाह में सब बन्दों में अफ़ज़ल बन्दा वह मुसलमान है जो नमाज़ के लिये वक़्त का ख़याल रखता है। (तन्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

वक़्त में नमाज़ पढ़ने वाला बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होगा

हदीस 7 : नबिये रहमत, रसूले बरकत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है अगर बन्दा वक़्त में नमाज़ पढ़े तो मेरे बन्दे का मेरे ज़िम्मए करम पर वादा है कि उसे अज़ाब न दूँगा और बे हिसाब जन्नत में दाख़िल करूँगा। (हाकिम, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 127)

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह !! हज़रात ! वक़्त में नमाज़ पढ़ लेना कितनी सआदत और नेकी की बात है और अल्लाह तआला को यह अमल कितना पसन्द है कि बन्दे को अज़ाब भी न होगा और बे हिसाब जन्नत में जाएगा। आज की इस मुबारक महफ़िल में आओ हम सब मिल कर यह अहद करें कि वक़्त में नमाज़ पढ़ेंगे और इन्शाअल्लाह तआला ज़रूर ब ज़रूर पढ़ेंगे।

दुरूद शरीफ़ :

हदीस 8 : हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلصَّلٰوۃُ نُوْرُ الْمُؤْمِنِ0 नमाज मोमिन का नूर है। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 117)

हदीस 9 : اَلصَّلٰوۃُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِیْن नमाज़ मोमिनों की मेअराज है।

हदीस 10 : اَلصَّلٰوۃُ عِمَادُ الدِّیْنِ فَمَنْ تَرَکَھَا فَقَدْ ھَدَمَ الدِّیْنَ وَمَنْ اَقَامَھَا فَقَدْ اَقَامَ الدِّیْنَ

नमाज़ दीन का सुतून है जिस ने नमाज़ छोड़ी उस ने दीन की बुनियाद ढा दी और जिस ने नमाज़ क़ाइम किया उस ने दीन को क़ाइम रखा। (मुनयतुल मुसल्ली, स. 4, मतबुआ लाहौर)

नमाज़ रहमत ही रहमत है

हदीस 11 : अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : नमाज़ ही से अल्लाह तआला की रज़ा हासिल होती है। नमाज़ फ़रिश्तों की महबूब इबादत है। अम्बियाए किराम की सुन्नत है। मअरिफ़त का नूर है। ईमान का जुज़ है, दुआ की क़ुबूलियत का ज़रीआ है। रिज़्क़ में बरकत का सबब है। नमाज़ी के दिल का नूर है। मुनकर नकीर के सवालों के जवाब का वसीला है। क़ब्र में मूनिस व ग़मख़्वार है। मैदाने क़ियामत में साया और सर का ताज है। नमाज़ दोज़ख़ के दरमियान पर्दा है। नमाज़ मीज़ान को बोझल करने वाली है। पुल सिरात से पार करने वाली है और नमाज़ जन्नत की कुन्जी है।

(नुज़हतुल मजालिस, तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन)

नमाज़ ने बुढ़िया को तूफ़ान से बचा लिया

अल्लाह तआला के बर गुज़ीदा नबी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम पर तूफ़ान का अज़ाब आया। अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि ऐ नूह (अलैहिस्सलाम) जब तूफ़ान आए तो नेक बन्दों को अपने साथ कश्ती में बिठा लेना ताकि नेक लोग अज़ाब से महफ़ूज़ रहें। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने एक बुढ़िया से वादा फ़रमा लिया कि तूफ़ान आएगा तो मैं तुम को भी साथ ले लूँगा और अपनी कश्ती में सवार कर लूँगा। मगर जब तूफ़ान आया और आकर तबाहियाँ मचा कर चला गया मगर बुढ़िया का ख़याल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को नहीं आया तूफ़ान गुज़र जाने के बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अचानक बुढ़िया का ख़याल आया और बेहद अफ़सोस हुआ कि बुढ़िया का क्या हुआ होगा चन्द नकों के साथ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उस बुढ़िया की ख़बर गीरी के लिये तशरीफ़ ले गए।

दूर से बुढ़िया की झोपड़ी देखी तो अल्लाह तआला के नबी हज़रत नूह अलैहिस्लाम ने शुक्र अदा किया कि बुढ़िया की कुटिया सलामत और मौजूद है और क़रीब तशरीफ़ लाए तो क्या देखा कि बुढ़िया अपनी कुटिया में नमाज़ पढ़ रही है और इबादत में मशगूल है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने बुढ़िया को सलाम किया। बुढ़िया बोली। ऐ अल्लाह तआला के नबी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम क्या तूफ़ान आ गया है। आप मुझे लेने आए हैं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ बुढ़िया तूफ़ान आया और तबाहियाँ मचा कर चला भी गया। क्या तुझ को ख़बर नहीं हुई ? बुढ़िया बोली ऐ हज़रत ! मुझे तो तूफ़ान की मुतलक़ ख़बर नहीं, मैं तो नमाज़ पढ़ रही थी अपने प्यारे अल्लाह तआला की इबादत में मसरूफ़ थी।

(तफ़सीरे रूहुल बयान, जि. 3, स. 85)

ऐ ईमान वालो ! यह है नमाज़ की बरकत कि तूफ़ान आया, दुनिया को तह व बाला कर के चला भी गया मगर बूढ़ी औरत जो अपने रब तआला के लिये नमाज़ पढ़ रही थी उस को पता भी न चला।

ऐ ईमान वालो ! आओ हम भई नमाज़ी बन जाएं ताकि अल्लाह तआला हमें भी नमाज़ की बरकत से हर तूफ़ान और ग़म से नजात नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! बुढ़िया नमाज़ भी पढ़ती थी और अल्लाह तआला के नबी (अलैहिस्सलाम) से महब्बत भी करती थी। तो पता चला कि वही नमाज़ बरकत व रहमत बनती है जो नबी की महब्बत व गुलामी के साथ अदा की जाए।

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! आज हमारा मुख़ालिफ़ वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी कहता है ऐसी नमाज़ पढ़ो जिस में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़याल न आए। नमाज़ में दुरूदो सलाम दोनों मौजूद हैं। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद पढ़ा जाए और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़याल न आए। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर सलाम भेजा जाए और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़याल न आए मुमकिन ही नहीं है, कि जब दुरूद पढ़ोगे तो दुरूद वाले का ख़याल ज़रूर आएगा। सलाम भेजोगे तो सलाम वाले का ख़याल यक़ीनन आएगा और हम ईमान वालों क़ी नमाज़ तो मुकम्मल और मक़बूल उस वक़्त होती है जब नबी का ख़याल आ जाए।

दुरूद शरीफ़ :

नमाज़ न पढ़ने से आबादी बरबाद हो गई

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का गुज़र एक बस्ती पर हुआ जिस में ख़ूब सर सब्ज़ व शादाब दरख़्त खड़े लहरा रहे थे। साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी के चश्मे बह रहे थे, बस्ती में बड़ी आबादी और शादाबी थी चन्द साल के बाद फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उस बस्ती से गुज़रे तो देखा दरख़्त सूखे हुए हैं। पानी के चश्मे ख़ुश्क पड़े हैं मकानात गिरे पड़े हुए हैं। आप यह तबाही

व बरबादी का मन्ज़र देख कर सोचने लगे कि इस बस्ती का और इस में रहने वालों का हाल इतना बुरा क्यों हुआ। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर वही नाज़िल हुई और बताया गया कि इस बस्ती वाले नमाज़ नहीं पढ़ते थे। यह नमाज़ छोड़ने का वबाल है। इस लिये यह बस्ती वीरान व बरबाद हो गई है। (नुज़हतुल मजालिस)

ऐ ईमान वालो ! वह घर बरबाद है जहाँ नमाज़ी न हों, वह बस्ती वीरान है जिस में नमाज़ पढ़ने वाले न हों, आओ हम सब अपने अपने घरों का, अपनी अपनी आबादी का मुहासबा करें कि हमारे घर और हमारे मुहल्ले आबाद हैं, या वीरान व बरबाद हैं। तौबह का दरवाज़ा बन्द नहीं हुआ है।

मेरे रहमान व रहीम ख़ालिक़ व मालिक मौला के दरबारे करम का मुनादी सुबह शाम निदा देता है

हम तो माइल ब करम हैं कोई साइल ही नहीं
राह दिखलाएं किसे रहरवे मन्ज़िल ही नहीं

ख़ूब नमाज़ पढ़ो, घर वालों को नमाज़ी बनाओ, बल्कि पूरे मुहल्ले वालों को नमाज़ की दावत देता कि घर भी आबाद रहे और मुहल्ला भी शाद रहे और क़ियामत के दिन अपने प्यारे रब तआला से ख़ूब ख़ूब इनआम व इकराम की दौलत से मालामाल हो सके।

हदीस 12 : हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ का हुक्म दो और जब दस साल के हो जाएं तो मार कर नमाज़ पढ़ाओ। (अबू दाऊद, मिश्कात, स. 58)

ऐ ईमान वालो ! जब सात साल के बच्चों के लिये नमाज़ की ताकीद का हुक्म है तो हमारे जवानों और बूढ़ों पर क्या नमाज़ मुआफ़ हो सकती है हरगिज़ नहीं। लिहाज़ा नमाज़ पढ़ो। बच्चों को पढ़ाओ, जब पूरा घर नमाज़ी होगा तो घर की रौनक़ व बरकत का आलम ही कुछ और होगा।

अल्लाह तआला हमारे घरों को हमारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उलफ़त व महब्बत के जलवों और नमाज़ की बरकतों से जगमगा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(8)

शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म

दूसरा जुमा .... पहला बयान

फ़ैज़ाने नमाज़

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ط

तर्जमा : बे शक नमाज़ मना करती है बे हयाई अर बुरी बात से।

(पारा 21, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमा वालो ! नमाज़ ही वह इबादत है जिस का हिसाब रोज़े मेहशर सब से पहले होगा, नमाज़ ही वह इबादत है जो गुनाहों से बचने के लिये ढाल है। नमाज़ से अल्लाह तआला ख़ुश होता और नमाज़ी के तमाम गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है।

नमाज़ की बरकत से गुनाह झड़ते हैं

हदीस शरीफ़ 1 : हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मौसमे ख़ज़ां में बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि दरख़्तों के पत्ते झड़ते हैं। आप ने एक दरख़्त की दो शाख़ों को पकड़ कर हिलाया। पत्ते उन से झड़ने लगे। प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू ज़र ! रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैं ने अर्ज़ किया, मैं हाज़िर हूँ। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब बन्दा अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उस से गुनाह इस तरह झड़ते हैं जैसे दरख़्त से पत्ते गिरते हैं। (मिश्कात शरीफ़, स. 85)

हदीस शरीफ़ 2 : नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ी, जब नमाज़ पढ़ता है तो उस के जिस्म पर गुनाह का मेल बाक़ी नहीं रहता है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक सुना कि तुम में से किसी के द रवाज़े पर नेहर जारी हो और वह पाँच मरतबा उस में ग़ुस्ल करता हो तो क्या उस के जिस्म पर कोई मेल रहेगा ? सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया उस के बदन पर कुछ मेल बाक़ी न रहेगा। तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : فَذَالِكَ مَثَلُ الصَّلَوٰتِ الْخَمْسِ يَمْحُو اللّٰهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا

तर्जमा : तो यह पाँच वक़्त की नमाज़ की तरह है। अल्लाह तआला उन नमाज़ों की बरकत से तमाम गुनाहों को मिटा देता है। (मिश्कात शरीफ़, स. 57)

प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आँखों की ठन्डक नमाज़ है

हदीस शरीफ़ 3 : قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ यानी मेरी आँखों की ठन्डक नमाज़ है।

ऐ ईमान वालो ! जब उम्मती नमाज़ पढ़ता है तो हमारे रहीम आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने क़ल्ब में ठन्डक महसूस करते हैं और नमाज़ी उम्मती से ख़ुश होते हैं। बड़ा ही ख़ुश नसीब है वह उम्मती जिस से प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुश हो जाएं और जो उम्मती नमाज़ नहीं पढ़ता है यक़ीनन वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को तकलीफ़ पहुँचाता है और नाराज़ करके दीन व दुनिया दोनों को तबाह कर लेता है। अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। नमाज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

अल्लाह तआला की बारगाह में सब से महबूब अमल नमाज़ है

हदीस शरीफ़ 4 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम। अल्लाह तआला को सब से ज़्यादा महबूब अमल कौन सा है, हमारे सरकार, मदीने के ताजदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, वक़्त पर नमाज़ पढ़ना सब से महबूब अमल है। फिर क्या है तो फ़रमाया मां, बाप की ख़िदमत करना, मैं ने अर्ज़ किया फिर क्या है, तो फ़रमाया जिहाद करना। (बुख़ारी, जि. 2, स. 882, मुस्लिम, मिश्कात, स. 58)

नमाज़ की बरकत से पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

हदीस शरीफ़ 5 : हज़रत हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ हम बैठे थे। हज़रत

उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पानी मंगवाया और वुज़ू किया। फिर फ़रमाया कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इसी तरह वुज़ू करते देखा है और मैं ने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स मेरे वुज़ू की तरह वुज़ू करे फिर वह ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है यानी वह गुनाह जो फ़ज्र की नमाज़ और ज़ोहर की नमाज़ के दरमियान हुए हों फिर जब अस्र की नमाज़ पढ़ता है तो ज़ोहर और अस्र के बीच के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है फिर जब मग़रिब की नमाज़ पढ़ता है तो अस्र की नमाज़ और मग़रिब की नमाज़ के दरमियान के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है। फिर जब इशा की नमाज़ पढ़ता है तो मग़रिब की नमाज़ और इशा की नमाज़ के बीच के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है फिर वह शख़्स रात भर सोता रहे फिर उठ कर वुज़ू करे और फ़ज्र की नमाज़ पढ़े तो इशा की नमाज़ और फ़ज्र के बीच के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है और यही वह नेकियाँ हैं जो बुराइयों को मिटा देती हैं और गुनाहों को दूर कर देती हैं। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

नमाज़ से गुनाह धुलते हैं

हदीस शरीफ़ 6 : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं। हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। अगर तुम्हारे सहन में नहर हो हर रोज़ वह पाँच मरतबा गुस्ल कर ले तो क्या उस के जिस्म पर कुछ मेल रह जाएगा ? लोगों ने अर्ज़ किया। जी नहीं सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : नमाज़ गुनाहों को ऐसे ही धो देती है जैसा कि पानी मेल को धो देता है। (इब्ने माजह, मुस्लिम, जि. 1, स. 235)

नमाज़ से साल भर के गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

हदीस शरीफ़ 7 : हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : पाँच वक़्त की नमाज़ें और जुमा से जुमा तक और रमज़ान शरीफ़ से रमज़ान शरीफ़ तक उन तमाम गुनाहों को मिटा देते हैं जो उन के दरमियान हुए हों जब कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए। (मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, 57)

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर से सुनो और नमाज़ की बरकत देखो कि अल्लाह तआला ने नमाज़ में कितनी बरकत व रहमत रखी है।

नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नुबुव्वत का ज़र्रीं दौर था। तौहीदो रिसालत का ग़लग़ला बलन्द हो रहा था। नेकियाँ बदियों पर छा रही थीं, जिहालत की तारीकियाँ दूर हो रही थीं, नूरे ख़ुदा हर सू फेल रहा था। ऐसे में एक शख़्स जो कि नमाज़ी था और साथ ही बद अमल व बद किरदार भी था। नमाज़ की बरकत से तौबह की तौफ़ीक़ मिली फिर क्या था नेक व परहेज़गार हो गया।

नमाज़ की बरकत से बुरा शख़्स नेक व परहेज़गार हो गया

हदीस शरीफ़ 8 : एक शख़्स हमारे नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ता था मगर बुरे आमाल में भी मशगूल था। इस शख़्स के बारे में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़बर किया गया कि फ़लां शख़्स आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ता है और बुरे अमल भी करता है तो हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : बेशक उस की नमाज़ उस को हर बुरे काम से रोक देगी। चन्द दिनों के बाद वह शख़्स तमाम बुरे आमाल से तौबह करके नेक व परहेज़गार हो गया। जब सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सुना तो फ़रमाया क्या मैं तुम को नहीं कहता था कि उन की नमाज़ उन्हें तमाम बुरे कामों से रोक देगी। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि अगर कोई मुसलमान नमाज़ पढ़ता है और बुरे आमाल का इरतिकाब भी करता है तो उस को तअना नहीं देना चाहिये। कहीं उस का दिल टूट गया और उस ने नमाज़ भी छोड़ दी तो उस का गुनाह तअ़ना देने वालों के सर जाएगा। इस लिये नमाज़ पढ़ने वाले को तअ़ना नहीं देना चाहिये न उस का मज़ाक़ बनाना चाहिये। एक दिन ऐसा आएगा कि नमाज़ की बरकत से वह शख़्स बुरे आमाल से तौबह कर के, नेक व परहेज़गार बन जाएगा। अल्लाह तआला का फ़रमाने हक़ है।

إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ط तर्जमा : बेशक नमाज़ मना करती है बे हयाई और बुरी बात से। (पारा 21, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

नमाज़ की बरकत से चोर नेक हो गया

हदीस शरीफ़ : 9 हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से लोगों ने अर्ज़ किया कि फ़लां शख़्स रात में नमाज़ पढ़ता है और सुबह को चोरी करता है सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया एक दिन नमाज़ उसे बुरे काम से रोक देगी। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

नमाज़ की बरकत से गुनाह मुआफ़ हो गया

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि एक शख़्स से ज़िना का गुनाह हो गया। वह शख़्स नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और अपने किये हुए गुनाह का इक़रार किया और बख़्शिश का तलबगार हुआ। अल्लाह तआला ने अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ ط إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ط ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ 0

तर्जमा : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के हिस्सों में, बे शक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं। यह नसीहत है नसीहत मानने वालों को।

(पारा 12, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यानी उस शख़्स ने जब गुनाह मुआफ़ होते हुए देखा तो ख़ुशी से सर शार हो कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ली हाज़ा ऐ आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या यह मग़फ़िरत व बख़्शिश मेरे लिये ख़ास है तो हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : لِجَمِيْعِ اُمَّتِىْ كُلِّهِمْ
नहीं बल्कि सारी उम्मत के लिये है। (मिश्कात शरीफ़, स. 58)

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले
एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर से सुनो ! और अपने ईमान को ताज़ा करो आज हमारा मुख़ालिफ़ वहाबी, देवबन्दी कहता है। सब काम अल्लाह करता है। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले की ज़रूरत क्या है। हम नबी से क्यों कहे नबी के पास मदीना जाने की हाजत क्या है। तो मुख़ालिफ़ वहाबी से पूछो कि सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से गुनाह हुआ। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास क्यों हाज़िर हुए और बख़्शिश क्यों तलब की, मदद क्यों मांगी क्या सहाबी से ज़्यादा कोई अल्लाह तआला की मअरिफ़त रखता है। हर गिज़ नहीं ग़ोया सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बताना यह चाहते हैं कि देता अल्लाह तआला ही है। बख़्शिश अल्लाह तआला ही फ़रमाता है लेकिन अपने महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास जाने से और महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का वसीला लेने से और मुझे अर्ज़ यह करना है कि गुनाह हो जाए, ख़ता सर ज़द हो जाए, ज़ुल्म हो जाए तो प्यारे आक़ा नबिये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के पास जाना, और उन का वसीला लेना बिदअत व शिर्क नहीं बल्कि सहाबा किराम की आदत व सुन्नत है।

क्या ही ख़ूब फ़रमाया है, मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद, वली इब्ने वली, हम शबीहे ग़ौसे आज़म, सरकार मुफ़्तिये आज़म, मुर्शिदे आज़म, अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु बरैलवी ने :

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो हरगिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

और आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वही रब है जिस ने तुझ को हमातन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया
तुझे हम्द है ख़ुदाया तुझे हम्द है ख़ुदाया

दुरूद शरीफ़ :

ख़ुदाए तआला से बे मिसाल ख़ौफ़

हदीस शरीफ़ 11 : अहदे रिसालत में एक मुसलमान से ज़िना की मअ़सियत सरज़द हो गई। यह गुनाह इतनी मख़्फ़ी सूरत में हुआ था कि कोई इन्सानी निगाह वहाँ न पहुँच सकी और किसी को इल्म न होने पाया। नफ़सानी ख़्वाहिश के हे जान में वह ज़ब्ते नफ़्स से काम न ले सका। बाद में एहसास हुआ कि दुनियवी अदालत की सज़ा से तो बच सकता हूँ मगर उख़रवी नुक़सान उन से कौन बचाएगा। बहतर है कि संगसारी की सज़ा दुनिया में भुगत लूँ। इन्तिहाई नदामत के साथ जनाब सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास हाज़िर हो कर कहा। ग़ज़ब हो गया मुझ से ज़िना का मलऊन फ़ेअल सरज़द हुआ है। बराहे करम मुझे जनाबे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में ले जाकर सज़ा दिलवा दीजिये महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा, किसी ने गुनाह के इरतिकाब करते वक़्त आप को देखा है ? जवाब नफ़ी (नहीं) में पाकर फ़रमाया। जा और किसी से ज़िक्र न करना। ख़ुदाए तआला से तौबह कर जब उस ने तेरा यह गुनाह छुपा लिया तो वह तेरा गुनाह भी मुआफ़ कर देगा। यह अलफ़ाज़ और फिर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़बान से सादिर हुए। इत्मीनान के लिये यही कुछ काफ़ी था। उस वक़्त तो वह मुतमइन हो कर चला गया मगर फिर ख़ुदा ख़ोफ़ी ने ज़हन पर ग़लबा पा लिया और अज़ाबे आख़िरत के तसव्वुर ने लरज़ा दिया। भागा भागा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास पहुँचा और वाक़िआ बयान कर दिया। आप ने भी वही कुछ फ़रमाया जो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कह चुके थे लेकिन उस पर ऐसा ख़ौफ़ तारी था कि बार बार आता और सज़ा की इस्तिआ करता। चौथी मरतबा उस ने सज़ा का अज़्मे कामिल करते हुए दूसरे लोगों के सामने अपने गुनाह का एतिराफ़ किया और रज्म यानी संगसार किये जाने की इल्तिजा की। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने संगसारी का हुक्म दिया और उस ने पूरे इत्मीनान के साथ अपनी जान जाने आफ़रीन के सुपुर्द की।

हज़रात ! ग़ौर कीजिये ! उसे अच्छी तरह मालूम था कि उस की सज़ा दर्दनाक मौत है। हर तरफ़ से पत्थर बरसाए जाएंगे। बे इन्तिहाई रुसवाई होगी लेकिन ख़ुदा ख़ोफ़ी का जज़्बा था जिस ने हर अज़ियत व तकलीफ़ बरदाश्त करने का तहम्मुल अता कर दिया। तमद्दुन व

मुआशिरत की पूरी तारीख़ इस तरह की मिसालें पेश करने से क़ासिर है। इस तरह का ईमान व ईक़ान नमाज़ ही से नसीब हो सकता है।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला से डरो। वह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और वह जानता है जो तुम छुपाते हो। जज़ा और सज़ा उसी क़ादिर व क़य्यूम के हाथ में है। जो हर वक़्त तुम्हें देखता है।

नमाज़ इन्सान में यह एहसास पैदा करती है कि सब हाकिमों का सब से बड़ा हाकिम ख़ुदाए कायनात है। जिस से कोई जुर्म नहीं छुपाया जा सकता। गुनाह चाहे शीश महलों के सुनहरे पर्दों में किया जाए। अल्लाह तआला की निगाह से नहीं छुप सकता। जब मुसलमान हर रोज़ ईमान व ईक़ान के साथ पाँच वक़्त अल्लाह तआला के हुज़ूर में हाज़िरी दे तो उस से कैसे कोई गुनाह सर ज़द होगा। अल्लाह तआला का फ़रमान हक़ है और यक़ीनन हक़ है।

إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ तर्जमा : बे शक नमाज़ मना करती है बे हयाई और बुरी बात से। (पारा 21, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

नमाज़ी के तमाम गुनाह मुआफ़ हो गए

हदीस शरीफ़ 12 : हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं जब बन्दा नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो उस के सारे गुनाह बाँध कर उस के सर पर रखे जाते हैं। जब बन्दा रुकूअ में जाता है तो सारे गुनाह गिर जाते हैं। नमाज़ी जब नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो सारे गुनाहों से पाक व साफ़ हो जाता है।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 116)

हदीस शरीफ़ 13 : अल्लाह तआला के हबीब, हम बीमारों के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो दो रकअत नमाज़ पढ़े और उनमें सह्व (भूल, ग़लती) न करे तो जो कुछ पहले उस के गुनाह हुए हैं अल्लाह तआला मुआफ़ फ़रमा देता है।

(मिश्कात शरीफ़, स. 58)

हदीस शरीफ़ 14 : मेरे रहीमो करीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने वुज़ू किया जैसा हुक्म है और नमाज़ पढ़ी जैसे नमाज़ का हुक्म है तो जो कुछ पहले किया है मुआफ़ हो गया। (नसाई, जि. अव्वल, स. 18, इब्ने माजह, स. 36)

तन्हाई की दो रकअत

हदीस शरीफ़ 15 : नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो तन्हाई में दो रकअत नमाज़ पढ़े कि अल्लाह तआला और फ़रिश्तों के अलावा कोई न देखे तो ऐसे नमाज़ी शख़्स की दोज़ख़ से आज़ादी लिख दी जाती है।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 125)

नमाज़ी होना अल्लाह तआला का एहसान है

हदीस शरीफ़ 16 : हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ईमान वाले बन्दे पर अल्लाह तआला का सब से बड़ा एहसान यह है कि उसे दो रकअत नमाज़ की तौफ़ीक़ दी गई। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

ऐ ईमान वालो ! हमारे अकाबिर व अस्लाफ़, नमाज़ से बड़ी महब्बत किया करते थे और उन के दिलों में नमाज़ की बड़ी क़द्र हुआ करती थी जैसे नमाज़ का वक़्त होता, किसी चीज़ की परवाह किये बग़ैर नमाज़ शुरू कर देते।

एक आलिमे बा अमल के नमाज़ की पाबन्दी का आँखों देखा हाल

पीरो मुर्शिद, वलिये कामिल, आलिमे बा आमल, फ़ना फ़िर्रज़ा हज़रत मौलाना मुफ़्ती अश्शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुसन्निफ़ सवानेह आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़ से बे पनाह महब्बत फ़रमाते। जब नमाज़ का वक़्त होता सब से पहले नमाज़ अदा फ़रमाते। ऐसा नहीं कि अभी तो बहुत वक़्त बाक़ी है बाद में नमाज़ पढ़ लेंगे कि फ़लां से मिलना है फिर नमाज़ पढ़ेंगे। फ़लां काम है वह कर लें फिर नमाज़ पढ़ेंगे। आप फ़रमाया करते थे कि नमाज़ का वक़्त हो जाए तो टाल मटूल करना कि अभी वक़्त है पढ़ लेंगे और नमाज़ में ताख़ीर करना। नफ़्स का धोका है। शैतान का बहकावा है। नमाज़ छूट सकती है, ज़ाए हो सकती है लिहाज़ा जब वक़्ते नमाज़ हो जाए तो अल्लाह तआला का हुक्म बजा लाओ, नमाज़ अदा कर लो। फिर बाक़ी काम करो।

मेरे आक़ाए नेअ़मत बद्रे मिल्लत रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़र फ़रमाते तो सब से पहला सवाल न टिकट का कन्फ़र्म है या नहीं। टेन कब आएगी या कब जाएगी कुछ नहीं बल्कि नमाज़ के बारे में होता कि नमाज़ कैके पढ़ेंगे और कब पढ़ेंगे कहीं टेन की वजह से नमाज़ ज़ाए न हो जाए। टेन का इन्तिज़ार फ़रमाते, नमाज़ का वक़्त हो जाता, नमाज़ के लिये खड़े हो जाते। साथी कहते कि हज़रत ? टेन आए गी और चली जाएगी हम यहीं रह जाऐंगे। आक़ाए नेअमत हुज़ूर बद्रे मिल्लत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते टेन जाएगी, नमाज़ तो नहीं जाएगी। नमाज़ फ़र्ज़ है। सफ़र करना फ़र्ज़ नहीं है। और देखा गया कि कभी भी टेन नहीं छूटी नमाज़ की बरकत से टेन भी वक़्त पर मिलती और सफ़र भी नमाज़ की अदाएगी के साथ होता सच फ़रमाया।

مَنْ جَدَّ وَجَدَ जिस ने कोशिश किया कामयाब हुआ। नमाज़ की बे बहा महब्बत क़द्र ने कितना अज़ीमुश्शान इनआम अता किया कि हुज़ूर बद्रे मिल्लत आक़ाए नेअमत नमाज़े मग़रिब से फ़ारिग़ हो कर मुसल्ले पर अपना रुख़ मदीना मुनव्वरा की जानिब किये हुए तस्बीह व तहलील में मशग़ूल थे। 8 रमज़ानुल मुबारक की रात थी और परवाना अजल आया और जान को जाने जानां के हवाले किया यानी विसाल रमया़ यह है मोमिने कामिल की नमाज़ से बे पनाह महब्बत व क़द्र का इनआम व इकराम। अल्लाह तआला हमें भी हमारे बुज़ुर्गों की तरह नमाज़ से महब्बत अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

गदाए बद्रे मिल्लत
अनवार अहमद क़ादरी रज़वी

दो रकअत नमाज़ जन्नत से अफ़ज़ल

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं। अगर मुझे जन्नत और दो रकअत नमाज़, उन दोनों में से एक का इख़्तियार मिले तो मैं दो रकअत नमाज़ इख़्तियार कर लूँ। इस लिये कि दो रकअत नमाज़ में अल्लाह तआला की रज़ा है और जन्नत में मेरी रज़ा है। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

नमाज़ी बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होगा

हदीस शरीफ़ 17 : हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है अगर मेरा बन्दा वक़्त में नमाज़ क़ामिल रखे तो मेरे बन्दे का मेरे ज़िम्मे करम पर वादा है कि मैं उसे अज़ाब न दूँ और बे हिसाब जन्नत में दाख़िल करूँ। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 127)

फ़रिश्तों की दुआ नमाज़ी के हक़ में

हदीस शरीफ़ 18 : हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जोबन्दा नमाज़ पढ़ कर उस जगह जब तक बैठा रहता है फ़रिश्ते उस के लिये बख़्शिश की दुआ करते रहते हैं। उस वक़्त तक कि बे वुज़ू हो जाए या उठ खड़ा हो।

मलायका का इस्तिग़फ़ार उस के लिये यह है : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ اَللّٰهُمَّ تُبْ عَلَيْهِ

ऐ अल्लाह तआला तू उस को बख़्श दे। ऐ अल्लाह तआला! तू उस पर रहम कर। ऐ अल्लाह तआला उस की तौबह कुबूल कर। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 1, स. 82)

रात भर इबादत का सवाब

हदीस शरीफ़ 19 : हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं ज़ो नमाज़े सुबह के लिये तालिबे सवाब हो कर हाज़िर हुआ गोया उस ने तमाम रात क़याम किया (इबादत की) और नमाज़े इशा के लिये हाज़िर हुआ गोया उस ने आधी रात क़याम किया यानी इबादत की।

(बैहक़ी, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 80, शअबिल ईमान, ज. 3, स. 55)

दोज़ख़ से आज़ाद हुआ

हदीस शरीफ़ 20 : मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं जिस ने चालीस दिन नमाज़े फ़ज्र व इशा बा जमाअत पढ़ी उस को अल्लाह तआला दो बरातें अता फ़रमाता है एक दोज़ख़ से। दूसरी निफ़ाक़ से। (ख़तीब, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 80)

नमाज़े इशा व फ़ज्र की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ 21 : हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं सब नमाज़ों में ज़्यादा गिरां मुनाफ़िक़ीन पर नमाज़े इशा व फ़ज्र है और जो उन में

फ़ज़ीलत है अगर जानते तो ज़रूर हाज़िर होते अगरचेह सुरीन (कुल्हों) के बल घसिटते हुए यानी जैसे भी मुमकिन होता। (तबरानी कबीर, जि. 10, स. 99, दुर्रे मन्सूर जि. 1, स. 714)

बे नमाज़ी का नाम दोज़ख़ के दरवाज़े पर

हदीस शरीफ़ 22 : अल्लाह तआला के महबूब, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं जिस ने क़सदन नमाज़ छोड़ी जहन्नम के दरवाज़े पर उस का नाम लिख दिया जाता है। (मुस्लिम शरीफ़, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 71)

नमाज़ में हज का सवाब

हदीस शरीफ़ 23 : हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो तहारत करके अपने घर से फ़र्ज़ नमाज़ के लिये निकला उस का अज्र ऐसा है जैसा हज करने वाले मेहरम (एहराम बाँधने वाले) का, और जो चाश्त केलिये निकला उस का अज्र उमरह करने वाले की मिस्ल है। और एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक कि दोनों के दरमियान में कोई लग़्व (बेकार) बात न हो। अलिय्यीन में लिखी है यानी दरजए कुबूल को पहुँचती है। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 1, स. 82)

ऐ ईमान वालो ! नमाज़ पढ़ोऔर हज व उमरह का सवाब हासिल करो यानी जो शख़्स बा वुज़ू घर से निकला नमाज़े फ़र्ज़ अदा करने के लिये मस्जिद में गया उस को इस क़दर सवाब मिलता है जितना एहराम बाँध कर हज करने वाले को मिलता है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हुक्म

हदीस शरीफ़ 24 : मुरादे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने सूबों के हाकिमों के पास फ़रमान भेजा कि तुम्हारे सब कामों से अहम काम मेरे नज़दीक नमाज़ है। जिस ने उस की पाबन्दी किया और उस पर मुहाफ़िज़त की उस ने अपना दीन महफ़ूज़ रखा और जिस ने नमाज़ को ज़ाए किया वह ओरों को बदरजए ऊला ज़ाए करेगा। (बुख़ारी, मुस्लिम, मुअत्ता, इमाम मालिक, जि. 1, स. 3)

बे नमाज़ी क़ियामत में क़ारून व फ़िरऔन के साथ होगा

हदीस शरीफ़ 25 : सय्यदे आलम आक़ाए दो आलम, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने नमाज़ की मुहाफ़िज़त यानी पाबन्दी की क़ियामत के दिन वह नमाज़ उस के लिये नूर व बुरहान व नजात होगी और जिस ने मुहाफ़िज़त न की उस के लिये न नूर है न बुरहान न नजात और क़ियामत के दिन क़ारून व फ़िरऔन व हामान व उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 574, दारमी, बैहक़ी)

हज़रात ! ग़ौर से सुनो ! नमाज़ पढ़ने वाला बहुत बड़ा खुश नसीब होता है उस के लिये क़ियामत के दिन नूर ही नूर और नजात जैसी नेअमत नसीब होगी और नमाज़ न पढ़ने वाला कितना बड़ा बद नसीब होता है कि क़ियामत के दिन क़ारून व फ़िरओन व हामान व उबय इब्ने ख़लफ़ जैसे मलऊनों व मरदूदों के साथ होगा। अल्लाह तआला अमान अता फ़रमाए बे नमाज़ी होने से बचाए और क़ियामत के दिन महबूबों के ज़ुमरे (गरोह) में शामिल फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

सहाबए किराम तर्के नमाज़ को कुफ़्र जानते थे

हदीस शरीफ़ 26 : सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन किसी अमल के तर्क को कुफ़्र नहीं जानते सिवा नमाज़ के। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 90)

बहुत सी ऐसी हदीसें हैं जिन का ज़ाहिर यह है कि क़सदन नमाज़ का तर्क कुफ़्र है और बाज़ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन मसलन हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आज़म व अब्दुर्रहमान बिन औफ़ व अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद व अब्दुल्लाह बिन अब्बास व जाबिर बिन अब्दुल्लाह व मआज़ बिन जबल व अबू हुरैरह व अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन का यही मज़हब था और बाज़ अइम्मा मसलन इमाम अहमद बिन हम्बल व इस्हाक़ बिन राहविया व अब्दुल्लाह बिन मुबारक व इमाम नख़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन का भी यही मज़हब था अगरचेह हमारे इमामेआज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व दगीर अइम्मा नीज़ बहुत से सहाबा किराम उस की तकफ़ीर नहीं करते (काफ़िर नहीं कहते) फिर भी यह क्या थोड़ी बात है कि उन जलीलुल क़द्र हज़रात के नज़दीक ऐसा शख़्स काफ़िर है। (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 13)

नमाज़ ग़म व मुश्किल के वक़्त सामाने राहत है

हदीस शरीफ़ 27 : हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जब कोई ग़म लाहिक़ होता या कोई मुश्किल अम्र पेश आता तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नमाज़ की तरफ़ रुजूअ फ़रमाते थे।

كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ اِذَا حَزَبَهٗ اَمْرٌ صَلّٰى

तर्जमा : जब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कोई सख़्त मुश्किल अम्र पेश आता तो आप नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह होते। (मिश्कात, स. 117)

ऐ ईमान वालो ! जब ग़मों के पहाड़ टूट रहे हों। मुसीबतों की आंधियाँ चल रही हों। तकलीफ़ों के हुजूम हों, तो ऐसे वक़्त में नमाज़ का सहारा लो, नमाज़ से मदद हासिल करो?

अल्लाह तआला का फ़रमान : وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ط

तर्जमा : सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। (पारा 2, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

जन्नती का सवाल जहन्नमी से : जब जन्नती जन्नत में जा रहे होंगे और जहन्नमी दोज़ख़ में डाले जा रहे होंगे तो जन्नती लोग जहन्नम में जाने वालों से सवाल करेंगे।

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ۝

तर्जमा : तुम्हें क्या बात दोज़ख में ले गई। (पारा 29, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)
तो दोज़खी जवाब देंगे।

لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ

तर्जमा : हम नमाज़ न पढ़ते थे। (पारा 29, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! नमाज़ वह अज़मत वाली इबादत है जिस के तर्क करने वाले की सज़ा तो आप ने सुन ली।

अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे नमाज़ वक़्त पर पढ़ो ख़ुलूस से पढ़ो ताकि दोज़ख के अज़ाब से बच सको और जन्नत के हक़दार बन सको।

हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद बे नमाज़ी की निगाह से घर को बचाओ

एक शख़्स तंग दस्ती का शिकार है। उस के घर में गुरबत व अफ़लास का पहरा है। बड़ी तंग दस्ती से ज़िन्दगी गुज़र रही है। परेशान हाल वह शख़्स आस्तानए क़ादरियत व ग़ौसियत पर हाज़िर होता है और अपनी ग़रीबी और तंग दस्ती की रूदाद हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सुनाता है। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख़्स से सवाल किया कि तुम्हारा घर रास्ते पर तो नहीं है उस शख़्स ने बताया कि मेरा घर रास्ते पर पड़ता है सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया। ऐ शख़्स जा और अपने घर के दरवाज़े पर पर्दा डाल दे। तेरी ग़रीबी और तंगदस्ती दूर हो जाएगी और घर में रहमत व बरकत हो जाएगी। वह शख़्स बड़ा हैरान है कि न वज़ीफ़ा दिया न तावीज़ बस पर्दा डाल दो ग़रीबी दूर हो जाएगी आख़िर बात किया है ?

उस शख़्स ने जाकर घर के दरवाज़े पर पर्दा डाला कुछ ही अर्सा गुज़रा था कि कारोबार ख़ूब फला फूला। तिजारत में बहुत नफ़अ कमाया। रहमतो बरकत से घर भर गया। ग़रीबी दूर हो गई और तंग दस्ती चली गई। कुछ तोहफ़ा और नज़राना ख़िदमते आलिया में पेश किया और अर्ज़ गुज़ार हुआ कि सरकार ने न तावीज़ दिया न कोई वज़ीफ़ा पढ़ने के लिये फ़रमाया बस इतना कहा कि घर के दरवाज़े पर पर्दा डाल दो, बरकत हो जाएगी और यक़ीनन पर्दा डालते ही ढेरों बरकत हुई। ऐ हमारे पीर, आख़िर पर्दा डालने में राज़ किया था ?

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया तुम्हारा घर रास्ते पर है। लोगों का गुज़र होता है। गुज़रने वालों में बे नमाज़ी भी गुज़रते होंगे और उन की नज़र तुम्हारे घर के अन्दर पड़ती होगी और जिस जगह पर बे नमाज़ी की नज़र पड़ जाती है तो उस जगह से रहमत व बरकत चली जाती है। इस लिये मैं ने तुम से कहा कि घर के द रवाज़े पर पर्दा डाल दो ताकि तुम्हारा घर बे नमाज़ी की निगाह से महफ़ूज़ हो जाए।

अल्लाहु अकबर : हज़रात ! नमाज़ न पढ़ने वाले की निगाह में किस क़दर बे बरकती और नहूसत होती है कि जिस घर में पड़ जाए तो उस घर से रहमत व बरकत दूर हो जाती है।

अब मुझे यह अर्ज़ करना है कि जब बे नमाज़ी की निगाह में बे बरकती और नहूसत का यह आलम है तो जिस घर में बे नमाज़ी ही रहते हों तो उस घर में रहमत व बरकत कैसे होगी ? अल अमान वल हफ़ीज़ !

अन्धा रहना गवारा है : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की आँखों में तकलीफ़ हो गई। आप ने हकीम को दिखा दिया तो हकीम ने कहा कि आप की आँखों में तकलीफ़ ज़्यादा है उस का इलाज करना पड़ेगा मगर चन्द दिन आप नमाज़ नहीं पढ़ सकेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया मुझे पूरी ज़िन्दगी यानी उम्र भर अन्धा रहना गवारा है मगर एक वक़्त की नमाज़ छोड़ना मुझे हर गिज़ गवारा नहीं है। (हयाते सहाबा)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(8)

शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

बरकाते नमाज़

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ ط

तर्जमा : बे शक नमाज़ मना करती है बे हयाई और बुरी बात से। (पारा 21, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)
दुरूद शरीफ़ :

पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ने वाला गुनाह से पाक हो जाता है

हज़रत कअब बिन अहबार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैं ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किसी सहीफ़ा में अल्लाह तआला का यह इरशाद पढ़ा है कि ऐ मूसा ! (अलैहिस्सलाम) दो रकअत नमाज़ होगी, जिस को मेरा महबूब रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम और उस की उम्मत पढ़ा करेंगी यह फ़ज्र की नमाज़ है। जो शख़्स उसे पढ़ा करेगा। मैं उस के दिन और रात के गुनाह बख़्श दूँगा और वह मेरी पनाह में रहेगा। ऐ मूसा अलैहिस्सलाम चार रकअत नमाज़ होगी जिस को मेरा महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम और उस की उम्मत पढ़ा करेंगी। यह ज़ोहर की नमाज़ है मैं उन्हें उस नमाज़ की पहली रकअत के ऐवज़ में मग़फ़िरत अता करूँगा और दूसरी रकअत के सवाब में उन की मीज़ाने अमल का नेकियों वाला पल्ला भारी कर दूँगा और तीसरी रकअत के बदले में उन पर फ़रिश्ते मुक़र्रर कर दूँगा जो मेरी तस्बीह और उन के लिये दुआए मग़फ़िरत करेंगे चौथी रकअत पर उन के लिये आसमानों के दरवाज़े खोल दूँगा। जिनमें से जन्नत की हूरें उन्हें झांकेंगी और मैं हूराने जन्नत को उन की ज़ौजियत (यानी निकाह) में दूँगा। ऐ मूसा अलैहिस्सलाम चार रकअत नमाज़ है जो मेरा महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम और उन की उम्मत पढ़ा करेंगे यह नमाज़े अस्र है। जिस के सवाब में आसमान व ज़मीन का कोई ऐसा फ़रिश्ता न होगा जो उन के लिये दुआए बख़्शिश न करे और जिस शख़्स के लिये फ़रिश्ते दुआए बख़्शिश करें उसे कभी अज़ाब न होगा। ऐ मूसा अलैहिस्सलाम तीन रकअत नमाज़ होगी जिस को मेरा महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम और उन की उम्मत ग़ुरूब आफ़ताब के फ़ौरन बाद पढ़ेंगे।

जिस से मैं उन के लिये आसमान के दरवाज़े खोल दूँगा और वह अपनी जिस हाजत के लिये मुझ से कहेंगे मैं उसे पूरा करूँगा । ऐ मूसा अलैहिस्सलाम चार रकअत नमाज़ होगी जिस को मेरा महबूब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और उन की उम्मत रात को शफ़क़ (आसमान की सुर्ख़ी) ग़ाइब होने के बाद पढ़ेंगे। यह इशा की नमाज़ है जो उन के लिये दुनिया व मा फ़ीहा (दुनिया और इसमें जो कुछ है) से बेहतर होगी और वह अपने गुनाहों से पाक व साफ़ हो जाएंगे गोया आज ही अपनी मां के पेट से पैदा हुए हैं ।

(तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 2)

नमाज़ी, तमाम आसमानी किताबें पढ़ने का सवाब पाता है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे आक़ा रसूले आज़म सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब बन्दए मोमिन नमाज़ की अदाएगी के लिये अल्लाह तआला की बारगाह में आता है और अल्लाहु अकबर! कहता है तो वह शख़्स गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है गोया आज अपनी मां के पेट से पैदा हुआ है और जब سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ कहता है तो अल्लाह तआला उस के नामए आमाल में उस के जिस्म के बालों की तादद के बराबर एक माह की इबादत लिखने का हुक्म देता है। और उस की क़ब्र फ़राख़ (लम्बी, चौड़ी) हो जाती है फिर जब اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ता है तो उस के नामए आमाल में चार हज़ार नेकियाँ लिखी जाती हैं और चार हज़ार बुराइयाँ मिटा दी जाती हैं और चार हज़ार दरजे बलन्द हो जाते हैं। फिर जब सूरए फ़ातिहा पढ़ता है तो अल्लाह तआला उसे हज या उमरह का सवाब अता फ़रमाता है और जब سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ कहता है तो उहद पहाड़ के बराबर सोना ख़ैरात करने का सवाब पाता है। और तमाम आसमानी किताबों के पढ़ने के सवाब का हक़दार हो जाता है और जब सर उठा कर سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ कहता है तो अल्लाह तआला निगाहे रहमत से उस को देखता है और जब सज्दा करता है तो क़ुरआने मजीद की सूरतों और तमाम हुरूफ़ की तादाद के बराबर गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है और जब سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहता है तो अल्लाह तआला उस के नामए आमाल में जिन व शयातीन और इन्सान की तादाद के बराबर नेकियाँ दर्ज फ़रमाता है और जब अत्तिहिय्यात पढ़ने बैठता है तो अल्लाह तआला उस को ग़ाज़ी का सवाब देता है और जब सलाम फेरता है और नमाज़ से फ़रागत हासिल करता है तो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ के तमाम दरवाज़े बन्द कर देता है और जन्नत के आठों दरवाज़े उस के लिये खोल दिये जाते हैं जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए। (तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 10)

नमाज़ से दस बरकतें हासिल होती हैं : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : नमाज़ दीन का सुतून है उस के पढ़ने वाले को अल्लाह तआला दस बरकतें अता फ़रमाता है।

1) दुनिया और आख़िरत में चेहरा मुनव्वर रहता है।

2) क़ल्बी सुकून और रूहानी ख़ुशी हासिल होती है।
3) क़ब्र मुनव्वर हो जाती है।
4) मीज़ाने अमल में नेकियों का पलड़ा भारी होता है।
5) जिस्म तमाम बीमारियों से महफ़ूज़ रहता है।
6) दिल में सूज़ो गदाज़ पैदा होता है।
7) जन्नत में हूरो क़सूर मिलते हैं।
8) दोज़ख़ की आग और क़ियामत की गर्मी से नजात मिलती है।
9) अल्लाह तआला की ख़ुश्नोदी हासिल होती है।
10) जन्नत में अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा। (तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 11)

नमाज़ी की फ़रिश्ते हिफ़ाज़त करते हैं

हज़रत सय्यदना हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : नमाज़ पढ़ने वाले के लिये तीन सआदतें मख़सूस हैं। अव्वल यह कि उस के पांव के नाख़ुन से लेकर सर की मांग तक आसमान से रहमतों और बरकतों का नुज़ूल होता रहता है। दूसरे यह कि उस के क़दमों से लेकर फ़ज़ाए आसमानी तक फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं। तीसरे यह कि एक फ़रिश्ता आवाज़ देता है कि अगर उसे ख़ुदाए तआला के साथ अपना मुआमला मालूम हो तो यह नमाज़ में इस क़दर मुस्तग़रक़ हो जाए यानी डूब जाए कि फिर उसे छोड़ कर किसी और जानिब मुतवज्जह ही न हो। (अहयाउल उलूम)

रूहे नमाज़ ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ है : नमाज़ की अस्ल रूह, ख़शियत व तक़्वा है। इन्सान को किसी हाकिम या बादशाह के सामने जाना है तो इन्तिहाई मुअद्दब बन जाता है। ख़ौफ़ से लरज़ रहा होता है कि कहीं दरबार का कोई अदब व एहितराम न रह जाए और सज़ा का मुस्तहिक़ हो जाए और एक लम्हा के लिये भी उसे उस के सिवा कोई ख़याल नहीं आता कि वह हाकिम या बादशाह के सामने खड़ा है और उस से बात कर रहा है जब इन्सान बादशाहों के बादशाह, और हाकिमों के हाकिम, अहकमुल हाकिमीन के दरबार में हाज़िर हो यानी नमाज़ पढ़ रहा हो, तो उस के क़ल्ब की जो कैफ़ियत होनी चाहिये, क़लम व ज़बान में उस की ताबे बयान नहीं। इस एहसास के स ाथ जो नमाज़ पढ़ी जाए हक़ीक़ी नमाज़ वही है ऐसी नमाज़ से तक़दीर बदल सकती है घर से बाज़ार तक हत्ता कि पूरा मुआशरा बदला जा सकता है लेकिन वह नमाज़ें जो दिखावे के लिये पढ़ी जाती है ज़बान पर नमाज़ के कलेमात होते हैं मगर ज़हन व दिल कहीं और भटक रहे होते हैं तो ऐसी नामज़ बे असर होती है।

सच्ची नमाज़ : सही मअ़नों में नमाज़ तो वह है जिस से दिल में सूज़ो गदाज़ ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ होता है और नमाज़ी को मेअराजे महबूब का कैफ़ व सरूर हासिल होता है। ऐसी ही नमाज़ से मुतअल्लिक़ शबे असरा के दूल्हा महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद है : اَلصَّلٰوةُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِيْنَ
नमाज़ मोमिनों की मेअराज है।
अल्लाह तआला का फ़रमान : اَلَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ ۝
तर्जमा : जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं। (पारा 18, रुकू 1, तर्जमा कन्जुल ईमान)
क्योंकि नमाज़े ख़ालिक़ व मालिक के हुज़ूर में अपनी बे चार गी, आजिज़ी और बे बसी के इज़्हार का नाम है। अगर ख़ुशूअ न हो तो नमाज़ का मक़सदे असली हासिल नहीं होता। ख़ुशूअ के मअना हैं, बदन को झुकाना, आवाज़ पस्त करना, आँखें नीची रखना, यानी नमाज़ की हर अदा से आजिज़ी और मोहताजी का इज़्हार होना। (लिसानुल अरब)
अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً
तर्जमा : और अपने रब को अपने दिल में याद करो ज़ारी और डर से।
(पारा 9, रुकू 14, कन्ज़ुल ईमान)
ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला से डरो ! ख़ौफ़े ख़ुदा से कांपो, अल्लाह तआला जिस बन्दे को अपना महबूब बना लेता है वह बन्दा अपने रब तआला से हर वक़्त डरता है और रोता गिड़ गिड़ाता रहता है। अल्लाह तआला से डरना और उस की बारगाह में रोना, गिड़गिड़ाना यह सिफ़त, ख़ास अल्लाह वालों की है।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ सअदी शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बयान फ़रमाते हैं। निस्फ़ रात गुज़र चुकी थी एक शख़्स कअबतुल्लाह की दीवारों को कड़ कर ज़ारो क़तार रो रहा था और फ़रियाद कर रहा था। या अल्लाह तआला मेरे रहमान व रहीम, ख़ालिक़ व मालिक अगर मेरे आमाल तेरी बारगाह में क़ुबूलियत का दरजा हासिल न कर सके हों तो मुझे क़ियामत के दिन अन्धा कर के उठाना ताकि तेरे नेक बन्दों के सामने शर्मिन्दा न हो सकूँ।
हज़रत शैख़ सअदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं रोने वाले से पूछा गया कि आप कौन हैं, इतने दर्द के साथ क्यों रो रहे हैं ? और ऐसा क्यों कहते हैं कि मुझे अन्धा कर के उठना तो रोने वाले शख़्स ने कोई जवाब नहीं दिया फिर उस रोने वाले से पूछागया कि आप कौन हैं ? तो रोने वाले ने कहा اَنَا عَبْدُ الْقَادِرِ جِيْلَانِيْ मैं अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ियल्लाहु तआला) अन्हु हूँ।
हज़रात ! यह पीराने पीर हैं (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) : वलियों के सरदार हैं (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जिन का क़दमे मुबारक औलिया की गरदनों पर है यह है अल्लाह तआला का ख़ौफ़ कि रातें गुज़ारते हैं तो रोते और गिड़ गिड़ाते हुए।

मन्ज़िले इश्क़ में तस्लीमो रज़ा मुश्किल है
जिन के रुत्बे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! हम सिर्फ़ नाम के क़ादरी न बनें बल्कि सचे क़ादरी गुलाम बन जाएं। अल्लाह तआला हम सब को अपने ख़ौफ़ व डर से रोने और गिड़गिड़ाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

नमाज़ में सुकून व इत्मीनान : नमाज़ को पूरे सुकून व इत्मीनान से अदा करना चाहिये। नमाज़ के अरकान को जल्दी जल्दी पूरा करने वालो।

हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुर्ग़ की ठोंगें मारने से तश्बीह दी है। एक मरतबा मस्जिदे नबवी शरीफ़ में एक शख़्स ने जल्दी जल्दी नमाज़ अदा की। तो हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

ऐ शख़्स ? तेरी नमाज़ नहीं हुई। उसे दोबारह पढ़, उस शख़्स ने फिर इसी तरह नमाज़ पढ़ी तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तेरी नमाज़ नहीं हुई। फिर से नमाज़ पढ़। तीसरी मरतबा भी उस शख़्स ने इसी तरह जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ी हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ शख़्स तेरी नमाज़ नहीं हुई। तो उस शख़्स ने अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम में कैसे नमाज़ पढ़ूँगा जो अदा हो जाए। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया इस तरह खड़ा हो। इस तरह क़िरअत कर। इस तरह इत्मीनान व सुकून से रुकूअ व सुजूद कर।

(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, इब्ने माजह, स. 74)

नमाज़ की चोरी : एक मरतबा हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। सब से बड़ा चोर वह है जो नमाज़ में चोरी करता है सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया। नमाज़ की चोरी क्या है ? तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया रुकूअ व सुजूद अच्छी तरह न करना और ख़ुशूअ न होना। (मुस्नद अहमद बिन हम्बल, स. 310, दारमी, जि. 1, स. 247, तबरानी, अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

नमाज़ के लिये सुकून ज़रूरी है : अगर बे इत्मीनानी हो और बे सुकूनी के अस्बाब हों तो पहले उन्हें दूर किया जाए फिर नमाज़ पढ़ी जाए। मसलन अगर भूक से बे ताबी हो और नमाज़ खड़ी हो जाए तो पहले खाना खा लिया जाए। (बुख़ारी, जि. 1, स. 92, मुस्लिम, जि. 1, स. 208, अबू दाऊद तिर्मिज़ी, मुअत्ता इमाम मालिक, मुस्तदरक, हाकिम)

मुकम्मल तवज्जोह : नमाज़ की रूह मुकम्मल तवज्जोह और हुज़ूरे क़ल्ब (दिल का हाज़िर रहना) है। एक मरतबा हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अपने रब की इबादत उस एहसास से करो कि तुम अल्लाह तआला को देख रहे हो। अगर यह एहसास पैदा नहीं हो सकता तो उस एहसास के साथ इबादत करो कि अल्लाह तआला तुम को देख रहा है। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 12)

नमाज़ की हालत में इधर उधर देखना मना है

अल्लाह तआला के हबीब, हम बीमारों के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है।नमाज़ में इधर उधर न देखा करो, क्या तुम्हें यह ख़याल नहीं कि मुमकिन है तुम्हारी नज़र वापस न आ सके। और जब तक बन्दा नमाज़ में दूसरी तरफ़ तवज्जोह नहीं करता तो अल्लाह तआला उस की तरफ़ मुतवज्जह रहता है और जब बन्दा ख़ुदाए तआला की तरफ़ से मुंह फेर लेता है तो अल्लाह तआला भी उस से अपनी तवज्जोह हटा लेता है। (मुस्नद अहमद, बुख़ारी, जि. 1, स. 103)

नमाज़ में अल्लाह तआला से बात होती है : हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तुम जब नमाज़ पढ़ो तो पूरी तरह ख़ुदाए तआला की तरफ़ मुतवज्जह रहो, यहाँ तक कि नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ और नमाज़ में इधर उधर न देखो क्यों कि जब तक बन्दा नमाज़ में होता है तो अल्लाह तआला से बातें करता है। (तबरानी,कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, 204)

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद : एक मरतबा हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आख़री सफ़ के एक नमाज़ी को देखा और फ़रमाया। ऐ फ़ुलाँ ! तू ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं करता यह किस तरह नमाज़ पढ़ता है जब बन्दा नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो अपने रब तआला से महवे गुफ़्तुगू होता है तो सोचना चाहिये कि बन्दा अल्लाह तआला से किस तरह गुफ़्तुगू करे। (मुस्तदरिक, हाकिम, कन्ज़ुल उम्माल, स. 214)

इस ख़याल से नमाज़ पढ़ो कि यह ज़िन्दगी की आख़री नमाज़ हो सकती है

एक मरतबा एक सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नसीहत की दरख़्वास्त की तो हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो इस ख़याल के साथ नमाज़ पढ़ो कि मौत सामने है और दुनिया को छोड़ रहे हो गोया यह तुम्हारी ज़िन्दगी की आख़री नमाज़ है। (मुस्नद अहमद, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7)

ऐ ईमान वालो ! नमाज़ की हालत ऐसी हो कि अल्लाह तआला के ख़ौफ़ व ख़शियत में इस हद तक खो जाओ कि दुनिया की किसी चीज़ का मुतलक़ ख़याल न होने पाए, नमाज़ में इस दरजा मशग़ूल हो जाओ कि बड़ी से बड़ी मुसीबत व परेशानी भी आ जाए तो आप को ख़बर न हो

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नमाज़

एक मरतबा हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मुबारक पिन्डली में तीर या नेज़ा पेवस्त हो गया। उस तीर को निकालने की बहुत कोशिश की गई मगर उस के निकालने से जो दर्द होता था उस की वजह से सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने

कहा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ में मशगूल होने दो। उस वक़्त तीर निकाल ली जाएगी ऐसा ही हुआ जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़ में मशगूल हो गए तो लोगों ने आप की पिन्डली से तीर खींच लिया और आप नमाज़ पढ़ते रहे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो कपड़ों पर खून के धब्बे नज़र आए। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, यह खून कैसा है ? लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ अली ! रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप की पिन्डली में ज़ो तीर पेवस्त थी और उस को छूने से आप तड़प जाते थे जब आप नमाज़ की नियत बाँध कर खड़े हो गए तो हम लोगों ने उस तीर को आप की पिन्डली से निकाल लिया है। इसी ज़ख्म का यह खून है। सय्यिदुस्सादात सर चश्मए विलायत अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़मराते हैं खुदाए तआला की क़सम मैं नमाज़ में महव व मशगूल था मुझे कुछ खबर नहीं कि तुम लोगों ने यह तीर कब निकाल ली। (अनीसुल वाएज़ीन, स. 33)

एक अल्लाह वाले की नमाज़ : हज़रत इदरीस बिन उवैस बयान करते हैं कि मशहूर बुज़ुर्ग अल्लाह के वली हज़रत हातिम एक मरतबा इसाम बिन यूसुफ़ के पास तशरीफ़ लाए। इसाम ने उन से कहा। ऐ हातिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क्या तुम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ना जानते हो। उन्होंने कहा हाँ। पूछा किस तरह नमाज़ अदा करते हो ? हज़रत हातिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया। जब नमाज़ का वक़्त होता है तो सब से पहले कामिल तरीक़े से वुज़ू करता हूँ। फिर नमाज़ के लिये इत्मीनान से खड़ा होता हूँ। यहाँ तक कि मेरा हर उज़्व सुकून व क़रार की हालत में होता है और में कअ़बा शरीफ़ को अपने दोनों आँखों के दरमियान और मक़ामे इब्राहीम को अपने सीने में और अल्लाह तआला को अपने सर पर देखता हूँ। जो मेरा हाल जानता है और मेरे दोनों क़दम पुल सिरात पर होते हैं और जन्नत मेरे दाहिनी जानिब और दोज़ख मेरे बाएं जानिब और मलकुल मौत पीछे होते हैं। अख़ीर तक यही कैफ़ियत रहती है तकबीर कहते वक़्त अपना मुहासबा करता हूँ। कुरआन मजीद ग़ौर व फ़िक्र से पढ़ता हूँ, रुकूअ तवाज़ोअ़ से करता हूँ और इज्ज़ो नियाज़ का इज़हार करते हुए सज्दा करता हूँ फिर इत्मीनान से अत्तहिय्यात के लिये बैठता हूँ और तरीक़ा सुन्नत पर सलाम फैरता हूँ और फिर सब्र पर मुआहदा करता हूँ इस तरह से मैं पूरी नमाज़ अदा करता हूँ।

इसाम बिन यूसुफ़ ने आप से सवाल किया कि आप कब से इस तरह नमाज़ पढ़ रहे हैं तो हज़रत हातिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मुझे तीस साल हुए इस तरह माज़ अदा करते हुए। यह सुन कर असाम बिन यूसुफ़ पर गिरया व ज़ारी की कैफ़ियत तारी हो गई। इसाम बिन यूसुफ़ एक नेक ख़ू हाकिम और परहेज़ार बादशाह गुज़रे हैं उन्होंने कहा कि खुदा की क़सम ऐसी नमाज़ तो हम ने ज़िन्दगी में नहीं पढ़ी। इतना कहा और ग़श खा कर गिर पड़े और जिस्मे मुबारक से रूह परवाज़ कर गई। (तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 28)

ऐ ईमान वालो ! इस को कहते हैं ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ वाली नमाज़ और एक हमारी नमाज़ है जिस में ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ तो नज़र ही नहीं आता। जल्दी जल्दी रुकूअ व सुजूद करते हैं और

नमाज़ से छुटकारा हासिल करते हैं। अल्लाह तआला सच्ची नमाज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए आमीन। सुम्मा आमीन।

नमाज़ पढ़ते रहे और चोर चादर ले गया

हज़रत याक़ूब ओतारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अकाबिरे औलिया में आप का नाम है बहुत नेक और परहेज़गार थे नमाज़ में इस तरह महव और मशग़ूल हो जाते कि किसी चीज़ की ख़बर न रह जाती थी। एक मरतबा नमाज़ अदा कर रहे थे कि एक चोर ने आप के सर से चादर को उतार लिया और चादर ले कर जाने लगा तो लोगों ने चोर को पकड़ लिया और कहा यह चादर एक बुज़ुर्ग अल्लाह के वली की है इसी वक़्त वापस कर दो, एसा न हो कि वह तुमहारे लिये हलाकत व बरबादी की दुआ कर दें और तुम्हारे साथ हम लोगों पर भी अज़ाब नाज़िल हो। चोर डर गया और आप को चादर उढ़ा दी। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोगों ने इस वाक़िआ को बयान किया और चोर ने भी चोरी से तोबह कर ली। अल्लाह वाले ने फ़रमाया मुझे कुछ ख़बर नहीं कि चादर कब मेरे सर से उतारी गई और फिर कब सर पर डाल दी गई। मैं तो नमाज़ में अल्लाह तआला का दीदार कर रहा था। (तज़किरतुल वाएज़ीन, स. 27)

नमाज़ की बरकत से आग बुझ गई : हज़रत मुस्लिम बिन सय्यार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पाए के वली गुज़रे हैं एक मरतबा नमाज़ पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गई और आप इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते रहे। शोरो गुल मचा और लोगों ने आग बुझा दी। मगर आप को कुछ ख़बर नहीं कि क्या हुआ। (तजकिरतुल वाएजीन, स. 109)

नमाज़ को जल्दी जल्दी पढ़ना मुनाफ़िक़ की पहचान है

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं हमारे आक़ा, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ की नमाज़ है कि सूरज का इन्तिज़ार करता रहे जब कि वह ज़र्द हो जाए और शैतान के दोनों सींगों के बीच में हो जाए तो खड़ा हो रक चार चोंचें मारे और उस में थोड़ा सा अल्लाह तआला का ज़िक्र करे।

(मुस्लिम, मिश्कात, स. 60)

अललाह तआला का फ़रमान :

وَاِذَا قَامُوْا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى لا يُرَاؤُنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا 0

तर्जमा : और वही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगाऔर जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे ज़ी से, लोगों को दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा।

(पारा 5, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम की नमाज़

हज़रत सय्यदना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम जब नमाज़ पढ़ते तो उन के दिल की धड़कन की सदा जो ज़िक्रे ख़ुदा की वजह से ज़ाहिर होती वह सदा दो मील तक सुनाई देती थी और अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब

नमाज़ का इरादा फ़रमाते तो आप के जिस्मे मुबारक में लरज़ा की कैफ़ियत पैदा हो जाती और रूए मुबारक का रंग मुतग़य्यर हो जाता और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते कि अब उस अमानत के उठाने का वक़्त आ गया है। जिस को सातों ज़मीन और आसमान भी न उठा सके। (कीमियाए सआदत स. 103)

हज़रत तलहा की नमाज़ : एक मरतबा सहाबिये रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने बाग़ में नमाज़ अदा कर रहे थे कि अचानक आप की निगाह एक ख़ूबसूरत परिन्दे पर पड़ी कि वह घने दरख़्तों की शाख़ों में उलझा हुआ है और नजात का कोई रास्ता नहीं पाता। हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़याल इस ख़ूबसूरत परिन्दे की तरफ़ ऐसा लगा कि आप उस की तरफ़ खो गए और नमाज़ से ग़ाफ़िल हो गए जिस से आप को याद न रहा कि आप ने कितनी रकअत अदा की हैं। पस आप प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और वाक़िआ बयान किया। उस का आप को इतना अफ़सोस हुआ कि आप ने इस बाग़ को मदीना के ग़रीबों पर सदक़ा कर दिया। (कीमियाए सआदत ,स. 108)

नमाज़ में सूखी लकड़ी की तरह : हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो ऐसा लगता कि एक सूखी हुई लकड़ी खड़े है। यह कैफ़ियत थी आप की नमाज़ में। (ग़ुनयतुत तालिबीन, स. 108)

मेरे इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नमाज़

सिराजुल उम्मत हज़रत सय्यदना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल हो गया। आप का पड़ोसी एक यहूदी था। दूसरी रात यहूदी के लड़के ने अपने बाप से दरयाफ़्त किया। अब्बा जान! हमारे पड़ोस वाले मकानमेंरात को एक दरख़्त नज़र आया करता था जो आज नज़र नहीं आता। बाप ने कहा बेटा! वह दरख़्त नहीं था। मुसलमानों के इमाम अबू हनीफ़ा थे जो तमाम रात खड़े होकर नमाज़ पढ़ा करते थे आज उन का विसाल हो गया है।

ऐ ईमान वालो! देखा आप ने हमारे अस्लाफ़ बुज़ुर्गाने दीन कितने ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे देखने वाला यह समझता कि कोई सूखी हुई लकड़ी खड़ी है। न हिलना डूलना, न इधर उधर देखना, न कपड़ों को समेटन, आज हम नमाज़ पढ़ते हैं तो इधर उधर देख भी लेते हैं। हमारा जिस्म हरकत करता रहता है यही वजह है कि हमारी नमाज़ से कोई असर ज़ाहिर नहीं होता। अल्लाह तआला ख़ुज़ूअ और ख़ुशूअ के साथ नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत ख़लफ़ बिन अय्यूब की नमाज़

हज़रत ख़लफ़ बिन अय्यूब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बड़े मुत्तक़ी और परहेज़गार बुज़ुर्ग थे आप नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक भेड़ ने आप को काट लिया मगर आप को कुछ पता भी न चला। हज़रत ख़लफ़ बिन अय्यूब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा गया कि आप को नमाज़

की हालत में भेड़ काट रही थी और आप को कुछ एहसास भी न हुआ। तो आप ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआला क़हारो जब्बार के सामने खड़ा हो, वह भेड़ जैसी चीज़ के काटने की तरफ़ क्या तवज्ज़ोह कर सकता है। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

नमाज़ क़ज़ा करके पढ़ने वाले के लिये दर्दनाक अज़ाब है

नमाज़ न पढ़ना तो बहुत बड़ा अज़ाब है मगर वह लोग जो नमाज़ों को वक़्त गुज़ार कर यानी क़ज़ा करके पढ़ते हैं ऐसे लोगों के लिये वईद (सज़ा) है।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक : فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ٥

तर्जमा : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।

(पारा 30, रुकू 32, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

वैल का मअ़ना हैं, तबाही व बरबादी, वह लोग जो नमाज़ से ग़फ़लत बरतते हैं वक़्त गुज़ार कर यानी नमाज़ क़ज़ा करके पढ़ते हैं उन के लिये तबाही बरबादी है। वेल जहन्नम में एक वादी है जिस की गर्मी से ख़ुद जहन्नम पनाह मांगती है। इस वादी का नाम वैल है जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वालों के लिये वैल ही ठिकाना है।

नमाज़ में सुस्ती व काहिली करने वालों का अन्जाम

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا

तर्जमा : तो उन के बाद उन की जगह वह नाः ख़लफ़ आए जिन्होंने नमाज़ें गंवाईं और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए तो अनक़रीब वह दोज़ख़ में ग़ैय्यि का जंगल पाएंगे।

(पारा 16, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! इस आयते मुक़द्दसा में अल्लाह तआला ने उन लोगों की सज़ा का ज़िक्र फ़रमाया है जो अपनी नफ़्स के आराम की ख़ातिर वक़्त को गुज़ार कर नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ते हैं फ़ज्र कीनमाज़ सूरज निकलने के बाद पढ़ते हैं। ज़ोहर की नमाज़ अस्र में अस्र की नमाज़ दूसरे वक़्तों में अदा करते हैं ऐसे नमाज़ियों के लिये ही ग़ैय्यि वादी ठिकाना है जो जहन्नम में एक बदबू दार जगह है।

मुफ़स्सेरीने किराम फ़रमाते हैं नमाज़ ज़ाए करने का मतलब है। नमाज़ कोअपने वक़्त में न पढ़ना। साहिबे तफ़सीरे मज़हरी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल नक़्ल फ़रमाया। اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ का मतलब है कि नमाज़ को वक़्त गुज़ार कर पढ़ना यानी नमाज़ को अपने वक़्त पर अदा न करना। (मज़हरी)

ग़ैय्यि कौन सा मक़ाम है : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि ग़ैय्यि जहन्नम में एक ऐसी वादी है कि ख़ुद जहन्नम उस की गर्मी और बदबू से पनाह मांगती है।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ग़ैय्यि ज़हन्नम के अन्दर

एक बहुत बदबू दार गहरी वादी है। (बैहक़ी शरीफ़, मज़हरी)

ऐ ईमान वालो ! नमाज़ को वक़्त पर न पढ़ने वाला अल्लाह तआला के फ़रमान के मुताबिक़ जहन्नम की गहरी और बद बू दार वादी में डाला जाएगा। अल्लाह तआला हम सब को वक़्त में नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मुसलमानों की हालते ज़ार : अल्लाह तआला के इरशादे पाक और नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान से यह हक़ीक़त वाज़ेह हो गई कि नमाज़ को तर्क करने वाला और नमाज़ में सुस्ती व काहिली करने वाला सख़्त अज़ाब का मुस्तहिक़ होगा। मगर आज मुसलमानों क़ी हालत इस क़दर ख़राब हो चुकी है कि मज़हब से बेगानगीऔर दीन से ला परवाही अपने उरूज पर पहुँच चुकी है। ऐश व आराम, नफ़्स परस्ती और दुनिया तलबी ही को मुसलमानों ने ज़िन्दगी का मक़सदे अस्ली समझ लिया है।

अफ़सोस सद अफ़सोस ! हज़रात ! चार दिन की ज़िन्दगी को ग़नीमत जानो यह दुनिया फ़ानी है। क़ारून, शद्दाद, फ़िरऔन, नमरूद और यज़ीद जैसे दुश्मनाने ख़ुदा बादशाह थे हुकूमत करते थे। ख़ूब ऐश व इशरत से ज़िन्दगी गुज़ारते रहे, ख़ुदाए तआला को भूल कर, इबादत व बन्दगी से मुंह मोड़ कर, दौलत व हुकूमत के नशे में मुब्तला रहे और एक दिन ऐसा आया कि उन की बादशाहत व हुकूमत उन को मौत से न बचा सकी और बड़े ज़लील व ख़्वार होकर सख़्त अज़ाब में गिरफ़्तार हुए और इस फ़ानी दुनिया से चले गए और मुसलमान दुनिया में ऐशो इशरत के लिये नहीं बल्कि अल्लाह तआला की इबादत और प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत के लिये भेजा गया है। तुम अपनी हक़ीक़त को समझो और जानो ! चार दिन की ऐशो इशरत को छोड़ दो, दुनिया में आने का मक़सद पहचानो। अपने प्यारे रब तआला की इबादत से दिल लगाओ। नमाज़ को वक़्त पर अदा करो। और अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सच्ची महब्बत दिल में बिठा लो हर नमाज़ के बाद मदीना शरीफ़ कीजानिब चेहरा कर के झूम झूम कर दुरूदो सलाम पढ़ो। मौत आनी है और आकर रहेगी।

अल्लाह तआला मोमिन को हमेशगी का आराम अता फ़रमाता है जो कभी ख़त्म नहीं होता है। मोमिन के लिये जन्नत में महल है जिस में हूरें गुलामाने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत गुज़ार होंगी।

नमाज़ छोड़ना ज़िना व क़त्ल से बुरा है

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना था एक औरत से ज़िना का क़बीह फ़ेअल सरज़द हो गया। ज़िना से हमल ठहर गया उस औरत से बच्चा पैदा हुआ, उस औरत ने इस बच्चे को क़त्ल कर दिया। बाद में एहसासे गुनाह हुआ। वह औरत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और सारा वाक़िआ बयान किया और अर्ज़ करने लगी या नबियल्लाह ! अलैकस्सलाम मुझ से तो गुनाह हो गया है और मैं उस गुनाह से तौबह करती हूँ। आप

सिफ़ारिश फ़रमा दें कि अल्लाह तआला मेरे गुनाह को मुआफ़ फ़रमा दे और तौबह क़ुबूल फ़रमा ले। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस के गुनाह को सुन कर बहुत नाराज़ हुए और फ़रमाया ऐ बदकार! यहाँ से चली जा कहीं तेरे गुनाह की वजह से आसमान से आग न बरसने लगे। वह औरत बहुत शर्मिन्दा हुई और वापस चली गई उसी वक़्त हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया ऐ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला फ़रमाता है। मेरी एक गुनाह गार बन्दी जो तौबह के लिये आई थी उस को आप ने क्यों भगा दिया और निकाल दिया। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या आप ने उस औरत से ज़्यादा गुनाहगार शख़्स को देखा है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। क्या आप ने उस औरत से ज़्यादा गुनाहगार शख़्स को देखा है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उस से बड़ा गुनाहगार कौन है ? हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया। उस से बड़ा गुनाहगार वह शख़्स है जो क़सदन नमाज़ नहीं पढ़ता। (ज़वाजिर, जि. 1, स. 112)

ऐ ईमान वालो ! गोया नमाज़ न पढ़ना ज़िना और क़त्ल से बुरा गुनाह है। अब जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते वह कितने बड़े गुनाहगार हैं। अल्लाह तआला तौबह की तौफ़ीक़ दे और नमाज़ पढ़ने की आदत अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

नमाज़ पढ़ने वाले से अल्लाह तआला बरी हो जाता है

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हुक्म दिया कि अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठेहराना, मां, बाप के हुक्म की ना फ़रमानी मत करना, चाहे मां बाप तुम को घर से निकाल दें, नमाज़े फ़र्ज को क़सदन न तर्क करना क्यों कि जो फ़र्ज़ नमाज़ को जान बूझ कर तर्क करता है बे शक अल्लाह तआला का ज़िम्मा उस से बरी हो जाता है। (अहमद, मिश्कात, स. 18)

नमाज़े बा जमाअत की फ़ज़ीलत

وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ O

तर्जमा : और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो। (पारा 1, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा नमाज़ पढ़ने से। सत्ताईस दर्जा सवाब ज़्यादा है। (बुख़ारी, जि. 1, स. 89 मुस्लिम, जि. 1, स. 231)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआला के लिये चालीस दिन तकबीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़ पढ़े तो अल्लाह तआला उस शख़्स को दो चीज़ों से आज़ाद फ़रमा देता है। एक दोज़ख़ से दूसरे निफ़ाक़ से। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 1, स. 56)

जमाअत से नमाज़ रात, भर की इबादत से बेहतर है

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े फ़ज्र के बाद लोगों पर निगाह डाली तो अपने साथियों में से एक शख़्स को न पाया। तो फ़रमाया फ़लां शख़्स जमाअत में क्यों हाज़िर नहीं हुआ तो लोगों ने अर्ज़ किया कि रात भर इबादत में जागते रहे। शायद ! इस लिये जमाअत में हाज़िर न हो सके। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया अगर वह शख़्स तमाम रात सोया रहता और फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ता तो रात भर की इबादत से बेहतर था।

(इब्ने माजह, स. 33, मकतूबात इमाम रब्बानी, जि. 1)

भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना इस्लाम का अज़ीम क़ानून है

हज़ारत ! हमारे अस्लाफ़ बुज़ुरगाने दीन अगर किसी शख़्स को जमाअत की नमाज़ में नहीं पाते तो मालूम करते कि फ़लां शख़्स जमाअत में क्यों नहीं आया और उस शख़्स से मुवाख़ज़ा फ़रमाते कि तुम ने जमाअत की नमाज़ क्यों छोड़ी और आज मुसलमानों का हाल यह है कि नमाज़ न पढ़ने पर भी कोई पूछने वाला भी नहीं। बाप, बेटे से मुवाख़ज़ नहीं करता। शोहर बीवी से मुवाख़ज़ा नहीं क़रता। दोस्त, दोस्त से मुवाख़ज़ा नहीं क़रता। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को रोकने और टोकने के लिये तय्यार नहीं है। जब कि इस्लाम का हुक्म है।

हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक

हदीस शरीफ़ : तुम में से जो शख़्स बुराई देखे तो उसे अपने हाथ से रोक दे। और अगर उस की भी ताक़त न हो तो ज़बान से रोके और अगर उस की भी ताक़त नहीं तो दिल में उसे बुरा समझे और यह ज़ईफ़ तरीन ईमान है। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 51)

अल्लाह तआला का इरशाद :

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ط وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ 0

तर्जमा : और तुम में एक गिरोह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुराई से मना करें और यही लोग मुराद को पहुँचे।

(पारा 4, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

नाबीना पर भी जमाअत मुआफ़ नहीं

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मकतूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मदीना में ज़हरीले जानवर और दरिन्दे बहुत ज़्यादा हैं और मैं नाबीना हूँ तो क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही

वसल्लम (नमाज़े बा जमाअत) से रुख़सत देते हैं (कि मैं घर पर ही नमाज़ पढ़ लिया करो) सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। हय्या अलस्सलाह। हय्या अलल फ़लाह (अज़ान की आवाज़) सुनते हो ? अर्ज़ किया हाँ। फ़रमाया (बा जमाअत नमाज़ पढ़ने के लिये) हाज़िर हुआ करो। (अबू दाऊद, नसाई, जि. 1, स. 98, मिश्कात, स. 97)

तारिके जमाअत पर नाराज़गी

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है मैं चाहता हूँ (यानी ऐसा करूँ) कि लकड़ियाँ जमा करने का हुक्म दूँ और जब लकड़ियाँ जमा हो जाएं तो नमाज़ का हुक्म दूँ फिर अज़ान दी जाए और एक शख़्स को हुक्म दूँ जो नमाज़ पढ़ाए फिर ऐसे लोगों के घर जाऊँ जो नमाज़ में हाज़िर नहीं होते और उन के घरों को जला दूँ। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात, स. 65, नसाई, जि. 1, स. 97)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते ह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर घरों में औरतें और बच्चे न होते तो मैं घरों को जलाने का हुक्म देता। (अहमद, मिश्कात, स. 97)

ऐ ईमान वालो ! सोचो और ग़ौर करो कि हमारे आक़ा, नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत, सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी उम्मत के हक़ में कितने रहीम व करीम और महरबान हैं कि उम्मती की थोड़ी सी तकलीफ़ भी बरदाश्त नहीं क़रते, मगर जमाअत की नमाज़ छोड़ने वालों पर किस क़दर नाराज़ हैं। अल्लाह तआला अपने अमान में रखे और महबूबे आज़म मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की नाराज़गी से बचाए और नमाज़े बा जमाअत पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

नमाज़ पैग़ामे मसावात है : नमाज़े बा जमाअत इन्सान को मसावात यानी बराबरी का दर्स देती है।

ख़ुतबा हुज्जतुल वदाअ

لَا فَضْلَ لِعَرَبِيٍّ عَلٰى عَجَمِيٍّ وَلَا لِعَجَمِيٍّ عَلٰى عَرَبِيٍّ وَلَا لِاَحْمَرَ عَلٰى اَسْوَدَ وَلَا لِاَسْوَدَ عَلٰى اَحْمَرَ اِلَّا بِالتَّقْوٰى

तर्जमा : किसी अरबी को अजमी पर , किसी अजमी को अरबी पर, किसी गोरे को काले पर , और किसी काले को किसी गोरे पर, कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं मगर सिर्फ़ तक़वा और परहेज़गारी की बिना पर। (मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 5, हदीस 411)

ऐ ईमान वालो ! यह इस हक़ीक़त का एलान था कि इन्सानी फ़ज़ीलत न ख़ानदान पर मौक़ूफ़ है और न नस्ल व रंग पर न किसी ख़ास मुल्क या क़ौम का बाशिन्दा होना। न अच्छा लिबास, आलीशान मकान या दौलत व सरवत के अंबार किसी को बड़ा बना सकते हैं। महज़ इल्म या ओहदे भी बड़ाई का ज़रीए नहीं बन सकते हैं। बड़ाई और फ़ज़ीलत सिर्फ़ तक़वा, व

परहेज़गारी पर मुनहसिर है। नमाज़ का निज़ाम उस अक़ीदे का अमली सुबूत है उस में क़ाले, गोरे, अमीर व ग़रीब, अरबी व अजमी का कोई फ़र्क़ नहीं। सब अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुँच कर बराबर हो जाते हैं। सब एक ही सफ़ में खड़े होकर पूरी जहाने इन्सानियत को मसावात यानी बराबरी का सबक़ देते हैं।

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्ते नमाज़
क़िब्ला रू होके ज़मीन बोस हुई क़ौमे हिजाज़
एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूदो अयाज़
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़
बन्दा व साहिबो मोहताज व ग़नी एक हुए
तेरी सरकार में पहुँचे तो सभी एक हुए

दुरूद शरीफ़ :

नेअ़मत के मिलने पर सज्दए शुक्र करना मुस्तहब है

सज्दए शुक्र मसलन औलाद पैदा हुई या माल हासिल हुआ या गुमी हुई चीज़ मिल गई। या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया। ग़रज़ किसी नेअ़मत के मिलने पर सज्दए शुक्र करना मुस्तहब है।

सज्दए शुक्र का तरीक़ा : बा वुज़ू खड़े होकर अल्लाहु अकबर कहते हुए सज्दा में जाएं तीन बार सुब्हाना रब्बियल अअ़ला पढ़ कर अल्लाहु अकबर कहते हुए खड़े हो जाएं न उस में हाथ कानों तक उठाना है न बाँधना है न ही सलाम फेरना है। सज्दए तिलावत का भी यही तरीक़ा है खड़े खड़े सज्दे में जाने के लिये बजाए बैठे बैठे जाएं तो भी जाइज़ है मगर अफ़ज़ल खड़े होकर है। (बहारे शरीअत, हिस्सा 3)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(४)

शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म

तीसरा जुमा .... पहला बयान

शबे बराअत फ़ज़ाइलो बरकात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

حٰمٓ ٥ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ٥ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ

तर्जमा : क़सम उस रौशन किताब की बे शक हम ने उसे बरकत वाली रात में उतारा।
(पारा 25, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आज की रात न ख़्वाबों में गुज़रने पाए
आज की रात है रो रो के दुआ करने की

ऐ ईमान वालो ! शबे बराअत ऐसी मुबारक और रहमत वाली रात है कि अल्लाह तआला उस रहमत व बरकत वाली रात में बन्दों की दुआ को क़ुबूल फ़रमाता है। तलब से सिवा अता फ़रमाता है। बे शुमार रहमत व बरकत का नुज़ूल फ़रमाता है। इसी मुबारक रात में उम्र में बरकत, रोज़ी में कुशादगी लिखी जाती है और बराअत का मअना बरी होना, रिहा होना और नजात पाना है। इस रात में रहमान व रहीम अल्लाह तआला बन्दों के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा कर जहन्नम से आज़ादी का परवाना अता फ़रमा देता है। इस लिये इस रात को शबे बराअत कहा जाता है।

शबे बराअत में पाँच बरकतें ख़ास हैं

(1) तक़सीमे उमूर (कामों की क़सीम) (2) नुज़ूले रहमत (3) फ़ैज़ाने बख़्शिश (4) क़ुबूले शफ़ाअत (5) फ़ज़ीलते इबादत। (फ़ुतूहाते इलाहिया, जि. 4, स. 100)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने तक़सीम उमूर यानी काम बांटने का मतलब यह बयान फ़रमाया कि साल भर में जो कुछ होगा वह सब लौहे महफ़ूज़ में लिख दिया जाता है। रिज़्क़, मौत, हयात, बारिश यहाँ तक कि यह भी लिख दिया जाता है। फ़लां, फ़लां हज करेगा। (अद्दुर्रुल मन्सूर, जि. 6, स. 25)

अल्लाह तआला का एलान शबे बराअत में

हदीस शरीफ़ : अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं। हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जब शअ़बान की पन्द्रहवीं रात आ जाए तो तुम लोग रात में इबादत करो और दिन में रोज़ा रखो बे शक अल्लाह तआला उस रात में दिन डूबने के वक़्त से आसमान दुनिया पर तजल्लिये रहमत का नुज़लू फ़रमा कर ऐलान फ़रमाता है कि क्या कोई बख़्शिश मांगने वाला है कि मैं उसे बख़्श दूँ, क्या कोई रिज़्क़ का तलबगार है कि मैं उसे रिज़्क़ अताक़रूँ। क्या कोई मुसीबत ज़दा है कि मैं उसे आफ़ियत अता करूँ। क्या कोई ऐसा और ऐसा यानी फ़लां फ़लां हाजत वाला है कि मैं उस की हाजत पूरी करूँ (यह ऐलान रात भर होता है.) यहाँ तक कि फ़ज्र नमूदार हो जाती है यानी सुबह हो जाती है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 119, इब्ने माजह, स. 99)

शबे बराअत में रोज़ी लिख दी जाती है

हदीस शरीफ़ : मुसलमानों की मां हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है :

हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ आएशा ! क्या तुम जानती हो कि शअ़बान की पन्द्रहवीं शब में क या होता है ? उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इरशाद फ़रमाइये क्या होता है तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। उस रात में इन्सान का बच्चा जो उस साल पैदा होगा लिखदिया जाता है और जितने लोग मरेंगे उन्हें भी लिखा जाता है और लोगों के सारे आमाल पेश किये जाते हैं और उन की रोज़ियाँ भी उतार दी जाती हैं य़ानी लिख दी जाती हैं। (मिश्कात, बैहक़ी)

ऐ ईमान वालो ! शबे बराअत ऐसी मुबारक रात है कि हमारा प्यारा रब तआला दिन डूबने के बाद से ही बे शुमार रहमतें दुनिया वालों पर नाज़िल फ़रमाता है और बे हिसाब रोज़ी उन के लिये लिख देता है और बे शुमार लोगों को बख़्श देता है और अन गिनत लोगों क़ो बला व मुसीबत और बीमारी से रिहा फ़रमा देता है तो हमें चाहिये कि रहमत व बरकत में डूबी हुई शबे बराअत की क़द्र करें और उस रात में जाग कर इबादत करें। दुआ मांगें। ज़िक्र व नअत की महफ़िलों को सजाएं कलमा व दुरूदो सलाम की कसरत करें ताकि अल्लाह तआला ख़ुश हो जाए और ढेरों रहमतें व बरकतें हमें नसीब फ़रमा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

शबे बराअत में हज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं

हदीस शरीफ़ : ईमान वालों की मां हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं हम ने अपने महबूब अल्लाह तआला के प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है चार रातों में अल्लाह तआला ख़ैरो बरकत के

दरवाज़े खोल देता है एक रात शअ़बान की पन्द्रहवीं शब है उस रात में मौत का वक़्त, रोज़ी और हज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं। (ख़तीब)

शबे बराअत में मरने वालों के नाम लिखे जाते हैं

हदीस शरीफ़ : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं। हमारे प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शअ़बान के पूरे महीने रोज़ा रखते यहाँ तक कि उसे रमज़ान शरीफ़ से मिला देते मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप को शअ़बान के रोज़े बहुत पसन्द हैं तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हाँ ऐ आएशा ! जो शख़्स भी साल भर में मरता है उस का वक़्ते मौत शअ़बान ही में लिखा जाता है तो मुझे पसन्द है कि मेरा वक़्ते विसाल इस हाल में लिखा जाए कि मैं अपने रब तआला की इबादत और नेक काम में मशग़ूल रहूँ।

ऐ आएशा ! इसी माह में मलकुल मौत मरने वालों का नाम लिखते हैं तो मुझे पसन्द है कि मेरा नाम रोज़ा की हालत में लिखा जाएगा। (ख़तीब)

शबे बराअत में हर सवाल पूरा होता है

हदीस शरीफ़ : فَلَا يَسْأَلُ اَحَدٌ اِلَّا اُعْطِيَ اِلَّا زَانِيَةٌ بِفَرْجِهَا اَوْمُشْرِكٌ

(शबे बराअत में) जो शख़्स भी मांगे उसे दिया जाता है अलावा ज़ानिया औरत और मुशरिक के। (बैहक़ी)

शबे बराअत में क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत है

हदीस शरीफ़ : मोमिनों की मां हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मेरी बारी के दिन एक रात मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न पाया फिर मैं ने देखा (मदीना शरीफ़ के क़ब्रिस्तान) जन्नतुल बक़ीअ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मौजूद हैं। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ आएशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) क्या तुम यह ख़याल करती हो कि अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तुम्हारे साथ अद्ल न करेंगे ? मैं (यानी हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम यह बात नहीं है, मुझे गुमान हुआ कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दूसरी अज़वाज (बीवियों) में से किसी के पास तशरीफ़ ले गए हैं तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَنْزِلُ لَيْلَةَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ اِلَى سَمَاءِ الدُّنْيَا فَيَغْفِرُ لِاَ كْثَرَ مِنْ عَدَدِ شَعْرِ غَنَمِ كَلْبٍ

बेशक अल्लाह तआला शअ़बान की पन्द्रहवी रात में आसमाने दुनिया की तरफ़

तजल्लियें रहमत का नुज़ूल फ़रमाता है तो बनी कल्ब की बकरियों के बाल की तदादा से ज़्यादा लोगों को बख़्श देता है। (इब्ने माजह, स. 99, तिर्मिज़ी)

ऐ ईमान वालो! आप हज़रात ने सुन लिया कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शबे बराअत में क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले जाते थे। इस से साबित हुआ कि क़ब्रों पर जाना हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत है। एक रिवायत के मुताबिक़ हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शोहदाए उहद रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले गए। (अद्दुर्रुल मन्सूर, जि. 4, स. 641)

और क़ब्रों के पास खड़े हो कर दुआ फ़रमाई। क़ब्र वालों के लिये और क़ब्र वालों के वसीला से उम्मत की बख़्शिश की दुआ की। हमारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शोहदाए किराम की क़ब्रों पर क्यों तशरीफ़ ले गए तो अल्लाह तआला की अता से हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जानते थे कि क़ुर्बे क़ियामत कुछ लोग नमाज़ पढ़ेंगे दाढ़ियाँ रखेंगे, दीन की बात ख़ूब करेंगे। बज़ाहिर मुसलमान कहलाएंगे मगर हक़ीक़त में वह लोग मुसलमान न होंगे। ऐसे लोग ही नेकों की क़ब्रों पर जाना बिदअत व शिर्क कहेंगे इस लिये सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शहीदों, नेकों की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले गए ताकि मेरा ग़ुलाम, सुन्नी मुसलमान उस वक़्त परेशान न हो और उन मुनाफ़िक़ों को जवाब दे सके कि नेकियों की क़ब्रों पर जाना बिदअत व शिर्क नहीं बल्कि बाइसे बरकत और सुन्नत है और क़ब्र वालों के लिये दुआ करना और उन के वसीले से दुआ मांगना भी सुन्नत है।

दुरूद शरीफ़ :

शबे बराअत में भी मां बाप के ना फ़रमान महरूम रहते हैं

हदीस शरीफ़ : ईमान वालों की मां हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा जन्नतुल बक़ीअ में जाने और वहाँ से आने और फिर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से जो गुफ़्तुगू हुई उस को बयान फ़रमाती हैं। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आप से फ़रमाया : मेरे पास हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया यह शअ़बान की पन्द्रहवीं रात है अल्लाह तआला इस रात में बनी कलब की बकरियों के बाल की तादाद के बराबर गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमाता है लेकिन मुशरिक, कीना वाला, बिदअती जो अहले सुन्नत से न हो, रिश्ता काटने वाला, कपड़ा घसीट कर चलने वाला : मां बाप का ना फ़रमान और शराब का आदी इस रात में भी निगाहे करम से महरूम रहता है। (अद्दुर्रुल मन्सूर, जि. 6, स. 27)

शबे बराअत में आम बख़्शिश का ऐलान

हदीस शरीफ़ : हज़रत नोफ़िल बकाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं हज़रत

अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शअ़बान की पन्द्रहवीं रात में अकसर बाहर तशरीफ़ लाते, एक मरतबा शबे बराअत में बाहर तशरीफ़ लाए औरआसमान की तरफ़ निगाह उठा कर देखा और फ़रमाया एक मरतबा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने शबे बरात में आसमान की तरफ़ नज़र फ़रमा कर फ़रमाया कि यह वह रात है कि उस में अ़ल्लाह तआला से जिस ने जो दुआ मांगी तो कुबूल हुई और जिस ने बख़्शिश मांगी वह बख़्श दिया गया। लेकिन नाजाइज़ माल हासिल करने वाला, जादूगर, काहिन, नुजूमी, जल्लाद, फ़ाल निकालने वाला गवय्या और बाजा बजाने वाला न हो। इस के बाद अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह दुआ की, ऐ अल्लाह तआल, दाऊद के रब इस रात जो शख़्स दुआ मांगने या बख़्शिश चाहे उस को बख़्शि दे यानी उस की दुआ कुबूल फ़रमा ले इस लिये कि इस रात में तेरे ख़ास फ़ज़्ल व करम का चर्चा हर शख़्स की ज़बान पर आम है अगरचेह हर रात तेरा करम होता है। (मा सबत बिस्सुन्नह, स. 194)

शबे बराअत में तारों के बराबर बन्दों की बख़्शिश होती है

हदीस शरीफ़ : हज़रत कअब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि शअ़बान की पन्दहवीं रात में अल्लाह तआला जिब्रईल अलैहिस्सलाम को जन्नत में भेजता है ताकि जन्नत सजाई जाए इस लिये कि आज की रात आसमानों के तारों, दुनिया के रात व दिन, दरख़्तों के पत्तों, पहाड़ों के वज़न और रेत के ज़र्रों की तादाद के बराबर बन्दों की बख़्शिश करूँगा। (जामेअ कबीर)

शबे बराअत में दो रकअत नमाज़ चार सौ साल की इबादत से अफ़ज़ल है

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का गुज़र एक पहाड़ पर हुआ आप ने उस पहाड़ पर एक ख़ूबसूरत पत्थर देखा जो अन्डे की तरह है और दूध की तरह सफ़ेद है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को तअज्जुब हुआ कि कितना ख़ूबसूरत पत्थर है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मेरे नबी ईसा! अलैहिस्सलाम उस से भी ज़्यादा तअज्जुब की चीज़ उस ख़ूबसूरत पत्थर में मैंने रखी है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़्वाहिश ज़ाहिर की। या अल्लाह तआला अन्दर की चीज़ को दिखा दे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मअ़रूज़ा कुबूल हुआ और पत्थर फट गया आप ने देखा उस पत्थर में एक शख़्स इबादत में मशग़ूल है उस के दाहिने जानिब एक अंगूर का दरख़्त है जो फल से दला हुआ है और बाईं जानिब पानी की नहर जारी है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उस आबिद शख़्स से दरयाफ़्त किया कि तुम कौन हो और कितने अर्से से उस पत्थर में इबादत कर रहे हो। इस शख़्स ने जवाब दिया मैं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का उम्मती हूँ और चार सो साल से इस पत्थर में इबादत कर रहा हूँ। भूक लगती है तो अंगूर खा लेता हूँ और प्यास के वक़्त नहर का पानी पी कर प्यास बुझा लेता हूँ।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का तअज्जुब और बढ़ गया और अर्ज़ करने लगे ऐ अल्लाह तआला अब इतना नेक बन्दा कोई और शख़्स नहीं हो सकता इस लिये कि जिस जगह यह शख़्स इबादत में है वहाँ न रिया हो सकती और न दिखावा। सिर्फ़ तेरी इबादत ही इबादत है। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मेरे नबी ईसा अलैहिस्सलाम सुनो ! तुम्हारे बाद आख़री नबी मेरे महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाएंगे तो महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत को शअ़बान की पन्द्रहवीं शब यानी शबे बराअत अता फ़रमाउँगा उस शबे बराअत में मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत, गुलाम सिर्फ़ दो रकअत नमाज़ पढ़ेगा उस को मूसा अलैहिस्सलाम के इस उम्मती से ज़्यादा सवाब दूँगा यानी मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के उम्मती की दो रकअत नमाज़ इस के चार सो साल की इबादत से अफ़ज़ल होगी। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 224)

ऐ ईमान वालो ! हम सुन्नी मुसलमानों की दो रकअत या चार रकअत नमाज़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की चार सो साल से ज़्यादा अफ़ज़ल होना किसी और वजह से नहीं है सिर्फ़ और सिर्फ़ महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी की वजह से है और आप के उम्मती होने की निस्बत से अल्लाह तआला ने इस उम्मत को शरफ़ो फ़ज़ीलत अता की है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जाएं न जब तक गुलाम ख़ुल्द है सब पर हराम
मिल्क तो है आप का तुम पे करोरों दुरूद

रहमते ख़ुदा ला महदूद है : प्यारे आक़ा महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आशिक़ों से गुज़ारिश है कि मज़कूरा वाक़िआ से शक व शुबा में न पड़ें बल्कि आप की निगाह अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम पर होना चाहिये उस का करम व इनायत हद व हिसाब से पाक है वह क़ादिर व क़य्यूम रब तआला नवाज़ने पर आए तो ज़र्रा को आफ़ताब, क़तरह को दरया, फ़क़ीर को अमीर गदा को बादशाह बना दे और वह क़ादिरे मुतलक़ क़ुबूल फ़रमा ले तो एक मरतबा या अल्लाह कहने पर बन्दे को चार सो साल किया चीज़ है हज़ारों साल की इबादत के बराबर सवाब अता फ़रमा दे और महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत यानी आप का उम्मत होना तो बड़ी फ़ज़ीलत और अहमियत का दरजा रखती है अगर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दो रकअत नमाज़ का सवाब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के उम्मती के चार सो साल की इबादत से ज़्यादा हो जाए तो कोई तअज्जुब की बात नहीं। बस ज़रूरत है अल्लाह तआला के लुत्फ़े अमीम व फ़ज़्ले अज़ीम और निस्बते हबीबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अज़मत और शबे बराअत

की फ़ज़ीलत पर नज़र रखने और समझने की।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

बद सही चोर सही मुजरिम व नाकारा सही
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा
दिल अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका सही भारी है भरोसा तेरा
एक मैं क्या मेरे इसयां की हक़ीक़त कितनी
मुझ से सो लाख को काफ़ी है इशारा तेरा

दुरूद शरीफ़ :

शबे बराअत में हुज़ूर की शफ़ाअत तमाम मोमिनों के लिये कुबूल हो चुकी है

हदीस शरीफ़ : हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने शअ़बान की तेरहवीं रात को अल्लाह तआला की बारगाह में उम्मत के लिये शफ़ाअत की दुआ की तो एक तिहाई उम्मत की शफ़ाअत कुबूल हुई फिर चौदहवीं रात को दुआ की तो दो तिहाई उम्मत की शफ़ाअत अता की गई फिर पन्द्रहवीं रात शबे बराअत में दुआ की तो सारी उम्मत के हक़ में शफ़ाअत कुबूल हो गई। अलावा उन ना फ़रमान बन्दों के जो अल्लाह तआला की इताअत से ऊंट की तरह बिदक कर भागते हैं।

(मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 250)

सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत क़ियामत के दिन

हदीस शरीफ़ : हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआलाअन्हुमा रिवायत करते हैं। हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : وَاُعْطِيْتُ مَالَمْ يُعْطَهُنَّ اَحَدٌ قَبْلِىْ اِلٰى قَوْلِهٖ وَاُعْطِيْتُ الشَّفَاعَةَ.

और मुझे अता किया गया वह सब कुछ जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं दिया गया और मुझे शफ़ाअत अता की गई। (बुख़ारी, जि. 1, स. 48 मुस्लिम, जि. 1, स. 199, नसाई)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला का बारगाहे ख़ास से तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को एक दुआ ख़ास अता की जाती है कि जो चाहो मांग लो बेशक दिया जाएगा। तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम अपनी वह दुआए ख़ास दुनिया में क़र चुके हैं और मैं ने वह ख़ास दुआ क़ियामत के दिन के

लिये छोड़ रखी है और वह दुआ खास क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के लिये मेरी शफ़ाअत है मैं ने उस दुआए खास को सारी उम्मत के लिये बचा रखा है जो ईमान के साथ दुनिया से जाए।
(बुखारी, जि. 2, स. 932, मुस्लिम, जि. 1, स. 113, अहमद)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर व हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन से रिवायत है कि शफ़ाअत वाले रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। अल्लाह तआला ने मुझे इख्तियार दिया कि या शफ़ाअत लो, या आधी उम्मत आप की जन्नत में जाए तो मैं ने शफ़ाअत को पसन्द किया। इस लिये कि शफ़ाअत ज़्यादा आम और ज़्यादा काम आने वाली है। क्या तुम जानते हो कि मेरी शफ़ाअत सिर्फ़ नेक मुसलमानों के लिये है ? नहीं बल्कि मेरी शफ़ाअत उन तमाम गुनाहगारों के लिये है जो गुनाहों में आलूदा और ख़ता कार हैं। (अहमद, इब्ने माजह, स. 319)

ऐ ईमान वालो ! कुरबान हो जाओ अपने आक़ा करीम, नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर और टूट कर, दिल व जान से उन से महब्बत करो, क़ियामत के दिन हम गुनाहगारों का अगर कोई सहारा और आसरा है तो वह अल्लाह तआला की अता से हमारे प्यारे मुस्तफ़ा करीम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत व बख़्शिश है। इसी को आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

क्या ही ज़ौक़ अफ़ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह
क़र्ज़ लेती है गुनाह परहेज़गारी वाह वाह
सदक़ा उस इनआम के कुरबान उस इकराम के
हो रही है दोनों आलम में तुम्हारी वाह वाह

ऐ ईमान वालो ! शबे बराअत की फ़ज़ीलत व बरकत के बारे में बहुत सी अहादीसे मुबारका आप हज़रात ने सुन ली। शबे बराअत का एक एक लम्हा बरकत व रहमत में डूबा हुआ है। इस मुबारक रात की क़द्र व मंज़िलत को पहचानो। दिल को हसद व कीना, तकब्बुर व घमण्ड की लअ़नत से पाक करके गुनाहों से सच्ची तौबह कर लो। इस रहमत व बरकत वाली रात में ख़ूब नमाज़ें पढ़ो। तिलावते कुरआने करीम करो। कलमा शरीफ़ का विर्द करो, दुरूदो सलाम की कसरत करो, बख़्शिश व मग़फ़िरत के तलबगार बन जाओ। इज़्ज़त व अज़मत और रिज़्क़ के हुसूल के लिये इल्तिजा करो। ख़ास कर ईमान ख़ातिमा पर के लिये रो रो कर ख़ूब दुआएं मांगो। ख़बरदार ! इस मुबारक रात का एक लम्हा भी खेल, कूद, सेरो तफ़रीह और ग़फ़लत की नीन्द में सोकर बरबाद न करना।

शबे बराअत का रोज़ा

हदीस शरीफ़ : हमारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : قُوْمُوْا لَيْلَهَا وَصُوْمُوْا نَهَارَهَا

यानी शबे बराअत में ज़ाग कर इबादत करो और दिन में रोज़ा रखो। (इब्ने माजह, स. 99) बहतर यह है कि चौदह शअ़बान और पन्द्रह शअ़बानको रोज़ा रखा जाए।

शबे बराअत की नमाज़ें

हदीस शरीफ़ : हज़रत सय्यदना अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स मग़रिब के बाद छः रकअत नमाज़ पढ़े उस के सारे गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगरचेह वह समन्दर के झाग के बराबर हों। (तबरानी)

छः रकअत नमाज़ का सवाब बारह बरस की इबादत के बराबर

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मग़रिब के बाद छः रकअत नमाज़ पढ़े और उस के बाद कोई बुरी बात न करे तो अल्लाह तअला उस शख़्स को बारह बरस की इबादत का सवाब अता फ़रमाता है।

(तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 198 इब्ने माजह)

शबे बराअत में रात भर जाग कर इबादत करने से जन्नत वाजिब हो जाती है

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं जो शख़्स पाँच रातों में शबे बेदारी करे यानी रात भर इबादत करे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। (उन्हीं में एक रात) शअ़बान क़ी पन्द्रहवीं रात, शबे बराअत है।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 98, बहारे शरीअत हिस्सा 4, स. 105)

शबे बराअत में रुकूअ करने वालों के लिये बशारत

हमारे बड़े पीर, पीराने पीर, रोशन ज़मीर, शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : هٰذِهِ اللَّيْلَةِ طُوْبٰى لِمَنْ سَجَدَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ

इस रात (यानी शबे बराअत) में रुकूअ करने वालों के लिये बशारत व रहमत है। इस रात में सज्दा करने वालों के लिये भलाई और सआदत है। (गुनयतुत तालिबीन, जि. 1, स. 169)

छः रकअत नमाज़ किस तरह अदा की जाए

पहले दो रकअत नमाज़ दराज़िये उम्र की नियत से पढ़े। फिर दो रकअत नमाज़ रिज़्क़ की कुशादगी की नियत से अदा करे। और फिर दो रकअत नमाज़ दोज़ख की आज़ादी की नियत से पढ़े या गुनाहों की बख़्शिश की नियत से पढ़े।

और मुनासिब यह है कि छः रकअत नमाज़ पढ़ने के बाद फिर दो रकअत नमाज़ ईमान पर ख़ातिमा बिल ख़ैर की नियत से अदा की जाए कि ईमान पर ख़ातिमा ही अस्ल है।

शबे बराअत के औरादो वज़ाइफ़

नवाफ़िल नमाज़ें क़सरत से पढ़े फिर सो मरतबा दुरूद शरीफ़, सो बार कलमा शरीफ़, सो मरतबा इस्तिग़फ़ार, सो बार लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह फिर दुआ मांगे और यक़ीन रखे कि अल्लाह तआला हमारी दुआ क़ुबूल फ़रमाएगा।

शबे बराअत में ज़ियारते क़ुबूर

हदीस शरीफ़ : हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा मुसलमानों क़ी मां फ़रमाती हैं कि (शबे बराअत में)

فَاَدْرَكْتُهُ بِالْبَقِيْعِ الْغَرْقَدِ يَسْتَغْفِرُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالشُّهَدَاءِ

मैंने आप को बक़ीउल ग़रक़द में (यानी जन्नतुल बक़ीअ क़ब्रिस्तान में) पाया आप मुसलमान मर्दों और औरतों और शहीदों के लिये बख़्शिश की दुआ फ़रमा रहे थे। (बैहक़ी शरीफ़)

बा बरकत रातों में ज़ियारते क़ुबूर अफ़ज़ल है जैसे शबे बराअत। (फ़तावा आलमगीरी)

शबे बराअत में मोमिनों की रूहें अपने घर आती हैं

और दरवाज़े पर खड़ी हो कर बलन्द व ग़मनाक आवाज़ में पुकारती हैं कि ऐ घर वालो! ऐ मेरे बचो! और मेरे क़राबत दारो! आज कुछ सदक़ा करके हम पर मेहरबानी करो। और अगर घर वाले मय्यित के लिये कुछ सदक़ा नहीं करते तो मुर्दे हसरत के साथ वापस चले जाते हैं। (फ़तावा रज़विया)

हदीस शरीफ़ : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब ईद या जुमा या रोज़े आशूरा या शबे बराअत होती है तो मुर्दों की रूहें अपने घरों के द रवाज़े पर आकर खड़ी होती हैं और कहती हैं कि है कोई जो हमें याद करे, है कोई जो हम पर तरस खाए, है कोई कि हमारी ग़ुरबत की याद दिलाए। (ख़ज़ानतर्रिवायात)

तीन चीज़ें सदक़ा जारिया हैं : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

اِذَا مَاتَ الْاِنْسَانُ اِنْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ اِلَّا مِنْ ثَلٰثَةٍ اِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ اَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهٖ اَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُوْ لَهٗ

(मुस्लिम, जि. 1, स. 41, अबू दाऊद, जि. 2, स. 398, मिश्कात, स. 32)

जब इन्सान मर जाता है तो उस के अमल मुनक़तअ होजाते हैं मगर तीन अमल, सदक़ा जारिया और इल्म नाफ़े और नेक बेटा जो उस के लिये यानी मां बाप के लिये दुआ करता रहे।

बेटे की दुआ से बाप का दरजा बलन्द होता है

हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बे शक अल्लाह तआला जन्नत में नेक बन्दे का दरजा बलन्द करेगा तो वह बन्दा अर्ज़ करेगा या अल्लाह तअला मुझे यह दर्जा कहाँ से मिला। तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा तेरे बेटे की दुआ की वजह से। (शरहुस्सुदूर स. 37, ब हवाला, बुख़ारी शरीफ़)

ऐ ईमान वालो ! हदीसे मुबारका : आप हज़रात ने सुन लिया कि मर्दों की रूहें अपने घरों पर आती हैं और आवाज़ देती हैं हम मुसलमानों को चाहिये कि शबे बराअत और दूसरी मुबारक रातों में अपने मुर्दों के लिये सदक़ा व ख़ैरात करें। गुरबा व मसाकीन को खाना खिलाएं कुरआन शरीफ़ पढ़ कर और कलमा दुरूद का विर्द कर के मुर्दों की फ़ातिहा दिलाएं और ईसाले सवाब करें और उन के लिये बख़्शिश की दुआ मांगें आज हम उन के लिये करेंगे तो कल हमारे लिये किया जाएगा। अल्लाह तआला एहसान का बदला एहसान से देता है बल्कि उस से ज़्यादा।

अल्लाह तआला हमें भलाई की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। मगर यह सब नेकी व भलाई के काम ईमान वालों यानी सुन्नी मुसलमानों के न सीब में हैं। बे ईमान व बद अक़ीदा को इन नेक कामों से कोई ग़रज़ व मतलब नहीं बल्कि बे ईमान वहाबी व मुनाफ़िक़ तो ज़िन्दों के भी दुश्मन हैं और मुर्दों के भी दुश्मन हैं।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(8)

शअबानुल मुअज़्ज़म

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

ज़ियारते क़ुबूर

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا فَاِنَّهَا تُزَهِّدُ فِي الدُّنْيَا وَتُذَكِّرُ الْاٰخِرَةَ: رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ

तर्जमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम लोगों को ज़ियारते कुबूर से मना फ़रमाया था अब तुम लोग उन की ज़ियारत करो कि यह दुनिया से बे रग़बत बनाती और आख़िरत की याद दिलाती है। (मिश्कातुल मसाबीह, स. 145, इब्ने माजह)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! क़ब्र की ज़ियारत सुन्नत है। गुज़श्ता बयान में महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशादाते गिरामी की रोशनी में ज़ाहिर और साबित हो गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर व अक़दस की हाज़री न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और ताबईने इज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की आदत से सुन्नत है और आज तक के औलियाए किराम व बुज़ुरगाने दीन कामामूल रहा है मगर मुनाफ़िक़ व बद अक़ीदा शख़्स कह सकता है कि नेकों व़ महबूबों और औलिया अल्लाह के मज़ारात पर हाज़री और ज़ियारत का कोई सुबूत नहीं है और नेकों और महबूबों की क़ब्रों की हाज़री और ज़ियारत बिदअत व नाजाइज़ है। इस लिये ज़रूरी था कि औलिया व सालेहीन की क़ब्रों की ज़ियारत व हाज़री अहादीसे मुबारका और सलफ़े सालेहीन के अहवाल व अक़वाल की रोशनी में बयान किया जाए और साबित किया जाए कि औलिया व सालेहीन की क़ब्रों की ज़ियारत व हाज़री सुन्नत है। बिदअत व नाजाइज़ नहीं है।

नेकों की क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नते नबवी है

हज़रत मुहम्मद इब्ने इब्राहीम अत्तैमी से रिवायत है।

كَانَ النَّبِيُّ يَأْتِي قُبُورَ الشُّهَدَاءِ عِنْدَ رَأْسِ الْحَوْلِ فَيَقُولُ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ قَالَ وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ يَفْعَلُونَ ذَلِكَ.

यानी हुज़ूर नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम साल के आग़ाज़ में शुहदा की क़ब्रों पर तशरीफ़ लाते थे और फ़रमाते थे तुम पर सलाम हो तुम्हारे सब्र के सिला में आख़िरत का घर क़्या ख़ूब है। रावी ने कहा : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम भी ऐसा ही करते थे। (इमाम अब्दुर्रज्ज़ाक़, अल मुसन्निफ़, जि. 3, स. 573, इमाम तबरी, जामिउल बयान फ़ी तफ़सीरुल क़ुरआन, जि. 13, स. 142, इमाम सियूती अद्दुर्रुल मन्सूर, जि. 4, स. 641, इमाम इब्ने कसीर तफ़सीरुल क़ुरआनुल अज़ीम, जि. 2, स. 512)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सुन्नत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया चलो हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ज़ियारत करके आएं। जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जाते थे। (सही मुस्लिम, स. 190, इब्ने माजह, जि. 1, स. 523)

इमाम नववी लिखते हैं : وَفِيهِ فَضِيلَةُ زِيَارَةِ الصَّالِحِينَ وَالْأَصْحَابِ

इस हदीसे मुबारका में नेकों की ज़ियारत और अस्हाब की फ़ज़ीलत का बयान है।फ

(नववी, शरहुन्नववी, अला सही मुस्लिम, जि. 16, स. 124)

ऐ ईमान वालो ! महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक तमाम अम्बिया और रुसुल के इमाम हैं और सब से अफ़ज़ल व आला हैं। फ़र्श से अर्श तक सारी ख़ुदाई में सब से बलन्द व बाला अशरफ़ हैं। इस के बावजूद शोहदा की क़ब्रों पर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जाना और हज़रत ऐमन रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की क़ब्र पर तशरीफ़ ले जाना। आख़िर क्या वजह है ?

मतलब साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि हमारे आक़ा ग़ैब दां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जानते थे कि क़ुर्बे क़ियामत में कुछ मुनाफ़िक़ मुसलमान यह कहते हुए नज़र आऐंगे कि नेकों, अल्लाह वालों की क़ब्रों पर जाना बिदअत व नाजाइज़ है। मेरा ग़ुलाम परेशान होगा। इस लिये नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शोहदा और नेकों की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए ताकि मुनाफ़िक़, ग़द्दार मुसलमान के

ख़िलाफ़ दलील हो जाए और मेरा गुलाम बता सके कि नेकों और अल्लाह वालो की क़ब्रों पर जाना और ज़ियारत करना बिदअत व नाजाइज़ नहीं है। बल्कि हमारे नबी, महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नते मुबारका है और नेकों की क़ब्रों की ज़ियारत करना अफ़ज़लुल बशर बअ़दल अम्बिया बित्तहक़ीक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा की भी सुन्नते मुबारका है।

हज़रात ! मुनाफ़िक़, वहाबी, देवबन्दी के लिये अब कोई रास्ता ही नहीं बचा कि कह सके कि बग़दाद शरीफ़, अजमेर शरीफ़, बरैली शरीफ़ अल्लाह वालों के मज़ारों पर क्यों जाते हो ?

हदीस शरीफ़ की रोशनी में आफ़ताबे निस्फ़ुन्नहार की तरह ज़ाहिर व बाहिर हो गया कि अल्लाह वालों की क़ब्रों की ज़ियारत बिदअत व नाजाइज़ नहीं है बल्कि सुन्नते रसूल सल्लाल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सुन्नते हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ और सुन्नते सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम है।

अल्लाह वालों की क़ब्रों की ज़ियारत से नेकियाँ बढ़ती हैं

हज़रत बुरीदा असलमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

اِنِّیْ كُنْتُ نَهَیْتُكُمْ عَنْ ثَلَاثٍ عَنْ زِیَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا وَلْتَزِدْكُمْ زِیَارَتُهَا خَیْرًا ۝

मैंने तुम्हें तीन बातों से मना किया था उन में से एक क़ब्रों की ज़ियारत थी। लेकिन अब क़ब्रों की ज़ियारत करो। और उस ज़ियारत से अपनी नेकियाँ बढ़ाओ। (नसाई शरीफ़, जि. 7, स. 234, हाकिमुल मुस्तदरक, जि. 1, स. 532, इब्ने हब्बान, जि. 12, स. 212, बैहक़ी कबीर, जि. 4, स. 74)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे हुज़ूर, जाने नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

बेशक मैं ने तुम लोगों ज़ियारते क़ुबूर से मना किया था। अब जो भी क़ब्र की ज़ियारत करना चाहे उसे इजाज़त है कि वह क़ब्रों की ज़ियारत करे। क्यों कि बे शक क़ब्रों की ज़ियारत दिल को नर्म करती है और आँखों से आंसू बहाती है और आख़िरत की याद दिलाती है।

(हाकिम अल मुस्तदरिक, जि. 1, स. 532)

इसी तरह की हदीस हज़रत अबू सईद ख़ुदरी। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुन अजमईन से भी रिवायत है। (हाकिम अल मुस्तदरिक, जि. 1, स. 530, बैहक़ी कबीर, जि. 4, स. 177, अहमद बिन हम्बल अल मुस्तनद, जि. 3, स. 38, तबरानी मोअ़जम कबीर, जि. 23, स. 278)

ज़ियारते क़ुबूर चारों मस्लक में जाइज़ है

शरीअत में क़ब्रों की ज़ियारत करना बाइसे अज्रो सवाब और आख़िरत को याद दिलाने का ज़रीआ है। अइम्मए हदीस व तफ़सीर ने तफ़सील के साथ इस के जाइज़ होने को बयान किया है चारों मस्लक के अइम्मए किराम का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि तमाम मुसलमानों के लिये क़ब्रों की ज़ियारत जाइज़ व मुस्तहब है।

(1) मस्लके हन्फ़ी के इमाम अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ने उम्दतुल क़ारी शरह बुख़ारी, जि. 8, स. 70 पर।

और! हन्फ़ी इमाम अल्लामा अब्दुर्रहमान इमादतुरौज़ह, जि. 1, स. 5 पर लिखते हैं कि:

बे शक सालेहीन की क़ब्रों की ज़ियारत बलन्द दर्जा बाइसे सवाब और नेक अमल है। यह उन आज़मूदा आमाल में से है जिन के ज़रीए बरकतों की बारिश होती है और इस में शक नहीं कि उन के मज़ारात की हाज़री क़ुबूलियते दुआ के लिये मुजर्रब जगहें हैं।

(2) मस्लके मालिकी के मशहूर ज़माना इमाम अपनी तस्नीफ़ अल मुदख़ल, जि. 2, स. 139 पर लिखते हैं कि:

हर शख़्स के लिये ज़रूरी है कि औलिया और सालेहीन की क़ब्रों की ज़ियारत से अपने आप को दूर न करे इस लिये कि उन की ज़ियारत से मुर्दा दिल इस तरह ज़िन्दा हो जाते हैं जिस तरह मुर्दा ज़मीन मुसला धार बारिश से ज़िन्दा हो जाती है। उन की ज़ियारत की बरकत से मुश्किल काम आसान हो जाते हैं क्यों कि औलिया अल्लाह अल्लाह तआला रहमान व मन्नान की बारगाह में हाज़िर रहते हैं और अल्लाह तआला अपने दोस्तों की कोई बात रद नहीं फ़रमाता।

और अल्लाह तआला औलिया से महब्बत करने वालों को ना मुराद नाकाम नहीं करता है इस लिये कि औलिया अल्लाह अल्लाह तआला का बाबे रहमत हैं जो उस के बन्दों के लिये हमेशा खुला रहता है।

अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर: अल्लाह तआला की बारगाह में अल्लाह वालों की किस क़दर शान व बुज़ुर्गी है। हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर व साबित है।

अल्लाह तआला अपने दोस्तों में क़ुबूल फ़रमाए और मशहूर वली हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आशिक़े मदीना मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस की विलायत व बुज़ुर्गी पर इज्माए उम्मत है उन के इश्क़ व महब्बत में हमें डूबे रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

अल्लामा इब्ने अलहाज अलफ़ासी अल मालिकी ने अपनी किताब अल मुदख़ल जि. 2, स. 255 पर एक बुज़ुर्ग, अल्लाह तआला के वली के मज़ार पर हुसूले बक़ात का वाक़िआ लिखा है।

बे शक हुसूले बरकत के लिये अल्लाह वालों की क़ब्रों की ज़ियारत मुस्तहब अमल है क्यों कि अल्लाह वालों की बरकतें जिस तरह उनकी ज़िन्दगी में फ़ैज़ पहुँचाती हैं इसी तरह उन के विसाल के बाद भी उन का फ़ैज़ जारी रहता है और अल्लाह वालों की क़ब्रों के पास दुआ करना और उन से शफ़ाअत तलब करना अइम्मए दीन और उलमाए दीन और उलमाए मुहक़्क़ेक़ीन का मामूल रहा है।

इस इबारत को लिखने के बाद अल्लामा इब्ने अलहाज ने लिखा है कि जिस शख़्स को कोई हाजत दर पेश हो, उसे चाहिये कि वह शख़्स अल्लाह वालों क़ी क़ब्रों और उन के मज़ारात पर जाए और अल्लाह तआला की बारगाह में उन का वसीला पेश करे। यह एतिराज़

न किया जाए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया है कि तीन मस्जिदों के अलावा किसी तरफ़ जाने के लिये सामाने सफ़र न बाँधा जाए।

(1) मस्जिदे हराम (2) मस्जिदे नबवी (3) मस्जिदे अक़सा, इन के अलावा के लिये सफ़र न किया जाए, तो इस का जवाब मशहूर बुज़ुर्ग, हुज्जतुल्लाह, हज़रत इमाम ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी किताब अहयाउल उलूम के आदाब सफ़र में बयान किया है कि इबादात के लिये सफ़र किया जाए मसलन जिहाद और हज के लिये और उन के बाद फ़रमाया कि इस में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम। सहाबए किराम ताबईने इज़ाम और तमाम उलमा और औलिया अल्लाह की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये सफ़र करना भी इस अमले ख़ैर में शामिल है।

हज़रत इमाम शाफ़ई का हज़रत इमामे आज़म के मज़ार पर हाज़िर होना

ख़तीबे बग़दादी तारीख़े बग़दाद, जि. 1, स. 123 पर लिखते हैं कि :

हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुसूले बरकत की ग़रज़ से हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे नूर पर हाज़िर होते और ज़ियारत करते। हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ की बरकात व हसनात के बारे में ख़ुद अपना तजरबा बयान फ़रमाते हैं। اِنِّیْ لَاَ تَبَرَّكُ بِاَبِیْ حَنِیْفَةَ وَاَجِیْءُ اِلٰی قَبْرِهٖ فِیْ كُلِّ یَوْمٍ زَائِرًا ۝

बेशक मैं इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ाते मुबारका से बरकत हासिल करता हूँ और रौज़ाना उन की क़ब्र शरीफ़ पर ज़ियारत के लिये हाज़िर होता हूँ और जब मुझे कोई ज़रूरत और मुश्किल पेश आती है तो दो रकअत नमाज़ पढ़ कर उन की क़ब्र पर हाज़िर होता हूँ और क़ब्र के पास खड़े होकर हाजत पूरी होने के लिये अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करता हूँ तो मैं वहाँ से नहीं हटता। यहाँ तक कि मेरी हाजत पूरी हो चुकी होती है।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह ताला की बारगाह में अल्लाह वालों की बड़ी शान व मन्ज़िलत है। देखिये अपने इमामे आज़म की शान व अज़मत का क्या आलम है कि हज़रत इमामे शाफ़ई रहमतुल्लाह तआला अलैह जैसे बुज़ुर्ग इमाम व वली ख़ुद बयान करते हैं कि मैं हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर हो जाता हूँ तो मेरी हर हाजत पूरी हो जाती है और मुश्किलें आसान हो जाती हैं।

जब इमामे आज़म के मज़ारे पाक पर बरकत व रहमत का यह आलम है तो रसूले आज़म महबूबे आज़म के मज़ारे अनवर और क़ब्रे अक़दस की बरकत व रहमत का क्या आलम होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है, तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल अल्लाह वालों की ज़ियारत के लिये मुल्के शाम तशरीफ़ ले जाते थे

अल्लामा इब्ने मुफ़लह ने अपनी किताब अल मक़सदुल अरशज, जि. 193 पर लिखते हैं कि हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मशहूर वली हज़रत मुहम्मद बिन यूसुफ़ अल फ़रयाबी की ज़ियारत के लिये सफ़र करके मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए थे।

हज़रात! चारों मस्लक के चारों इमामों का मामूल मुस्तनद और मोअतबर किताबों के हवाले से बयान किया गया है कि हर इमाम ने अल्लाह वालों और बुज़ुर्गों के मज़ारात पर हाज़री दी और ज़ियारत के शरफ़ से मुशर्रफ़ हुए और ख़ूब ख़ूब बरकात व हसनात हासिल किये हैं।

कुछ लोग अपने आप को हम्बली व मालिकी और शाफ़ई व हन्फ़ी कहलवाते हैं और बुज़ुरगाने दीन के मज़ारात की हाज़री और ज़ियारत को शिर्क व बिदअत कहते हैं ऐसे कज़्ज़ाब व दज्जाल हज़रात न हन्फ़ी न शाफ़ई और न ही हम्बली व मालिकी हैं। बल्कि इब्लीसी और जहन्नमी हैं ऐसे कज़्ज़ाबों और दज्जालों के मक्रो फ़रेब से होशियार रहने और बचने की सख़्त ज़रूरत है।

(1) हज़रत इमाम इब्ने हब्बान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार पर हाज़िर हुए। (किताबुस्सिक़ात, जि. 8, स. 457)

(2) हज़रत अबुल फ़रह हिन्द बाई ने हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर हाज़री दी। (इब्ने असाकिर, तारीख़े मदीना दमिश्क़, जि.,. 233)

(3) मशहूर वली हज़रत बशर हाफ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ियारत के लिये मशाइख़ की हाज़री। (ख़तीबे बग़दादी, तारीख़े बग़दाद, जि. 12, स. 381)

(4) महबूबे सुब्हानी क़ुतबे रब्बानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हु का शैख़ हम्माद दब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र शरीफ़ पर हाज़री। (क़लाइदुल जवाहर)

(5) सुल्तानुल औलिया हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मर्दे हक़ आगाह वलिये कामिल हज़रत दाता गन्ज बख़्श हिजवेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर हाज़री। (सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 55)

(6) फ़ना फ़िर्रसूल हज़रत बाबा फ़रीद गन्ज शकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर होना और चालीस दिन तक मज़ारे अनवर के पास चिल्ला करना। (मुईनुल अरवाह, स. 219)

(7) हज़रत सय्यद शाह मख़दूम अशरफ़ समनानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे अक़दस पर हाज़िर हुए।

(8) हज़रत इमाम रब्बानी शैख़ अहमद सर हिन्द मुजद्दिद अल्फ़े सानी रज़ियल्लाहु अन्हु मज़ारे पाक हिन्द के राजा हमारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु पर हाज़िर हुए और चालीस दिन का चिल्ला किया। (सफ़ीनतुल औलिया, स. 158, मुईनुल अरवाह, स. 222)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु महबूबे इलाही हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मुर्शिदुल औलिया हज़रत शाह बरकतुल्लाह मारहरवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे नूर पर हाज़िर हुए और अल्लाह तआला की बारगाह से बरकात व हसनात हासिल किये हैं।

हज़रात ! हम ने चन्द बुज़ुर्गों की ज़िन्दगी के वाक़ेआत बतौरे नमूना पेश कर दिये हैं । ऐसे हज़ारों बल्कि लाखों सुबूत पेश किये जा सकते हैं जिन में अइम्मए दीन व मुहद्देसीन और औलिया व उलमा अल्लाह वालों के मज़ारात पर हाज़िर हुए हैं और अल्लाह तआला की बारगाह से नेकी व सवाब और दीनो दुनिया की ख़ैरो भलाई की नेअ़मत व दौलत हासिल क्ये हैं

अल्लाह तआला ईमान पर साबित क़दमी नसीब फ़रमाए और बुज़ुरगाने दीन के दामन से सची और पक्की वाबस्तगी अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(8)

शअबानुल मुअज़्ज़म

चौथा जुमा .... पहला बयान

तहारत के फ़ज़ाइल व आदाब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ٥

तर्जमा : और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं। (पारा 11, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! नमाज़ के लिये तहारत लाज़िम व ज़रूरी है। तहारत अगर नहीं है तो नमाज़ नहीं होती है बल्कि जान बूझ कर बे तहारत नमाज़ अदा करने को उलमा कुफ़्र लिखते हैं (उस की वजह यह है) कि बे ग़ुस्ल या बे वुज़ू नमाज़ पढ़ने वाले ने इबादत की बे अदबी और तोहीन की। (बहारे शरीअत, हि. 2, स. 7)

प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद :

اَلصَّلٰوةُ مِفْتَاحُ الْجَنَّةِ وَالطَّهَارَةُ مِفْتَاحُ الصَّلٰوةِ

तर्जमा : यानी जन्नत की कुन्जी नमाज़ है और नमाज़ की कुन्जी तहारत है।

(मुस्लिम, मिश्कात, जि. 1, स. 39, इमाम अहमद)

اَلطَّهَارَةُ نِصْفُ الْاِيْمَانِ

तर्जमा : तहारत आधा ईमान है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 1, स. 6)

अच्छी तरह तहारत न करने का वबाल

हदीस शरीफ़ : हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक रोज़ फ़ज्र की नमाज़ में सूरए रूम तिलावत फ़रमा रहे थे और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मुतशाबा लगा। नमाज़ के बाद इरशाद फ़रमाया। क्या हाल है उन लोगो का जो हमारे साथ नमाज़ पढ़ते हैं और अच्छी तरह तहारत नहीं करते।

उन्हीं की वजह से इमाम को क़िरअत में शुबह पड़ता है। (नसाई, जि. 1, स. 110)

ऐ ईमान वालो ! जब अच्छी तरह तहारत न कर के नमाज़ पढ़ने का यह वबाल है तो जो लोग बे तहारत यानी बग़ैर गुस्ल किये नमाज़ पढ़ते हैं तो उस की नहूसत का आलम क्या होगा

तहारत की दो क़िस्म है : एक तहारते कुबरा, दूसरी तहारते सुग़रा, तहारते कुबरा गुस्ल है और तहारते सुग़रा वुज़ू है। जिन चीज़ों से गुस्ल फ़र्ज़ होता है उन को हदसे अकबर और जिन चीज़ों से वुज़ू लाज़िम होता है उन को हदसे असग़र कहते हैं। (बहारे शरीअत जि. 2, स. 7)

वुज़ू का बयान : अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ
إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ط

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपना मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ और सरों का मसह करो और टख्नों तक पाँव धोओ।

(पारा 6, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

वुज़ू करने वाले के आज़ा क़ियामत के दिन रोशन होंगे

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमया कि बरोज़े क़ियामत मेरी उम्मत इस हाल में बुलाई जाएगी कि उस के मुंह और हाथ, पांव आसारे वुज़ू से चमकते होंगे तो जिस से हो सके चमक ज़्यादा करे (बुख़ारी, जि. 1, स. 25, मुस्लिम, जि. 1, स. 126)

कामिल वुज़ू से तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन से इरशाद फ़रमाया, क्या मैं तुम लोगों को ऐसी चीज़ न बता दूँ, जिस के सबब अल्लाह तआला तुम्हारी ख़ताएं मुआफ़ फ़रमा दे और दरजात बलन्द कर दे तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया। हाँ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस वक़्त वुज़ू ना गवार होता है उस वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिदों की तरफ़ क़दमों की कसरत और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना उस का सवाब ऐसा है जैसे कुफ़्फ़ार की सर हद पर इस्लामी शहरों की हिमायत के लिये घोड़ा बाँधने का है। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 127)

वुज़ू के पानी से गुनाह धुल जाते हैं

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह सनाबही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं। हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान बन्दा जब वुज़ू करता है तो कुल्ली करने से मुंह के गुनाह गिर जाते हैं और जब नाक

में पानी डालता है और साफ़ करता है तो नाक के गुनाह निकल जाते और जब मुंह धोया तो उस के चेहरे के गुनाह यहाँ तक कि पलकों के गु नाह निकले और जब हाथ धोए तो हाथों के गुनाह निकले यहाँ तक कि हाथों के नाखुनों के गुनाह निकल गए और जब सर का मसह किया तो सर के गुनाह निकले यहाँ तक कि कानों के गुनाह निकल गए और जब पांव धोता है तो पैर के गुनाह निकले यहाँ तक कि पैरों के नाखुनों से गुनाह दूर हो जाते हैं।

(नसाई, जि. 1, स. 14, इमाम मालिक, स. 10)

हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु : सिराजुल उम्मत हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने देखा एक शख़्स वुज़ू कर रहा है और उस के आज़ाए वुज़ू से ज़िना के गुनाह गिर रहे हैं उस शख़्स को बुलाया और फ़रमाया ऐ फ़लां तू ज़िना की ख़ता का मुरतकिब है, तूने ज़िना का गुनाह किया है। उस शख़्स को हैरत हुई कि जब मैं ने ज़िना किया तो कोई देखने वाला नहीं था। मेरे और औरत के अलावा उस फ़ेअले बद के बारे में और कोई नहीं जानता तो इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु को कैसे मालूम हो गया कि मैं ने ज़िना का गुनाह किया है। उस गुनाहगार शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि आप को कैसे मालूम हुआ कि मैं ने फ़ेअल बद ज़िना किया है तो आप ने फ़रमाया जब तू वुज़ू कर रहा था तो वुज़ू के पानी के ज़रीए तेरे जिस्म के गुनाह गिर रहे थे और मैं देख रहा था कि तेरे जिस्म से वुज़ू के पानी के ज़रीए ज़िना का गुनाह गिर रहा है। (मीज़ानुल कुबरा, स. 25, फ़तावा रज़्विया, जि. 1)

ऐ ईमान वालो ! इस वाक़िआ से पता चला कि वुज़ू का पानी तमाम गुनाहों को धो डालता है इस लिये हमें चाहिये कि कामिल वुज़ू किया करें ताकि हमारे गुनाह धुल जाएं और दूसरी बात यह मालूम हुई कि अल्लाह तआला अपने नेक व महबूब बन्दों को किस शान क इल्म अता फ़रमाता है कि उन की निगाह से गुनाहगार का गुनाह भी पोशीदा नहीं रहता। अल्लाह तआला ने हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निगाहे विलायत को जब यह तासीर दी है तो अल्लाह तआला के महबूबे आज़म रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाहे पाक की शान का आलम क्या होगा।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

सख़्त सर्दी में वुज़ू करने से अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

हदीस शरीफ़ : हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने गुलाम हमरान से वुज़ू के लिये पानी मांगा और सर्दी की रात में बाहर जाना चाहते थे। हमरान कहते हैं कि मैं पानी लाया अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाथ, मुंह धोए

यानी वुज़ू किया तो मैं ने अर्ज किया कि अल्लाह तआला आप को किफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है तो अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। मैं ने प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना है कि जो बन्दा कामिल वुज़ू करता है तो अल्लाह तआला उसके अगले पिछले तमाम गुनाहों को बख़्श देता है। (बज़ार, जि. 2, स. 75)

ठन्डी में कामिल वुज़ू से दुगना सवाब मिलता है

हदीस शरीफ़ : अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है। नबिये पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो सख़्त सर्दी में कामिल वुज़ू करे उस को दुगना सवाब मिलता है। (तबरानी, औसत, जि. 4, स. 106)

वुज़ू पर वुज़ू करना अम्बियाए किराम की सुन्नत है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया एक मरतबा वुज़ू करना तो लाज़िम व ज़रूरी है लेकिन जो शख़्स दुबारा यानी वुज़ू होते हु वुज़ू करे उस को दो दुगना सवाब मिलता है और जो शख़्स तीन बार वुज़ू करे तो मेरा और अगले अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम का वुज़ू है। (इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 417)

कामिल वुज़ू से जन्नत की बशारत

हदीस शरीफ़ : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं। हमारे प्यारे रसूल महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से जो कोई वुज़ू करे और कामिल वुज़ू करे और फिर पढ़े

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 122)

दुरूद शरीफ़ :

बिस्मिल्लाह पढ़कर वुज़ू करो

हदीस शरीफ़ : सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं। हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने बिस्मिल्लाह न पढ़ी उस का वुज़ू नहीं यानी कामिल वुज़ू नहीं हुआ। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। जिस ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर वुज़ू किया सर से पांव तक उस का बदन पाक हो गया और जिस ने बग़ैर बिस्मिल्लाह वुज़ू किया उस का इतना ही बदन पाक होगा जितने पर पानी गुज़रा।

(तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 13, इब्ने माजह, स. 32, दार कुतनी, जि. 1, स. 108, हदीस 228, बैहक़ी)

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वुज़ू की बरकत

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरीदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा अपने वालिद से रिवायत करते हैं। एक सुबह को हबीबे ख़ुदा, तबीबे उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाया और फ़रमाया ऐ बिलाल ? किस अमल के सबब जन्नत में तुम मुझ से आगे आगे चल रहे थे। मैं रात जन्नत में गया तो तुम्हारे पाँव की आहट अपने आगे पाई हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं जब अज़ान कहता हूँ उस के बाद रो रकअत नमाज़ पढ़ लेता हूँ और मेरा जब कभी वुज़ू टूटता है तो वुज़ू कर लेता हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया इसी सबब से। (इब्ने ख़ुज़ैमा, जि. 2, स. 213)

वुज़ू से शहादत का सवाब मिलता है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं। जब हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना मुनव्वरा में तशरीफ़ लाए उस वक़्त मेरी उम्र आठ साल की थी। सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया। ऐ बेटे ? तुम से हो सके तो हर वक़्त बा वुज़ू रहा करो। अगर किसी शख़्स की मौत वुज़ू की हालत में हो जाए तो उस को शहादत का दरजा नसीब होगा। (अवारिफ़ुल मआरिफ़)

वुज़ू के पानी से शिफ़ा मिलती है

हदीस शरीफ़ : हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया और वुज़ू का बचा हुआ पानी खड़े हो कर नोश फ़रमाया और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया वुज़ू का बचा हुआ पानी पीना सत्तर मरज़ (बीमारी) से शिफ़ा है। (फ़तावा रज़विया शरीफ़, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 9, स. 136)

मिस्वाक करना सुन्नत है

हदीस शरीफ़ : मिस्वाक करने से अल्लाह तआला ख़ुश होता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं। हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मिस्वाक करना लाज़िम कर लो क्यों कि उस में मुह की पाकीज़गी और अल्लाह तआला की ख़ुश्नोदी है। (बुख़ारी शरीफ़, मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 438, हदीस 5869, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 9, स. 138)

मिस्वाक की अहमियत

हदीस शरीफ़ : अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं। अल्लाह के हबीब हम बीमारों के त बीब, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम ने फ़रमाया। अगर मेरी उम्मत पर शाक़ (यानी दुश्वारी) का ख़याल न होता तो मैं उन को हर वुज़ू के साथ मिस्वाक करने का हुक्म देता (यानी मिस्वाक करना फ़र्ज़ कर देता) और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिस वक़्त भी नमाज़ पढ़ते तो मिस्वाक ज़रूर फ़रमाते। (तबरानी औसत, जि. 1, स. 341)

मिस्वाक वाली नमाज़ का सत्तर गुना सवाब

हदीस शरीफ़ : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया दो रकअत नमाज़ जो मिस्वाक कर के पढ़ी जाए बे मिस्वाक की सत्तर रकअत से अफ़ज़ल है।

(अबू नुएम, मिश्कात शरीफ़, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 1, स. 102, शअबिल ईमान, जि.3, स. 26)

अल्लाह वाले का प्यार, मिस्वाक से : आलिमे रब्बानी नाइबे रसूल, वलिये कामिल हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी मुसन्निफ़ सवानेह आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पाँच वक़्त की नमाज़ के अलावा नमाज़े चाश्त भी पाबन्दी से अदा फ़रमाते थे और हर वुज़ू में मिस्वाक करना लाज़िम था मगर पहले ब्रश से मन्जन फ़रमाते फिर मिस्वाक करते एक दिन पूछा गया कि हज़रत जब ब्रश कर लिया तो मिस्वाक करने की ज़रूरत क्या है तो आशिक़े रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) बद्रे मिल्लत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया पान खाने की वजह से ब्रश से मन्जन करता हूँ और मिस्वाक इस लिये करता हूँ ताकि प्यारे मुस्तफ़ा, सरकारे आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत अदा हो जाए। और फ़रमाते हैं कि : ब्रश करना जाइज़ है और मिस्वाक करना सुन्नत है।

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(४)

शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

जुम्ए की फ़ज़ीलत व अहम्मियत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

یٰاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰی ذِکْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَیْعَ ذٰلِکُمْ خَیْرٌ لَّکُمْ اِنْ کُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! जब नमाज़ की अज़ान हो जुमा के दिन तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो।

(पारा 28, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الْمُهَجِّرِ کَمَثَلِ الَّذِیْ یُهْدِیْ الْبَدَنَةَ ثُمَّ کَالَّذِیْ یُهْدِیْ بَقَرَةً ثُمَّ کَالَّذِیْ یُهْدِیْ الْکَبْشَ ثُمَّ کَالَّذِیْ یُهْدِیْ الدَّجَاجَةَ ثُمَّ کَالَّذِیْ یُهْدِیْ الْبَیْضَةَ

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 282)

तम्हीद : ऐ ईमान वालो ! जुमा मुबारका का दिन बड़ी फ़ज़ीलत और बरकत वाला है। अल्लाह तआला ने रोज़े जुमा को बे शुमार ख़ूबियाँ अता की हैं, उन्हीं ख़ूबियों के जमा होने की वजह से उसे जुमा कहा जाता है। जुमा का दिन, दिनों का सरदार और मुसलमानों के हफ़्ता की ईद का दिन है। जुमा के दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा किये गए। जुमा के दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ज़मीन पर उतारे गए। जुमा के दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह क़ुबूल हुई। जुमा के दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का विसाल हुआ। जुमा के दिन मरने वाला फ़ितना-ए-क़ब्र और अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा और शहीद का दरजा पाएगा, जुमा के दिन ऐसी साअत आती है कि बन्दा जो सवाल करे अल्लाह तआला उसे देगा बशर्ते कि हराम का सवाल न हो, जुमा के रोज़ नमाज़े जुमा फ़र्ज़ है। नमाज़े जुमा जो

शख़्स बग़ैर किसी उज़्रे शरई के न अदा करे वह सख़्त गुनाहगार और अज़ाबे नार का मुस्तहिक़ और फ़ासिक़ व फ़ाजिर है। क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआला ने नमाज़े जुमा के पढ़ने की बड़ी सख़्ती से ताकीद फ़रमाई है।

जुमा के दिन की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ाए कायनात बज़्मे मेहशर के दूल्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। बेहतर दिन कि आफ़ताब ने उस पर तुलूअ किया जुमा का दिन है उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा किये गए, उसी दिन जन्नत में दाख़िल किये गए और उसी में जन्नत से उतरने का उन्हें हुक्म हुआ और क़ियामत जुमा ही के दिन क़ाइम होगी।

(मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 110, नसाई, जि. 1, स. 154)

हदीस शरीफ़ : ओस बिन ओस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, सब से अफ़ज़ल दिन जुमा का दिन है उसी में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा किये गए और उसी में इन्तिक़ाल किया और उसी दिन सूर फूंका जाएगा (यानी जुमा के दिन क़ियामत क़ाइम होगी) जुमा के दिन मुझ पर दुरूद की कसरत करो कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है लोगों ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस वक़्त हुज़ूर पर हमारा दुरूद क्यों कर पेश किया जाएगा जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इन्तिक़ाल फ़रमा चुके होंगे। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम के जिस्म को खाना हराम कर दिया है तो अल्लाह का नबी ज़िन्दा है और रोज़ी दिया जाता है। (अबू दाऊद, इब्ने माजह, स. 76, नसाई, जि. 1, स. 154, बैहक़ी)

जुमा का दिन तमाम दिनों का सरदार

हदीस शरीफ़ : इब्ने मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह तआला के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जुमा का दिन तमाम दिनों का सरदार है और अल्लाह तआला के नज़दीक सब दिनों से बड़ा है और जुमा का दिन अल्लाह तआला के नज़दीक ईदुज़्ज़ुहा व ईदुल फ़ित्र से अफ़ज़ल है। इस में (यानी जुमा के दिन में) पाँच ख़सलतें हैं। (1) अल्लाह तआला ने इसी में आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया। (2) और इसी में ज़मीन पर उन्हें उतारा। (3) और इसी में उन्हें वफ़ात दी। (4) और इसी में (यानी जुमा के दिन में) एक साअत ऐसी है कि बन्दा उस वक़्त जिस चीज़ का सवाल करे वह उसे देगा जब तक हराम का सवाल न करे। (5) और इसी दिन (यानी जुमा के दिन) में क़ियामत क़ाइम होगी कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता व आसमान व ज़मीन और हवा और पहाड़ और दरया ऐसा नहीं कि जुमा के दिन से डरते न हों। (इब्ने माजह, स. 76)

जुमा में एक साअत बहुत मक़बूल है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सय्यिदुल बशर शाफ़ए मेहशर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जुमा में एक ऐसी साअत है कि मुसलमान बन्दा अगर उसे पा ले और उस वक़्त अल्लाह तआला से जिस भलाई का सवाल करे (यानी जो दुआ करे) तो अल्लाह तआला उस का सवाल पूरा करेगा। (मिश्कात, स. 119)

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में यह भी है कि वह वक़्त बहुत थोड़ा है, रहा यह कि वह (मक़बूल वक़्त) कौनसा है उस में रिवायतें बहुत हैं उन में से एक क़वी रिवायत यह है कि इमाम के ख़ुतबा के लिये बैठने से ख़त्म नमाज़ तक है। (बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 1, स. 281)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अपने प्यारे महबूब मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़े हम मुसलमानों को जुमा का दिन अता फ़रमाया जो तमाम दिनों का सरदार है हत्ता कि दोनों ईदों से अफ़ज़ल जुमा मुबारक का दिन है और जुमा के दिन एक ऐसी साअत है जो बहुत ही मक़बूल है उस मुबारक साअत में मोमिन बन्दा अपने रब तआला से जो भी सवाल करे और दुआ मांगे तो अल्लाह तआला रद नहीं फ़रमाता बल्कि सवाल पूरा करता है और दुआ को क़ुबूल फ़रमाता है मगर सवाल हराम व नाजाइज़ न हो। अब वह मक़बूल साअत कौनसी है तो एक क़वी रिवायत के मुताबिक़ इमाम के ख़ुतबा के लिये बैठने से लेकर ख़त्मे नमाज़ तक है। लिहाज़ा अब हमें चाहिये कि नमाज़े जुमा के लिये ख़ूब अदब व एहतिराम का मुज़ाहिरा करें और जब इमाम ख़ुतबा के लिये बैठे तो हुज़ूरे क़ल्ब और ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ अपने दिल ही दिल में अपने रब तआला से दुआ मांगें इस यक़ीन के साथ कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा है। ज़रूर ब ज़रूर वह अपने बन्दे की दुआ को क़ुबूल फ़रमाएगा। अल्लाह तआला हमें दुआ की तौफ़ीक़ दे और हमारी दुआ को शरफ़े क़ुबूलियत बख़्शे। आमीन सुम्मा आमीन।

जुमा का दिन बख़्शिश का दिन है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि शाफ़ए मेहशर महबूबे दावर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला किसी मुसलमान को जुमा के दिन बग़ैर मग़फ़िरत किये न छोड़ेगा। (तबरानी औसत, जि. 3, स. 351)

ऐ ईमान वालो ! जुमा के दिन के लिये ख़ूब अच्छी तरह तय्यारी कर लो और अच्छी तरह पाक व साफ़ हो कर अदब के सांचे में ढल कर नमाज़े जुमा के लिये मस्जिद जाओ इस यक़ीन के साथ कि आज हमारा रब्बे करीम हमारे गुनाहों को बख़्श देगा और बख़्शिश व नजात का परवाना अता फ़रमाएगा और जब नमाज़े जुमा से फ़ारिग़ होकर अपने घर को आएंगे तो हमारे साथ बख़्शिश का परवाना साथ होगा गोया अल्लाह तआला ने आज हमें गुनाहों से पाक व साफ़ फ़रमा दिया है।

जुमा के हर घन्टे में छः लाख की बख़्शिश

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू यअ़ला से रिवायत है कि हमारे हुज़ूर, सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जुमा के दिन और रात में चौबीस घन्टे हैं कोई घन्टा ऐसा नहीं जिस में अल्लाह तआला जहन्नम से छः लाख को आज़ाद न करता हो जिन पर जहन्नम वाजिब हो गया था।

और एक रिवायत में आता है कि जो जुमा की रात या जुमा के दिन मरेगा वह शख़्स अज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उस पर शहीदों की मोहर लगी होगी (यानी वह शख़्स शहीद होगा) एक दूसरी रिवायत में है कि जो मुसलमान मर्द या मुसलमान औरत जुमा के दिन या जुमा की रात में मरे, अज़ाबे क़ब्र और फ़ितना क़ब्र से बचा लिया जाएगा और अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा (यानी क़ियामत के दिन) कि उस पर कुछ हिसाब न होगा और उस के साथ गवाह होंगे कि इस के लिये गवाही देंगे या मोहर होगी।

(बहारे शरीअत, हिस्सा 4, स. 87, 88, ब हवाला तरग़ीब, जि. 1, स. 493)

ऐ ईमान वालो ! आप हज़रात ने सुन लिया कि जुमा मुबारका का दिन कितने बरकात व हसनात का हामिल है कि जुमा के दिन के हर घन्टा में अल्लाह तआला छः लाख गुनाहगारों को दोज़ख से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर दोज़ख वाजिब हो चुकी थी। लिहाज़ा हम सब भी कोशिश करें कि दोज़ख से आज़ादी पाने वाले छः लाख गुनाहगारों की फ़ेहरिस्त में हमारा नाम भी शामिल हो जाए। हमारा ईमान है कि मेरा रब तआला अपने बन्दों पर बे हद करीम और बे हिसाब रहीम है। अपने प्यारे हबीब, उम्मत के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तुफ़ैल ज़रूर ब ज़रूर हमारा नाम मग़फ़िरत व नजात के रजिस्टर में लिख देगा और दूसरी बात यह अर्ज़ करना चाहूँगा जो बहुत ही ज़रूरी है वह यह है कि यक़ीनन वह मुसलमान मर्द या वह मुसलमान औरत जो जुमा की रात या जुमा के दिन इन्तिक़ाल कर जाएं तो अल्लाह तआला उन को क़ब्र में हर फ़ितना और अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमा देता है और क़ियामत के दिन उन से कुछ हिसाब न होगा और उन को शहीद का दरजा नसीब होगा।

लेकिन : यह सारी अज़मत व बुज़ुर्गी और बरकत व रहमत उस मुसलमान को नसीब होंगी, जो रोज़े जुमा के अदब और नमाज़े जुमा की पाबन्दी के साथ, साथ महबूबे ख़ुदा, नबिये दो आलम मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की अता से ज़िन्दा नबी मानने के साथ, साथ बा इख़्तियार और ग़ैब दां नबी भी मानता हो और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम पुकारने को सुन्नत और सवाब जानता हो बल्कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम पुकारता भी हो। नबिये दो आलम, रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मानने और महब्बत करने के बग़ैर चारह नहीं, नमाज़ व रोज़ा, हज व ज़कात हत्ता कि नमाज़े जुमा, अगर महब्बते रसूल नहीं है तो सब फ़ुज़ूल हैं। किसी काम

के नहीं और जो जुमा के दिन या रात में मरे या रमज़ान शरीफ़ में मरे या शबे क़द्र में मरे और सब से बड़ी बात यह है जो मैं अर्ज़ करना चाहूँगा कि कोई शख़्स चाहे कअ़बा में मरेया मदीना मुनव्वरा में मरे अगर वह मरने वाला मोमिन नहीं है यानी सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुसलमान नहीं है तो वह शख़्स जहन्नमी है, दोज़ख का हक़दार है। जुमा की रात या जुमा के दिन मरना, या रमज़ान शरीफ़ में मरना, या कअ़बा शरीफ़ और मदीना मुनव्वरा में मरना, उस शख़्स के लिये बे सौदा और फ़ुज़ूल है। बे शुमार काफ़िर व मुश्रिक यहूदी व ईसाई और शीआ वग़ैरह मुनाफ़िक़ व मुरतद मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ में मरे हैं आज भी बे शुमार काफ़िर व मुश्रिक यहूदो नसारा जुमेरात व जुमा के दिन, और रमज़ान शरीफ़ के महीने में मरते हैं तो व या जुमेरात और जुमा का दिन, या रमज़ान शरीफ़ का महीना, उन मरने वाले काफ़िरों, मुश्रिकों को कुछ फ़ायदे दे सकते हैं, नहीं हर गिज़ नहीं। बल्कि जो शख़्स उन को जन्नती कहेगा वह ख़ुद जन्नत से महरूम रहेगा।

مَنْ شَكَّ فِیْ كُفْرِهٖ وَعَذَابِهٖ فَقَدْ كَفَرَ

और यही हुक्म बल्कि इस से सख़्त हुक्म वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी का है जो अपनी कुफ्रियात व गुस्ताखी की बुनियाद पर काफ़िर व मुरतद हैं जिन पर सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की किताब हुसामुल हरमैन शरीफ़ शाहिद व आदिल है और बे शक व शुबा वह मोमिन मुसलमान जो अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जुमला कमालात व मोअजिज़ात और इख़्तियारात व उलूमे ग़ैबिया पर मुकम्मल ईमान रखता हो और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम पुकारने को जाइज़ व मुस्तहसन समझता हो।

ऐसा मोमिन व मुसलमान जब जुमा की रात या जुमा के दिन या रमज़ान शरीफ़ में। या मक्का शरीफ़, मदीना मुनव्वरा में इन्तिक़ाल करता है तो वह हसनात व बरकात और फ़ज़ीलतें जो हदीस शरीफ़ में बयान हुई हैं उन का मुस्तहिक़ क़रार पाता है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा हमारे ईमान के मुहाफ़िज़ सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने:

तैबा में मरके ठन्डे चले जाओ आँखें बन्द
सीधी सड़क यह शहर शफ़ाअत नगर की है

दुरूद शरीफ़:

ख़ुतबा के वक़्त चुप रहने वाले की मग़फ़िरत

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने अच्छी तरह वुज़ू किया, फिर जुमा को आया और (ख़ुतबा) सुना और चुप रहा उस के लिये मग़फ़िरत होजाएगी (यानी वह शख़्स बख़्श दिया जाएगा) उन गुनाहों की जो उस जुमा और दूसरे जुमा के दरमियान हैं और तीन दिन और। और जिस शख़्स ने कंकरी छू ली उस ने लग़्व किया

यानी ख़ुतबा सुनने की हालत में इतना काम भी लग़्व में दाख़िल है कि कंकरी पड़ी हो उसे हटा दे। (मुस्लिम, जि. 1, स. 282, अबू दाऊद, : जि. 1, स. 151, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 112, इब्ने माजह)

ऐ ईमान वालो ! नमाज़े जुमा की बड़ी फ़ज़ीलत है, उस शख़्स के तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ज़ो नमाज़े जुमा को अदब व एहतिराम के साथ पढ़ता है लेकिन याद रखना चाहिये कि जिस शख़्स ने एक कंकर को हाथ लगा दिया तो गोया उस शख़्स ने ख़ुतबा जुमा का अदब व एहतिराम नहीं किया। इस लिये वह शख़्स अल्लाह तआला के उस ख़ुसूसी इनआम व इकराम से महरूम रहेगा जो ख़ुतबए जुमा के वक़्त नसीब किया जाता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि अदब व एहतिराम के सांचे में ढल कर बड़ी ख़ामोशी से ख़ुतबए जुमा समाअत करें, वह वक़्त अदब के साथ चुप रहने का है अगर कोई शख़्स गरदन फलांगते हुए आता है या बात चीत में लगा हुआ है या इधर उधर देख रहा है, या अपने जिस्म को हरकत दे रहा है, तो हम को चाहिये कि उस वक़्त उस शख़्स को न रोकें न टोकें वर्ना हम भी उसी शख़्स की तरह मुजरिम व गुनाहगार हो जाएंगे और हमारे भी अज्रो सवाब जाते रहेंगे।

जो शख़्स तीन जुमा न पढ़े वह मुनाफ़िक़ है

हदीस शरीफ़ : इब्ने ख़ुज़ेमा और हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स तीन जुमा बिला उज़्र छोड़ दे वह मुनाफ़िक़ है और एक रिवायत में है कि जिस शख़्स ने तीन जुमा पे दर पे छोड़ दिया उस ने इस्लाम को पीठ के पीछे फेंक दिया। (तबरानी, सही इब्ने हब्बान, जि. 1, स. 237)

जुमा के दिन गुस्ल करना और ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है

हदीस शरीफ़ : हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ाए आज़म नबिये मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स जुमा के दिन गुस्ल करे और जिस तहारत की इस्तिताअत हो करे और तेल लगाए और घर में ज़ो ख़ुश्बू हो तो उस से मुअत्तर हो फिर नमाज़ के लिये निकले और दो शख़्सों में जुदाई न करे यानी दो शख़्स बैठे हों तो उस में घुसने की कोशिस न करे फिर फ़र्ज नमाज़ अदा करे और इमाम जब ख़ुतबा पढ़े तो ख़ामोश रहे तो उस के लिये इस जुमा से दूसरे जुमा तक के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 124)

ऐ ईमान वालो ! जुमा की नमाज़ को छोड़ देना कितना बड़ा जुर्म और गुनाह है कि जो शख़्स बग़ैर मजबूरी के अगर तीन जुमा छोड़ देता है तो वह शख़्स मुनाफ़िक़ों में लिख दिया जाता है अल अयाज़ बिल्लाहि तआला

अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे और जुमा की नमाज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और जुमा के दिन गुस्ल करना, तेल लगाना, सुर्मा डालना ख़ुश्बू से मुअत्तर होना और बालों क़ो तराशना, नाख़ुन काटना और अच्छे लिबास ज़ेबतन करना सुन्नत है और नमाज़ के लिये

मस्जिद में जाए तो दो शख़्सों के बीच घुसने की कोशिस न करना बल्कि जहाँ जगह मिले बैठ जाना और अदब के साथ ख़ामोशी से ख़ुतबा सुनना तो अल्लाह तआला एक जुमा से दूसरे जुमा के बीच में होने वाले गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है।

जुमा के दिन फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े रहते हैं

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब जुमा का दिन होता है तो फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं और मस्जिद में पहले आने वालों के नाम लिखते हैं। तो पहले आने वाला ऐसा है जैसे उस शख़्स ने ऊंट की क़ुरबानी की, उस के बाद आने वाला ऐसा है जैसे उस शख़्स ने गाए की क़ुरबानी की और जो शख़्स उस के बाद आता है तो वह ऐसा है जैसे उस ने दुंबा की क़ुरबानी की और उस के बाद आने वाला शख़्स ऐसा है जैसे मुर्ग़ी का सदक़ा किया और उस के बाद का शख़्स ऐसा है जैसे अन्डा सदक़ा किया और जब इमाम ख़ुतबा के लिये आता है यानी ख़ुतबा के लिये खड़ा होता है तो फ़रिश्ते अपना दफ़्तर लपेट लेते हैं और ज़िक्र सुनते हैं यानी ख़ुतबा सुनने में मशग़ूल हो जाते हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 2, स. 28, इब्ने माजह, स. 78, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 112)

जुमा के दिन ग़ुस्ल करने से गुनाह मिटा दिये जाते हैं

हदीस शरीफ़ : ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर व हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि शाहे तैबा, रहमत वाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल करे उस के गुनाह और ख़ताएं मिटा दिये जाते हैं और जब वह शख़्स मस्जिद की जानिब चलना शुरूअ करता है तो हर क़दम पर बीस नेकियाँ लिखी जाती हैं और दूसरी रिवायत में है कि हर क़दम पर उस शख़्स को बीस साल का अमल लिखा जाता है और जब वह शख़्स नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो उसे दो सो बरस के अमल का अज्र मिलता है।

(तबरानी कबीर, जि. 8, स. 139, मोअजम औसत, जि. 2, स. 314)

ऐ ईमान वालो ! वह मुसलमान कितना ख़ुश नसीब होता है जो अज़ान सुनते ही मस्जिद में हाज़िर हो जाता है फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हैं और आने वाले का नाम अपने दफ़्तर में लिख लेते हैं। याद रखो ! फ़रिश्तों का अपने रजिस्टर में हमारा नाम लिखना उस को कम न समझना बहुत बड़ी बात है। इन्शाअल्लाह तआला क़ियामत के दिन हमारे काम आएगा। तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ यानी जो शख़्स अज़ान सुन कर ख़ुतबा व नमाज़ से पहले मस्जिद में हाज़िर हो, सवारी पर न आएगा। तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ यानी जो शख़्स अज़ान सुन कर ख़ुतबा व नमाज़ से पहले मस्जिद में हाज़िर हो, सवारी पर न आए बल्कि पैदल चल कर आए और इमाम के क़रीब अदब से बैठ कर ख़ुतबा सुने और कोई लग़्व व फ़ुज़ूल काम न करे तो ऐसे शख़्स को एक साल के रोज़े रखने और एक

साल की रातों को जाग कर इबादत करने का सवाब मिलेगा और वह शख्स कितना कम नसीब है जो ख़ुतबा के वक़्त मस्जिद में आता है जब कि फ़रिश्ते अपना दफ़्तर बन्द कर लेते हैं और ख़ुतबा सुनने में मशगूल हो जाते हैं

इस लिये हर मुसलमान को चाहिये कि अज़ान सुन कर मस्जिद में हाज़िर हो जाए ताकि फ़रिश्ते उस शख्स का नाम अपने दफ़्तर में दर्ज कर लें और ख़ूब अदब से इमाम के क़रीब बैठ कर ख़ुतबा सुने और फिर नमाज़ अदा करे ताकि अल्लाह तआला की बारगाहे करम से एक साल के रोज़े और एक साल की रातों को जाग कर इबादत का सवाब हासिल हो जाए और उस मुसलमान की क़िस्मत कितनी बलन्द व बाला है जो शख्स जुमा की नमाज़ के अदब व एहितराम की ख़ातिर और अपने प्यारे नबी रहमतो बरकत वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत जान कर गुस्ल करता है तो अल्लाह तआला रहमान व रहीम परवरदिगार उस मुसलमान के तमाम गुनाह और ख़ताएं मुआफ़ फ़रमा देता है मगर यह सारी बरकतें और फ़ज़ीलतें उस शख्स के लिये हैं जो मोमिन और सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुसलमान है।

जुमा के दिन दरुदू पढ़ने की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ : अबू दाऊद और इब्ने माजह की रिवायत के मुताबिक़ हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार रहमते परवरदिगार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जुमा के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजो इस लिये कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (इब्ने माजह, स. 76)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से एक रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख्स मुझ पर जुमा के दिन 80 मरतबा दुरूद पढ़ता है तो अल्लाह तआला उस के अस्सी (80) साल के गुाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है। हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से एक रिवायत है कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जुमा के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो इस लिये कि जुमा के दिन मेरी उम्मत का दुरूद मेरी बारगाह में पेश किया जाता है पस जो शख्स मुझ पर ज़्यादा दुरूद पढ़ेगा वह शख्स क़ियामत के दिन मुझ से ज़्यादा क़रीब होगा। (गुनयतुत तालिबीन)

ऐ ईमान वालो ! जो ख़ुश नसीब मुसलमान चाहता है कि दर्द व अल से भरे मुसीबत व ज़हमत से लबरेज़, नफ़्सी, नफ़्सी के आलम में बरोज़े क़ियामत उम्मती, उम्मती की रहमत व शफ़क़त भरी सदा लगाने वाले, शाफ़ए मेहशर, महबूबे दावर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़्यादा क़रीब जगह नसीब हो जाए तो उस उम्मती को चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा दुरूदो सलाम अपने शफ़क़त वाले नबी, करम व बख़्शिश वाले रसूल, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते रहमत व बरकत में पेश करे। उनका वादा सच्चा है तुम अपना वादा पूरा करो, वही तो अपने करीम व रहीम रब तआला के

करीम व सख़ी हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं ज़ो नेक व बद नहीं देखते। उन के करम का दरवाज़ा आठों पहर साइलो और फ़क़ीरों के लिये खुला रहता है। ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा इमामे इश्क़ो महब्बत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसादे बरसाने वाले

ख़ल्क़ के हाकिम हो तुम रिज़्क़ क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ़ :

फ़ज़ाइले दुरूदे जुमा : बाद नमाज़े जुमा मजमअ़ के साथ मदीना तैय्यिबा की तरफ़ मुंह कर के दस्त बस्ता खड़े हो कर सो बार पढ़े, जहाँ जुमा न होता हो, जुमा के दिन नमाज़ सुबह ख़्वाह ज़ोहर या अस्र के बाद पढ़ें, जो कहीं अकेला हो तुन्हा पढ़े, यूँ ही औरतें अपने अपने घरों में पढ़ें, दुरूदे जुमा के चालीस फ़ायदे हैं ज़ो सही और मोअ़तबर हदीसों से साबित हैं। यहाँ सिर्फ़ चन्द नमूने ज़िक्र किये जाते हैं । जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत रखेगा और उन की अज़मत को तमाम जहान वालों से ज़्यादा दिल में रखेगा। जो शख़्स उन की शान घटाने वालों से, उन के ज़िक्रे पाक को मिटाने वालों से दूर रहेगा, क़ल्ब (दिल) के साथ उन से बेज़ार होगा, ऐसा जो कोई मुसलमान दुरूदे जुमा पढ़ेगा उस के लिये बे शुमार फ़ायदे हैं जिन में से बाज़ दर्ज किये जाते हैं।

1) उस पढ़ने वाले पर अल्लाह तआला तीन हज़ार रहमतें उतारेगा।
2) उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजगा।
3) पाँच हज़ार नेकियाँ उस के नामए आमाल में लिखेगा।
4) उस के पाँच हज़ार गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा।
5) उस के पाँच हज़ार दरजात बलन्द करेगा।
6) उस के माथे पर लिख देगा यह मुनाफ़िक़ नहीं।
7) उस के माथे पर तहरीर फ़रमा देगा कि यह दोज़ख़ से आज़ाद है।
8) अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।
9) उस के माल में तरक़्क़ी देगा।
10) उस की औलाद और औलाद की औलाद में बरकत देगा।
11) दुश्मनों पर ग़लबा देगा।
12) दिलों में उस की महब्बत रखेगा।
13) किसी दिन ख़्वाब में बरकते ज़ियारते अक़दस से मुशर्रफ़ होगा।
14) ईमान पर ख़ातिमा होगा।
15) क़ियामत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिडी वसल्लम से

मुसाफ़हा करेगा।

16) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत उस के लिये वाजिब होगी।

17) अल्लाह तआला उस से राज़ी होगा कि कभी नाराज़ न होगा और बड़ी ख़ूबी की बात यह है कि सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस दुरूद की तमाम सुन्नियों के लिये इजाज़त फ़रमाई है बशर्ते कि बद मज़हबों से बचें। फ़क़त और उस दुरूद को दुरूदे रज़विया भी कहा जाता है।

दुरूदे जुमा..........यानी.............दुरूदे रज़विया

صَلَّى اللهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ

صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللهِ

सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यि उम्मिय्यि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि दसल्लम सलातंव व सलामन अलैका या रसूलल्लाह 0

सुन्नी मुसलमानों के दीन व दुनिया का भला, ला ज़वाल दौलत और बहुत आसान

सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यिल उम्मिय्यि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातंव व सलामन अलैका या रसूलल्लाह

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये